समर्पण और साधना

स्वास्थ्य



श्रीमती जानकीदेवी बजाज की
८०वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रणीत ग्रंथ

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

•

संपादक

भवानीप्रसाद मिश्र

यशपाल जैन

•

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

•

पहली बार १९७३

मूल्य

सजिल्द चालीस रुपये

विशेष पचास रुपये

•

मुद्रक

संतोषकुमार अग्रवाल

रूपक प्रिंटर्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली ३२



सेवा के लिए समर्पित

जानकीदेवी बजाज

को

अस्सीवीं सालगिरह पर

•

७ जनवरी १९७२

निवेदन

श्रीमती जानकीदेवी बजाज देश की प्रमुख महिलाओं में से हैं। सब सामान्य से लेकर समाज के सभी स्तरों में उनको सेवा का स्नेह और आदर प्राप्त हुआ है। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मविभूषण' की उपाधि से विभूषित करके उनके प्रति इस मान्य धारणा का ही स्वीकार किया है। सार्वजनिक क्षेत्र में श्रीमती जानकीदेवी 'जानकी मया' या 'माताजी' कहलाती है। यह भी उनके प्रति हमारे आदरभाव को व्यक्त करता है। श्रीमती जानकीदेवी को अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में रहकर समाज तथा राष्ट्र की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। फलतः उनका जीवन त्याग और तपस्या की एक कहानी बन गया है।

कुछ दिनों पूर्व जब उनकी अस्सीवीं वर्षगांठ को समारोह पूर्वक मनाने का विचार सामने आया तो सोचा गया कि उनके निमित्त एक ऐसा ग्रंथ तैयार किया जाय, जिसमें अन्य बातों के साथ प्राचीनकाल से लेकर अबतक के नारी-समाज द्वारा की गई प्रगति की झांकी रहे। यह काम कठिन था, फिर भी हमने मित्रों की सहायता से ग्रंथ की एक रूपरेखा बनाई और उसका परिणत स्वरूप आज आपके हाथों में देते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

ग्रंथ में प्रमुख रूप से समस्त भारतीय नारी समाज का प्रगति का लेखा जोखा होने के कारण ग्रंथ का नाम उन्हीं गुणों का बोध कराने वाला है, जो भारतीय नारी जीवन में विशेष रूप से देखे जाते हैं। समर्पित और साधनामय जीवन हमारे भारत समाज की विशेषता रही है। भारतीय नारी ने सदा सदा से इन्हीं दो क्षेत्रों में अपना सर्वोत्तम योग प्रदान किया है।

ग्रंथ की सामग्री को छः खण्डों में विभाजित किया गया है। पहले खंड 'नारी विकास चिंतन' में कतिपय मनीषियों, चिंतकों तथा समाज सेवियों द्वारा प्रकट किये गए नारी विषयक उनके विचारों का संकलन किया गया है। इस संकलन में श्री ति० ना० आत्रेय ने जो सहयोग दिया है उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

दूसरा खंड 'नारी प्रगति के सोपान' विशेष रूप से तैयार कराया गया है। श्री इन्द्रनाथ आनन्द ने कतिपय तरुण मित्रों की सहायता से बड़े अध्यवसायपूर्वक इस खंड को अन्य ग्रंथों की सहायता से तैयार किया है। इस खंड को तैयार करने में जिन पुस्तकों से सहायता ली है, उनमें श्री रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ग्रेट वीमन आफ इंडिया' उल्लेखयोग्य है। हम इस ग्रंथ रत्न के सम्पादकों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

तीसरे खंड में स्वयं जानकीदेवी के शब्दों में उनका जीवन वृत्त दिया गया है। 'सस्ता-साहित्य मंडल' से प्रकाशित 'मेरी जीवन-यात्रा' में जानकीदेवीजी ने विस्तार से अपनी जीवन-गाथा दी है। जीवन-वृत्त को संक्षिप्त और अद्यतन बनाने में हमें श्री रिषभदास रांका का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

चौथे खड म जानकीदेवी द्वारा उनसे सबधित कुछ विभूतियों के सस्मरण तथा स्वय उनके विषय म दूसरों के द्वारा लिखे गये सस्मरण दिये गए हैं। हमने इस खड को 'मनय प्रसग' नाम दिया है। पावन और सुगधित क्षणों का इस प्रकार लेखनीबद्ध कर देने के लिए हम खड के सभी लेखकों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं।

पांचवें खड म महात्मा गांधी विनोबा और जमनालालजी के जानकीदेवी के नाम और जानकीदेवी के अपने निकटस्थ व्यक्तियों के नाम चुने हुए पत्रों का आशीष और प्रणाम शीर्षक से सग्रह किया गया है।

छठवें खड म पुरातन समय स लेकर भारतीय स्वतत्रता की प्राप्ति के समय तक प्रमुख नारियों का सक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। इस खड को तयार किया है श्री अमिताभ मिश्र ने। अल्प समय म ऐसा उत्तम चरित कोष तयार कर देने के लिए हम उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करते हैं। हमारी इच्छा थी कि हम आधुनिक चरित परिचय के लिए केवल प्रकाशित पुस्तकों पर अवलबित न रह, बल्कि स्वय समाज म काम कर रही प्रमुख नारियों से पत्र व्यवहार करके उनके विषय म सामग्री प्राप्त करें, पर पर्याप्त पत्र व्यवहार करने के बाद भी इसमे हम विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई।

ग्रथ के लिए कुछ सामग्री विशेष रूप से प्राप्त हुई है। श्रीमती मदालसा नारायण ने माता आनदमयी से आशीष-वचन प्राप्त करके इस ग्रथ को महिमा दी है। हम माता आनदमयी के प्रति अपने आभार को किन शब्दों म प्रकट करें। पूज्य श्री विनोबा ने इस विशिष्ट अवसर के लिए अलग से समय देकर माताजी के प्रति जो सहज आत्मीयता व्यक्त की वह उनके तत्सबधी छोटे से वक्तव्य म भलीभांति प्रकट है। हम इस कृपा के लिए विनोबाजी को प्रणाम करते हैं।

ग्रथ को समय पर निकालने और सुदर बनाने म मुद्रक श्री सतोषकुमार, 'रूपक प्रिंटस तथा कलाकार श्री तूलिकी से हम तत्पर सहयोग मिला। हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

समय की सीमाओं म ग्रथ को जसा निकाल सकना था वसा नहीं निकाला जा सका। फिर भी प्रयास पूरा पूरा किया गया है कि पाठकों को हम अधिक से अधिक उपयोगी सामग्री दे सकें। इसम कितनी सफलता प्राप्त हुई है इसका निणय हमारे विज्ञ पाठक ही करेंगे।

सस्ता साहित्य मडल' ने ऐसे ग्रथों की एक माला प्रकाशित की है। गांधीजी, राजेन्द्र बाबू जवाहरलाल नेहरू विनोबा काका सा० कालेलकर बनारसीदास चतुर्वेदी प्रभति के प्रेरणादायक सस्मरणों तथा उन्नत विचारों का बडा ही उद्बोधक सग्रह इन ग्रथों म हो गया है। हम हर्ष है कि इस शृखला म एक और नई कडी जुड गई है।

श्रीमती जानकीदेवी की वर्षगांठ इस अनुष्ठान की निमित्त बनी यह हमारे लिए बहुत सतोष और आनद की बात है। इस मगल अवसर पर हम उनका हार्दिक अभिनदन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह दीर्घायु हों और भविष्य म उनके द्वारा और भी उत्तम सेवा हो।

सपादक मडल की ओर स—
भवानीप्रसाद मिश्र
यशपाल जन

विषय-सूची

नारी विकास चिंतन

नारी प्रगति के सोपान

जीवन यात्रा

मलय-प्रसग

अपनों की दृष्टि म जानकीदेवी

अपने : जानकीदेवी की दृष्टि में

आशीष और प्रणाम

प्रमुख नारियां

समर्पण
और
साधना

श्रीमा के आशीर्वचन

श्रीमा ने कहा

जानकी मा का तो जन-जनार्दन सेवा मे समग्र जीवन अर्पण है।

प्राण-स्पर्शी यही आदर्श ग्रहण करणीय।

समझो, हमारी मा की शक्ति सर्वम है। सबको मा मय होकर देखें। भगवान मा भी है—परमपिता, परम माता भी है। परम बधु सखा स्वामी भी है।

तुम्हारी मा ने सतत सेवामय क्रिया-योग किया है।

य जो क्रिया योग है न जितनी क्रियाएँ है भगवान की प्राप्ति के लिए हैं। इसलिए इसे क्रिया-योग कहा है।

उनके (जानकी मा के) आनद म कोई बाधा न दे। अपने आनद म, शाति म मगन होकर रहे। उसीमे उनको मगन होकर रहने दो। रामायण का पाठ, सत्सग बहुत अच्छी बात है। मोह मुक्त होने की सदा कोशिश करना। मोह युक्त न हो।

मा को लिखो तुम जसी मा हुई है वसी दुनिया म सब मा हो, ऐसी भगवान से प्रार्थना करो।

सत्य मे निष्ठा हो, तत्त्वचितन हो। भगवत्‌चितन का यही फल है कि वह सदभावनात्मक माग खोल देते हैं। लेकिन सच्चाई होनी चाहिए।

(श्रीमा आनदमयी की मदालसाबहन से हुई वार्ता)

जानकीदेवी का नया प्रेरणा-मत्र

काका सा० कालेलकर

जानकीदेवी का त्याग इतना शीतल है कि शायद ही कहा अयत्र देखने को मिलेगा। वह पढी लिखी नही है ऐसा माना जाता है। लेकिन गुनि तो अपना प्रभाव डाल ही देती है। भले हा जानकीदेवी अपने को अशिक्षित मानें भगवान ने उनके ही मुह से आज के भौतिक विज्ञान के युग के लिए यह नवीन प्रेरणा दी है

मानव सरक्षण मानव मात्र का
स्वयसिद्ध अधिकार है।

पुराने लोग कर्तव्य की बात करते थे। आजकल का युग अजिनी के दिनो से अधिकार को ही विशेष समझने लगा है और इसी मे इस युग की खूबी भी है। कर्तव्य तो बाहर की प्रेरणा है अत किसी के आदेश से हम उसे समझने लगते हैं और अमल मे लाने की कोशिश करते है जबकि अधिकार तो आतरिक प्रेरणा से खडा होता है और भगवान को आशीर्वाद देना ही पडता है।

मैं मानता हू कि स्वराज्य के बाद हम गाधीजी के नाम का तो जय-जयकार करते हैं लेकिन गाधीजी की मूल प्रेरणा को भूल गये हैं। गाधी जन्म शताब्दी के साल मे सब नेताओ के व्याख्यान पढे, लेकिन सत्याग्रह की बात किसी ने मुह से नही निकली और सत्याग्रह को छोड दें तो गाधीजी शून्य हो जाते हैं। जहा जहा मानव-सरक्षण की आवश्यकता खडी हो मानव मात्र को उसके लिए तयार होना ही चाहिए। मानव-सरक्षण मानव मात्र का स्वयसिद्ध अधिकार —इस मत्र मे गाधीजी के सत्याग्रह की सपूर्ण भावना आ ही जाती है। अगर हम इस एक चीज को जाग्रत रखें तो पिछले पच्चीस वर्ष मे हमने जितनी गलतिया की या शिथिलता धारण की वह सब दूर हो जायगी।

•

भारतीय नारी का सबसे बडा मसला

इदिरा गाधी

हम भारत की स्त्रिया वास्तव मे सौभाग्यशाली है कि हमारे पक्ष की रहनुमाई के लिए राममोहन राय, विद्यासागर महात्मा गाधी, मेरे पिता और महर्षि कर्वे जसी विभूतिया हमे उपलब्ध रही। आजादी मिलने के बाद नेहरूजी के उदार मस्तिष्क मे समाज के नव निर्माण की कल्पना आई और उन्होने सामाजिक परिवर्तन को एक दिशा दी, जिसम स्त्रिया आर्थिक और सास्कृतिक क्षेत्र म आगे आइ। मेरा विश्वास है कि ऐसा महज भावुकता के कारण नहीं हुआ, बल्कि भारतीय नारी की योग्यता तथा काम की स्वीकृति के रूप मे हुआ। भारत की स्त्रियो न पुरुषो के विरुद्ध कोई आदोलन नही किया। समान ध्येय मे मददगार होने के लिए वे पुरुषो के साथ कधे से कधे मिलाकर काम करती रही।

यह मेरे लिए बडे भाग्य की बात थी कि इस तूफान को मैंने देखा और उसमे हिस्सा लिया। मुझे अब भी याद आता है कि भारत की स्त्रिया की मुक्ति के लिए मेरी मा की कितनी तीव्र इच्छा थी और उसके लिए उन्होने लगातार कितनी मेहनत की, जिससे स्त्रिया को अधिक भरी-पूरी और काम की जिन्दगी बिताने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिले। उस जमाने म और उन परिस्थितियो म प्रतिक्रियावादी मठ का मार्चा लेना आसान बात नही थी।

इस तरह भारतीय नारी समाज के अधिकार एक विद्रोही आग्रही तथा विस्तारवादी स्त्रीत्व द्वारा पुरुष के सस्थापित अधिकार के विरुद्ध सघर्ष के नतीजे के रूप मे नही मिले, जसाकि पश्चिमी देशो म हुआ। भारत म ये अधिकार डेढ सौ वर्ष की सामाजिक क्राति का उपज थे।

जिन देशो म स्त्रियो को अपने अधिकारो के लिए लडना पडा उन देशो मे पुरुषो के लिए यह आसान था कि वे स्त्रियो की स्वतत्रता के तथ्य को स्वीकार कर लेत। भारत म हालाकि स्त्रिया की आजादी से बडी सामाजिक शक्ति पदा हुई है फिर भी लोगो ने अभीतक इस बात को नही माना कि स्त्रिया का दर्जा बराबरी का है। हमारे रास्ते मे यह एक बडी रुकावट है। दूसरी बाधा यह है कि हमारी स्वतत्र स्त्रिया तक के मन पर चुपचाप कष्ट सहन करने वाली सीता का आदश छाया हुआ है।

आज भारतीय नारी के सामने सबसे बडा मसला यह है कि कानून ने उन्हे जो अवसर दिया है उसके अनुरूप बनें। भारत की स्त्रियो ने राजनतिक आर्थिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त कर लिए हैं लेकिन उन अधिकारो को अमली जामा पहनाने के लिए हमने क्या किया है ? विधान सभाओ, ससद, कमेटियो और कमीशनो के जरिये जो काम होता है उसस हम कोई बहुत बडी उपलब्धि नही होती। आज तो सबसे ज्यादा जरूरत इस बात की है कि पढी और

बेपढ़ी स्त्रियों के बीच समाज हित की भावना पैदा करने के लिए उचित संगठन बनाए जाएं और घर घर जाकर काम किया जाए जिससे वे राष्ट्रीय ध्येय की पूर्ति के लिए मिल जुलकर काम कर सकें।

अपने पूरे इतिहास में और शायद सारे देशों के इतिहास में हमने देखा है कि जिस समय स्त्रियां आजाद नहीं थीं उस समय भी ऊंचे पाये की ऐसी स्त्रियां थीं जिन्होंने समाज पर और कभी-कभी पूरे जमाने पर अपनी छाप डाली। लेकिन ऐसे नाम इने गिने ही थे। हम चाहेंगे कि स्त्रियों का प्रभाव और गहराई से अनुभव हो और यह मौका उन्हें किसी भी आदमी की अपेक्षा अधिक-से-अधिक मिले, क्योंकि ज्यों ही बच्चा जन्म लेता है स्त्रियां शिक्षक का काम करती हैं। उन्हें अपनी देख रेख में एक नये मस्तिष्क एक नये शरीर और एक भावी नागरिक को ढालना होता है और यह ढालने का काम जैसाकि हम कभी-कभी सोचते हैं महज अच्छी सलाह दे देने मात्र से पूरा नहीं हो जाता।

हम देखते हैं कि कठिनाई के समय भारतीय नारियों ने हमेशा बेजोड़ साहस दिखाया है और वे कसौटी पर खरी उतरी हैं। देश और समाज के गौरव की रक्षा के लिए उन्होंने बड़े से-बड़े बलिदान दिया है। मेरे विचार से आज देश स्त्रियों से फिर वैसे ही मार्ग-दर्शन की अपेक्षा रखता है। इसका मतलब यह नहीं कि सचमुच कोई अपने प्राणों की ही बलि चढ़ा दे या अपना पूरा समय ही इसमें लगा दे। इसका मतलब यह है कि कोई कुछ भी काम करता हो उसमें यह निगाह रक्खे कि वह काम देश का है, उसके द्वारा देश का विकास करना है अच्छे नागरिक तयार करने हैं और बढ़िया वातावरण बनाना है।

•

नारी: विकास चिन्तन

भारतीय नारी

स्वामी विवेकानद

प्रारभ म ही मेरा यह कह देना ठीक होगा कि सयासी होन के कारण स्त्रिया का प्रत्येक दृष्टिकोण स—माता, स्त्री कया और बहन के रूप म—मेरा ज्ञान अय लोगा की तरह पूण नही हो सकता। फिर, भारतवप एक विशाल महादेश है, केवल एक देश नही है। वहा विभिन मानव-वश वास करत हैं। यूरोप के विभिन राष्ट्र भारतवप के मानव-वशो की अपेक्षा एक-दूसर के अधिक निकट और अधिक समान हैं। इसके अतिरिक्त इन विभिन मानव वशो के आचार, रीति रिवाज, खान पान वेशभूषा और विचारा म भी बहुत अतर है।

इसके बाद फिर जातिया हैं। प्रत्यक जाति मानो एक पृथक प्रजाति बन गई है। यदि कोई बहुत दिना तक भारतवप मे रहे, तो वह शक्ल देखकर बता सकता है कि अमुक व्यक्ति किस प्रजाति का है। जातिया के आचार और रीति रिवाजा म अतर है। ये सभी जातिया पृथक् पृथक भी रहती हैं अर्थात वे सामाजिक ढग से आपस म मिलती-जुलती अवश्य हैं पर ये आपम म खान-पान या विवाह नही करती।

मैं भारत म बराबर एक स्थान से दूसरी जगह घूमा ही करता हूँ और समाज के हर श्रेणी के लोगा स मिलता-जुलता हूँ। उत्तर भारत की स्त्रियाँ पुरुषा के सामने नही आती, पर वे कही-कही धम के लिए इस नियम का तोडकर हमारे सामने आती हैं, हमारे उपदेश सुनती हैं

और हमसे प्यार करती है। अमरीका में आप माता के साथ भावनात्मक रिश्ते के आदर्श का स्मरण का प्रदर्शन करेंगे।

प्रत्येक राष्ट्र में पुरुष या स्त्री किसी एक आदर्श का वरण करता है और वे उसकी पूर्ति आदर या अनादर भाव से करते रहते हैं। अमरीकियों के अधिकतर आदर्श का बाह्य रूप होता है। इतिहास के एक समूह का राष्ट्र बनता है। राष्ट्र को किसी एक ही आदर्श का प्रचार होता है जिसकी ओर वह चलता रहता है। इसलिए यह कहना ठीक है कि किसी राष्ट्र को समझने के लिए पहले उसके आदर्श को समझना आवश्यक है। कोई राष्ट्र अपने आपको किसी दूसरे आदर्श से जाँचा जाना स्वीकार नहीं करता।

उदाहरण स्वरूप अमरीकियों[1] के लिए स्वतन्त्रता—सबसे बड़ा आदर्श होता है। वे किसी आदर्श का विरोध करते हैं। व्यक्ति या राष्ट्र को दूसरों को समझने के लिए उसे उसी आदर्श से जाँचना होगा। जिसे एक राष्ट्र अच्छा समझता है सम्भव है उसे दूसरा अच्छा न समझे। अमरीका[2] वहाँ पर विवाह एक ढंग से पूर्ण रूप से वैध है किन्तु भारतवर्ष में यह अधिकार और कानून ही नहीं है अपितु व्यभिचार-भ्रष्ट एक बड़ा अपराध समझा जाता है। विधवा विवाह वहाँ सर्वथा न्यायसंगत है किन्तु भारतवर्ष की उच्च जातियों की स्त्रियों के लिए दूसरी बार विवाह करना उनका पतन कहा जाता है। अतः आदर्श तथा विचारों की भिन्नता और विभिन्नताओं में रहते हुए हम लोगों को एक के आदर्श से दूसरे को जाँचना न तो उचित है और न सम्भव ही।

भारत में स्त्री जीवन के आदर्श का आरम्भ और अन्त मातृत्व में ही होता है। प्रत्येक हिन्दू के मन में स्त्री शब्द के उच्चारण से मातृत्व का स्मरण हो आता है और हमारे यहाँ ईश्वर को माँ कहा जाता है। पश्चिम में स्त्री पत्नी है। वहाँ पत्नी के रूप में ही स्त्रीत्व का भाव केन्द्रित है। भारत में जनसाधारण में स्त्रीत्व का मातृत्व में ही केन्द्रीभूत होता है। पाश्चात्य देशों में गृह की स्वामिनी और शासिका पत्नी है, भारतीय गृहों में घर की स्वामिनी और शासिका माता है। पाश्चात्य गृह में यदि माता हो भी तो उसे पत्नी के अधीन रहना पड़ता है क्योंकि घर पत्नी का है। हमारे घरों में पत्नी अनिवार्यतः माता के अधीन होती है। आदर्शों की इस भिन्नता पर ध्यान दीजिए।

अब मैं चाहता हूँ कि आप इनकी तुलना करें। मैं आपके समक्ष कुछ तथ्य उपस्थित करूँगा जिससे आप स्वयं इन दोनों की तुलना कर सकें। यदि आप पूछें कि पत्नी के रूप में भारतीय स्त्री का क्या स्थान है? भारतीय पूछ सकता है कि माता के रूप में अमरिकन स्त्री कहाँ है? उस तपस्विनी एवं ओजस्विनी माता का, जिसने हमें जन्म दिया, तुमने क्या सम्मान किया है? जिसने हमें अपने शरीर में नौ मास तक वहन किया, वह माता कहाँ है? जो हमारे जीवन के लिए यदि प्राणों की आहुति देने की आवश्यकता हो तो बीस बार भी ऐसी आहुति देने को उद्यत है वह माता कहाँ है? कहाँ है वह माता जिसका प्रेम कभी नहीं मरता—मैं कितना ही दुष्ट और अधम क्यों न हो जाऊँ? साधारण सी बात को लेकर तलाक के लिए न्यायालय

१ अमरीका निवासी।

२ अमरीका में।

का द्वार खटखटानेवाली आपकी पत्नी के सामने उसका स्थान कहा है ? हे अमरिका की स्त्रियो वह माता कहा है ? उस मैं आपके देश में नहीं पा सकूगा। मुझे यहा वह पुत्र दिखाई नही देता, जो कहता है कि माता का पद प्रथम है। हमारे देश मे तो कोई भी पुरुष यह इच्छा कभी नही करता कि उसकी मृत्यु के उपरान्त भी उसकी पत्नी और उसका पुत्र उसकी माता का स्थान लें। हमारी मा !—यदि हमारी मृत्यु उसके पहले हो, तो हम चाहते हैं कि मृत्यु के समय पुन एक बार हमारा सिर उसकी गोद में हो। क्या स्त्री सज्ञा केवल भौतिक शरीर मात्र की ही दी जाने के लिए है ? हिंदू मन उन आदर्शों के प्रति सशकित रहता है जिनमें यह कहा जाता है कि देह को तो अपना धर्म ही साधना चाहिए। नही नहीं देवि ! देह से सबद्ध किसी भी वस्तु से तुम्हें सलग्न नहीं किया जायगा। तुम्हारा नाम तो सदा ही अध्यात्म का प्रतीक रहा है, विश्व में मा नाम से अधिक पवित्र और आध्यात्मिक दूसरा कौन-सा नाम है जिसके पास वासना कभी फटक भी नही सकती ? यही भारत का आदर्श है।

मैं उस आश्रम का हूँ जिसके सभी लोग प्रत्येक स्त्री को मा कहकर पुकारते हैं। प्रत्येक स्त्री को क्या हम तो किसी छोटी लड़की को भी मा ही कहकर पुकारते हैं[1] यह नियम ही है। पाश्चात्य देशों में आने पर भी वही सस्कार बना रहा। जब मैं यहा स्त्रियो से कहता, हा, माता ! तो वे दहल उठती। पहले तो मैं नहीं समझ सका कि उनके इस प्रकार आश्चर्य प्रकट करने का क्या कारण है। बाद मे मुझे उसका कारण मालूम हुआ कि उस कथन का अर्थ होता है कि वे वृद्धा है। भारतवर्ष में स्त्रीत्व मातृत्व का ही वाचक है मातृत्व में महानता, स्वार्थशून्यता कष्टसहिष्णुता और क्षमा शीलता का भाव निहित है। पत्नी तो छाया की तरह पीछे चलती है, उसे माता के जीवन का अनुकरण करना पडता है यही उसका कर्त्तव्य है। किंतु माता प्रेम का आदर्श होती है। वह परिवार का शासन करती है और उस पर अधिकार रखती है। भारतवर्ष में यदि बालक कोई अपराध करता है तो पिता ही उसे दण्ड देता है। माता सदा पिता और बालक में बीच-बचाव करती है। यहा पर ठीक उल्टा है। इस देश में बच्चा को मारना-पीटना आदि माताओ का कर्तव्य बन गया है और पिता बीच-बचाव करता है। आप समझ सकते है कि आदर्शों की कितनी भिन्नता है। इसे मैं आलोचनात्मक ढग से नही कहता। आप लोग जो करते हैं अच्छा ही करते है, पर हम लोगों को जो सदा से सिखाया गया है हम तो उसी का अभ्यास है। कोई भी माता कभी अपने बच्चों को अभिशाप नही देती, वह सदा क्षमा ही करती रहती है। हमारे स्वर्गस्थ पिता के बदले में हम सदा जगन् माता आदि ही कहते है। हिंदू के लिए इस शब्द और भाव में अनन्त प्रेम भरा है। इस नश्वर ससार में ईश्वर के प्रेम के समीपतम पहुँचाने वाला प्रेम माता का ही है। 'हे माता ! दया करो मैं तो कुपुत्र हूँ ! मा, कुपुत्र तो अनेक हुए हैं किंतु माता कुमाता कभी नहीं हुई।'—साधु रामप्रसाद ने यही कहा है।[2]

१ बगाल में बेटी को भी माँ कहकर सबोधित करने की प्रथा है

२ कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति। शकराचार्य के इसी प्रसिद्ध वचन को बगला में साधु रामप्रसाद ने दोहराया है

यह हिंदू माता है। पुत्र की पत्नी घर में आती है माता की दृष्टि में वह अपनी उस पुत्री के समान आती है जो विवाहित होकर अपनी माता के घर से अन्यत्र चली गई है। उस घर की सम्राज्ञी, माता की आज्ञा के अनुसार चलना आवश्यक है। यद्यपि संन्यास आश्रम में प्रवेश करने के कारण मेरे लिए विवाह करना निषिद्ध है फिर भी कल्पना कीजिए—यदि मैं विवाह कर सकता और यदि मेरी पत्नी मेरी माता को किसी कारण अप्रसन्न रखती, तो ऐसी पत्नी से मुझे बड़ी ग्लानि होती। क्या ? क्या मैं अपनी माता की पूजा नहीं करता ? फिर पुत्रवधू माता की पूजा क्या न करे ? मैं जिसकी आराधना करता हूँ वह भी उसकी आराधना क्या न करे ? उसे क्या अधिकार है कि मेरे सिर पर चढ़कर मेरी माता पर शासन करे ? उसको अपने स्त्रीत्व की निष्पत्ति होने तक प्रतीक्षा करनी होगी और वह वस्तु जो नारीत्व को पूर्ण करने के लिए तथा नारी को नारी बनाने के लिए अपेक्षित है—मातृत्व है। मातृपद प्राप्त होने तक उसे प्रतीक्षा करनी चाहिए तदुपरांत उसे अधिकार प्राप्त होगा। हिंदू संस्कृति के अनुसार स्त्री जीवन का महान उद्देश्य माता का गौरवमय पद प्राप्त करना ही है किंतु इसका भी अंतर समझिए। मेरे माता पिता ने कितने दिनों तक भगवान् से प्रार्थना की थी और व्रत रखा था कि उन्हें संतान प्राप्त हो। भारत में माता पिता प्रत्येक बालक के जन्म के लिए ईश्वर से प्रार्थना-याचना करते हैं। आर्य की परिभाषा लिखते हुए हमारे स्मृतिकार मनु कहते हैं—वही संतान आर्य है जो प्रार्थना के द्वारा जन्म लेती है, बिना प्रार्थना के उत्पन्न प्रत्येक संतान मानो अधम से उत्पन्न संतान है। प्रत्येक बच्चे के लिए माता पिता को प्रार्थना करनी चाहिए। इस प्रकार की संतानों से इस संसार में अधिक क्या आशा की जा सकती है जो अभिशापों के साथ जन्म लेते हैं जो दुर्बलता के एक क्षण में संसार में इसलिए सरक आते हैं कि उससे बचना संभव नहीं था ?

मातृत्व से आपका उत्तरदायित्व अत्यंत महान् हो जाता है। क्या ? क्योंकि हमारे शास्त्रों के अनुसार जन्म-पूर्व प्रभाव बालक को शुभ या अशुभ प्रवृत्तियुक्त बनाता है। आप सैकड़ों महाविद्यालयों में अध्ययन करें लाखों ग्रंथ पढ़ डालें संसार के समस्त विद्वानों के संसर्ग का लाभ उठायें किंतु यदि आपने शुभ संस्कार लेकर जन्म लिया है, तो आप इन सबसे अच्छी रहेंगी। शुभ या अशुभ के निमित्त आप जन्म लेती हैं। शास्त्रों का मत है कि बालक जन्म से ही देव या असुर पैदा होता है। शिक्षा आदि का स्थान बाद में आता है—उसका प्रभाव नगण्य होता है। रहेंगी आप वही हैं जो जन्म से होती हैं। यदि आपको माता ने रोगी शरीर दिया है, तो कितने ही औषधि भण्डारों को निगल डालिए, आप अपने को स्वस्थ नहीं रख सकती। क्या आप एक भी स्वस्थ पुरुष बता सकती हैं जिसे रोगी दुर्बल और विपल रक्तवाले माता पिता ने जन्म दिया हो ? हम प्रचंड सुप्रवृत्ति या कुप्रवृत्ति के साथ जन्म लेते हैं हम जन्मजात देव या असुर होते हैं। शिक्षा आदि का प्रभाव नगण्य ही होता है।

आप पाश्चात्य लोग व्यक्तिवादी हैं। आप कोई कार्य इसलिए करते हैं कि वह आपको प्रिय है। आपके मतानुसार मैं इस स्त्री से क्या विवाह करता हूँ ?—क्योंकि इससे मुझे प्रसन्नता होती है। क्या ? इसलिए कि वह मुझे अच्छी लगती है। यह स्त्री मुझसे क्या विवाह करती है ?—क्योंकि मैं उसे प्रिय हूँ। बस बात खत्म। इस अनंत विश्व में मैं और मेरी पत्नी, बस ये ही

दो प्राणी है, वह मुझसे विवाह करती है, और मैं उससे—इससे किसी का कुछ बिगडता नही, इसके लिए अन्य कोई उत्तरदायी नही। आपके जॉन और जीन्स जंगल मे जाकर रह सकते हैं और मनमाना जीवन बिता सकते हैं परन्तु जब उन्हें समाज मे रहना होगा, तब उनके विवाह का समाज के जीवन पर अत्यन्त शुभ या अशुभ प्रभाव पड सकता है। सभव है उनके बच्चे दानव बनें, सबत्र लूट पाट करें, डाका डालें, आग लगाए हत्या करे और मद्य पान आदि नीच कर्मो मे रत रहे।

तो फिर भारतीय समाज का आधार क्या है ? वह है जाति नियम। मैं जाति के लिए पैदा हुआ हूँ, और जाति के लिए जीवित हूँ। जाति मे पैदा होने से सारा जीवन जाति के नियमानुसार बिताना होगा। दूसरे शब्दो मे, आपके देश की वतमान भाषा मे यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी देशो मे मनुष्य जन्मना व्यक्तिपरक होता है, और हिन्दू समाजपरक—नितान्त समाजपरक। अब शास्त्रो का कहना है, यदि हम तुम्हे उस स्त्री से विवाह करने की आज्ञा देते है, जिसे तुम पसद करते हो और स्त्री को उस पुरुष से विवाह करने की, जिसे वह पसद करती है, तो इसका परिणाम क्या होता है ? यदि उस स्त्री का पिता किसी मानसिक रोग या क्षय से पीडित हो, तब ? स्त्री उस पुरुष की शक्ल देखकर मुग्ध हो जाती है जिसका पिता एक भयानक शराबी था। तब नियम क्या कहता है ? उसका कहना है कि ऐसी परिस्थिति म य सभी विवाह अनियमित माने जाएँगे। शराबी पागल और क्षयरोगी पुरुषो के बच्चो का विवाह नही किया जा सकेगा। लूले, लँगडे, कुबडे और पागलो का विवाह नही हो सकेगा, यही शास्त्रो की आज्ञा है।

विवाह होता है। स्त्री अपने पति के साथ घर आती है। फिर पिता के यहा द्विरागमन तक के लिए वापस चली जाती है। छोटी उम्र का विवाह पहला विवाह समझा जाता है। जब यह बालिग हो जाती है, तो दूसरा धार्मिक कृत्य होता है जिसे द्विरागमन या गौना कहते है। तब से वे साथ रहते हैं पर पति के माता पिता के साथ एक ही मकान म।

इसके बाद दूसरा विचित्र भारतीय नियम आता है। प्रथम दो या तीन वर्ण-जातियो की विधवाओ को पुर्नाववाह करने की आज्ञा नही है। यदि उनकी इच्छा हो, तो भी वे ऐसा नही कर सकती। अवश्य यह बहुतो पर अत्याचार जमा है। सभी विधवाएँ इस नियम को पसद करती हो ऐसा तो नही कहा जा सकता, क्योकि विवाह न करने से ब्रह्मचारिणियो की भाति जीवन बिताना उनके लिए आवश्यक हो जाता है। हमारा साधुओ का देश है, हम सदा तपस्या करते रहते हैं, और यह हमे पसन्द भी है। हमारे यहा स्त्री न तो शराब पीना पसद करती है और न मास खाना। कुछ जातियो के पुरुष कभी-कभी मास खा लेते है किंतु स्त्रियाँ नही खाती। फिर भी मै मानता हूँ कि पुर्नाववाह की आज्ञा न पाना अनेक स्त्रियो के लिए जुल्म हो सकता है।

किंतु हम इसके मूल तत्त्व की ओर ध्यान देना चाहिए। वे विशेष रूप से समाजपरक हैं। प्रत्येक देश के उच्च वर्गों म, जसा आकडो स पता चलता है पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो की सख्या बहुत अधिक होती है। उच्च वर्गों म स्त्रिया पीढी-दर-पीढी (केवल घर के हल्के स काम करते हुए) सुख स जीवन व्यतीत करती है। हम आकडो स पता लगता है कि लडकियो बहुत

थोड़े समय में लड़कों से संख्या में आगे बढ़ जायेंगी। जान भर ही गया न हो, यद्यपि आजकल वे भी लड़कों की भाँति बहिर्गमन परिश्रम कर रही हैं। तो उच्च वर्णों में लड़कियों की संख्या निम्न वर्णों की अपेक्षा बहुत अधिक है। निम्न वर्णों की परिस्थिति बिलकुल भिन्न है। वे सभी कठिन परिश्रम करते हैं, स्त्रियों को तो और भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें घर के सब काम-काज के सिवा जीविका कमाने में भी हाथ बँटाना पड़ता है।

विधवाओं के विवाह न करने का जो प्रश्न है, उसके संबंध में मेरा कहना है कि प्रथम दो वर्णों में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से बहुत अधिक है। इससे एक दुविधा उत्पन्न हो गयी है। या तो विवाह न करनेवाली विधवाओं की समस्या है अथवा पति न पानेवाली नवयुवतियों का प्रश्न है—विधवाओं की समस्या या वयस्क कुमारियों की समस्या। इन दोनों में से किसी एक पर विचार करना होगा। अब पुनः इस बात का स्मरण कीजिए कि भारतीयों का मन समाजपरक है। उनका कहना है कि हम विधवाओं की समस्या को गौण मानते हैं।

अब देखें, धर्म इस संबंध में क्या कहता है। हिंदू धर्म सान्त्वना लेकर आता है। आप एक बात स्मरण रखें, यथार्थ धार्मिक स्त्री या पुरुष तो कभी विवाह ही नहीं करेगा। धार्मिक स्त्री विधवा होने पर सोचने लगती है, 'परमात्मा ने मुझे यह अवसर दे दिया है। अब मैं अब ईश्वर की पूजा अर्चना करूँ।' अवश्य उनमें से सभी ईश्वर पर ध्यान नहीं लगा सकतीं। कुछ के लिए तो यह सर्वथा असंभव होता है और इसलिए उन्हें कष्ट होता है।

इसके बाद हम स्त्री को एक पुत्री के रूप में लेंगे। भारतीय घरों में कन्या एक समस्या है। कन्या और जाति विभाग मिलकर बेचारे हिंदू को पीस डालते हैं, क्योंकि कन्या का विवाह अपनी ही जाति में होना चाहिए, अपनी ही जाति के अंतर्गत एक ही उपजाति में होना चाहिए। और इसीलिए लड़की का विवाह करने के लिए कभी-कभी तो पिता को भिखारी बन जाना पड़ता है। वर का पिता अपने पुत्र के लिए बहुत अधिक मूल्य माँगता है। इसलिए कन्या के पिता को कभी कभी अपना सब कुछ बेचकर अपनी कन्या का विवाह करना पड़ता है। यही कारण है कि कन्या हिंदू-जीवन की एक बड़ी समस्या है। आश्चर्य की बात तो यह है कि संस्कृत में कन्या को 'दुहिता' कहते हैं। इस शब्द की मूल उत्पत्ति इस प्रकार है कि प्राचीनकाल में कन्याएँ ही गायें दुहा करती थीं। इसलिए 'दुह्' क्रिया से 'दुहिता' संज्ञा बन गयी। अतएव दूध दुहनेवाली को 'दुहिता' कहते हैं। इसके पश्चात् लोगों ने 'दुहिता' का नवीन अर्थ लगाया—जो घर का सारा दूध दुह ले जाती है, उसे दुहिता कहते हैं।

समाज में भारतीय स्त्रियों के ये ही विभिन्न संबंध हैं। जैसा मैंने आप लोगों को बताया है, माता का स्थान सबसे उच्च है, दूसरा स्थान पत्नी का है, उसके बाद कन्या का स्थान आता है।

हमारे स्त्री-पुरुषों के सामाजिक जीवन और संबंधों का तारतम्य जाल के समान जटिल है। हम अपने बड़ों के सामने अपनी पत्नी से बात नहीं कर सकते, केवल अपने छोटों के सामने या अकेले में ही हम उससे बातें कर सकते हैं। यदि मेरा विवाह हुआ होता, तो मैं अपनी पत्नी से अपने छोटे भाई, भतीजे और भानजों के सामने बात कर सकता, किंतु अपनी बड़ी बहन,

माता और पिता के सामने नही। मैं अपनी बहनो से उनके पति के सबध मे कोई बात नही कर सकता। बात यह है कि हिंदू धर्म के अनुसार समाज-व्यवस्था का अतिम आदर्श सन्यास ही है। इस सर्वोच्च एव पवित्रतम आदर्श की तुलना मे विवाह निम्न कोटि की चीज है यद्यपि सापेक्षिक दृष्टि से सर्वोच्च आदर्श की ओर ले जानेवाला वह एक सोपान है। इसीलिए कुटुम्ब मे दाम्पत्य प्रेम सबधी बातें करना निषिद्ध माना गया है। मैं अपनी बहन अपने भाई, अपनी माता या दूसरो के सामने उपन्यास नही पढ सकता मुझे पुस्तक बद कर देनी पडती है।

शिक्षा और सस्कृति की बात पुरुषो पर अवलम्बित है अर्थात जहा के पुरुष शिक्षित और सुसस्कृत हैं वहा की स्त्रिया भी शिक्षिता और सभ्य है, जहा पुरुष सभ्य और शिक्षित नही वहा स्त्रिया भी वैसी ही हैं। आप लोग जानते है कि पुराने जमाने मे हिंदुओ के प्राचीन रीति रिवाज के अनुसार प्राथमिक शिक्षा ग्राम पचायत के अधीन है। अति प्राचीन काल से सारी भूमि राष्ट्र या राजा की समझी जाती है। भूमि पर व्यक्तिविशेष का कोई अधिकार नही होता। भारत मे सारा राजस्व भूमि के लगान से ही आता है क्योकि प्रत्येक व्यक्ति सरकार से ही भूमि पाता है। यह भूमि पाच दस बीस या सौ परिवारो की साधारण सम्पत्ति के रूप मे रहती है। वे ही भूमि की सारी व्यवस्था करते है सरकार को मालगुजारी देते हैं बीमारो की चिकित्सा के लिए एक वैद्य और बालक-बालिकाओ की शिक्षा के लिए एक शिक्षक का प्रबध करते हैं आदि आदि।

एक वयोवृद्ध अध्यापक द्वारा पढाई गई एक सदाचार की पुस्तक मे से हम एक पाठ कठस्थ कराया गया था जो मुझे आज तक स्मरण है

> "गाव की भलाई के लिए मनुष्य अपने कुल को छोड दे।
> देश की भलाई के लिए मनुष्य अपने गाव को छोड दे।
> मानव समाज की भलाई के लिए मनुष्य अपने देश को छोड दे।
> आत्म कल्याण के लिए मनुष्य अपना सर्वस्व छोड दे।"[1]

आजकल यूरोपीय ढग पर उच्च शिक्षा देने की ओर लोगो का विशेष ध्यान है। स्त्रियो को भी ज्यादातर लोगो का मत यह उच्च शिक्षा देने के पक्ष मे है। हा भारत मे कुछ ऐसे भी लोग हैं जो यह पसद नही करते पर प्रबल मत स्त्री शिक्षा के पक्षपातियो का है। यह आश्चर्य की बात है कि आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयो के दरवाजे स्त्रियो के लिए आज भी बद हैं। यही हालत हार्वर्ड और येल के विश्वविद्यालयो की हैं, पर हमारे यहा ऐसा नही है। मुझे स्मरण है जिस साल मैं बी० ए० मे उत्तीर्ण हुआ उस साल कई लडकिया भी बी० ए० मे उत्तीर्ण हुई थी। उनके लिए पाठ्य पुस्तकें और अन्यान्य विषय लडको के ही समान थे फिर भी बहुत-सी लडकिया बडी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुई। हमारे धर्म मे तो स्त्रियो को शिक्षा देने का निषेध है ही नही। लडकियो को इसी प्रकार पढाना चाहिए, उन्हे इसी प्रकार शिक्षा देनी चाहिए। और पुरान ग्रथो मे तो हम यह भी लिखा मिलता है कि विद्यापीठो मे लडके लडकियाँ दोनो ही जाते थे। पर बाद मे सारे राष्ट्र की ही शिक्षा उपेक्षित हो गई।

[1] त्यजेत् कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुल त्यजेत् ग्राम जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत्॥

भारत का आदर्श है—आत्मा की मुक्ति। यह संसार असार है। यह केवल एक कल्पना है। एक स्वप्न है। यह जीवन ऐसे कई लाख जीवनों में से एक है। यह सारा विश्व ब्रह्माण्ड केवल माया है मरीचिका है मरीचिकाओं के क्रीडा का घर है। यही हमारा दर्शन है। बच्चे जीवन को देखकर प्रसन्न होते हैं और समझते हैं कि यह बडा सुन्दर और अच्छा है किन्तु कुछ ही वर्षों के बाद उनका वह सुख-स्वप्न टूट जाता है। उन्होंने जीवन का आरम्भ किया था रोते हुए और रोते ही हुए वे जीवन को छोड़ेंगे भी। राष्ट्र अपनी जवानी के जोश में समझते हैं कि हम सब कुछ कर सकते हैं—हमी पृथ्वी के देवता हैं हमें ही ईश्वर ने चुना है। वे सोचते हैं कि परमात्मा ने उन्हें संसार पर शासन करने, परमात्मा के कार्यों को आगे बढ़ाने जो मन चाहे सो करने तथा दुनिया को उलट देने तक का अधिकार दिया है—लूटने मारने और कत्ल करने की उन्हें छुट्टी दे दी है। वस्तुत वे ऐसा इसलिए सोचते हैं कि वे केवल नासमझ बच्चे हैं। कितने साम्राज्यों पर साम्राज्य उठे चमके और महिमान्वित हुए और बाद में कहा विलीन हो गए कौन जानता है? सम्भवत वे ध्वंस का एक विराट स्तूप मात्र रह गये हों। कमल के पत्ते

नलिनी दलगतजलमतितरलम

तद्वज्जीवनमतिशयचपलम।

पर पडी हुई पानी की बूंद इतस्तत डोलती हुई एक क्षण में जल गिर जाती जाती है बस वही हाल इस मृत्युशील जीवन का भी है।[1] जिस ओर हम घूमते हैं नाश ही दिखाई पडता है। जहाँ आज जंगल है, वहा किसी जमाने में अनेक नगरों से पूर्ण कोई साम्राज्य रहा होगा।[2] भारतीयों के प्रधान भाव विचार आदि इसी प्रकार के होते हैं। हम जानते हैं कि आप पाश्चात्यों की नसों में नौजवानी का खून दौड रहा है। किन्तु हम जानते हैं कि मनुष्यों की भाँति राष्ट्रों का भी समय होता है। इस समय यूनान कहाँ है? रोम कहाँ है? कल के शक्तिशाली स्पेन वाले आज कहाँ हैं? इन सबको देखते हुए कौन जानता है भारत का आगे क्या होगा?

भगवान् लंबी चौडी बातों द्वारा नहीं मिलता। बौद्धिक शक्ति द्वारा भी वह नहीं मिलता विजेता की अतुल शक्ति द्वारा भी वह नहीं प्राप्त होता। पर जो व्यक्ति विश्व के मूल रहस्य को जानता है और यह समझता है कि उस परमात्मा के अतिरिक्त अन्य सभी कुछ नाशवान है, केवल उसी के पास परमात्मा प्रकट होता है दूसरों के पास नहीं। भारत ने कई युगों की अनुभूति से यह पाठ सीखा है। उसने परमात्मा की ओर अपनी दृष्टि रखी है। अवश्य उसने बहुत सी गलतियाँ की हैं कूडा का ढेर उस जाति पर सदा है। किन्तु जिन जातियों में अच्छी अच्छी संस्थाएँ हैं वे भी तो मर जाती हैं। फिर पाँच दिनों में बनने वाली और छठवें दिन टूट जाने वाली इन दिखावटी पश्चिमी संस्थाओं की भला क्या बिसात? इन मुट्ठी भर राष्ट्रों में से एक भी तो दो शताब्दियों तक जीवित नहीं रह सकता। किन्तु हमारी जाति की संस्थाएँ युगों की कसौटी पर खरी उतरी हैं। हिंदुओं का कहना है—हमने पृथ्वी के समस्त पुराने राष्ट्रों को दफना दिया है और सभी नये राष्ट्रों को भी दफना देने के लिये यहाँ खडे हैं क्योंकि हमारा

१ शंकराचार्यकृत 'मोहमुद्गर'

२ पुरायत्र स्तानम पुनितमधना भवभूति।

लक्ष्य यह जगत नहीं, वरन जगदातीत है। जसा आपका आदश है, आप वस ही हो जाएँगे। यदि आपका आदश अनित्य है पार्थिव है, तो आप वसे ही हो जायेंगे। यदि आपका आदश जड है, तो आप भी जड हो जायग। स्मरण रह, हमारा आदश है परमात्मा। एकमात्र वही अविनाशी है—अय किसी का अस्तित्व नहीं है, और उन अविनाशी परमात्मा की भांति हम भी सदा जीवित रहग।[२]

२ १८ जनवरी १९०० कैलीफोर्निया के पैसेडना स्थित शेक्सपियर क्लब में भारतीय नारी सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर म दिए गए भाषण के अश

त्याग और तपस्या की मूर्ति

मो० क० गांधी

मैंने लिखा है कि स्त्री अहिंसा का अवतार है। अहिंसा का अर्थ है अनंत प्रेम। और अनंत प्रेम का अर्थ होता है कष्ट उठाने की असीम क्षमता। स्त्री को छोड़कर, जो पुरुष की माता है, इस प्रकार की क्षमता इतनी मात्रा में और कौन दिखाता है। नौ महीने तक बच्चे को पेट में रखकर और उसे अपना रक्त पिलाकर वह अपनी क्षमता प्रदर्शित करती है और इस कष्ट-सहन में आनंद मानती है। प्रसव वेदना में जो पीड़ा होती है, उससे बढ़कर और कौन सी पीड़ा हो सकती है, मगर वह संतान को जन्म देने की खुशी में उसे भूल जाती है। और फिर दिन प्रतिदिन बच्चे को बड़ा करने में जो कष्ट वह उठाती है सो और कौन उठा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि वह अपना प्रेम मानव जाति को बाँट दे, यह भूल जाय कि वह पुरुष के भोग की वस्तु थी अथवा हो सकती है। और तब वह पुरुष से बढ़कर—उसकी माता, उसका निर्माण करने वाली और उसका मूक पथप्रदर्शक होने का गौरवपूर्ण पद धारण कर लेगी। युद्ध में फँसी हुई दुनिया को शांति की कला सिखाने का काम भगवान ने स्त्री पर सौंपा है। सारी दुनिया शांति रूपी अमृत के लिए तड़प रही है। वह सत्याग्रह की नेत्री बन सकती है, उसके लिए पुस्तकों के अर्जित ज्ञान की आवश्यकता नहीं है बल्कि कष्ट-सहन और श्रद्धा से निर्मित बलवान हृदय की आवश्यकता है।

बरसों पहले ससून अस्पताल पूना में जब मैं बीमार पड़ा था, तब मेरी चारशीला नर्स ने एक स्त्री की कहानी सुनाई थी जिसने क्लोरोफार्म लेने से इंकार कर दिया था, क्योंकि उसके पेट में बच्चा था और वह उसकी जान खतरे में नहीं डालना चाहती थी। उस स्त्री को एक कष्टप्रद चीरा लगवाना था। उसके लिए बेहोशी की दवा आवश्यक थी। अपने बच्चे को बचाने के लिए वह बड़े से बड़ा कष्ट सहने को तैयार थी।[1]

यह आवश्यक है कि हम समझ लें कि स्त्रियों के सुधार की जो बातें हम करते हैं उनका अर्थ क्या है। इनका अर्थ है कि हम पहले से मान लेते हैं कि स्त्रियों का पतन हुआ है। अगर यह सही है तो हमें इससे आगे विचार करना चाहिए कि यह पतन किस कारण हुआ और किस प्रकार हुआ। इन बातों पर गंभीर रूप से विचार करना हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। सम्पूर्ण हिंदुस्तान की यात्रा करके, मुझे यह अनुभव हुआ है कि सारा वर्तमान आन्दोलन हमारे देशवासियों के एक बहुत ही नगण्य भाग तक सीमित है। यह भाग इस विस्तृत नभोमण्डल में एक बिंदु के समान है। हमारे देश के करोड़ों स्त्री पुरुषों का जीवन इस आंदोलन की जरा सी भी जानकारी के बिना बीतता है। इस देश के ८५ प्रतिशत लोग दुनिया से अलग रह कर अपना जीवन बिताते हैं। इन्हें पता नहीं रहता कि इनके चारों ओर दुनिया में क्या हो रहा है। पर ये स्त्री और पुरुष, अशिक्षित होते हुए भी अपना जीवन सुचारु और समुचित रीति से बिताते हैं। इन्हें लगभग एक समान शिक्षा मिलती है अथवा यह कहना ठीक होगा कि समान रूप से ये शिक्षा से दूर रहते हैं। लेकिन जीवन में दोनों एक दूसरे की सहायता करते हैं जैसा कि उन्हें करना चाहिए। यदि उनका जीवन किसी भी अंश में अपूर्ण है तो इसका कारण बाकी १५ प्रतिशत लोगों के जीवन की अपूर्णता में खोजा जा सकता है। अगर शिक्षित समाज की हमारी बहनें हमारे देशवासियों के ८५ प्रतिशत लोगों के जीवन का अध्ययन करें तो उन्हें समाज के सुंदर कार्यक्रम चलाने के लिए यथेष्ट सामग्री मिलेगी।

मैं जो विचार प्रकट करने जा रहा हूँ वह केवल उपर्युक्त १५ प्रतिशत लोगों तक सीमित रखूंगा। ऐसा करने पर मेरे लिए स्त्री और पुरुषों की समान कठिनाइयों पर कुछ विचार करना अप्रासंगिक होगा। हमारे सामने विचारणीय विषय है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का सुधार। कानून बनाने में अधिकतर पुरुषों का हाथ रहा है और पुरुष इस स्वनियोजित कार्य को पूरा करने में सदा न्यायशील और विवेकशील नहीं रहा है। स्त्रियों के सुधार में हमारी सबसे अधिक कोशिश यह होनी चाहिए कि हमारे शास्त्रों में स्त्रियों का जातीय स्वभाव' कहकर उनपर जो दोषारोपण किये गये हैं उन्हें हम दूर करें। यह उद्योग कौन करेगा और किस प्रकार करेगा? मेरी नम्र सम्मति में, इस प्रकार का उद्योग करने के लिए हमें सीता, दमयंती और द्रौपदी जैसी पवित्र, दृढ़ और आत्मसंयमी स्त्रियां उत्पन्न करनी होंगी। यदि हम ऐसी स्त्रियाँ उत्पन्न करेंगे तो हमारी आधुनिक बहिनों की भी हिंदू समाज में उसी प्रकार प्रशंसा होगी जिस प्रकार उनकी प्राचीन प्रतिमूर्तियों की होती है। उनके वचन उसी प्रकार प्रामाणिक माने जायेंगे जिस प्रकार शास्त्रों के वचन प्रामाणिक माने जाते हैं। हमारे स्मृति शास्त्रों में उन पर

१ हरिजन २४ २ १९४०

यदा कदा जो आक्षेप किये गए हैं उनपर हम लाज आयेगी और हम शीघ्र ही उन्हें भूल जायेंगे। इस प्रकार की नारियाँ हिंदू धर्म में अतीत काल में भी हो चुकी हैं और भविष्य में भी होंगी, जिससे धर्म में हमारा विश्वास मजबूत होगा। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यह समाज शीघ्र ही ऐसी स्त्रियाँ उत्पन्न करे।

हम स्त्रियों के पतन के मूल कारणों पर विचार कर चुके। हम उस आदर्श पर भी विचार कर चुके जिसे पूरा करके हम अपने देश की स्त्रियों की वर्तमान अवस्था में सुधार कर सकते हैं। अवश्य ही ऐसी स्त्रियों की संख्या, जो उस आदर्श को पूरा कर सकेंगी, थोड़ी होगी, इसलिए अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि यदि कोशिश की जाए तो साधारण स्त्रियाँ क्या कर सकती हैं। पहिले कोशिश यह की जानी चाहिए कि जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक संख्या में स्त्रियों को उनकी वर्तमान अवस्था का बोध कराया जाय। मैं उन लोगों में नहीं हूँ, जिनका विश्वास है कि यह कोशिश शिक्षा द्वारा ही हो सकती है। इस आधार पर काम करने का अर्थ यह होगा कि हम अपने ध्येय की पूर्ति अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित कर देंगे। मैंने पग-पग पर अनुभव किया है कि इतने काल तक प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है। हम स्त्रियों को शिक्षा दिये बगैर भी भलीभाँति समझा सकते हैं कि उनकी वर्तमान अवस्था कितनी शोचनीय है। स्त्री-पुरुष की सहभागिनी है। वह बुद्धि में पुरुष से तुच्छ नहीं है, उसे पुरुष के हर छोटे-बड़े काम में भाग लेने का अधिकार है। उसे पुरुष की ही भाँति समानता, स्वाधीनता और स्वतंत्रता पाने का अधिकार है। उसे अपने कार्यक्षेत्र में उसी प्रकार पूर्ण अधिकार प्राप्त है, जिस प्रकार पुरुष को अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण अधिकार प्राप्त है। यह एक साधारण-सी बात होनी चाहिए केवल पढ़ी और लिखी होने के फलस्वरूप नहीं, केवल एक दूषित प्रथा के बल पर मूर्ख से मूर्ख और अयोग्य से अयोग्य पुरुष तक स्त्रियों के ऊपर श्रेष्ठता पर प्राप्त करते आये हैं, यद्यपि इसके वे अधिकारी नहीं हैं और ऐसा अधिकार उन्हें नहीं मिलना चाहिए। हमारे बहुत से आन्दोलन स्त्रियों की शोचनीय अवस्था के ही कारण पूरी तौर से सफल नहीं हो पाते। हमारे बहुत से कामों का इच्छित फल नहीं होता। हमारी स्थिति अशर्फियाँ लुटें पर कोयले पर मुहर का अनुकरण करने वाले व्यापारी की तरह है जो फिजूल बातों में तो धन लुटाता है पर छोटी आवश्यक बातों में कंजूसी कर जाता है और अपने व्यापार में, अपने व्यवसाय में यथेष्ट पूँजी नहीं लगाता।

यह ठीक है कि लिखना और पढ़ना जाने बिना भी बहुत-सा उत्तम और लाभप्रद काम किया जा सकता है फिर भी मेरा पक्का विश्वास है कि आप लिखना और पढ़ना सीखे बिना ज्यादा कुछ नहीं कर सकतीं। लिखना-पढ़ना सीख लेने से बुद्धि पैनी हो जाती है और सत्कार्यों के करने का उत्साह मिलता है। मैंने कभी लिखने और पढ़ने की जानकारी को अनावश्यक रूप में महत्त्व नहीं दिया है किन्तु मैं उनको उसका उचित स्थान देता रहा हूँ। मैंने बार-बार कहा है कि पुरुषों के लिए यह उचित नहीं है कि वे अशिक्षा के आधार पर स्त्रियों को समानाधिकार से वंचित रखें लेकिन स्त्रियों के लिए शिक्षा आवश्यक है जिससे वे इन प्राकृतिक अधिकारों को बनाए रखने, इनमें सुधार करने तथा इनका प्रचार करने में समर्थ हो सकें। शिक्षा आवश्यक इसलिए भी है कि इसके बिना सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। यह

फिर भी इसमें कोई शक नहीं कि दोनों एक जगह पहुँच कर अलग-अलग हो जाते हैं। जहाँ यह बात सच है कि दोनों मूल में एक हैं वहाँ यह बात भी उतनी ही सच है कि दोनों की शरीर रचना में बहुत अंतर है। इसलिए दोनों के कार्य भी अलग अलग होने चाहिए। मातृत्व के कर्त्तव्यों को पूरा करने को जिसके लिए अधिकांश स्त्रियां सदा तैयारी रहेंगी, जिन गुणों की आवश्यकता है उनका पुरुषों में होना जरूरी नहीं है। स्त्री निष्क्रिय (पैसिव) होती है और पुरुष सक्रिय (एक्टिव) होता है। स्त्री स्वभाव से घर की स्वामिनी होती है। पुरुष कमाता है स्त्री उस कमाई का उपयोग करती है और घर के लोगों को रोटी देती है। वह हर तरह से पालनहार है। मानवजाति के दुधमुंहे बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करना उसका विशेष और एकमात्र अधिकार है। वह सार संभाल न करें तो मानवजाति नष्ट हो जाय।

मेरे मत में स्त्री को घर छोड़कर घर की रक्षा के निमित्त कंधे पर बंदूक धरने के लिए आह्वान करने अथवा इसके लिए उसे प्रोत्साहित करने में स्त्री और पुरुष दोनों का ही पतन है। *वह तो फिर से जंगली बनने और विनाश का आरम्भ हुआ।* जिस घोड़े पर पुरुष सवार है उसी पर स्त्री भी सवार होने का प्रयत्न करके अपने को तो गिराती ही है पुरुष को भी गिरा देती है। पुरुष यदि अपनी सहचरी को अपना विशेष क्षेत्र छोड़कर भागने का प्रलोभन दिखाएगा अथवा इसके लिए उसे मजबूर करेगा तो इसका पाप उसीके सिर होगा। अपने घर को सुव्यवस्थित और सुरक्षा में रखने में भी उतनी ही वीरता है जितनी बाहर से उसकी रक्षा करने में है।

मैं करोड़ों किसानों को उनके स्वाभाविक वातावरण में देख चुका हूँ और छोटे गांव में भी जब उन्हें रोज देखता हूँ तो मेरा ध्यान बरबस उनके कार्यक्षेत्र के स्वाभाविक विभाजन की ओर जाता है। कोई भी स्त्री लुहार अथवा बढ़ई नहीं। लेकिन खेतों में स्त्री और पुरुष दोनों काम करते हैं।[1]

यों स्त्रियों के अधिकारों के बारे में मैं जरा भी झुकने को तैयार नहीं हूँ। मेरे मतानुसार कानून को स्त्री और पुरुष के बीच किसी भी प्रकार की असमानता नहीं रहनी चाहिए। *हमें लड़के और लड़की के बीच किसी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिए।* जैसे जैसे स्त्री जाति को शिक्षा-द्वारा अपनी शक्ति का भान होता जायगा वैसे वैसे उसके साथ आज जो असम व्यवहार किया जाता है उसका अधिकाधिक उग्र विरोध होगा। लेकिन कागजात में भरे कानूनों के सुधार से इस स्थिति में बहुत थोड़ा परिवर्तन होगा। इस व्याधि की जड़ जैसा कि लोग समझते हैं उससे कहीं अधिक गहरी है। पुरुष का सत्ता और कीर्ति के लिए लोलुप होना इसका मूल कारण है और इसमें भी बढ़कर कारण स्त्री पुरुष की परस्पर विषय-वासना है। दूसरे पुरुष मरने के बाद अपनी कल्पित अमरता की अपेक्षा रखता है अतएव अगर सब संतानों में समान रूप से सम्पत्ति का बंटवारा हो जाय तो वह टुकड़े टुकड़े हो जाय और इस कारण पुरुष का नाम अमर न रह सके। इसी भय में वह चाहता है कि सारी सम्पत्ति न हो तो उसका बड़ा भाग विरासत में अवश्य मिलना चाहिए। अधिकांश स्त्रियां विवाहिता होती हैं और कानून उनके विरुद्ध

[1] हरिजन २४-२-१९४०

होते हुए भी वे अपने पतियों की सत्ता और अधिकार में पूरी तरह हाथ बँटाती हैं तथा अपने को अपने श्रीमान् पति की श्रीमती अमुक कहलाने में आनंद और गर्व का अनुभव करती हैं। अतएव सैद्धांतिक चर्चा के समय मतदान और कानून के संबंध में अधिकारों की समानता के लिए भले ही वे अपना मत दें लेकिन जब तदनुसार आचरण का अवसर आता है तब वे भी अपनी सत्ता और अपने अधिकार को छोड़ना नहीं चाहतीं।

इस कारण यद्यपि मैं इस बात का हमेशा समर्थक रहा हूँ कि स्त्री-जाति पर से कानून के सारे बंधन हटा दिए जाने चाहिए तथापि जब तक भारत की पढ़ी लिखी सुशिक्षित बहनें इस व्याधि के मूल कारण को मिटाने के लिए प्रयत्न नहीं करतीं तब तक यह मुश्किल ही है। मैं उनसे नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वे स्वयं इसके लिए प्रयत्न करें। मेरे मन में तो स्त्री त्याग और तपश्चर्या की साक्षात् मूर्ति है। सार्वजनिक जीवन में उसके प्रवेश के दो फल होने चाहिए एक वातावरण की पवित्रता और दूसरा पुरुष के सम्पत्ति-संग्रह के लोभ पर अंकुश का रहना। उन्हें जानना चाहिए कि लाखों के पास तो विरासत में छोड़ जाने योग्य कोई संपत्ति नहीं होती। इन लाखों में श्रीमंतों की स्त्रियों को यह सीखना चाहिए कि संपत्ति की विरासत स्वेच्छा से छोड़ने और अपने उदाहरण द्वारा दूसरों से छुड़वाने में उनका श्रेय है। माता पिता अपनी संतान को जो चीज समान रूप से विरासत में दे सकते हैं वह तो सिर्फ चारित्र्य और शिक्षा के साधन ही हैं अतएव माता पिता को चाहिए कि वे अपनी सन्तान को स्वावलंबी बनायें जिससे स्वयं परिश्रम करके वे पवित्र जीवन बिता सकें।[1]

नियमतः मैं स्त्री के लिए पति से स्वतंत्र आजीविका की कल्पना नहीं करता। बच्चों का पालन-पोषण और गृहस्थी की देखभाल उसकी सारी शक्ति के व्यय कर डालने के लिए काफी है। एक सुनियमित समाज में उस पर गृहस्थी के खर्च का प्रबंध करने का अतिरिक्त भार नहीं पड़ना चाहिए। पुरुष को गृहस्थी के खर्च का प्रबंध करना चाहिए और स्त्री को गृहस्थी का प्रबंध करना चाहिए। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के श्रम की पूर्ति करेंगे।

इसमें मैं स्त्री के अधिकार पर किसी प्रकार का आक्रमण अथवा उसकी स्वाधीनता का दमन नहीं देखता। मनु के नाम पर जो उक्ति प्रचलित है कि "स्त्री को कभी स्वाधीनता नहीं मिलनी चाहिए" उसे मैं अनुल्लंघनीय नहीं मानता। उससे केवल यही प्रकट होता है कि जिस समय वह कही गयी थी उस समय स्त्रियाँ पराधीन रखी जाती थीं। हमारे ग्रंथों में पत्नी के लिए अर्द्धांगिनी और सहधर्मिणी विशेषण प्रयुक्त हुए हैं। पति अपनी पत्नी को देवी संबोधित करता है जिससे प्रकट होता है कि उसका दर्जा नीचा नहीं था। पर अभाग्य से एक ऐसा समय आया जब स्त्री अपने बहुत से अधिकार और विशेषाधिकारों से वंचित कर दी गयी और नीचे के दर्जे में उतार दी गयी। लेकिन उसके पतन के पतित होने का कोई सवाल ही नहीं उठना क्या कि वह में अधिकारों तथा विशेषाधिकारों की किसी राशि का बोध नहीं होता वह तो कर्तव्यों तथा स्वधर्म का निर्देश करता है। और हमें कोई भी अपने कर्तव्यों से वंचित नहीं कर सकता जब तक हम स्वयं उनसे पीछे न हट जायें। जो स्त्री अपने कर्तव्यों का ज्ञान रखती है और

[1] हिन्दी नवजीवन ७-१-१९२९

उनका पालन करती है वह अपनी गौरवमयी अवस्था का भली भांति समझती है। वह गृहस्थी को चलाती है उसकी स्वामिनी होती है दासी नहीं।[२]

हिन्दू संस्कृति ने स्त्री को अत्यधिक बंधन में डालकर और उसे पति के अधीन रखकर बड़ी भारी भूल की है। इसके कारण पति कभी-कभी अपने अधिकार का दुरुपयोग करता है और पशुवत् व्यवहार करने पर उतारू हो जाते हैं। इस तरह के अत्याचार का कानून का आश्रय लेने में नहीं बल्कि विवाहिता स्त्रियों को सच्चे अर्थ में सुशिक्षित बनाने पतियों के अमानुषी अत्याचार के विरुद्ध लोकमत जाग्रत करने में है। ऐसे मामलों में जिस में काम लेना चाहिए वह अत्यन्त सरल है। किसी संकट ग्रस्त बहिन और उसके पुत्र को दे रोने या अपनी बबसी का अनुभव करने के बजाय उसके भाई और दूसरे रिश्तेदारों को चाहि वे उसकी रक्षा करें उसे यह समझायें सिखायें और विश्वास दिलायें कि एक पापी-दुराचारी की खुशामद करना या उसकी संगति की आशा रखना पत्नी का कर्तव्य नहीं है। यह तो है कि ऐसा पति उसकी जरा भी चिंता नहीं करता, तनिक भी परवाह नहीं रखता। अ कानूनी बंधन को तोड़े बिना ही वह अपने पति से अलग रह सकती है और अपने आप अनुभव कर सकती है कि उसका ब्याह कभी हुआ ही नहीं। अवश्य ही एक हिंदू पत्नी के जो तलाक नहीं दे सकती इस संबंध में कानून की दृष्टि से भी दो मार्ग खुले हैं एक मारपीट के कारण पति को सजा दिलाना और दूसरा उससे जीविका के लिए आजीवन सहायता पाने लेकिन अनुभव से मुझे पता चला है कि सर्वथा नहीं तो बहुधा अवश्य ही ये उपाय निरर्थक बुरे सिद्ध हुए हैं। उनके कारण किसी भी सती स्त्री को कभी सुख नहीं मिला उल्टे पर सुधार असंभव नहीं तो कष्टसाध्य अवश्य बन गया है। समाज का इस रास्ते कदापि नहीं चाहिए पत्नी को तो किसी भी हालत में नहीं। ऐसे मामले में यदि लड़की के माता उसका निर्वाह करने में सब तरह समर्थ न हों, सताई हुई स्त्रियों को यह आश्रय प्राप्त हो तो उन्हें भी आश्रय देने वाली अनेक संस्थायें देश में दिन दिन बढ़ रही हैं। एक और रह जाता है वे युवती स्त्रियाँ जो अपने क्रूर पति का साथ छोड़कर अलग हो जाती जिन्हें पति स्वयं घर से निकाल देते हैं और जो तलाक से मिलनेवाली सुविधा प्राप्त नह करना अपनी विषयेच्छा को तृप्त करेंगी। मेरे विचार से यह कोई इतना गंभीर प्रश्न न क्योंकि जिस समाज ने युगों से तलाक की प्रथा को त्याज्य मान रखा है उस समाज की एक बार वैवाहिक जीवन का कटु अनुभव पा लेने पर दुबारा विवाह करना ही नहीं चा दूषित कल्पना के कारण शोक और दुख का जो साम्राज्य समाज में फैला हुआ है वह य मौलिक विचार और नया दृष्टिकोण पाने ही नष्ट हो जायगा।[१]

यह सोचकर दुख होता है कि स्मृतियों में ऐसे श्लोक हैं जिन पर उन पुरुषों की श्रद्धा हो सकती जो अपनी ही भाँति स्त्री की स्वाधीनता की कामना करते हैं और उस समस्त को मानते हैं। दुख यह सोचकर और बढ़ जाता है कि सनातनियों की ओर से प्रस

२ हरिजन १२ १० १९३४
१ हिन्दी नवजीवन ३ १० १९२४

काम तो उन बहिनों को ही करना होगा जिन्होंने मिथ्या शिक्षा का उतार फेंका है और जो जानती है कि स्त्रियों के साथ क्या अत्याचार हुए हैं। स्त्रियों की आजादी का, भारत की आजादी का छूआछूत दूर करने का लोगों की आर्थिक अवस्था सुधारने आदि का कोई भी सवाल ले लीजिए सब सवाल एक ही सवाल में मिल जाते हैं और वह सवाल गाँव में घुसने और ग्रामीण जीवन का पुनर्सघटन अथवा सुधार करने का है।[1]

मैं सीता को आदर्श पत्नी और राम को आदर्श पति मानता हूँ। सीता राम की गुलाम नहीं थी। अथवा दोनों एक-दूसरे के गुलाम थे। राम सदा सीता का ध्यान रखते थे। जहाँ सच्चा प्रेम होता है वहाँ यह प्रश्न उठता ही नहीं है। और जहाँ सच्चा प्रेम नहीं होता वहाँ किसी प्रकार का बंधन कभी रहा ही नहीं है। आजकल की हिन्दू गृहस्थी पर अग्नि पड़ता है। पति और पत्नी विवाह हो जाने के बाद भी एक-दूसरे के प्यार में कुछ नहीं जानते। शास्त्राज्ञा रीति रिवाज तथा दम्पतियों की निष्कपट जिन्दगी अधिकांश हिन्दू घरों में शान्ति बनाए रखती है। लेकिन जब पति अथवा पत्नी में से किसी के विचार साधारण प्रचलित विचारों से भिन्न होते हैं तो खटपट हो जाने का भय रहता है। पति को बात यह है कि उसे कर्तव्यपरायणता की चिन्ता नहीं सताती। वह यह नहीं सोचता कि अपनी जीवन-सहचरी से भी परामर्श ले लेना उसका कर्तव्य है। वह अपनी भार्या को अपनी सम्पत्ति मानता है। और बेचारी पत्नी जो अपने पति के दावे पर विश्वास करती है बहुधा अपने को दबा लिया करती है। पर मैं समझता हूँ कि इस स्थिति से उबरने का रास्ता है। मीराबाई ने यह मार्ग दिखा दिया है। जब पत्नी अपने को सही समझे और कोई महत् उद्देश्य लेकर पति का विरोध करे तब उसे पूरा अधिकार है कि वह अपने चुने हुए मार्ग पर चले और परिणाम का नम्रता और वीरता के साथ सामना करे।[2]

२ हिन्दी नवजीवन ३ मई १६२६
२ हिन्दी नवजीवन २२ १० १६२६

स्थापित न कर पाता। समाज को बाधने का यह पहला काम नारियों का है।

प्रकृति की सम्पूर्णसृष्टि प्रक्रिया अथाह रूप से गोपनीय है उसकी स्वत प्रवर्त्तन की क्रिया द्विधाहीन है। आदिप्राण की यह सहज प्रवत्तना नारी के स्वभाव मे है। इसीलिए मनुष्य ने नारी-स्वभाव को रहस्यमय की सज्ञा दी है। इसी कारण कई बार अकस्मात नारी के स्वभाव मे जो सवेगात्मक प्रबल भावावेग दिखाई देता है वह तर्क के परे है—वह आवश्यकतानुसार यथाविधि खोदे गये जलाशय की तरह नही बल्कि उत्स की तरह है जिसका कारण उसके अपने अहैतुक रहस्य मे निहित है।

प्रेम का स्नेह का रहस्य बहुत प्राचीन और दुगम है। उसे अपनी सार्थकता के लिए तर्क की अपेक्षा नही है। इसलिए ज्योही लडकी विवाहित होकर घर मे प्रवेश करती है त्याही वही से गृहिणी अवतीर्ण हो जाती है और ज्योही शिशु उसकी गोद म आया कि तुरन्त मा उपस्थित हो जाती है। जीवलोक मे परिपक्व बुद्धि के लोग तो बहुत बाद म आये हैं। बहुत ढूढने और सघर्ष करने के बाद वे अपनी जगह खोज पाये। द्विधा को छोडकर चलने म मनुष्य को समय लगा। इस द्विधा रूपी तरग के उठने गिरने म शताब्दी पर शताब्दिया बीतती चली गयी और भारी भ्रम फलता रहा और उसके कारण मानव के इतिहास म उथल पुथल भी होती रही। कदाचित् पुरुष की सृष्टि विनाश के गर्भ म विलीन हो गयी और उसे नये सिरे से अपनी कीर्ति की भूमिका बाधनी पडी। इस बार-बार की परीक्षा के कारण पुरुष का कर्म केवल अपनी देह ही बदलता रहा। अभिज्ञता की इस नित्य प्रदक्षिणा के कारण यदि वह आगे बढ पाया तो बच जाएगा और यदि उसे अपनी भूल को सुधारने का मौका नही मिला तो जीवन निर्वाह मे पडी दरारें बढ़ते-बढ़ते फिर उसे विनाश के गर्त म खीच लगी। पुरुष द्वारा रची गयी सभ्यता आदि काल से इसी प्रकार बनती बिगडती चलती रही है। इस बीच नारी म प्रेयसी और जननी प्रकृति के दूत के रूप म अपना काम करती जा रही है। और प्रबल आवेगपूर्ण सघर्ष के द्वारा अपने ससार-क्षेत्र म बीच-बीच म अग्निकाड भी करती आ रही है। यह प्रचड आवेग मानो विश्व प्रकृति की प्रलय लीला झझा और दावाग्नि की तरह आकस्मिक और आत्मघाती है।

पुरुष अपनी दुनिया के लिए अपनी दुविधा के कारण हर बार नवागन्तुक है। आज तक कितनी ही बार उसने अपना विधि विधान बनाया है। विधाता ने उसका जीवन-पथ निर्धारित नही किया है। कितने देशो और कितने कालो म उसे अपना मार्ग बनाना पडा है। किसी काल म उसका पथ विपथ हो गया और किसी अन्य काल म उसका इतिहास उलट गया यहाँ तक कि अन्तर्धान हो गया।

नई-नई सभ्यताओ की उथल-पुथल के बीच नारी-जीवन की मूल धारा एक प्रशस्त पथ पर चल रही है। प्रकृति ने उसे हृदय-सपन्नता दी है किंतु उसको नित्य कौतूहलप्रवण बुद्धि के द्वारा नये-नये अध्यवसायो की परख उसे नही करने दी गयी।

पुरुष को नौकरी के लिए एक आफिस से दूसरे आफिस म दरवाजे-दरवाजे चक्कर काटने पडते हैं। अधिकाश पुरुष जीविका के लिए ऐसे कामो को स्वीकार करने को विवश हो जाते हैं जिन्हे करने को उनका मन गवाही नही देता और न उनमे उतनी क्षमता ही होती है। कठोर

परिश्रम के द्वारा विभिन्न प्रकार के काम करने की क्षमता उन्हें प्राप्त करनी पड़ती है। इन एस कामों म तीन चौथाई पुरुष सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। किंतु गहिणी और जननी के रूप म नारियों का काम उनका अपना काम है वह उनके स्वभाव के अनुरूप है और सहज है, इसलिए सधा हुआ ही है।

विभिन्न विघ्न-बाधाओं को पार कर प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने पौरुष से अनुकूल बनाकर, पुरुष सफलता प्राप्त करता है। ऐसी असाधारण सफलता प्राप्त करने वाले पुरुषों की सख्या कम ही है। किंतु हृदय की रसधारा से अपनी गृहस्थी को शस्यशाली बना देने वाली नारियाँ प्राय घर घर म दिखाई देती हैं। प्रकृति स उन्हें मिली है बिन सीखी पटुता। माधुर्य का ऐश्वर्य उन्हें सहज ही प्राप्य है। जिस नारी के स्वभाव म दुर्भाग्य स उक्त सहज रस नहीं होता वह किसी प्रकार की शिक्षा या अन्य किसी कृत्रिम उपाय म सासारिक क्षेत्र म सफलता प्राप्त नही कर पाती।

जो सबल अनायास मिल जाता है उसम मुसीबत भी है। मुसीबत का एक कारण यह है कि वह अन्य पक्ष के लिए लाभनीय वस्तु होती है। सहज ऐश्वर्यशाली दश को बलवान राष्ट्र सवथा निजी स्वार्थ के लिए दबोचे रखना चाहता है। ऊसर दश के लिए स्वाधीन बने रहना आसान है। जिस पक्षी के डैन सुदर और कठ-स्वर मधुर होना है उसे पिंजरे म बद करके मनुष्य गव का अनुभव करता है, सपत्तिलोलुप इस बात को भूल जाते हैं कि उस पक्षी का सौंदय पूरी वनभूमि का है। नारी हृदय की मधुरता और कुशल सेवा-परायणता को पुरुष न लबे समय से बडे पहरे के भीतर बाड म बद करके अपने व्यक्तिगत अधिकार म रखा है। नारियों के अपने स्वभाव मे ही बधन को सह लेने की प्रवृत्ति होती है इसीलिए वह बधन इतने सहज रूप म दृढ हो गया है।

वास्तव म जीव के पालन-पोषण का काम ही व्यक्तिगत है। वह नव्यक्तिक तत्त्व के हिस्से म नही आता, इसीलिए उसका आनद बहत् तत्त्व का आनद नहीं है, यही तथ्य कि नारियों की निपुणता यद्यपि रस का वहन करती है किन्तु सावजनिक निर्माण आदि के काय म वह आज भी बहुत साधक नहीं हुई है।

उसकी बुद्धि, उसके सस्कार और आचरण निर्दिष्ट सीमा म बँधे होने के कारण युग-युग स प्रभावित हैं। उसकी शिक्षा और विश्वास को बाहरी वहत् अभिज्ञता के बीच सत्य को प्राप्त करने का पूरा सुयोग नहीं मिला। इसीलिए बिना सोचे विचारे सभी अपदेवताओं को वह अमूलक भय और अयोग्य भक्ति का अर्घ्य देती आ रही है। यदि हम सम्पूर्ण दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि इस मोह मुग्धता के कारण जो क्षति हुई है यह कितनी विनाशक है उस भारी बोझ को ढोते हुए उन्नति के दुगम पथ पर चलना कितना दुष्कर है। ऐसा नहीं कि कलुषित बुद्धि, मूढमति पुरुष इस देश म कुछ कम है। वे शशव काल मे ही नारी के हाथों पले-बढे हैं और वही नारियों पर सबसे अधिक अत्याचार करते हैं। य जो कलुषित मन के केन्द्र देखते-देखते चारो ओर उठ खडे हुए है सो सब मुख्यत नारियों की विचार बुद्धि पर ही निर्भर है। मानसिक कारागार इसी तरह देश म फैलता जा रहा है और प्रतिदिन उसकी नींव मजबूत होती जा रही है।

दूसरी ओर दुनिया के सभी देशों की नारियाँ अपने व्यक्तिगत संसार की सीमा को लाँघती जा रही हैं। आधुनिक एशिया में भी इस बात के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं। उसका मुख्य कारण यह है कि सभी जगह सीमा बंधनों को तोड़ने का युग आ गया है। वे सब देश जो अपनी अपनी भौगोलिक और राष्ट्रीय प्राचीरों के भीतर बिलकुल बंध हुए थे उनकी वह बाड़ आज उन्हें उस तरह घेरकर रह नहीं सकेगी—व एक-दूसरे के सामने खुल गए हैं। जिससे बहुत कुछ देखने-सुनने का क्षेत्र प्रशस्त हो गया है दृष्टि चिरकाल से अभ्यस्त दिगन्त की सीमा को पार कर गई है। बाहरी दुनिया के साथ घना मेल मिलाप होने से हालत बदलने लगी है। नई-नई आवश्यकताओं के साथ साथ विचारों में परिवर्तन होना आवश्यक हो गया है।

हमारे बचपन में आवश्यकतावश घर से बाहर आने जानेवाली लड़कियों के लिए वह पालकी युग था। सम्भ्रान्त परिवारों में उन पालकियों पर घटाटोप डाल दिया जाता था। जिन लड़कियों ने बेथ्न स्कूल में सबसे पहले प्रवेश लिया उनमें मेरी बड़ी दीदी अग्रणी थीं। वे खुले दरवाजे वाली पालकी में स्कूल जाया करती थीं। उस युग के सम्भ्रान्त परिवारों के आत्मा को इससे कुछ कम आघात नहीं पहुँचा था। उस जमाने में जब एक वस्त्र पहना जाता था लड़कियों का शमीज पहनना निर्लज्जता का लक्षण था। और शालीनता के इस प्रचलित रिवाज की रक्षा करते हुए रेलगाड़ी में आना जाना कोई आसान काम नहीं था।

आज परदेवाली पालकी का युग बहुत दूर चला गया है। वह इतने धन्मा से नहीं गया तेज कदमों से ही गया है। बाहरी परिवर्तनों के साथ-साथ अपने आप यह परिवर्तन हुआ है—इसके लिए किसी को सभा-समिति का आयोजन नहीं करना पड़ा। देखते-देखते लड़कियों की विवाह की आयु बढ़ गई और यह भी सहज ही हो गया। प्राकृतिक कारणों से नदी की जलधारा का परिमाण यदि बढ़ जाय तो उसके तट की सीमा अपने आप हट जाती है। नारियों के जीवन में भी आज सभी दिशाओं से स्वतः ही उनके तट की सीमा दूर हटती जाती है। नदी महानदी का रूप लेती जा रही है।

व्यवहार में ये जो बाहरी परिवर्तन होते हैं वे बाहर तक ही सीमित नहीं रह जाते। आन्तरिक प्रवृत्ति में भी उनका काम चलता रहता है। नारियों का जो मनोभाव उनकी बँधी बधाई दुनिया के लिए उपयोगी होता है खुली हुई दुनिया में तो वह स्थिर रह नहीं सकता। जीवन की विस्तृत भूमिका में वह स्वयं ही आकर उसके मन को प्रोत्साहित कर सोच विचार करना आरंभ कर देता है। उसके पूर्व संस्कारों की कसौटी का काम स्वयं ही आरंभ हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनेक प्रकार की भूलें हो सकती हैं, किंतु बाधाओं का सामना करते करते उन भूलों से उबरना होगा। संकीर्ण सीमा के भीतर मन पहले जिस ढंग से सोचने विचारने का आदी था, उस आदत को पकड़े रहने से सभी के साथ पग पग पर असंगति उत्पन्न होती रहेगी। इस आदत को बदलने में दुख है, मुसीबतें भी हैं किंतु इस बात से डरकर काल के स्रोत को पीछे की तरफ को मोड़ा नहीं जा सकता।

घर गृहस्थी की छोटी सी सीमा के भीतर जब नारियों का जीवन बंधा हुआ था तब नारीसुलभ मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को लेकर उनका काम आसानी से चल जाता था। इसके लिए उन्हें किसी प्रकार की विशेष शिक्षा की जरूरत न होने के कारण एक समय तो स्त्री

शिक्षा को लेकर जबरदस्त विरोध और प्रहसन की सृष्टि हुई थी। उस समय पुरुष स्वयं जिन सब संस्कारों की उपेक्षा करता था, जिन सिद्धांतों पर उसका विश्वास नहीं था, जिन बातों पर वह आचरण नहीं करता था, उन सबका उसने नारियों के मामले में हठपूर्वक समर्थन किया। इसके मूल में उसकी मनोवृत्ति वही थी जो एकतंत्री शासकों की होती है। वे जानते हैं कि अज्ञान और अंधसंस्कार की आब-हवा में इच्छानुसार शासन करने का सुयोग मिल जाता है। मानवोचित स्वाधिकार छोड़ देने के बावजूद मन से संतुष्ट रहने के लिए यह मुग्ध करनेवाली अवस्था एक अनुकूल अवस्था है। हमारे देश के बहुत-से मनुष्यों के मन में आज भी यही भाव है। किंतु काल के साथ संग्राम में उन्हें हार माननी ही पड़ेगी।

काल के प्रभाव से यह जो नारियों का जीवन-क्षेत्र अपने-आप ही फैलता जा रहा है विश्व के समाज में नारियाँ यह जो स्वयं ही पहुँच गई हैं इससे आत्मसम्मान और आत्मरक्षा की खातिर उनके लिए बौद्धिक चर्चा और विचारविमर्श सर्वथा आवश्यक हो उठे हैं। इसलिए ये बाधाएँ भी गति से दूर होती जा रही हैं। भले घर के लड़कियों के लिए निरक्षर होना ही आज सबसे ज्यादा शर्म की बात है, गुजरे जमाने में छात और जूते का व्यवहार करने में लड़कियों को जितनी शर्म लगती थी यह उससे भी ज्यादा शर्म की बात है और अब कूटने-पीसने के मामले में चतुर न होने की बदनामी इसके सामने कुछ भी नहीं है। अर्थात गृहस्थी की बाजार-दर के अनुरूप ही लड़कियों की दर होती थी। किंतु आज जिस विद्या का मूल्य सार्वभौमिक है जो तात्कालिक प्रयोजन के अन्य दावे को पीछे छोड़ जाती है आज लड़की की अधिकतम कीमत को जाँचने के लिए बहुत हद तक उसी विद्या की कसौटी का उपयोग किया जाता है। इसीलिए हमारे देश की लड़कियों का मन घर में ही सीमित समाज को छोड़कर दिन दिन विश्व समाज के पास को होता जा रहा है।

आदि युग में एक दिन पृथ्वी अपनी तप्त निश्वासों के कुहासे में मुँह छिपाए हुए थी उस समय विराट आकाश के ग्रह मण्डल के बीच वह अपना स्थान ही प्राप्त नहीं कर सकी। आखिर-कार एक दिन सूरज की किरण को उसके भीतर प्रवेश करने का रास्ता मिला। तभी से उस मुक्ति के द्वारा धरती का गौरवपूर्ण युग आरंभ हो गया। इसी प्रकार कभी सजल हृदय की उदारता की वाष्प के घन आवरण से हमारी नारियों के मन को अपने बहुत ही पास की दुनिया ने अभिभूत कर रखा था। आज उस आवरण को भेदकर प्रकाश की वह किरण प्रवेश कर रही है जो मुक्त आकाश या सवेरा के आ रही है। बहुत दिनों से जिन संस्कारों की जड़ता के जाल में उनका मन बँधा हुआ था, यद्यपि वह जाल पूरी तरह से कटा नहीं है फिर भी उसमें बहुत बड़ा छेद हो गया है। कितना बड़ा छेद हुआ है यह तो वही जानते हैं जो मेरी तरह पुरानी उम्र के हैं।

आज संसार में सभी जगह नारियाँ घर की चौखट को लाँघकर विश्व के उन्मुक्त आँगन में आ खड़ी हुई हैं। अब इस वृहत संसार के दायित्व को उन्हें स्वीकार करना ही होगा अन्यथा उन्हें लज्जित होना पड़ेगा और यह उनकी असफलता होगी।

मुझे लगता है कि धरती पर नवयुग आ गया है। सुदीर्घ काल से मानव-सभ्यता की व्यवस्था करने का अधिकार पुरुषों के हाथ में था। इस सभ्यता का राष्ट्रवाद अर्थनीति और

सामाजिक शासन पद्धति पुरुषों की बनाई हुई थे। नारियों ने उनके पीछे आड़ में रहकर जहाँ प्रकाश भी नहीं पहुंचता था, केवल घर का काम किया था। इस सभ्यता का शृंगार एकतरफा था। उक्त सभ्यता में मनुष्य की मानसिक संपत्ति का पर्याप्त अभाव हो गया है वह संपत्ति नारियों के हृदय भण्डार में कंजूस के जिम्मे अनखी पड़ी थी। आज उस भण्डार का द्वार खुल गया है।

तरुण युग की मनुष्यविहीन पृथ्वी पर कीचड़ की परत के ऊपर जो विस्तृत जंगल था वह जंगल लाखों वर्षों तक लगातार सूर्य के तेज का इकट्ठा करता रहा और वह वृक्षों की मज्जा तक पहुंच गया। ये सब जंगल भूमि के गर्भ में समा गए और परिवर्तित अवस्था में युगों युगों तक दबे पड़े रहे। जिस दिन पाताल का द्वार खुला उस दिन मनुष्य ने अचानक हजारों सालों के सूर्य के अव्यवहृत तेज का पत्थर के कोयले के रूप में पाकर उसे अपने काम में लिया और नवशक्ति को लेकर आनेवाले विश्वविजयी आधुनिक युग के दर्शन हुए।

जिस प्रकार कभी सभ्यता की बाहरी सम्पत्ति को लेकर यह सब हुआ उसी प्रकार आज आन्तरिक संपत्ति की एक विशेष खान ने अपने भीतर संचित वस्तु को बाहर प्रकाशित किया है। घरों से बँधी हुई नारियाँ प्रतिदिन विश्व नारियाँ बनती दिखाई दे रही हैं। इस उपलक्ष्य में मनुष्य के सृजनात्मक मन के साथ यह सब नये मन का योग है जिसने सभ्यता को एक अन्य प्रकार का तेज दिया है। आज प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इसकी प्रक्रिया चल रही है। केवल पुरुषों द्वारा गढ़ी गई सभ्यता में संतुलन का जो अभाव प्रायः प्रलयारम्भ के लक्षण उत्पन्न कर देता है अब आशा की जा सकती है कि वह क्रमशः समानता की ओर जायगा। पुरानी सभ्यता की नींव पर बार-बार प्रचण्ड भूकम्प के धक्के लग रहे हैं। इस सभ्यता के लिए विपत्ति के कारण बहुत दिनों से इकट्ठे हो चुके थे इसलिए इस ध्वंसात्मक कार्य को कोई रोक नहीं सकेगा। भरोसे की एक बात है तो यह है कि महाप्रलय की भूमिका में नई सभ्यता को गढ़ने के काम में स्त्रियाँ भी आकर सम्मिलित हो गई हैं—संसार भर में सभी जगह वे तैयार हो रही हैं। ऐसा नहीं कि उनके चेहरे परसे केवल घूंघट ही हटा हो बल्कि जिस घूंघट के कारण वे अधिकांश जगत की ओट में पड़ी हुई थीं उनके मन का वह घूंघट भी हट गया है। जिस समाज में उन्होंने जन्म लिया है वह समाज आज सभी तरफ से उनकी नजरों के सामने अच्छी तरह स्पष्ट हो उठा है। अब ध्वंसस्कार के कारखाने में बनी हुई गुड़िया से खेलना उन्हें शोभा नहीं देगा। प्राणी का पालन करनेवाली उनकी सहज स्वाभाविक बुद्धि न केवल घर के लोगों को बल्कि सभी लोगों की रक्षा में तन मन से जुट जायगी।

आदिकाल से ही पुरुषों ने अपनी सभ्यता के दुर्ग की ईंटें निरन्तर नरबलि के रक्त से तैयार की हैं—अपनी किसी साधारण नीति की प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने नितान्त विशिष्ट व्यक्तियों को मारा है। धनिकों ने धन पैदा किया श्रमिकों के प्राणों का शोषण करके प्रतापियों के प्रताप की अग्नि जलाई गई है असंख्य दुर्बलों के रक्त की आहुति देकर और राष्ट्रीय स्वार्थ के रथ में जनता को रस्सी से बाँधकर उस रथ को चलाया गया है। शिकार के आमोद को विजय मानकर यह सभ्यता असंख्य निरीह निरुपाय प्राणियों का वध करती रही है सभ्यता ने प्राणिजगत में मनुष्यों को मनुष्य के प्रति अन्य जीवों की अपेक्षा सबसे अधिक कठोर बना दिया

है। कोई बाघ बाघ म इतना परेशान नही होता, किंतु इस सभ्यता के कारण दुनिया भर के मनुष्य, मनुष्य के भय से काप रहे हैं। इस तरह की अस्वाभाविक अवस्था म ही सभ्यता अपने नाश के साधना को स्वय ही सवारती रहती है आज भी यही हा रहा है। इसके साथ-साथ मनुष्य शांति की मशीन बनाने मे भी लगा हुआ है, किंतु जिनके मन म शांति का उपाय नहो है मशीन की शांति उनके काम नहा आयेगी। व्यक्ति का हनन करनेवाली सभ्यता टिक नही सकेगी।

सभ्यता की सृष्टि के नूतन कल्प की आशा की जा सकती है। यदि यह आशा साकार हो उठ तो इसम सदेह नही कि इस बार उक्त सृष्टि म नारियो का काम पूरी तरह नियोजित होगा। नवयुग का यह आह्वान यदि हमारी नारियो के मन तक न पहुँच पाया तो कही ऐसा न हो कि उनका रक्षणशील पुराना मन युग युग की अस्वास्थ्यकर गदगी को सवथा मोहवश छाती से चिपकाए रहे। वे अपने हृदय का उन्मुक्त करें, अपनी बुद्धि को चमकायें और ज्ञान की तपस्या म निष्ठा का प्रयाग करें। वे यह याद रखें कि विचारहीन रक्षणशीलता सृजन की विरोधी है। नव सृजन का युग सामने आ रहा है। यदि उस युग पर अधिकार प्राप्त करना है तो मोह मुग्ध मन का हर तरह स श्रद्धा के योग्य बनाना होगा। अज्ञान स उत्पन्न जडता एव नीचे गिरानेवाले सभी प्रकार के काल्पनिक और वास्तविक भय के आक्रमण से मुक्त होकर स्वय को ऊपर उठाना होगा। फल प्राप्ति की बात तो बाद की है—हो सकता है यह बात सामने ही न आय— योग्यता प्राप्त करने की बात सबसे पहले है।

नारी का भविष्य, आत्मनिष्ठा मे

विनोबा

गृहसगोपन का काय स्त्रिया के पास ही रहने वाला है यह तो दव ही बोल चुका है फिर वह प्रगतिशील अमेरिका हो या पिछड़ा हुआ भारत। लकिन अब तक इस बात का ठीक ठीक विचार नही हो पाया है कि मुख्य प्रश्न कहाँ अटका है। हिदूधम म स्त्रियो को कुछ अपात्रता है। उन्ह जायदाद मे हक नही मिलता और वह उन्ह पुरुषा के बराबर मिलना चाहिए—ऐसा कहा जाता है। इस विचार के प्रति मेरी सहानुभूति है। किंतु वस्तुत जिस समान अधिकार की आवश्यकता है वह कोई नही मागता। स्त्रियो को हिंदू धम न सन्यास और ब्रह्मचय का अधिकार नही दिया हैं। यह अधिकार देने पर सकडो स्त्रिया सन्यासिनी हागी एसी बात नही है। यह जो आध्यात्मिक अपात्रता है उसस स्त्रिया म हीन भावना आई है। हिंदू समाज म उसी को मिटाने के लिए गहस्थाश्रम को महत्त्व देकर सहस्र पितृन् माता गौरवणातिरिच्यते—अर्थात हजार पिता की अपेक्षा एक माता श्रेष्ठ है ऐसे उदगार निमाण किये गए है। किंतु जिस मनुस्मृति का यह वचन है उसी म दूसरा श्लोक इस प्रकार है—

पिता रक्षति कौमारं, भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्रो रक्षति वार्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥

ऐतिहासिक दृष्टि से यह श्लोक बाद का भी हो सकता है। कदाचित् यह सब एक ही लेखक की

लिखी बातें भी न हो   तो भी यह एक पुस्तक हिंदूधम ने अपने मिर चनाई है।

लडकी का बाप की जायदाद मे हक नही रहना चाहिए ऐसा कहने वाले दलील देत हैं कि उसको दाना आर का हक क्या चाहिए ? विवाह होन पर उमे पति की आर स कुछ न कुछ मिलेगा ही, अर्थात एमी पाजीशन कोइ लन को ही तयार नहो कि एकाध लडकी विना व्याही रह सकेगी। उनका लगता है कि लडकी को तो यहा स वहाँ जाना ही है। इसका यह अथ है कि स्त्रिया को केवल गृहस्थाश्रम का ही अधिकार था अय आश्रमा का अधिकार नही था। प्राचीन ब्राह्मणमत्र म कहा गया है कि दुहिता पडिता जायत अर्थात जो यह चाहते हो कि उनकी कन्या पडिता बन उन्हें अमुक अमुक करना चाहिए। अब इसका अथ शकराचाय न शाकरभाष्य म क्या किया है उस देखिए। जिन शकराचाय के प्रति आदर मे मेरा आपाद मस्तक भरा है उन्होंने उसका अथ यह कियाहै कि 'पडिता गहकायकुशला इत्यथ"। पडिता यानी गहकाय म कुशल। वे इस बात की कल्पना भी नही कर सकत थे कि लडकी स्वतत्र रूप से पडिता हो सकती है। लडकी के सन्यासिनी होने की कल्पना भी वे नही कर सके। इमीलिए उन्होने ऐसा अथ किया। स्त्रिया गहकाय-कुशला हा, इसम मेरा कोई विरोध नही है। य कमी नही हागी, तो देश को कोई लाभ नही होगा। किंतु गहकाय-कुशलता म ही उनके पाडित्य की परिसमाप्ति हो, यह ठीक नही है। यह जो आध्यात्मिक अनधिकार एक समय स्त्रिया और शूद्रा पर लादा गया था वह दूर होना चाहिए।

मेरी मा बचपन मे एक मजेदार कहानी सुनाती थी कि किया बच्चा पालना कितना कठिन है यह तू नही जान सकता। पहले यह काम शकरजी क पास था। पर वे ऊब गए और पावती स कहा कि वह चार दिन के लिए यह काम सँभालें। तब स यह काम उसके सुपुद हुआ और उसी के गले पड गया है। अब शकर यह काम सँभालते ही नही हैं। इस तरह चूकि यह काय स्त्रिया के गले पड गया है उन्ह गह काय म प्रवीण होना ही चाहिए इसमे शक नही परन्तु उनपर जो आध्यात्मिक अनधिकार लाद दिया गया है वह हटना ही चाहिए। यह विधानसभा के कानून स नही हटेगा। इसीलिए म हमेशा कहता हूँ कि जब तक एकाध शकराचाय जमी तजस्वी ज्ञानी वराग्य सम्पन्न स्त्री नही पदा होगी, तब तक स्त्री-जाति का उद्धार नही होगा।

दूसरी बात यह है कि आज पुरुपा न समाज का जो कारोबार चला रखा है, वह ठीक से चल नही रहा है। आजकल तो पुरुपा को भी अहिंसा सिखाना तो दूर समानता के नाम पर स्त्रिया की ही पलटनें बनाई जा रही हैं यानी स्त्रिया का पुरुपीकरण चल रहा है। पुरुपा न जो सहार मचा रखा है उसम जब स्त्रिया भी योग देन लगेंगी, तब फिर विश्व को कौन बचाएगा ? समुद्र अगर गगा को स्थान नही देगा तो वह किसके पास जाएगी ? जगत् की रक्षणशक्ति जिन स्त्रिया के पास है वे ही अपने कधा पर बदूक धरन लगेंगी, तब ससार को कौन बचाएगा ? इसलिए स्त्रिया को चाहिए कि वे पुरुपा को मर्यादित बनाने का प्रयत्न करें। पुरुप टाइपिस्ट बनत हैं, तो स्त्रियाँ भी टाइपिस्ट बनें इसम कोई बडा सार नही है। स्त्रियो को, अहिंसा शक्ति प्रकट करके ससार को बचाने का पराक्रम करना चाहिए।

तीसरी बात यह है कि जसे शहर के लाग देहात के धधा को हथिया रह हैं वसे ही

पुरुषो ने स्त्रियो के धंधे हथिया लिए हैं। पहले पुरुष खेती करते थे और स्त्रिया बुनाई करती थी। वेदो मे जहा जहाँ बुनाई का उल्लेख आया है वहा-वहा 'बुनने वाली'[1] शब्द ही आया है। अंग्रेजी मे भी पुरुष के लिए 'हसबेंड' यानी किसान, और स्त्री के लिए 'वाइफ' यानी 'बुननेवाली' ये शब्द है। परंतु आगे चलकर बुनाई पुरुषो ने शुरू कर दी और स्त्रियो को काडी भरने का काम दे दिया। यानी मुख्य काम पुरुषो के हाथ मे आ गया और गौण काम स्त्रियो के हाथ मे रह गया। काँडी भरने के लिए अधिक स्त्रियो की जरूरत होती है इसलिए बुनकरो मे एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा चल पडी। इस तरह स्त्रियाँ वहा गौण हो गइ। पहले सिलाई का काम स्त्रियो के हाथ मे था परन्तु अब सिलाई की मशीन आने के बाद वह काम भी पुरुषो की तरफ ही चला गया है। यत्र के बारे मे मेरी कोई आपत्ति नही है, परन्तु स्त्रियो का यह काम स्त्रियो के ही हाथ मे रखना चाहिए था। यो भोजन बनाने का काम स्त्रियो का माना जाता है परतु होटलें निकलने के बाद यह धधा भी पुरुषो के हाथो मे चला गया है। मेरा मत है कि जो काम स्त्रियो के लिए करना शक्य है वे उन्ही के लिए रहने चाहिए। इससे उनकी स्वतत्र प्रतिष्ठा रहेगी। अन्यथा सारे काम पुरुषो के हाथ मे चले जाएँगे और स्त्रियो को सदा के लिए पराधीन पुरुषाधीन रहना होगा। स्त्रियो का पराधीन रहना उचित है ऐसा अगर आप मानते हैं तो मैं पुरुषो से कहूँगा कि आप एक गारटी दे कि समस्त बच्चो के बडे होने तक हम मरेंगे नही। लेकिन आप लोग चाहे जब मर जाते हैं और फिर सारी जवाबदारी स्त्रियो पर आ पडती है। ऐसी स्थिति मे, जैसे देहात के लोगो के लिए कुछ धधे छोड देने पडते हैं, वैसे ही स्त्रियो के लिए भी कुछ धधे छोड देने चाहिए।

मेरे विचार मे प्राथमिक शालाएँ स्त्रियो के हाथ मे ही रहनी चाहिए। उनमे लडके और लडकियाँ एक साथ पढेंगे। अगर सारा प्राथमिक शिक्षण स्त्रियो के हाथ मे रहेगा तो बच्चो का विकास ठीक ठीक होगा वे ठीक रास्ते पर भी लगेंगे। समाज को मर्यादा मे रखने की भी शक्ति स्त्रियो मे आयेगी। आज अगर स्त्रियो मे उतनी योग्यता या शिक्षण नही है तो आपको वैसी व्यवस्था करनी चाहिए।

समता हक्क दान की माँग स्त्रियो को करनी चाहिए। जब तक देश का सरक्षण सैन्य शक्ति से होता है अहिंसा शक्ति से नही होता तब तक पुरुषो का दर्जा ऊँचा ही रहने वाला है। पुरुष उजड्ड होता है और स्त्रियो की शरीर रचना ऐसी होती है कि उन्हे गर्भ धारण करना पडता है इसलिए स्वभावत उनके लिए हिंसा कठिन है। इसलिए अगर रक्षण का साधन हिंसा ही रहेगा तो जीवन पुरुष प्रधान रहेगा ही। इसलिए मेरी माग है कि समाज का सरक्षण अहिंसा-पद्धति से करने की शक्ति पैदा होनी चाहिए। इसके लिए स्त्रियो को शिक्षित बनाना सहज काम है।

स्त्रियाँ सुरक्षित नही, स्वरक्षित होनी चाहिए। छोटे बच्चो का सुरक्षित रहना ठीक है परतु स्त्रियो को पुरुषो की तरह स्वरक्षित होना चाहिए। यह कहना मिथ्या है कि स्त्रियो मे रक्षण सामर्थ्य नही है। विज्ञान का कहना है कि स्त्रियो का शरीर पुरुषो के

[1] पुन समभ्दर् वितत वयन्ती। (ऋ०)

रहेंगे और फिर समाज में विपत्ति आयेगी। अतः स्त्रियों को विवाह करना ही चाहिए। इस तरह वे स्त्रियों के ब्रह्मचर्य के प्रतिकूल और पुरुषों के ब्रह्मचर्य के अनुकूल हैं। पुरुषों का ब्रह्मचारी रहना ठीक ही है क्योंकि स्त्रियों की संख्या कम है। अगर सारे पुरुष विवाह करने लगेंगे, तो उनमें स्पर्धा निर्माण होगी इसलिए समाजशास्त्र की दृष्टि से कुछ पुरुषों का ब्रह्मचारी रहना इष्ट ही है। हिंदुस्तान में जो बहुपत्नीत्व आया, वह धंधों के कारण आया हिंदू धर्म ने उसे उत्तम कभी नहीं माना।

स्त्रियों ने पुरुषों को निम्न कोटि का इसलिए भी माना कि गलत पाँव रखने का परिणाम स्त्रियों को ही अधिक भुगतना पड़ता है वह स्त्री और पुरुष का ममत्व से नहीं भुगतना पड़ता। अतः स्त्रियों ने यह तय किया कि हमें ज्यादा सावधान रहना चाहिए।

स्त्रियों को वे सारे क्षेत्र भी अपने हाथ में लेने चाहिए जो सांस्कृतिक माने जाते हैं। आज तक इन क्षेत्रों में प्रकट रूप में ज्यादातर पुरुषों का हाथ रहा है अप्रकट रूप से स्त्रियों का हाथ रहा है। दुनिया के महान काव्य जिनका दुनिया पर असर है चाहे वह वाल्मीकि की रामायण हो व्यास का महाभारत हो होमर दाँते मिल्टन आदि के काव्य हो सब के सब पुरुषों ने लिखे हैं। वेद में थोड़ी स्त्रियाँ भी ऋषि हैं जिन्होंने मंत्र निर्माण किए हैं। फिर बीच में कर्नाटक की अक्क महादेवी राजस्थान की मीराबाई आदि दो चार नाम आते हैं। परंतु कुल साहित्य पर स्त्रियों का ज्यादा असर नहीं रहा है। अभी यूरोप आदि में कुछ स्त्रियाँ लिखने लगी हैं यह उनका सामाजिक कार्य माना जाता है। आज का बच्चों की तालीम का काम भी पुरुषों के हाथ में है। वस्तुतः पुरुषों में बच्चों को तालीम देने लायक कोई अक्ल दिखती नहीं है। बड़े होने पर भले ही पुरुष उन्हें तालीम दे सकें परंतु प्राइमरी स्कूल के बच्चों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए यह पुरुष क्या जानें? यह सारा का सारा क्षेत्र स्त्रियों के हाथ में आना चाहिए यह कहा जा चुका है। साहित्य, तालीम धर्म का आयोजन आदि क्षेत्रों में स्त्रियों को स्थान मिलना चाहिए।

स्त्रियों का एक विशेष काम यह करना चाहिए कि वे आश्रमों की रचना करें। गांधीजी ने आश्रम खोले, जिनमें स्त्री-पुरुष दोनों रहते थे। परंतु किसी स्त्री ने ऐसा आश्रम नहीं खोला जिसमें दोनों रहते हों। पाण्डिचेरी की माताजी हैं परंतु वह आश्रम श्री अरविंद ने खोला माताजी ने नहीं। स्त्रियाँ स्वयं भक्त पहले भी हुई हैं, आज भी हैं। गांधीजी के आश्रम ने देश को बनाया। उन्होंने आश्रम के जरिये हिंदुस्तान पर असर डाला। हिंदुस्तान के कोने कोने में ऐसे लोग मिलते हैं जो साबरमती या सेवाग्राम में दो चार महीने या साल दो साल रहे हैं और वहाँ से स्फूर्ति लेकर काम कर रहे हैं। स्वामी श्रद्धानंद के गुरुकुल ने रवींद्रनाथ के शांतिनिकेतन ने श्री अरविंद के आश्रम ने भारत पर जो असर डाला वैसा असर डालने वाली स्त्रियाँ क्या नहीं निकल सकतीं? इसलिए अब वह पुराना बटवारा नहीं चलेगा। अब स्त्रियों को हिंदुस्तान पर असर डालने का काम उठा लेना चाहिए। अगर वे उसे उठाएँगी तो बहुत असर डाल सकती हैं।

मैंने एक बुनियादी विचार आपके सामने रखा है। स्त्री और पुरुष में जो भेद है उसे तो दुनिया जानती है। उसको मिटाने की न किसी की इच्छा है न शक्ति। लेकिन उस बाह्य भेद का स्वरूप लोगों में जिस तरह का हो गया है वह वैसा नहीं है। वह केवल एक दृष्टि से की गई योजना

है। उसके मूल में एक पवित्र भावना है। विवाह संतान का एक साधन मात्र है। लेकिन इस विषय का मनुष्य ने अत्यन्त दुरुपयोग किया है। वास्तव में तो वह एक शास्त्रीय वस्तु है। लेकिन आज वह एक शर्म का विषय हो गया है, उस विषय में खुले तौर पर बातचीत तक नहीं हो सकती। समाज जब शास्त्रीय बनेगा तभी इस विषय की सारी गलत धारणाएँ समाप्त हो सकेंगी। आज जैसा इस विषय का दुरुपयोग हो रहा है वैसा तब नहीं होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि बाह्य भेद को तो हम भूल ही जाना चाहिए। मानव-दृष्टि में आन्तरिक अभेद की बुनियाद पर ही हम अपने जीवन की रचना करनी चाहिए।

लोग पूछते हैं कि 'तब, क्या स्त्री और पुरुष के शिक्षण में आप कुछ भी भेद नहीं करेंगे?' मैं कहता हूँ कि यो भेद तो पुरुषों के शिक्षण में भी होगा। पुरुष-पुरुष में भी योग्यता भेद होता है। उसके अनुसार विशेष शिक्षण विभिन्न प्रकार का शिक्षण दिया जाता है। लेकिन सब सामान्य शिक्षण-दृष्टि में उससे फर्क नहीं पड़ता। वैसे ही स्त्रियों के बारे में समझना चाहिए।

मूल वस्तु तो यह है कि स्त्री-पुरुष के संबंध की तरफ देखने की हमारी आज की दृष्टि में आमूलाग्र परिवर्तन की आवश्यकता है।

एक मिसाल लीजिए। रामायण में हम पढ़ते हैं कि सीता के आभूषण पहचानने के लिए लक्ष्मण के सामने रखे गए तो लक्ष्मण बोले

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुंडले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवंदनात्॥

मैं न केयूर पहचानता हूँ, न कुंडल, हाँ नूपुर पहचानता हूँ क्योंकि प्रतिदिन चरण वंदन करता रहा हूँ।

क्या हम इसका स्थूल अर्थ ही करेंगे? और उस अर्थ को आदर्श मानेंगे? स्थूल अर्थ तो यह हुआ कि जिसकी पवित्र भावना है जैसी लक्ष्मण की थी उसको किसी स्त्री के चेहरे की ओर देखना ही नहीं चाहिए।

अगर वाल्मीकि का यही अर्थ है तो मैं कहूँगा कि यह उत्तम आदर्श नहीं है। बहुत ही गौण आदर्श है। लेकिन मैं जानता हूँ कि वाल्मीकि का अर्थ यह नहीं रहा। चरण वंदना की बात का जिक्र करके लक्ष्मण ने केवल अपनी पूज्य भावना ही प्रकट की है। क्योंकि जब हम किसी देवता का ध्यान करते हैं तो अक्सर चरणों का ध्यान करते हैं। राम के बारे में सवाल होता तो भी शायद लक्ष्मण यही उत्तर देता, क्योंकि रामचन्द्र के विषय में भी उसकी वही भावना थी।

यहाँ एक बात और भी सोचने लायक है। सौंदर्य के दर्शन से तो बुद्धि पवित्र होनी चाहिए न कि मलिन। सूर्योदय का देखने से, बहती हुई नदी के निर्मल जल के दर्शन से बुद्धि पावन होती है। जहाँ सौंदर्य के दर्शन से बुद्धि मलिन होती है, वहाँ समझना चाहिए कि विकृत बुद्धि का लक्षण प्रकट हो रहा है।

हमारे यहाँ तो स्त्री-पुरुषों के साथ रहने के बारे में भी काफी सवाल उठते हैं। वातावरण पवित्र कैसे रहेगा? यही उसमें फिक्र होती है। पवित्रता की फिक्र तो मुझे भी है। जितनी आज है उससे सहस्रगुनी पवित्रता मैं चाहता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आज जो पवित्रता हममें

है वह ऊपर ऊपर की है। मैं यह नही कहता कि समाज ने पवित्रता का कुछ भी रक्षण नही किया है। कुछ किया है परतु दीवारें खडी करके। इसस तो पवित्रता का आभासमात्र निर्माण हो सकता है।

पवित्रता तो आतरिक वस्तु है। मैं तो मानता हूँ कि स्त्री पुरुषा क एकत्र रहन स पवित्र बनने म मदद मिलनी चाहिए। लेकिन आज का वातावरण इसके विपरीत है। इसका कारण है हमारा साहित्य। मै कवल अर्वाचीन साहित्य की बात नही कर रहा हूँ। वह तो शायद उसका परिणाम है। प्राचीन साहित्य जिसम धार्मिक माने गय साहित्य का भी समावश करता हूँ उसके लिए जिम्मेदार है साहित्य की दष्टि ही कलुषित हो गई है। यह सब साहित्य हम फेंक देना होगा। दष्टि म ही अजन डालना होगा। बुद्धि शुद्ध करनी होगी।

सस्कृत कवियो न स्त्री को भीरु कहा है। भीरु यानी पापभीरु होता तो वह एक उत्तम विशेषण होता। लेकिन भीरु यानी कायर का विशेषण उ होने प्रशसा के रूप म स्त्रिया को भेंट किया ह। देने वाल ने भले ही इस प्रशसा के रूप म स्त्रियो को भेंट किया है परतु लनवाल न स्वीकारा क्या ? उसने स्वीकारा ह इतना ही नही सहष स्वीकारा ह।

अगर मैं स्त्री होता तो न जाने कितनी बगावत करता। मैं तो चाहता हू कि स्त्रिया की तरफ से बगावत हो। लेकिन बगावत तो वह स्त्री करेगी जो वराग्य की मूर्ति होगी। वराग्यवत्ति प्रकट होगी तभी तो मातृत्व भी सिद्ध होगा। इसलिए मैं मानता हूँ कि स्त्रिया म कोई शकराचाय जसी तजस्वी स्त्री प्रकट होगी तभी स्त्रिया का उद्धार होगा। स्त्रियाँ स्व त्रता चाहती हैं तो उ ह वासना के बहाव म बहना नही चाहिए।

बगावत करने की वृत्ति म और विनयशीलता म कोई विरोध नही ह। विनयशीलता से तो बगावत बलवान बनती ह। समझ बूझकर और उचित समझकर किसी उचित आज्ञा को मानना विनयशीलता है अनुचित आज्ञा को न मानना बगावत ह और विनयपूवक वह हो सकती ह। उसी म स्वतत्रता ह।

स्त्री और पुरुष को खतरनाक बताते हुए अग्नि घृत का दष्टा त दिया जाता ह। परतु दष्टा त तो उससे उलटा भी दिया जा सकता ह। स्त्री पुरुष एक दूसरे के रक्षक भी बन सकते हैं। स्त्री पुरुष को बचाये पुरुष स्त्री को। आवश्यक ह कि स्त्री पुरुष दोनो अपनी अपनी कमिया की पूर्ति करते हुए परिपूण स्त्री पुरुष बनें। यानी पुरुष को स्त्री बनना होगा, स्त्री को पुरुष और दोनो को परिपूण।

परिपूण बनने की पद्धति ही ऐसी है। उसम पुरुष को स्त्री बनना पडता है और स्त्री को पुरुष। मजदूर को शिक्षित होना होता है शिक्षित को मजदूर।

इसलिए जब बहनें मुझसे पूछती हैं कि हम अपना रक्षण कसे करें तो मैं कहता हूँ। "इसम आपको कुछ सोचना ही नही है। हम स्त्री और पुरुष म फक नही करना है दोनो को परिपूण बनना है। इसलिए अपने हृदय म ऐसी श्रद्धा रखें कि जस पुरुष अपनी रक्षा करन म सहज ही समथ माना जाता है यद्यपि कई दफा वसा वह कर नही पाता है वसे ही हम भी अपना रक्षण स्वय कर सकती हैं। तब बहनें कहती है कि पुरुषा के पास तो तलवार होती है तो मैं कहता हूँ ' अगर वही आपकी कमी है तो आप भी तलवार रख सकती हैं। जो हक पुरुषा

को है वह आपको भी होना ही चाहिए। लेकिन हर हालत म आपको निभय बनना ही होगा। मुझे विश्वास नही है कि तलवार से निभयता आ सकती है। निभय आदमी के हाथ म तलवार भी काम दे जाए, यह दूसरी बात है। लेकिन जिनका विश्वास है कि पुरुप हो या स्त्री, हाथ म तलवार लेकर अपना नूर बताएँ और अगर वे समझते है कि तलवार के आधार पर ही समाज की रचना होनी चाहिए तो फिर स्त्री पुरुप दोना के लिए यह क्षेत्र खुला रहना चाहिए, जैसे कि पश्चिम में है। अहिंसा का प्रयोग करने मे स्त्रिया अग्रसर हो सकती हैं लेकिन वैसा करने म अगर वे अपने को असमथ पायें, तो भी दोना मे हम फक तो करना ही नहीं चाहिए।"

मैं तो स्त्री और पुरुप की भापा में भी फक करना नही चाहता। हिंदी, मराठी आदि भापाओ मे यह एक व्यथ का भेद पड गया है। हर वाक्य मे बताते जाते है कि मैं पुरुप हूँ मैं पुरुप हूँ, मैं पुरुप हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं स्त्री हूँ, मैं स्त्री हूँ। दोना मे अगर 'जाने' की क्रिया ही है तो वह तो समान ही है। परन्तु यह कहेगा, मैं गया 'वह कहेगी मैं गई।' इसकी जरूरत क्या है? जीवन म आई हुई कृत्रिमता का ही यह लक्षण मानना चाहिए। हम इस भापा म भी सुधार करना होगा। यह मैं हवा की बात नही कह रहा हूँ। यह जमीन की बात है। जहाँ स्त्री-पुरुप बराबरी की बात करते हैं वहा रूढ भापा म लिंग भेद होते हुए भी वे उठ जाते है, जसे ग्रामीण मराठी मे स्त्री भी पुरुप के समान 'मी जात आहे' (मैं जा रहा हूँ) कहती है।

अत म, साराश के तौर पर मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि हर एक बहन को आत्मनिष्ठ होना चाहिए। मुझे तो 'निभय' शब्द भी उतना पसद नही है। उसमे भी भय की बू आती है। भय से अपरिचित बालक 'निभय' शब्द को नही समझेगा। इसलिए मैंने 'आत्मनिष्ठ' शब्द का प्रयोग किया। बहना लोगो मे आत्मनिष्ठा बढे, यही मेरी भावना है। यह बढने वाली है ऐसी श्रद्धा रखना मुझे प्रिय लगता है।

मातृरूप–पृथिवी, पृथिवीरूप–नारी

वासुदेवशरण अग्रवाल

विश्व रचना म माता की ही तरह द्यौ पिता पृथिवी माता का वन्दिक सूक्त महत्वपूर्ण है। पृथिवी सच्चे अर्थों म सबका भरण-पोषण करने वाली माता है। वह वक्ष वनस्पति कीट-पतग पशु पक्षी और मानव सबकी पालन क्त्री शक्ति है। माता और पृथिवी माता ब्रह्माड का अभिन्न अग है। बहाँ यूम-चय की सीमा रखाए नहीं हैं। इनके वरदाना के स्रोत सबके लिए समान रूप से उन्मुक्त है। माता के मन और पृथिवी के स्वभाव के साथ देश और राष्ट्र की स्पधा का सयोग करना उचित नहीं। उस प्रकार की मनोवत्ति वयम्य और सघष का द्वार है। पृथिवी को जो क्षमा धात्री जननी कहा गया है सो इसलिए कि उसके साथ तो केवल एक वही सबध हो सकता है जो बालक का माता के साथ होता है। कहा है—वह माता की समस्त मधुरिमाआ स भरा हुआ एक अक्षय पात्र है। वह उनके लिए प्रकट हुई जो मातृमान् हैं और जिनके हृदय म माता और पुत्र के स्नेह का बीज अकुरित हुआ—

भुजिप्य पात्र निन्ति गुहा यदाविर्भोगे भव मातभदभय ।

—मत्र ६॥

किंतु जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की शरीर रचना मातृ-कुक्षि म होती है और प्रत्येक को अपने जन्म के लिए जननी की आवश्यकता है वस ही ससार क स्वाभाविक विधान म किसी न किसी देश या भूमि स मानव का सबध होता ही है। उसी भूमि क साथ हमारा हृदय प्रगाढ

सबध म बँध जाता है। इस सबध के पोषण के लिए हृदय की उदार भावना होनी चाहिए दूसरा का निराकरण करने की विषम भावना नही। आप भावना ने माना समस्त नारी जाति के लिए पृथिवीसूक्त के द्वारा यह भावना व्यक्त की है। जो अनत द्युलोक ऊपर फैला है उसका अभिन्न सबध समग्र पृथिवी के साथ है किसी भाग विशेष तक सीमित नही। जब इस प्रकार की भावना मन म रहती है तभी मानव रमा मत्र स्नेह का अनुभव करता है। पृथिवी के साथ घनिष्ठ सबध जानने के लिए इस अमृतमय प्रतिष्ठा बिदु को कभी भुलाना नही चाहिए। ऋषि की दृष्टि म पृथिवी माता का अमृत हृदय सत्य से भरा हुआ है और उसका मूल परम व्योम या नित्य आकाश म है जिसकी प्रेरणा कभी क्षीण नही होती। जो माता के इस हृदय को नही जानता उसके लिये तो यह भूमि केवल मिट्टी पत्थरा का ढेर है। इसका सच्चा स्वरूप तो उनके लिए प्रकट होता जो ध्यान की शक्ति से इसकी उपासना करते है—

याणवऽधि सलिलमग्र आसीद्
या मायाभिरन्वचरन्मनीषिण ।
यस्या हृदय परम व्योमन
सत्येनावृतममृत पृथिव्या । —मत्र ८

मातृ हृदय के जिस रूप का वर्णन आया है वह गुहानिहित या छिपा हुआ कहलाता है (मत्र ६०) किंतु उसका दूसरा रूप नितात स्थूल और सबके लिए प्रकट है। वह भूरी काली श्याम पीत और लाल मिट्टिया से बनी है।[1] वह विश्वरूपा या सब रूपा की खान है। वह अपने स्थल पर अविचल है। उसम अनेक पवत नदिया के प्रवाह और समतल मदान हैं। हिम से ढँके हुए गिरि और नाना प्रकार की ओषधि वनस्पतियो म भरे हुए अरण्य उसके कल्याणात्मक रूप हैं। चारा दिशाओ म लहराती हुई कृषि और खेतो म श्रम करते हुए कृषक उसकी शोभा हैं। वह आकाश म छा जाने वाले मेघा की पर्जन्य-पत्नी है जिस वे सदा जल धाराओ से सीचते है और उसके फलस्वरूप वह जौ चावल आदि अन्नो से भर जाती है (मत्र ४३)। वृष्टि लाने वाली पुरवाई मातरिश्वा वात धन उडाती हुई और वृक्षो को हिलाती हुई जिस समय ऊपर-नीचे झकझोरती है उस समय आकाश म बिजली कौधती और मेघ गरजते है (मत्र ५१)। सवत्सर की शक्ति ग्रीष्म वर्षा शरद हेमत, शिशिर और वसत—इन छ ऋतुओ के सुदर चक्र को घुमाती हुई पृथिवी से रात और दिन अमृत का दोहन करती है (मत्र ३६)। पृथिवी की कुक्षि म नाना प्रकार के रत्न, मणि, हिरण्य भरे हुए है जिन्ह वह मानवो के लिए प्रसन्न होकर उगलती रहती है। उसस धन की सहस्र धाराएँ इस तरह प्रवाहित होती है जस दुधारू सीधी गौ से दूध की धाराएँ। वह सच्चे अर्थो म सबका भरण करने वाली विश्वम्भरा देवी है। उस भूमि पर अनेक उपयोगी पशु-पक्षी निवास करते हैं। हस और सुपर्ण उसके आकाश म भरे हुए है। सिंह और व्याघ्र उसके जगलो म विचरण करते हैं। गौ और अश्व की वह प्रतिष्ठा

[1] ११वें मत्र जो पवजन कहे गये हैं उनम सभी विभिन्न रग वाली कौमे आ जाती हैं। भगवान के सब को भी पाँचज य इसलिए कहा गया है कि वह समस्त ससार के मानव समाज के लिए गुजाया जाता है।

है (मत्र ४६)। वृक्ष और वनस्पति सदा के लिए उस पर अडिग रूप स विद्यमान है (मत्र २७)।

इस प्रकार पृथिवी के भौतिक स्वरूप का दिव्य वणन इन मत्रा म चित्रित किया गया है। वह सबके लिए सदा प्रत्यक्ष है। भौतिक समृद्धि के जितने रूप हैं सबका अतिम रूप पृथिवी है। किंतु भौतिक स्वरूप स कही अधिक मूल्यवान् पृथिवी पर निवास करन वाल मानव हैं। वे मानव पीढी-दर-पीढी वृद्धि को प्राप्त होते हुए अमर हैं। प्रात काल उगता हुआ सूय उन्हा के लिये अपनी किरणा स अमृत ज्योति बिखरता हुआ चलता है।

तवम पृथिवी पच मानवा येभ्यो ज्योतिरमृत
मतभ्य उद्यन्सूर्यो रश्मिभिरातनोति। —(मत्र १५)

कवि इस सत्य का अनुभव करता है कि पृथिवी पर बस हुए मानव अनेक समूहा म विभक्त हैं। उनकी सज्ञा जन है। जन जन म अनेक भेद प्रकृति की ओर स ही मातृ भूमि का प्राप्त हुए हैं। उनम तीन भेद प्रमुख हैं—एक जना का परस्पर भेद दूसरे इस बहुधा जन म अनेक प्रकार की बोलियाँ हैं और तीसरे नाना प्रकार के धम हैं

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस
नानाधर्माण पृथिवी यथौकसम। —(मत्र ४५)

किंतु भाषा धम और जन क य भेद मानवा को विभक्त करने के लिए नही है। प्रकृति की ओर से ही जो भेदा के विधान है उन पर अपने हृदय की शक्ति स मानवा न विजय पाई है। उन्हाने बुद्धिपूवक अनकता म एकता और भेदा म अभेद का जीवन सूत्र ढूढ निकाला। जा धागा सबम समान रूप से पिराया हुआ है वह यह है

माता भूमि पुत्रो अह पृथिव्या। —(मत्र १२)

भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हू —यह अचल सबध हर एक के लिए है और यही सबको मिलान वाला ततु है। जिसन भूमि को अपनी माता जानकर अपने आपको उसका पुत्र मान लिया वह माता के प्रति अपन कतव्य-पालन का ही प्रयत्न करेगा, अपने लिए कुछ अधिकार की खीच न करना चाहेगा।

पृथिवी पर बसने वाले जन नाना भाँति से नाचते और गाते हैं (मत्र ४१)। दुदुभि घाप करत हुए वे युद्धा म भी सम्मिलत होत हैं। उनका निवास अनक गाँवा और नगरो म है। वे सभा और समितियो म एकत्र होकर प्रबध की व्यवस्था करत हैं। इस भूमि की नीव धम पर टिकी हुई है। धमणा धताम (मत्र १७)। धम ही सभा समितियो का अविचल विधान है। पृथिवी पर भले और पापी सभी प्रकार के लोग रहते है। उन सबको ही उसके मार्गो पर चलने का अधिकार है जा शकट और रथा के लिए चारा दिशाआ म बिछे हुए हैं (मत्र ४७)। पृथिवी पुत्रो के नाना प्रकार के शारीरिक बल और मानसिक सकल्पो के वेग इसी भूमि पर प्रकट हात हैं, जिनसे सस्कृति की महती धारा का निर्माण हुआ है

महत्सधस्थ महती बभूविथ
महान वेग एजथुर्वेपथुष्ट। (मत्र १८)

इस भूमि के साथ हमारा सबध नया नही है। इसी पर हमारे पूवजो ने अनेक पराक्रम

किए। यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे (मंत्र ५)। यहीं अनेक देवासुर संग्रामों में देव असुरों पर विजयी हुए (मंत्र ५)। यहीं अनेक ऋषियों ने मंत्रों का गान किया। यहीं अनेक प्रकार के तप और व्रतों का विधान हुआ। एवं इसी भूमि पर ऋत्विजों ने अनेक यज्ञों में देवों के लिए सोम का अभिषव किया। इस भूमि ने सदा से इन्द्र को अपना रक्षक चुना, वृत्र को नहीं

इन्द्रं वृणाना पृथिवी न वृत्रम्। *(मंत्र ३७)*

यह भूमि हमारे बहुमुखी जीवन के अर्थ और धर्म एवं यज्ञादि की अधिष्ठात्री देवी है। इसमें जिस अग्नि का निवास है वही हम सबके शरीर में बसी हुई है अग्निरन्तः पुरुषेषु (मंत्र १९)। वह अग्नि प्राण और आयु प्रदान करती है। पूर्वकाल में किसी देवयुग में जो गंध इस पृथिवी में बसी हुई थी वही अमृत-सुगंधि आज तक सब स्त्री-पुरुषों के शरीरों में व्याप्त है। कोई कहीं भी रहे उसका जीवन अपनी भूमि की गंध से सुरभित रहता है (मंत्र २३)। जिस समय सूर्य की पुत्री सूर्या का सोम से विवाह हुआ उस उत्सव में कमल की जिस सुगंधि का सबने आनंद लिया आज भी वही पुष्कर-गंध हमारे लिए सुलभ है (मंत्र २४)।

इसी भूमि के साथ हमारे देवों का संबंध है। इन्द्र और विष्णु अग्नि और सूर्य अपनी अधिष्ठित शक्ति से इसकी रक्षा करते हैं। यह सब भुवनों की गोप्त्री है। किसी से इसका द्वेष नहीं। अपनी मधुमती वाणी से यह सबकी मित्र है। यह सबसे आगे रहने वाली है अग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा (मंत्र ५७)। यह शांतिमयी शांतिवा सौरभ शालिनी सुरभि-मृदुला स्योना और अमृत-मयी है। सबके लिए इसकी पयस्वती या दुग्धधारिणी मुद्रा सुलभ है (मंत्र ५९)। हे माता। हमारे लिए दीर्घ आयु का वितरण करो। तुम कामदुघा हो। तुम्हारे स्वरूप में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। प्रजापति सत्य तुम्हें भरते रहते हैं।

हे मातृभूमि। हम सब प्रकार की श्री और संपत्ति इस जीवन में प्राप्त हों। किंतु साथ ही द्युलोक का जो अमृत-जीवन है उसके साथ भी हमारा संबंध स्थिर रहे

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्॥

मातृभूमि के ये गुण-वर्णन हम समस्त मातृ-जाति को समर्पित करने का दावा कर सकते हैं।

स्त्री शक्ति का आह्वान

सरला बहन

संसार मे यह माना जाता है कि किसी देश की संस्कृति की सुरक्षा उस देश की स्त्रियों के हाथ म होती है। अंग्रेजी म एक कहावत है दी हैंड दट रौक्स दी क्रेडल रूल्स दी वल्ड।' (जो हाथ पालने को झुलाता है वही दुनिया पर राज्य करता है।) यह बात बहुत सही है क्योंकि छोटी उम्र म बच्चे अधिकतर मां के प्रभाव मे रहते है। हम सब का अनुभव है कि बचपन म उत्पन्न संस्कार बहुत प्रबल रहते है। इसलिए किसी देश म स्त्रियों का विकास किस दिशा म हो रहा है यह बड़े महत्त्व की बात है।

भारत की परम्परा म माता की पदवी बहुत ऊँची मानी जाती थी। हालांकि सार्वजनिक जीवन म बहनो का स्थान बहुत उच्च नही है तथापि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह अन्य वीरांगनाए भी इस देश म जन्मी हैं—और हमारी पुरानी संस्कृति की सीता दमयन्ती और सावित्री आदि की कहानियां हमे दिखाती हैं कि स्त्रियों म साहस और सहन शक्ति की कमी नहीं थी। परिवार म और विशेष करके धार्मिक रीति रिवाजो म स्त्रियो का स्थान सर्वोच्च था।

लेकिन धीरे धीरे हमारी संस्कृति बदलती गयी। पश्चिमी शिक्षा के प्रवेश के बाद तो काफी अंतर आया था। लड़कों की शिक्षा एक ऐसी दिशा म होने लगी जिससे उनकी माताएं और पत्नियां अनभिज्ञ रहती थी। सामाजिक और पारिवारिक जीवन के बीच की

और भारत के द्वारा दुनिया को एक सही मार्ग दिखाया जा सकता है।

अपने सब सार्वजनिक कार्यों में गांधी जी ने बहनों का महत्त्व समझा था तथा उन्हें अपने कामों में शामिल किया था। बहनों ने काम करके दिखाया था। सामाजिक मूल्यों की सुरक्षा के आंदोलनों में, शराब की दुकानों पर धरना देने में, विलायती कपड़े की दुकानों पर धरना देने में या सत्याग्रह में लाठी का सामना करने में, जेल के अत्याचारों को हिम्मत के साथ झेलने में बहनें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर सकती हैं। उन साहस के कामों में भारतीय परम्परा के अनुसार ये अपने सही स्त्रीत्व को भी कायम रख सकती हैं। जब बहन एक सही दिशा को पकड़कर निकलती है तो वे बुरी-से-बुरी जगह में जाकर भी अपने मन का संतुलन कायम रखकर बुरे-से-बुरे आदमी का हृदय-परिवर्तन कर सकती है। इससे समाज में उनकी इज्जत बढ़ी है, घटी नहीं। ऐसी वीरांगनाएं सिर्फ अपनी संतान को नहीं, बल्कि समाज को भी एक सही मार्ग दिखा सकती हैं।

उम्मीद थी कि स्वराज्य के बाद बहनें इस नयी परम्परा में आगे बढ़ती रहेंगी और शिक्षा तथा सामान्य राजनैतिक अधिकार पाकर ये हमारे देश का एक स्वस्थ सामाजिक परम्परा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाएंगी।

लेकिन हमें इसमें निराश होना पड़ा। जो बहनें सार्वजनिक जीवन में निकलीं, चाहे सेवा के क्षेत्र में, अस्पतालों और विद्यालयों में, चाहे राजनीति, अधिकार या व्यापार के क्षेत्र में, ये औसतन अपने स्त्रीत्व को घर में छोड़ आयी हैं और इस क्षेत्र में अपनी भावनाओं को छोड़कर पुरुष की बुद्धि से पुरुष के साथ स्पर्धा में उतरी हैं। ये जिस बात से पुरुषों में अपनी सही सुवास को फैला पाती थीं, वे उस चीज को भूल गई हैं। अन्य बहनें गुड़िया बनकर पश्चिम की बहनों की नकल करने में तथा पुरुषाधीन रहकर उनके भोग विलास और प्रदर्शन का बने साधन रहने में अपना संताप मानती हैं।

इस हालत में ये बहनें अपनी संतान को भी भारतीय संस्कृति के अनुकूल शिक्षा और मार्गदर्शन नहीं दे पाती हैं। जो बहनें अपने गृहकार्य में सीमित हैं, वे भी इस नये वातावरण में अपने बच्चों को मार्ग नहीं दिखा पाती हैं।

यह तो हमारे बढ़ते हुए नगरों में स्त्रियों की हालत की तसवीर है। लेकिन अभी तक ७०।८० प्रतिशत हमारी बहनें देहात में रहकर आधुनिक शिक्षा से सर्वथा वंचित हैं। उन्हें हम दो श्रेणियों में बांट सकते हैं—उत्तर भारत के मैदानों में रहनेवाली बहनें, जो पर्दे में रहती हैं तथा हिमालय पहाड़ों में तथा दक्षिण में रहनेवाली बहनें, जो पर्दे में नहीं रहती हैं, लेकिन जो अधिकांशतः खेतों के कामों में और पशुओं की सेवा में अति व्यस्त रहती हैं।

जब हमें पर्दे में रहनेवाली देहाती बहनों के साथ चर्चा करने का मौका मिलता है, तो हम पाते हैं कि ये भोली-भाली बहनें अपने बच्चों की दुनिया से बहुत दूर रहती हैं—उन्हें समझ में नहीं आता है कि ये बच्चे बड़े होकर क्या सोचते हैं, क्या करते हैं, जीवन के लिए क्या अभिलाषाएं रखते हैं।

मुझे याद आता है, एक बार मैं एक ऐसे कमरे में बैठी थी, जिसकी दीवार पूरी तरह अश्लील तस्वीरों और पोस्टरों से भरी थी। उस कमरे के मालिक बड़े गर्व से मुझसे कह रहे थे

मेरा बड़ा पुत्र दस वर्ष का है। मैंने अभी तक उसकी माता का मुँह नहीं देखा है। ऐसे अस्वाभाविक समाज में माँ का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? बच्चों में संयम और मर्यादा पालन के संस्कार कैसे बन सकते हैं? स्त्री-जाति के लिए सही आदर कैसे हो सकता है? हम गर्व करते हैं कि भारत एक विकासशील देश है लेकिन औद्योगिक या आर्थिक विकास से क्या लाभ हो सकेगा जब तक हमारी माताओं की यह हालत है। जब तक हमारे सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन नहीं होता है तब तक इस देश में किसी प्रकार का सही विकास असम्भव है।

जहाँ देहात में बहनें पर्दे में नहीं रहती हैं उन पर काम का काफी भार रहता है। हिमालय में बहनें दिनभर जंगलों में और खेतों में काम करती हैं फिर उन्हें सुबह-शाम रसोई बनानी पड़ती है। ये खुशमिजाज और साहसी होती हैं। जमीन होने पर, यदि पतिदेव मर गए तो भी माँ अच्छी तरह अपने बाल-बच्चों को पालती है—उन्हें शिक्षा देती है। बच्चों की माँ यदि मर गयी तो बाप उन्हें पालने में असमर्थ रहता है। किसी प्रकार खेती को संभालने के लिए, उसे कहीं से एक औरत को ढूँढ़कर रखना पड़ता है। फिर भी समाज में स्त्रियों की कोई इज्जत नहीं है। पुरुष कहते हैं "ये क्या जानें? ये तो पशु हैं।" और इससे और ज्यादा दुःख की बात क्या हो सकती है कि उन्हें सुनकर बहनें भी यह बात दोहराती हैं, 'हम क्या जानें? हम तो पशु हैं।' घर और खेत के कामों को संभालने में स्त्रियों में इतना कर्तव्यपालन का भाव और शारीरिक शक्ति और हिम्मत होती है पर दुःख है कि उस शक्ति का सदुपयोग समाज को सही मार्गदर्शन देने में नहीं हो पाता?

अभी-अभी उत्तराखण्ड की बहनों ने शराब बन्दी के लिए लड़कर सही उत्तर दिया है। उन्होंने दिखाया है कि जिस स्त्री शक्ति पर गांधी जी विश्वास करते थे, जिसे वह समाज-सुधार का वाहक समझते थे, उस दिशा में जब उनके मर्दों और बच्चों के नैतिक मूल्यों पर प्रहार होता है तो ये ठीक उस दिशा में जा सकती हैं जिसे गांधी जी ने इंगित किया था। उन्होंने करके दिखाया कि जब किसी भी इलाके की बहनें मिलकर तय करती हैं कि हम अपने पारिवारिक जीवन को शराब की बुराइयों से बचा सकती हैं। अंत में सरकार को इन बहनों की सच्ची बात को मानना पड़ा। इस काम के लिए बहनें जब तक सरकार उनकी बात नहीं मानती है तबतक जेल में भी रहने को तैयार हो गई। इन अपढ़ श्रमनिष्ठ बहनों के पास जिनका दैनिक संपर्क प्रकृति और मिट्टी के साथ है भारतीय संस्कृति सुरक्षित है।

दक्षिण और मध्यप्रदेश में भी बहनें खेतों में बहुत काम करती हैं। दक्षिण में तो संत स्त्री पुरुषों का प्रबल प्रभाव पड़ा है। काफी ब्रह्मचारिणी बहनें सिर्फ अपनी शक्ति के आधार और साधना के द्वारा समाज को दर्शन ही नहीं सामाजिक सेवाओं और संगठनों को प्रोत्साहन और मार्ग-दर्शन देती रहती हैं। वहाँ पर गांधी जी परंपरा भी जारी है और बहनों ने संत विनोबा के भूदान और ग्रामदान-यात्रा के लिए निकलकर बहुत हिम्मत और निष्ठा से काम किया है। काफी हिम्मत और धीरज से इस काम को आगे बढ़ाया है।

लेकिन हमें इससे संतोष नहीं मानना चाहिए कि जहाँ बहनों को अनुकूल मौका मिले वहाँ ये भारतीय संस्कृति का सही रूप दिखाएँ, जहाँ परिस्थिति प्रतिकूल हो वहाँ पर भी उन्हें उसे अनुकूल बनाने की शक्ति रखनी चाहिए। हर प्रकार से समाज के शील की

रक्षा के लिए उन्हें अपने जीवन को समर्पित करने को तैयार रहना चाहिए।

आजकल दुनिया चौराह पर है। औद्योगिक विकास म मनुष्य और प्राकृतिक साधना का निदय शोषण करक दुनिया सिफ आणविक लडाई के द्वारा नहा, बल्कि सदूषण के द्वारा भी सवनाश की ओर तेजी स बढ रहा है। इस समाज म अब विशेषज्ञा वज्ञानिका अथशास्त्रिया राजनीतिज्ञो क लेख मनुष्य मनुष्य नहीं रहा है वह उत्पादन और उपभोग का एक साधन मात्र रह गया है। उपभोग बढाने की दष्टि से (क्योंकि उपभोग बढेगा तब उद्योग बढेगा।) भी कोशिशे हो रहा है। उसक व्यक्तित्व और उसकी भावनात्मक आवश्यकताओ का कोई ख्याल नहीं है। मानवता का दिवाला पिटा जा रहा है। प्रकृति की शक्ति समाप्त हो रही है। मनुष्य के हाथो से ही प्रलय हो रहा है और पालना झुलाने वाला हाथ चुप्पी साधे है। अब दुनियाभर की स्त्रिया को उठकर अपनी सतान को पुरान माग का नया स्वरूप दिखान का प्रयत्न करना पडेगा। सतो और धम सस्थापको ने हम सत्य प्रेम और करुणा का माग सिखाया। परिवार की व्यवस्था म बहनो ने उसे माना है समाज की व्यवस्था म पुरुषो न उसका तिरस्कार किया है। गाधी जी ने हम अमल करके दिखाया कि यह माग समाज म भी सफल हो सकता है और स्त्रिया भी इसम समाज का माग दशन द सकती हैं। अब स्त्री जाति को आग आकर खडीकरण का अत करके एक नय समाज की स्थापना करनी पडगी जिसके मूल्य सत्य प्रेम और करुणा पर आधारित हो, जिसम सिफ मानव जाति के साथ नही बल्कि प्राणी और वनस्पति जगत के साथ भी एकात्मता का अनुभव हो।

नये युग की नारी

दादा धर्माधिकारी

औजार में यह खासियत है कि शारीरिक श्रमशक्ति कम हो तो भी कार्यसिद्धि सुलभ हो जाती है। जब तक उपकरणों का शोध नही हुआ था, तब तक जीवन में सत्ता उन्ही की थी, जो अधिक-से-अधिक श्रम कर सकते थे। भीमसेन और हरक्यूलिस के शरीर में हजारों हाथियों की शक्ति थी। जब औजारों की खोज नही हुई थी उस जमाने में इसी प्रकार के मल्लों की सत्ता चलती होगी। उसके बाद जब उपकरणों का आविष्कार हुआ तो बाहुबल की अपेक्षा उपकरण कुशलता का महत्त्व बढ़ा। औजारों के लिए जो विकासक्रम लागू है वही हथियारों के लिए भी है। ज्यो-ज्यो औजार और हथियार अधिक कुशल और सूक्ष्म होते गए त्यो-त्यो शरीर बल की अपेक्षा उपकरण-कुशलता और शस्त्र-कुशलता का महत्त्व बढ़ता गया। इस विकास का तात्पर्य पुराने इस संस्कृत वाक्य से भली भाति व्यक्त हो जाता है—'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'

मनुष्य की प्रगति शरीर बल से बुद्धिबल की दिशा में होती गई है और आज तो यह वस्तु स्थिति है कि शरीर बल और संख्याबल वैज्ञानिक उपकरणों के सामने गतार्थ हो गया है। इसका अर्थ यह है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री में शरीरबल की न्यूनता होने के कारण वह 'अबला' 'रक्षणाकांक्षिणी' अथवा पराधीन नही रह गई है। शस्त्र विद्या, अस्त्र विद्या तथा यन्त्रविद्या का विकास जिस दिशा में हो रहा है उसमे तो यह अनुमान निश्चित रूप से किया जा सकता है

कि जहा मनोबल और बुद्धि-बल अधिक होगा वही वास्तविक शक्ति और सत्त्व होगा। विज्ञान की प्रगति ने स्त्री को पुरुष के साथ तुल्य-बल बना दिया है।

सदियो से स्त्री का जीवन पुरुष निभर और पुरुष सापेक्ष रहा है। इसलिए उसम बलिदान त्यागोत्सग और क्लेशसहन की अतुलित शक्ति होने हुए भी कुटुम्ब तथा समाज म उसकी भूमिका गौण रही। ईश्वरभक्ति और आत्मज्ञान म निमग्न पुरुषा ने उसे मोक्षमाग की मुख्य बाधा माना। सभ्य पुरुषो ने स्त्री की चर्चा करना वषयिकता का लक्षण माना। विरक्ता ने उसका मुखावलोकन करना निषिद्ध समझा। विलासिया ने और कविया ने उसे विलास और उपभोग का साधन माना। गृहस्था ने माता भगिनी तथा कन्या के रूप मे उसे देवता या पवित्र धरोहर माना। परन्तु इनम स किसी ने उसे तुल्य स्वत्व और तुल्यपराक्रम मानव नही माना। परन्तु आज तो सामाजिक जीवन मे स्त्री को लिंग निरपेक्ष नागरिकता का अधिकार प्राप्त है। इसलिए उसे अपने स्त्रीत्व का रक्षण और विकास करते हुए पुरुष निभर और पुरुष सापेक्ष जीवन से ऊपर उठना है। समाज म स्त्री पुरुष का सहजीवन होगा। दोना का जीवन परस्पर-पोषक और परस्पर पूरक होगा परन्तु अत पर स्त्री का जीवन पुरुषापेक्षी तथा पुरुषावलबी नही होगा। यह तभी हो सकता है जब स्त्री अपनी परपरागत भ्रात धारणाओ को छोडकर स्वरक्षित हो जायगी। इसके लिए उज्ज्वल चारित्र्य की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता पवित्र जीविका की भी है। निष्कलक चारित्र्य और शुद्ध जीविका ही स्त्री के औपचारिक नागरिकत्व को वास्तविक बना सकती है।

शोषित वग म भी स्त्री निकृष्ट शोषित रही है। निकृष्ट से निकृष्ट पुरुष की अधिसत्ता उस पर आज तक रही है। इसके लिए सविधान और विधान म जो परिवतन आवश्यक थ उनम से मुख्य मुख्य परिवतन अन्य सभ्य राष्ट्रो की तरह आधुनिक भारत म भी किए जा चुके हैं, अन्य आवश्यक परिवतन होते जा रहे हैं। परन्तु सविधान और विधान से लाभ उठाने की शक्ति तो स्त्रिया म चारित्र्यबल से ही आ सकती है। विज्ञानयुग आत्मबल का रास्ता प्रशस्त करता है। अत वतमान युग स्त्री के स्वायत्त जीवन का पुण्यपव है।

पुरुष होने के कारण स्त्रिया की समस्याओ का प्रत्यक्ष अनुभव मुझे होना सभव नही। इस विषय पर मैंने कितना ही विचार क्या न किया हो फिर भी मेरा ज्ञान परोक्ष ही रहेगा। आत्मप्रत्यय का आधार न होने से वह अनुमान प्रमाण पर ही आधारित रहेगा। इसलिए साधारणत जसे मैं लडको के सामने आत्म प्रत्यय के साथ बोल पाता हूँ वसे लडकियो के सामने बोल नही सकता। लडकियो की सभा मे बोलते समय मुझे थोडा सकोच ही होता है। फिर भी इस युग के इस मुख्य सिद्धात पर, कि लडके और लडकियाँ स्त्रियाँ और पुरुष इनकी भूमिका बराबर होनी चाहिए मैं कुछ विचार व्यक्त कर सकता हूँ। मैं यह भी कह सकता हूँ कि स्त्रिया को पुरुषा की बराबरी ही नही उनसे भी श्रेष्ठ भूमिका प्राप्त करने के लिए क्या करना होगा।

मुझे ऐसा भी लगता है कि पुरुष के नाते म यह बात और अच्छी तरह कह सकूगा। जिस दोष के कारण नारी आज तक पुरुषा की बराबरी का स्थान न पा सकी उसका ज्ञान स्त्रिया की अपेक्षा पुरुषा को अधिक होना सभव है।

पुराने जमाने मे 'स्नातक' शब्द केवल लडको के लिए ही था क्योंकि ब्रह्मचर्य केवल लडको के लिए ही था। बारह वर्ष तक गुरु-गृह में रहकर, अनेक विद्याओं और कलाओं का अध्ययन कर विद्या विनय-संपन्न ब्रह्मचारी अवभृथ स्नान करता और फिर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। अवभृथ स्नान करने वाला ही 'स्नातक' यानी दुनियादारी में पडने की योग्यता प्राप्त व्यक्ति कहा जाता था। लेकिन उन दिनों लडकियों का न तो उपनयन होता था और न आज की तरह कोई उन्हें शिक्षा ही देता था। यही कारण है कि उनके लिए ब्रह्मचारिणी या स्नातिका शब्द का प्रयोग नहीं होता था। लडकी सयानी होते ही स्नातिका समझ ली जाती थी। वह गृहस्थी में प्रवेश करने और मातृपद पाने योग्य मान ली जाती थी। पतिगृह प्रवेश ही उसका गुरुगृह प्रवेश और ऋतु-स्नान ही उसका स्नातकत्व माना जाता था।

प्राचीन काल में स्त्रियों के लिए उपनयन या व्रतबंध विहित न होने के कारण ही उन्हें वेदाध्ययन आदि का अधिकार भी नहीं था। उनके बारे में मनु ने मंत्रयुक्त विधि आदि का निषेध किया है। आज भी हम लोग देखते हैं पंडितजी (पुरोहित) स्त्रियों से अभिषेक करवाना हो तो रुद्र का पाठ न कर महिम्नस्तोत्र का ही पाठ करते हैं यानी आज भी हमारी धर्म विधि में स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त नहीं है। यही कारण है कि आज भी उनका वेदाध्ययन का संस्कार नहीं किया जाता। उनके लिए न तो गुरुगृह निवास है और न अवभृथस्नान ही। यह अलग बात कि इस युग में यही लडकों पर भी लागू है।

आजकल हम लोग विभिन्न विद्यालयों एवं विद्यापीठों द्वारा स्त्री शिक्षा का जो उपक्रम कर रहे हैं वह एक युगप्रवर्तक कार्य है। प्राचीन वाङ्मय में इसका ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता। शिक्षणकार्य के लिए स्त्री माता के नाते पुरुष की अपेक्षा हजार गुना श्रेष्ठ मानी गई है। मनु ने एक जगह कहा है कि 'दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य श्रेष्ठ है, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता श्रेष्ठ है, और माता हजार पिताओं की अपेक्षा (गुरु के नाते) श्रेष्ठ है।' किंतु प्रत्यक्ष जीवन में इस बात का प्रमाण या कोई चिह्न न मनु के युग में और न बाद के युग में ही दिखाई पडता है। स्मृतियों में भी इसका चिह्न या सूचक संकेत नहीं दीखता। स्मृतियों में एकाध वचन हो तो उसका संकेत श्रुतियों में कहीं-न-कहीं दिखाई पड ही सकता है। मनु के युग में एक भी स्त्री 'आचार्य' दिखाई नहीं पडती। अवश्य उससे पहले श्रुतियों में गार्गी, मैत्रेयी जैसे उदाहरण दिखाई पडते हैं फिर भी स्त्री के आचार्य होने का उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता। जब स्त्रियों के लिए गुरुकुल ही नहीं थे तो स्त्री आचार्या कैसे होगी?

आज हम लोग इस विषय में स्त्रियों की भूमिका में क्रांति करना चाहते हैं। आधुनिक शिक्षा शास्त्र का यह एक महनीय प्रमेय है कि गुरु के नाते स्त्री पुरुषों से हजार गुना श्रेष्ठ है। इसका प्रत्यक्ष प्रयोग हम प्रगतिशील राष्ट्रों में दिखाई पडता है। क्रांतिकारी राष्ट्रों में अग्रगण्य माने जानेवाले रूस में शिक्षक की अपेक्षा शिक्षिका की योग्यता अधिक मानी जाती है। शिक्षण के क्षेत्र में इस प्रमेय का प्रयोग सूक्ष्मता से हुए बिना हम समाज में मूल्यपरिवर्तन नहीं कर सकते। अतएव आगे से जिस अर्थ में लडकों के लिए 'स्नातक' शब्द रूढ हो गया है उसी अर्थ में वह लडकियों के लिए भी शिक्षण और जीवन में प्रयुक्त होना चाहिए।

उत्क्रांति या विकास का एक मूलभूत सिद्धांत यह है कि एक का उद्धार दूसरा नहीं कर

सकता। हरिजनों का उद्धार सवर्ण नहीं कर सकता। इसीलिए बापू जब हरिजनसेवा का आंदोलन चलाते थे तब कहते थे कि 'अस्पृश्यता निवारण हरिजनों के उद्धार के लिए नहीं बल्कि सवर्णों के उद्धार के लिए है। अस्पृश्यभावना से सवर्णों का अधःपतन हो गया है। अतः आत्मशुद्धि के लिए उन्हें हरिजनसेवा करनी चाहिए। हरिजनों का उद्धार तो हरिजन ही कर सकते हैं। अपना उद्धार हम ही कर सकते हैं यह अबाधित सिद्धांत है।

यही न्याय स्त्रियों पर लागू है। पुरुष ने नारी को दबा दिया है। उसका विकास होने नहीं दिया। इस पाप का प्रायश्चित उसे करना ही चाहिए। लेकिन वह होगा खुद के कल्याण के लिए ही, अपने ही उद्धार के लिए स्त्री पर मेहरबानी कृपा या करुणा के रूप में नहीं। स्त्री का उद्धार पुरुष कर नहीं सकता। वह तो उसे स्वयं ही करना होगा। दूसरे के मरने से हम स्वर्ग नहीं देखेंगे।

जब तक स्त्री और श्री के बीच अभेद बना रहेगा तब तक स्त्री की भूमिका श्री से अलग रह नहीं सकती। महाभारत में भीष्म ने स्त्री को श्री कहा है। मनु ने भी उन्हें घर की दौलत और घर की शोभा कहा है। श्री और स्त्री शब्द के उच्चारण में तो साम्य है ही। महाभारत में द्रौपदी को दुर्योधन के दरबार में आने का बुलावा जाता है। इस प्रसंग का वर्णन मोरोपंत ने किया है। उस दूत से द्रौपदी कहती है स्त्री म्हण श्री नव्हे —अर्थात अरे उन्होंने श्री मंगवाई होगी स्त्री नहीं। लेकिन समाज में स्त्री और श्री के उच्चारण में ही नहीं अर्थ में भी अभेद है। विवाह में स्त्री को लक्ष्मी कहने की प्रथा है। स्त्रियों का दर्जा' यानी लक्ष्मी का दर्जा। भले ही साहित्य और पुराण में लक्ष्मी विष्णुपत्नी हो लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार में तो वह जड़ संपत्ति ही मानी जाती है। लक्ष्मी शब्द धन और संपत्ति का ही द्योतक है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भीष्माचार्य ने राजा को उन चीजों की सूचि दी है जिनके चुराये जाने का भय रहता है। उस सूचि में स्त्री भी है। मुझे लगता है कि स्त्रियों के सभी प्रश्नों में यह एक यक्ष प्रश्न है। अगर यह हल नहीं होता भले ही अन्य सब प्रश्न हल हो जाय तो उसकी सामाजिक भूमिका बिल्कुल नहीं बदल सकती।

इस वस्तुस्थिति का परिणाम हमारी भावनाओं विचारों और संस्कारों पर हो गया है। स्त्री विश्वास की पात्र नहीं। आप लोग मेरे इस कथन का गलत अर्थ न करें। मैं यह नहीं कहता कि स्त्री मिथ्या या कपटी होती है। वह सर्वदा प्रामाणिक और सत्यनिष्ठ हो सकती है—बिल्कुल सत्यवादी और सदाचारी हो सकती है फिर भी वह विश्वासपात्र नहीं है। मेरे कहने का अभिप्राय कदाचित अंग्रेजी के अनरिलायेबल शब्द से अधिक स्पष्ट हो सकता। सर्वथा आनस्ट (ईमानदार) व्यक्ति भी अनरिलायेबल हो सकता है। उदाहरणार्थ छोटा बच्चा या बूढ़ा व्यक्ति सर्वथा आत्मनिर्भर नहीं रह सकते। स्त्री के रक्षणीय होने के कारण उस अपने खुद के भरोसे छोड़ा नहीं जा सकता। इस दृष्टि से वह अविश्वसनीय न होने पर भी विश्वास पात्र भी नहीं है। उसके बारे में हम निश्चिंत नहीं रह सकते क्योंकि वह स्वयं निर्भय नहीं है।

आप कहेंगे यह शारीरिक दुर्बलता के कारण स्वाभाविक है। मैं अधिक विवाद में पड़ना नहीं चाहता लेकिन स्त्री का यह स्वभाव नहीं परंपरागत संस्कार ही है—इतना अवश्य कहूंगा। इस बार में प्रकृति को दोष देना गलत है। दुर्बलता शरीर का धर्म हो तो भी

वह मन का धर्म नही बनना चाहिए, यह मैं अवश्य कहना चाहता हूँ। मन कमजोर न हो तो बस है। इस विषय म स्त्रिया, पुरुषा से पश पा सकती हैं। जिसका मन दुबल होता है उसकी उन्नति सभव नही। दुबल मन म कोमल भावनाएँ भी नही रह सकती। कमजोर मन म करुणा नही समाती। क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति यह सोलह आना सच है।

स्त्रिया का मन कामल होता ह, यानी कमजोर होता है ऐसा माना जाता है। लेकिन कोमल का अथ 'दुबल' नही ह। 'नाजुक' का मतलब कमजार नही। किंतु स्त्रिया 'भीरु' कही गई ह इसीलिए उनम चचलता की भी कल्पना की गई है। सवत्र यही माना जाता है कि कामिनी भी लक्ष्मी जसी ही चचल हाती है। दशरथ जसा चक्रवर्ती राजा भी जब ककेयी के हठवाद से हैरान हा गया ता उसने स्त्रिया का 'अनित्यहृदया' कहा, यानी कहा कि स्त्रियाँ अस्थिरवृत्ति की होती है। चचलता तरा नाम स्त्री है—इस वाक्य मे शेक्सपियर न माना वाल्मीकि के इस वाक्य का अनुवाद ही कर दिया है। प्राचीन सुभाषितकार ता इससे भी आगे बढ गये। उन्हान उद्गार व्यक्त किए कि पुरुषा क भाग्य की तरह स्त्रिया का चरित्र देवता भी जान नही सकत, फिर पामर मानव की क्या बात।"

स्त्रिया के विषय म ऐसी धारणा बनने का एकमात्र कारण है उनका डरपाकपन। भीति और नीति और प्रीति। वास्तविक नीति और वास्तविक प्रीति का स्त्री के जीवन म स्थान ही नही रह गया है। उपन्यास और कहानिया का प्रेम अलग है और स्वायत्त एव सम्पन्न हुए जीवन को जिस प्रेम की जरूरत हाती ह, वह अलग है।

लज्जा और भीरुता स्त्रिया के भूषण मान गय है इसीलिए वे खुले तौर पर दुनिया मे जी भी नही पाती। वे जन्मभर लजाती हुई ही जीती है डरती डरती ही जीती है। उन्ह जीने मे भी लाज लगती है। हम जी रही ह मानो दुनिया क समक्ष इसके लिए क्षमा याचना करती हुई बेचारी जीवन बिताती हैं।

मैं स्त्री जीवन के इस मूलभूत प्रश्न की ओर आप लागा का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। समाज म स्त्री क सुरक्षित हान मात्र स उसकी समस्या हल हो नही सकती। उसे पुरुषा के बराबरी की भूमिका प्राप्त नही हो सकती। पुरुषा द्वारा स्त्रिया की रक्षा की जा सकती है। सभी दुष्ट पुरुषा का सफाया कर देन पर स्त्रिया उनस सुरक्षित हो जायगी। उन्ह पुरुषा स भय नहा रहगा। लकिन इतन स वे स्वतत्र कभी नही हो सकता। जब तक स्त्री 'स्वरक्षित' न होगी, तबतक वह सच्चे अथ मे सुरक्षित नही हो सकती। जबतक उनम दुष्टा और गुडो का प्रतिकार करन की क्षमता नही आती तबतक स्त्री जीवन सुरक्षित और स्वतत्र हो नही सकता जो स्वरक्षित नही वह सुरक्षित भी नही। गत महायुद्ध म बहुत सी स्त्रिया न युद्ध म अद्भुत शौय दिखाया विलक्षण धय और साहस के काम किय लेकिन इतना करन पर भी उन राष्ट्रा की स्त्रिया की सुरक्षा का प्रश्न शेष ही रहा। शत्रु स रक्षणीय चीजा म अब भी स्त्रिया की गणना की जाती ह। इतनी महान झासीवाली लक्ष्मीबाई न भी जिमन कि युद्धकम की पराकाष्ठा कर दिखाई अत म अपने शरीर की रक्षा क लिए अग्नि का ही सहारा लिया। स्त्री की प्रतिष्ठा उसकी इज्जत, उसका शील इस तरह शरीरनिष्ठ बन गया है।

एक दूसरे भी अथ म गत महायुद्ध म स्त्रियो की शरीर निष्ठ उपयुक्तता का प्रमाण

मिला है। शत्रुपक्ष की गुप्त खबर लाने के लिए गुप्तचरो के काम में स्त्रियाँ नियुक्त की गई थी। मोहक स्त्रियाँ शत्रु के पास भेजी जाती थी। इस तरह पुरुषों के चित्त में रही हुई स्त्री शरीर विषयक कामना का लाभ उठाया गया। कुछ लोग कहते हैं, इन स्त्रियों ने अपने देश के हित के लिए अपना शील तक दे डाला। लेकिन मुझे लगता है कि स्त्रियों ने पुरुषों की स्त्री विषयक कामना से लाभ उठाकर अपने शरीर का दुरुपयोग कर लिया। आखिर अप्सराएँ ही तपस्वियों के साथ क्या करती थी? इसको रूप का शोषण कहा जाता है। इस तरह अपने शरीर का उपयोग करना कभी भी स्त्री को भूषणास्पद नहीं मानना चाहिए। इसमें स्त्री शरीर की विडम्बना और मानवता का अपमान है।

स्त्री को प्रेमजीवी कहा गया है। उसका हृदय प्रेम का अखण्ड स्रोत है। लेकिन मैं अत्यंत नम्रतापूर्वक बताना चाहता हूँ कि दुर्बल अंतःकरण में प्रेम रह ही नहीं सकता। आजकल हम लोग जिसे स्त्री का प्रेम कहते हैं वह प्रेम न होकर निष्ठा है। किसी दास के चित्त में अपने मालिक के प्रति अटल निष्ठा हो सकती है। पुराने जमाने में ईमानदार नौकरों की स्वामि भक्ति प्रसिद्ध ही हुआ करती थी। लेकिन वह निष्ठा भक्ति यानी प्रेम नहीं है। 'पतिनिष्ठा' का अर्थ पतिप्रेम नहीं। पातिव्रत्य अलग चीज है और प्रेम अलग। दास में निष्ठा होने पर भी प्रेम रहना ही चाहिए ऐसी बात नहीं। प्रेम के लिए बराबरी का नाता चाहिए। उसमें भय का एक कण भी नहीं रहना चाहिए। लोग कहते हैं 'बिनु भय होत न प्रीत'। लेकिन वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। भय और प्रेम एक साथ रह ही नहीं सकते। जबतक स्त्री को पुरुष से भय बना रहेगा जबतक वह उससे खुले दिल से प्रेम नहीं कर सकती।

इसलिए लडकियों को मेरी पहली सलाह है कि वे भय छोड दें। ईश्वर का भी भय छोड दें। जिससे भय लगता है उसे कोई नहीं चाहता। बच्चा कभी मास्टर को नहीं चाहता। बालक कभी नहीं चाहते कि कठोर प्रकृति पिता घर पर रहे। जिस स्त्री को अपने पति से डर लगता है वह यही चाहती है कि पति सदा काम पर ही रहे। हम पुलिस का साथ नहीं सुहा सकता। दूसरों से डर रहने पर ही पुलिस की जरूरत महसूस होती है। इसी तरह स्त्री भी किसी पुरुष का आश्रय इसीलिए करती है कि दूसरे पुरुषों से रक्षा हो सके। एक को वह अपना सर्वस्व समर्पण कर देती है। इस सर्वस्वदान को निष्ठा भले ही कहा जाय लेकिन यह समान भूमिका पर बराबरी के नाते का प्रेम नहीं है। जब तक हम शेर से डरते हैं तब तक उससे हिलमिल नहीं सकते। जब शेर ममने जैसा सीधा होगा तभी हम उसे सहला सकते हैं। उससे दोस्ती कर सकते हैं। जिस दिन स्त्री, पुरुषों का भय त्याग देगी उसी दिन वह उसपर वास्तविक प्रेम कर सकेगी। बलवान मन और बलवान हृदय ही प्रेम का पात्र हो सकता है।

स्त्री स्वरक्षित होनी चाहिए। उसे लज्जा और भय छोड देना चाहिए और उसे ऐसा मोड शिक्षा से मिलना चाहिए। यह आधुनिक स्त्री शिक्षा का आधार भूत सिद्धांत है। यह मानसिक शांति सम्यक् शिक्षण से ही सध सकती है।

शिक्षण पद्धति सम्बन्धी अन्य मुद्दे स्त्री और पुरुष दोनों के शिक्षण के लिए सामान्य हैं। मैं उनका बहुत ही सरसरी तौर पर उल्लेख कर सकूँगा। आज का शिक्षणशास्त्र कहता है कि शिक्षा में सामंजस्य और अनुबंध चाहिए। शिक्षा के विभिन्न विषयों पर परस्पर संबंध हो

सामजस्य है और कुल शिक्षा का जीवन से सबद्ध होना ही 'अनुबध' है।

सामजस्य और अनुबध के सिवा शिक्षा का एक तीसरा भी सिद्धात है। उसे हम 'विनय' कहे। अग्रेजी मे जिसे 'कल्चर' कहते हैं उसे हम विनय कहेगे। विनय यानी सदभिरुचि। यह व्यक्ति की रुचि, अरुचि और व्यवहार से व्यक्त होती है। हमारे प्राचीन साहित्य म विद्या और विनय का अभेद्य सबध माना गया है। मानव की अभिरुचि उसके उठने-बैठने, बोलने चालने, देखने-सुनने यानी जीवन के सभी व्यवहारो से व्यक्त हुआ करती है। अग्रजी म जिसे हम कल्चरल वैल्यू या सास्कृतिक मूल्य कहते हैं उसमे मुख्यत दो गुणो का समावेश होता है—एक सुसस्कृत अभिरुचि और दूसरा बलेंस अर्थात सतुलन या तारतम्य। विनयहीन विद्या सतुलित नही रहती। मानव के मनोरजन म भी यही है। उसके मनोरजन म भी, मुख्यत उसकी अभिरुचि स्पष्ट होती है। अन्य जीवो को कष्ट देनेवाला मनोरजन सदभिरुचि से रहित हुआ करता है। अगर बच्चा मेढक की जान ले रहा हो तो उसका वह खेल आसुरी ही माना जाता है। जिस खेल म दूसरो के सुख का ध्यान होगा वह सुसस्कृत और सदभिरुचिपूर्ण कहा जायगा। इस विनयशीलता को ही समाजशास्त्र की भाषा म सामाजिकता कहा जाता है। शिक्षा के कारण यह सामाजिकता बढनी चाहिए। जीवन के प्रत्येक व्यवहार म हम दूसरो के साथ काम करने की कला सधनी चाहिए। स्त्री पुरुषो को एक दूसरे के साथ बर्ताव करने मे भी यह कला सधनी चाहिए। सार्वकालिक सदभिरुचि की यही कसौटी है।

स्त्री पुरुषो के साथ खुले तौर पर रह सकें, इसके लिए उसे आज तक अपने हाड मास म भिदी हुई बहुत सी गलत धारणाओ को त्याग देना होगा। ऐसी धारणाओ मे एक यह भी है कि 'स्त्री का शरीर काच के बतन जैसा है। इसलिए उसकी इज्जत कुरकुरी है। अगर आप लोग इस धारणा से चिपकी रहेगी, तो आप के साथ काच के बतन की तरह ही बर्ताव करना होगा। आपके जीवन पर यह लेबल लगाना पडेगा—ग्लास विद केयर—यानी सँभालो यह काच है। काच के बतन अन्य बतनो के साथ कभी नही रखे जा सकते बल्कि वे एक-दूसरे के साथ भी नही रखे जा सकते। एक दूसरे के साथ रखना हो, तो उनम बीच म रुई या कागज का भूसा भरना पडता है। जब तक स्त्रियो के मन म यह गलत और खुराफाती धारणा बनी रहेगी, तब तक स्त्रियो के बीच भी परस्पर मैत्री हो नही सकती। उनम भी परस्पर अविश्वास ही बना रहेगा। बीच-बीच म भूसा भरना पडेगा। यही कारण है कि 'पुरुषो का मत्सर' प्रसिद्ध नही है, 'स्त्रियो का ही मत्सर' प्रसिद्ध है। स्त्रियो की मैत्री प्रसिद्ध नही। पुरुष ने अपने मित्र के लिए पत्नी के गहने भी बेच दिये ऐसी कथाएँ मिलती है लेकिन यह कभी सुनाई नही पडता कि किसी स्त्री ने अपनी सहेली के लिए पति का सोने का ठोस कडा या घडी बेच दी हो। स्त्री का प्रेम अपने परिवार के सीमित क्षेत्र म ही अपना चमत्कार दिखलाता है। अब समाज के व्यापक क्षेत्र मे उनका तेज और माधुर्य अनुभव म आना चाहिए। उस प्रेम की उत्कटता और निरपेक्षता से हमारा सामाजिक जीवन उन्नत और उदात्त होना चाहिए। ऐसा होने के लिए भीरुता स्त्री का भूषण न होकर दूषण है यह बात लडकियो के हृदय म अकित कर देनी चाहिए।

भीरुता की तरह 'लज्जा भी स्त्री का एक गुण है', यह एक भ्रम लोगो म प्रचलित है। वास्तव म लज्जा गुण न होकर दोष ही है। भय की तरह वह भी बहुत बडा दुर्गुण है। उनके

लिए मर्यादा और संयम के अर्थ में ही भय और लज्जा बताई गई है। यहा भय शब्द का अर्थ मर्यादा और लज्जा शब्द का अर्थ तारतम्य है। शिष्टाचार और शालीनता की मर्यादाएँ स्त्रियों की तरह पुरुषों को भी पालनी चाहिए। शालीनता या विनय दोनों के जीवन की शोभा है। लज्जा का अर्थ विनय नहीं। लज्जा यानी कुलीनता नहीं शालीनता नहीं। आप लोगों को बुरके में या परदे में जाने के स्थान पर खुली हवा में ही जाना आना चाहिए। अगर आप लोग काच के बर्तन हो तो आपको बंद अलमारी में सावधानी के साथ रखना पड़ेगा। समझ बूझकर पचाकर आपका उपयोग करना पड़ेगा। आपको काच का बर्तन बनने में ही भूषण मालूम पड़ता हो तो आपके जीवन में काच की चमक और पारदर्शकता अवश्य होनी चाहिए लेकिन उसका नाजुकपन नहीं चाहिए। उसका कुरकुरापन नहीं चाहिए। विनयशीलता के साथ इस तरह के खुलेपन का कोई विरोध नहीं।

सक्षेप में मैंने छ बातें बताई

१ स्त्री सुरक्षित नहीं स्वरक्षित होनी चाहिए।

२ अब स शिक्षण के विकास के लिए उसमें सामजस्य और अनुबंध ये दो तत्त्व दाखिल होने चाहिए।

३ शिक्षण का स्वाभाविक परिणाम विनयशीलता में होना चाहिए।

४ स्त्रियों को स्त्रियों और पुरुषों के साथ समान भूमिका पर मित्रता के नाते रहने की कला सधनी चाहिए।

५ समानतत्त्व यानी समान रूपत्व नहीं। स्त्री पुरुषों की बराबरी की होगी, यानी वह उसके जैसी होगी ऐसी बात नहीं है। विकसित स्त्री का अर्थ नकली पुरुष नहीं है। यहा समानता का अर्थ तुल्यता है। स्त्री की भूमिका पुरुषों की भूमिका के तुल्य रहेगी। सरस भी होगी। कई विषयों में समान भी रहेगी। लेकिन उससे कम दर्जे की कभी न रहेगी। स्त्री की प्रतिष्ठा वीरमाता या वीरपत्नी होने में ही नहीं वीरागना होने में है। वीरपुरुष की पत्नी बनकर घूमने से वह वीरागना नहीं होगी। जिसका पराक्रम स्वायत्त (स्वाधीन) होगा वही वीर स्त्री है। वीर पुरुष की तरह वीर स्त्री बनने में आपको भूषण गर्व मानना चाहिए।

६ नया युग आयगा यह भगवान कह चुके हैं। पुराने मूल्य समाप्त होकर उनकी जगह नई दुनिया में नये मूल्य आयेंगे। उन नये मूल्यों का आधारभूत परम मूल्य है स्त्री पुरुषों का साधारण मनुष्यत्व। उसकी प्रतिष्ठा शिक्षा से बढ़नी चाहिए जीवन में दृढ़ होना चाहिए।

समन्वय-सस्कृति और नारी

काका कालेलकर

भारत एक वडा विस्तृत देश है। इसकी सस्कृति भी मानवजाति के इतिहास जितनी पुरानी है। दुनिया के सब धर्म यहाँ आकर बसे है। यहा पहाडी प्रदेश भी हैं बडे-बडे जगल हैं सारा देश खेती प्रधान तो है ही। कही-कही रेगिस्तान पाये जाते है और तीन हजार मील का इसका समुद्री किनारा है। यहा पर जीवन की जो विविधता है सो कल्पनातीत है। लोक-सख्या का बडा हिस्सा हिन्दुओ का है बाकी के धर्म-समाज भी जातियो का रूप लेकर यहा अपना अपना विकास करते आये हैं।

यहा पर भाषाएँ भी अनेक हैं। फलत जितनी भाषाएँ उतने अलग समाज—ऐसी स्थिति पाई जाती है। इसमे भी हरेक जाति का जीवनक्रम अलग है। खान-पान के नियम अलग हैं। इसलिए सबो के लिए समान एकसा सामाजिक जीवन पाया नही जाता।

यह हो गई सारे राष्ट्र की हालत जिसमे पुरुष जाति ही प्रधान है। यहा पुरुषो का जीवन इस विविधता के कारण ओतप्रोत नही है वहा स्त्रियो का जीवन तो पुरुषो से भी अधिक विच्छिन्न है—एकाकी है और परस्पर भिन्न है। किसी एक भाषावाले प्रदेश को ही लीजिए उस प्रदेश के सब लोग एक भाषा बोलते हैं तो भी सारा समाज परस्पर ओतप्रोत नही है। हिन्दू समाज मुसलमान समाज से अलग रहता है इसमे तो बडा आश्चर्य नहीं लेकिन लोगो को एक-दूसरे के समाज की आन्तरिक

स्थितिका परिचय भी कम है। इस्लाम और ईसाई धम दोना जागतिक हाने का दावा करते है, व अय धर्मी लोगा से कहत रहत है कि अपना धम छोडकर हमारे धम का स्वीकार करो, हमारे साथ ओतप्रोत बन जाओ, तभी तुम्हारा उद्धार होगा। एक ही धम सारी दुनिया म चले ऐसा आदश लकर जो समाज जीता है और अपना विकास करता है उसम तो एकता का सम्भव मानने और बनान का आग्रह हाना चाहिए। लेकिन ये दो धम समाज भी भारत मे एक एक जाति के जसे बनकर रहे है। बगाल की मुस्लिम स्त्रिया और पजाब की मुस्लिम स्त्रियाँ समान धम के बाद भी एक समाज नही बन सकी हैं—यह अलगाव कितना भयानक ह। इसका सबूत अत्यन्त कठोर और शमनाक रूप म दुनिया देख सकती है। पजाब की मुस्लिम पाकिस्तानी फौज न बगाल की मुस्लिम स्त्रिया पर लाखो की सख्या म जो अत्याचार किए उसका वणन पढकर समस्त मानवजाति शम के कारण लज्जित हो गई है।

एसी हालत म सारे देश म भारतीय नारी का एक समाज कहा स हो सकता है ? भारत की सब स्त्रिया के बारे म एकत्र सोचना कठिन बात है। इस विषय पर जा किताबें उपलब्ध है उनम ज्यादातर हिन्दू स्त्रिया क जीवन का ही विचार किया किया है।

भाषा भेद धम भेद प्रादशिक भेद जाति भेद आदि अनेक भेदा के उपरान्त आर्थिक सुस्थिति अथवा उसके अभाव के कारण भी समाज म भिन्नता आ जाती है। उनका आपस म मिलना कठिन होता है। एसे भेद को रोटी व्यवहार और बेटी व्यवहार की मर्यादाआ के द्वारा पहचाना जाता है।

एसे इस देश म नारी जाति के स्वरूप इतने इतने भिन्न हाते हैं कि उनका एकत्रित विचार करना आसान नही है। तो भी उनकी समस्याआ म कई सवाल समान पाए जाते है। इसलिए भारतीय नारी का चिन्तन हम कर सकते है और भविष्य म एकता बढगी ऐसी अपेक्षा के कारण भी हम इस सवाल का एकत्रित रूप म सोच सकत हैं।

हमने शुरू म कहा कि केवल भारत म ही नही सारी दुनिया म जो भी सामाजिक सगठन है सबम पुरुषा की प्रधानता है। धर्मों का चिन्तन धर्मों क सगठन आय क साधन और सामाजिक सगठन का स्वरूप सब बातें पुरुष निर्मित है। मानवीय सस्कृति भी पुरुष-सस्कृति है। समस्त स्त्री-जाति मानवता का आधा हिस्सा है सही लेकिन वह आश्रित उपेक्षित और अनुयायी है। यह भेद इतना पुराना है इतना दृढमूल हो गया है कि सामान्य मान्यता है कि पुरुषा की श्रेष्ठता स्त्रिया की एसी दशा प्रकृति निर्मित यानी स्वाभाविक ही है।

ऐसा समथन क कुछ कारण भी हैं। मानववश चलान क लिए बच्चा को जन्म दना अत्यावश्यक है—इसम पुरुष स्त्रिया क सहयाग स ही बच्चे पदा हात हैं। तो भी बच्चा का भार सबस अधिक स्त्री पर ही हाता है। बच्चा को ९ महीने माँ अपन गभ म रखती है और अपन खून से उनका विकास हान देती है। जन्म क बाद भी बच्चे को काफी समय तक माँ क दूध पर ही जीना पडता है। यह दूध भी बच्च का माँ क शरीर स मिलता है। मनुष्य दुनिया म कहीं भी जाय, बच्चा का पालन-पोषण माँ का ही करना पडता है। फिर घर म रहना घर चलाना खाना पकाना बच्चा का अच्छे सस्कार दना—यह सब काम माता का ही करना पडता है। इतना वडा सास्कृतिक बोझ माता उठाती है। इसी कारण माँ कमान का धधा नहीं कर सकती।

मानवता की सब प्रवृत्तियाँ माता का ही करनी पडती है। इसी कारण पुरुष बाहर का काम सम्हालता है। आय का कमाना खेती करना, घर बनाना युद्ध चलाना आदि सब काम पुरुष को ही चलाने पडते है। तब स्वाभाविक है कि स्त्री सदा पुरुष की आश्रित रही।

सामान्यतौर पर हम कह सकते है कि विवाह संस्था भी बच्चा के विकास के कारण ही पदा हुई है। विवाह संस्था का विचार स्त्रियो की और पुरुषो की आवश्यकताएँ ध्यान म लेकर नहीं, किन्तु बच्चा के जन्म और विकास के कारण ही पदा हुआ है।

स्त्री पुरुषा को एक दूसरे का सहवास चाहिए सम्भोग-सुख चाहिए। संस्कारी जीवन जीने से लिए श्रम विभाग आवश्यक है। लेकिन यह सारा विवाह संस्था की स्थापना के बिना सम्पन्न हो सकता था। सामान्य मत्री म जितना सहयोग और सहजीवन आवश्यक है उसके कारण विवाह के जसी संस्था उत्पन्न नहा होती। माता पिता का सहयोग और सह-जीवन और परस्पर निष्ठा—तीना बातें बच्चा क विकास के लिए ही आवश्यक है।

जिस तरह आहार प्राप्ति के लिए मनुष्य ने खेती की कला बनाई, गो रक्षा का प्रारम्भ किया, चीजो के विनिमय के लिए बाजार जसी संस्था स्थापित की उसी तरह बच्चो की परवरिश के लिए विवाह संस्था सोची गई है।

पति-पत्नी की परस्पर निष्ठा उन दोना क जीवन विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है इसम तनिक भी शका नही है किन्तु इसस भी अधिक यह बात सोची गई कि बच्चो क विकास के लिए परस्पर निष्ठावान मा-बाप होने चाहिए। उनका सह-जीवन स्थायी होना चाहिए। बच्चो का उनकी रक्षा उनका भरण पोषण और जीवन विकास के लिए शिक्षा आदि सब बातें आवश्यक है ही, लेकिन इसके अलावा बच्चो का माता पिता के वात्सल्य का भी अनुभव होना आवश्यक है। अन्न की जितनी आवश्यकता है उतनी ही आवश्यकता परस्पर निष्ठा वाले स्थायी रूप से गृहस्थाश्रम चलाने वाले मा-बापा को वात्सल्य की, बच्चा के प्रेम आदि की है।

अगर हमने मान्य किया कि विवाह संस्था बच्चा के हित के लिए ही प्रधानतया खडी की गई है तो हम मानते हैं कि स्त्री जाति की सब समस्याओ का हल हम इसी म से मिलेगा। इतना ही नहीं नारी जाति की सब समस्याओ का हल इसी एक शुद्ध दृष्टि के स्वीकार से मिल सकेगा।

विवाह की संस्था मान्य करने के बाद स्त्रियो का यह अपेक्षा रखने का अधिकार प्राप्त हुआ कि माताए घर चलाएँगी और घर की रक्षा का बोझ पुरुषा के कन्धे पर रहेगा।' आजीविका प्राप्त करने का भार पुरुषा पर ही होगा। इसलिए खेती करना बाजारो का सगठन करना तरह तरह के उद्योगो के द्वारा चीजें पदा करना आदि सब काम और समाज हित का अधिकाश चिन्तन पुरुषा का ही करना धर्म।

यह जो बडा श्रम विभाग स्त्री पुरुषों के अन्दर शुरू से चला आया है उसम यह जरूरी नही था कि पुरुषा को हम श्रेष्ठ मानें और स्त्री को हम आश्रित माने। विवाह मे विवाह के द्वारा उत्पन्न होने वाली कुटुम्ब संस्था म स्त्री-पुरुष दोनो का समान सहयोग है। वे किसी के आश्रित नहीं हैं। अधिकार दोना के समान होने चाहिए। समान अधिकार की बात अब दुनिया

वे सब पुरुष मान्य करने लगे हैं और स्त्रियों को हर क्षेत्र में स्थान भी मिलने लगा है। लेकिन इतना बस नहीं है। धर्म संस्था को जन्म दिया पुरुषों ने, समाज का संगठन किया पुरुषों ने, राज्य चलाने का काम आज तक ज्यादातर पुरुषों का ही रहा और युद्धकला तो पुरुषों की ही इजाद है। इस तरह जो नेतृत्व आज तक पुरुषों का रहा उसमें हमारे लेखे तो शांति के दिन कम आए हैं।

मानव जीवन के विकास में पुरुषों ने तीन तत्त्वों का विकास किया जो आइन्दा के लिए बाधक साबित होंगे। एक है प्रतिस्पर्धा (काम्पीटीशन) दूसरा है शोषण (एक्सप्लायटेशन) और तीसरा है युद्ध (वार)। दूसरे को दबाकर आगे बढ़ना यह है स्पर्धा। दूसरे की मेहनत से नाजायज लाभ उठाना यह है शोषण और दूसरे को मारकर उसकी जायदाद पर अपना अधिकार कर लेना यह है युद्ध। ये तीनों तत्त्व हैं तो असंस्कारी, अन्यायमूलक, अनार्य, असामाजिक, किन्तु जब तक इनके द्वारा किसी एक पक्ष को भी लाभ मिलता रहा—ये तीनों तत्त्व मानवीय प्रगति के लिए अत्यावश्यक माने गए। किन्तु अब इनकी हद आ गई है। विज्ञान की प्रगति के कारण, यंत्र विद्या की प्रगति के कारण और संगठन के विस्तार के कारण आइन्दा हरेक युद्ध विश्व युद्ध बननेवाला है और युद्ध के अन्त में किसी भी एक पक्ष को विजय न होते हुए सम्भावना दोनों पक्ष के नाश की ही है। मनुष्य संख्या का नाश और मानवीय मूल्यों का नाश। यही फल होगा संघर्ष, शोषण और युद्धों का।

इससे अगर बचना है तो संघर्षमूलक संस्कृति को ही तिलांजलि देकर समझौता और समन्वय की नयी संस्कृति स्थापित करनी होगी। इसमें स्त्री मानस ही अधिक काम देगा। इसलिए आज स्त्री जाति का नेतृत्व अत्यावश्यक हो गया है।

आज की पुरुष निर्मित संघर्ष मूलक संस्कृति का भविष्य हम विनाश की ओर ले जाएगा ऐसा देखकर संस्कृति में ही आमूल परिवर्तन करने की बात हम सोच रहे हैं और आशा करते हैं कि संघर्ष मूलक संस्कृति की जगह समन्वयमूलक एवं बिलकुल भिन्न संस्कृति लाई जा सकती है। इसमें स्त्रीजाति का नेतृत्व हम मदद करेगा क्योंकि स्त्रीजाति के हाथ युद्ध में बहाए जाने वाले रक्त से लाल नहीं बने हैं।

हम जानते हैं कि स्त्रियाँ भी झगड़ा करती हैं। सामाजिक शोषण से स्त्रियाँ लाभ उठाती आई हैं तो भी स्त्रियों का विषय तो घर चलाने का है। पुरुष युद्ध चलाते रहे स्त्रियाँ घर चलाती रहीं। इस सबमें उन्हें दिन रात समझौता करना ही पड़ता है। समन्वय के मानस का विकास स्त्रियों के द्वारा हुआ है। इसलिए हम चाहते हैं कि स्त्री जाति अब पुरुष संस्कृति की अनुयायी न बने। किन्तु समन्वय संस्कृति की निर्मिति में अपनी सारी शक्ति लगा दे। धर्म अर्थ काम और मोक्ष ये चारों अगर पुरुषार्थ हैं तो इनका समन्वय नायक है। (१) धर्म आज तक सारी दुनिया में लड़ता रहा है और अधर्म बढ़ रहा है। (२) दुनिया की अर्थ व्यवस्था आज तो शोषणमूलक है। (३) काम का पुरुषार्थ तो प्रमुख पुरुषार्थ बना बैठा ही है। पुरुषों को चाहे जितनी स्त्रियाँ करने का अधिकार प्रारम्भ से था और (४) मोक्ष की साधना कभी सामाजिक बनी ही नहीं। ऐसे इतिहास को जानते हुए हम कहेंगे कि अब समन्वय को नजर के सामने रखकर स्त्रियों का नेतृत्व मान्य करना होगा और विश्व की नारी को संघर्षमूलक संस्कृति का

विरोध करते हुए नयी धर्म-साधना देनी होगी। अर्थ-व्यवस्था में भी बुनियादी सुधार करना होगा। और काम वासना को वात्सल्य की दासी बनाना होगा।

तीन पुरुषार्थों की ऐसी नयी व्यवस्था सिद्ध होने के बाद चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष को सामाजिक बनाना होगा। व्यक्तिगत मोक्ष मोक्ष ही नहीं है। किन्तु पलायन है। उसकी जगह जीवन योग द्वारा सामाजिक मोक्ष स्थापित करने की आध्यात्म संस्कृति सूचित करने का काम नारी जाति को ही करना पड़ेगा।

नारी जाति के जितने भी सवाल आज पूछे जाते हैं अथवा इतिहासक्रम से हमारे सामने खड़े होते हैं उन सवालों के इलाज इस नये आदर्श के अनुसार समन्वय सिद्धान्त को अनुकूल रख कर ढूंढने पड़ेंगे। इसी दृष्टि से थोड़ा चिन्तन करके आज उठाए जाने वाले सब सवालों का जवाब देना है। हम थोड़े में बताते जाएँगे। जहां बुनियाद ही बदलनी है वहां विस्तार के लिए अवकाश कम रहता है। नई बुनियाद मान्य होने पर विस्तार तो हर कोई कर सकता है।

प्रथम सवाल है नारी के शिशुकाल की समस्या का। छोटे बच्चे मां-बाप के दिये हुए संस्कार आसानी से ग्रहण कर सकते हैं और ये बचपन के संस्कार ही संस्कृति की बुनियाद है। ऐसे संस्कार बच्चों को देना ही चाहिए। लेकिन साथ साथ हम कहेंगे कि 'देखिए आज तक सब लोगों ने जिन रिवाजों को अच्छा माना और जो रिवाज हम स्वयं पालते आये हैं सो ही तुमको दे रहे हैं। लेकिन भविष्य के जमाने को इनमें सुधार करने का तुम्हें पूरा अधिकार है। इसलिए आज तो हमारे रिवाज और संस्कार मान्य करके चलो। बड़े बनने पर उनमें सुधार करने का मौका तुम्हें मिलेगा। संस्कारों के बिना मनुष्य का अधःपात होता है। उससे आज हम तुमको बचायेंगे। लेकिन इन संस्कारों से भी अच्छे संस्कार हो सकते हैं जिनमें अधिक न्याय अधिक आत्मीयता प्राप्त हो सकती है। इसका इन्कार हम नहीं करेंगे और जब तुम उम्र में बड़े बनोगे और नयी-नयी बात तुम्हारे दिमाग में उगेंगी तब हम तुमको सुधार करने से रोकेंगे नहीं।' बच्चों को ऐसे गम्भीर शब्दों में समझाया नहीं जा सकता। बच्चों को किन शब्दों में समझाना, मां-बाप जानें। मां बापों को कैसे सोचना चाहिए यही हमने यहां बताया है।

छोटे बच्चों में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं रहता। दोनों को एक-से ही संस्कार दिये जाते हैं। तो भी कभी-कभी लड़कियों को सिखाया जाता है कि 'तुम तो लड़की हो, लड़कों की प्रतिष्ठा तुम्हें नहीं मिलती। पुरुषों के सामने स्त्रियों को दब कर ही रहना चाहिए।' ऐसे कुसंस्कार लड़कियों को नहीं देने चाहिए। इतनी बात सम्हाल लो तो शिशुकाल की कोई समस्या नहीं रहेगी।

बचपन की शिक्षा भी दोनों की एक सी होनी चाहिए। इतना ही नहीं किन्तु एक-साथ होना चाहिए। दोनों को बचपन में अलग-अलग रखने से दोनों का मानस विकृत होता है। जब तक बच्चे कपड़े पहनते नहीं तब दोनों को एक-दूसरे की नग्न-अवस्था में देखने का मौका मिलता है। वह हालत अच्छी है और इसलिए कपड़े पहनने के बाद, सह शिक्षा ही स्वाभाविक है।

अब सवाल आता है। विवाहित दशा की समस्याओं का। हमारी संस्कृति में सुरक्षा इसमें मानी गई कि काम विकार जाग्रत होने के पहले ही लड़के-लड़कियों के विवाह किये जाय जिससे मन में अपने पति और पत्नी को छोड़कर और किसी के प्रति मन में विकार पैदा ही न

हो। ऐस आदश स हमन क्या पाया, क्या खाया—यह सब अनुभव की बात है। अब हम मानने लग हैं कि किसी पर भी पति या पत्नी, मा-बाप की ओर स या बाहर स लाद न जाएँ। वाकिफ होना एक बात है। शादी का महत्त्व समझन की बात दूसरी है। लडका हो या लडकी सोलह या अठारह वष तक उनके शादी की बातें ही नही होनी चाहिए। उसक बाद शादी की चर्चा भल हो किन्तु अठारह या बीस वष तक शादी कर बठना अयोग्य समझना चाहिए।

और शादी म भी अगर मा-बापो ने तय किया तो लडके और लडकी दोनों की सम्मति लेनी ही चाहिए। दोनो को एक दूसरे से सामान्य परिचय का मौका मिलना ही चाहिए इसके लिए एकान्त की जरूरत नही है। अगर दोनो म स एक भी कहे कि हम परस्पर पूरा परिचय नही है हम सोचने के लिए समय दीजिए तो उनकी बात माननी चाहिए।

आज की हमारी सामाजिक हालत देखते मैं कहूँगा कि अगर युवा और युवती स्वेच्छा से शादी करना तय कर तो अपने-अपने मा बापो की सम्मति लेना उन्ही के हित का बात है। मा बाप आसानी स सम्मति न द तो जरा ठहरना अच्छा होगा और अपनी जिद पर डटकर मा-बाप से लडने का अधिकार तो अपत्यो का है ही लेकिन मा-बाप की जानकारी बिना शादी करना तो अनिष्ट कारक ही ठहरेगा।

विवाह के बाद नूतन दम्पत्ति मा बाप के साथ अपने घर पर रहे या अलग घर बनाकर रहे इस सवाल की चर्चा पहले नही होती थी। शादी के बाद बहू का सास के साथ रहना और नये घर के सस्कार पाना अत्यन्त जरूरी माना जाता था। अब व दिन नही रहे। अब तो जहाँ नौकरी मिले वहाँ तुरन्त जाना ही पडता है। इसलिए साथ रहना या अलग रहना यह सवाल चर्चा का विषय नही रहा। परिस्थिति ही निश्चित कर देती है। तो भी सामान्यतौर पर हम कहेंगे कि कौटुम्बिक प्रेम की वृद्धि के लिए कम से कम सात दो साल एकत्र रहना सब तरह से इष्ट है। किसी तरह का सकट आया तो आखिरकार सगे सम्बन्धी ही मदद के लिए दौडकर आ सकते है। यह भूलना नही चाहिए। और साथ रहने से जो सामाजिक सद्गुण वर्द्धिगत होते हैं और सहज तथा स्वाभाविक बन जाते है। उनका महत्त्व कम नहीं है।

और एक बात है। विवाह होने के बाद जो पहला बच्चा आता है उसकी सम्हाल अकेली माता अच्छी तरह स नही कर पाती। अस्पतालो के द्वारा और दाई रखकर भी बच्चो को वह लाभ नही मिल सकता जो घर के लोगो की सेवा के द्वारा मिलता है। या यह मान्य कर लेना है कि पुराने ढग की अविभक्त कुटुम्ब पद्धति चाहे जितनी सुन्दर और कल्याणकारी हो आज का युग उसके लिए अनुकूल नही है। इसलिए इसका जितना लाभ लेना देना जरूरी है उसे समझ लेना ही ठीक होगा।

हम जब नारी जाति के जीवन पर विचार करते है तब केवल मध्यम वग के खानदान का विचार हम नही करना चाहिए। मजदूरी करके जीवन जीने वाले लोगो को शूद्र समझकर उनके साथ विवाह सम्बन्ध नही करने का मध्यमवग का रिवाज अथवा आग्रह तोडना ही चाहिए। आइन्दा मध्यमवग के लोगो को घर मे आवश्यक मजदूरी तो करनी ही पडेगी। नौकर रखने का रिवाज बहुत मँहगा होगा और खतरनाक भी होता चला जायगा। फिर नौकरी भी केवल कलम चलाने की, याने बडी नौकरी, अब नही मिलेगी। सामान्य मजदूर का भी काम का कौशल सीखना

पडेगा और उसको तनख्वाह भी पूरा पेट भरने के लिए देनी ही होगी। ऐसी हालत म मजदूर वर्ग और मध्यम वर्ग—ऐसा बडा सामाजिक भेद रहेगा नही।

और अगर गाधीजी का सर्वोन्यवाद मान्य किया तो देश म अमीर भी नही रहेगे। मानव जाति म नतिक आदर्श के कारण ही काफी समानता स्थापित होगी।

जो हो समाज मे भिन्न भिन्न कुटुम्बो म परस्पर सहयोग बढाने की प्रवृत्ति अत्यावश्यक है। समन्वय संस्कृति म कौटुम्बिक भाव जाति तक जाकर रुक नही जायेगा। एक अचल म रहने वाले सारे समाज म सामाजिकता इतनी बढेगी कि जातिभेद, वर्णभेद तो क्या धर्मभेद भी समाज के टुकडे नही कर सकेगा।

अब सवाल लेंगे परित्यक्ता का और विधवा का। लेकिन इसके पहले ऐसी स्त्रियो का सवाल प्रथम सोचना चाहिए जो स्वेच्छा से अविवाहित रहना चाहती है। ऐसी अविवाहित स्त्री ज्यादातर अपने मा-बापो के साथ रिश्तेदारो के साथ अथवा अच्छे संस्कारी स्नेही आत्मीयजनो के परिवार म रहेगी, उसे अलग सोने का कमरा मिलना चाहिए और अपना हिसाब अलग रखने की सहूलियत और मुसाफिरी मे जाने की स्वतत्रता पूरी पूरी होनी चाहिए। अगर इतना रहा तो अविवाहित स्त्री की कोई खास समस्या रहती नही।

लेकिन जिस स्त्री को किसी परिवार म नही रहना है अकेले रहना है, उसकी समस्या तो वह स्वय हिम्मतपूर्वक हल करेगी ही। समाज कुछ समय तक उसकी निंदा करेगा बाद मे या तो उसका पूरा बहिष्कार करेगा अथवा उसे आदर के साथ अपनायेगा। अकेले रहने वाली स्त्री के सवाल उसके चारित्र्य और इससे भी बढकर उसके स्वभाव पर निर्भर रहेगे। अकेले रहने का प्रयोग पूरी हिम्मत के बिना हो नही सकता और हिम्मतवाली स्त्री की समस्या वह स्वय हल कर ही सकती है।

अब सवाल रहा परित्यक्ता का और विधवा का। हम कहेगे कि जिस विधवा के बाल-बच्चे नही हैं उसको तो पुनर्विवाह करना ही अच्छा है। प्रथम विवाह और पुनर्विवाह के बीच भेद मानने की आवश्यकता नही है। चारित्र्य अच्छा है तो दोनो म सब समस्याए समान होती हैं और आसान होता है।

जिस विधवा के बाल बच्चे हैं उसका तो अगर हो सके तो बाल-बच्चो के हित के लिए पुनर्विवाह नहीं करना ही हितकर होने की सम्भावना है। तो भी अगर बच्चो की व्यवस्था अच्छी तरह से हो सके तो विधवा को पुनर्विवाह करने की इजाजत तो होनी ही चाहिए उसे प्रोत्साहन भी मिलना चाहिए।

परित्यक्त होने म दोष पति का भी हो सकता है पत्नी का भी हो सकता है। स्वभाव का दोष ही मुख्य कारण होता है। और कभी कभी सामाजिक सकुचितता के कारण भी विवाह तोडना पडता है। इसलिए हरेक परित्यक्ता को निंदा-योग्य समझने की भूल समाज न करे। उसे सच्चा सहायता का पात्र समझा जाना चाहिए। उसकी कोई अलग समस्या मानने की आवश्यकता नही है।

अब खडा होता है एक अत्यन्त नाजुक सवाल जिसका हल आसान नही है।

विवाहित हो या अविवाहित हरेक स्त्री को कुटुम्ब के अन्दर रहना ही होता है लेकिन

अकेली रहना धनी समाज में ही बन सकता है। इस तरह हर स्त्री को रहने के लिए एक खानदान चाहिए। और आजीविका प्राप्त करने के लिए अच्छी परिस्थिति चाहिए। जिसकी शादी हुई है उसे तो पति से आवास भी प्राप्त है और आजीविका भी। उसका वहां सवाल नहीं है। किन्तु जिन स्त्रियों को भी कहीं नौकरी करनी पड़ती है वहां आजकल के समाज में कभी-कभी स्त्रियों की हालत बड़ी चिंताजनक होती है। स्त्री राजी खुशी से मजदूरी कर, ईमानदारी से जो आजीविका मिले उसमें रहने के लिए राजी हो लेकिन कभी कभी ऐसी स्थिति के प्रति कुदृष्टि रखने की आदत चन्द पुरुषों में होती है। और न्याय के खातिर यह भी कहना चाहिए कि कभी कभी मजदूरी के अलावा दूसरे ढंग से अपनी आमदनी में वृद्धि करने की कमजोरी स्त्रियों में भी होती है। ऐसी हालत में अगर चारित्र्य की कमी के कारण किसी पुरुष में स्त्री का सम्बन्ध बन जाय तो नसीब उनका! इसके लिए तो समाज अपने वायुमंडल की शुद्धि सम्हालने के लिए जो इलाज करता आया है वही करेगा किन्तु कभी-कभी मजदूरी या नौकरी करने वाली स्त्री को केवल लाचारी के कारण परिस्थितिवश अनीति का सम्बन्ध मान्य करना पड़ता है। ऐसे प्रसंग में समाज दुराचारी पुरुष को सजा नहीं दे सकता अथवा देना चाहता नहीं है। सजा देता है बेचारी स्त्री को। ऐसी दो किस्म की लाचारी में से बेचारी स्त्री को कैसे बचाना यह समाज के सामने एक बड़ा प्रश्न है। इसके लिए समाज के नेताओं को चाहिए कि वे शुद्ध दृष्टि से परिस्थिति की चर्चा करें स्त्री जाति की असह्य स्थिति सोचकर दयाभाव से उसका सवाल अपने हाथ में ले लें और सामाजिक परिस्थिति सुधारने की कोशिश भी करें।

किसी के घर में नौकरी करना या एक प्रकार गांव में रहने वाली स्त्रियों के लिए खेती का काम करना या दूसरा प्रकार कार्यालयों में मुहर्रिर के जैसा काम करना या अन्य ऐसे प्रकार है। और कल-कारखानों में यंत्रों के सामने बैठकर या खड़े रहकर काम करना यह भी एक सामान्य प्रकार है।

इन सब परिस्थितियों में अत्यन्त जरूरी है स्त्री जाति में तेजस्विता का प्रचार करने की। जहां कष्ट सहन करने की जरूरत पड़ने पर भूखे रहने की और मरने की तैयारी है और समाज के सामने अपना सवाल निर्भयता से पेश करने पर न्याय मिलने की सम्भावना है वहां स्त्री जाति को अपनी तेजस्विता प्रकट करने की शिक्षा मिलनी ही चाहिए। समाज के नेताओं को चाहिए कि आलस्य छोड़कर बेदरकारी छोड़कर समाज के कुटुम्बों की कार्यालयों की और कल-कारखानों की हालत देखने के लिए वहां आने जाने का रिवाज सार्वत्रिक करें। और सामाजिक शुद्धि और आदर्श के पालन के लिए समाज के लोगों को इकट्ठा करने का रिवाज भी शुरू करें। इसमें नित्य झगड़े चलाने वाले लोगों के दाखिल होकर काम बिगाड़ डालने का डर तो है ही लेकिन अगर शुरू से ही ऐसे डर की चर्चा कर ली जाय तो डर कम करना कठिन भी नहीं है।

जो हो जब हम सामाजिक क्रान्ति करने के लिए बैठे हैं और जब झगड़ा टालकर सर्वहित वायुमंडल स्थापित करना है तब नई चर्चा के लिए हम तैयार रहना ही चाहिए।

कला-साहित्य नृत्य संगीत नाट्य आदि विषयों का प्रारम्भ में अलग विषय के तौर पर लेना नहीं चाहिए। अध्यापक और विद्यार्थी स्त्री पुरुष सबके नित्य के सह जीवन में और राज

के कार्यक्रम में इन सब चीजों को स्वाभाविक स्थान होना चाहिए। जिस तरह सोना उठना नहाना आहार लेना पूजा करना आदि बातें मिलकर दैनिक जीवनक्रम चलता है उसी तरह गायन नर्तन संगीत काव्य गायन संवाद साहित्य पठन आदि बातें समय समय पर व्रत के रूप में उत्सव के रूप में अथवा श्राद्ध के रूप में सामाजिक जीवन का अंग बनने चाहिए। इस तरह से ये सारी बातें हजम होने के बाद जिस तरह हम धर्म का अध्ययन करते हैं आध्यात्मिकता की खास आराधना चलाते हैं और तत्त्वज्ञान की गहराई में उतरते हैं उसी तरह इन कलाओं का अध्ययन चिन्तन संशोधन और रहस्योद्घाटन शुरू करना चाहिए। प्रथम जीवन साधना बाद में तत्त्वज्ञान का अध्ययन इसी तरह कला के बारे में भी क्रम होना चाहिए।

हमने ऊपर कहा ही है कि अपनी कमजोरी और असंस्कारिता के कारण जो समस्याएं खड़ी होती हैं उनका इलाज अध्ययन के द्वारा संयम और तपस्या के द्वारा और उत्कट साधना के द्वारा हो सकता है। किन्तु सामाजिक जीवन में और औद्योगिक संगठनों में दूसरों की असंस्कारिता पाप प्रवृत्ति अभिमान लोभ आदि दुर्गुणों के कारण और कमजोरियों के कारण जो समस्याएं पैदा होती हैं उनका इलाज सारे समाज को करना चाहिए। यानी समाज के अच्छे संस्कारी अध्यात्म परायण नेताओं को यह काम अपने सिर लेना चाहिए और जीवन शुद्धि और जीवन-समृद्धि के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

इसमें बहुत-सा काम केवल स्त्रियों के द्वारा या अकेले पुरुषों के द्वारा करना आसान नहीं है। संस्कारी सेवाभावी समर्थ लोगों को समाज का आदर प्राप्त करके स्त्री-पुरुषों का सम्मिलित संगठन करना चाहिए और ऐसे संगठन के द्वारा सामाजिक क्रान्ति सिद्ध करनी चाहिए। इसके लिए आश्रम-संस्था अधिक से अधिक उपयोगी साबित होगी। लेकिन यह आश्रम संस्था पुराने ढंग की अथवा मन्दिरों की जैसी नहीं होनी चाहिए। चलती आई परम्परा को मान्य करना और उसी के अन्दर डूब जाना यह सामान्य नियम होता है। रूढ़िनिष्ठ आश्रमों का मन्दिरों का व्रत-उत्सवों का और धार्मिक यात्राओं का यही स्वभाव बन गया है।

हम तो इन सब बातों में रचनात्मक क्रान्ति करनी है जिसके लिए हिम्मत भी चाहिए धैर्य भी चाहिए। जिनके चरित्र के बारे में कभी कोई शंका उठ नहीं सकती ऐसे अनुभवी, प्रतिष्ठित नेताओं के द्वारा ही रचनात्मक परिवर्तन और उसके द्वारा क्रान्ति हो सकती है। हिम्मत के साथ पुराने समाज मान्य और शास्त्रग्रन्थ मान्य रिवाजों में परिवर्तन ऐसे पूज्य लोगों के द्वारा ही हो सकता है। स्त्री-पुरुष मिलकर एक संस्था चलायें उसीको हम 'आश्रम' कहेंगे। सब जाकर क्रान्ति समाज मान्य होगी।

यह सारा काम पांच दस वर्षों में अन्दर ही करने का है। एक आश्रम नहीं स्थान-स्थान पर अनेक आश्रम स्वतंत्र रूप से एक योजना के रूप में चलाये जाय तभी यह क्रान्ति सिद्ध हो सकेगी।

क्रान्ति का काम पुरानी बातें तोड़ने का और नये बीज बोने का है। क्रान्ति के ये दो काम सिद्ध होने के बाद बोये हुए बीजों का पोषण देना नये समाज का निर्माण करना और नये प्रकार की नये आदर्शवादी संस्कृति का विकास करना का रचनात्मक काम आता है वह तीस चालीस वर्ष का काम है।

नारी: प्रगति के सोपान

की अभिव्यक्ति करने वाली रचनाएँ हैं। वे लौकिक विद्या तथा ब्रह्मविद्या के आदि स्रोत हैं। उनसे भारतीय जीवन और दर्शन अत्यन्त प्रभावित हुआ है। इन मन्त्रों के रचयिता जहाँ अंगिरा, अगस्त्य, वसिष्ठ आदि अनेक ऋषि हुए वहाँ उन्हीं के तुल्य सम्मानार्ह बहुत सी नारियाँ भी मन्त्र द्रष्टा हुईं जिन्हें ब्रह्मवादिनी अथवा ऋषिका की संज्ञा दी गई।

ऋग्वेद में बीस से अधिक ऋषिकाओं के नाम आये हैं जो इस प्रकार हैं—अपाला, इन्द्राणी, उर्वशी, कद्रू, गोधा, घोषा, जरिता, जुहू, दक्षिणा, देवयानी, पौलोमी, मेधा, यमी, रात्री, रोमशा, लोपामुद्रा, वागाम्भृणी, विश्ववारा, शार्गी, श्रद्धा कामायनी, श्री, सरमा और सावित्री। इनके अतिरिक्त सामवेद की चार और ऋषिकाएँ हैं—जुहूष्टभाषा, गयायना, नोधा और सिकता निवावरी। ऋग्वेदीय आश्वलायन और शांखायन गृह्यसूत्रों के अनुसार ब्रह्मयज्ञ के अवसर पर ऋषियों के अतिरिक्त जिन ऋषिकाओं की वन्दना की जाती थी उनमें वडवा प्रातिथेयी, सुलभा मैत्रेयी और गार्गी वाचक्नवी भी हैं।

ब्रह्मचर्चा और दार्शनिक शास्त्रार्थ

वैदिक काल में विद्या के दो विभाग माने जाते थे—अपरा अर्थात् लौकिक विद्या, और परा अर्थात् ब्रह्म विद्या[1]। दोनों ही प्रकार की विद्याओं में नारियाँ पुरुषों के समान पारंगत और विद्वत्-समाज की शोभा बढ़ाने वाली थीं। ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहाँ स्त्रियों ने ब्रह्मविद्या के विषय में पुरुषों का पथ प्रदर्शन किया। केनोपनिषद् में आये यक्षोपाख्यान से पता चलता है कि ब्रह्म के जिज्ञासु अग्नि, वायु और इन्द्र आदि देवता जब यत्न करने पर भी ब्रह्म को जानने में असफल रहे तो उमा हैमवती ने उन्हें ब्रह्म का ज्ञान कराया था।

आदिकाल से लेकर महाभारत काल तक यज्ञ करना धार्मिक एवं सामाजिक जीवन का अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण अंग था। पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी यज्ञ में भाग लेती थीं और स्वयं भी यज्ञ करती थीं। लवन यज्ञ अर्थात् फसल काटने के समय का यज्ञ और रुद्र यज्ञ केवल नारियाँ ही करती थीं।

विराट यज्ञों के अवसर पर प्रायः धार्मिक सम्मेलन हुआ करते थे जिनमें शास्त्रार्थ भी होते थे। नारियाँ शास्त्रार्थों में पुरुषों से टक्कर लेती थीं और अपनी विद्वत्ता और प्रतिभा का प्रमाण देती थीं। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार विदेह राज जनक ने ब्रह्म जिज्ञासा से प्रेरित होकर एक महान् यज्ञ का अनुष्ठान किया और उसमें सम्मिलित होने के लिए प्रकाण्ड ब्रह्मवेत्ताओं और ब्रह्मवादिनियों को निमन्त्रित किया। इस अवसर पर उस समय के मुख्य ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वालों में जहाँ सात पुरुषों के नाम[2] आये हैं वहाँ ब्रह्मवादिनी गार्गी वाचक्नवी[3] का नाम भी आया है। जहाँ पुरुष शास्त्रार्थी याज्ञवल्क्य से एक एक बार प्रश्न करके चुप हो रहे वहाँ गार्गी ने दो बार प्रश्न करने का साहस किया।

1. *द्वे विद्ये वेदितव्ये ... परा चैवापरा च ॥ तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति । अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ।* (मुण्डकोपनिषद्)
2. उनके नाम हैं—अश्वल, आर्तभाग, उद्दालक आरुणि, उषस्त, कहोल, विदग्ध शाकल्य और भुज्यु।
3. वचक्नु की कन्या होने के कारण गार्गी का उपनाम वाचक्नवी है।

पहले अवसर पर उसने पृथ्वी से लेकर अतरिक्षलोक पर्यन्त और फिर अन्तरिक्षलोक से ब्रह्मलोक पर्यन्त विविध विषयो पर प्रश्न किये। परन्तु जब वह ब्रह्मलोक से आगे के विषय मे प्रश्न करने लगी तो याज्ञवल्क्य ने उसको अनधिकार चेष्टा बताते हुए 'अनतिप्रश्न्या व देवता-मतिपृच्छसि गार्गी, मातिप्राक्षी" कहकर रोक दिया[1]।

वाद विवाद चलता रहा और याज्ञवल्क्य द्वारा उद्दालक आरुणि के प्रश्नो का उत्तर दिये जाने के बाद गार्गी ने याज्ञवल्क्य से फिर प्रश्न पूछने के लिए सभा से आज्ञा मागी। इस अवसर पर उसने दो अत्यन्त दुरूह प्रश्न किए। पहला प्रश्न यह था कि दृश्य और अदृश्य जगत् तथा भूत, वर्तमान और भविष्य किस तत्त्व म ओत प्रोत हैं। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि आकाश म। तब गार्गी ने पूछा कि आकाश किसमे ओत प्रोत है। याज्ञवल्क्य ने कहा 'उस तत्त्व को ब्रह्मवेत्ता अक्षर कहते हैं जिसके प्रशासन म समस्त दृश्य और अदृश्य जगत है जो स्वय अज्ञात है और दूसरो का ज्ञाता है। गार्गी का इन उत्तरो से सन्तोष हो गया और उसने उपस्थित ब्राह्मणो को सम्बोधित करते हुए कहा 'न वै जातु युष्माकमिम कश्चिद् ब्रह्मोद्य जेतेति।' अर्थात आपमे से कोई भी याज्ञवल्क्य को ब्रह्मविषयक वाद विवाद म जीतने वाला नहीं है। आपका कल्याण इसी म है कि आप इन्हे नमस्कार करके यहा से विदा लें। सम्मेलन के अन्त म याज्ञवल्क्य को ब्रह्मिष्ठ घोषित किया गया।

याज्ञवल्क्य की धर्मपत्नी मैत्रेयी भी ब्रह्मवादिनी थी। उसके मन मे उत्कट ब्रह्मजिज्ञासा विद्यमान थी। याज्ञवल्क्य जब वानप्रस्थ लेने लगे तो मैत्रेयी से बोले कि यदि तेरी इच्छा हो तो मैं अपनी सम्पत्ति का बँटवारा तेरे और कात्यायनी[2] के बीच कर दू। तब मैत्रेयी ने ऐहिक भोगो के प्रति उदासीनता व्यक्त करते हुए पूछा, 'यदि धन से भरी सारी पृथ्वी मुझे मिल जाए, तो क्या मैं अमर हो सकती हू ?" याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि नहीं, धन से अमृतत्व अर्थात् मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता। तब मैत्रेयी बोली येनाह नामृता स्या किमह तेन कुर्या, यदेव भगवा वेद तदेव मे ब्रूहीति। अर्थात जिस धन से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती उसे लेकर मैं क्या करूँगी ? श्रीमन, मोक्ष प्राप्ति का आप जो साधन जानते हो मुझे वह बतलाइए। इससे मैत्रेयी की सासारिक विषयो से विरक्ति और ब्रह्म सम्बन्धी जिज्ञासा की तीव्रता प्रकट होती है।

उपनिषद काल के बाद रामायण और महाभारत काल म भी वैदिक-साहित्य की विदुषियो के अनेक उदाहरण मिलते हैं। रामायण के अनुसार वसिष्ठ की धर्म-पत्नी अरुन्धती उन्ही के समान विदुषी थी। वह आचार्या भी थी और सच्ची जिज्ञासा रखने वालो का अध्यापन भी करती थी। दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी कौसल्या और बाली की पत्नी तारा मन्त्रविद अर्थात वेद-मन्त्रो की ज्ञाता थी। महाभारत म पाण्डवो की माता कुन्ती को अथर्ववेद की पण्डिता बताया गया है। द्रोणाचार्य की धर्मपत्नी गौतमी ब्रह्मवादिनी थी।

१ रोकने के कारण स्पष्ट करते हुए याज्ञवल्क्य ने कहा कि यह प्रश्न जिस देवता के विषय में है वह प्रश्नोत्तर द्वारा नहीं प्रत्युत आचार्योपदेश से ही जाना जा सकता है। इसलिए उसके विषय म अति प्रश्न करना उचित नहीं है।

२ याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी

वैदिक काल में नारी की सम्मानित स्थिति पर विहंगम दृष्टि डालने के बाद अब हम कन्या, युवती, पत्नी, माता और विधवा के रूप में नारी की स्थिति पर तनिक विस्तार के साथ विचार करेंगे।

कन्या का जन्म

पुत्र अथवा कन्या का जन्म होने पर माता पिता की जो भावनाएं होती हैं, उनसे भी तत्कालीन समाज में पुरुष और नारी के स्थान का संकेत मिलता है। ऋग्वेद में ऐसी भावनाओं का स्पष्ट उल्लेख तो नहीं मिलता परन्तु विवाह सूक्त में दस पुत्रों की उत्पत्ति की कामना की गई है और कन्याओं के विषय में कुछ नहीं कहा गया है। इससे अनुमान होता है कि पुत्र-जन्म माता पिता के हर्ष का विशेष कारण होता था। अथर्ववेद के एक सूक्त में प्रार्थना की गई है कि "हमारे यहां पुत्र का जन्म हो और कन्या का जन्म किसी और के घर में हो।"[1] एक और सूक्त में कहा गया है कि हमारे यहां पुत्र के बाद पुत्र का ही जन्म हो न कि कन्या का।[2] तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि पुत्र का जन्म होने पर पिता आनन्द में भरकर माता के पास लेटे हुए नवजात शिशु को हाथों में उठा लेता था, परन्तु यदि कन्या होती तो वह उसे माता के पास ही लेटे रहने देता था। ऐतरेय ब्राह्मण में कन्या को शोक का कारण बताया गया है परन्तु बृहदारण्यक उपनिषद में पुत्र की कामना करने वालों के अतिरिक्त कन्या की कामना करने वालों के लिए भी विधान बताया गया है।[3] इससे पता चलता है कि कन्या और विशेषतः पण्डिता कन्या की कामना भी कई लोग अवश्य करते होंगे। वराह गृह्य सूत्र में बताया गया है कि अच्छी सन्तान और विशेषतः सुन्दर कन्याओं की उत्पत्ति के लिए वधुएं दुर्दुभि और गोमुख आदि बाजों का वादन किया करती थीं। फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि वैदिक काल में पुत्रों को कन्याओं पर वरीयता दी जाती थी। इसका कारण यह था कि पुत्र ही पितरों का श्राद्ध तर्पण, और पिंडदान आदि कर सकता था कन्या नहीं। या पुत्र के जन्म पर हर्ष और कन्या के जन्म पर अपेक्षाकृत उदासीनता की जो भावना होती थी वह क्षणिक ही होती थी और बाद में कन्या का लालन-पालन पुत्र के ही समान लाड़-प्यार से होता था तथा बालकों के उपनयन आदि धार्मिक संस्कार जो किये जाते थे सो बालिकाओं के भी किये जाते थे।

शिक्षा

वैदिक काल में बालकों के समान बालिकाओं की शिक्षा की भी पर्याप्त व्यवस्था थी। यह पहले कह आये हैं कि विद्या दो प्रकार की मानी जाती थी एक अपरा और दूसरी परा। कन्याओं को दोनों प्रकार की विद्या प्राप्त करने का अधिकार था। उनके बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के मार्ग में कोई बाधा न थी।

१ अथर्व० ६ २ ३

२ अथर्व० ३ २३, ३

३ अथ य इच्छेद् दुहिता मे पण्डिता जायेत (बृहदारण्यक ६ ४ १७)

शिक्षा का आरम्भ उपनयन सस्कार से होता था। उपनयन का अथ है शिष्य का गुरु के पास उसके आश्रम म जाना। उपनयन सस्कार होने पर ही शिष्य वदिक शिक्षा का अधिकारी होता है। बालको की भाति बालिकाओ का भी उपनयन सस्कार होता था और वे भी गुरुओ के आश्रमो म रहकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए ब्रह्मचय व्रत का पालन करती थी और बालको की भाति ही यज्ञोपवीत, मौंजी मेखला और वल्कल धारण करती थी।

शिक्षा समाप्त करके शिष्य जब गुरु के आश्रम से लौटने लगता था, तो उस समय समावतन सस्कार होता था। कयाओ के समावतन सस्कार की चर्चा आश्वलायन गह्य-सूत्र (३, ८, ११) म मिलती है जहा कहा गया है कि समावतन के समय ब्राह्मण हाथो पर अभ्यजन मलकर उसे अपने मुख पर लगाये क्षत्रिय अपनी बाहो पर, वश्य अपने पेट पर और स्त्री अपने शरीर के अधोभाग पर लगाय।

ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथववद म ब्रह्मचारिणियो का उल्लेख है। अथववद मे उनकी चर्चा करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मचय-व्रत धारण कर शिक्षा समाप्त करने पर ही युवतिया योग्य पतियो को प्राप्त करती हैं।[1] कयाओ की शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए गाभिल गह्यसूत्र म कहा गया कि यदि पत्नी अशिक्षित हो तो वह यज्ञ करने मे समथ नही होती।[2] जो छात्राए पयाप्त म अधिक ऋचाओ (ऋग्वेद के मत्रो) की पण्डिता हो जाती थी उह बह्व चो' की सज्ञा दी जाती थी। पाणिनि के अनुसार यजुर्वेद की कठ शाखा का अध्ययन करने वाली छात्रा को 'कठी' कहा जाता था। पतजलि के अनुसार आपिशलि के व्याकरण का अध्ययन करने वाली छात्रा को आपिशला कहते है।

कालान्तर म जब वदिक ज्ञान और यज्ञ दुरूह हो गये तो उनके विषय म अध्ययन करने के लिए नयी शाखा का विकास हुआ जिसे मीमासा' कहते है। यद्यपि यह अत्यन्त नीरस विषय है, तो भी कई छात्राए इसमे पर्याप्त रुचि लेती थी। काशकृत्स्नी न मीमासा पर एक पुस्तक छात्राओ के लिए लिखी जिसे उसके नाम पर काशकृत्स्नी ही कहते है। इस ग्रन्थ का विशेष अध्ययन करने वाली को 'काशकृत्स्ना' की सज्ञा दी गई है।

वदिक साहित्य के अतिरिक्त कन्याओ को गणित, वद्यक, सगीत, नत्य और शिल्प आदि की शिक्षा दी जाती थी।

सगीत शिक्षा विशेषत सामगान से सम्बधित होती थी। सस्कारो के अवसर पर नारियो के सगीत की चर्चा ऋग्वेद म आई है। महाव्रत म पत्निया विभिन्न वाद्ययन्त्रो के साथ गायन करती थी। सत्याषाढ श्रौतसूत्र मे स्त्रियो द्वारा बजाय जाने वाले अपघाटलिका, तालुक वीणा, काण्डवीणा पिछोरा आदि। कई वाद्ययत्रो के नाम आते हैं इस बात की चर्चा ऊपर कर आये हैं कि सुदर कयाओ की उत्पत्ति की कामना करने वाली पत्नी दुदुभि और गोमुख आदि वाद्य बजाती थी। महाभारत के अनुसार राजा विराट की कया उत्तरा और उसकी सखिया घर पर ही नृत्य, सगीत और वाद्य-वादन की शिक्षा पाती थी। ययाति की पुत्री माधवी

१ ब्रह्मचर्येण कया युवान विदते पतिम (अथव ११ ६ १६)
२ न हि खल्वनधीता शक्नोति पत्नी होतुमिति।

सगीत विशारदा थी। ऋग्वेद (१ ६, २, ४) म नारियो के नत्य कौशल का सकेत मिलता है।

क्षत्रिय कन्याएँ धनुर्वेद अर्थात युद्ध विद्या की भी शिक्षा ग्रहण करती थी। सना म भरती होती थी और अवसर आने पर युद्ध मे भाग लती थी। ऋग्वद म इसके प्रमाण मिलत है। ऋग्वेद के घोषा रचित सूक्त[1] म वध्रिमती और विश्पला नामक दो स्त्री-योद्धाओ की चर्चा है। उन्होने युद्ध भूमि म जाकर अन्य योद्धाओ की भाति युद्ध किया। जब वध्रिमती के दोनो हाथ कट गए, तो उसके आह्वान पर अश्विनीकुमार उपस्थित हुए और उन्होने उस सोने के दो हाथ दिये। विश्पला महाराज खेल की सेना म एक सिपाही थी। युद्ध म जब उसकी एक टाँग उड गई तो अश्विनीकुमारो ने उसे लोहे की एक नई टाँग देकर चलने की शक्ति प्रदान की।[2] राजा मुद्गल की पत्नी मुदगलानी ने युद्ध म अपने पति के सारथि का काम किया और राज्य के शत्रुओ को परास्त करने म पति का हाथ बटाया। ऋग्वद[3] म एक और स्त्री योद्धा शशीयसी का नाम आया है। इन्द्र और वृत्र के युद्ध मे वृत्र की माता दनु ने भी भाग लिया और इन्द्र ने उसका सहार किया।[4]

रामायण के अनुसार ककेयी दशरथ के साथ देवासुर-सग्राम म गई थी जहा उसने घायल और सज्ञाहीन पति के रथ को युद्धस्थल स दूर ले जाकर उसके प्राण बचाये थे, जिसके उपलक्ष म दशरथ ने उसे दो वर दिए थे।[5]

शिक्षा की अवधि

शिक्षाकाल की अवधि के आधार पर शिष्याओ के दो वग होते थ। पहला वग उन शिष्याओ का था जो १६ १७ वप की आयु तक ही शिक्षा ग्रहण करती थी और तदनन्तर विवाह करके गहस्थ आश्रम मे प्रवेश करती थी। अधिकाश शिष्याए इसी वग की होती थी और उन्ह सद्योवधू कहा जाता था। इन्ह सध्यावदन और यज्ञ आदि के लिए आवश्यक मन्त्र पढा दिये जाते थे और सगीत नत्य आदि की शिक्षा भी दी जाती थी। दूसरा वग उन शिष्याओ का था जो १६ १७ वप की आयु के बाद अध्ययन जारी रखती थी और पूर्ण वदिक शिक्षा समाप्त करने के बाद ही विवाह करती थी। उन्ह ब्रह्मवादिनी कहा जाता था।

अध्यापिकाएँ

पुरुष अध्यापको के अतिरिक्त विदुषी स्त्रिया भी अध्यापन काय करती थी। उन्ह अध्यापिका, उपाध्याया उपाध्यायी और आचार्या आदि की सज्ञा दी जाती थी। इसका उल्लेख

१ ऋग्वेद (१० ३९ ४०)
२ ऋग्वेद (१ ११८ ८) (१ ११२ १)
३ ऋग्वेद (५ ६१ ६ ६)
४ ऋग्वेद (१ ३२ ६)
५ स्मर राजन् पुरा वत्त तस्मिन दवासुरे रण।
तत्र त्वां च्यावयच्छत्रुस्तव जीवितमन्तरा॥
तत्र चापि मया देव यत्त्व समभिरक्षित।
जाग्रत्या यतमानायास्ततो मे प्रददौ वरौ॥

पाणिनि के वार्तिककार कात्यायन न किया है। अध्यापन काय करन वाली नारियों के लिए उपाध्याया, उपाध्यायी और आचार्या आदि शब्द उपाध्याय की पत्नी अथात उपाध्यायानी और आचाय की पत्नी अथात् आचायानी से भिन्नता बनान के लिए गढ गए थ। इसमे अनुमान होता है कि ऐसी अध्यापिकाओं की सख्या पर्याप्त रही होगी। पतजलि न एक उदाहरण देत हुए कहा है कि औदमेधा नामक अध्यापिका के शिष्या को औदमेध कहत हैं।

विवाह सस्कार

वैदिक काल म ही भारत म विवाह को एक पवित्र धार्मिक सस्कार माना गया है। ऋग्वेद के विवाह सूक्त से पता चलता है कि वदिक काल म विवाह प्रथा का पूर्ण विकास हो चुका था। आरभ म विवाह अनिवाय नही ठहराया गया था और न बाल विवाह की प्रथा ही प्रचलित हुई थी। विवाह के समय कन्याओ की आयु १६ १७ वष की होती थी और व अपना वर चुनन म प्राय स्वतन्त्र होती थी। ऋग्वद भाष्य म सायणाचाय न कमद्यु नामक कन्या द्वारा स्वयवर सभा मे उपस्थित विमद ऋषि के वरण और उसमे विवाह की चर्चा की है। ब्राह्मण और सूत्र काल म कन्याओ द्वारा पति चुनने की प्रथा धीरे धीरे कम हो गई। फिर भी महाभारत म इस प्रथा के पूवकालीन और तत्कालीन अनक उदाहरण मिलत हैं—यथा सावित्री का देशाटन करते समय सत्यवान् को वरण करना तथा दमयन्ती इन्दुमती और कुन्ती आदि का स्वयवर सभा म उपस्थित राजकुमारो म स पति का चुनना। स्वयवर मे कभी-कभी वर के लिए कोई शत रखी जाती थी, जसे कि सीता-स्वयवर म धनुष पर प्रत्यचा चढाना और द्रौपदी-स्वयवर म घूमती हुई मछली की आख का बीधना।

ऋग्वेद-काल के बाद कन्याओ का विवाह प्राय माता पिता के अधीन होन लगा और विवाह को पिता द्वारा कन्या का दान माना जाने लगा। माता पिता कन्या के गुण, शील और रूप के अनुरूप वर खोजन का प्रयत्न करत थ। गुणहीन पुरुष को कन्या दना दोष माना जाता था। बाद म मनु ने भी कहा है कि चाह कन्या पिता के घर म आजीवन अविवाहित रहे पर गुणहीन पुरुष के साथ उसका विवाह न किया जाए। कुशध्वज ऋषि की कन्या वेदवती आजीवन कुमारी रही थी।

विवाह म पिता अपन सामर्थ्य के अनुसार कन्या को सोना, मोती वस्त्र आभूषण, गाय-घोडे आदि यौतक (दहेज) के रूप म देता था।

विवाह प्राय अपन वण म ही होता था, अर्थात ब्राह्मण का ब्राह्मणी से और क्षत्रिय का क्षत्रिया से। परन्तु कभी-कभी इस नियम का अतिक्रम भी हो जाता था। उत्तम वण वाला पुरुष यदि अवर वण की कन्या से विवाह करता—जिसे अनुलोम कहते हैं—तो समाज को कोई आपत्ति न होती थी ऐसी घटना कन्या और उसके कुल के लिए तो सम्मानजनक समझी जाती थी परन्तु इसके विपरीत यदि उत्तम वण की कन्या अवर वण के पुरुष से विवाह करती —जिसे प्रतिलोम कहत हैं—तो उसे अनुचित समझा जाता इसम कन्या के कुल का अपमान माना जाता था। असुर-गुरु शुक्राचाय की पुत्री देवयानी न ब्राह्मणी होत हुए भी अपनी इच्छा से क्षत्रिय राजा ययाति से—जो कि शुक्राचाय के यहा शिष्य रूप म विशेष विद्याभ्यास कर रहा

था—विवाह किया। गुरु-कन्या के साथ शिष्य का विवाह हो जाने के कई उदाहरण मिलते हैं।

आश्वलायन गृह्य सूत्र, अधिकांश धर्मसूत्रों और मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन है। वे हैं —ब्राह्म दैव आर्ष, प्राजापत्य आसुर, गान्धर्व राक्षस और पैशाच। यदि वर और कन्या दोनों ब्रह्मचर्य पालन से पूर्ण विद्वान धार्मिक और शीलवान् हों और परस्पर प्रसन्नता से उनका विवाह हो, तो वह ब्राह्म कहलाता है। विस्तृत यज्ञ में ऋत्विक कार्य करते हुए जामाता को अलंकारयुक्त कन्या देना 'दैव' विवाह है। वर से कुछ लेकर कन्या देना आर्ष धर्म की वृद्धि के उद्देश्य से दोनों का विवाह प्राजापत्य तथा कन्या के पिता को धन देकर विवाह होना 'आसुर' कहलाता है। अनियमित रूप से और असमय किसी कारणवश दोनों का इच्छापूर्वक परस्पर संयोग गान्धर्व कहलाता है। राक्षस विवाह वह माना जाता था जिसमें कन्या को उसके सम्बन्धियों के साथ युद्ध करके अपहरण कर लिया जाता था। और कन्या के सम्बन्धियों के सोते रहने पर उसका अपहरण करना पैशाच कहलाता था। सम्भव है कि राक्षस और पैशाच विवाह की प्रथा तत्कालीन किन्हीं जन-जातियों में विद्यमान रही हो। यह भी सम्भव है कि ऐसे विवाहों को आर्यों की विवाह पद्धति में परिगणित करने का उद्देश्य अपहरण की गई अभागिनी कन्या और उसकी सन्तान को समाज में उचित स्थान देना था। बौधायन धर्म सूत्र का कहना है कि यदि अपहरण की गई कन्या का शास्त्र विधि अनुसार विवाह न हुआ हो तो उसे कुमारी ही समझना चाहिए, उसका किसी अन्य पुरुष से विवाह हो सकता है।

एक पत्नी प्रथा अथवा बहु विवाह

एक पुरुष का एक स्त्री से विवाह होना आर्यों का आदर्श था। इसके मूल में यह विश्वास था कि स्त्री-पुरुष का संयोग विधाता द्वारा विहित होता है और जन्म-जन्मान्तर तक रहता है। वैदिक काल में साधारणतया पुरुष की एक ही पत्नी होती थी। इसका प्रमाण ऋग्वेद के वे मन्त्र हैं, जहाँ जाया (अर्थात् पत्नी) शब्द एक वचन में प्रयुक्त हुआ है। दम्पती और जायापती शब्द, जिनका अर्थ है एक पति और एक पत्नी (जाया च पतिश्च जायापती अथवा दम्पती) यही बात सिद्ध करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि जहाँ कहीं बहु विवाह की चर्चा हुई है वहाँ स्वर में बहु विवाह की निन्दा का भाव व्यक्त होता है। सूत्रकाल में भी एक-पत्नी प्रथा की ध्वनि मिलती है। आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का कहना है कि 'एक धर्मपत्नी से पुत्र होने पर पुरुष को दूसरी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए।' और यदि पुत्रवती पत्नी पति के साथ यज्ञों में भाग लेने के लिए समर्थ और उद्यत हो तो पति को दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए। दूसरा विवाह तभी वांछनीय समझा जाता था जब पत्नी के पुत्र न हुआ हो या वह किसी कारणवश यज्ञों में भाग लेने के योग्य न हो।

एक पत्नी विवाह आदर्श और साधारण नियम होते हुए भी वैदिक काल से लेकर महाभारत काल तक बहु विवाह के अनेक उदाहरण मिलते हैं। उपनिषद्-काल में याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं—मैत्रेयी और कात्यायनी। राजाओं की एक से अधिक रानियाँ होने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। मनु, पुरूरवस, ययाति, दशरथ, दुष्यन्त, विचित्रवीर्य, पाण्डु आदि की एक से अधिक रानियाँ थीं। अर्जुन ने द्रौपदी के अतिरिक्त सुभद्रा और उलूपी से विवाह किया। भीम ने हिडिम्बा और शिशुपाल की बहन से भी विवाह किया था। नकुल और सहदेव

की भी रेणुमती और विजया एक एक पत्नी और थी। श्रीकृष्ण की सत्यभामा, रुक्मिणी आदि आठ मुख्य पत्नियाँ थी।

सपत्नीद्वेष

बहु विवाह प्रथा प्राय समृद्ध कुलो तक ही सीमित थी और इस सुख का कारण नही समझा जाता था। सपत्नियो म परस्पर ईर्ष्या-द्वेष होता था और कलह होती रहती थी, एक पत्नी दूसरी के विनाश के लिए अभिचार का प्रयोग करन म भी सकोच नही करती थी। ऋग्वेद के एक सूक्त मे एक ईर्ष्यालु पत्नी कहती है 'सपत्नी का नाश और पति का प्रेम प्राप्त कराने वाली यह औषधि मैंने धरती मे उखाड ली है ह औषधि तू मेरी सपत्नी का नाश कर और मेरे पति को मेरे वश म कर दे।

बहुपति प्रथा का अभाव

वदिक साहित्य म बहु-पति प्रथा का कोई स्पष्ट प्रमाण नही मिलता। तत्तिरीय सहिता और एतरय ब्राह्मण म स्पष्ट कहा गया है "यद्यपि एक पति की अनेक पत्नियाँ हो सकती हैं एक नारी क एक ही समय मे अनक पति नही हो सकते। इसका एक सुविदित अपवादआगे चलकर महाभारत काल मे मिलता है जब द्रौपदी का पाच पाण्डवो से विवाह हुआ।

पत्नी की स्थिति

वदिक काल म पत्नी का गौरव और प्रतिष्ठा लगभग पति के समान ही होती थी। वास्तव म पति-पत्नी को एक ही तत्त्व के दो समान अश समझा जाता था। विश्वास किया जाता था कि सृष्टि के आदि म प्रजापति ने प्रजा की कामना स प्रेरित होकर अपनी देह को दो भागो म विभक्त किया जिससे एक भाग पति रूप और दूसरा भाग पत्नी रूप हो गया[1]। इसी से पत्नी को पुरुष की अर्द्धांगिनी भी कहते हैं। इससे यह भाव भी व्यक्त होता है कि पति पत्नी अन्योन्याश्रयी हैं और एक दूसर के बिना अपूर्ण रहत हैं। पत्नी के बिना पति का कोई धार्मिक कृत्य सम्पन्न नही हो सकता था। यज्ञ म पति के साथ पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य होती थी।[2] शतपथ ब्राह्मण ने स्पष्ट कहा है कि पुरुष पत्नी के बिना यज्ञ कर ही नहीं सकता (अयज्ञियो वा एष यः ऽपत्नीक)। इसीलिए पत्नी को सहधर्मिणी भी कहते हैं। सहधर्मिणी होन के अतिरिक्त पत्नी पति के समान ही घर की स्वामिनी भी होती थी। वदिक 'दम्पती शब्द पति-पत्नी दोनो का सयुक्त स्वामित्व व्यक्त करता है।

गृहस्थ जीवन म पत्नी को यथेष्ट सम्मान मिलता था। वह गृहस्थी की केन्द्र बिन्दु मानी

१ स हैतावानास यथा स्त्री पुमांसौ सम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मान द्वेधापातयत तत पतिश्च पत्नी चाभवताम (बृहदारण्यकोपनिषद् १ ४ ३)।

२ सीता परित्याग के बाद राम न जब अश्वमेध यज्ञ किया तो उसम सीता की स्वर्ण मूर्ति राम की सहधर्मिणी के रूप में स्थापित की गई।

जाती थी। कहा जाता था कि गृहिणी ही घर है उसके बिना घर घर ही नहीं होता। वैदिककाल में पत्नी, गृहस्थी के समस्त कार्य कलाप गार्हपत्य, अग्नि में इंधन डालकर उसे प्रज्वलित रखना, गायों का दोहना दही बिलोना भोजन पकाना कपड़े धोना, गाय चराना आदि की संचालिका सम्पादिका और अधीक्षिका होती थी। शतपथ के अनुसार पत्नी पति के बाद भोजन करती थी किन्तु साथ ही गृह्यसूत्रों का विधान है कि पति को गर्भवती पत्नी के बाद भोजन करना चाहिए।

नारी का सम्मान करने और उसे सुख सुविधा से सम्पन्न करने की वांछनीयता बाद में मनु के इन शब्दों से व्यक्त होती है 'जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवताओं की कृपा होती है और जहां उनका सम्मान नहीं होता वहां यज्ञ आदि सब क्रियाएं निष्फल होती हैं। जिस कुल में नारियां दुःखी होती हैं वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।'

पातिव्रत्य का आदर्श

सीता सावित्री दमयन्ती गान्धारी आदि नारियों ने पातिव्रत्य का आदर्श स्थापित करके विश्व इतिहास में भारतीय नारी का नाम उज्ज्वल किया है। इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन साहित्य में आदर्श पत्नी उसी को समझा जाता था जो पति को देवता और प्राणनाथ माने, उसकी सेवा में तत्पर रहे उसकी खुशी में अपनी खुशी समझे, छाया की तरह उसका अनुसरण करे और पर पुरुष का कदापि चिन्तन न करे। वैदिक काल में पति के लिए अनुकरणीय ऐसा कोई आदर्श प्रतीत नहीं होता। मनु ने पर नारी संसर्ग की निन्दा की है।[1] गौतम आपस्तम्ब आदि ने भी परदारगामी के लिए कठोर दण्ड का विधान किया है।

विधवा विवाह और नियोग

वैदिक काल में विधवा विवाह होता था या नहीं इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। परन्तु इस विषय में कोई सन्देह नहीं है कि सन्तानहीन विधवाओं को दूसरे पुरुष के सम्बन्ध से सन्तान उत्पन्न करने की अनुमति ही नहीं बल्कि आदेश दिया जाता था। इसका प्रमाण ऋग्वेद के दो मन्त्र हैं। एक में कहा गया है हे विधवे तू इस मृतपति की आशा छोड़ दे और जीवित पुरुषों में से दूसरा पति प्राप्त कर[2] दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि विधवा देवर से सन्तानोत्पत्ति करती है। निरुक्त के अनुसार देवर का अर्थ विधवा का दूसरा पति है। यह आवश्यक नहीं था—यद्यपि बहुधा ऐसा हुआ करता था—कि मृत पति का भाई ही दूसरा पति हो। दूसरा पति कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता था[3]।

अथर्ववेद के दो मन्त्रों से विधवा विवाह का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक में कहा गया है कि दूसरा पति पुनर्विवाहित स्त्री के साथ एक लोक में रहता है। दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि 'मैंने मृत पति से वियुक्त पुनर्विवाहिता युवती को देखा है।

१ न ह्यनीदृशमनायुष्यं लोके किंचन विद्यते। यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्॥ (मनु ४ १३४)
२ उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि। (ऋग्वेद १० १८ ८)
३ को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ॥ (ऋग्वेद १०, ४० २)

वदिक काल के बाद महाभारत काल म भी नियोग की प्रथा प्रचलित रही। महाभारत म इसके अनेक उदाहरण मिलत हैं। अम्बिका और अम्बालिका तथा कुन्ती की सन्तान नियोग द्वारा उत्पन्न हुई थी।

सती प्रथा का अभाव

वदिक काल म विधवा के सती होने की प्रथा नही थी। यद्यपि अथववेद (१८ ३, १) मे ऋग्वेद स पहले भी सती प्रथा का सकेत मिलता है परन्तु ऋग्वद मे इसका निषेध किया गया है। रामायण के अनुसार दशरथ की मृत्यु होन पर उनकी कोई भी रानी सती नही हुई। महाभारत के अनुसार विचित्रवीय के निधन पर उनकी रानिया अम्बिका और अम्बालिका सती नही हुई। पाण्डु के देहान्त पर कुन्ती सती नही हुई परन्तु माद्री इसलिए सती हुई कि वह अपने आपको एक तरह से पति की अकाल मृत्यु का कारण समझती थी। महाभारत युद्ध मे हजारो योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए परन्तु किसी की विधवा के सती होने का कोई उल्लेख नही मिलता।

विवाह विच्छेद का अभाव

आम लोग विवाह को जन्म जन्मान्तर तक रहन वाला अटूट सम्बन्ध मानत थ। अतएव वदिक साहित्य रामायण और महाभारत म विवाह विच्छेद प्रथा की कही चर्चा नही है। सूत्रकार आपस्तम्ब न स्पष्ट कहा है कि 'जायापत्योन विभागोस्ति अथात पति और पत्नी पृथक नही हो सकत। आपस्तम्ब, वसिष्ठ और मनु आदि स्मृतिकारो ने किसी भी स्थिति म एक दूसरे को त्यागने वाले पति-पत्नी के लिए प्रायश्चित और दण्ड का विधान किया है।

माता का पद

शास्त्रो म माता का पद पिता स ऊँचा बताया गया है। तत्तिरीय उपनिषद के अनुसार समावतन के समय आचाय शिष्य को जो उपदेश देता है उसम मातृ देवो भव पितृ देवो भव ' कहा गया है अथात पहले यह कहा गया कि माता को देवता मानो और बाद म कहा गया यह कि पिता को देवता मानो। रामायण म कहा गया कि माता का सम्मान पिता के बराबर ही होना चाहिए।

सम्पत्ति पर अधिकार

प्राचीन काल म नारी को पुत्री पत्नी माता और विधवा क रूप मे सम्पत्ति पर आशिक अधिकार प्राप्त था। इसका उद्देश्य मुख्यत कुमारियो के विवाह का प्रबन्ध और विधवाओ के जीवन निर्वाह आदि की व्यवस्था करना था। नारी को सम्पत्ति के उपभोग का अधिकार था परन्तु उसे बचने या किसी को दे देने का अधिकार नही था।

वदिक काल म पिता की सम्पत्ति जब बाटी जाती थी तो वह पुत्रो को ही मिलती थी पुत्रियो को नही। निरुक्त न भी स्पष्ट कहा है कि "पुमान दायादो अदायादा स्त्री अर्थात

जाती थी। कहा जाता था कि गृहिणी ही घर है, उसके बिना घर घर ही नहीं होता। वैदिक काल में पत्नी गृहस्थी के समस्त कार्य-कलाप, गार्हपत्य अग्नि में ईंधन डालकर उसे प्रज्वलित रखना, गायों का दोहना, दही बिलोना, भोजन पकाना, कपड़े धोना, गाय चराना आदि की सर्वाधिकार सम्पादिका और अधीक्षिका होती थी। शतपथ के अनुसार पत्नी पति के बाद भोजन करती थी, किन्तु साथ ही गृह्यसूत्रों का विधान है कि पति को गर्भवती पत्नी के बाद भोजन करना चाहिए।

नारी का सम्मान करने और उसे सुख-सुविधा से सम्पन्न रखने की वांछनीयता बाद में मनु के इन शब्दों से व्यक्त होती है — जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं की कृपा होती है और जहाँ उनका सम्मान नहीं होता वहाँ यज्ञ आदि सब क्रियाएँ निष्फल होती हैं। जिस कुल में नारियाँ दुःखी होती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

पातिव्रत्य का आदर्श

सीता, सावित्री, दमयन्ती, गान्धारी आदि नारियों ने पातिव्रत्य का आदर्श स्थापित करके विश्व इतिहास में भारतीय नारी का नाम उज्ज्वल किया है। इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन साहित्य में आदर्श पत्नी उसी को समझा जाता था जो पति को देवता और प्राणनाथ मान उसकी सेवा में तत्पर रहे, उसकी खुशी में अपनी खुशी समझे, छाया की तरह उसका अनुसरण करे और पर-पुरुष का कदापि चिन्तन न करे। वैदिक काल में पति के लिए अनुकरणीय ऐसा कोई आदर्श प्रतीत नहीं होता। मनु ने परनारी सेवन की निन्दा की है।[1] गौतम, आपस्तम्ब आदि ने भी परदारगामी के लिए कठोर दण्ड का विधान किया है।

विधवा विवाह और नियोग

वैदिक काल में विधवा विवाह होता था या नहीं, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। परन्तु इस विषय में कोई सन्देह नहीं है कि सन्तानहीन विधवाओं को दूसरे पुरुष के सम्बन्ध से सन्तान उत्पन्न करने की अनुमति ही नहीं, बल्कि आदेश दिया जाता था। इसका प्रमाण ऋग्वेद के दो मन्त्र हैं। एक में कहा गया है — हे विधवे, तू इस मृतपति की आशा छोड़ दे और जीवित पुरुषों में से दूसरा पति प्राप्त कर।[2] दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि विधवा देवर से सन्तानोत्पत्ति करती है। निरुक्त के अनुसार देवर का अर्थ विधवा का दूसरा पति है। यह आवश्यक नहीं था — यद्यपि बहुधा ऐसा हुआ करता था — कि मृत पति का भाई ही दूसरा पति हो। दूसरा पति कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता था[3]।

अथर्ववेद के दो मन्त्रों से विधवा विवाह का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक में कहा गया है कि 'दूसरा पति पुनर्विवाहित स्त्री के साथ इस लोक में रहता है'। दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि 'मैंने मृत पति से वियुक्त पुनर्विवाहिता युवती को देखा है'।

१ न हीदृशमनायुष्यं लोके किंचन विद्यते। यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्॥   (मनु ६ १३४)
२ उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।   (ऋग्वेद १ १८ ८)
३ को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ॥   (ऋग्वेद १० ४० २)

वदिक काल के बाद महाभारत काल म भी नियोग की प्रथा प्रचलित रही। महाभारत म इसके अनेक उदाहरण मिलत हैं। अम्बिका और अम्बालिका तथा कुन्ती की सन्तान नियोग द्वारा उत्पन्न हुई थी।

सती प्रथा का अभाव

वदिक काल म विधवा के सती होन की प्रथा नहीं थी। यद्यपि अथववद (१८, ३, १) म ऋग्वेद से पहले भी सती प्रथा का सकेत मिलता है, परन्तु ऋग्वेद में इसका निषेध किया गया है। रामायण के अनुसार दशरथ की मृत्यु होन पर उनकी कोई भी रानी सती नहीं हुई। महाभारत के अनुसार विचित्रवीय के निधन पर उनकी रानिया अम्बिका और अम्बालिका सती नहीं हुई। पाण्डु के देहान्त पर कुन्ती सती नहीं हुई परन्तु माद्री इसलिए सती हुई कि वह अपन आपको एक तरह से पति की अकाल मृत्यु का कारण समझती थी। महाभारत युद्ध म हजारो योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए परन्तु किसी की विधवा के सती होन का कोई उल्लेख नहा मिलता।

विवाह विच्छेद का अभाव

आय लोग विवाह को जन्म-जन्मान्तर तक रहन वाला अटूट सम्बन्ध मानत थ। अतएव वदिक साहित्य रामायण और महाभारत म विवाह विच्छेद प्रथा की कहीं चचा नहीं है। सूत्रकार आपस्तम्ब ने स्पष्ट कहा है कि 'जायापत्योन विभागोऽस्ति' अथात् पति और पत्नी पृथक नहीं हो सकत। आपस्तम्ब, वसिष्ठ और मनु आदि स्मृतिकारो न किसी भी स्थिति म एक-दूसर का त्याग करने वाले पति-पत्नी के लिए प्रायश्चित और दण्ड का विधान किया है।

माता का पद

शास्त्रो म माता का पद पिता स ऊँचा बताया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद के अनुसार समावतन के समय आचाय शिष्य को जो उपदेश देता है उसम मातृ देवो भव पितृ देवो भव कहा गया है अथात पहले यह कहा गया कि माता को देवता मानो और बाद म कहा गया यह कि पिता को देवता मानो। रामायण म कहा गया कि माता का सम्मान पिता के बराबर ही होना चाहिए।

सम्पत्ति पर अधिकार

प्राचीन काल म नारी को पुत्री, पत्नी माता और विधवा के रूप म सम्पत्ति पर आंशिक अधिकार प्राप्त था। इसका उद्देश्य मुख्यत कुमारियों के विवाह का प्रबन्ध और विधवाओं के जीवन निर्वाह आदि की व्यवस्था करना था। नारी का सम्पत्ति के उपभोग का अधिकार था परन्तु उस बचने या किसी को दे देन का अधिकार नहीं था।

वदिक काल म पिता की सम्पत्ति जब बाटी जाती थी तो वह पुत्रों को ही मिलती थी, पुत्रियों को नहीं। निरुक्त न भी स्पष्ट कहा है कि 'पुमान दायादोऽदायादा स्त्री', अथात्

पुरुष दाय का भागी है न कि स्त्री। आजीवन माता पिता के घर मे रहने वाली अविवाहिता कन्या को पितृ-सम्पत्ति का अश यद्यपि वह भाइयो के अश के बराबर नही होता था, अवश्य मिलता था।

नारी को माता पिता और भाई आदि सम्बन्धियो से जो वस्त्राभूषण और धन आदि चल-सम्पत्ति मिलती थी या विवाह के अवसर पर यौतक के रूप म जो कुछ मिलता था या बाद म पति और सास ससुर से जो कुछ प्राप्त होता था वह स्त्री धन कहलाता था और उस पर उसकी मृत्यु के बाद उसकी लडकियो का ही अधिकार होता या उसके पति या पुत्रो का नहीं। ऋग्वेद के अनुसार विधवा को मृत पति की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नही था परन्तु विधवा को अपने माता पिता की सम्पत्ति का कुछ अश अवश्य मिलता था। बाद म कात्यायन आदि स्मृतिकारो ने यह व्यवस्था दी कि विधवा अपने पति की सम्पत्ति का आजीवन उपभोग कर सकती है परन्तु उसे किसी को बेच या दे नही सकती। मनु के अनुसार जब कोई पुरुष सन्तानहीन मर जाता था तो उसकी माता को उसकी सम्पत्ति का अश मिलता था।

स्वतन्त्रता का वातावरण

वदिक काल म पर्दे की प्रथा नही थी। उन दिनो नारी घर की चारदीवारी म बन्द नही रहती थी, और न उसके बाहर आने जाने पर कोई प्रतिबन्ध ही था। उन दिनो नारी पुरुषो की भांति और बहुधा पुरुषो के साथ उत्सवो यज्ञो सभा सम्मेलनो और यहाँ तक कि युद्धो म भी सम्मिलित होती थी। स्वतन्त्रता के उस वातावरण मे भारतीय नारी के सर्वतोमुखी विकास के माग म कोई बाधा न थी। तत्कालीन दृष्टिकोण के अनुसार जीवन के चारो पदार्थों अर्थात धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति का माग पुरुष और नारी के लिए समान रूप से खुला था।

प्राचीन भारत में नारी की स्थिति : २

इन्द्रनाथ आनन्द

महाभारत काल के बाद अनेक कारणों से नारी के धार्मिक अधिकारों का धीरे-धीरे ह्रास होता गया, शिक्षा की सुविधाएं कम होती गईं, सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की स्वतंत्रता सीमित होती गई और इन सब बातों के परिणामस्वरूप हिन्दू-समाज में नारी का गौरव घटता गया। दूसरी ओर इसी युग में बौद्ध और जैन धर्मों का प्रचार और प्रसार हुआ। इन धर्मों के प्रवर्तकों ने नारी के प्रति किंचित् उदार दृष्टिकोण अपनाया और नारी के धार्मिक अधिकारों को स्वीकार किया। हिन्दू-समाज में जहाँ ब्रह्मवादिनियों का धीरे-धीरे लोप होता गया वहाँ दूसरी ओर बौद्ध भिक्षुणियों और जैन साध्वियों का आविर्भाव हुआ। इन भिक्षुणियों और साध्वियों ने आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रशंसनीय उन्नति की और आचार्या, अर्हता और सिद्धा आदि की पदवी प्राप्त की तथा भारतीय नारी का गौरव बढ़ाया। कालान्तर में बौद्ध धर्म का ह्रास होने पर नारी के लिए शिक्षा, आध्यात्मिक प्रगति और समाज-सेवा के अवसर कम हो गये और उसका कार्यक्षेत्र घर-परिवार तक ही सीमित होकर रह गया। यह स्थिति लगभग १९वीं शताब्दी के मध्य तक रही।

विवाह योग्य आयु क्रमश कम

वदिक काल के बाद कयाओ के विवाह की आयु धीरे धीरे कम ही होती चली गई, उस काल म नारी का गौरव घटने के कारणो म मुख्य कारण यही हुआ। वदिक काल म कयाओ के लिए विवाह अनिवाय नही था और न उस काल म बाल विवाह की प्रथा का प्रारभ ही हुआ था। उस युग म कयाओ के विवाह की आयु १६ १७ वष थी। बाद म यह धीरे धीरे घटाई जाने लगी। ईसापूव ५०० के लगभग विवाह योग्य आयु १४ १५ वष रह गई और उसे और कम करने की प्रवृत्ति उभरने लगी। कई धमसूत्रो ने व्यवस्था दी कि कया का विवाह रजोदशन के तीन वष के भीतर अर्थात १५ वष की आयु तक कर ही दिया जाना चाहिए। कई धमसूत्रा ने विवाह का समय रजोदशन के तीन मास के भीतर अथात् १२ वष की आयु के लगभग बताया। मनु ने (ईसा पूव ३०० के लगभग) व्यवस्था दी कि ८ वष की आयु म भी कया का विवाह हो सकता है परतु इससे छोटी आयु म नही।[1] मनु ने यह भी कहा कि यदि योग्य वर न मिले तो कया पिता के घर में आजीवन कुवारी रह सकती है।[2] बाद के स्मृतिकारो का कहना था कि यदि योग्य वर न मिले तो भी कया का विवाह कर दिया जाना चाहिए। कइयो न तो विवाह की उपयुक्त आयु ८ वष बताई और कइयो ने व्यवस्था दी कि ४ वष की आयु के बाद किसी समय भी कया का विवाह किया जा सकता है। इसम सदेह नही कि अधिकाश जनता स्मृतिकारो की व्यवस्था का अनुसरण करती थी। अत इस युग म रजोदशन से पूव कया का विवाह एक साधारण घटना बन गई और बाल विवाह की प्रथा रूढ ही हो गई।

शिक्षा पर अनिष्ट प्रभाव

छोटी आयु म विवाह का कयाओ की शिक्षा दीक्षा पर अनिष्ट प्रभाव पडा। अब व वदिक काल की कयाओ की भाति १६ १७ वष की आयु तक शिक्षा ग्रहण नही कर पाती थी। इसके साथ ही इस युग म शिक्षा के क्षेत्र म इतना परिवतन और परिवद्धन हुआ तथा तत्सबधी मायताए इतनी बदल गई कि कया को पहले की भाति शिक्षित करना अप्रशस्त और कही-कही निषिद्ध तक कह दिया गया। आरभ म वदिक साहित्य अल्प था और पौरुषेय माना जाता था। उस समय वदिक सूक्तो का अध्ययन उसी भावना से किया जाता जिस भावना से आज जन साधारण सत कवियो की वाणी का अध्ययन करता है और उसे कण्ठस्थ करता है। ऐसा करने म सत-वाणी के विषय म यह भावना नही रहती कि वह ईश्वरीय रचना अथवा ब्रह्मवाक्य है। अत भाव को सुरक्षित रखते हुए लोग सतो के मूल शब्दो म थोडा-बहुत परिवतन भी करते हुए पाए जाते हैं। परतु जब वदिक मत्रो को अपौरुषेय अर्थात ईश्वरकृत माना जाने लगा तब उनको शुद्ध रूप म सुरक्षित रखना उनका शुद्ध उच्चारण और उनका उपयुक्त विनियोग

१ त्रिशद्वर्षोद्वहेत् कया हृद्या द्वादशवार्षिकीम।
त्र्यष्टवर्षोऽष्टवर्षां वा धर्मे सीदति सत्वर ॥ (मनु० ६ ९४)

२ काममामरणात् तिष्ठेद् गृहे कयतमत्यपि।
न चवता प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कहिचित् ॥ (मनु० ६ ८९)

आवश्यक और अनिवार्य समझा जाने लगा। इसमे किसी प्रकार की त्रुटि का रह जाना अत्यत अनिष्टकर माना जाने लगा।[१] साथ ही वैदिक साहित्य म ब्राह्मण ग्रथा और उपनिषदा के समावेश से उसका आकार बहुत बढ गया और वैदिक यज्ञ और कर्मकाड बहुत जटिल हो गए। इस सारे साहित्य के अध्ययन और जटिल यज्ञ विधि म कुशलता प्राप्त करते करते १६ वर्ष लग जाते थे। ८ १० वर्ष की आयु म उपनयन होने के बाद बालक तो २४ २५ वर्ष की अवस्था तक अपना अध्ययन बहुत हद तक पूरा कर पाते थे। परतु बालिकाए १४ १५ वर्ष की अवस्था तक इसे कदापि पूरा नही कर पाती थी। अत उन्ह वैदिक साहित्य का कुछ ही अश इस दृष्टि स अच्छी तरह पढा दिया जाता था कि वे सध्या वन्दन कर सकें। ईसा पूर्व ४०० के लगभग वेद विद्या पारगत पुरुष पर्याप्त सख्या म थे परतु वेद मर्मिता कन्याएँ इनी गिनी और अपवाद मात्र ही थी। जब विवाह की आयु घटते घटते आठ वर्ष ही रह गई तो कन्याओ के लिए शिक्षा के अवसर कम होते होते नगण्य रह गए। इस प्रकार अल्पशिक्षित अथवा अशिक्षित होने के कारण पुरुष की अपेक्षा नारी का गौरव बहुत घट गया।

उपनयन संस्कार का अन्त

ईसा पूर्व ४०० के लगभग कन्याओ का उपनयन संस्कार उपचार मात्र रह गया अर्थात उपनयन तो होता था परतु उसके बाद वैदिक शिक्षा का समारभ नहीं होता था। ईसा पूर्व ३०० के आस-पास मनु आदि स्मृतिकारो ने व्यवस्था दी कि कन्याओ का उपनयन मन्त्रोच्चारण के बिना किया जाना चाहिए। ३०० ईस्वी के लगभग स्मृतिकार याज्ञवल्क्य ने और उसके उत्तरवर्ती स्मृतिकारो ने कन्याओ के उपनयन ही का निषेध कर दिया। मनु और याज्ञवल्क्य ने एक नये सिद्धात का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि कन्याओ का विवाह ही उनका उपनयन-संस्कार है पति ही उनका गुरु है और पति सेवा तथा घर का कामकाज ही उनके लिए यज्ञ है। उपनयन संस्कार और वैदिक शिक्षा का निषेध हो जाने पर कन्याएँ द्विज-पद से वचित हो गई और उन्हे शूद्र के समान समझा जाने लगा।[२] इस प्रकार हम देखते है कि उपनयन संस्कार से वचित होने के कारण पुरुष की तुलना म नारी की स्थिति अत्यन्त हीन हो गई।

यज्ञ अधिकार का अत

वैदिक काल मे स्त्री को पुरुष की भाति यज्ञ करने का अधिकार था। लवन[१] आदि यज्ञ

१ वैदिक मत्रो के सस्वर शुद्ध उच्चारण की आवश्यकता बताते हुए महाभाष्यकार पतजलि ने कहा—
दुष्ट शब्द स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तदर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमान हिनस्ति यथेन्द्र शत्रु स्वरतो पराधात ॥
अर्थात इन्द्रशत्रु शब्द को अन्तोदात्त स्वर के बजाय आद्युदात्त स्वर स पढने के कारण यजमान वृत्रासुर का इन्द्र पर विजय होना तो दूर इन्द्र के हाथो उसका ही नाश हो गया। अत इष्टलाभ के लिए ठीक स्वर का उच्चारण आवश्यक है।

२ भगवद्गीता में स्त्री की गणना शूद्र के साथ की गई है
मा हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्यु पापयोनय।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परा गतिम् ॥

विवाह-योग्य आयु क्रमश कम

वदिक काल के बाद कयाओ के विवाह की आयु धीरे धीरे कम ही होती चली गई, उस काल म नारी का गौरव घटन के कारणो म मुख्य कारण यही हुआ। वदिक काल म कयाओ के लिए विवाह अनिवाय नही था और न उस काल म बाल विवाह की प्रथा का प्रारम्भ हो हुआ था। उस युग म कयाओ के विवाह की आयु १६ १७ वष थी। बाद म यह धीरे धीरे घटाई जाने लगी। ईसापूव ५०० के लगभग विवाह-योग्य आयु १४ १५ वष रह गई और उसे और कम करने की प्रवृत्ति उभरने लगी। कई धमसूत्रो ने व्यवस्था दी कि कया का विवाह रजोदशन के तीन वष के भीतर अथात १८ वष की आयु तक कर ही दिया जाना चाहिए। कई धमसूत्रो ने विवाह का समय रजोदशन के तीन मास के भीतर अर्थात् १२ वष की आयु के लगभग बताया। मनु ने (ईसा पूव ३०० के लगभग) व्यवस्था दी कि ८ वष की आयु म भी कया का विवाह हो सकता है परन्तु इससे छोटी आयु म नही।[1] मनु ने यह भी कहा कि यदि योग्य वर न मिले तो कया पिता के घर में आजीवन कुमारी रह सकती है।[2] बाद के स्मृतिकारो का कहना था कि यदि योग्य वर न मिले तो भी कया का विवाह कर दिया जाना चाहिए। कइयो ने तो विवाह की उपयुक्त आयु ८ वष बताई और कइयो ने व्यवस्था दी कि ४ वष की आयु म या बाद किसी समय भी कया का विवाह किया जा सकता है। इसम सदेह नही कि अधिकाश जनता स्मृतिकारो की व्यवस्था का अनुसरण करती थी। अत इस युग म रजोदशन से पूव कया का विवाह एक साधारण घटना बन गई और बाल विवाह की प्रथा दृढ ही हो गई।

शिक्षा पर अनिष्ट प्रभाव

छोटी आयु म विवाह का कयाओ की शिक्षा-दीक्षा पर अनिष्ट प्रभाव पडा। अब वे वदिक काल की कयाओ की भाँति १६ १७ वष की आयु तक शिक्षा ग्रहण नही कर पाती थी। इसके साथ ही इस युग म शिक्षा के क्षेत्र म इतना परिवतन और परिवद्धन हुआ तथा तत्सम्बधी मायताए इतनी बदल गई कि कया का पहले की भाँति शिक्षित करना अप्रशस्त और कही-कही निषिद्ध तक कह दिया गया। आरम्भ म वदिक साहित्य अल्प था और पौरुषय माना जाता था। उस समय वदिक सूक्तो का अध्ययन उसी भावना से किया जाता जिस भावना से आज जन साधारण सत कवियो की वाणी का अध्ययन करता है और उसे कण्ठस्थ करता है। ऐसा करने म सत वाणी के विषय म यह भावना नही रहती कि वह ईश्वरीय रचना अथवा ब्रह्मवाक्य है। अत भाव को सुरक्षित रखते हुए लोग सतो के मूल शब्दों मे थोडा-बहुत परिवतन भी करते हुए पाए जाते है। परतु जब वदिक मत्रो को अपौरुषेय अर्थात ईश्वरकृत माना जाने लगा तब उनको शुद्ध रूप मे सुरक्षित रखना उनका शुद्ध उच्चारण और उनका उपयुक्त विनियोग

1 त्रिशद्वर्षो वहेत्कयां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम् ।
त्र्यष्टवर्षोऽष्टवर्षां वा धर्मे सीदति सत्वर ॥ (मनु० ९ ९४)

2 काममामरणात तिष्ठेद् गृहे कयर्तुमत्यपि ।
न चवनां प्रयच्छेत्त गुणहीनाय कर्हिचित ॥ (मनु ९ ८९)

आवश्यक और अनिवार्य समझा जाने लगा। इसम किसी प्रकार की त्रुटि का रह जाना अत्यत अनिष्टकर माना जाने लगा।[1] साथ ही वदिक साहित्य मे ब्राह्मण ग्रथो और उपनिषदो के समावेश से उसका आकार बहुत बढ गया और वदिक यज्ञ और कर्मकाड बहुत जटिल हो गए। इस सारे साहित्य के अध्ययन और जटिल यज्ञ विधि म कुशलता प्राप्त करते करते १६ वष लग जाते थे। ८ १० वष की आयु म उपनयन होने के बाद बालक तो २४ २५ वष की अवस्था तक अपना अध्ययन बहुत हद तक पूरा कर पाते थे। परतु बालिकाएँ १४ १५ वष की अवस्था तक इसे कदापि पूरा नही कर पाती थी। अत उन्ह वदिक साहित्य का कुछ ही अश इस दृष्टि से अच्छी तरह पढा दिया जाता था कि वे सध्या-वन्दन कर सक। ईसा पूव ४०० के लगभग वेद विद्या पारगत पुरुष पर्याप्त सख्या म थ, परतु वेद मडिता कन्याएँ इनी गिनी और अपवाद मात्र ही था। जब विवाह की आयु घटते घटते आठ वष ही रह गई तो कन्याओ के लिए शिक्षा के अवसर कम होत होते नगण्य रह गए। इस प्रकार अल्पशिक्षित अथवा अशिक्षित होने के कारण पुरुष की अपेक्षा नारी का गौरव बहुत घट गया।

उपनयन सस्कार का अन्त

ईसा पूव ४०० के लगभग कन्याओ का उपनयन सस्कार उपचार मात्र रह गया अर्थात उपनयन तो होता था परतु उसके बाद वदिक शिक्षा का समारभ नही होता था। ईसा पूव ३०० के आस-पास मनु आदि स्मृतिकारो न व्यवस्था दी कि कन्याओ का उपनयन म त्रोच्चारण के बिना किया जाना चाहिए। ३०० ईस्वी के लगभग स्मृतिकार याज्ञवल्क्य ने और उसके उत्तरवर्ती स्मृतिकारो न कन्याओ के उपनयन ही का निषेध कर दिया। मनु और याज्ञवल्क्य न एक नये सिद्धात का प्रतिपादन किया। उन्होन कहा कि कन्याओ का विवाह ही उनका उपनयन सस्कार ह पति ही उनका गुरु है और पति सेवा तथा घर का काम काज ही उनके लिए यज्ञ है। उपनयन सस्कार और वदिक शिक्षा का निषेध हो जाने पर कन्याएँ द्विज पद से वचित हो गई और उन्ह शूद्र के समान समझा जाने लगा।[2] इस प्रकार हम देखते हैं कि उपनयन सस्कार से वचित होने के कारण पुरुष की तुलना म नारी की स्थिति अत्यन्त हीन हो गई।

यज्ञ-अधिकार का अत

वदिक काल मे स्त्री को पुरुष की भाति यज्ञ करने का अधिकार था। लवन[1] आदि यज्ञ

१ वदिक मत्रों के सस्वर शुद्ध उच्चारण की आवश्यकता बताते हुए महाभाष्यकार पतजलि ने कहा—
दुष्ट शब्द स्वरतो वणतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तदर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमान हिनस्ति यथेन्द्रशत्रु स्वरतोऽपराधात ॥
अर्थात इन्द्रशत्रु शब्द को अन्तोदात्त स्वर के बजाय आद्योदात्त स्वर स पढ़ने के कारण यजमान वत्रासुर की इन्द्र पर विजय होना तो दूर इन्द्र के हाथों उसका ही नाश हो गया। अत इष्टलाभ के लिए ठीक स्वर का उच्चारण आवश्यक है।

२ भगवद्गीता में स्त्री की गणना शूद्र के साथ की गई है
मा हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्यु पापयोनय।
स्त्रियो वश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥

केवल स्त्रियाँ ही करती थी। गृहस्थ के लिए यज्ञो म पत्नी की उपस्थिति अनिवाय होती थी और उसके बिना पति यज्ञ कर ही नही सकता था। परतु जब नारी का उपनयन-सस्कार बद हो गया तब ऐतिशायन आदि स्मृतिकार कहने लगे कि पत्नी, पति के साथ वदिक यज्ञ म सम्मिलित नही हो सकती। यह एकदम नया ही विधान था। जमिनी ने इसका विरोध किया और यज्ञ म पत्नी के साहचय का समथन किया। परतु उसने भी यह माना कि चूकि पत्नी अशिक्षित होती है इसलिए वह पति की तुलना कदापि नही कर सकती। इस प्रकार हम देखते है कि उपनयन सस्कार बद होने के कारण नारी को यज्ञ से बहिष्कृत किया जाने लगा। इससे नारी के गौरव को भारी आघात पहुँचा।

पत्नी की स्थिति

वदिक काल म कयाओ को स्वय पति को वरण करने का अधिकार था और विवाह करना या न करना उनकी अपनी इच्छा पर निभर करता था। परतु बाद म जब विवाह अनिवाय ठहरा दिया गया और विवाह की आयु १० १२ वष निर्धारित कर दी गई तब कयाएँ अशिक्षित एव अपरिपक्व-बुद्धि होने के कारण पति का स्वयवरण करने मे समथ नही रही। अत स्वयवर की प्रथा धीरे धीरे लुप्त हो गई। क्षत्रिय-कुलो म इसका प्रचलन कुछ और शतादियो तक अवश्य रहा। वदिक काल म पत्नी पति की सहधर्मिणी और गृह-स्वामिनी मानी जाती थी। परतु स्मृति काल म पत्नी की स्थिति हीन हो गई और पति-पत्नी के सम्बध गुरु शिष्य अथवा स्वामी सेवक के समान हो गये। पति की श्रेष्ठ स्थिति और पत्नी की हीन स्थिति की झलक मनुस्मृति म भी मिलती ही है। मनु का कहना है पति चाहे गुण रहित हो, व्यसनी हो और दुराचारी हो तो भी पत्नी को उसकी देवता की भाँति सेवा करनी चाहिए। पति सेवा से पत्नी स्वग की अधिकारिणी बनती है। स्वग की कामना करने वाली स्त्री को पति के जीवन काल म अथवा उसके मरणोपरात पति के विरुद्ध आचरण नही करना चाहिए। विधवा को अल्पाहार से अपनी देह क्षीण कर लेनी चाहिए और पर पुरुष का कभी चिंतन नही करना चाहिए। सती साध्वी विधवा पुत्र हीन होती हुई भी स्वग की अधिकारिणी होती है।[1]

स्वतत्रता का ह्रास

शिक्षा से वचित और शास्त्र ज्ञान से रहित होने के कारण नारी कतव्याकतव्य का निणय करने म असमथ हो गई और हर बात म पुरुष पर निभर करने लगी। अत मनु आदि स्मृतिकारो ने यह सिद्धात प्रतिपादित किया कि स्त्रिया स्वतत्रता की अधिकारिणी नही हैं। पुरुषो को चाहिए कि उन्हें सदा अपने वश म रखें।[2] पिता कया को, पति पत्नी को और पुत्र वद्ध माता को सदा अपने सरक्षण म रखे।[3] इस सिद्धात का अनुमोदन करते हुए नारदस्मृति के

१ मनुस्मृति (५ १५५ १६०)
२ अस्वतत्रा स्त्रिय कार्या पुरुष स्व दिवानिशम्। (मनु० ९ २)
३ पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातत्र्यमर्हति ॥ (मनु० ९ ३)

टीकाकार असहाय न कहा कि चूकि औचित्य-अनौचित्य का निर्णय शास्त्र ज्ञान पर निर्भर करता है, और चूकि स्त्रिया अशिक्षित और शिक्षा की अनधिकारिणी होने के कारण शास्त्र ज्ञान से रहित हैं, इसलिए उन्हें सदा पुरुषा के सरक्षण म रहना चाहिए।

विधवा विवाह और नियोग प्रथा का अन्त

हम देख चुके हैं कि वदिक काल म सतानहीन विधवा नियोग द्वारा सतान उत्पन्न कर सकती थी और सम्भवत पुनर्विवाह भी कर सकती थी। नियोग प्रथा सूत्रकाल और आरम्भिक स्मृति-काल तक प्रचलित रही। गौतम, बौधायन और वसिष्ठ इसके पक्ष म थे। परन्तु मनु ने विधवा विवाह और नियोग दोनो का निषेध कर दिया। मनु का कथन है 'विवाह-सम्बन्धी मत्रा म कही भी नियोग की अनुमति नही दी गई है और न उनम दूसरे पुरुष स विवाह की चर्चा हुई है।[1] शास्त्र ज्ञान स रहित जा पुरुष विधवा स्त्री को देवर आदि से नियोग की अनुमति देता है वह निंदनीय है।'[2] मनु आदि स्मृतिकारा की व्यवस्था के परिणामस्वरूप नियोग प्रथा समाप्त हो गई।

विधवा विवाह का निषेध करते हुए मनु न कहा, सकृत् कन्या प्रदीयते अर्थात कन्या का विवाह एक बार ही होता है। (९ ४७)। न द्वितीयश्च साध्वीना क्वचिद् भर्तोपदिश्यते। अर्थात सदाचारिणी स्त्रिया का दूसरा पति नहा होता। (५, १६२) ऐसी ही व्यवस्था याज्ञवल्क्य ने भी दी।

परतु नारद तथा अन्य स्मृतिकारा ने विशेष परिस्थितिया म पत्नी के पुनर्विवाह की अनुमति दी। उनका कहना था कि यदि पति की मृत्यु हो जाय या पति सन्यासी हो जाय, या जाति से बहिष्कृत कर दिया जाय या नपुसक हो, तो पत्नी पुनर्विवाह कर सकती है। कौटिल्य का कहना था कि यदि पति दुराचारी हो या बहुत समय तक विदेश स न लौटे, या पत्नी के जीवन को सशय म डालने वाला हो तो पत्नी पुनर्विवाह कर सकती है। परतु शीघ्र ही स्मृतिकारा ने इन वचना का अनुसरण बद हो गया और पुनर्विवाह की प्रथा लुप्त हो गई।

सती प्रथा का आविर्भाव

जसाकि हम ऊपर कह आये है मनु का आदेश था कि विधवा स्त्री का अल्पाहार स अपनी देह क्षीण कर लेनी चाहिए, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए, पर पुरुष का कदापि चितन न करना चाहिए और सती-साध्वी की भाति कठोर तपस्या का जीवन व्यतीत करना चाहिए।

स्मृतिकारा के ऐसे वचन नारी के लिए आदर्श माने जाने लगे और जो इन्ह मन स ग्रहण न कर सकी उनका जीवन कष्टमय और निराशापूर्ण हो गया। इसके साथ ही सती प्रथा भी

१ नोद्वाहिकेषु मत्रेषु नियोग कीर्त्यते क्वचित।
न विवाहविधावुक्त विधवावेदन पुन ॥

२ तत प्रभृति यो मोहात् प्रमीतपतिका स्त्रियम।
नियोजयत्यपत्यार्थं त विगर्हन्ति साधव ॥ (मनु० ९ ६८)

उग्ररूप में प्रकट होने लगी। हम पहले कह आये हैं कि वैदिक काल में यह प्रथा नहीं थी। महाभारत काल में पाडु की छोटी रानी माद्री का सती होना इसका एकमात्र उदाहरण मिलता है। परन्तु ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। ईस्वी १०० के लगभग स्मृतिकार विष्णु ने सती प्रथा का समर्थन करते हुए कहा कि विधवा प्राणोत्सर्ग करके मृत पति की आत्मा का अनुसरण कर सकती है। अंगिरस ने कहा कि सती होना ही विधवा का धर्म है। हारीत ने कहा कि पति के शव के साथ जलकर पत्नी पति को उसके भयंकर पापों से मुक्त करा सकती है। यद्यपि कुछ स्मृतिकारों ने सती प्रथा को आत्महत्या कहकर उसका विरोध किया परन्तु अधिकतर स्मृतिकारों ने उसका समर्थन ही किया। परिणामतः प्रथा जोर पकड़ती गई और सर्वमान्य हो गई। इसका प्रचलन उन्नीसवीं शताब्दी तक रहा। फिर कानून द्वारा इसका निषेध कर दिया गया।

पत्नी का परित्याग

वैदिक युग तथा रामायण महाभारत काल में विवाह विच्छेद की किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। स्मृति-काल में पहली बार पत्नी के अधिवेदन अर्थात् पति द्वारा पत्नी के परित्याग और दूसरी स्त्री से विवाह की चर्चा हुई। यद्यपि मनु और याज्ञवल्क्य विवाह विच्छेद का निषेध करते हैं पर विशेष परिस्थितियों में वे पत्नी के अधिवेदन की अनुमति भी देते हैं।

मनु का कहना है कि पति दुराचारी हो तो भी पूज्य है परन्तु यदि पत्नी मद्यपान करने वाली, प्रतिकूल आचरण करने वाली, रोगिणी अथवा अति व्यय करने वाली हो तो पति उसका परित्याग कर सकता है। वंध्या पत्नी का विवाह के आठवें वर्ष में, मृत प्रजा का (अर्थात् जिसके बाल-बच्चे मर जाते हों) दसवें वर्ष में और स्त्री जननी (अर्थात् केवल कन्याओं को जन्म देने वाली पत्नी) का ग्यारहवें वर्ष में परित्याग किया जा सकता है। अप्रियवादिनी पत्नी का तो तुरंत परित्याग किया जा सकता है।[1] परन्तु इस प्रकार परित्यक्त पत्नी पति-गृह में ही दासी की भांति रहे और अपने आपको स्वतंत्र न समझे। यदि वह रुष्ट होकर पति के घर से निकल भागना चाहे तो उसे रस्सी आदि से बांध देना चाहिए।[2] उपर्युक्त प्रकार से परित्यक्ता पत्नी का पति तुरंत दूसरा विवाह कर सकता है।

संपत्ति का अधिकार

यद्यपि स्मृति युग में परिवार और समाज में नारी की स्थिति निरंतर बिगड़ती गई फिर भी एक संतोषजनक बात यह हुई कि सम्पत्ति पर उसका अधिकार स्वीकार किया जाने लगा। पिता की संपत्ति पर पुत्र के अभाव में कन्या का अधिकार पहले की भांति सर्वमान्य रहा। भाइयों के रहते अविवाहित बहन को पितृ-संपत्ति पर अधिकार देने का प्रश्न नहीं उठ सकता था क्योंकि इस युग में कन्याओं का विवाह अनिवार्य हो गया था। बहनों के विवाह के लिए पितृ-संपत्ति का पर्याप्त अंश अलग रख देना भाइयों का कर्तव्य माना

१ मनु० ९,८०-८१
२ मनु० ६,८३

गया। सतानहीन पुत्र की सपत्ति पर माता का अधिकार और सतानहीन पौत्र की सम्पत्ति पर मातामही का अधिकार पहले की भाति मान्य रहा। इस काल म मुख्य सुधार विधवा के सपत्ति-अधिकार के विषय म हुआ। यह स्वीकार कर लिया गया कि यदि पति मृत्यु स पूव सयुक्त परिवार स अलग हो गया हो तो उसकी विधवा उसकी सपत्ति की उत्तराधिकारिणी है। ईसा पूव ४०० के लगभग स्मृतिकारो न विधवा का यह अधिकार स्वीकार नही किया था। परन्तु चूकि ईसा पूव ५०० और १०० ई० के बीच नियोग और विधवा विवाह की प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो गई थी, इसलिए स्मृतिकारो ने सोचा कि यदि पुत्रहीन विधवा न विवाह कर सकती है और न नियोग द्वारा सतान उत्पन्न कर सकती है तो उस सम्मानपूवक जीवन निर्वाह क लिए दिवगत पति की सपत्ति का पर्याप्त अश मिलना चाहिए। ईसा पूव ३०० के लगभग कौटिल्य न व्यवस्था दी कि विधवा को पति की सपत्ति से निर्वाह मात्र के लिए पर्याप्त अश मिल जाना चाहिए। ईसा पूव १०० के लगभग स्मृतिकार विष्णु न इसम और सुधार करते हुए कहा कि पुत्रहीन विधवा को पति की सपूण सपत्ति मिलनी चाहिए। दो सौ वष बाद स्मृतिकार याज्ञवल्क्य ने इस मत का समथन किया। परन्तु विष्णु और याज्ञवल्क्य क मत म अन्य स्मृतिकार सहमत न थे। उनके मत भिन्न भिन्न थे। अनेको ने यह कहा कि विधवा को स्त्री धन के अतिरिक्त दो या तीन सहस्र रुपये ही मिलने चाहिए। कइयो का कहना था कि विधवा को केवल चल सपत्ति मिलनी चाहिए। कुछ का मत था कि विधवा को पति की सपत्ति देवर अथवा सास-ससुर के न होने पर ही मिलनी चाहिए। परिणामत भिन्न भिन्न प्रदेशो म विधवा के सपत्ति विषयक अधिकार के सबध म भिन्न भिन्न कानून लागू रहे। सपत्ति पर विधवा का अधिकार कही-कही तो स्वीकार कर लिया गया, परतु कई प्रदेशो मे स्वीकार नही हुआ।

आलोच्य काल म नारी की स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिए दो बातो को ध्यान मे रखना आवश्यक है। एक यह कि यद्यपि अधिकाश स्मृतियो ने नारी के विषय म कठोर व्यवस्थाए दी तथापि वास्तविक जीवन के व्यवहार म उनके अनेक अपवाद होते थे। यद्यपि साधारणतया कन्याओ का विवाह ८ १० वष की आयु म होता था, फिर भी पूण युवा कन्याओ के विवाह के उदाहरण सातवी शताब्दी तक ही मिलते हैं। यद्यपि साधारण परिवारो म कन्याओ की शिक्षा पर पूण प्रतिबध था फिर भी राजवशो और शिष्ट तथा अभिजात कुलो म कन्याओ को घर पर ही शिक्षा देने की व्यवस्था की जाती रही जिसके फलस्वरूप आगे चलकर अनेक विदुषिया और कवयित्रिया हुइ। दूसरे यह कि अधिकाश स्मृतिकारो द्वारा नारी को अवर स्थान दिये जाने के बावजूद, मानव की स्वाभाविक प्रवत्तियो म भी अधिक समाज की गहरी मान्यताओ के कारण, पिता के हृदय म पुत्री के लिए स्नेह पति के हृदय म पत्नी के लिए प्रेम और पुत्र के मन म माता के प्रति आदर का भाव होता ही था। ऐसे भावो को व्यक्त करते हुए कालिदास ने कन्या को कुल का प्राण[1] पत्नी को पति की सचिव और सखी कहा,[2] और मनु ने माता का गौरव पिता से सहस्रगुना माना[3] और यह भी कहा कि जहा नारियो की पूजा होती है वही सुख-समृद्धि का

१ कन्यय कुलजीवितम (कुमारसम्भव ६ ६३)
२ गहिणी सचिव सखी मिथ (रघुवश ८ ६७)
३ सहस्र तु पितन माता गौरवेणातिरिच्यत (२ १४५)

निवास होता ह।[1]

बौद्ध धम मे नारी की स्थिति

ऊपर हमने हिंदू समाज मे नारी की स्थिति के जिस युग का वणन किया है लगभग उमी युग मे बौद्ध और जन धर्मो का भी प्रचार और प्रसार हुआ। इन धर्मों म नारी की स्थिति पर प्रकाश डाले बिना भारतीय नारी की अवस्था का चित्राकन पूण नही कहा जा सकता।

बुद्ध और महावीर ने बहुत-सी ऐसी धारणाओ का अत कर दिया जिनके आधार पर हिंदू समाज म पुरुष और स्त्री मे विभेद किया जाता था। हिंदू शास्त्रो म स्वग की प्राप्ति के लिए पुत्र का जन्म आवश्यक माना गया था। इसके विपरीत बुद्ध और महावीर न कहा कि निर्वाण अथवा मोक्ष यक्ति को केवल अपने कर्मो से प्राप्त होता ह। पुत्र अथवा कन्या का जन्म उसकी प्राप्ति म साधक या बाधक नही है। वदिक यज्ञो मे नारी का धीरे धीरे बहिष्कार किया जाने लगा था जिसके फलस्वरूप उसे पुरुष से हीन समझा जाने लगा। परतु बुद्ध और महावीर न यज्ञो को अनावश्यक बताकर उनका निषेध ही कर दिया।

इस प्रकार पुरुष और स्त्री के विभेद के मूल कारणो को दूर करके बौद्ध और जन धर्मों के प्रवतको ने पुरुष के समान नारी के लिए भी शिक्षा दीक्षा और आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खोल दिया।

लगता है कि सघ की स्थापना के आरभिक वर्षों म कुछ के मन म नारी की योग्यता और सामथ्य के विषय म किंचित सदेह और अनास्था थी। बुद्ध की अपनी विमाता एव धात्री महाप्रजापती गौतमी ने महाराज शुद्धोदन के देहात के बाद विरक्त होकर निर्वाण की अभिलाषा से सघ म प्रवेश करने के लिए तीन बार प्राथना की। परतु बुद्ध न उसकी प्राथना अस्वीकार कर दी। तीनो बार उनका यही उत्तर था रहने दो गौतमी नारियो को गहस्थी त्यागकर सघ म प्रवेश करने की प्रेरणा मत दो। अत म अपने मुख्य शिष्य आनद के अनुरोध पर जब उन्होने नारियो के सघ म प्रवेश की अनुमति दे दी तो उन्होने भविष्यवाणी की कि नारियो के प्रवेश के बिना सघ जितनी अवधि तक शुद्ध रह सकता था अब भिक्षुणी सघ की स्थापना के फलस्वरूप वह उसकी आधी अवधि तक ही शुद्ध रह पायगा।

भिक्षुणी सघ की स्थापना हो गई और किसी भेद भाव के बिना सब नारियो को— कुमारियो विवाहित स्त्रियो विधवाओ यहाँ तक कि गणिकाओ को भी दीक्षा दी जाने लगी।

परतु भिक्षुओ की तुलना म बुद्ध न भिक्षुणियो को अवर ही माना। भिक्षुणियो के लिए आठ शर्तें रखी गई जिनम से दो इस प्रकार थी —

१ भिक्षुणी चाहे वृद्धा हो और उसे दीक्षा लिये चाहे सौ वष हो गये हो तो भी उसका कर्तव्य है कि वह किसी नव-दीक्षित युवा भिक्षु के पधारने पर अपने आसन से उठकर उसका अभिवादन करे।

२ किसी भिक्षुणी को किसी भिक्षु की भत्सना नहीं करनी चाहिए और न किसी भिक्षु

१ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता (३ ५६)

के प्रति अपशब्दो का प्रयोग करना चाहिए।

या कदाचित् य शर्तें व्यवहार म भिक्षुणिया की साधना के आरम्भिक वर्षों म ही लागू होती होगी और किंचित सिद्धि प्राप्त करने के बाद भिक्षु और भिक्षुणियो म भेद नही किया जाता होगा।

भिक्षुणी सघ की स्थापना के फलस्वरूप जहा समाज म नारी का गौरव बढा वहा भिक्षुणिया के लिए उच्च शिक्षा, आध्यात्मिक उन्नति और समाज-सेवा तथा धम प्रचार का माग प्रशस्त हो गया।

विदुषी भिक्षुणिया

अनुभवी और सिद्धि प्राप्त भिक्षुणिया का थेरी की सज्ञा दी जाती थी। थेरियो म सबसे अधिक विदुषी धम्मदिता' थी जो प्रमुख धम्मकथिका अर्थात धम प्रचारिका भी थी। उसने औरो के अतिरिक्त अपने पति को भी धार्मिक सिद्धाता की शिक्षा दी। बुद्ध न उसके शिक्षा देन के ढग की प्रशसा की है। एक और प्रख्यात धम्मकथिका थी सुक्का जो विशाल जन-समुदाय के सम्मुख बौद्ध सिद्धाता पर व्याख्यान दिया करती थी। श्रावस्ती के श्रेष्ठी की पुत्री 'पटाचारा' विनय नियमा की पडिता थी। उसने तीस भिक्षुणिया को शिक्षा दी और उन्ह सिद्धि के माग पर अग्रसर किया।

बिबसार की पत्नी महारानी खेमा बौद्ध शास्त्रा की पडिता थी और बुद्ध न उस विदुषी थेरिया म स्थान दिया था। कहत है कि एक बार कोशल नरश प्रसेनजित न उससे यह दुरूह प्रश्न किया कि देहत्याग क बाद तथागत का अस्तित्व रहता है या नही ? उसने उत्तर दिया कि देह त्याग के बाद तथागत का पाच तत्त्वा के द्वारा अथवा रूप और वेदना के आधार पर किसी स्थान विशेष म उपलब्ध नही किया जा सकता। उसन यह भी बताया कि बुद्ध न इस प्रकार के प्रश्नो को अनिर्णय ठहराया है। कहते हैं कि बाद म प्रसेनजित ने बुद्ध से भेंट की और उन्होने भी उस उपयुक्त प्रश्न का वही उत्तर दिया जो कि खेमा ने दिया था। धुल्लनदा प्रवचन करन मे कुशल थी। विनयपिटक म उसे कुशल शिक्षिका बताया गया है। कुशाग्रबुद्धि कजगला के विषय म कहा गया है कि उसन बुद्ध अथवा उनके शिष्यो के व्याख्यान कभी नही सुने थ। फिर भी वह ग्रथो के अध्ययन स ही पडिता हो गई थी। वह धार्मिक सम्मेलनो मे बुद्ध की उक्तियो की ऐसी यथाथ व्याख्या करती थी कि सुनकर स्वय बुद्ध उसकी प्रशसा किये बिना न रह सके। राजगह क धनाढय श्रेष्ठी की कन्या भद्दा कुण्डल-केशा परम विदुषी और विशेषत तर्क शास्त्र की पडिता थी। उसने कई बार पुरुषो को शास्त्राथ म पराजित किया था। बुद्ध के प्रख्यात शिष्य सारिपुत्त के अतिरिक्त कोई उसे पराजित नही कर सका। बुद्ध से दीक्षा प्राप्त करने के बाद लगभग पचास वष तक वह अग, मगध काशी कौशल आदि देशो की यात्रा और धम प्रचार करती रही।

भिक्षुणियो की आध्यात्मिक सिद्धि

बौद्ध भिक्षुणिया और थेरिया विदुषी ही नही थी प्रत्युत आध्यात्मिक क्षेत्र म भी उन्होने परम सिद्धि प्राप्त की थी।

थेरीगाथा नामक ग्रथ से जो कि ७७ भिक्षुणिया द्वारा रचित ५२२ गीतो का सग्रह है,

उनकी साहित्यिक सफलता एव आध्यात्मिक उपलब्धि का परिचय मिलता है। इस ग्रथ के अनुसार बुद्ध की विमाता महाप्रजापती को अपने पूव जन्मा की स्मृति उपलब्ध हुई जिनम वह पुत्र भाई माता और मातामही आदि रह चुकी थी। उसे यह भी बोध हो गया था कि अब उसका पुनजन्म नहीं होगा और वह निर्वाणपद प्राप्त करने वाली है।

पटाचारा जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है पति पुत्र, पिता भाई आदि निकट सबधियो का निधन देखकर विक्षिप्त हो गई थी। बुद्ध के उपदेश सुनकर पहले वह स्रोतापन्न अर्थात निवाण पथगामिनी हुई और फिर उन उपदेशा पर मनन और आचरण करने से उसने अहता पद प्राप्त किया। उज्जयिनी के श्रेष्ठी की कन्या इसिदासी गृहस्थ जीवन से निराश होकर भिक्षुणी-सघ म प्रविष्ट हुई। भिक्षुणी जिनदत्ता से दीक्षा पाने के कुछ समय बाद उसे पूव जन्मा के कर्मों का स्मरण हो आया और तदनतर उसे परम ज्ञान प्राप्त हुआ।

वशाली की रूपवती गणिका अम्बपाली जिसकी कामना करने वाला म महाराज बिबसार भी थ बीतराग होकर उपासिका बन गई थी। वशाली के निकट कोटिगाम म बुद्ध ने उसे उपदेश दिया। अम्बपाली ने बुद्ध और उनके शिष्यो को भोजन का निमत्रण दिया। भोजनोपरात अम्बपाली ने अपना आम्र उद्यान सघ को दान द दिया। बाद म उसन भिक्षुणी सघ म प्रवश किया और कालातर म अहता-पद प्राप्त किया। उसने नय गीतो की रचना भी की।

जो नारियाँ सघ म प्रवेश न करके भी बौद्ध धम का अनुसरण करती थी उन्ह उपासिका की सज्ञा दी गई थी। इन उपासिकाओ म उदयन की रानी सामावती सामावती की दासी खज्जुत्तरा और अगदेश के श्रेष्ठी की कन्या विशाखा के नाम उल्लेखनीय है।

सामावती बाल्यकाल स बुद्ध की उपासिका थी। विवाह के बाद उसकी सपत्नी 'चूडा मागदीय उदयन को जिसकी बुद्ध म आस्था नही थी सामावती के विरुद्ध भडकाया करती थी। एक बार उदयन को इतना क्रोध आया कि वह हाथ म धनुष लेकर सामावती और उसकी दासिया पर विषले बाण चलाने को तयार हो गया। यह देखकर सामावती और उसकी दासियो ने निश्चल रहते हुए राजा के प्रति मत्री भावना से ध्यान किया जिसस उसके हाथ सुन्न हो गये और वह बाण न चला सका। यही नही प्रत्युत वह धनुष और बाणो को अपने हाथो स अलग करने मे असमथ हो गया। तब उसने सामावती से क्षमा-याचना की और उसके प्रभाव से ही वह धनुष और बाण स अपना हाथ छुडा सका। बाद म सामावती को अपने महल म ही 'आनन्द' से प्रवचन सुनने की अनुमति मिल गई। मत्री भावना के अभ्यास म सिद्धि प्राप्त करने के कारण बुद्ध ने सामावती की गणना श्रेष्ठ उपासिकाओ म की।

सामावती की दासी खज्जुत्तरा ने जब पहली बार बुद्ध का प्रवचन सुना तो उसे उसका एक एक अक्षर कण्ठस्थ हो गया और साथ ही स्रोतापत्ति भी प्राप्त हो गई। सामावती के कहने पर वह प्रतिदिन प्रवचन सुनने जाती और महल म लौटकर रानी को सारा प्रवचन अक्षरश सुना देती। ऐसा करत-करत वह बहुत विदुषी हो गई और बुद्ध ने उसकी गणना भी श्रेष्ठ उपासिकाओ म की।

श्रावस्ती के श्रेष्ठी पुनवद्धन की पत्नी विशाखा भी बुद्ध की उपासिका थी। उसने अपने सारे आभूषण उतारकर बुद्ध को भेट कर दिये थे।

जैन धम मे नारी

जन धम के प्रवतक महावीर ने नारी को पुरुष के समान धर्माधिकारिणी मानकर तथा जन आचार्यों और गुरुआ न नारी का सपत्ति विषयक तथा अ य कानूनी अधिकार देकर उसका उद्धार किया और भारतीय समाज पर अनुग्रह किया।

नारी के विषय म महावीर का दृष्टिकोण बुद्ध की अपेक्षा अधिक उदार था। उन्होंने नारिया को दीक्षा दने म तनिक भी सकोच नही किया। बौद्ध धम म ता भिक्षुणिया को भिक्षुओ म अवर ही माना गया था, परन्तु जन धम म साध्विया को साधुआ स हीन नही माना गया। दीक्षा लेने के बाद साधुआ और साध्विया के लिए भिक्षा, चर्या, भाषण अभिवादन आदि के विषय मे समान नियम थे। सभवत यह एक कारण था कि जन धम के अनुयायिया मे पुरुषा की अपेक्षा स्त्रिया की सख्या बहुत अधिक थी।

महावीर क जीवन-काल म उनके अनुयायिया म चौदह सहस्र साधु और छयालीस सहस्र साध्विया, तथा एक लाख उनसठ हजार श्रावक और तीन लाख अठारह हजार श्राविकाए थी। आग चलकर जन धम क दो सम्प्रदाय हो गय—श्वेताम्बर और दिगम्बर। श्वेताम्बर सप्रदाय नारी के प्रति अधिक उदार है। इसम नारिया की आध्यात्मिक प्रगति म कोई बाधा नही है और व क्रमश साध्वी उपाध्याया, आचाया अहता और सिद्धा की पदवी प्राप्त कर सकती हैं और पुरुषा की भाति ही मोक्ष की भी अधिकारिणी है। शाक्टायनाचाय न स्पष्ट कहा है 'अस्ति स्त्रीनिवाण पुवत्'।

धम प्रचार और आध्यात्मिक सिद्धि

जन धम म दीक्षा लेन के बाद अनेक नारियो न धम के प्रचार और प्रसार के क्षेत्र मे प्रशसनीय काय किया तथा आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त की। चम्पा के राजा दधिवहन की क या च दना, जिस महावीर न नारिया म सबस पहल दीक्षा दी थी साध्वी मडल की अध्यक्षा बनी। उसके प्रचार-काय क फलस्वरूप बीस हजार स्त्री-पुरुष जन धम के अनुयायी बने। धम प्रचारिकाओ मे महासुव्रता, आर्यापक्षिणी आर्याविजा, यक्षा और राजनीति के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

कल्पसूत्र के अनुसार 'पुष्पचूला' के अनुरोध स अडतीस हजार नारिया ने पाश्वनाथ से दीक्षा लकर साध्वीपद प्राप्त किया। इसी प्रकार सुमना की प्रेरणा स तीन लाख छत्तीस हजार नारिया श्राविकाए बना। बीस हजार साध्विया न अपन कर्मों का क्षय होन पर मोक्ष प्राप्त किया, जब कि उसी अवधि म केवल एक हजार साधु ही मोक्ष प्राप्त कर पाय। इसी ग्रथ के अनुसार अहत अरिष्टनेमि की प्रेरणा से तीन लाख बत्तीस हजार श्राविकाओ ने दीक्षा ली जिनम तीन हजार न कालान्तर म मोक्ष प्राप्त किया।

जैन विदुषिया

जन समाज म विदुषिया की भी कमी नही था। 'याकिनी महत्तरा' परम विदुषी और

शास्त्राथ कुशला थी। कहते है कि उसने हिन्दू शास्त्रो के प्रकाड पडित एव नीति, तक याग और कमकाड विषयक अनेक ग्रथो के रचयिता हरिभद्र सूरि को शास्त्राथ म पराजित किया था। पराजित होने पर हरिभद्र सूरि ने जन धम स्वीकार किया और अपने आपको याकिनी महत्तरा सूनु' माना।

६०५ ईसवी म गुणसाध्वी ने सिद्धर्षि के वहत्काय ग्रथ उपमित भव प्रपच कथा की प्रथम प्रतिलिपि तयार की। उसकी विद्वत्ता देखकर स्वय सिद्धर्षि ने उसे सरस्वती का अवतार माना। बारहवी शताब्दी के आरभ म महान दाथी महत्तरा और गणिनी वीरमती नामक दो विदुषियो ने हेमचन्द्र को जिनभद्र के ग्रथ विशेषावश्यकभाष्य पर विस्तृत टीका लिखने के काम मे सहयोग दिया। १३५० म गुण समृद्धि महत्तरा ने अजना सुदर चरित्र नामक ग्रथ की रचना की।

आदश पतिव्रताए

हिन्दू समाज की भाति जन समाज म भी पातिव्रत्य धम को बहुत महत्त्व दिया गया है। जन तीथकर नेमिनाथ की पत्नी राजीमती कौशलन की पत्नी कनकी और कौशाम्बी के राजा शतानीक की पत्नी रानी मृगावती आदि पतिव्रताए सीता और सावित्री के समान ही पूज्य हैं।

सुलसा' भी आदश पतिव्रता नारी थी जिसके विषय म आज भी निम्न आशय का गीत गाया जाता है सुलसा पतिव्रता थी। वह सासारिक सुख भोगो म आसक्त नही थी। उसके दशन मात्र स पाप दूर हो जाते थे।

नारी का सम्मान

जन समाज म नारी विशेषत माता सदा ही आदर की पात्र रही है। मदिरो म शुरू से ही चौबीस तीथकरो की माताओ की मूतियो की पूजा होती रही है और आज भी आबू गिरनार पाटण आदि के मदिरो म उनकी पूजा होती है।

इसके अतिरिक्त विशेष परिस्थितियो म नारी को पुरुष से वरीयता दी जाती थी। बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार बाढ, अग्निकाड और डकती आदि सकट उपस्थित होने पर पुरुषो से पहले नारियो को बचाने का प्रयत्न किया जाता था। जन परिवारो म पत्नी की इच्छाओ का आदर किया जाता था और उसे पति की दासी नही प्रत्युत सहचारिणी समझा जाता था। उसे गहस्थी के काम-काज का प्रबध करने की पर्याप्त स्वतत्रता थी और दत्तक को गोद लेने के विषय मे पति के समान ही अधिकार प्राप्त था।

सपत्ति पर अधिकार

हिन्दू नारी की भाति जन नारी का भी स्त्री धन पर पूरा अधिकार था। जन नीति ग्रथो के अनुसार स्त्री धन म पाच प्रकार का धन समाविष्ट था (१)अध्याग्निकृत—विवाह मडप म अग्नि के समक्ष वधू को जो कुछ दिया जाय (२)अध्याह्वनिक—वधू पितृकुल से जो कुछ लाती है (३) प्रतिदान—सास-ससुर वधू को जो कुछ देते है (४)सोदायिक—वधू को माता पिता,

भाइ और पति म जो कुछ मिलता है, और (५) अयाधेय—विवाह के अवसर पर वधू का पितृ-कुल अथवा पति-कुल की स्त्रिया स जो माना मानी, वस्त्र आदि मिलता है।

कन्या, पिता की सपत्ति की दामाद मानी जाती थी। इस विषय म जैन परिवारो म पुत्र और कन्या म भेद नही किया जाता था। पुत्रहीन पुरुष की कन्या को उसकी सपूण सपत्ति पर अधिकार था। यदि भाइ हो तो अविवाहित बहन को पितृ सपत्ति म म भाइयो की तुलना म एक चौथाई भाग मिलता था। परन्तु भाइयो के रहते विवाहित बहन को पिता की सपत्ति नही मिलती थी। पुत्री विवाहित हो या अविवाहित उस माता की सपत्ति पर पूर्ण अधिकार था।

हिंदू विधवा की अपेक्षा जैन विधवा के सपत्ति विषयक अधिकार अधिक थ। जैन विधवा को सपत्ति का उपभोग करने के अतिरिक्त उसे बेचने या किसी को द देने का भी अधिकार था। वर्धमान-नीति म विधवा का पुत्रो पर वरीयता दी गइ है। उसे पुत्रो क रहते भी पति की सपत्ति पर पूर्ण अधिकार था। अपने निवाह के लिए धर्मार्थ व्यय करने के लिए अथवा दान आदि के लिए जैन विधवा पति की सपत्ति का व्यय और विक्रय कर सकती थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाभारत काल के बाद हर्षवर्द्धन के काल तक भारतीय नारी की स्थिति जहा वैदिक धर्म का ह्रास होने के कारण गौण होती गइ वहा बौद्ध और जैन धर्म के प्रसार के साथ उसके गिरते हुए स्थान को अवलब भी मिला। यह तो ध्यान म रखा जाना चाहिए कि सवसाधारण समाज म कृषक और श्रमजीवी वर्ग की भारतीय नारी की स्थिति म उत्थान-पतन क कहने लायक दौर कभी आये ही नही। वहा तो वह लगभग अबाधित रूप से पुरुष की सहकारिणी बनी रही।

मध्य युग मे नारी की स्थिति

नदिता मिश्र

महाभारत काल के बाद नारी के अधिकारो और उसकी स्वतत्रता को सीमित करने का जो क्रम शुरू हुआ वह हर्षवर्द्धन के बाद भी कोई ग्यारह सौ वर्ष तक निरतर चलता रहा। इस लबी अवधि मे मुसलमानो के आक्रमण और उसके परिणामस्वरूप पहले उत्तर भारत मे और तदनतर दक्षिण भारत के अधिकाश भाग पर मुस्लिम आधिपत्य की स्थापना मुस्लिम सस्कृति के प्रसार और विशेषत पर्दे की प्रथा के प्रचलन से नारी की स्वतत्रता पर कुठाराघात हुआ। परतु इसी काल मे राजपूत और मराठा वीरागनाओ ने मुसलमानो के आक्रमणो का मुकाबला करके यह भी सिद्ध कर दिया कि भारतीय नारी देशप्रेम, आत्म बलिदान और वीरता मे पुरुष से कम नही है। राजवशो की नारियो ने अपनी शासन कुशलता का भी परिचय दिया। इसी युग के आरभ में वैदिक यज्ञो के स्थान पर पौराणिक धर्म के अभ्युदय और बाद मे भक्ति सप्रदायो के आविर्भाव और प्रचार के फलस्वरूप नारी को आध्यात्मिक बल मिला और विकास की एक नई दिशा भी मिली। यद्यपि शिक्षा के अभाव के कारण अधिकाश नारिया निरक्षर रह गइ, फिर भी कुछ घरानो मे शिक्षा का क्रम अविच्छिन्न रहा उनमे सस्कृत प्राकृत और प्रादेशिक भाषाओं की विदुषिया और कवयित्रियाँ भी हुइ।

धार्मिक क्षेत्र

सातवी शताब्दी म वेदा के अध्ययन और यना के अनुष्ठान की परिपाटी का ह्रास शुरु हो गया था। पुरुष भी वदिक साहित्य को छोड काव्य और धमशास्त्र के अध्ययन म रुचि लेने लग थे और यज्ञ तो विरले ही पुरुष करत थे। इसलिए वदिक धम के अनुसरण की दृष्टि से स्त्री और पुरुष की व्यावहारिक स्थिति म कोई विशेष अतर नही था। परन्तु चूकि नारी का उपनयन और यज्ञ आदि का अधिकार ही नही था, इसलिए सिद्धातरूप म वह पुरुष से हीन और शूद्रवत मानी जाती थी। आग चलकर जब धीरे धीरे पुराणा ने वदिक साहित्य का स्थान ले लिया और यज्ञा के स्थान पर पौराणिक व्रता का प्रचार हुआ, तो नारी को एक नया सहारा मिला। पौराणिक व्रता के अनुष्ठान के विषय म नारी पर कोई प्रतिबध नहा था। वास्तव म ये व्रत पुरुषा की अपेक्षा स्त्रिया ही अधिक रखती थी।

१००० ईसवी के लगभग जब सस्कृत भाषा पढने लिखने वाल लाग थोडे ही रह गय तो नयी प्रादेशिक भाषाआ म पुराणा का अनुवाद हुआ। इस प्रकार पौराणिक धम के प्रचार का क्रम अविच्छिन्न बना रहा। १५०० ईसवी क लगभग भारत भर के नगरो और गावो के मन्दिरा म पडिता के द्वारा प्रतिदिन प्रादेशिक भाषाआ म पुराणा की कथा चलती थी। श्रोताओ मे अधिकाश स्त्रिया ही हाती थी। वे धार्मिक व्रता के रहस्य और महत्त्व को पुरुषा की अपेक्षा अधिक समझती थी और वे ही उनका अनुष्ठान भी करती थी। अत मानना पडता है कि जिस नारी को स्मृतकारा न धम अधिकार से वचित कर दिया था, अन्त मे उसी न धार्मिक परम्परा को किसी न किसी रूप म चलात रहने का क्रम निभाया। इसी प्रकार १५०० ईसवी के लगभग जब भक्ति माग के प्रवतक मदान म आय और भक्ति धम का प्रचार हुआ ता उसके अनुयायियो म भी स्त्रिया पुरुषा स आगे रही। पौराणिक धम तथा भक्ति धम का अनुसरण करने से नारी का अवलब मिला, किन्तु एक अनिष्ट यह हुआ कि शिक्षा के अभाव और विवक-बुद्धि की कमी क कारण नारिया मे अधविश्वास पना और वे अनेक कपाल-कल्पित बाता म भी विश्वास करन लगा और उनसे कतव्याकतव्य का विवेक रखने म चूक हान लगी।

शिक्षा

उच्च शिक्षा हषवद्धन काल के बाद राजवशा, तथा कतिपय शिष्ट और धनाढय परिवारा म ही कन्याआ को दी जाती थी। बाद म ऐसी शिक्षा पाने वाली कन्याआ की सख्या भी धीर धीरे कम होने लगा। साधारण परिवारो की नारी के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था न रही। तेरहवी शताब्दी में मुस्लिम शासन स्थापित हाने के बाद पुराने ढग के शिष्ट परिवारो के स्थान पर एसे घरानो का आविर्भाव होने लगा जिनकी भारतीय विद्या और सस्कृति आदि मे उतनी रुचि नही थी। अत इस काल मे उत्तर भारत म शिक्षा का प्रचार कुछेक ब्राह्मण परिवारा और राजपूत घराना की नारिया तक ही सीमित रह गया। दक्षिण भारत म जहा मुसलमाना का आधिपत्य देर से स्थापित हुआ नारिया का और विशेषत राजवशो की नारियो को साहित्य, राजनीति और युद्धविद्या की शिक्षा दी जाती रही। यही कारण है

कि लगभग दसवीं शताब्दी तक संस्कृत और प्राकृत में काव्य रचना करने वाली और बाद में नई प्रादेशिक भाषाओं में ग्रंथ लिखने वाली नारियाँ दक्षिण में विशेषतः मिलती हैं। संस्कृत कवयित्रियों में शील भट्टारिका विजयांका (विज्जा अथवा विज्जका) प्रभुदेवी, सुभद्रा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रादेशिक भाषाओं की कवयित्रियों में, कारैक्काल अम्मै, हेमवनकट्टे गिरियम्भरा, और अक्क महादेवी कन्नड में मौल्ला और वेंगमाम्बा तेलुगु में महदम्बा और मुक्ताबाई मराठी में ललद्यद कश्मीरी में और मीराबाई व्रज में राजस्थानी एवं गुजराती अपनी काव्य रचना के कारण प्रसिद्ध हैं। इनकी तथा कुछ अन्य कवयित्रियों की तनिक विस्तृत चर्चा इस लेख में आगे चलकर की जायगी।

विवाह और गृहस्थ जीवन

इस युग में कन्याओं का विवाह प्रायः ८-९ वर्ष की आयु में हो जाता था और बाद में तो ४-५ वर्ष की अबोध बालिकाओं का भी विवाह होने लगा। परन्तु कश्मीरी पंडितों और केरल के नम्बूदिरि ब्राह्मणों में रजोदर्शन से पूर्व कन्या के विवाह की प्रथा नहीं थी। कई भागों में दहेज प्रथा विकट रूप धारण करती जा रही थी। आम परिवारों में कन्या का विवाह माता पिता के लिए एक कठिन समस्या मानी जाने लगी। स्वयंवर की प्रथा कुछ एक राजपूत घरानों तक सीमित रह गई थी। बहु विवाह की प्रथा भी विद्यमान थी। विधवा विवाह की प्रथा सवर्णों में नहीं थी परन्तु विधुरों के विवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं था। ४०-४५ वर्ष के विधुरों का विवाह १०-१२ वर्ष की कन्याओं से हो जाता था। निरक्षर और अपरिपक्व-बुद्धि पत्नी की स्थिति पति की तुलना में अत्यन्त हीन थी। ससुराल में वह सास के अनुचित दबाव में रहती थी और पर्दे के कारण उसे उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए घर से बाहर जाने की स्वतंत्रता नहीं थी। उस काल में इस दृष्टि से उच्चवर्ग और मध्यवर्ग की स्त्रियों की दशा शोचनीय हो गई। किसान और मजदूर परिवारों में स्त्री की स्थिति पहले जैसी थी वैसी ही बनी रही।

धर्म परिवर्तन

७०० ईसवी के बाद से ही मुसलमान आक्रमणकारी भारत में आने लगे थे। वे प्रायः हिन्दुओं को मुसलमान बना लेते थे। जबरदस्ती मुसलमान बनाई गई स्त्रियों की दशा अत्यंत शोचनीय हो जाती थी। आरंभ में तो ऐसी स्त्रियों को प्रायश्चित्त और शुद्धि की विधि से फिर हिन्दू बनाकर अपने परिवारों में स्वीकार कर लिया जाता था परन्तु १००० ईसवी के लगभग यह उदार दृष्टिकोण त्याग दिया गया और एक बार अपहृत की गई नारी को फिर हिन्दू समाज में स्थान मिलना असंभव हो गया। उसे अपहरणकर्ता के परिवार में ही दुःखमय जीवन बिताना पड़ता था।

पर्दे की प्रथा

तेरहवीं शताब्दी में जब मुसलमानों ने पैर जमाने शुरू किये तो उनकी संस्कृति के प्रभाव में उत्तर भारत के कुलीन हिन्दू परिवारों में भी पर्दे की प्रथा आरंभ हो गई और वह धीरे

और जोर पकड़ती गई। परन्तु दक्षिण भारत म कुछेक राजघराना को छोड, कहीं पर्दे का रिवाज नहीं हुआ। पर्दे की प्रथा से मुक्त राजवश की नारियां उत्सवा के अवसर पर जन समुदाया के सम्मुख भी नत्य-सगीत कला का प्रदशन करन म सकोच नहीं करती थीं। उत्तर भारत मे तो पर्दे का रिवाज इतना कडा हो गया कि ससुर अपनी पुत्रवधू को आसानी स नहा पहचान पाता था, उसे उसका मुख देखन का प्राय अवसर ही नहीं आता था।

विधवा विवाह

आलोच्य युग म उत्तर भारत के कुलीन घराना म सती प्रथा का प्रचलन रहा। दक्षिण म इस प्रथा का प्राय अभाव था। धम के सूत्रधारा न अभी तक विधवा विवाह की अनुमति नही दी थी। फिर भी सतहवी अठारहवी शताब्दी म महाराष्ट्र की ब्राह्मणेतर जातियो म तथा पजाब और यमुना घाटी के जाटा म विधवा विवाह होन लगा था। अठारहवी शताब्दी के मध्य म बगाल म ढाका के राजा, राजवल्लभ ने विधवा विवाह प्रथा का सूत्रपात करने का प्रयत्न किया परतु उन्ह सफलता नही मिली।

सपत्ति विषयक अधिकार

आलोच्य युग म नारी के सपत्ति विषयक अधिकार पहले की अपेक्षा विस्तृत कर दिये गये। यद्यपि भाइयो के रहते कन्या का पितृ-सपत्ति पर अधिकार पहले की भाति ही अमान्य रहा फिर भी अधिकाश स्मृतिकारा ने यह व्यवस्था दी कि भाइया का बहना के विवाह के लिए पितृ सपत्ति म से पर्याप्त राशि अलग रख देनी चाहिए और यह राशि भाइया के अश के एक चौथाई भाग स कम नहीं हानी चाहिए।

स्त्री धन की परिभाषा का विस्तार किया गया। आरभ म हिन्दू नारी के स्त्री धन के अतगत वही सपत्ति मानी जाती थी जो उसे विवाह के अवसर पर दी जाती थी। ११०० ईसवी के लगभग विज्ञानेश्वर आदि टीकाकारा न कहा कि नारी का किसी प्रकार स भी मिली सपत्ति स्त्री धन के अतगत मानी जानी चाहिए।

जहा तक विधवा के उत्तराधिकार का सबध है बृहस्पति प्रजापति और कात्यायन आदि सुधारवादी स्मृतिकार इस बात के पक्ष म थे कि विधवा को पति की सपूर्ण सपत्ति मिलनी चाहिए। उनका कहना था कि पति और पत्नी सपत्ति के सयुक्त स्वामी होत हैं अत दोना म से एक के रहते अर्थात् विधवा के जीवनकाल म, उनकी सपत्ति किसी दूसरे का नहीं मिलनी चाहिए। बगाल के बारहवी शताब्दी के जीमूतवाहन न भी ऐसा ही मत व्यक्त किया। इन स्मृतिकारा और विधिज्ञा के प्रबल समथन के बावजूद बारहवी शताब्दी तक विधवा का दिवगत पति की सपत्ति पर सपूर्ण अधिकार स्वीकार नही किया गया था। परिणामत सतानहीन पुरुष की सपत्ति विधवा का मिलन की बजाय राजा की हो जाती थी।

१२०० के लगभग विधवा का सपत्ति विषयक अधिकार प्राय समस्त देश म स्वीकार कर लिया गया। बगाल म दायभाग-कानून के अनुसार सयुक्त परिवार की विधवाओ को मृत पति की सपत्ति का अश मिल सकता था परन्तु मिताक्षरा कानून के अधीन ऐसे पुरुष की ही

विधवा को संपत्ति मिल सकती थी, जो स्वयं या उसके पति संयुक्त परिवार से अलग हो गया हो।

कवयित्रियां और विदुषियां

इसमें संदेह नहीं कि भारत में कवयित्रियों की परंपरा लगभग अविच्छिन्न रूप में प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। यद्यपि बहुतों के काव्य ग्रंथ और नाम तक लुप्त हो गए हैं, फिर भी अनेकों के पद्य संस्कृत और प्राकृत के सुभाषित संग्रहों में आज भी उपलब्ध हैं और अन्य कवियों की रचनाओं से कइयों के केवल नाम ही ज्ञात होते हैं।

हाल की 'सतसई'[1] में जिन काव्य रचयिताओं के पद्य संकलित हैं उनमें ये आठ कवयित्रियां भी हैं—अनुलक्ष्मी, असुलद्धी, पाहई (प्रहना), बद्धवाही, माधवी, रेवा, रोहा और शशिप्रभा। यह ज्ञात नहीं है कि ये कवयित्रियां किस प्रदेश में या किस काल में हुईं। लगता है सतसई में हाल के बाद भी अनेक पद्यों का प्रक्षेप होता रहा है। इसलिए भाषा को देखते हुए मोटे तौर पर इतना ही कहा जा सकता है कि उपर्युक्त कवयित्रियां प्रथम और आठवीं शताब्दी के बीच हुई होंगी।

नवीं दसवीं शताब्दी में कवि राजशेखर[2] ने पूर्वकालीन कवयित्रियों की रचनाओं से प्रभावित होकर कहा था : 'पुरुषों की भांति स्त्रियां भी काव्य रचना में कुशल होती हैं।' ऐसी अनेक राजकुमारियां, मंत्रियों की पुत्रियां तथा गणिकाएं हुई हैं जो शास्त्र-पारंगता एवं काव्य प्रतिभा से सम्पन्न थीं। स्वयं राजशेखर की पत्नी 'अवंतिसुन्दरी' अलंकार शास्त्र की पंडिता तथा कवयित्री थीं। राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' में तीन स्थानों पर अपनी पत्नी के मत का उद्धृत किया है। उत्तरकाल में हेमचन्द्र (१०८८-११७२) ने 'देशीनाममाला' में अवंतिसुन्दरी के तीन प्राकृत पद्य उद्धृत किये हैं। जल्हण (लगभग १२५०) की 'सूक्तिमुक्तावली' में राजशेखर के नाम से दिये गये पद्यों में निम्न कवयित्रियों का उल्लेख है—शीलभट्टारिका, कर्णाटक देश की विजयांका (—विज्जा, विज्जका), लाट देश की प्रभुदेवी, सुभद्रा और विकटनितम्बा।

शीलभट्टारिका पांचाली रीति के प्रयोग में कवि बाण के समान कुशल मानी गई है। विजयांका वैदर्भी रीति के प्रयोग में कालिदास के तुल्य एवं साक्षात सरस्वती मानी गई है।[3]

लाटदेश की प्रभुदेवी के विषय में कहा गया है कि वह तो चली गई है किंतु उसकी

१ कई विद्वानों के मतानुसार हाल का समय प्रथम ईसवी शताब्दी है और कइयों के अनुसार २०० और ४५० ईसवी के बीच है।

२ राजशेखर का समय लगभग ८६० से ९४० के बीच है।

३ सरस्वतीव कर्णाटी विजयांका जयत्यसौ।
या वैदर्भगिरां वासः कालिदासादनन्तरम्॥
विजयांका ने एक पद्य में अपनी तुलना सरस्वती से करते हुए कहा—
नीलोत्पलदलश्यामां विज्जकां मामजानता।
वृथैव दण्डिनाप्युक्तं सर्व शुक्ला सरस्वती॥
नीलकमल के समान श्याम वर्ण वाली मुझ विजयांका को न जानने के कारण कवि दण्डी ने यह अयथार्थ उक्ति की कि सरस्वती शुक्लवर्णा होती है।

सूक्तिया अभी तक रसिका का अनुरजन करती है[1] का यमीमासा म सुभद्रा के का य चातुय की प्रशसा की गई है।[2]

शारगधरपद्धति क एक पद्य म शीला (शीलभट्टारिका) और विज्जा (विजयाका) के अतिरिक्त दो अ य कवयित्रिया—मारुला और मौरिका—का उल्लेख है।[3] इनके पद्य सूक्ति मुक्तावली (लगभग १२५०) मे सकलित हैं। सीता नामक एक कवयित्री का एक पद्य राजशेखर के काव्यमीमासा मे और सरस्वती नाम की एक कवयित्री के दो पद्य बगाल के श्रीधरदास के सदुक्तिकर्णामृत मे उद्ध त हैं। भावदेवी के पद्य कवीन्द्रवचनसमुच्चय म तथा सरस्वती के पद्य भोज के सरस्वती-कण्ठाभरण म मिलत हैं।

जसाकि हम ऊपर कह आये है कर्णाट देश की सस्कृत कवयित्री विजयाका क बारे म हम राजशेखर के एक पद्य स इतना ही जान पाये है कि वह वदर्भी रीति म कालिदास के तुल्य थी पर तु बारहवी शताब्दी म हुइ क नडभाषा की प्रथम महान कवयित्री 'का ती' के विषय मे हम पर्याप्त जानकारी उपल ध है। इसी प्रकार अ य प्रादेशिक भाषाआ की विदुषिया के बारे म हमारी जानकारी पर्याप्त तथा विश्वसनीय है। का ती का समय लगभग ११०० ईसवी है। वह हायसल वशी महाराज बल्लाल प्रथम क दरबार म थी। का ती-हम्पन समस्येगलु के अनुसार तत्कालीन प्रसिद्ध कवि नागचद्र क साथ उसकी कई बार का य प्रतियागिता हुई और वाद-विवाद भी। उत्तरकालीन कवि बाहुबली (लगभग १५६०) न का ती को अभिनव वाग्देवी कहकर स्मरण किया है। इसी प्रदश की अक्क महादेवी (लगभग ११३० इसवी) उच्चकोटि की सत कवयित्री थी जिसन लगभग एक हजार सूक्तियां लिखन के अतिरिक्त योगाग त्रिविधि, सृष्टीय-वचन और अक्कनगल पीठि नामक तीन धार्मिक ग्रथा की रचना की।

चौहवा शताब्दी म विजयनगर सम्राट कुमार कम्पण द्वितीय की रानी गगादेवी अपन समय की सस्कृत कवयित्रिया की शिरोमणि थी। उसने वदर्भी रीति म मधुरा विजयम नामक ऐतिहासिक महाका य की रचना की जिसम मदुरा के सुल्तान के विरुद्ध कम्पण की युद्ध यात्रा और विजय का वणन है।

पद्रहवी शताब्दी म प्रसिद्ध तेलुगु कवयित्री मोल्ला ने सरल और प्रवाहमयी भाषा म 'रामायणम' की रचना करक तेलुगु साहित्य की श्रीवद्धि की।

इसी शतान्दी म विजयनगर क महाराज अच्युतराय की राजमहिषी तिरमलाम्बा हुई जा व्याकरण दशन और अलकार शास्त्र की पडिता रामायण महाभारत मे पारगता तथा बहुभाषाविद थी। उसन सस्कृत मे वरदाम्बिका-परिणय चम्पू की रचना की जिसम अच्युतराय के वरदाम्बिका के साथ विवाह का वणन है।

१ सूक्तीना स्मरकेलीना कलाना च विलासभू ।
प्रभुदवी कवी लाटी गतापि हृदि तिष्ठति ॥

२ पाथस्य मनसि स्थान लेभ खल सुभद्रया ।
कवीना च वचोवृत्ति चातुर्येण सुभद्रया ॥

३ शीला विज्जा मारुला मोरिकाद्या
काव्य कतु सति विज्ञा स्त्रियोऽपि ।

सत्रहवीं शताब्दी में मसूर में एक शूद्र स्त्री होतम्मा ने कन्नड में हरिभक्ति धर्म नामक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखा जिसमें सती नारी के कर्तव्यों की चर्चा की गई है। होतम्मा राजमहल में दासी थी और महारानी के कहने से उसे वेद वेदान्त के पारंगत पंडित अलसिंगराचार्य से शिक्षा दिलाई गई थी। आचार्य ने उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे सरस साहित्य वर देवता की उपाधि दी थी।

इसी शताब्दी में तंजौर के नायक वंश की कई रानियों ने संस्कृत और तेलुगु में काव्य और नाटक लिखे। इनमें रघुनायक की पटरानी मधुरवाणी द्वारा संस्कृत में रचित रामायण और दूसरी रानी रामभद्राम्बा द्वारा रचित रघुनाथाभ्युदयम नामक महाकाव्य उल्लेखनीय है। मधुरवाणी व्याकरण और छन्दशास्त्र की पंडिता आशु-कवयित्री तथा संगीत विशारदा थी। रामभद्राम्बा आठ भाषाओं में पद्य रचना कर सकती थी। ऐसी योग्यता रखने वाली कई अन्य नारियाँ भी तंजौर के राज दरबार में थीं। विजयराघव नायक की रानी रंगजम्मा ने रामायण सारम् और भारतसारम के अतिरिक्त तेलुगु में मन्नारुदासविलासम और उषापरिणयम नामक दो काव्य लिखे।

अठारहवीं शताब्दी में मसूर के दोड्ड कृष्णराज की रानी चेलुवाम्बा ने वरनन्दी-कल्याण नामक मधुर काव्य की रचना की और तुला कावेरी माहात्म्य पर टीका लिखी। हेलवनकट्टे गिरियम्मा ने कन्नड में अनेक ग्रंथ लिखे। उसके भक्तिगीत आज भी लोकप्रिय हैं। इन गीतों की विशेषता यह है कि उनमें रागों का भी निर्देश किया गया है। तरिगोण्ड वेंगमाम्बा ने तेलुगु में भागवत राजयोगसार और वेंकटाचलमाहात्म्य नामक तीन काव्य लिखे। तेलुगु में राधिका सान्त्वना नामक एक उत्कृष्ट शृंगार काव्य मुद्दुपलनि नाम की एक गणिका की रचना है जो तंजौर के भोंसले नरेशों के दरबार में थी। वह नृत्य संगीत विशारदा होने के अतिरिक्त संस्कृत और तेलुगु की पंडिता थी। उसने जयदेव की प्रसिद्ध अष्टपदी का तेलुगु में अनुवाद भी किया।

पहली बार तेरहवीं शताब्दी में एक मराठी कवयित्री की रचनाएँ मिलती हैं। उसका नाम महदम्बा है और उसे 'महदाइसा' भी कहते हैं। इस कृष्ण भक्त कवयित्री ने श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के विवाह के विषय पर गीत लिखे जिन्हें धवले कहा जाता है। उसने रुक्मिणी विवाह पर एक और कविता भी लिखी जिसके पद्य वर्णमाला के क्रम से आरम्भ होते हैं। इसी शताब्दी में संत कवयित्री मुक्ताबाई भी हुई। यह गीता की प्रसिद्ध ज्ञानेश्वरी टीका के टीकाकार वेदान्त के पंडित दार्शनिक एवं संत महाराज ज्ञानदेव की बहन थी।

मुक्ताबाई अभंग भक्ति गीतों की रचना के लिए विख्यात है। संत कवि नामदेव की बहन जनाबाई द्वारा रचित लगभग तीन सौ अभंग उपलब्ध हैं। ये अत्यंत लोकप्रिय हैं और आज भी कीर्तन के अवसर पर गाये जाते हैं। भगवान् विट्ठल की अनन्य भक्ता कान्होपात्रा भी जो एक गणिका की पुत्री थी अभंग रचना के लिए प्रसिद्ध है। वह पन्द्रहवीं शताब्दी में हुई। उत्तरकालीन मराठी की संत कवयित्रियों में वेणाबाई (१७वीं शताब्दी) और अक्काबाई (१७-१८वीं शताब्दी) के नाम उल्लेखनीय हैं।

आलोच्य काल में उत्तरभारत में भी कुछ एक कवयित्रियाँ हुई यद्यपि उनकी संख्या इस युग की दक्षिण भारत की कवयित्रियों की अपेक्षा बहुत कम है। कश्मीर में चौदहवीं शताब्दी के

अतिम भाग म लल्ला (अथवा लल्लेश्वरी) नाम की सत कवयित्री हुई जिसे रामानद कबीर, नानक आदि सतो और समाज सुधारको की अग्रदूती कहा जा सकता है। भगवद्भक्ति तथा उदात्त दार्शनिक विचारो को अभिव्यक्त करने वाले उसके गीत भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैं। लल्ला की तुलना मुक्ताबाइ, जनाबाई और मीराबाई स की जा सकती है। या मीराबाई अनुलनीय हैं। उन्होने व्रज, राजस्थानी और गुजराती भाषाओ मे भक्ति रस से ओत प्रात जो गीत लिखे उन्ह 'यावच्चद्र दिवाकरो' कहत हुए किसी का कोई हिचक नही हो सकती।

कृष्ण की अनय भक्त, गिरधर गोपाल की दासी, स्वनामधय मीराबाई का जन्म १६वी शताब्दी के आरभ म राजस्थान म हुआ। उन्होने केवल काव्य ही नही लिखा, यह भी सिद्ध किया कि विवेकपूण कामो का करने वाला व्यक्ति सहज भावेन समाज से विद्रोह करके पूजित बना रहता है।

१८वी शताब्दी म चरणदासी सप्रदाय की अनुयायी सहजाबाई और दयाबाई नाम की दो विदुषी नारियाँ हुइ जिन्होने भक्ति के अतिरिक्त साहित्य सवा भी की। सहजाबाई न सहज प्रकाश और सालह तत्त्वनिणय तथा दयाबाई ने दया-बोध और विनय मालिका नाम के ग्रथ लिखे।

वीरागनाए और शासिकाए

जसाकि हम ऊपर कह आय है, आलोच्य युग म यद्यपि आम लाग कन्याओ को शिक्षा नही देत थ, फिर भी राजघरानो म राजकुमारियो को राजनीति, शासन प्रबध और युद्ध विद्या की शिक्षा प्राय दी जाती रही जिसस कि व आवश्यकता पडने पर राजकाज चला सकें और सन्य सगठन करके आक्रमणकारियो का मुकाबला कर सक। देश के कई भागो म विशेषत कश्मीर, उडीसा और तलुगु भाषी प्रदश म नारी राज्य की उत्तराधिकारिणी हाती थी। अत इन प्रदशो म रानियो न स्वतत्र रूप स कुशलतापूवक शासन किया। कई अन्य प्रदेशो म रानियो ने अपने पतियो के साथ सयुक्त रूप स भी शासन किया। उत्तरभारत और पश्चिम भारत म रण-कुशल राजपूत स्त्रियो ने अनेक अवसरो पर मुसलमान आक्रमणकारियो का मुकाबला करने म अद्भुत वीरता का परिचय दिया।

इस युग म विदशी आक्रमणकारियो का मुकाबला करन वाली वीरागनाओ म सवप्रथम दाहिर की पत्नी रानी बाई ह। ७१२ इसवी म जब मुहम्मद बिन कासिम के नतृत्व म अरबो न सिध पर हमला किया तो वहा का ब्राह्मण राजा दाहिर जो पहले कई बार उन्ह परास्त कर चुका था, शत्रु का मुकाबला करत-करत वीरगति का प्राप्त हुआ। तदनतर रानीबाई ने, जो कि किले के भीतर थी १५००० सनिको की सहायता स मुकाबला जारी रखा। अन्त म विजय की आशा न रहन पर रानीबाई न किले म विद्यमान नारियो को सबोधित करत हुए कहा 'अब यहा से बच भागन का कोई रास्ता नही रह गया ह। हम शत्रु के हाथ म कदापि पडना नही चाहगी। अच्छा यही हागा कि हम आग म जलकर प्राण दे दें और अपने दिवगत पतियो स जा मिलें।" तदनतर रानी तथा अन्य नारियो ने अपने सम्मान की रक्षा करन के लिए अपनको जौहर' कर लिया।

इसके बाद बारहवीं शताब्दी में गुजरात के इतिहास में विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध नारी वीरता का एक अद्भुत उदाहरण मिलता है। अणहिल्लवाड पाटन (उत्तर गुजरात) के राजकुमार मूलराज के शासनकाल में उसकी माता नाइकी देवी शासन कर रही थी। तभी लगभग ११७७ में मुसलमानों ने, अनुमानतः मुहम्मद गोरी के नेतृत्व में, वहाँ आक्रमण किया। कहते हैं कि हाथी पर सवार रानी नाइकी देवी राजकुमार को गोद में लिए ही शत्रुओं से तब तक लडती रही जब तक वे भाग न खडे हुए।

इसी शताब्दी में राजपूत नारियों की वीरता का पहला उत्कृष्ट उदाहरण पृथ्वीराज चौहान की पत्नी संयोगिता ने उपस्थित किया। ११९२ में मुहम्मद गोरी के दूसरे आक्रमण के समय संयोगिता ने पति को स्वयं शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करके युद्ध में भेजते हुए कहा, संसार में जन्म लेकर मरते तो सभी हैं परन्तु जो वीरों की भाँति प्राण देते हैं वे अमर हो जाते हैं। पृथ्वीराज बडी वीरता से लडकर आखिर मारा गया और संयोगिता पति की चिता पर बैठकर सती हो गई।

मेवाड के राणा रत्नसिंह की रूपवती एवं वीर रानी 'पद्मिनी' तथा अन्य वीर नारियों ने १३०३ ईसवी में अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौडगढ की रक्षा करने में पुरुषों का पूरी तरह हाथ बटाया था। राजपूत आठ महीने तक डटकर लडे परन्तु शत्रु सेना की संख्या के आगे वे हार गये। तब पद्मिनी तथा कई हजार वीर नारियों और वीर बालाओं ने जौहर की आग में जलकर प्राण त्याग दिये।

महोबा के चंदेला सरदार की पुत्री एवं गोंडवाना (मध्यप्रदेश) की रानी दुर्गावती भी वीरता और देशभक्ति की प्रतिमा थी। अपने अल्पवयस्क पुत्र वीर नारायण की ओर से उसने कुशलता से शासन ही नहीं किया प्रत्युत मालवा के बाज बहादुर तथा अकबर की सेनाओं को भी कई बार परास्त किया। १५६४ में जब अकबर के आदेश से आसफखान ने गोंडवाना पर चढाई की तो रानी दुर्गावती ने तीर-कमान और भाले से सुसज्जित होकर हाथी पर बैठकर सेना का संचालन किया और मुगलों को दो जगह परास्त किया। अगले दिन उसके पुत्र वीर नारायण के घायल हो जाने पर उसकी अधिकांश सेना भाग खडी हुई। परंतु रानी वीरतापूर्वक लडती रही और अंत में तीर लगने से घायल हो गई। उसके एक राजभक्त सैनिक अधिकारी ने उसे युद्धभूमि से उठा ले जाने का प्रस्ताव किया, परन्तु रानी ने कहा "ईश्वर न करे कि मैं शत्रु के हाथ पड जाऊँ। यह कटार लो और मेरा अंत कर दो।" सैनिक अधिकारी को हिचकिचाते देख दुर्गावती ने वीर राजपूत नारी की भाँति स्वयं कटार भोंककर प्राणांत कर लिया।

सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मेवाड के राजकुल की दासी पन्ना धाई ने निःस्वार्थ राजभक्ति और आत्मबलिदान का जो उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, उसका महत्व वीरांगनाओं के बलिदान से कम नहीं है। राणा सांगा के देहांत के बाद उसके बेटे रत्नसिंह और विक्रमजीत क्रमशः गद्दी पर बैठे। उन्हीं के वंशज बनवीर ने विक्रमजीत की हत्या कर दी और फिर वह महाराणा के सबसे छोटे बेटे उदयसिंह को जो अभी शिशु ही था हत्या करने को तैयार हो गया। उदयसिंह की धाय पन्ना को यह खबर एक नाई ने दी तो उसने उदयसिंह को पत्तों से ढकी फलों की टोकरी में डालकर उसी नाई के हाथ महल से बाहर भिजवा दिया और

पालने म उसकी जगह अपन बेटे को लिटा दिया। रक्त पिपासु वनवीर ने आकर जब पन्ना से पूछा कि उदय कहा है तो उसने पालन की ओर इशारा किया। वनवीर ने बच्चे की हत्या कर दी। तब पना केवल आसुओ स बेटे की अन्त्येष्टि करके, उदय को लेने के लिए तुरन्त वहा पहुची जहा नाई उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। तदनतर वह उदय की रक्षण-व्यवस्था करन के लिए जगह-जगह घूमती फिरी। आखिर कुभलमर के जन व्यापारी आसामाह न बच्चे को अपने सरक्षण म लना स्वीकार कर लिया। बडा होकर उदयसिंह मेवाड की गद्दी पर बठा।

शासिकाए

भारतीय नारी ने विदेशिया के आक्रमणा का सामना करन म ही वीरता और आत्म-बलिदान का परिचय नही दिया प्रत्युत शासन-काय म पतिया का हाथ बटाने, बेटा की अल्प-वयस्कता म शासन सभालने तथा उत्तराधिकार म मिले राज्य पर शासन करन मे भी योग्यता का प्रमाण दिया।

शासन करने वाली रानियो के पहले और अधिकतर उदाहरण हम दक्षिण भारत म मिलत हैं। आठवी शताब्दी म प्रतापी राष्ट्रकूट नरश महाराज ध्रुव की रानी शीला महादेवी उनके विशाल राज्य की सयुक्त शासिका थी। उसे पति की अनुमति लिय बिना ही बडे-बडे अग्रहार दान देने का अधिकार था। एक दानपत्र म उसे परमश्वरी और परम भट्टारिका बताया गया है जिससे अनुमान हाता है कि शासन के विषय मे उसका अधिकार पति के समान ही था।

ग्यारहवी शताब्दी में चालुक्य वशी राजकुमारी अक्कादेवी न चालुक्य-साम्राज्य के अतगत कई प्रदेशा पर अपन विवाह से पूव स्वतत्र रूप से तथा विवाह के बाद अपने पति कदब-वशी मयूर वमा के साथ सयुक्त रूप से शासन किया—कुल मिलाकर लगभग पचास वष तक। अक्कादेवी कुशल शासिका, विद्रोहिया का दमन करने वाली तथा युद्ध म चडी के समान थी।

तरहवी शताब्दी मे तलुगु भाषी प्रदेश म काकतीय वशी महाराज गणपतिदेव की पुत्री उनके देहात के बाद गद्दी पर बठी और उसने तीस वष स अधिक काल तक कुशलतापूवक शासन किया। उसन राज्य के भीतर सामता के विद्रोह का ही अत नही किया प्रत्युत यादव वशी महाराज देवगिरि के आक्रमण का मुकाबला करके उसे परास्त भी किया। रुद्राम्बा ने लोक-कल्याण के लिए कुए बावडिया और तालाब खुदवाये उद्योग-व्यापार की उन्नति के लिए अनक सुविधाए दा और धार्मिक सस्थाना को भूमि तथा ब्राह्मणा को अग्रहार दान दिय।

रुद्राम्बा की छोटी बहन गणपाम्बा न कोट-वशी शासन बेत से विवाह किया जिसकी राजधानी कृष्णा के किनारे धरणीकोठ नामक नगर था। बेत जब युद्ध म मारा गया तो रुद्राम्बा गद्दी पर बठी और उसन बडी योग्यता से चालीस वष तक शासन किया। उसके राज्य मे प्रजा समृद्ध और सुखी थी। गणपाम्बा न पिता और पति की स्मृति म दो शिव मदिरो का निर्माण करवाया।

सत्रहवी शताब्दी के उत्तराद्ध म कन्नड भाषी प्रदेश केलदि के शासक नायक-वशी

सोमेश्वर की पत्नी चेतम्माजि उसके साथ सयुक्त रूप म शासन करती थी। १६७७ म सोमेश्वर की मृत्यु के उपरात चेनम्माजि ने स्वतत्र रूप से २५ वर्ष तक बड़ी कुशलता म शासन किया। उसने शिवाजी के पुत्र राजाराम को आश्रय देने का भी साहस किया जबकि औरगजेब की सेना उसका पीछा कर रही थी। राजाराम को पकडने के लिए जब मुगल सेना केलदि राज्य म घुसी तो चेनम्माजि ने उसे बुरी तरह पछाड दिया। उसकी वीरता से औरगजेब इतना प्रभावित हुआ कि उसन उसे बहुमूल्य उपहार भेजे। एक और अवसर पर चेनम्माजि ने मसूर की सेना को परास्त किया और सेनापति दलवाय तिम्मप्पा के पुत्र को बन्दी बना लिया।

ऐसी ही वीर शासिका मलयालम् भाषी इलाके आत्तिगल की रानी उमयम्मा थी। १६७५ के लगभग त्रावणकोर राज्य के कुछ विद्रोही सामतो ने मिलकर वहा के शासक महाराज आदित्य वर्मा की हत्या कर दी और उनकी निकट सबधी और उत्तराधिकारिणी उमयम्मा के छ म से पाँच पुत्रो को भी धोखे से मरवा दिया। उमयम्मा अपने एक पुत्र को लेकर पुत्तनकोट्ट से भागकर नडुमगल चली गई। उसके जाने के बाद राज्य म अशाति और उथल पुथल मच गई। इस दुरवस्था को देखकर एक मुगल सरदार ने त्रावणकोर पर चढाई कर दी और सामतो को भगाकर दक्षिण त्रावणकोर के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया। तब उमयम्मा को अपना कर्तव्य सूझा और उसने कोटायम के करल वर्मा से सहायता लेकर मुगल सरदार से युद्ध किया और उसे मौत के घाट उतार दिया। उसकी इस सफलता को देखकर विद्रोही सामतो ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उमयम्मा ने १६७८ म लेकर १६८४ तक बडी कुशलता से शासन किया।

मराठा सम्राट शिवाजी की माता जीजाबाई (१५९४ १६७४) किसी बड़े प्रदेश की शासिका न होने पर भी स्वातत्र्य प्रेम चारित्रिक दृढता न्यायप्रियता वीरता और साहस के कारण इतिहास मे विशेष स्थान रखती है। अपने बेटे म ऐसे ही गुण भरने और उसे महाराष्ट्र को स्वतत्र कराने की प्रेरणा देने का श्रेय जीजाबाई को है न कि उसके पति शाहजी को। जीजाबाई ने जिस कि पति की पूना जागीर का प्रबंध करने का अनुभव था बालक जीवाजी को युद्ध-कला सिखाने के अतिरिक्त शासन विद्या की भी शिक्षा दी जिससे शिवाजी को आगे चलकर मराठा साम्राज्य स्थापित करने म बडी सहायता मिली।

शिवाजी की पुत्रवधू ताराबाई (१६७५ १७६१) अपने पति राजाराम से भी अधिक साहसी और महत्त्वाकाक्षिणी थी। पति की मृत्यु के बाद उसने दुर्गों के निरीक्षण और सेना के सगठन तथा सचालन का काम पूरी तरह अपने हाथ म ले लिया और मुगल सेनाओ को आगे बढने से ही नही रोका प्रत्युत उन्हे दक्कन म टिकने ही नही दिया। यह ताराबाई की ही प्रशासन कुशलता और सामरिक प्रतिभा का परिणाम था कि राजाराम की मृत्यु के बाद सात वर्ष तक औरगजेब दक्कन म अपना आधिपत्य नही स्थापित कर सका।

इदौर की अहल्याबाई (१७३५ ९५) मराठा इतिहास मे ताराबाई के समान ही महत्त्व रखती है। १७५४ म उसके पति की मृत्यु हो जाने पर उसके ससुर मल्हार राव ने उसे सती होने से रोक दिया और उसे राजस्व एकत्र करने सेना का प्रबंध करने तथा शासकीय पत्र व्यवहार करने के काम म लगा दिया। इन कामो का अनुभव आगे चलकर उसके बहुत काम आया। मल्हार राव की मृत्यु के बाद अहल्याबाई के पुत्र मालेराव को सूबेदार बनाया गया

परतु शासन व्यवस्था वस्तुत अहल्याबाई के हाथ म रही। उसके शासन-काल के आरभ म जबकि उसका सेनापति उत्तर भारत म गया हुआ था, चन्द्रावत राजपूतो ने विद्रोह कर दिया। अहल्याबाई न सेनापति के लौटने की प्रतीक्षा किए बिना स्वय सेना को सगठित करके उसका नेतृत्व करते हुए विद्रोहियो का दमन किया। इसी प्रकार उसने सतपुडा के विद्रोही भीलो के सरदार को पकडकर उसे मृत्यु दड दिया। तदनतर उसके राज्य म शाति रही। तत्कालीन पेशवा के चचा राघोबा ने मालेराव की मृत्यु के बाद जब इदौर पर आक्रमण करने का विचार किया तो अहल्याबाई ने स्त्रियो की सेना सगठित करके राघोबा को सदेश भेजा— "लगता है तुम युद्ध भूमि म मेरा सामना करने की सोच रहे हो। मैं तैयार हू। एक नारी को हराने से तुम्हारा गौरव नही बढेगा। पर सोच लो कि यदि तुम हार गये, तो क्या परिणाम होगा ?" यह सदेश पाकर राघोबा ने आक्रमण का विचार छोड दिया।

कश्मीर के इतिहास म रानी दिद्दा (दसवी शताब्दी) ने नीति कुशलता का जो परिचय दिया वह कम आश्चर्यजनक नही है। अपने पति महाराज क्षेमगुप्त के राजत्वकाल म समस्त शासन-व्यवस्था वस्तुत दिद्दा के हाथ म ही थी। ९५८ म पति का स्वर्गवास होने पर अपने पुत्र अभिमन्यु के राज्यारोहण के बाद भी दिद्दा ही शासन करती रही। उसने साम, दाम, दड आदि उपायो का कुशल प्रयोग करते हुए फल्गुण आदि मत्रियो को पदच्युत किया पाटल आदि विद्रोही सामतो का दमन किया। निर्वासित सेनापति यशोधर के समर्थको को धन देकर अपनी ओर कर लिया और सत्ता हथियाने का प्रयत्न करने वालो को प्राणदड दिया। इसम सदेह नही कि दिद्दा के चरित्र म कई त्रुटिया भी थी जिनमे सबसे भयकर थी उसकी राज्य-लोलुपता। उसने अपने पोतो को अभिचार क्रिया के प्रयोग द्वारा मरवा दिया और तत्पश्चात ३० वर्ष तक और शासन किया।

अणहिल्लवाड पाटण (उत्तर गुजरात) के चालुक्यवशी महाराज सिद्धराज जयसिंह (१०९४ ११४३) की माता मयणल्ला (मीनलदेवी) न्यायप्रिय शासिका होने के अतिरिक्त अत्यत साधु स्वभाव और सात्त्विक वृत्ति की स्त्री थी। कहते है कि एक बार सिद्धराज के सभापतित्व म श्वेताम्बर और दिगम्बर सप्रदायो के नेताओ म इस विषय पर वाद विवाद हुआ कि क्या स्त्री मोक्ष की अधिकारिणी है। श्वेताम्बर सप्रदाय के नेता ने कहा कि जिन स्त्रियो मे सत्त्व गुण प्रधान होता है वे मोक्ष प्राप्त कर सकती है। इसके समर्थन म उसने सीता का उदाहरण दिया। जब उसे समकालीन नारियो का उदाहरण देने के लिए कहा गया तो उसने औरो के अतिरिक्त राजमाता मयणल्ला का नाम लिया। मयणल्ला कुशल शासिका भी थी। उसने सिद्धराज की अल्पवयस्कता म मत्रियो की सहायता से शासन-कार्य किया था और उसे न्यायप्रिय शासक तथा वीर विजेता बनने की शिक्षा भी दी।

शासिकाओ का प्रसग समाप्त करने से पहले पूर्वी और उत्तरपूर्वी भारत की कुछ रानियो का उल्लेख करना आवश्यक है। उडीसा म, जहा नारिया राज्य की उत्तराधिकारी होती थी ९वी और ११वी शताब्दी के बीच भौमकर वश की छ रानियो ने शासन किया। महाराज ललितहार की पत्नी राना त्रिभुवन महादेवी प्रथम ने अपने पुत्र महाराज शुभाकर-तृतीय का स्वर्गवास होने के बाद अपने पोते की अल्पवयस्कता म कुछ वर्षों तक शासन किया। महाराज

शुभाकर चतुर्थ की रानी पृथ्वी महादेवी अपने देवर महाराज शिवाकर-तृतीय के निधन के बाद गद्दी पर बैठी और तब से उसका नाम रानी त्रिभुवन महादेवी द्वितीय हो गया। महाराज शुभाकर पंचम की मृत्यु के पश्चात् उनकी विधवा रानी गौरी महादेवी के बाद उसकी पुत्री दण्डी महादेवी गद्दी पर बैठी। दण्डी महादेवी के बाद उसकी विमाता बकुल महादेवी ने राज्य किया और उसके जेठ शांतिकर-तृतीय की पत्नी धर्म महादेवी ने। इन रानियों के शासन इतिहास के विषय में अभी विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में असम के कछार प्रदेश के राजा ताम्रध्वज की रानी चंद्रप्रभा ने अपने पति के राजत्व-काल में और पति के मरणोपरांत अपने पुत्र शूरदर्प की अल्पवयस्कता के दौरान शासन-कार्य बड़ी कुशलता से निभाया। वह विद्वानों और कवियों की आश्रयदाता थी। उसने अपने राज्य में संस्कृत के प्रचार को प्रोत्साहन दिया। उसके कहने से भुवनेश्वर वाचस्पति ने नारदीय पुराण के आधार पर बंगला में नारदी रसामृत नामक काव्य ग्रंथ की रचना की।

ब्रिटिश काल मे नारी की स्थिति

सत्येन्द्र त्रिपाठी

अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध म ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ भारत के इतिहास ने नया मोड लिया। अग्रेजी शिक्षा के प्रचार क परिणामस्वरूप देश म पाश्चात्य का प्रवेश होने लगा और उसके प्रभाव स देश की अनेक प्रथाए टूटन लगी। उन्नीसवी शताब्दी म राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द आदि सुधारवादी नेताओ के प्रयत्नो से अनेक अन्धविश्वासो और रूढिया तथा सामाजिक कुरीतियो का अत हुआ जिससे नारी की स्थिति म काफी परिवतन आये। तदनतर बीसवी शताब्दी म गाधीजी जसे राष्ट्रीय नेताओ की प्रेरणा स नारी ने राज-नीतिक क्षेत्र म पाव रखा और देश को स्वतत्र कराने म पुरुष के साथ कधे स कधा मिलाकर सघष किया।

शिक्षा

ब्रिटिश शासन की स्थापना स देश का अनक दृष्टियो स अहित हुआ किन्तु इसमे सदेह नही कि पाश्चात्य विज्ञान दशन और साहित्य के सपक से कुछ अधविश्वासो और रूढियो का उन्मूलन करने म सहायता मिली और नारी की सदियो से कुठित सी स्थिति म सुधार होना शुरू हुआ।

अंग्रेजों के आने से पहले भारत में नारी शिक्षा की कोई सरकारी अथवा सार्वजनिक व्यवस्था नहीं थी। इने गिने कुलीन परिवारों की लड़कियाँ घर पर ही थोड़ी-बहुत शिक्षा ग्रहण कर पाती थीं। मुस्लिम काल में देश में पुराने ढंग की जो संस्कृत पाठशालाएँ और अरबी फारसी के मकतब मदरसे थे उनमें लड़कों को ही शिक्षा दी जाती थी। लड़कियों को पाठशालाओं में भेजने का किसी का ख्याल तक नहीं आता था। अधिकांश हिन्दू परिवार और विशेषतः स्त्रियाँ ऐसा मानती थीं कि पढ़ी लिखी लड़की दीर्घकाल तक सौभाग्यवती नहीं रह पाती, वह आगे पीछे विधवा हो जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से बंगाल में राजा राममोहन राय तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने और पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में स्वामी दयानन्द ने इन अंधविश्वासों का प्रत्याख्यान किया और नारी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। ये समाज सुधारक अच्छी तरह समझते थे कि शिक्षा के बिना नारी की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। स्वामी दयानन्द वैदिक शिक्षा पद्धति के पक्षपाती थे। उन्होंने वेदों के प्रमाण देकर इस अंधविश्वास का खंडन किया कि स्त्री और शूद्र विद्या के अधिकारी नहीं है और कहा कि सब मनुष्यों को वेदादि शास्त्र पढ़ने-सुनने का समान अधिकार है।[1] स्वामी दयानन्द के आने से पहले राजा राममोहन राय ने भी हिन्दू शास्त्रों का बंगला अनुवाद छपाकर प्रमाणित किया कि नारी शिक्षा शास्त्रसम्मत है और प्राचीन काल में भारत की नारियाँ विदुषी हुआ करती थीं। राजासाहब अंग्रेजी शिक्षा के भी समर्थक थे। सरकार अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार करने में हिचकिचा रही थी, किन्तु राजा राममोहन राय और उनसे प्रेरणा पाकर जब अन्य अनेक प्रतिष्ठित समाज सेवियों तथा विद्वानों ने उसकी आवश्यकता पर बल दिया तो अंग्रेजों ने शासन-व्यवस्था को दृढ़ करने के साथ-साथ शिक्षा की ओर ध्यान दिया। उन्होंने पहले-पहल तो संस्कृत अरबी आदि प्राच्य विद्याओं के अध्ययन को ही प्रोत्साहन दिया। १७८१ में कलकत्ता मद्रास और १७९२ में बनारस में संस्कृत कालेज की स्थापना हुई थी। परन्तु १८२४ में जब कलकत्ता में संस्कृत कालेज खोला जाने लगा तो राजा राममोहन राय ने गवर्नर जनरल को लिखा कि संस्कृत कालेज में तो विद्यार्थियों को वही ज्ञान मिल सकेगा जो दो हजार वर्ष पहले उपलब्ध था। आज तो विज्ञान गणित और अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा देने की आवश्यकता है। राजा साहब इससे पहले बंगाल और मद्रास में ईसाई मिशनरियों द्वारा खोले गए अंग्रेजी स्कूलों की प्रगति देख चुके थे और उन्होंने स्वयं भी कई अंग्रेजी स्कूल खुलवाये थे। उन्हीं के प्रभाव में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने नारी शिक्षा के प्रचार के लिए वर्षों तक काम किया। फलस्वरूप उनके प्रयत्न से कलकत्ता में पहला महिला कालेज—बेथ्यून कालेज—स्थापित हुआ। श्री बेथ्यून जिनके नाम पर कालेज खोला गया गवर्नर जनरल की कार्यकारी

१ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥ (यजुर्वेद २६.२)
इसकी व्याख्या करते हुए स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश (तृतीय समुल्लास) में लिखा —
ईश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अपने भृत्य वा स्त्रियादि और अतिशूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है।

परिषद् के सम्य और शिक्षा परिषद क (१८४८ १८५१) प्रधान थे। उन्होंने लडकियो के लिए कई स्कूल भी खुलवाये।

इस प्रकार भारतीय समाज सुधारको और अंग्रेज अधिकारियो के प्रयत्नो म नारी शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा का विरोध कम हुआ और नये ढग की प्राइमरी हाईस्कूल और कालेज की पढाई लडकियो के लिए उपयोगी समझी जाने लगी।[1] १८५७ म कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना हुई और २० वर्षों के भीतर बम्बई, मद्रास और इलाहाबाद म भी विश्वविद्यालय स्थापित हो गये। १८८२ म पहली बार लडकिया ग्रेजुएट हुई। तब से नारी शिक्षा की उत्तरोत्तर प्रगति होने लगी। बीसवी शताब्दी म पटना लखनऊ, अलीगढ बनारस, आगरा, दिल्ली नागपुर ढाका, हैदराबाद मसूर आदि अनेक स्थानो म विश्वविद्यालयो की स्थापना हुई। सभी म लडकियो की शिक्षा की व्यवस्था की गई। सरकार के अतिरिक्त ब्राह्मसमाज आर्यसमाज सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी तथा अन्य लोकसेवक सगठनो के प्रयत्नो से लडकियो के लिए स्कूल और कालेज खोले गये। १९१६ म प्रो० धोडो केशव कर्वे ने पूना म महिलाओ के लिए इण्डियन विमन्स यूनीवर्सिटी की स्थापना की।[2] १९१७ म बम्बई म एस०एन०डी०टी० विमन्स यूनीवर्सिटी स्थापित हुई।

शिक्षाप्राप्त महिलाओ को अध्यापन, डाक्टरी आदि कई क्षेत्रो म जीविका भी मिलने लगी। इससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति म परिवर्तन हुआ। अनेक विदुषियो ने भारतीय भाषाओ और कुछ एक ने अंग्रेजी म भी साहित्य सृजन किया। इन विदुषियो की चर्चा इसी लेख म आगे चलकर की जायगी।

सती प्रथा का अन्त

सती प्रथा जिसके विषय म ऋग्वेद म निषेध किया गया था और जो रामायण महाभारत काल म विधवा की इच्छा पर निर्भर थी, किन्तु स्मृतियो ने जिसे विधवा का कर्तव्य एव स्वर्ग प्राप्ति का साधन बना दिया था, कई घरानो म अनिवार्य नियम ही बन गई थी। आलोच्य काल म कई प्रदेशो म विशेषत बगाल म, इस प्रथा ने भयकर रूप धारण कर लिया था। विधवा से सती होने के लिए अनुरोध ही नही किया जाता था प्रत्युत उसे बाध्य किया जाता था। कई बार उसे अफीम आदि मादक द्रव्यो से जोश दिलाकर सती होने के लिए तयार किया जाता और कई बार उसे पकडकर पति की चिता पर बिठा दिया जाता था और प्रबंध कर लिया जाता था कि वह भाग न पाये। सोलहवी शताब्दी म अकबर ने इस क्रूर प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया था परन्तु उसे सफलता नही मिली। ब्रिटिश शासन के आरभ से ही अंग्रेज अधिकारियो और मिशनरियो ने इस प्रथा का अंत करने के लिए सरकार से अनुरोध किया। ब्रिटेन म भी इसके

[1] चूंकि १८३५ म थामस बबिंग्टन मकाले की नीति के अनुसार भारत म अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य सरकारी दफ्तरो के लिए क्लर्क तयार करना घोषित किया गया था इसलिए कई क्षेत्रो म लडकियों के लिए ऐसी शिक्षा को बहुत समय तक अनुपयोगी समझा जाता रहा।

[2] १९३६ म स्थानान्तरित होकर बम्बई म

विरुद्ध आन्दोलन हुआ। परन्तु ब्रिटिश सरकार धार्मिक मामलों में दखल देकर भारतीय जनता में असंतोष फैलाने से डरती थी। १७८९ में जब शाहाबाद के कलक्टर ने लार्ड कार्नवालिस को लिखा कि आपकी स्पष्ट अनुमति के बिना मैं अपने इलाके में सती की अमानुषिक घटनाएं नहीं होने दे सकता तो इस बात का समर्थन करते हुए उसे यही उत्तर मिला कि वह इस विषय में केवल समझाने बुझाने और अनुरोध करने के उपाय से काम ले और प्रथा को रोकने के लिए सरकारी दबाव न डाले। आगे चलकर सरकार ने १८१२, १८१५ और १८१७ में इस विषय में नियम बनाकर ऐसी विधवाओं के सती होने पर प्रतिबंध लगा दिया जिनकी उम्र बहुत छोटी हो, जो गर्भवती हों या जिनके बच्चे बहुत छोटे हों। किसी विधवा को सती होने के लिए बाध्य करना या उसे मादक द्रव्य खिलाकर सती होने के लिए राजी करना भी अपराध ठहरा दिया गया। इस प्रकार के नियमों या प्रतिबंधों का कोई बड़ा परिणाम नहीं हुआ। कहते हैं कि कलकत्ता के आस-पास के जिलों में ही प्रतिवर्ष लगभग पांच सौ विधवाएं सती होती थीं। जनता में रूढ़ अंधविश्वास के कारण सरकार सती प्रथा को सख्ती से दबाने में हिचकिचाती थी। इस अंधविश्वास को दूर करने के लिए राजा राममोहन राय ने कई पुस्तिकाएं लिखीं और प्रचार किया। आखिर उनके अनथक प्रयत्नों के फलस्वरूप जनता में धीरे धीरे जागृति आने लगी। जब रूढ़िवादी हिन्दुओं ने १८१७ के सती निषेध नियमों के विरुद्ध अपील की और उनके रद्द किये जाने की मांग की तो राजा साहब और उनके सहकारियों ने उक्त अपील के विरुद्ध दरखास्त दायर की। उन्होंने कहा कि शास्त्रों के अनुसार यह प्रथा तो एक प्रकार की हत्या है। राजा राधाकान्तदेव तथा अन्य कट्टरपंथियों ने राजा राममोहन राय का कड़ा विरोध किया। इसी समय (१८२८) लार्ड विलियम बेंटिंक गवर्नर जनरल नियुक्त होकर भारत आये। उन्होंने सती प्रथा के विषय में पक्ष विपक्ष पर विस्तृत विचार करके उसका अंत करने का निश्चय किया। उन्होंने ४ दिसम्बर १८२९ में सती प्रथा को कानून विरुद्ध एवं दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। इसके अधीन सती होने के लिए अनुरोध अथवा बाध्य करने वाले लोग ही नहीं प्रत्युत विधवा के स्वेच्छा से सती होने की घटना से भी किसी प्रकार का संबंध रखने वाले व्यक्ति अपराधी ठहराये गये।

कानून के पास होने पर कट्टरपंथियों ने फिर उसका विरोध किया। बहुत से लोगों के हस्ताक्षर के साथ एक विरोध-पत्र गवर्नर जनरल को भेजा गया और लंदन में ब्रिटिश सरकार के पास अपील भी भेजी गई। दूसरी ओर राजा राममोहन राय ने कलकत्ता के ३०० लोगों के हस्ताक्षर कराकर गवर्नर जनरल को बधाई का तार भेजा। राजा साहब इंग्लैंड भी गये ताकि प्रिवी कौंसिल रूढ़िवादियों की अपील मानकर नये कानून को कहीं रद्द न कर दे। उनके प्रयत्न के फलस्वरूप प्रिवी कौंसिल ने सती निषेध कानून को वैध घोषित कर दिया। इस प्रकार इस अमानुषिक प्रथा का अंत हुआ। बाद में लार्ड हार्डिंग प्रथम ने देसी रियासतों में सती प्रथा का अंत करने का प्रयत्न किया और उन्हें सफलता मिली।

विधवा विवाह

सती प्रथा का निषेध कर दिये जाने के बाद समाज-सुधारकों का ध्यान विधवा विवाह

की आवश्यकता की ओर गया। इसके सबध मे आदोलन करने वालो मे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम सर्वोपरि है। उनके अनथक प्रयत्न के फलस्वरूप सरकार ने १८५६ मे विधवा-पुनर्विवाह कानून पास किया जिसके अधीन विधवाओ का विवाह विधि-सम्मत घोषित किया गया और ऐसे विवाह से होने वाली सतान को औरस सतान माना गया। १८६१ म न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे ने विधवा विवाह सभा स्थापित की। ब्राह्मसमाज के नेता केशवचन्द्रसेन के प्रयत्न के फलस्वरूप सरकार न १८७२ म एक कानून पास किया जिसके द्वारा कन्याओ के छोटी उम्र म विवाह का निषेध किया गया तथा विधवा विवाह को वैध घोषित किया गया। फिर भी हिन्दू समाज म विधवा विवाह के विषय म बहुत अरुचि और विरोध की भावना थी जिसे दूर करने के लिए १८६७ स १८८७ के बीच सस्थापित प्रार्थना समाज, आर्यसमाज और ब्राह्मसमाज आदि अनेक सगठनो न विधवा विवाह के पक्ष में प्रचार किया।

बाल विवाह

हम देख चुके हैं कि कन्याओ के विवाह की आयु जो कि वैदिक काल में १६ १७ वर्ष थी घटते घटते मुस्लिम काल में ७ ८ वर्ष रह गई थी। कइयो का विवाह इससे भी छोटी उम्र में हो जाता था। पति की अकाल-मृत्यु मे बचपन में ही विधवा होने पर जो सती नही होती थी, उन्हे निरतर वैधव्य-जीवन ही बिताना पडता था। इसलिए बाल विवाह का अत, समाज-सुधार का आवश्यक अग माना गया। इस दिशा म पहले-पहल ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने आदोलन किया। तदनतर बडौदा इदौर, मसूर आदि देसी रियासतो ने, जिनके शासक सुशिक्षित और प्रगतिवादी थे, अपने-अपने इलाको में बाल विवाह बद करने के लिए कानून बनाये। बडौदा के गायकवाड न १९०१ म बाल विवाह निरोध कानून पास किया जिसके अधीन १२ वर्ष म छोटी कन्या और १६ वर्ष स छोटे लडके का विवाह अवैध ठहरा दिया गया। अन्य प्रदेशो में सुधारवादी सगठनो ने विवाह की उम्र बढाने के पक्ष म आदोलन और प्रचार जारी रखा। १९२८ म शिमला म 'सम्मति वय समिति' की गठन हुई। उसकी रिपोर्ट प्रकाशित होने पर राय साहब हरविलास सारदा न केन्द्रीय विधान सभा म बाल विवाह निषध विधेयक पेश किया। १९३० म यह हो गया कि इसके अधीन विवाह के लिए कन्याओ की न्यूनतम आयु १४ वर्ष और लडका की न्यूनतम आयु १८ वर्ष स्थिर की गई। बाद मे एक सशोधन के द्वारा कन्याओ की न्यूनतम आयु बढाकर १५ वर्ष कर दी गई। रूढिवादी लोगो ने कानून का विरोध किया। उल्लघन तो इसका विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो म आज तक होता है किन्तु शिक्षा के प्रसार और औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप स्थिति मे पर्याप्त सुधार हुआ है और अब शहरी क्षेत्रो म तो अधिकाश लडकियो का विवाह १७ वर्ष की आयु म या उसके बाद होता है।

स्वतत्रता-सग्राम

१८५७ के प्रथम स्वातत्र्य सग्राम म अनेक महान पुरुष-वीरो के बीच रानी झासी का सेनापतित्व अपनी अलग महत्ता रखता है। इसी प्रकार वर्तमान शताब्दी म गाधीजी के नेतृत्व म १९१९, १९२१ और १९३० ३२ के असहयोग और सविनय अवज्ञा आदोलनो तथा १९४२

के दश वार्षी स्वातत्य सघर्ष म नारियो का सहयोग और बलिदान भी यह बताता है कि शारीरिक कष्टो को झल सकन म नारिया पुरुषा स कम नही ठहरता।

१८५७ के स्वातत्य युद्ध क सनानिया म सबस अधिक वीर, साहसी, और रण कुशला झासी की स्वाभिमानिनी रानी लक्ष्मीबाइ (१८३८ १८५८) ही थी। १८५३ म उनक पति सूबेदार गगाधर राव की अकाल मृत्यु हो जान पर जब गवनर जनरल लाड डलहौजी न झासी राज्य को ब्रिटिश भारत म मिलाया, रानी क हृदय म तभी से बदला लेन की आग सुलगन लगी थी। इसके लिए उपयुक्त अवसर १८५७ म उपस्थित हुआ। उस वष १० मई को मरठ म और अगले दिन दिल्ली म भारतीय सनिको न विद्रोह कर दिया जो धीर धीर अधिकाश उत्तर भारत म फल गया। ५ जून को झासी म विद्रोह हुआ और ६ जून को यासी के राज्य म रानी लक्ष्मीबाई के अधिपतित्व की घोषणा कर दी गई। तब स लकर ४ अप्रल १८५८ तक अथात् कोई ग्यारह महीने तक रानी न झासी क किल स ब्रिटिश सना का डटकर मुकाबला किया। आखिर स्थिति को प्रतिकूल देखकर रानी न ब्रिटिश सनिको के घर को तोडकर निकल जान का प्रयत्न किया। निकलकर उसने बुदलखड म जाकर फिर ब्रिटिश सना का मुकाबला किया। बुदेलखड म उसने एक और वीर सनानी तातिया टोप से सपक स्थापित किया और दोनो ने मिलकर आसपास के इलाको स ब्राह्मण राजपूत और रहेले तथा अय मुसलमान वीरो को एकत्र कर सना का सगठन किया। रानी स्वय फौजी वर्दी तथा पगडी पहनकर सेना का सचालन करती, लडाई म भाग लेती और अपने सनिको की भाति खुशी खुशी सब कष्ट झलती। वह अपने सनिको और सवको के प्रति असीम उदारता दिखाती और प्रतिकूल स्थिति म भी कभी न घबराती।

२३ मई १८५८ को जब अग्रजो न बुदेलखड म कालपी पर अधिकार कर लिया तो लक्ष्मीबाई और तातिया टोप वहा स भागकर जगल म छुपकर अवसर की प्रतीक्षा करन लग। स्थानीय अग्रेज जनरल ने समझा कि विद्रोह शात हो गया है और उसने अपने अधीन सना क विघटन का आदश द दिया। इसक कुछ दिन बाद ४ जून १८५८ को रानी लक्ष्मीबाई और तातिया टोप न अचानक ग्वालियर के किले पर अधिकार करके अग्रेजो को अचभे म डाल दिया। ग्वालियर का राजा जो कि अग्रजो का साथ दे रहा था जान बचाकर भाग गया और उसक सिपाही रानी लक्ष्मीबाई स आ मिले। रानी का पीछा करती हुई अग्रेज सेना १६ जून को ग्वालियर के किले के निकट मोरार नामक स्थान पर पहुची जहा उसन बहुत से सनिक सामान पर अधिकार कर लिया। अगल दिन अग्रेजो न फूलबाग के निकट मोरार ग्वालियर सडक को पार कर रानी की घुडसवार सना पर हल्ला बोल दिया। उस समय रानी के पास कोई चार सौ सनिक थे और वह स्वय उनका सचालन कर रही थी। उनके पास तलवारें और भरमार वदूकें थी। अग्रेजो के पास की वदूकें बहुत अच्छी थी और उनकी सना भी बडी थी। अग्रेज सना गोलिया दागती हुई रानी के पास तक जा पहुची। रानी क अधिकाश साथी भाग खडे हुए और कोई पन्द्रह सनिक ही उसक पास रह गये। अग्रेज घुडसवारो से घिरी रानी ने तब भी बच निकलन की कोशिश की पर नाल क किनार पहुचकर उसका घोडा रुक गया। उसके गोली लगी और फिर एक अग्रज सनिक ने उस पर तलवार से वार भी किया। घायल हो

जान पर भी रानी ने घोडा बढाना चाहा पर अगले ही क्षण वह धरती पर गिर पडी। इस प्रकार वीरता की अप्रतिम प्रतिभा और स्वतन्त्रता की अद्वितीय सेनानी रानी लक्ष्मीबाई ने बहुसख्यक शत्रुओ के बीच लडते लडते २५ वर्ष की आयु मे वीरगति पाई।

जलियाबाग का हत्याकाड

१८५७ मे स्वातन्त्र्य युद्ध के समय देश मे व्यापक राष्ट्रीय चेतना का अभाव था और इसलिए वह युद्ध उत्तर भारत के कुछ भागो मे ही हुआ और १८५९ के अप्रैल महीने मे समाप्त हो गया। जसाकि हम पहले कह आये हैं १८५७ मे कलकत्ता मे भारत का पहला विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था और तदनन्तर अन्य स्थानो मे भी विश्वविद्यालय खुले। अग्रेजी शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप देश मे प्रजातन्त्र की भावना जाग्रत होने लगी। १८८५ मे काग्रेस की स्थापना के बाद धीरे धीरे राष्ट्रीय जागति हुई और पुरुषो की भाति स्त्रिया भी, विशेषत शिक्षित स्त्रिया, राजनीतिक क्षेत्र मे उतर आई और स्वराज्य सघर्ष मे भाग लेने लगी।

भारत सरकार ने प्रथम महायुद्ध (१९१४ १८) के दौरान स्वतन्त्रता प्रेमियो को दमन करने के लिए जो कडे नियम बनाये थे वह उन्हे युद्ध समाप्ति के बाद भी जारी रखना चाहती थी। इस उद्देश्य से जब १९१९ मे रौलट एक्ट पास किया गया तो गाधीजी के सुझाव पर देश भर मे सरकार विरोधी प्रदर्शन और सभाए हुई। इन प्रदर्शनो और सभाओ मे स्त्रियो ने बडे जोश के साथ भाग लिया। सरकार ने प्रदर्शनो को दबाने के लिए सख्ती से काम लिया। अमृतसर के जलियावाला बाग मे ऐसी एक सभा को भग करने के लिए जनरल डायर के आदेश से फौज ने निहत्थे लोगो पर गोलिया चलाई। उस घिरे हुए स्थान से भागने तक का कोई रास्ता नही था इसलिए सकडो स्त्री पुरुष घटनास्थल पर ही मारे गये और एक हजार से अधिक घायल हो गये। तदनतर पजाब मे मार्शल-ला की घोषणा कर दी गई और कानून भग करने वालो को कठोर कारावास ही नही दिया गया अनेक लोग फासी पर चढाये गये और कुछ तो बबरता पूर्ण ढग से गोली से उडा दिये गये।

असहयोग आदोलन

१९२१ के अहिंसात्मक असहयोग आदोलन मे तो स्त्रियो ने आगे बढकर भाग लिया। आदोलन करने का फसला गाधीजी के अनुरोध पर काग्रेस द्वारा सितम्बर १९२० मे पास किये गये एक प्रस्ताव मे घोषित किया गया था। नवम्बर १९२० मे प्रान्तो मे जो चुनाव हुए उनमे दो तिहाई मतदाताओ ने भाग नही लिया। १९२१ मे हजारो विद्यार्थियो ने स्कूल और कालेज छोड दिये। वकीलो ने अदालत जाना छोड दिया। जगह जगह विदेशी कपडे की होली जलाई गई। कोई तीस हजार आदोलनकारियो को जिनमे कई हजार महिलाए भी थी जेल मे बन्द कर दिया गया। इस आन्दोलन मे स्त्रिया भी खुशी-खुशी जेल गइ। और अनेक माताओ ने अपने पुत्रो पत्नियो ने अपने पतियो और बहनो ने भाइयो को केसरिया तिलक लगाकर जेल जाने के लिए उत्साहित किया।

दांडी यात्रा और सविनय अवज्ञा आन्दोलन

इसके बाद १९३० में सत्याग्रह का अपूर्व दृश्य देखने में आया। अक्टूबर १९२९ में ब्रिटिश सरकार ने भारत की संवैधानिक प्रगति के विषय में साईमन कमीशन की सिफारिशों पर विचार करने के लिए लन्दन में गोलमेज सम्मेलन करने का सुझाव दिया था। कांग्रेस ने दिसम्बर १९२९ को लाहौर के अधिवेशन में इस सुझाव को अस्वीकार करते हुए पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग की और सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का निश्चय किया। इस निश्चय के अनुसार कांग्रेस ने २६ जनवरी १९३० को स्वतन्त्रता दिवस मनाया और गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रतीक के रूप में नमक कानून भंग करने लिए ६ अप्रैल को दांडी यात्रा शुरू की। यात्रा में नारियों को शामिल करने को लेकर उनके मन में कुछ संकोच था और उन्होंने अपने साथ जो सत्याग्रही लिये थे उनमें स्त्रियां बहुत थोड़ी थीं। परन्तु सत्याग्रह के पहले दिन ही जनता में अदम्य उत्साह के कारण आन्दोलन ने इतना विशाल सार्वजनिक रूप धारण कर लिया कि उसमें किसीको शामिल करने या न करने का सवाल ही नहीं रहा। गांवों की हजारों अनपढ़ और अशिक्षित नारियों ने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर स्वाभिमानी स्वातन्त्र्य सैनिकों की भांति कदम बढ़ाते हुए समुद्रतट पर मानो आक्रमण ही कर दिया। कानून के विरुद्ध नमक बनाने के उद्देश्य से समुद्र का पानी भरने के लिए घड़े-कलसे आदि तरह-तरह के बरतन उठाकर जाती हुई नारी सेना के अभियान का यह दृश्य देखते ही बनता था। इससे प्रभावित होकर गांधीजी ने कहा था कि भारत की नारियों ने जो काम कर दिखाया है वह देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

नमक-कानून को भंग करने में शहरों की नारियों ने भी अपूर्व योग दिया। धनी और निर्धन, युवा और वृद्ध सैकड़ों-हजारों स्त्रियां परम्परागत प्रथा की शृंखलाओं को तोड़कर घरों से बाहर आ गईं। निषिद्ध नमक की पुड़िया लेकर वे गली-कूचों के मोड़ पर खड़ी हो जातीं और आवाज लगातीं— "हमने नमक का कानून तोड़ दिया है। हम स्वतन्त्र हो गये हैं। यह लो स्वतन्त्रता का नमक। कौन लेगा स्वतन्त्रता का नमक?" हर राहगीर उनके हाथ पर पैसा धरता और नमक की छोटी-सी पुड़िया लेकर गर्व से फूला न समाता।

बाद में वे अमीरों के हाथ नमक बेचने के लिए कपास मंडी, अनाज मंडी, कपड़ा बाजार और सराफा बाजार में भी गईं। वहां 'स्वतन्त्र-नमक की पुड़िया' बहुत बड़ी कीमत में नीलाम होने लगी। कहते हैं कि एक बार एक पुड़िया दस हजार रुपये में नीलाम हुई। इस प्रकार अमीर और गरीब, स्त्री और पुरुष, जवान और बूढ़े स्वातन्त्र्य-संग्राम में कूद पड़े और इतनी बड़ी संख्या में गिरफ्तार होने के लिए आगे आये कि उन्हें रहने के लिए जेलों में जगह ही न रही।

धरसाना में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व श्रीमती सरोजिनी नायडू ने किया। जब वे स्वयं सेविकाओं के दल को लेकर नमक डिपो की ओर बढ़ रही थीं तो पुलिस ने उन्हें रोक दिया और स्वयंसेविकाओं पर जिनमें कई सुकुमार युवतियां भी थीं भयंकर लाठी प्रहार किया। फिर भी स्वयंसेविकाओं ने कई बार आगे बढ़ने की कोशिश की। पुलिस ने उन्हें चारों तरफ से घेरकर मुख्य भूमि से अलग बंद कर दिया। गर्मी के दिन थे और आसमान से अंगार बरस रहे

थे। प्यास के मारे जब स्वयसेविकाओ का गला सूखने लगा तो पुलिस न उन्हें तरसाने के लिए पानी की गाडिया मगाइ और उन्ह सेविकाओ के समूह के बीच से निकालकर ले गये पर किसी को एक बूद पानी नही दिया। स्वयसेविकाओ ने गरमी और प्यास की तेजी को वीरतापूवक सहन किया। उन्होने देखा कि उनकी नेता श्रीमती सरोजिनी नायडू जो कि सुख विलास की सामग्री से सुसज्जित भवनो म रहन की अभ्यस्त, भावुक कवयित्री थी तपती रेती पर भी बडे आराम और शान स बठी हैं और अपनी मधुर मुस्कान एव हसी मजाक से उनका मनो विनोद कर रही है। इससे स्वयसेविकाओ को नतिक बल मिला और उनका हौसला बढा। पुलिस जो उनके धय की परीक्षा करना चाहती थी स्वय धय खो बैठी और रातभर समुद्र-तट पर पहरा देने की अपक्षा पुलिस ने उन्ह गिरफ्तार करना ही सुविधाजनक माना। पर गिरफ्तारी से पुलिस का काम आसान नही हुआ क्योंकि अगले दिन और अधिक स्वयसेविकाए वहा पहुची और उससे अगले दिन और भी अधिक। इस प्रकार यह सत्याग्रह कई सप्ताहो तक चलता रहा।

दक्षिण भारत म नमक सत्याग्रह की नता थी श्रीरुक्मिणी लक्ष्मीपति। वह मद्रास म गिरफ्तार की जाने वाली पहली महिला थीं। स्त्रिया सूर्योदय स पूव घरो स निकल आती और गाती हुई गली कूचो स गुजरती दूसरो को जगाती और उन्ह सग्राम म सम्मिलित होने को प्रेरित करती। इस प्रकार स्त्रियो के नतृत्व म बडे बडे जलूस निकलत और जब उन्ह रोका जाता तो व धरना देकर बठ जाती। पुलिस उन्हे तितर बितर करने के लिए डडे चलाती। घुडसवारो को उन्ह कुचलने का आदेश दती और कई बार गोली भी चलाती। परन्तु नारिया टस स मस न होती। एक बार तीस हजार नारियो का जुलूस धरना देकर बठ गया और सारे दिन और सारी रात वही बठा रहा। लाचार होकर पुलिस को भी वहा सडक के किनारे बैठकर रातभर पहरा दना पडा। अगले दिन पौ फटते ही पुलिस दल हारकर वहा स चलता बना और विजयी जलूस शान से समुद्र तट की ओर बढा। उन दिनो एसी घटनाए विरल नही रही थी।

सत्याग्रह के दौरान रोजमर्रा की कायवाहियो के बारे म आदेश जारी करन के लिए जो सग्राम-परिषदें बनी कई नारिया उनकी 'डिक्टेटर' थी। इन डिक्टेटरो म अवन्तिकाबाई गोखल श्रीमती कामदार श्रीमती दुर्गाबाई, श्रीमती वेदान्तम कमलाम्मा, सत्यवती और कृष्णा-बाई पणजीकर क नाम विशेषरूप स उल्लेखनीय हैं।

जगल कानून की अवज्ञा

नमक-कानून भग करने क अतिरिक्त जगल कानून की अवज्ञा करन म भी गाव की स्त्रियो ने पुरुषो की तरह उत्साह दिखाया। अग्रेजो के आन स पहल गाव क आसपास के जगल गाव वालो की मिल्कियत होती थी और उन्ह इधन के लिए लकडिया बीनने का अधिकार होता था। अग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ये जगल सरकार की सुरक्षित सम्पदा बन गये और लोगो का लकडी बीनने का अधिकार छिन गया। इस आदोलन म पुरुष और स्त्रिया कुल्हाडिया लकर जगल म जात और लकडिया काटने म लग जात। इस प्रकार कानून भग

करने पर पुलिस लोगों को पीटती और गिरफ्तार कर लेती। जंगल सत्याग्रह में सजा पाने वालों में स्त्रियों की बहुत बड़ी संख्या होती थी।

विदेशी वस्त्र का बहिष्कार

दासता के प्रतीक स्वरूप विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करने के लिए नारियों ने अद्भुत काम किया। जयश्री रायजी, हंसा मेहता, पेरिन कप्तान, लीलावती मुंशी, मणिबेन पटेल आदि अनेक नारियों ने विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देने का नेतृत्व किया। वे दुकानदारों से कहतीं कि 'विदेशी कपड़े के एक-एक थान के मंगाये जाने से भारत की दासता का फन्दा अधिकाधिक पक्का होता चला जाता है। आप विदेशी वस्त्र के व्यापार को छोड़ खादी की बिक्री करें जिससे गरीब बुनकरों के परिवारों को भरपेट खाना मिले और देश का धन देश में ही रहे।

व्यापारियों के दिल पर असर न होता देखकर ये साहसी नारियां दुकानों के बाहर खड़ी होकर पिकेटिंग करतीं और हाथ जोड़कर ग्राहकों से कहतीं कि आप विदेशी कपड़ा न खरीदें। उनकी बातों का ग्राहकों पर असर हुआ और विदेशी कपड़े के व्यापार में मन्दी आने लगी।

भारत सरकार जो अपने आपको लंकाशायर और मैनचेस्टर की कपड़ा मिलों की संरक्षक समझती थी, घबरा उठी। अतः पिकेटिंग पर प्रतिबंध लगा दिया गया और पिकेटिंग करने वालों को गिरफ्तार किया जाने लगा। परंतु इससे आंदोलन में और तेजी आ गई और सैकड़ों हजारों नारियां पिकेटिंग करने के लिए मैदान में उतर आईं। १९३० के आंदोलन के पहले दस महीनों में १७००० नारियों को जेल की सजा मिली। बाद में जेल में स्थान न रहने पर नारियों को गिरफ्तार करके दूर जंगल में ले जाकर छोड़ दिया जाता। कई नगरों में नारियों पर रबर की नाली से पानी की मोटी धार छोड़ी जाती, कहीं कहीं उन पर पिसी हुई राई या काली मिर्च फेंकी जाती, और कभी कभी लाठी भी चलाई जाती। दुकानदार अपनी दुकानों के सामने औरतों पर ऐसा अत्याचार बरदाश्त न कर सके। उन्होंने इससे तो अपनी दुकानें ही बंद कर देना उचित समझा। तब सरकार भुंझला उठी। दुकानें बंद रखना अपराध घोषित कर दिया गया। अब सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करने पर दुकानदार भी पिकेटिंग करने वालों की तरह गिरफ्तार होने लगे। संघर्ष बढ़ता ही गया और अंत में विदेशी कपड़े का व्यापार ठप्प हो गया।

इसी प्रकार औरतों ने शराब की दुकानों पर भी पिकेटिंग किया जिससे शराब की बिक्री से होने वाले राजस्व में भारी कमी हो गई।

जेल की यातनाएं

स्त्रियों ने जेल की यातनाएं बड़े धैर्य से झेलीं। इनका अनुमान लगाने के लिए यह समझना जरूरी है कि साधारण मानवोचित सुविधाओं से रहित भारत के जेल उन दिनों भयंकर कष्टागार होते थे जिनके विषय में एक कवि ने कहा था

> आजाद रहके जिसने अपने दो दिन गुजारे
> उसको भला खबर क्या कि यह कैद क्या बला है ?'

गावों के जलखान तो और अधिक कष्टप्रद होते थे। वहां गिरफ्तार की गई स्त्रियों को तंग, अंधेरी, गंदी और सीलन से भरी कोठरियों में डाल दिया जाता। हवा और रोशनी की आने की ठीक व्यवस्था न होने के कारण वहां का वातावरण बदबू से भरा होता था छतों में चमगादड लटक रहे होते थे और दीवारों पर छिपकलियां और फर्श पर कीडे मकोडे दौड रहे होते थे। इन कालकोठरियों में कई औरतों को प्रसव वेदना भी सहनी पडती। ऐसी परिस्थितियों में भी डाक्टरी सहायता का कोई प्रबंध नहीं होता और कैदी औरतें ही जच्चा बच्चा की देख भाल करती। जेल की सब औरतें इन बच्चों में अपने बच्चों की तरह स्नेह करती और गर्व से उन्हें जेल-कुमार, संग्राम-नायक विजया आदि नामों से पुकारती।

१६३० के असहयोग आन्दोलन में जेल जाने वाली स्त्रियों में श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय, श्रीमती दुर्गाबाई, श्रीमती कमला नेहरू और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के नाम उल्लेखनीय है।

सरकारी आंकडों के अनुसार एक वर्ष में कम से कम समय में २६ अवसरों पर गोली चलाई गई, जिसमें १०३ व्यक्ति मारे गए ४२० घायल हुए। ६०,००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। परन्तु सरकार आदोलन को दबा न सकी। जब कांग्रेस ने १६३० (नवम्बर दिसम्बर) में होने वाले पहले गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार कर दिया तो सरकार कुछ नरम पडी। ५ मार्च, १६३१ को गांधी इरविन समझौता हुआ और कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आदोलन को स्थगित करने और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निश्चय किया। सितम्बर-नवम्बर, १६३१ में हुए इस सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि केवल गांधीजी थे। साम्प्रदायिक समस्या को सुलझा न सकने के कारण सम्मेलन असफल रहा।

शिखर सम्मेलन से गांधीजी के लौटने के बाद कांग्रेस ने पहली जनवरी, १६३२ को सविनय अवज्ञा और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का आदोलन शुरू किया। इसमें भी स्त्रियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और दमनकारी अध्यादेशों की खुल्लमखुल्ला अवज्ञा की। इस आदोलन में श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू और कस्तूरबा गांधी भी गिरफ्तार हुईं। कांग्रेस के अनुमानों के अनुसार मार्च, १६३३ तक १,२०,००० लोग पकडे गये। आदोलन मई, १६३४ तक चलता रहा।

इसके बाद कांग्रेस ने पार्लियामेंट द्वारा १६३५ में पास किये गये विधान सबंधी कानून के अधीन आम चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया। १६३७ के चुनावों के परिणामस्वरूप कांग्रेस ने ११ में से ७ प्रांतों में मंत्रिमंडल बनाये। परन्तु १६३६ में द्वितीय महायुद्ध शुरू होने पर जब सरकार ने राष्ट्रीय नेताओं की इच्छा के विरुद्ध भारत को युद्ध में खींचा तो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया। सरकार ने युद्ध में भारत का सहयोग प्राप्त करने के लिए अगस्त १६४० में वादा किया कि युद्ध की समाप्ति पर एक प्रतिनिधि सभा बुलाई जाएगी जो भारत का संविधान तैयार करेगी। परन्तु इस वादे से असंतुष्ट होकर कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर दिया।

८ अगस्त, १६४२ को कांग्रेस ने विराट सामूहिक आन्दोलन करने के पक्ष में प्रस्ताव पास किया, जिसे 'भारत छोडो' प्रस्ताव के नाम से याद किया जाता है। अगले दिन प्रातः गांधीजी

तथा देशभर के सभी प्रमुख नताओ को गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी के साथ ही स्वातत्य-सग्राम का अतिम दौर शुरू हो गया। इस समय भारत की आत्मा पूरी तरह जागत हो चुकी थी। दश के हर स्त्री पुरुष और बच्चे के हृदय म दासता का जुआ उतार फेंकने की उत्कट अभिलाषा थी। चूकि सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार किय जा चुके थ इसलिए एकदम नय लागा न नतृत्व सभाला। दश के सभी प्रा तो म लोगो ने जगह जगह टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार काट डाले रेल की पटरिया उखाड दी। कई रलवे स्टेशनो और थानो को आग लगा दी। सरकार न स्वतत्रता की लहर को दबान क लिए घोर अत्याचार किये और लोगो पर हवाई हमले भी किय। सरकारी अनुमानो के अनुसार १९४२ के अत तक ९४० व्यक्ति पुलिस और फौज की गोलियो का शिकार हुए १६३० घायल हुए और ६० ००० गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तार की गई महिलाओ म कस्तूरबा गाधी सरोजिनी नायडू और विजयलक्ष्मी पडित भी थी।

प्रकट आदोलन के साथ साथ गुप्त आदोलन भी चलता रहा। इसम भी कई नारियो न भाग लिया। इनम श्रीमती अरुणा आसफअली श्रीमती सुचेता कृपलानी और बम्बई की ऊषा महता क नाम उल्लेखनीय हैं।

महिला सस्थाए

बीसवी शताब्दी के आरम्भ म शिक्षित नारियो ने समाज सेवा तथा राजनीति के क्षेत्र म पदापण कर अपनी बहनो को सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकार दिलान के लिए सघर्ष शुरू किया। इस उद्देश्य म महिलाओ ने कई अखिलभारतीय सगठन स्थापित हुए। इसम सदेह नही कि आरभ म पुरुषो क तथा कुछ ब्रिटिश विदुषियो न जिनम डा० एनीबसट मागरट नोबल (सिस्टर निवेदिता) और मागरट कजिन्स के नाम उल्लखनीय हैं—भारतीय नारियो का पथ प्रदशन किया। १९०८ म जस्टिस रानाडे के पथ प्रदर्शन से उनकी पत्नी श्रीमती रामा बाई न पूना म सेवा-सदन की स्थापना की। महिलाओ का आधुनिक ढग का पहला सगठन—विमन्स इडियन एसोसिएशन—श्रीमती मागरेट कजिन्स न १९१७ म मद्रास म स्थापित किया। इसक बाद १९२७ म आल इडिया विमन्स कान्फ्रेंस की स्थापना हुई।

राजनीतिक अधिकार

१९१७ म तत्कालीन भारत मत्री माटेग्यु भारत के दौरे पर आय। १८ दिसम्बर १९१७ को श्रीमती सरोजिनी नायडू के नतृत्व म चौदह महिलाओ का एक शिष्ट मडल वाइसराय लाड चम्स फोड और श्री माटग्यु स मिला। शिष्ट मडल की माग थी कि जब भारत म आम चुनावो की व्यवस्था की जाय तो पुरुषो की भाति स्त्रियो को भी मताधिकार दिया जाय और स्थानीय स्वशासन तथा शिक्षा स सबधित जिन निकायो के सदस्यो की नियुक्ति निर्वाचन द्वारा की जाती हो उन सबके लिए स्त्रियो का चुनाव लडन का अधिकार दिया जाय। परन्तु १९१९ के भारत बिल स सबधित जिस प्रवर समिति न मताधिकार क प्रश्न पर विचार किया उसन स्त्रियो क मताधिकार की माग स्वीकार नही की। प्रवर समिति न कहा कि १९१९ के एक्ट के

अधीन स्थापित होने वाली विधान-परिषदें इस प्रश्न का निर्णय कर सकती हैं। महिलाओं के अनेक संगठनों ने, जिनमें एक विमेन्स इंडियन एसोसिएशन, इंडियन विमेन्स यूनिवर्सिटी विमेन्स होमरूल लीग, महिला सेवा समाज और सेवासदन आदि शामिल थे—प्रवर समिति के फैसले का विरोध किया और प्रयत्न जारी रखने का निश्चय किया।

डॉ० एनी बेसेंट, मार्गरेट कजिन्स, डोरा थी जिनराजदास डॉ० मुथुलक्ष्मी रेड्डी श्रीमती सदाशिव एय्यर, और धनवंती रामाराव आदि अनेक महिलाओं के प्रयत्न से मार्च, १९२१ में मद्रास विधान-परिषद के मतदाताओं की सूचियों में स्त्रियों को भी शामिल करने के पक्ष में प्रस्ताव पास किया। तदनंतर दूसरे प्रांतों ने भी मद्रास का अनुकरण किया और १९२६ तक सब प्रांतों की विधान-परिषदों के चुनावों में स्त्रियों को वोट देने का अधिकार मिल गया। अप्रैल, १९२६ में भारत सरकार ने स्त्रियों को विधान-परिषदों की सदस्याएं चुने जाने का अधिकार भी दे दिया।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय मद्रास विधान परिषद के चुनाव के लिए खड़ी हुई पर अपने विरोधी उम्मीदवार की अपेक्षा केवल ५०० वोट कम मिलने पर हार गई। उस पहले चुनाव में इतने कम वोटों से हारना भी महिलाओं की नैतिक विजय माना गया। तदंतर विमेन्स इंडियन एसोसिएशन के अनुरोध पर मद्रास सरकार ने डा० मुथुलक्ष्मी रेड्डी को विधान परिषद की सदस्या नियुक्त किया। वे पहली महिला थीं जिन्हें भारत की किसी प्रांतीय विधान परिषद में बैठने का अवसर मिला।

१९३५ के एक्ट में महिलाओं को आम चुनावों में वोट देने तथा चुनाव लड़ने का अधिकार दे दिया गया। विभिन्न विधान मंडलों में उनके लिए जगह इस प्रकार निर्धारित की गई—फेडरल कौंसिल आफ स्टेट में ब्रिटिश भारत के लिए रखी गई १५६ जगहों में से ६ और फेडरल एसेम्बली की २५० जगहों में से ६। प्रांतीय विधान-सभाओं में से मद्रास में ८, बम्बई में ६, बंगाल में ५ युक्त प्रांत में ६, पंजाब में ४ बिहार में ४ मध्यप्रांत तथा बरार में ३, असम में १ उड़ीसा में २ और सिंध में भी २ जगह निर्धारित हुई। कुल साढ़े तीन करोड़ लोगों को वोट देने का अधिकार दिया गया जिनमें ६० लाख स्त्रियां थीं।

१९३६ के आम चुनावों में लगभग २८ महिलाएं विधान-सभाओं की सदस्याएं चुनी गईं। उनमें से कई मंत्री और उपसभापति आदि नियुक्त हुई। सबसे पहली महिला मंत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित थीं। उन्हें युक्त प्रांत के कांग्रेसी मंत्रिमंडल में स्थानीय स्वशासन तथा स्वास्थ्य विभाग सौंपा गया। मद्रास में श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति और श्रीमती ज्योति वेंकटाचलम मंत्री नियुक्त हुईं। दो महिलाएं विधान-सभाओं की उपसभापति चुनी गईं—श्रीमती अनुसया बाई काले मध्यप्रांत में, और सिंध में श्रीमती मलानी।

कई महिलाएं केन्द्रीय विधान सभा के चुनाव में सफल हुईं। उनमें श्रीमती रेणुका राय, राधाबाई सुब्बारायन और अम्मू स्वामिनाथन् के नाम उल्लेखनीय हैं।

विदुषियां और कवयित्रियां

पंडिता रमाबाई (१८५८-१९२२)

ब्रिटिश काल की विदुषियों और समाज सेविकाओं में सबसे पहले पंडिता रमाबाई का नाम लिया जाना चाहिए। उसके पिता अनंतशास्त्री डोंगरे संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। उन्होंने तत्कालीन हिन्दू प्रथा के विरुद्ध अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई को संस्कृत पढ़ाई थी जिससे चित्पावन समाज ने उनका बहिष्कार कर दिया था। रमाबाई अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि की थीं। उन्होंने बचपन में अपनी मां की गोद में बैठकर ही अष्टाध्यायी के सूत्र और भागवत के सहस्रों श्लोक कंठस्थ कर लिये थे। १५-१६ वर्ष की आयु में वह संस्कृत में धाराप्रवाह भाषण करने लग गई थीं। १८७८ में वे कलकत्ता गई जहां उन्होंने हिन्दुओं के अंधविश्वासों की तीव्र आलोचना की। उनके अगाध शास्त्र ज्ञान और संस्कृत में वक्तृत्व की धाराप्रवाहिता को देखकर कलकत्ता के विद्वानों ने उन्हें 'पंडिता' और 'सरस्वती' की उपाधि दी। उन्होंने महाराष्ट्र की सवर्ण हिन्दू स्त्रियों को सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों से बचाने के उद्देश्य से १८८२ में पूना में आर्य महिला समाज की स्थापना की। अंग्रेजी का विशेष ज्ञान उपार्जन करने के लिए वे १८८३ में इंगलैंड गई। १८८६ में अमेरिका में जाकर उन्होंने कई स्थानों में भाषण दिये और समाज सुधार के कामों के लिए रुपया पैसा एकत्र किया। भारत लौटकर उन्होंने विधवाओं के लिए 'शारदा सदन', 'मुक्ति सदन' और 'कृपा सदन' नामक संस्थाएं खोलीं।

श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी (१८५५-१९३२)

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की पुत्री एवं कवीन्द्र रवीन्द्र की बड़ी बहन श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी का बंगला के साहित्यिक जगत् में विशेष स्थान है। उन्होंने १३ वर्ष की आयु से पहले ही कविता और कहानियां लिखना आरंभ कर दिया था। वे जीवन के अंतिम दिनों तक साहित्य सृजन करती रहीं। उन्होंने गल्प, ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास, नाटक, प्रहसन, गीत संग्रह इत्यादि सब मिलाकर २७ ग्रंथों की रचना की। साहित्यिक क्षेत्र में उनकी प्रतिष्ठा का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि १९२१ में जब कवीन्द्र रवीन्द्र 'बंगीय साहित्य सम्मेलन' के सभापति निर्वाचित हुए परंतु अधिवेशन में उपस्थित न हो सके तो साहित्यकारों ने श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी से ही सभापतित्व करने को कहा।

श्रीमती सरोजिनी नायडू (१८७९-१९४९)

हैदराबाद निवासी विख्यात वैज्ञानिक डा० अघोरनाथ चट्टोपाध्याय की पुत्री सरोजिनी की बहुमुखी प्रतिभा कविता, समाजसेवा और राजनीति के क्षेत्र में प्रतिफलित हुई। वे घर पर ही प्रारंभिक शिक्षा पाने के बाद १८९५ में उच्च शिक्षा के लिए इंगलैंड गई जहां उन्होंने लंदन और कैम्ब्रिज में अध्ययन किया। इसी दौरान उनका संपर्क अंग्रेजी के उत्कृष्ट कवियों से हुआ जिनसे उन्हें अंग्रेजी में कविता करने की प्रेरणा मिली। उनकी कविता में जहां भारत के प्राकृतिक दृश्यों तथा प्राचीन गौरव का सुंदर चित्रण हुआ वहां विश्व प्रेम और भगवत भक्ति के

उदात्त आदर्शों की भी अभिव्यक्ति हुई। कविता के क्षेत्र से बाहर आकर वे नारी उद्धार के आंदोलन में लग गई और धीरे धीरे गांधीजी की प्रेरणा से राजनीतिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुई। चरखा प्रचार, दलित-उद्धार और साम्प्रदायिक एकता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। असहयोग आंदोलन में उनके नेतृत्व की चर्चा पहले की जा चुकी है। वे अपने भाषणों से विराट जन समुदाय को मंत्र मुग्ध कर देती थी। वे कई वर्षों तक कांग्रेस कार्य समिति की सदस्या रहीं और १९२५ में कांग्रेस की सभापति चुनी गई। स्वतंत्रता के बाद १९४७ में उत्तरप्रदेश की गवर्नर भी नियुक्त हुई।

तोरुदत्त (१८५६-१८७७)

उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी साहित्य रचना के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय युवती थी तोरुदत्त जिसने २१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास से पहले पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। उनके पिता गोविन्दचन्द्र दत्त अंग्रेजी गद्य एवं पद्य के विख्यात लेखक थे। कु० दत्त की प्रारंभिक शिक्षा कलकत्ता में ही केवल अंग्रेजी के माध्यम से हुई थी। बाद में इंग्लैंड में जाकर उन्होंने अंग्रेजी के अतिरिक्त फ्रेंच का भी अध्ययन किया। वहां रहकर उन्होंने पाश्चात्य कला और संस्कृति का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन्होंने फ्रेंच कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद करके 'फ्रांस के खेतों से चुनी हुई मंजरियां' शीर्षक से एक संकलन १८७६ में प्रकाशित किया। भारत और इंग्लैंड के आलोचकों ने इस संकलन की पर्याप्त प्रशंसा की। 'भारत के प्राचीन गीत और गाथाएं' शीर्षक से उनका काव्य-संग्रह उनके स्वर्गवास के बाद प्रकाशित हुआ। उन्होंने फ्रेंच में एक उपन्यास लिखा जिसके विषय में प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान जेम्स डार्मस्टेटर ने कहा कि उन्नीस वर्षीय हिन्दू युवती की यह रचना अत्यंत असाधारण और प्रशंसनीय है। फ्रेंच कवयित्री मदाम द मार्फ ने लिखा 'तोरु की प्रतिभा विलक्षण है... उसकी रचना से लगता है कि वह फ्रांसीसी महिला है—उसके सोचने और लिखने का ढंग बिल्कुल हमारे जैसा है।'

आधुनिक युग में राष्ट्रभाषा की कवयित्रियों और लेखिकाओं में महादेवी वर्मा और सुभद्राकुमारी चौहान का स्थान बहुत ऊंचा है। महादेवी ने संस्कृतनिष्ठ कमनीय पदावली और नये छंदों में मधुर गीतों की रचना कर हिन्दी कविता की अपार श्रीवृद्धि की है। उनके कविता संग्रहों में नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत आदि प्रसिद्ध हैं। वेद मंत्रों के उनके अनुवाद अनुपम ही कहे जायेंगे।

सुभद्राकुमारी चौहान की सरल खड़ी बोली में लिखी कविता प्रेम, वात्सल्य और वीर रस से पूर्ण होने के अतिरिक्त राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने की विशेषता रखती है। उनकी 'झांसी की रानी' नामक कविता १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध का चित्र खींचकर विदेशी राज्य से मुक्त होने की भावना जगाने के कारण बहुत प्रसिद्ध हुई।

हिन्दी की गद्य लेखिकाओं में श्रीमती सत्यवती मल्लिक, उषादेवी मित्रा, होमवती और कमलादेवी चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक युग में महिलाओं ने भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य-सृजन करने में अपूर्व योग दिया है। असमिया में स्नेहलता भट्टाचार्य, चन्द्रप्रभा शकिया, उड़िया में पीता

श्वरी देवी, बसन्तकुमारी, पटनायक, शकुन्तलादेवी, सरस्वती कानूनगो—उर्दू में रशीद जहाँ, इस्मत चुगताई, कन्नड़ में—गौरम्मा, सवितम्मा, कल्यम्मा, गुजराती में—लभूमन महता, विद्यावहन रमणभाई नीलकंठ, धीरुबेन पटेल, लीलावती मुंशी, तमिल में—वै० मु० कोदै-नायकी अम्माल, स्वर्णाम्बाल सुब्रह्मण्यम्, गुरुप्रिया, तेलुगु में—मालती चन्दूर, कुम्मूरी पद्मावती देवी, नन्दगिरि देवी, बंगला में—आशापूर्णा देवी, आशालता सिंहा, वानीराय, नीला मजूमदार, मराठी में—शान्ता होसाविस, शान्ता शल्क, कुसुमावती देशपांडे और मलयालम में—आम्बाडि इक्काविम्मा, आम्बाडि कार्त्यायनी अम्मा, टी० सी० कल्याणी अम्मा, बी० कल्याणी अम्मा, पी० आर० श्यामला, एन० सरस्वती और ललिताम्बिका अन्तर्जनम् तथा रानमयी देवी के नाम सहज ही लोगों के सामने आ जाते हैं।

स्वतत्र भारत मे नारी की स्थिति

हरिशकर शर्मा

स्वतत्रता के बाद भारतीय नारी की स्थिति म क्रातिकारी सुधार हुआ है। इसके दो मुख्य कारण हैं। एक यह कि भारत के सविधान म कानून की दृष्टि स स्त्री और पुरुष की समानता स्वीकार कर ली गई। और दूसरा यह कि हिन्दुआ के विवाह विवाह विच्छेद और उत्तराधिकार आदि के सबध म कानून पास करके नारी क साथ सदिया स होने वाले सामाजिक और आर्थिक अयाय का सिद्धात अत कर दिया गया। इन व्यवस्थाआ के परिणामस्वरूप नारी की आर्थिक परतत्रता कम हुई और परिवार तथा समाज म उसका सम्मान बढा। और फिर वयस्क मताधिकार की प्राप्ति के साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी उसका महत्त्व बढा और राष्ट्र का ऊचे से ऊचा पद उसकी पहुच मे आ गया। इसम सदेह नही कि शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था न होने क कारण देश की अधिकाश नारिया अभी पिछडी हुई हैं और उदार सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाआ से पूरा-पूरा लाभ नही उठा पा रही हैं तो भी जहा तक शिक्षित मध्यमवर्गीय और उच्चवर्गीय नारिया का सबध है वे आत्मविश्वास और गर्व के साथ सिर ऊचा किये जीवन के सघर्ष म हिस्सा ले रही हैं और राष्ट्रीय एव अन्तराष्ट्रीय क्षेत्रा म पुरुषो से टक्कर लेकर नारी जाति और देश का गौरव बढा रही हैं।

समानता का अधिकार

हम पिछले लेख म देख चुके है कि स्वातत्र्य-आन्दोलन म भारी सख्या म नारियो के भाग लेन के परिणामस्वरूप राजनीतिक क्षेत्र म नारी का महत्व समझा गया और यह स्वीकार किया गया कि नारी के सहयोग के बिना देश न स्वतत्र हो सकता है न उन्नति कर सकता है। राष्ट्रीय नेताओ न अनुभव किया कि समाज म नारी का पुरुष की अपेक्षा हीन दर्जा देकर परपरा म जो अन्याय किया गया है उसका शीघ्र अत होना आवश्यक है। अत १९३१ म काग्रेस के कराची अधिवेशन म एक प्रस्ताव पास कर यह निणय किया गया कि स्वतत्र भारत की जनता को जो मूल अधिकार दिय जायेंगे उनम यह व्यवस्था भी होगी कि ' लिंग के आधार पर किसीके साथ विभेद नही किया जायगा।

स्वतत्रता के बाद २६ नवम्बर १९४९ को सविधान पास हुआ और २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ। सविधान मे कानूनी और सामाजिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष की समानता स्वीकार की गई और इसस सबधित व्यवस्था मूल अधिकारो के अतगत अनुच्छेद १४ १५ और १६ में की गई जिनका भावाथ इस प्रकार है —

१४ कानून की दृष्टि म सब व्यक्ति समान हैं और सबको कानून का सरक्षण प्राप्त करने का समान अधिकार है।

१५ सरकार किसी व्यक्ति के धम वश जाति लिंग अथवा जन्म-स्थान के कारण उसके प्रति विभेद नही करगी परतु सरकार चाहे तो स्त्रियो और बच्चो के हित म विशेष व्यवस्थाए कर सकती है।

१६ (क) राजकीय नौकरियो या पदो पर नियुक्ति के विषय म सब नागरिको को समान अवसर उपलब्ध होग।

(ख) राजकीय नौकरियो पर नियुक्ति के विषय म धम वश जाति लिंग जन्म स्थान अथवा निवास स्थान के कारण किसी व्यक्ति के प्रति विभेद नही किया जायेगा।

समानता की उपयुक्त व्यवस्थाओ के फलस्वरूप नारी के लिए बहुमुखी प्रगति का द्वार खुल गया। इसस मध्यम वग की शिक्षित नारियो न पूरा-पूरा लाभ उठाया। आज सरकारी और गर-सरकारी क्षेत्र का शायद ही कोई दफ्तर उद्योग, व्यवसाय और कारखाना होगा जहा स्त्रिया ऊचे से ऊचे पदो पर काम न कर रही हो। वे पहले की भाति अध्यापिकाए ही नही बल्कि क्लक स्टनोग्राफर टेलीफोन-आपरेटर स्वागत-अधिकारी डाक्टर वकील, जज मजिस्ट्रेट इजीनियर आदि के रूप म बडी कुशलता से काम कर रही है।

पारिवारिक जीवन और हिन्दू कानून

पारिवारिक जीवन म नारी की कठिनाइयो को दूर करने के लिए स्वतत्रता से पहले भी समाज सुधारको ने कई प्रयत्न किये थे जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है। हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानून (१८५६) के द्वारा विधवाओ को विवाह का अधिकार दिया गया। बाल विवाह निषेध कानून (१९२९) के द्वारा छोटी उम्र के लडके लडकियो के विवाह पर प्रतिबध लगा

दिया गया। स्वतंत्रता के बाद नारी की शेष कठिनाइयों को दूर करने के लिए 'विशेष विवाह कानून (१९५४)', 'हिंदू विवाह और विवाह विच्छेद कानून (१९५५),' 'हिंदू उत्तराधिकार कानून (१९५६)' और 'दहेज निषेध कानून (१९६१)' पास किया गया। ये कानून हिंदुओं के अतिरिक्त बौद्धों, जैनियों और सिक्खों पर भी लागू होते है। उपयुक्त विषयों में मुसलमानों, ईसाइयों और पारसियों के अपने-अपने अलग कानून है जो कि उनकी परपरागत धार्मिक प्रथाओं पर आधारित है। परंतु चूंकि संविधान में दिये गये निदेशक सिद्धांतों में विवाह उत्तराधिकार आदि के संबंध में सब नागरिकों के लिए समान कानून बनाने का अनुरोध किया गया है इसलिए संभव है कि आगे चलकर सब धर्मों के अनुयायियों के लिए इन विषयों में एक से कानून बन जायें।

हिंदू विवाह कानून (१९५५) में यह व्यवस्था की गई है कि विवाह के समय लडकी की उम्र १५ वर्ष से और लडके की उम्र १८ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। दूसरी महत्त्वपूर्ण व्यवस्था यह है कि एक पत्नी के रहते पुरुष दूसरा विवाह नहीं कर सकता और न स्त्री एक पति के रहते दूसरा विवाह कर सकती है। इस नियम का उल्लंघन करने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही दंडनीय है। यदि विवाह के समय किसी की पहली पत्नी जीवित हो, तो दूसरी पत्नी भी तलाक ले सकती है। पति के धर्म परिवर्तन कर लेने पर या संन्यास ले लेने पर भी पत्नी तलाक ले सकती है। ऐसी परिस्थितियों में पति भी पत्नी से तलाक ले सकता है।

विशेष विवाह कानून (१९५४) के अधीन एक ही धर्म अथवा विभिन्न धर्मों के मानने वाले स्त्री पुरुष अदालत में पंजीकरण विधि द्वारा विवाह कर सकते है। इस कानून के अधीन विवाहित स्त्री और पुरुष पारस्परिक इच्छा मात्र से तलाक ले सकते है।

हिंदू उत्तराधिकार कानून (१९५६) के द्वारा लडकियों को पितृ संपत्ति दाय रूप में पाने का अधिकार दिया गया है। इस कानून के अनुसार बिना वसीयत मरने वाले पुरुष की स्वार्जित संपत्ति के उत्तराधिकारियों की प्रथम श्रेणी में उसके पुत्रों के अतिरिक्त उसकी लडकियां विधवा और माता भी शामिल है और इन सबको बराबर का हिस्सा मिलता है। यह कानून पुरुष की अपेक्षा नारी के प्रति अधिक उदार है। नारी को पत्नी के रूप में पति की संपत्ति और पुत्री के रूप में पिता की संपत्ति का भी अंश मिलता है। पुत्रों पर तो पिता के ऋण चुकाने की जिम्मेवारी होती है, परंतु लडकियों पर ऐसी कोई जिम्मेवारी नहीं होती। इस कानून के द्वारा नारी को पहली बार संपत्ति के विषय में निरपेक्ष अधिकार दिया गया है, अर्थात वह उसे बेच सकती है रहन रख सकती है या अपनी इच्छा से किसी को दे सकती है।

दत्तक ग्रहण और निर्वाह-खर्च कानून (१९५६) के अधीन लडकों के अतिरिक्त लडकियों को भी गोद लिया जा सकता है। दत्तक ग्रहण करने का अधिकार स्त्रियों को भी दिया गया है। अब कोई स्त्री जो अविवाहित हो या विधवा हो, या जिसने तलाक ले लिया हो या जिसके पति ने संन्यास ले लिया हो या धर्म बदल लिया हो दत्तक ग्रहण कर सकती है। इस कानून में यह व्यवस्था भी की गई है यदि पति पत्नी का परित्याग कर दे, या अपना धर्म बदल ले, तो पत्नी उससे अलग रहती हुई भी उससे निर्वाह-खर्च ले सकती है।

दहेज निषेध कानून (१९६१) की धारा ६ में यह आवश्यक ठहराया गया है कि विवाह

के एक वर्ष के भीतर दहेज की धन-संपत्ति वधू को दे दी जाय। इस संपत्ति पर उसका निरपेक्ष अधिकार माना गया है। और यह संपत्ति उसके बाद उसके उत्तराधिकारियों को मिलती है।

ईसाइयों और पारसियों का कानून

ईसाइयों से संबंधित विवाह कानून के अधीन यदि वर या कन्या में से कोई १८ वर्ष से छोटा हो तो उसके पिता की अनुमति लेना जरूरी होता है। इसी प्रकार पारसियों के विवाह कानून में यह व्यवस्था है कि यदि वर या कन्या में से कोई २१ वर्ष से छोटा हो तो पिता अथवा अभिभावक की अनुमति प्राप्त करना जरूरी होता है। ईसाइयों और पारसियों दोनों के कानून के अनुसार यह भी जरूरी है कि विवाह के समय पुरुष की पहली पत्नी और स्त्री का पहला पति जीवित न हो। दोनों धर्मों के अनुयायियों के विषय में भारतीय उत्तराधिकार कानून (१९२५) लागू होता है जिसके अनुसार विधवा को अपने दिवंगत पति की और विधुर को अपनी दिवंगत पत्नी की संपत्ति पर अधिकार होता है।

मुस्लिम कानून

मुस्लिम विवाह कानून के अनुसार यह जरूरी है कि विवाह के समय वर और कन्या में से किसी की उम्र १५ वर्ष से कम न हो, और विवाह के लिए दोनों की स्वीकृति ली गई हो। इस कानून के अधीन मुसलमान औरत गैर मुस्लिम से शादी नहीं कर सकती परन्तु मुसलमान पुरुष ईसाई या यहूदी औरत से शादी कर सकता है। यदि पति पत्नी को तलाक दे तो उस पत्नी को मेहर की रकम देनी पड़ती है जो कि शादी के समय ही तय कर ली जाती है। मुसलमान पति और पत्नी दोनों ही अदालत के द्वारा भी तलाक ले सकते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों को विरासत में संपत्ति प्राप्त करने का निरपेक्ष अधिकार है। मृतक व्यक्ति के वारिसों अर्थात उत्तराधिकारियों में उसकी माता पत्नी और लड़की भी शामिल हैं।

नारी शोषण का अंत

पारिवारिक जीवन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में नारी शोषण का अंत करने के उद्देश्य से भी कई कानून पास किये गये हैं। नारी-बाल क्रय विक्रय निषेध कानून (१९५६) के द्वारा वेश्यावृत्ति को रोकने का प्रयत्न किया गया और नारी उद्धार सदन खोलने की व्यवस्था की गई। मद्रास के देवदासी निषेध कानून (१९४७) के द्वारा लड़कियों को मंदिरों के भेंट करने की मनाही कर दी गई। इसी प्रकार देश के अन्य भागों में भी धर्म के नाम पर होने वाले नारी शोषण और अनाचार का अंत करने के लिए भी कानूनी व्यवस्था की गई।

जीविका उपार्जन

निम्न वर्ग की नारियां जीविका के लिए सदा से पुरुषों की भांति श्रम करती रही हैं। गांवों में—जहां देश की ८० प्रतिशत आबादी रहती है—खेती के काम में स्त्रियों ने सदा पुरुषों का हाथ बटाया है। जिनकी अपनी जमीन नहीं होती वे दूसरों की जमीन पर मजदूरी करती

है। खेती के अतिरिक्त औरतें आसाम, पश्चिमी बगाल, मद्रास, केरल और मसूर म चाय, कॉफी तथा रबर के बागाना म, विहार मध्य प्रदेश पश्चिमी बगाल, और उडीसा म खाना म तथा हर बडे नगर म कारखाना म भी मजदूरी करती है। १९६० म कारखाना म काम करने वाली औरता की सख्या लगभग ३ लाख ७० हजार और बागाना म काम करने वाली औरता की सख्या लगभग ११ लाख ८७ हजार थी।

मजदूर औरता के प्रतिदिन काम करन के घटे नियत करने तथा उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण के लिए कई कानून पास किये गय हैं।

फक्टरी एक्ट (१९४८) म यह व्यवस्था की गई है कि खाना, कारखाना और बागाना म औरतें प्रात ७ बजे और साय ६ बजे क बीच ही प्रतिदिन अधिक से अधिक ९ घटे और प्रति सप्ताह अधिक से अधिक ५४ घटे काम करें। औरता को साय ६ बजे के बाद और प्रात ७ बजे के पहले काम पर नही लगाया जा सकता। औरता स ६५ पौंड से अधिक और किशोरिया से ४५ पौड से अधिक बोझ उठवाने की मनाही है। मजदूर औरता के ६ वय से छोटे बच्चा की देखभाल क लिए कानून म मालिका की ओर से शिशु गह खुलवाने की व्यवस्था की गई है। खान कानून (१९५१) म औरता को खाना के भीतर या किसी खतरनाक काम पर लगाने की मनाही की गई है। प्रसूतिका कल्याण कानून (१९६१) के द्वारा देशभर म फार्मों, बागाना, खाना, कारखाना और व्यापारिक फर्मों म काम करने वाली औरता के लिए प्रसूति विषयक आर्थिक और डाक्टरी सुविधाओ की व्यवस्था की गई है। इस कानून के अधीन औरता को उनकी औसत दनिक मजदूरी या वतन के हिसाब स उतने दिना की मजदूरी मिलती है जितने दिन वे काम पर न आ सकें।

कारखाना आदि म काम करन वाली औरता की समस्याओ का सुलझाने के लिए तथा उनके हिता की सुरक्षा के लिए ट्रेड यूनियनें बनी हुई हैं। १९५८ ५९ म लगभग चार लाख औरतें टेड यूनियना की सदस्याए थी।

शिक्षा

हमार राष्ट्रीय नता और स्वय महिलाए भी इस बात का अच्छी तरह समझती है कि जब तक स्त्रिया पुरपा की भांति शिक्षा सपन्न होकर जीवन के विविध क्षेत्रा म काम करने के योग्य न हो जायें तब तक देश आर्थिक सामाजिक एव सास्कृतिक क्षत्रा म अभीष्ट प्रगति नही कर सकता। इस बात को ध्यान म रखकर भारत सरकार ने १९५९ म राष्टीय स्त्री शिक्षा परिषद (National Council of Women s Education) की स्थापना की। परिषद का मुख्य उद्देश्य लडका और लडकिया की शिक्षा-व्यवस्था के अतर को दूर करना और लडकिया की शिक्षा को बढावा दना है। परिषद स्त्री शिक्षा के सबध मे नीति कायक्रम और लक्ष्य निर्धारित करन म सरकार को परामश देती है और इस बात का ध्यान रखती है कि नारी शिक्षा सबधी योजनाओ को कार्यान्वित किया जाये और उनके लिए रुपय पसे की पर्याप्त व्यवस्था की जाये। पचवर्षीय योजनाओ म लडकिया की शिक्षा के लिए विशेष परियोजनाए बनाई गइ और लडकिया को छात्रवृत्तिया देने और स्कूल तथा छात्रावास बनाने के लिए धन राशि दी गई।

१९६१ के आंकडों के अनुसार देश में ८१ लाख से अधिक नारियां प्राइमरी अथवा जूनियर बेसिक शिक्षा प्राप्त थी और १२ लाख ७५ हजार से अधिक मैट्रिक पास थी। लड़कियों ने साहित्य इतिहास अर्थशास्त्र आदि के अतिरिक्त विज्ञान इंजीनियरिंग और टक्नालाजी आदि में भी पर्याप्त रुचि ली है। १९६१ के आंकड़ों के अनुसार देश में १६,६५० महिलाएं विज्ञान में ग्रेजुएट थी। २३३ इंजीनियरिंग एवं टक्नालाजी में, ७१ कमिकल इंजीनियरिंग में, ३८ सिविल इंजीनियरिंग में और ४ आर्किटेक्चर और रीजनल प्लानिंग में ग्रेजुएट थी। २७६५० महिलाएं डाक्टरी की डिग्री और १३४२ महिलाएं डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त था।

जहां तक केवल साक्षरता का सबंध है १९६१ में १२.९५ प्रतिशत नारियां साक्षर थी और १९७१ में १८.४७ प्रतिशत।

शिक्षा पर आधारित रोजगार

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्त्रियों के लिए आधुनिक ढंग की शिक्षा वांछनीय स्वीकार कर ली जाने पर और लड़कियों के लिए स्कूल और कॉलेज खोले जाने पर अध्यापन काय के लिए स्त्रियों को प्रशिक्षण देने की नीति स्वीकार कर ली गई थी। अध्यापन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें मध्यम वर्ग की नारियों ने सबसे पहले रुचि ली। और यही क्षेत्र है जिसमें और व्यवसायों की अपेक्षा नारियों की संख्या अधिक है। स्वतत्रता के तीन वर्ष के भीतर अर्थात् १९५० में लगभग ८०,००० अध्यापिकाएं प्राइमरी स्कूलों में, ३१,००० अध्यापिकाएं सेकेण्ड्री स्कूलों में, ४००० अध्यापिकाएं व्यावसायिक और टेक्नीकल स्कूलों में और १७०० अध्यापिकाएं कालेजों और विश्वविद्यालयों में काम करती थी। १९५४-५५ के शिक्षा एवं अनुसंधान विभागों में काम करने वाली महिलाओं की संख्या १ लाख ७ हजार से ऊपर थी।

महिलाओं ने उपकुलपति के पद का काम भी बड़ी कुशलता से निभाया है—इनमें बड़ौदा विश्वविद्यालय की उपकुलपति श्रीमती हंसा मेहता और इंडियन विमिन्स यूनिवर्सिटी की उपकुलपति श्रीमती शारदा मेहता के नाम उल्लेखनीय है।

डाक्टरी व्यवसाय

लेडी हार्डिंग मैडिकल कालेज दिल्ली क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज लुधियाना और क्रिश्चियन मेडिकल कालेज वेल्लोर ने लड़कियों को डाक्टरी शिक्षा देने में महत्त्वपूर्ण काय किया है। इनके अतिरिक्त अन्य डाक्टरी कालेजों में भी लड़कियों के लिए स्थान सुरक्षित रखे जाते हैं। दिल्ली स्थित 'कालेज ऑफ नर्सिंग' नर्सों को प्रशिक्षण देने की पहली और मुख्य संस्था है। इसके अतिरिक्त दाइयों को प्रशिक्षण देने की अनेक संस्थाएं है।

१९५६-५७ में देश की डाक्टरी और स्वास्थ्य सेवाओं में काम करने वाली महिलाओं की संख्या ७७०० थी। इनके अतिरिक्त कई महिलाएं सेना के डाक्टरी विभाग में लफ्टिनेंट, कप्टन, मेजर और कर्नल के पदों पर भी नियुक्त हैं।

केन्द्रीय सेवाए

स्वतन्त्रता क बाद लडकिया के लिए भारतीय प्रशासन सवा तथा प्रथम वग की अय केन्द्रीय सवाआ म भरती की अनुमा दी जान क परिणामस्वरूप मत्रालया म तथा प्रशासकीय और न्यायिक पदा पर भी महिलाए काम कर रही है। श्रीमती अना आर० जाज मत्रिमंडलीय सचिवालय म सयुक्त-सचिव और कुमारी ए० राधाबाई उपसचिव हैं। इनके अतिरिक्त अय मत्रालया म भी कई महिलाए उप-सचिव अवर सचिव तथा प्रभाग-अधिकारी हैं। मत्रालया से बाहर कई महिलाए डिप्टी कमिश्नर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तथा सहायक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी हैं। मत्रालया म तथा मत्रालया के अधीन विभागा म क्लक टाइपिस्ट स्टनाग्राफर टेलीफोन आपरेटर के रूप म हजारा की सख्या म लडकिया काम कर रही है। केवल रेलवे विभाग और विभिन्न रेला म ही काम करने वाली नारिया की सख्या अनुमानत दस हजार के लगभग होगी।

अश कालिक रोजगार

इसम सन्देह नही कि आधुनिक जीवन की आवश्यकताए तथा रहन-सहन का खच बढ जाने के कारण विवाहित तथा अविवाहित स्त्रिया के लिए घर स बाहर किसी कायालय या व्यवसाय म काम करना प्राय आवश्यक हो गया है। विशेषत नगरा म परिस्थिति ऐसी है कि घर-गृहस्थी का खच चलान के लिए पति के अतिरिक्त पत्नी को भी काम करना पडता है। यदि काम की परिस्थितिया सुविधाजनक हा तो वतमान सख्या मे और भी अधिक नारिया काम के लिए तयार हागी। इस सबध म आवश्यकता इस बात की है कि उनके लिए काम के घट एसे हा कि उन्ह बच्चा की देखभाल और घर के दूसरे काम काज की उपेक्षा न करनी पडे क्याकि एसा करन स अनक कठिनाइया और समस्याए पदा हो जाती हैं। अत स्त्रियो के लिए अश कालिक काम की व्यवस्था होनी चाहिए। इग्लैंड म २६ लाख औरत विभिन्न उद्योगा म अश कालिक काम कर रही हैं। यदि हमारे यहा भी एसी व्यवस्था हो जाय तो देश म उत्पादन बढ सकता है और लोगो की आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है।

कला के क्षेत्र मे

आधुनिक युग म अनक महिलाआ ने भारतीय नत्य सगीत और नाटय कला का पुनरुद्धार करन मे प्रशसनीय काम किया है। कथक नृत्य का पुन प्रवतन करन वाली महिलाआ म स्वर्गीय मेनका सवप्रथम है। उन्होने भारत और यूरोप के मच पर कथक का प्रदशन करके ख्याति प्राप्त की। बाद म उन्होने खाडला म नत्य-स्कूल स्थापित किया।

भारत-नाटयम् नत्य के पुनरुत्थान का श्रेय बहुत हद तक बाल सरस्वती को है। उनकी नत्यकला ने कई अय महिलाओ को प्रेरणा प्रदान की। मद्रास की रुक्मिणी देवी, कुम्बकोनम की वरलक्ष्मी और बडौदा की गौरीबाई ने भी भरत-नाटयम म प्रवीणता प्राप्त करके उस लोकप्रिय बनाने की दिशा म काम किया। रुक्मिणी देवी ने कला क्षेत्र आर्ट सेंटर की स्थापना करके दजनो

का सपादन भी महिलाए करती हैं। कई महिलाए दनिक पत्रा तथा रेडियो के लिए सवाददाता का काम करती हैं। सूचना और प्रसारण मत्रालय के अधीन पत्र सूचना कार्यालय म इस समय छ सात महिलाए सूचना-अधिकारी तथा सहायक-सूचना-अधिकारी के पद पर नियुक्त हैं। इसी प्रकार प्रकाशन विभाग, आकाशवाणी तथा अय कायालया म कइ स्त्रिया अनक महत्त्वपूण पदा पर काम कर रही हैं।

राजनीतिक क्षेत्र मे

१८८५ म काग्रेस की स्थापना के साथ भारतीय नारी न राजनीति म पदापण किया। काग्रेस के अधिवशनो म नारिया प्रतिनिधि होकर जाती भाषण दती और बहस म भाग लती। डा० ऐनी बसट पहली महिला थी जिह १९१७ म काग्रेस क अधिवेशन का सभापतित्व करने का सम्मान मिला। काग्रेस न नारी को पुरुष के समान दजा दिया। गाधी जी न नारिया का स्वातत्र्य सग्राम म भाग लन का खुला निमत्रण दिया। जसा कि हम पिछले लेख म कह आय हैं हजारा नारिया न इस सग्राम म भाग लिया और कइया ने इसका सचालन भी किया। कुछ एक ने विधान परिषदा और विधान-सभाआ म भी काम किया। स्वतत्रता स ठीक पहल भारत की जो सविधान सभा बनी उसम भी सराजिनी नायडू हसा मेहता दुर्गाबाई रणुका राय मालती चौधरी तथा कई अय महिलाए ली गई।

स्वतत्रता क बाद भारत के पहले मत्रिमडल म राजकुमारी अमृतकौर स्वास्थ्य मत्री नियुक्त हुइ। बाद म श्रीमती चद्रशेखर स्वास्थ्य विभाग की उपमत्री श्रीमती वायलट अलवा गहविभाग की, श्रीमती लक्ष्मी मनन विदश विभाग और श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा वित्त विभाग की उपमत्री रही।

राज्या म सबस पहली महिला राज्यपाल श्रीमती सराजिनी नायडू थी जिह स्वतत्रता के बाद उत्तरप्रदेश म नियुक्त किया गया। उन्हीकी पुत्री कुमारी पद्मजा नायडू दूसरी महिला राज्यपाल थी। व पश्चिमी बगाल की राज्यपाल रही। श्रीमती सुचेता कृपलानी पहली मुख्य मत्री थी। अब उडीसा म श्रीमती नदिनी सत्पथी मुख्यमत्री हैं।

अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र म श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित मास्को तथा वाशिंगटन म भारत की राजदूत तथा लदन मे भारत की हाई कमिश्नर थी। व पहली महिला हैं जिह सयुक्तराष्ट्र महासभा की सभापति नियुक्त किया गया।

भारत की प्रथम निर्वाचित लाकसभा म २३ और राज्यसभा म १६ महिला सदस्याए थी। इनम कई ससद म होने वाली बहस म भाग लेती थी। श्रीमती वायलट अलवा प्रतिरक्षा सबधी मामला पर श्रीमती रेणु चक्रवर्ती ट्रेड यूनियन सबधी समस्याआ पर और श्रीमती तारकेश्वरी सिहा वित्त और व्यापार सबधी विषया पर साधिकार भाषण दिया करती थी। डा० सीता परमानद ने हिदू उत्तराधिकार बिल पर हुई बहस म विशेष रुचि ली थी। इसी प्रकार जयश्री रायजी और उमा नहरू ने महगाई आदालन और सावित्री निगम मद्य निषेध तथा नतिक सुधार के विषय म रुचि दिखायी थी।

वतमान ससद मे ३० से अधिक महिलाए हैं जिनम प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी

के अतिरिक्त डा० सरोजिनी महिषी (पयटन और नागरिक विमानन विभाग की राज्यमंत्री), श्रीमती सुशीला रोहतगी (उप वित्तमंत्री) श्रीमती सुभद्रा जोशी, राजमाता गायत्री देवी श्रीमती विजयाराज सिंधिया, श्रीमती पूरवी मुखोपाध्याय, कुमारी शान्ता वशिष्ठ के नाम उल्लेखनीय हैं। लोकसभा म नई दिल्ली क्षत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली श्रीमती मुकुल बनर्जी उदीयमान महिला नताओ म स है।

श्रीमती इन्दिरा गाधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री है। इस उच्च पद को सभालन स पहले वे सूचना और प्रसारण की मत्री रह चुकी थी और उसस पहले काग्रेस अध्यक्ष भी रही। वे राजनीतिक दूरदर्शिता शासन-कुशलता नतिक साहस, न्यायप्रियता और कतव्यनिष्ठा की साक्षात प्रतिमा है। दश की आतरिक और अतर्राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने म उन्होन अपूव बुद्धिमत्ता और साहस का परिचय दिया है प्रधान मत्री पद पर आरूढ होने के तुरत बाद पजाब का बटवारा और हरियाणा राज्य की स्थापना उनके साहस का प्रमाण है। बका का राष्ट्रीयकरण निधनता को दूर करन की दिशा म उनका महत्त्वपूण प्रयास है। बगला देश के लगभग एक करोड शरणार्थियो को भारत म शरण देना उनकी मानवीयता का परिचायक है। और दिसम्बर १९७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध म भारत की अपूव विजय उनकी राजनीतिक और कूटनीतिक सफलता का उदाहरण है। इसम तनिक स देह नही कि उनके कुशल नतृत्व म भारत की अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र म आज जितनी प्रतिष्ठा है उतनी पहले कभी नही हुई थी।

उपसहार

भारत के समस्त इतिहास पर विहगम दष्टिपात करन से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय नारी वदिक काल के बाद सकडो हजारो वर्षों तक मूल मानव अधिकारो से वचित रहने तथा अनेक कष्टो कठिनाइयो और बधनो को धयपूवक सहन के बाद आज पुरानी स्वतत्रता और पुराने अधिकारो को प्राप्त करन म बहुत हद तक सफल हो गई है। परतु सविधान और कानून द्वारा उसे जो आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिये गये हैं उन्ह व्यवहारत साथक बनान के लिए सामाज के दष्टिकोण का और बदलन तथा शिक्षा के और प्रसार की आवश्यकता है। भारतीय नारी केवल अधिकारो के विषय म ही नही प्रत्युत अपने नय कतव्य और उत्तर दायित्व के विषय म भी जागरूक है। नई शिक्षा और नई स्वतत्रता और नये युग के आर्थिक सघष के परिणामस्वरूप गहस्थ जीवन समाज सवा और राष्ट्रसेवा के नय आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता है जो वदिक आदर्शों से एकदम भिन्न न होते हुए भी नवीन युग की आवश्यकताओ के अनुरूप होंगे और सवथा भारतीय ही होंगे। इसके लिए नारी और पुरुष दोनो को मिलकर प्रयत्न करना है जिससे कि भारतीय समाज आर्थिक समृद्धि, पारिवारिक सुख और आध्यात्मिक शांति के नये आदश विश्व के सामने प्रस्तुत कर सके।

जीवन यात्रा

मेरी जीवन यात्रा

जानकीदेवी बजाज

एक—

मेरे पिताजी का नाम गिरधारीलालजी था। उनका वर्ण गोरा था, शरीर स्वस्थ। नवासी साल की उम्र तक वे बराबर पैदल ही मंदिर जाते रहे। श्रीवैष्णवों की साम्प्रदायिक मान्यता के अनुसार बोलते समय वे सदा पहले नारायण का उच्चारण करते थे। "नारायण के पन्न लेनो है?" "नारायण के भोग चढ़ाणो है?" आदि। उन्हें लोग दुखियों के सखा, कुटुंब पाल और सत्पुरुष मानते थे। किसीसे मिलते ही उसके सुख दुख की बात पूछते। मालूम होता कि लड़की का विवाह है, घर में कोई कार्य प्रयोजन है तो एकाध बोरी अनाज और कुछ रुपये भिजवा देते। सहायता पाने वालों में ब्राह्मण, बनिये, किसान, मजदूर, हिंदू मुसलमान सभी रहते।

धार्मिक नियमों के पालन में वे कट्टर थे। सेवा सहायता के बारे में समान भाव रखते थे। घर में वातावरण धार्मिक था और छुआछूत का बड़ा ध्यान रखा जाता था। चिड़िया के घुस आने से चौका धोया जाता था। नल के पानी से परहेज किया जाता था, मंदिर जाते समय रास्ते में अगर नल के पानी का छींटा भी लग जाता तो स्नान करना होता था। घर में शालिग्राम की पूजा होती थी और भोग चलता था, पर दर्शन-पूजन के लिए हम लोग मंदिर भी जाते थे। एकादशी के दिन व्यंकटेशजी रुक्मिणी और सत्यभामा की स्वर्णमंडित मूर्तियों का दूध-दही में

अभिषेक होता था। मैं भक्ति से गद्‌गद होकर देखती रहती।

कुटुब वालो को निभाना पिताजी का स्वभाव बन गया था। हमारे ताऊ के लडके साथ ही रहते थे। उनके बहुत से बाल-बच्चे थे। हमारे ग्यारह भाई-बहन पहले चल बसे थे हम तीन भाई-बहन कुनाथ मे जिये थे। हमारे यहा जो मुनीम गुमाश्ते नौकर चाकर थे उनको पिताजी ने कुटुब का ही बना लिया था। मुसलमान नौकर भी थे। उनके साथ छुआछूत तो बरतते थी पर आत्मीयता मे कोई कमी नही होती थी।

पिताजी का जीवन सब तरह से ऊचा ही रहा। व्यापार मे उनकी साख थी। व्यवसाय अफीम का था। खेतो से अफीम के रस के घडे के घडे भरकर आते। कुछ दिनो रखे रहने के बाद उस रस को बडी बडी परातो मे मथा जाता और फिर लड्डू जैसे गोले बनाये जाते थे। इन्हे अफीम की घोटिया कहते थे।

पिताजी के चले जाने के बाद घर के लोगो को प्राय घाटा ही उठाना पडा क्योकि वे उनकी नीति भूल गये।

उनका जीवन जैसा भव्य रहा वैसे ही उनकी मृत्यु भी। जिस दिन उनका स्वर्गवास हुआ, ग्यारह बजे तक चिट्ठिया लिखते रहे फिर नहाकर धोती पहन रहे थे कि चक्कर आ गया। कमरे मे जाकर लेट गये। लोग इकट्ठे हो गये। डाक्टरो को बुलाया गया। शाम को ७ बजे उनका देहान्त हो गया। कहते हैं उनका प्राण ब्रह्मरध्र से निकला। ऊपर से सिर फट गया था और खून गिरा था।

उस समय मेरी आयु दस ग्यारह साल की थी।

दो—

मेरी मा को घर तथा पास पडोस के लोग गोगुली साथ कहते थे। किसी नौकर को कष्ट होगा यह सोचकर मा अनेक काम स्वय कर लिया करती थी। परिवार से सबधित बूढे नौकर चाकर पडित पुरोहित सबके प्रति मा का बर्ताव बडा प्रेम भरा होता था। सर्दी के मौसम मे वह गोद तथा मेथी के लड्डू बनाकर रखती थी और इन बूढो को दिया करती थी। सुबह पाच बजे बिस्तर पर ही दे आती और किसी किसी के तो घर पर पहुचा देती। बिना किसी धर्म या जाति का विचार किये वह बीमारो को दवाई दिया करती थी। मिट्टी के तेल के आडे कटे कनस्तर मे जगली जडी बूटिया तथा सोठ काली मिर्च दालचीनी लौग पीपल, मुलेठी जायफल अजवाइन आदि चीजो की छोटी छोटी कोथलिया (थलिया) बनाकर रखती थी। जब किसीकी बीमारी की बात सुनती तो कनस्तर से दवा निकालकर देती।

जब मैं चार बरस की हुई तब मेरे माता निकल आई। मुझसे बडे एक भाई थे और एक छोटे। मैं बीच की थी। मेरे दोनो भाइयो का टीका लगवा दिया गया था। मैं ही नामालूम कैसे रह गई थी। मुझे लगभग चार महीने बीमारी भोगनी पडी। माता निकलने पर मुझे गाय के नोहरे मे बोरी या टाट पर कडे की राख बिछाकर सुलाया जाता था। मा मेरे शरीर पर राख बुरकती रहती थी। सावली तो मैं पहले ही थी, इसके बाद रग और गहरा हो गया। चेचक के दाग चेहरे पर उभर आये। बहुत से बच्चो के चले जाने के कारण मैं लाडली पहले ही थी, इस

बीमारी के कारण मुझे और भी सहानुभूति मिलने लगी।

तीन—

माता की बीमारी से उठी ही थी कि वर्धा से मुझे देखने के लिए एक ब्राह्मण आये। उनका नाम मानीरामजी था। तब मेरी उम्र कोई चार साल की थी। मानीरामजी सेठ बच्छराजजी के यहां से आये थे। उन्होंने वर्धा जाकर हमारे घर के धार्मिक वातावरण की बात की होगी। बच्छराजजी की पत्नी सदीबाई जी मेरे पूरे खानदान और धार्मिक वातावरण की बात सुनकर संबंध के लिए राजी हो गई। पहले के लोग रूप को अपेक्षा खानदान को अधिक महत्त्व देते थे। वर्धा वाले सपन्न थे लड़का सुंदर था और मैं सावली तथा चेचक के दाग वाली थी। फिर भी सगाई हो गई।

सगाई के बाद मेरे लिए बहुत-सा जेवर वर्धा से आया। गहना ठोस सोने का था। मेरी भतीजी के पति कहा करते थे 'काली में बान का छाल्लो लाग्यो। इसमें उनका मतलब यह था कि सोना तो बहुत आया पर पहनने वाली ऐसी ही है?

मुझे अपने रूप के कारण किसी से मिलने में भी सकोच होता था। यहां तक कि बाद में भी मुंह देखते सकोच करती थी। इसे मैं भगवान का उपहार ही मानती हूं कि सपन्न परिवार जमनालालजी जैसे सुंदर पति तथा सब प्रकार की अनुकूलताओं को पाकर भी 'रूप' के कारण मैं अहकार में डूबने से बची। मुझमें जो सादगी आई धर्म ध्यान करने की रुचि बनी उसमें शायद मेरी कुरूपता भी एक कारण रही हो।

चार—

मैं कोई छ-सात बरस की थी। एक दिन पिताजी के हाथ में एक कागद था। वे उसे मा को पढ़कर सुना रहे थे। चिट्ठी के लिए कागद शब्द का इस्तेमाल होता था। पिताजी कह रहे थे कि धनीराम ने यह लिखा है, वह लिखा है। मैं विचार में पड़ गई कि कागद कैसे बोलता है। मैंने मन ही मन सोचा कि मैं भी यह बात सीखूंगी। दूसरे दिन पट्टी-कलम लेकर जोशीजी के यहां पहुंची। मैंने कहा 'कागद कीया बोले सो मन बताओ।' वे मेरी समस्या समझ गये और क, ख, ग, घ ङ—ये पाच अक्षर पट्टी पर लिखकर दे दिये और कहा कि इनको घोखना। जोशीजी के यहां से लौटी तो पिताजी ने मेरे हाथ में पट्टी-कलम देखकर कहा, 'बेटाजी! आज कठे गया था पाटी-कलम लेर?' मैंने हसकर पट्टी दिखा दी। पिताजी मेरा उत्साह देखकर मा से बोले "एजी अब तो बाई के ताई जोशीजी राखनो पड़सी।' धीरे धीरे मैं थोड़ा-बहुत टूटा फूटा पढ़ने लगी। मैं मा के साथ मदिर तो जाती ही थी। पूजा पाठ में भी उनके साथ रहती थी। पडित जी से मैंने टूटे फूटे उच्चारणों में विष्णुसहस्रनाम सीखकर उसका पाठ करना शुरू कर दिया। तेरह-चौदह बरस की उम्र में मुझे थोड़ा थोड़ा पढ़ना आ गया था। ससुराल में मैंने अपनी ननद और देवरानियों को भी पढ़ाना शुरू किया। हमारे यहां 'हतवार' लेने के लिए जो ब्राह्मण कन्या आती थी उसे मैं अक्षरज्ञान कराने लगी और साथ ही सीना पिरोना सिखाने लगी। साथ ही देखा-देखी दूसरी लड़कियां भी आने लगीं।

मेरे माता पिता ने जब घर बदला तब मुझे एक कमरे में एक मढ़िया दिया गया। वह खेल खिलौना रखने के लिए था। मेरी इच्छा उसमें भगवान का चित्र लगाने की हुई इसलिए मैंने उसमें एक कील ठोकी, मां ने देख लिया और अत्यंत करुण सुर में कहा 'ए बाई! या कीलो क्या ठोकयो चूना में खरट उतर जासी न?' शब्द इतने करुण स्वर में कहे गये थे कि हृदय पर अंकित हो गये। मैं समझ गई कि दीवार और लकड़ी को भी दुख हो सकता है।

पांच—

वर्धा से विवाह के लिए पत्र आने लगे। उस समय मैं कोई साढ़े आठ बरस की होऊंगी। विवाह का निश्चय होने पर हम सब लोग वर्धा ही आ गये। विवाह खूब ठाट-बाट से हुआ। वर पक्ष की ओर से महफिल सजाई गई नाचने-गाने वाली भगतणें भी बुलाई गई थीं। बच्छराजजी ने पोते के विवाह में दिल खोलकर खर्च किया। आतिशबाजी भी खूब छोड़ी गई।

फेरे के बाद प्रथा के अनुसार मुझे सारे जेवर पहनाये गये। विवाह घूंघट में ही हुआ था। यह आज से कोई सत्तर बरस पहले की बात है। उस समय की और आज की सामाजिक स्थिति पर विचार करती हूं तो देखती हूं आज जिन प्रथाओं को हम कुरीतियां कहते हैं उस समय वे रिवाज अच्छे समझे जाते थे।

एक बात का अफसोस मुझे आज भी रह रहकर होता है। वह यह कि मेरी सास की सास पूज्य सदीबाई जी मेरे विवाह के दो साल पहले ही संसार से विदा हो गई थीं। मेरी सगाई उन्हीं की सम्मति से हुई थी वे जल्दी ही पोते की बहू का मुंह देखना चाहती थीं। मैं उनके पैर पकड़कर आशीर्वाद नहीं ले पाई।

छ—

विवाह के बाद मैं माता पिता के साथ जावरा लौट गई। पर फिर जल्दी ही वर्धा से पत्र आने लगे कि बीनणी को भेजो। बच्छराजजी के यहां गणगौर पूजी जाती थी। विवाह के बाद पहले वर्ष गणगौर की पूजा वधू को करनी पड़ती है। बच्छराजजी की इच्छा का ख्याल करके पिताजी ने मुझे वर्धा भेज दिया।

ससुराल में मेरा यह पहला ही आना था। मन पर माता पिता के धार्मिक संस्कार की छाप थी। जब देखा कि यहां टोंटी का पानी पिया जाता है तो मुझे बहुत क्षोभ हुआ। वहां तो टोंटी के पानी का छींटा लगने से स्नान करना पड़ता था और उसे यहां पीते हैं? पानी भरने वाला जाट था। मैं तो उसे ब्राह्मण समझे थी। जब पता चला तो सोचा मां के पास लौटकर पंचगव्य लूंगी। यहां का खानपान भी जावरा जैसा स्वादिष्ट कहां था? तुअर की दाल मुझे भाती थी, फिर भी खाते समय जावरा की याद आती रहती।

कुछ दिनों बाद होली आई। होली के दूसरे दिन रंग खेला जाता है। नये वर वधू को भी आपस में रंग खेलने के लिए कहा जाता है। मेरी सासूजी हम दोनों को रंग खेलते देखना चाहती थीं। उन्होंने रंग के बर्तन भराकर रख दिये। हम दोनों को बुलवाया गया। जमनालाल जी के हाथ में पिचकारी दी गई और मेरे हाथ में गिलास। हम दोनों आमने सामने कोई आठ

दस कदम की दूरी पर खडे थे। दोना चुपचाप पत्थर की मूर्ति की तरह खडे रहे। कौन रग उछाले ? सासूजी हम दोनो स बार-बार कहती, पर हम तो जस चेतना शून्य हो गये थे। सासूजी जमनालाल जी से कहती, "अरे एक पिचकारी तो छोड दे।" और मुझस कहती 'तू ही एक गिलास उछालकर सगुन कर द।'

सात—

ढाई महीन ससुराल रहकर मैं जावरा लौट आई। मैं जावरा पहुची और फिर पत्र आने शुरू हो गय कि बीनणी को लेने आदमी भेजते हैं। ऐसी चर्चा सुनकर मैं तो सन्न रह जाती। अत म ससुराल से लेने के वास्ते लाग आ ही गये। मैं सोई ही थी मा मरे पास आकर लेट गई और प्यार स हाथ फेरत हुए कहन लगी 'जानी तेन लेने वाला तो आगा।' मैंन सुन तो लिया, पर आख बन्द किये चुपचाप पडी रही। जी भीतर-ही भीतर घुटने लगा। बचपन मे मा की ओर आकर्षण होता ही है। ससुराल मुझे जेल जैसा लगता था। मैंन देखा था कि राधा विधवा होने के कारण मा के पास रहती थी। मैं भी विधवा होती तो मा के पास रह सकती। विधवा किसको कहते हैं इसे मैं थोडे ही जानती थी।

दुबारा ससुराल आने पर सासूजी मुझे बडे लाड चाव करने लगी। मेरे लिए तरह-तरह के गहन बनवाती, बबई से मोती और कपडे मगवाती, गोटा किनारी भी खरीदती। वर्धा से जो भी आदमी बबई जाता उसने साथ सामान मगवाने की फेहरिस्त जाती।

मा से मैंने थाडा-बहुत सीना पिरोना सीख लिया था। दस बरस की बहू सीना पिरोना जाने यह सासूजी के लिए खुशी की बात थी। उसी समय वर्धा म प्लेग फैल गया। बच्छराजजी सपरिवार बगीचे म रहन के लिए चले गय। आज जहा मगनवाडी है वही हमारा बगीचा था। बगीचे म जान के तीसरे दिन ही सासूजी का प्लेग हो गया और वे चल बसी। मुझे मा की याद और ज्यादा आने लगी। इधर जो स्त्रिया बठन आती वे मुझसे कहती पल्लो लिया कर सासूजी, सासूजी कहकर रोदे। मृत्यु के बाद जब लोग 'बठन' आते हैं तब घर की स्त्रिया मर हुए का नाम लेकर रोती हैं। ना रोने पर टीका टिप्पणी भी होती है। मैं तब दस बरस की जब थी, रिवाज का रोना क्या जानू ?

इधर मेरे पर म नारू निकल आया। मेरा पर सूज गया। मेरी यह हालत हो गई कि पाखाना के लिए भी नौकर गादी म उठाकर ले जाता। पीडा मे पीहर की याद और तीव्र हो उठी थी। मैं मन ही मन रोती रहती। जमनालालजी और बच्छराजजी को ज्ञात हो जाता कि मैं पीहर जाने के लिए दुखी हू तो व मुझे भेज देते। पर मैं क्या जानू कि कसे कहा जाय और यह पता भी कहा था कि कहने से कुछ हो भी सकता है।

आठ—

जमनालालजी पाच बरस की उम्र म गाद आये थे। दादीजी का गोद लिया हुआ जवान बेटा शादी के बाद ही चला गया था इसलिए जमनालालजी पर उनका प्यार होना स्वाभाविक ही था। दवयोग कि उनके दस ग्यारह वष के होते-होते दादीजी का स्वगवास हो

गया। इससे जमनालालजी अनमन से रहने लगे। विधवा मा न दादीजी   स्थान लेन की पूरी कोशिश की पर दादीजी जसी प्रौढता तो कठिन थी। दो वर्ष बाद हमारा विवाह हुआ पर विवाह के दस महीने बाद ही मा का भी देहात हो गया।

विवाह के अवसर पर जमनालालजी के जन्मपिता कनीराम जी सपरिवार मारवाड स आये थे। उनके तीन पुत्र थे। पहले माधवलालजी। वे बच्छराजजी के पास वर्धा म काम सीख रहे थे। दूसरे जमनालालजी और तीसरे बद्रीप्रसादजी जो विवाह के समय वर्धा आये हुए थ। मेरे विवाह के बाद वर्धा म ही उन्ह मियादी बुखार हुआ और ६ दिन के बाद ही बद्रीप्रसादजी चल बसे। कनीरामजी के लिए वर्धा म पानी पीना तक असह्य हो गया। कनीरामजी की मानसिक स्थिति को देखकर माधवजी उन्ह लेकर मारवाड चले गय।

दादी और मा के बाद बच्छराजजी ही घर का सारा भार सम्हालन लग। जमनालालजी सोलह सत्रह वष के रहे होगे तभी बच्छराजजी का भी स्वर्गवास हो गया। अब परिवार म हम दोनो ही रह गये। बडे भाई माधवलालजी मारवाड स लौटकर फिर स कारोबार देखन लग। वे बच्छराजजी के हाथ के नीचे व्यावहारिक शिक्षा पा चुके थे। थोडे समय बाद उन्ह भी मियादी बुखार आया और वे भी नौ दिन म चले गये। कनीरामजी पर तो माधवजी की मृत्यु स जसे वज्रपात ही हो गया। जमनालाल न बहुत चाहा कि माता पिता उनके साथ वर्धा चलकर रहे पर कनीरामजी के स्वाभिमान को यह कसे मजूर होता।

इन घटनाओ ने जमनालालजी को और भी सजग बना दिया। वह मौत को सदा सिर पर देखने लगे। उन्होने अपने जीवन म कई बार मृत्यु पत्र बनाये। एक बार तो उन्होंने अपने कमर म तथा अन्य कई जगहो पर लिखवाकर टाग रखा था—एक दिन मरना अवश्य है सदा अन्याय से बचो।

नौ—

जमनालालजी के मामा गिरधीचन्द पोद्दार बगाती थे। व अपने बगीचे म जाकर ध्यानादि किया करते थ। उन्हीकी तरह जमनालालजी भी शिवजी की पूजा अपने बगीचे म करते थे और गोमुखी म माला डालकर जाप करते थे। कमरे म योगियो के चित्र भी टग रहते थे। बाद मे मेरे कहने से उन्होने पूजा का सामान बगीचे से घर मगवा लिया। वे स्नान करके पूजा म बठते और मैं चादी की कटोरी म उनके दाहिने पर के अगूठे को धोकर उस जल को पी लेती थी।

जमनालालजी को मेरा उनकी जूठी थाली म भोजन करना और अगूठे को धोकर पानी पीना असह्य था। जूठी थाली म भोजन करना तो कुछ समय के बाद बद कर देना पडा पर मेरे आग्रह के कारण पादोदक ग्रहण करना चलता रहा। जब व जेल आदि जाते तो उनका पादोदक शीशी म भरकर रख लेती थी और उसके समाप्त होने पर जब जेल म मिलने जाती, दाहिने पर का अगूठा धोकर ले आती। एक बार हम लोग चित्रकूट गये थे तब मैंने वहा की पावन मिट्टी और चरणोदक को मिलाकर पेडे बना लिए थे। आज भी ये पेडे मेरे पास रख है। प्रतिदिन स्नान के बाद एक कण मुह म रख लेती हू।

मेरे पास कामकाज तो कुछ होता नहीं था बाल बच्चे भी बाद में हुए। इसलिए जमनालालजी ने मुझे पढ़ाने के लिए एक मास्टरजी रखी। पढ़ाई मराठी का होती थी। बहुत कोशिश करने पर भी मैं मराठी में बहुत प्रगति नहीं कर पाई। इसके बाद एक पारसी बहन रखी गई। उसे मेरा सामान्य ज्ञान बढ़ाने का काम सौंपा गया। वह मुझे अखबार पढ़कर सुनाती। नई नई बातें व शब्द सुनने को मिलने लगे। मुझे तो केवल सुनना पड़ता था इसलिए इसमें मेरी रुचि भी बढ़ने लगी। उन दिनों मैं परदे में रहती थी। जहा हम रहते थे वहा चौगान में व्याख्यान होते रहते थे। वहा अब गाधीचौक कहलाता है। जैसे-जैसे घर पर बड़े-बड़े लोगों का आना-जाना बढ़ा और मैं भी बाहर आने-जाने लगी तब मुझे बहुत सी बातों का ज्ञान हुआ। जमनालालजी मुझे अपनी डायरी पढ़ने के लिए भी कहते रहते लेकिन वाचन का अभ्यास नहीं था। बाल बच्चे होने पर तो पढ़ाई का सिलसिला टूट ही गया।

साबरमती आश्रम में मैं सभी कक्षाओं में जाती। क्या सितार की क्या गीता की और क्या बापू की! बस मैं प्रथमा की परीक्षा में भी बैठी। उसमें फेल हो गई। फिर मध्यमा में भी बैठी उसमें भी फेल हुई।

दस—

सद्दीबाई धार्मिक वृत्ति की थी। उन्होंने अपने जीवन में धर्म-कार्यों में दिल खोलकर खर्च किया और अंत समय में अपनी रकम में लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर बनवाने के लिए कहकर सिधारी। उनका एक लाख रुपया दूकान में जमा था। जमनालालजी को यह बात याद थी। उन्होंने मंदिर का काम शुरू करने के लिए दादाजी से मंजूरी ली और काम शुरू हो गया। जैसे जैसे मंदिर का काम बढ़ने लगा, बच्छराजजी उसमें दिलचस्पी लेने लगे थे।

सद्दीबाई जी ने मंदिर के लिए एक लाख रुपया छोड़ा था, लेकिन काम शुरू होने पर हम सब उसमें इतने लीन हो गये कि लगभग पौने दो लाख रुपया खर्च हो गया। भविष्य में मंदिर का खर्च अच्छी तरह चलता रहे इसलिए मंदिर के लिए ट्रस्ट बनाया गया और मंदिर के नाम पर काफी जायदाद कर दी गई। ट्रस्ट अब तक चल रहा है।

बच्छराजजी को दम की बीमारी थी। मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद एक दिन उनको अचानक हिचकी आई। प्राण मंदिर की सध्या आरती के समय निकले।

उनकी मृत्यु के बाद गरीबों को खिलाना शुरू हुआ जो बारह दिन तक चलता रहा। बारहवें दिन जातिवालों को जिमाया गया। उस जमाने में इस तरह का भोज प्राय सभी जगह होता था। बहुत से लोग मिठाइयां लोटे में और बहनें घाघरों में छिपाकर ले जाती थीं। एक बहन के घाघरे का तो लड्डुओं के बोझ से नाड़ा टूट गया। चालीस लड्डू गिरे। जमनालालजी को मालूम हुआ तो उनके दिल पर बड़ा भारी असर हुआ। उन्होंने सोच लिया कि दान और दक्षिणा लेने वाले में दीनता आती है और देने वाले में अहकार। इसी कारण जब उनके पिता कनीरामजी की मृत्यु हुई तो उन्होंने जीमने आदि का कार्यक्रम नहीं होने दिया। जमनालालजी ने कनीरामजी के नाम पर सीकर में हरिजनों के लिए एक पाठशाला खुलवा दी। यह कनीराम हरिजन पाठशाला आज भी अपना काम कर रही है।

ग्यारह—

तब मेरी उम्र तेरह चौदह वर्ष की रही होगी एक दिन हमारे यहां एक महमान आये। उनकी कमर में सोने की तागडी थी। मैंने सोचा अपने यहा तागडिया पडी हुई हैं जमनालालजी भी पहनें तो अच्छा। उन्होने कहा सोना भगवान का रूप है उसे कमर के नीचे कैसे पहनू। आगे चलकर अग्रवाल महासभा में जमनालालजी ने तागडी के बारे में भाषण दिया। तब से बजाज परिवार में तागडी बनवाने की बात भी समाप्त हो गई।

तागडी ही क्या एक दिन तो ऐसा आया कि सारे गहनों का त्याग कर देना पडा। बापू ने बहनों से कहा कि जेवर मत पहनो। जमनालालजी ने मुझे पत्र में बापू का यह आदेश लिख भेजा। यह बात रूबरू कहते तो मैं शायद उनसे बहस भी कर बैठती। पर चिट्ठी तो वेद वाक्य जैसी थी। चिट्ठी सामने थी और मैं एक एक गहना उतारकर रखती जा रही थी। मारवाडी समाज में सभी स्त्रियों को पैर में चादी की कडी तो पहननी ही पडती है। कडी निकालने पर लोगों को अचरज हुआ। कई बहनें मुझे बिना कडी पहने देखने को भी आइ।

कुछ दिनों बाद मंदिर में चोरी हो गई। बापू को पता किया गया तो उन्होंने कहा कि अगर भगवान जेवरों से राजी होते तो चोरी क्यों होती भगवान को जेवर पहनाना बंद करो। पुजारियों को समझाया गया और भगवान को जेवर पहनाना बंद कर दिया गया।

बारह—

वर्धा में अग्रवाल महासभा का अधिवेशन होने वाला था। जमनालालजी ने अपना जो भाषण तैयार किया था उसमें पर्दा प्रथा का विरोध था। जमनालालजी जो कुछ कहते थे उसकी शुरूआत घर से करते थे। हमारी स्थिति बडी विचित्र हो गई। घूघट का संस्कार पुराना था। राजस्थान में घूघट प्रतिष्ठा, सभ्यता और कुलीनता का चिह्न माना जाता था।

एक दिन जमनालालजी ने हमसे कहा आपणे घर में घूघट छोडनो है शुरूआत काकाजी (कनीरामजी) से करनी है। हम उनके पास कैसे जाती? सुनकर पसीना पसीना हो गई। किसी तरह मैं अपनी देवरानी (गंगाबिशन बजाज की पत्नी) के साथ उनके पास गई। उन्होंने हमको आशीर्वाद दिया 'सुखी रहो बेटा।' वे भी पसीने से तर हो गये।

इसके बाद माथे पर बोर लगाना छूटा और घाघरे भी छूटने लगे। चार सौ कलियों तक का घाघरा तो मैं पहन चुकी थी। पूरी तरह घूघट छोडने में बहुत दिन लगे। अहमदाबाद कांग्रेस के समय भी कुछ घूघट था। पूरी तरह तो वह तब छूटा जब हम साबरमती आश्रम में रहने लगे। सन् तैतीस में मुझे कलकत्ता के मारवाडी महिला सम्मेलन में अध्यक्षा बनाया गया। उस समय बापू ने घूघट प्रथा के बारे में पत्र लिखकर बडा सुंदर संदेश दिया था। उसके अंतिम शब्द इस प्रकार हैं क्या सीता घूघट खीचकर रामजी के साथ जंगलों में भटकी होगी? सीता से अधिक पवित्र स्त्री जगत में कभी हुई है पर्दा तोडो धर्म रखो।

मैं मानती हू कि पर्दा छोडना साहस की बात है। उसमें दिल तथा दिमाग खुल जाता है। किंतु सुधार की सार्थकता तभी है जब वह हमको ऊचा उठाये।

तेरह—

जमनालालजी तो स्वदेशी कपडा पहनते थे। पर जब गाधीजी नागपुर काग्रेस के समय वर्धा आये तब मैं भी मोटी साडी पहनकर काग्रेस म गई। जब महादेव भाई ने बताया कि वह खादी नही है तब बात मेरी समझ म आई। काग्रेस से लौटने पर मैंने कुछ सूत कामठी भिजवाया और खादी बुनवाकर मगवाई। जो थान बुनकर आया वह पनहे म छोटा था मोटा भी था पर उसे देखकर जो खुशी हुई उसका वणन करना कठिन है। छोटा पनहा होने के कारण बीच म जोड लगाया गया और उसे हल्दी मे रगकर पहना। खादी की एक ही साडी थी। रात को पुरानी साडी पहनकर सोती और सुबह नहाकर फिर खादी की साडी पहन लेती। फिर अहमदाबाद मे खादी का एक थान मगवाया। अब मेरे पास दूसरी साडी हो गई। जो कपडा बच गया था उसके कपडे बच्चो के सिलवा दिये।

जब खादी पहनना शुरू किया था तब हमारे यहा घूघट था। मोटी खादी के कारण घूघट म से देखने म बहुत कठिनाई होती थी। बापू से पूछा तो बापू ने कहा 'खोजे जाति की औरतो की तरह आखो की जगह जाली लगवा लो। बापू ने यह बात विनोद मे कही थी बडी हसी आई।

बाद म हम अहमदाबाद काग्रेस म गये। वहा खादी प्रदशनी हुई थी। मैंने वहा जी भर कर खादी खरीदी। किंतु बहुत अधिक सामान हो जाने से वह गट्ठा कही छूट गया। जमनालालजी ने सुना तो कहा, 'जो ज्यादा लोभ करते है उन पर ऐसी ही बीतती है। अच्छा ही हुआ। जो ले गया है वह भी खादी पहनेगा। खादी का ही प्रचार होगा।'

चौदह—

हम लोग बबई गये हुए थे। पहले-पहल बापू के दशन मणि भवन म हुए। वे चर्खा कात रहे थे। वर्धा आकर मैंने सानूजी से कहा कि मुझे कातना सिखा दो। मैंने एक चर्खा बनवाया। सात दिन म मैं सूत कातना सीख गई। मन होने लगा कि दूसरो को भी सिखायें। धीरे धीरे घर पर साठ चर्खे इकट्ठे कर लिये और कताई का वर्ग ही शुरू कर दिया।

पहले-पहल सूत की कुकडिया निकालकर बापू के पास भेजी। उन्होने लिख भेजा कि सूत की लपेटकर आटी बनानी चाहिए। तब वैसा करने लगी। सूत के ढेर लग गये। कुछ सूत कामठी बुनने के लिए भेजा। बचा हुआ सूत बाद म विनोबाजी के पास भेज दिया।

सूत टूटना भी बहुत था, उसे जमा करती रहती। इसम तकिये और मसनद भरवाये। लोग उत्साह तो दिखाते थे पर खादी शास्त्र का अभाव होने से अच्छी तरह सूत कातकर कपडा बुनवाने म कठिनाई थी। मुझे अनुभव हुआ कि कताई के काम म मदता का कारण पूनी की भी फशन है। अच्छी साफ पूनी के बिना कातने वाला ऊब जाता है। जब से मैं बजाजवाडी की खेती की ओर ध्यान देने लगी तब से इसका भी ध्यान रखती हू कि पूनी के लिए अच्छे किस्म की कपास बोई जाय और उसे स्वय और बच्चो से चुनवाया जाय। मुझे तो ऐसे काम म प्राथना से भी अधिक आनद आता है।

पन्द्रह—

कांग्रेस के सभासद बनाने की बात सामने आई तो मैं भी उसमें जुट पड़ी। बहनों को घर घर जाकर सदस्य बनाना शुरू कर दिया। मेरे इस काम से बहनों में थोड़ी घबराहट फैली। वे मुझे आते देखकर दरवाजे बंद कर लेती और कहलवा देती कि घर पर नहीं है। सबसे अधिक सदस्य हरिजन मोहल्ले में बने। संस्थाओं में तो हरिजनों के साथ उठना बैठना खाना-पीना होता था पर घर जाकर स्वच्छता आदि के संस्कारों के कारण आज भी इसमें कुछ कठिनाई महसूस होती है।

इसी समय विदेशी कपड़ों की होली की बात सामने आई। घर में, दूकान में, मंदिर में सब जगह विलायती कपड़े थे। जमनालालजी से सलाह की। कपड़ों पर से जरी गोटा किनारी फाड़ फाड़ कर निकाली गई। मन्दिर की पोशाकें भी निकालीं। जहां जो विलायती कपड़ा दीख पड़ा निकाला। घर के कपड़े, दूकान के कपड़े, विवाह शादियों के अवसर पर वर के लिए तैयार किये हुए कपड़े और गनगौर के कपड़े भी निकाले गये। बच्चों ने अपनी गुड़ियों के कपड़े भी लाकर दे दिये। यहां तक कि जमनालालजी के विवाह के समय की पगड़ी बागा आदि शकुन के कपड़े भी निकाले गये। मांगलिक वस्त्रों को होली में होमते हुए झिझक तो हुई पर बाद में मन को पक्का कर लिया। विवाह के समय जो छत्र लगाया जाता है उसे कैसे जलायें? किन्तु मैंने उसे भी जल में मगनवाड़ी के कुएं में गिरा दिया।

होली के दिन सब कपड़ों का इकट्ठा करके जुलूस निकाला गया। गांवों के लोगों ने भी अपने-अपने कपड़े लाकर डाले। होली में जरी के भी बहुत सारे कपड़े थे। होली जल जाने के बाद उसमें से करीब डेढ़ सेर चांदी निकाली गई।

होली की हवा बच्चों तक में फैल गई। मेरी बच्ची ओम उस समय डेढ़-दो वर्ष की थी। वह भी अपने शरीर के वस्त्रों को जो ता चांदी कोनी, ओ तो चांदी कोनी कहकर फाड़ती रहती थी।

सोलह—

१८ मार्च १९२३ की बात है। जबलपुर में कुछ स्वयंसेवक राष्ट्रीय झंडा फहराते हुए छावनी की ओर बढ़ रहे थे। महात्माजी के कारावास दिवस पर यह जुलूस निकला था। पुलिस ने उन्हें उधर जाने से रोक दिया।

राष्ट्रीय सप्ताह में जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड की याद में जब नागपुर में जुलूस निकला और वह सिविल लाइन्स में जाने लगा तब वहां स्वयंसेवकों को पीटा गया। उन्हें पकड़ कर मुकदमा चलाया गया और दो-दो महीने की सजा दी गई।

इस घटना पर विचार करने के लिए वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम में प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी की सभा हुई। आश्रम तब तक आर के बजाजवाड़ी के स्थान पर था जिसे पहले ग्राम का बगीचा कहते थे। सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। सत्याग्रही भेजकर सत्याग्रह को आगे में चलाने का भार जमनालालजी, बाबा साहब देशपांडे तथा भगवानदीनजी ने लिया। १८ मई को सत्याग्रह

नागपुर मे शुरू हुआ। जमनालालजी ने प्रतिदिन कम से कम दस आदमी तैयार करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। उस समय स्वयंसेवक तयार करना बड़ा कठिन था। अगर पुरुष और लड़के तयार हो जाते तो स्त्रिया और मातायें रोकती। इतनी कठिनाइया होते हुए भी जमनालालजी ने काफी स्वयसेवक तयार किये। पर थोड़े ही दिनो मे जमनालालजी स्वय गिरफ्तार हो गये और उन्हे १८ महीने की सजा तथा तीन हजार रुपये का जुर्माना हुआ।

उनकी यह पहली गिरफ्तारी थी। इससे वर्धा भर मे सन्नाटा छा गया। उस समय तक जेल के बारे मे लोगो मे यही मान्यता थी कि वहा तो चोर, डाकू और खूनी अपराधी ही जाते हैं और जेल मे भयानक कष्ट दिये जाते है। जेल जाने वाला समाज की नजरो मे गिर जाता था। देशभक्ति मे भी लोग जेल जा सकते है, इसकी कल्पना जनता को उस समय कहा थी? इस लिए जमनालालजी के जेल जाने की बात मे घर के नौकरो चाकरो तथा गाव के लोगो मे हाहाकार मच गया।

जुर्माना न देने के कारण हमारी मोटर और घोड़ागाड़ी जब्त कर ली गई। पर उनके लिए सारे मध्यप्रदेश मे कोई बोली बोलने वाला न मिला। अत मे मोटर को सौराष्ट्र में ले गये। सौराष्ट्र तब काठियावाड़ कहलाता था और वहा बहुत छोटे छोटे राज्य थे। किसी एक राज्य के अंग्रेज अधिकारी को वह मोटर कुछ सौ मे बेची गई।

जमनालालजी की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रह का काम सरदार वल्लभभाई पटेल ने सम्हाला। चारो ओर से जेल जाने के लिए लोग आने लगे। कुछ स्त्रियो के साथ बापूजी के कहने से कस्तूरबा और मणिबहन पटेल सत्याग्रह के लिए पहुची। यह सत्याग्रह बड़ा सफल रहा। सार्वजनिक रूप से किया गया यह पहला सत्याग्रह कहा जा सकता है। जब जमनालाल जी को १८ महीने की सजा हुई तो राजगोपालाचारी ने कहा कि आज वर्धा ऐसा लग रहा है मानो राम वनवास गये हो।

अंत मे सत्याग्रह की विजय हुई और गोकुल-अष्टमी के दिन सबके साथ जमनालालजी जेल से छूटे। गाव भर मे आनंद की लहर दौड़ गई। लोग सड़को पर उत्साह से इधर उधर घूमने लगे और कहने लगे, कृष्ण जन्मला आणि सेठजी सुटले।

यद्यपि जमनालाल जी को 'ए' श्रेणी मे रखा गया था तथापि उन्होने सबके साथ 'सी' श्रेणी का खाना खाया था। उनके जीवन मे यह पहला ही अवसर था, जब उन्होने बिना घी दूध के केवल ज्वार की रोटी खाई और इतना कष्ट उठाया। इसका शरीर पर ऐसा परिणाम हुआ कि लोगो के लिए उनको देखना भी कठिन हो गया। चर्बी सूख गई थी। कोमल और सुंदर चेहरे पर लाली के बदले कालिमा छा गई थी। दाढ़ी बढ़ गई थी और शरीर सूखकर काटा हो गया था। उन्होने जब घर के कपड़े पहने तो ऐसा लगा मानो किसी के मांगे कपड़े पहने हो।

सत्रह—

मनुष्य मात्र हरि के जन। बापू के इन विचारो को सुनने के बाद जमनालालजी को लगा कि वर्धा का लक्ष्मीनारायण मंदिर हरिजनो के लिए खोल दिया जाय। लेकिन मंदिर-जैसी संस्था पर तो समाज का हक होता है। पांच वर्ष तक मंदिर-कमेटी के लोगो को समझाया पर

वे तयार नही हुए। अत मे जमनालालजी ने आग्रह किया कि मन्दिर हरिजनो के लिए खोल दिया जाय।

तरह-तरह की बातें होने लगी शहर म—सुबह हरिजन प्रवेश होगा मदिर म डडेबाजी होगी बासो से स्वागत होगा वगरा। मैं कुछ घबराई। जमनालालजी स कहा—'लोग बासा स मारेंगे आप ही सबसे लबे हो त आपके ही सिर मे लगेगी।" जमनालालजी बोल— डरन की क्या बात है अच्छा काय तो करना ही है फिर उसकी कुछ भी कीमत क्या न देनी पडे।

दूसरे दिन मदिर म हरिजन प्रवश हो गया। थोडी बहुत ऊधमबाजी हुई। लकिन जसी आशका थी वसा नही हुआ। दो चार आदमी डडे वगरा लकर आये थे और उन्होन विरोध भी किया। लेकिन बाद म तो इन आदमियो का भी ऐसा हृदय-परिवतन हुआ कि बस!

जोशीजी मदिर म कोठार का काम देखते थे लेकिन जब मदिर म हरिजनो का प्रवेश हुआ तब उन्होने बडे दुख के साथ मदिर को छोड दिया। खादी तो पहनते रहे लकिन गाधीजी की भरपेट बुराई करते रहे।

अठारह—

नागपुर के झडा सत्याग्रह के बाद हम लोग साबरमती-आश्रम म रहने के लिए गय। जमनालालजी न सोचा कि आश्रम मे रहन स बालको को विकास क लिए अच्छा शिक्षामय वातावरण मिलेगा हाथ स काम करने का अभ्यास होगा और मैं भी कुछ घर गहस्थी के काम सीख सकूगी।

पीहर म तो करती ही क्या छाटी थी और वर्धा म सारे काम नौकर ही करते थ। इस तरह मेरे जीवन म व्यवस्था आना रह गया था। जमनालालजी भी मरी आदतो और कम जोरियो को जानते थे और इस कारण कुछ परेशान भी थे। मेरी ननद केशरबाई तो हमेशा ही विनोद मे कहा करती— राम मार्यो विधाता भूलगो। तन—मोटयारा की जगा लुगाइ बणा दी। सारी बाता का विचार करके बापू न आश्रम की हद क बाहर लाल बगले के पास एक मकान दिया और कहा कि अलग मकान म रहने से जानकीदेवी सारे नियमो की पाबदी से बच सकेगी और निकट सपक के कारण वातावरण का लाभ मिलेगा और धीरे धीरे नियमो के पालन की ओर बढेगी।

हमन सुना था कि आश्रम म तो साप बिच्छू आदि किसी भी प्राणी को मारना मना है। वहा कुत्ते बहुत थे। हर क्षण कुत्तो से परेशानी रहती थी। रात को बरामदे मे हम सब और पाचो बच्चे जमीन पर ही सोते थे। सबके लिए खटिया का मिलना कठिन था। साप बिच्छू का डर तो बना ही रहता था। सुबह की प्राथना म जाते समय हम बच्चो को कपडे ओढाकर जाते। जब प्राथना स लौटकर आते तो उनके पास रोगी खुजली वाले कुत्ते सोय हुए नजर आते देखकर बडी सूग चढती।

रसोईघर को बद करके रखने की भी हमारी आदत नही थी। मक्खन निकालकर तपेली म रखकर कोठार म दूसरा सामान लेन जाती कि कुत्ते आकर मक्खन ल जाते। मक्खन की तपली देखन जाती कि गुड का डला दूसरा कुत्ता ले भागता। एक दिन आश्रम की वेला बहन

दोपहर का खाना-पीना निपटने पर हमारे यहा आइ। आते ही उन्होने कहा, "अब तक तुम लोगो का खाना ही बाकी है। चलो, मैं रोटी बना देती हू।' इस पर मैं राजी हो गई। मैं बेसन पीसकर लाई तब जाकर कढी बनी। वेला बहन रोटी बनाकर जाने लगी कि इतने मे एक कुत्ता लपककर, जितनी उसके मुह म आइ उतनी रोटिया खीचकर भाग गया। हम सब पहले दिन के भूखे थ, बची रोटिया खाकर भूख बुझाई। वेला बहन न य सारी बातें किशोरलाल भाई से कही। उन्होने नाथजी से कहा। नाथजी ने आकर देखा कि दो कुत्ते एक कमरे म, दो दूसरे मे और बाकी बरामदे म हाजिर हैं। उन्होन छोटे छोटे पत्थरा का ढेर इकट्ठा किया और कुत्तो पर फेंकना शुरू किया। पत्थर इस प्रकार फेंकते थे कि कुत्तो को तो चोट न आती, पर वे डर जाते। कुत्ते सचमुच इतन डर गये कि फिर आना ही भूल गये और हम भी यह सबक सीख गये। बच्चो को भी यह नया शस्त्र हाथ लग गया। बाहर से कठोरता और भीतर से नम्रता का यह गुण हमने प्रत्यक्ष देखा।

उन्नीस—

जब मैं साबरमती रहने गई तब वहा दूसरो को पढते और आश्रम का वातावरण देखकर पढने का मन होने लगा। जहा गीता का वग चलता वहा गीता ले जाती। सितार के वग मे सितार ले जाती। बापूजी जब बहनो का वग लेने तब वहा जाती। बापूजी रामायण आदि वग पुस्तको म स शुद्ध लिखकर लाने के लिए कहते। मैं बडे चाव से शुद्ध और सुदर लिखकर बताने का प्रयत्न करती। कापिया देखकर बापूजी नबर देते थे। वे कापिया अब भी मेरे पास हैं। लडकियो के साथ साबरमती नदी म तैरना सीखने की भी कोशिश करती। मैं सीखने के हर स्थान पर पहुचती। आश्रम की बहनें मुझपर सदा हसती रहती और कहती रहती कि हर वग म जानकी बहन हाजिर रहती है। पर उन उन बहनो को क्या पता कि मैं जहा की तहा ही हू। कृष्णदास भाई गाधी ने सितार की गतें सिखाइ, हार्मोनियम सिखाने का भी प्रयत्न किया, सगीत सीखने की भी कोशिश की लेकिन मेरा हाल तो यह था कि 'आगे पाठ और पीछे सपाट। नया पाठ लेती रहती और पिछला साफ। गीता की पढाई का भी यही हाल हुआ। बहुत बरसो के बाद जब विनोबाजी की गीताई मिली तब गीता का कुछ कुछ अर्थ मेरी समझ म आने लगा।

बडाई के लिए या उत्साह म मैं बापूजी स कहती कि मुझे भी कुछ काम दो। बापूजी ने कहा कि यहा काम तो बहुत है। जाओ गोशाला म सफाई करो। मैंने दूसरे रोज से झाडू देनी शुरू की, पर इसके पहले मैंने झाडू छुई कब थी। इसलिए मुझे देखकर लडकिया हसती और कहती, 'जाओ जानकी बहेन, तम तो काम वधारो छो।' इसी प्रकार रसोईघर म भी लडकिया हसती यो कहती, रेवा दो तमे रोटली वाली नाखो छो। अमे करी लेसू।'

आश्रम म पाखाना-सफाई का काम आश्रमवासी ही करते थे। बापू ने जीवन की साधना की शुरूआत भगी के काम से ही मानी है। जिसको इस काम स ग्लानि हो, भय हो, उसका आश्रम म रहना असभव था। सिर्फ मेहमानो को छूट थी।

मैंने देखा कि वहा तो ब्राह्मण पडित सब बिना हिचक के पाखाने की सफाई करते हैं। मैं भी एक दिन हिम्मत करके गई। मन म उत्साह जो था। नाक पर साडी लपेट ली और चली

गई। मले की बालटिया बास म डालकर दोनों ओर स दो आदमी पकडकर घाट में गने तक ल जा रहे थे। मैंने भी बास का एक छोर पकडा और डरते डरत मुह फेरकर उस गड्ढे तक पहुचा दिया। मैंने मला उठाने और पाखाना साफ करने का काम कर तो लिया पर बालटी पहुंचाने के बाद लौटकर सिर म पर तक रगड रगडकर स्नान किया और गोबर लगाकर हाथ परो की शुद्धि की। पाखाना सफाई का यह मेरा पहला ही मौका था।

बापू का यह तरीका था कि जिसके घर ठहर उसके घर की बहनें चाह तो बापू क लिए खाना ले जाकर दे सकती थी। तयार तो कस्तूरबा तथा आश्रम की बहनें ही करती थी। खाने मे बकरी का दूध, फल और खाखरे रहते थे। बापू नपा-तुला खाना खाते थ। सतरो पर अक्सर झगडा होता था। बापू कहते थ—तीन सतरे छीनना। पर भोजन तयार करने की बारी जिसकी होती वे प्राय तीन बडे से बड सतरे और कभी कभी चौथे को भी पार ले लेते और छीन देत। पर बापू तो सब ताड लेते थे।

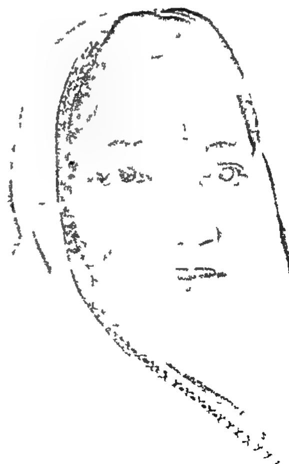
एक दिन तयार की हुई थाली बापू तक पहुचाने के लिए मैंने बा से कहा कि मैं दे आऊ। बा ने मुझ दे दी। छोटी कासी की थाली उसम बकरी के दूध का कासी का गिलास छीले हुए सतरो का कटोरा और एक चम्मच था। ऊपर लकडी की पतली सी थाली ढकने क लिए थी। बा ने तो मेरे आग्रह पर दे दी पर बापू तक पहुचाने क लिए भी तो सलीका चाहिए। बापू ऊपर विनोबा क कमरे मे रहते थे। कमरे तक पहुची ही थी कि हाथ स ऊपर की रखी हुई लकडी की थाली गिर गई और दो टुकडे हो गय। मूर्खता से किये हुए नुकसान का बापू पर क्या असर होगा यह तो सभी जानत थ पर बा का भय मन म अधिक था। डरत डरते बापू के पास गई और दोनो टुकड दिखाकर बोली 'बापू यह तो मुझसे टूट गई। बापू हस तो सही पर बोले तुमसे तो उम्मीद यही थी। पर बा से क्या कहोगी ? मैं बापू की सेवा के लायक साबित नही हुई।

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी बीमार थी। उन्ह टायफाइड था। उनकी सेवा के लिए भाई जमनादास गाधी नियुक्त थे। सरलादेवी ने बापू से शिकायत की कि जमनादास भाई स उनकी सेवा होना मुश्किल है। बापू न अपने पुत्र देवदास स कहा— काल थी देवा तू जशे।' देवदास भाई ने कहा— बापूजी बीजे दिवस भारीपण शिकायत थशे। त्यारे न जवुं सारु। बापूजी हस पडे। दोपहर को श्रीमती सन्तानम की ड्यूटी थी। उनकी भी शिकायत हुई। यह सब देखकर सेवा करने का उत्साह मुझमे जागा। मैंने बापूजी से कहा कि मैं इनकी सेवा म जा सकती हू क्या ? बापू न दूसरे दिन से जाने को कहा। इससे मुझ बहुत खुशी हुई। मेरे मन म सेवा कसे की जाती है यह सीखने की इच्छा थी।

दूसरे दिन स मैं उनकी सेवा म हाजिर हो गई। धूप और अगरबत्ती लेकर धूपदान म आग रखकर मैंने उनके कमरे म सुगध कर दी। मैं डर रही थी कि कही मुझे भी सेवा से हटा न दिया जाय। झाडू भी धीरे धीरे दी। उन्होंने पेशाब का डब्बा बाहर रखने को कहा। मैंने उठाकर बाहर रख दिया। फिर चोटी बनाने को कहा। मैंने चोटी बनाना शुरू किया। उनके बाल बडे लबे थे। चोटी धीरे धीरे की कि कही कोई-कोई बाल खिच न जाय। उनको अच्छा लगा। चोटी बनाते समय रोग क जतु मेरे शरीर म न चल जाय इसलिए साडी का पल्ला नाक पर



सेठानी जानकीदेवी



सेविका जानकीदेवी

गई। मले की बालटिया बास म डालकर दोना ओर स दो आदमी पकडकर खाद के गड्ढे तक ले जा रहे थे। मैंने भी बास का एक छोर पकडा और डरते डरते मुह फेरकर उस गड्ढे तक पहुचा दिया। मैंने मला उठाने और पाखाना साफ करने का काम कर तो दिया पर बालटी पहुचाने के बाद लौटकर सिर से पैर तक रगड रगडकर स्नान किया और गोबर लगाकर हाथ पैरों की शुद्धि की। पाखाना सफाई का यह मेरा पहला ही मौका था।

बापू का यह तरीका था कि जिसके घर ठहरें उसके घर की बहन चाहे तो बापू के लिए खाना ले जाकर दे सकती थी। तयार तो कस्तूरबा तथा आश्रम की बहनें ही करती थीं। खाने म बकरी का दूध, फल और खाखरे रहते थे। बापू नपा तुला खाना खाते थे। सतरों पर अक्सर झगडा होता था। बापू कहते थे—तीन सतरे छीलना। पर भोजन तयार करने की बारी जिसकी होती वे प्राय तीन बडे से-बडे सतरे और कभी कभी चौथे की भी फाकें ले लेते और छील देते। पर बापू तो सब ताड लेते थे।

एक दिन तयार की हुई थाली बापू तक पहुचाने के लिए मैंने बा से कहा कि मैं दे आऊ। बा ने मुझे दे दी। छोटी कासी की थाली उसमें बकरी के दूध का कासी का गिलास छील हुए सतरों का कटोरा और एक चम्मच था। ऊपर लकडी की पतली सी थाली ढकने के लिए थी। बा ने तो मेरे आग्रह पर दे दी पर बापू तक पहुचाने के लिए भी तो सलीका चाहिए। बापू ऊपर विनोबा के कमरे म रहते थे। कमरे तक पहुची ही थी कि हाथ से ऊपर की ढकी हुई लकडी की थाली गिर गई और दो टुकडे हो गये। मूर्खता से किये हुए नुकसान का बापू पर क्या असर होगा यह तो सभी जानते थे पर बा का भय मन म अधिक था। डरते डरते बापू के पास गई और दोनों टुकडे दिखाकर बोली बापू यह तो मुझसे टूट गई। बापू हसे तो सही पर बोले तुमसे तो उम्मीद यही थी। पर बा से क्या कहोगी ? मैं बापू की सेवा के लायक साबित नहीं हुई।

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी बीमार थीं। उन्हें टायफाइड था। उनकी सेवा के लिए भाई जमनादास गाधी नियुक्त थे। सरलादेवी ने बापू से शिकायत की कि जमनादास भाई से उनकी सेवा होना मुश्किल है। बापू ने अपने पुत्र देवदास से कहा— काल थी देवा तू जशे। देवदास भाई ने कहा— बापूजी बीजे दिवस भारीपण शिकायत थशे। त्यारे ने जवुज सारु। बापूजी हस पडे। दोपहर को श्रीमती स तानम की डयूटी थी। उनकी भी शिकायत हुई। यह सब देखकर सेवा करने का उत्साह मुझमें जागा। मैंने बापूजी से कहा कि मैं इनकी सेवा म जा सकती हू क्या ? बापू ने दूसरे दिन से जाने को कहा। इसमें मुझे बहुत खुशी हुई। मेरे मन म सेवा कैसे की जाती है यह सीखने की इच्छा थी।

दूसरे दिन से मैं उनकी सेवा म हाजिर हो गई। धूप और अगरबत्ती लेकर धुपाडे म आग रखकर मैंने उनके कमरे म सुगंध कर दी। मैं डर रही थी कि कहीं मुझे भी सेवा से हटा न दिया जाय। झाडू भी धीरे धीरे दी। उन्होंने पेशाब का डब्बा बाहर रखने को कहा। मैंने उठाकर बाहर रख दिया। फिर चोटी बनाने को कहा। मैंने चोटी बनाना शुरू किया। उनके बाल बडे लबे थे। चोटी धीरे धीरे की कि कहीं कोई-कोई बाल खिंच न जाय। उनको अच्छा लगा। चोटी बनाते समय रोग के जतु मेरे शरीर म न चले जाय इसलिए साडी का पल्ला नाक पर



सेठानी जानकीदेवी



सेविका जानकीदेवी



सरलता की मूर्ति राजेन्द्रबाबू का आतिथ्य



श्रीमा आनदमयी के चरणो मे

रखना चाहती थी, लेकिन डर लग रहा था।

टट्टी पेशाब का कपड़ा तो मैं बाहर रख देती, पर भंगी के हाथ का धोया गीला कपड़ा फिर भीतर कैसे रखूं ? इस दुविधा को मैंने गोमती बहन के सामने रखा। गोमती बहन ने कहा कि जब आप उस काम के लिए गई हैं तब वहां के कपड़े अलग रखो और घर के कपड़े अलग।

जब सरलादेवी को मालूम हुआ कि मैं जमनालालजी की पत्नी हूं तो उन्होंने कहा कि पेशाब के बरतन को बार-बार मत निकाला करो। जब टट्टी हो तो एक बार ही निकाल दिया करो। इससे मुझे खुशी हुई क्योंकि यह काम स्नान के पहले भी हो सकता था।

एक बार साबरमती में किसी निमित्त गीता के १८ अध्यायों का पारायण हुआ। पारायण के शुरू होते ही बापू ने जो आखें मूदी तो आखिर तक मूदे ही रहे, बुद्ध भगवान की तरह न हिले न डुले। मेरी आख बीच-बीच में खुल जाती थी—मैं बापू की तरफ देखती कि उनकी आखें भी खुली होगी। लेकिन हर बार उन्हें बंद ही पाया।

इसी तरह एक दिन सुबह की प्रार्थना में भी १८ अध्यायों का पाठ हुआ। समय की खेंच तो रहती ही थी—पूरा पाठ एक घंटे में खत्म करना था—सो एक लय से काफी तेज गति से पाठ हो रहा था। मैं भी साथ चलने के जोश में थी। प्रार्थना के बाद बापू बोले—तुम्हारा उच्चारण बराबर न थी। उस एकाग्रचित्तता में भी शुद्ध उच्चारण का ख्याल रहता था उन्हें। यह देखकर मैं चकित रह गई।

बीस—

बच्छराजजी के परिवार में संतान की औछत थी। कई पीढ़ियों के बाद हमारी पहली संतान कमला पैदा हुई थी। लोगों ने कहा कि इनके यहां तो लड़की भी होना बड़ी बात है। जमनालालजी तो लड़की की इज्जत ज्यादा करते थे। उन्होंने कमला के जन्म पर चांदी, सोना, जेवर आदि नौकर चाकरों को इनाम में बांटे। उनकी खुशी का पार न था। कमला का लालन पालन भी बड़े लाड प्यार से हुआ।

उस समय की एक बात की जब याद आती है तो बड़ी हंसी आती है। कमला को दो वर्ष की होने तक पानी पिलाने में डरते थे। जब कभी वह कुछ पीने को मांगती तो दूध या फलों का रस ही दिया जाता। जब कमला चार वर्ष की हुई तो उसकी सगाई फतहपुर के नेवटिया परिवार में रामेश्वरप्रसाद से कर दी गई। नेवटिया खानदान समाज में प्रतिष्ठित संस्कारी तथा सुधारक विचार का था। पर जमनालालजी ने चौदह वर्ष की होने पर ही कमला का विवाह करने का निश्चय किया। या नेवटिया-परिवार वाले भी सुधारक तो थे ही। जमनालालजी और केशवदेवजी ने इस विवाह को सुधारक पद्धति से तथा सादगी से करने का विचार किया। पहले यह सोचा गया कि विवाह यदि बंबई में होगा तो उसका समाज पर अच्छा असर होगा। बापूजी ने भी उसकी सम्मति दे दी। लेकिन बाद में जमनालालजी ने केशवदेवजी को साबरमती में शादी करने को राजी कर लिया। बापूजी को भी यह बात पसंद आई। उन्होंने कहा कि आश्रम के वातावरण में शादी होने में वर वधू पर अच्छे संस्कार पड़ेंगे।

नेवटिया कुटुंब का डेरा गुजरात विद्यापीठ में था और हमारा लाल बंगले में। जमना-

लालजी ने मुझे वरपक्ष की स्त्रियो को विवाह के समय आने को आमंत्रण देने के लिए भेजा। मैं गई। मुझे देखते ही वरपक्ष की औरतो ने घूघट निकाल लिये। व बोली 'जी क्या आवें ! वहा आप लोग नेगचार तो करेंगे नही, वहा देखें तो क्या देखें ?'

मैंने आकर सब बात जमनालालजी को बताई। जमनालालजी बोले, 'ठीक है मैं वहा जाकर उनको समझाऊगा।' जमनालालजी वरपक्ष वालो के यहा गये। वहा उन्होंने रामवल्लभ जी तथा केशवदेवजी से बात की। रामवल्लभजी बडे सज्जन पुरुष थे और विचारक भी पर जब तक उनके यहा पर्दा होता था। इसलिए उनके पोते की बहू बिना पर्दे के उनके सामने फेरे म बठे इसमे उन्ह सकोच मालूम हुआ। पर यह उलझन बापूजी ने दूर कर दी। उन्होंने जमना लालजी से कहा कि जब वरपक्ष वालो ने बहुत से सुधार किये हैं तो एक बात उनकी भी हम मान लें।

आज तो यह बात साधारण सी मालूम होती है पर आज से तीस साल पहले मारवाडी समाज की जो स्थिति थी उसमे तो यह क्रांतिकारी कदम ही था पर समधियो के सहयोग स जमनालालजी के लिए यह काम भी सरल हो गया।

शादी मे मारवाडी तरीके के खादी के कपडे पहनकर और नाक तक घूघट निकालकर कमला को चौरी (मडप) मे बिठाया गया। विवाह मारवाडी पडित तथा प० नेकीरामजी ने कराया। बाद म बापूजी ने आशीर्वाद दिया और सादगी स विवाह करने के लिए केशवदेवजी व जमनालालजी की सराहना करके विवाह-संस्कार के महत्त्व को बताया।

समधी तथा समधिनें यह देखकर खुश हुइ। वे कहने लगी कि फेरे तो जसे समाज म होते हैं वस ही हुए। वर के दादा को भी यह सब अच्छा लगा।

डबकोस—

जब साबरमती-आश्रम म नमक-सत्याग्रह की चर्चा चल रही थी तब मैं वही पर थी। कई दिनो तक आश्रमवासियो की महत्त्वपूर्ण सभाए होती रही। बापूजी उनके साथ चर्चा करत रहत। मैं भी चर्चा म उपस्थित रहती। बापूजी ने कहा सत्याग्रह म जिसको शामिल होना हो वह निस्सकोच रूप म शामिल होव। पर उस सर्वस्व त्याग के लिए तयार रहना चाहिए। यह एक गम्भीर प्रश्न है और शामिल होन स पहल अपन घरवालो स पूछकर सलाह मशविरा करके जो अपने को इसम होम सकें व ही अपना नाम दें। जिनकी पूरी तयारी न हो या थोडी बहुत कमजोरी हो वे हिम्मत के साथ साफ-साफ इकार कर दें यह मुझे अच्छा लगगा।

बापूजी के इस निर्णय से आश्रम भर म सनसनी फल गई। बापूजी के साथ जाने वालो की सूची तयार होने लगी। उस सूची म एस लोगो के नाम थ जो स्वराज्य लेकर ही घर लौटेंगे या उस काम म लग जायेंगे एसा व्रत लिये हुए थ। कुल उनासी आदमी तयार हुए। कमल नयन के लिए बापूजी से पूछने गई। बापूजी न कहा कि उसकी उमर अठारह वर्ष स कम है। अठारह वर्ष स कम उमर के एक लडके को लिया गया था। मैंने बापूजी स कहा। बापूजी न जवाब दिया इसे अपवाद रूप म ले लिया है। जब मैंने बहुत आग्रह किया तब बापूजी मान गये।

कमलनयन वर्धा-आश्रम में था। पिछले साल डेढ़ साल से वह मलेरिया और काला आजार से पीडित था। एक सौ तीन चार डिगरी तक बुखार हो जाया करता था। काफी कम जोर था, फिर भी यह समाचार पाकर वह उछल पडा। आश्रम से समाचार आया कि वह आना चाहता है लेकिन उसका स्वास्थ्य बाधक है। मैं तो चाहती थी कि वह बापूजी के साथ जाय पर बापूजी ने कहा, "अभी तो वह बीमार है। अच्छा होने पर बीच में भी टुकडी में ले लेंगे।" जमनालालजी का भानजा प्रह्लाद पोद्दार वहीं विद्यापीठ में पढता था। उसने जाने की स्वीकृति दी, तो उसे शामिल करा लिया।

दूसरे दिन सवेरे बापूजी आश्रम से विदा होने वाले थे। लोग सडकों पर झाडों पर रात से ही बैठे थे। वे शंकित थे कि शायद बापूजी को विदा होने के पहले पकड़ लिया जाये। दूसरे दिन सवेरे की प्रार्थना होते ही वह निकल पडे। विदाई का वह प्रसंग राम-बनवास जैसा ही हृदय को द्रवित करने वाला था। लाखों लोग उनके पीछे भान भूलकर चल रहे थे मानो समुद्र ही उमड पड़ा था। अदभुत था वह दृश्य।

घर का प्रह्लाद टुकडी में था ही। फिर भी मेरी भावना इस दृश्य को देखकर प्रबल हो उठी कि कमल को टुकडी में होना ही चाहिए। मैं जल्दी से जल्दी कमल को टुकडी में भेजने की तयारी से वर्धा आई और सीधी आश्रम में पहुंची। देखा कमल तो बुखार में पडा है। पर मुझे तो एक ही धुन लगी हुई थी। मैं बुखार में ही उसे बजाजवाडी ले आई और टुकडी में जाने के लिए तयार करने लगी। रातो रात तयारी के बाद सुबह की गाडी से ही रवाना होकर उसे बापूजी की टुकडी में दाखिल करा दिया। इधर जमनालालजी तथा किशोरलालभाई को सरकार बाहर कैसे रहने देती। काम शुरू करते ही उन्हें पकड लिया गया। बच्चियों को कन्या आश्रम में रखकर मैं भी विलेपारले पहुंची।

कमलनयन बीमार तो था ही। पैदल यात्रा के कारण उसकी आंखें सूज गई और दाखना बंद हो गया। बापूजी ने डाक्टर से पूछा तो उसने कहा कि इसकी आंखों की ज्योति गई। बापूजी ने आंखों पर मिट्टी बांधने को कहा। अब मैं सोचने लगी कि जोश में मैंने बापू को एक संकट में डाल दिया और बच्चे पर भी एक तरह से जुल्म किया। पर बापू ने प्रेम से यह संकट उठाया। ज्योति लौट आई। अब सवाल था कि कमलनयन का क्या किया जाय? टुकडी में ले जाना तो असंभव था और टुकडी का एक सिपाही होने के कारण वह वापस घर भी कैसे जा सकता था। अतः उसे गुजरात विद्यापीठ को रवाना कर दिया।

इधर विलेपारले छावनी में आकर मैंने देखा कि स्त्री-पुरुषों में बहुत जोश भरा है। सभा व्याख्यान नमक लाने के लिए टुकडियों का आना जाना, ताडी की दूकानों पर धरना देना आदि काम बडे उत्साह से चल रहे थे।

जगह जगह सभाएं होतीं और अच्छे अच्छे कार्यकर्ता और वक्ता पकडे जाते। नये-नये तयार होने लगे। मेरी भी बोलने की बारी आई। मैं हिन्दी, मराठी, गुजराती और मारवाडी भाषाओं में बोलने लगी। मेरी भाषा शुद्ध तो कम होती। पर कम पढे लिखे लोगों और स्त्रियों को मेरी बोलचाल की भाषा में रस आता था। गांव वालों को भी अच्छा लगता था। एक ही सभा में कई भाषा जानने वाले होते थे। सभा में मुझे जिस भाषा वाली बहनें सामने दीख पडती,

उसी भाषा म मैं बोलन लग जाती। 'अंधा म काना राजा' की तरह मेरी पूछ होने लगी। पर मेरा हाल तो भगवान ही जानता था।

एक रोज सुबह पांच बजे मुझे उठाया गया और कहा गया कि स्वयंसेवक धारासणा जा रहे हैं। मैं उनको आशीर्वाद दू। मैं हड़बड़ाकर उठ बैठी और बाहर आई। जोश तो भरा ही पड़ा था, मैंने कहा— भाइयो, जीतकर आओगे तो अमर हो आओगे और मरोगे तो आकाश म तारों की तरह चमकोगे। जब मैं अपने शब्दों पर विचार किया तब मुझे रोना आ गया। इन भाइयों को ऐसा कहने म मुझे क्या जोर लगा ? अगर चमनलाल इस टुकड़ी म होता तो क्या मैं य शब्द बोल पाती ? मुझे यह भी खयाल आया कि मुझम और जमनालालजी म कितना फर्क है कि वह घर लुटते है, और दूसरों को कहते ज्यादा त्याग कराते हैं। मैं दूसरों को झट ही यह देती हू। मैंने कह तो दिया पर म खिन्न हो उठी। इच्छा हुई कि मैं भी धारासणा के लिए रवाना हो जाऊ। अपनी ननद केशरबाई तथा रूपभानजी राजा के साथ धारासणा के लिए रवाना हो गई। रात को तीन चार बजे करसाड स्टेशन पर पहुचे। स्टेशन पर एक गम्भीर और डरावना वातावरण था। अधेर म चारों ओर पुलिसवाले ही दिखाई पड़ते थे। उस गंभीर और अधेर वातावरण म रास्ता बताने वाला भी कौन होता! आखिर तांगे वाले ने ले चलना स्वीकार किया। परन्तु उसने ग्यारह रुपये मांगे। हमने कहा कि जो लेना हो सो ले लेना पर हम ६ बजे से पहले पहुचा दे। लोग धारासणा न पहुच पावें इसलिए रास्ते भर म जगह जगह पुलिस की चौकियां लगी हुई थी। पर लोग जिधर धारासणा म कैम्प लगा हुआ था वहां पहुच ही रहे थे। तांगे या दूसरे वाहन कठिनाई से जा पाते थे। स्त्रियां होने से हमारे तांगे को जाने दिया गया। तांगे वाला भी होशियार था। हम उसने ६ बजने से पांच मिनट पूर्व ही धारासणा कैम्प मे पहुचा दिया।

उस दिन धावे मे सरदार नरहरिभाई परीख थे। उनके सिर म डडे की भयंकर चोट आई थी। उन्हे खून से लथपथ देखकर विट्ठलभाई पटेल स्तब्ध रह गये उनकी भव्य और लंबी सफेद दाढ़ी वाली मुद्रा पत्थर की मूर्ति जैसी लगती थी नरहरिभाई का घाव धोकर मर हम पट्टी की गई, होश म आते ही वह आगे बढ़ने को तैयार हो गये। लेकिन समय हो जाने से सत्याग्रह बंद रखा गया एक अजीब लड़ाई थी वह। कहते है कि लड़ाई म तो दोनों पक्षों की ओर से वार होता है दोनों पक्ष अपनी अपनी बहादुरी के दाव पेंच बताते है और प्रायः समान शक्ति से भिड़ते हैं पर यहा तो एक ओर पुलिस मारने म वीरता दिखा रही थी और दूसरी ओर स्वयंसेवक मार खाने म वीरता का परिचय दे रहे थे।

हम घायलों की टुकड़ी के साथ छावनी लौट आये। विलेपारले छावनी की टुकड़ी ने काफी वीरता दिखाई थी और वहां काम भी बहुत अच्छा होता था। सब बड़े भाई जेल गये थे, और काम भी चलता रहा। आखिर सरकार यह सब कब तक सहन करती, इस काम को सर कार के खिलाफ कहकर छावनी जब्त कर ली गई।

बाईस—

जब विलपारले छावनी जब्त हुई, उस समय मैं माटुंगा में केशवदेवजी नेवटिया के यहां रहती थी। एक दिन पूज्य कस्तूरबा के साथ गोशी बहन, परीन बहन आदि चार पांच बहनें आई और कहने लगीं कि अब यहां बहनें पकड़ी जाने लगी हैं। आप भी पकड ली जायेंगी, जेल का माह छोडो काम चलना चाहिए, इसलिए अगर आप कलकत्ता जाकर विलायती कपड़े के बहिष्कार का काम हाथ में लें तो बहुत अच्छा होगा। वहां के मारवाडी-समाज में आप ज्यादा काम कर सकेंगी।

मेरा अधिक से अधिक उपयोग हो, इस खयाल से परीन बहन और कस्तूरबा आदि के सम्मान पर मैं कलकत्ता के लिए तयार हो गई। कमला मेरे साथ रही। बडी मुश्किल से उसकी सास ने दस दिन के लिए उसको मेरे साथ किया था पर वह दो महीने मेरे साथ रह गई।

हम लोग वर्धा आये। मैंने जाजूजी से कहा कि मुझे कलकत्ता विलायती कपडा बंद कराने के लिए जाना है। उन्होंने कहा कि कलकत्ता भले ही जाओ पर वहां विलायती कपडे का बंद होना मुश्किल है। मैं सोच में पड गई कि अब क्या करूं। बंबई से कलकत्ता के लिए आई और वहां काम की उम्मीद कम ही है। फिर बिना बुलाये जाने पर काम कैसे होगा? इसलिए पहले बिहार जाने का तय किया। मैं कमला, मदालसा व महादेवलालजी सर्राफ के साथ बिहार गई।

उस समय वहां आतंक छाया हुआ था। सभा करना, सभा में जाना, भाषण करने वाला को ठहरने देना आदि अपराध माना जाता था। इस कारण लोग पकडे जाते थे। जुर्माना भी होता था। लक्ष्मीबाबू हमारा इंतजाम करते थे। पर कहीं-कहीं तो ठहरना भी मुश्किल था। धर्मशाला आदि में ठहरना पडता था। गांव में जाने पर सभा की डोंडी पिटवाई जाती। जैसे-तैसे करके कुछ लोग सभा में आ ही जाते। पुरुषों को तो भाषण करते ही पकड़ लिया जाता पर स्त्रियों को पकडने में वहां के अधिकारियों को संकोच होता। हमारी तो जेल जाने की तैयारी थी ही। एक महीने में हम ४५ गांव घूमे। एक एक गांव में लगभग तीन-तीन सभाएं होतीं। एक सार्वजनिक, दूसरी व्यापारियों की और तीसरी बहनों की। महादेवलालजी तो सभा में बोलते ही कैसे? क्योंकि वह जानते थे कि बोलते ही पकड लिये जायेंगे। मदालसा कुछ-कुछ बोलती थी। अधिक तो मुझ ही बोलना पडता था। आखिर मेरा गला बैठ गया। मैं बोलती तो लोगों तक आवाज पहुंचना कठिन था इसलिए एक दिन मैंने कमला से बोलने के लिए कहा।

कमला उसके लिए बडी मुश्किल से तयार हो पाई। आखिर बहुत जोर देने पर एकदम उठी और बोली— 'आप सब लोग बिल्ली की तरह क्या बैठे हो? नेता लोग तो जेला में हैं।' इस तरह वे दस-पांच शब्द बोलकर बैठ गई। यही उसका पहला और आखिरी भाषण था।

घूमते घूमते हम दुमका पहुंचे। वहां हमारे कुछ संबंधी और परिचित लोग थे। लेकिन वे हमें अपने यहां उतारने और खुले दिल से हमारा सत्कार करने में डरते थे। हमने उन्हें अभयदान दे दिया और हम स्वयं ही एक धर्मशाला में जाकर ठहर गये। उन्होंने डरते

डरते किसीके हाथ एक खास किस्म के लोटे म जो कि मारवाडी समाज म शौच जाने के लिए होते हैं गाय का दूध भरकर भिजवा दिया और एक कोने म रखकर इशारा कर दिया। यह भी कहलाया कि अगर दूकान पर आप लोग जायेंगे तो हमारी बडी मुश्किल हो जायेगी। लेकिन हमें तो सब दूकाना पर जाना ही था। लोगा म इतना आतक था कि वहा हमारी सभा हो पायेगी या नही इसम शका हो रही थी। डाडी भी कौन पीटता ? हमस बात करने म भी लाग डरते थ। दूकान से उठकर जात तब उनकी कही जान म जान आती।

बिहार के इस दौरे मे हम बिहार वाला की सरलता नम्रता और भालपन का बहुत अनुभव मिला। या राजेन्द्रबाबू से पुराना परिचय था और उनकी नम्रता सरलता और शात स्वभाव से हम सब परिचित थे पर बिहार आन पर बिहारिया के सदगुणा का और भी अधिक परिचय मिला। दुमका से हम कलकत्ता पहुच। वहा हम बैरिस्टर कालीप्रसादजी खेतान के यहा गय। जमनालालजी उन्हाने यहा ठहरा करत थे। खबर लगते ही सुभाषबाबू मिलने आये। बडे प्रेम से बातें की। उनकी इच्छा मुझे अधिक से अधिक सहयोग देने की थी। मैं तो विदेशी कपडो के बहिष्कार क लिए वहा गई थी। उन्होन इस विषय म सलाह दी और दूसरे लोगो स भी बात की।

एक दिन मैं इसी सिलसिले म दासबाबू (श्री चित्तरजनदास) के यहा गई। उनका तो सन् २४ २५ म स्वगवास हो चुका था। पर उनकी पत्नी वासतीदेवी से बातें हुइ। मुझ पर तो आदोलन का नशा छाया हुआ था। मैंने उनको उपदेश देना शुरू किया। मैंने कहा—आप काम करें और जेल जायें तो लोगो पर बहुत असर पडेगा। उनकी परिस्थिति की मुझ कल्पना ही नही थी। उनके पुत्र का भी देहान्त हो चुका था। विधवा बहू की जवाबदारी भी उन पर थी। इस विपत्ति म भी उन्होने सहज भाव स उत्तर दिया कि विधवा बहू को अकेले छोडना कठिन है। जो महान होत हैं व दु ख म अपनी सहज नम्रता बनाये रखते है।

दो महीने तक मैं वहा रही। और कामो के साथ साथ इन दिनो मैंने वहा खादी प्रचार और परदा निवारण का भी कुछ काम किया।

तेईस—

कमल की जचगी के समय नागपुर की अग्रेज डाक्टरनी मिस एण्डरसन को बुलाया। बहुत सेवा भावी डाक्टर थी। गरीबो की खूब सेवा करती। १५ रुपये फीस थी लेकिन २ रुपये दे दो या कुछ भी मत दो तो वह फिकर नहीं करती। रात भर गरीबा की झोपडिया म बठी रहती। कुरसी की कोई जरूरत नही ईट पर ही बैठ जाती। १६ भाई बहन थ उसके। माता पिता न कहा कि एक बच्चा हिन्दुस्तान की सेवा को जाय तो यह चली आई। ब्याह भी नही किया। बरसा बाद बहना न लिखा—अब वापस आकर देखो तुम्हारे कितने भानजे भानजी हो गये। मिस एण्डरसन न उन्हे जवाब दिया, तुम लोग हिन्दुस्तान आओ। अपने हजारो बच्चे तुम्हें दिखाऊगी।

कमलनयन छोटी उमर म ही विनोबाजी के आश्रम म रहता था। शुरू शुरू म वही एक छोटा लडका विनोबाजी के आश्रम म रहा था। विनोबाजी स्वय उसकी देखभाल

रखते थे और आश्रम के कामों के अलावा उसको लिखाने पढ़ाने का भी खयाल रखते थे। कमलनयन का आश्रम के कामों में तो मन लग गया था, परन्तु लिखने-पढ़ने में उसका मन कम लगता था। जवाहरलाल जी और घनश्यामदास जी कमलनयन की लिखाई-पढ़ाई के बारे में जमनालालजी को ठपका देते रहते थे। एक दिन जवाहरलालजी ने बापू से कह दिया "कमलनयन जमनालालजी का काम कैसे संभालेगा ? इसे बोलना लिखना तो आना चाहिए। गढ़ा खोदने, संडास साफ करने, आटा पीसने, लकड़ा चीरने और रोटी बनाने वगैरा में आगे दुनिया में कैसे काम चल सकेगा ? कुछ पढ़ाई लिखाई भी तो होनी चाहिए। कुछ अंग्रेजी भी तो सीखनी चाहिए। बापू ने कहा—'कमलनयन की इच्छा हो तो पढ़ाई शुरू करवा सकते हैं। अभी तो उसे आश्रम के ही कामों में रस आता रहा है, पढ़ाई में मन कम लगता है। विनोबा कहते हैं कि जब पढ़ाई की भूख लगेगी तब पढ़ लेगा।'

डांडी मार्च के बाद और नमक-सत्याग्रह के दौरान कमल को गुजरात विद्यापीठ में स्वयंसेवक शिविर में रखा गया था। जब सत्याग्रह बंद हुआ तो उसकी इच्छा कुछ पढ़ने की हुई। बापूजी की सलाह से अंग्रेजी पढ़ाने का निश्चय हुआ। श्री वालजीभाई (वालजी गोविन्दजी देसाई) अपने स्वास्थ्य-सुधार के लिए अलमोड़ा जा रहे थे। बापूजी ने कमल को भी उनके साथ कर दिया। वालजीभाई ने काफी परिश्रम उस पर किया। इधर बापू गोलमेज परिषद् (राउंड टेबल कान्फ्रेंस) में चले गये। उनके लौटने के पूर्व ही उत्तर प्रदेश में लगान बंदी आंदोलन छिड़ गया। बापूजी ने आते ही जितने डांडी-यात्री थे, उन सबको साबरमती आश्रम में बुलवाया, जिससे आगे का कार्यक्रम निश्चित किया जा सके। कमल को भी इसी प्रकार का पत्र गया और उसमें ताकीद थी कि उसको सीधे आश्रम में आ जाना है, सत्याग्रह आदि के बारे में सोच लेंगे। कमल वालजीभाई से छुट्टी लेकर साबरमती जाने के लिए निकल पड़ा। दिसम्बर के आखिरी दिन थे। उन दिनों बागेश्वर में, जो कि अलमोड़ा से तीस चालीस मील उत्तर में गोमती और सरयू नदी के संगम पर है, सालाना बड़ा मेला भरा करता है। उस मेले में तिब्बत के भोटिया लोग माल लेकर ऊपर से नीचे आते हैं और गर्मियों के शुरू में यहां से माल लेकर तिब्बत चले जाते हैं। कमल ने सोचा कि अलमोड़ा से नीचे उतरकर बागेश्वर होते हुए चला जाय तो मेला भी देखा जा सकेगा। साबरमती ठीक समय से पहुंचा जा सके, यह हिसाब देखकर वह अलमोड़ा से निकल पड़ा।

मेले के प्रबंध के वास्ते अलमोड़ा से कई कांग्रेसी कार्यकर्ता पहले से ही वहां पहुंच चुके थे। इसी बीच यू० पी० में लगान बंदी आंदोलन शुरू हो जाने से मेले में गये हुए कार्यकर्ताओं को भी जोश था और उन्होंने एक मीटिंग बुलाने का ऐलान किया। मीटिंग का मुख्य उद्देश्य मेले में सफाई की व्यवस्था आदि के बारे में विचार करने का था, फिर भी कार्यकर्ता लोगों का राजनीतिक व्याख्यान करने का भी इरादा था। सरकार ने मेले के दौरान धारा १४४ लगाकर मीटिंग पर पाबंदी लगा दी। जिस रोज मीटिंग होने वाली थी उसी रोज कमल भी वहां पहुंचा। जब कार्यकर्ताओं को उसके पहुंचने की सूचना मिली तो वे सब उससे मिलने आये। वे लोग काफी जोश में थे और धारा १४४ का लगाना अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझकर उसे तोड़ने का निश्चय कर चुके थे। उन्होंने कमल से भी आग्रह किया कि मीटिंग में

बोलना होगा। इससे पहले सत्याग्रह में कई बार पकड़ा गया था परन्तु कम उमर का होने से छोड़ दिया गया था। इस कारण जेल से बचता गया। इसका उसके मन में असंतोष भी था। यहां स्वाभाविक ही उसको अच्छा मौका मिला, ऐसा उसको लगा। परन्तु चूंकि बापूजी का आदेश आ चुका था उसने कार्यकर्ताओं को समझाने का काफी प्रयत्न किया। उसने कहा कि बापूजी के आदेश का तोड़ना नियम के विरुद्ध होगा। उसने मीटिंग में भाग लेने की अपनी लाचारी प्रकट की। पर कार्यकर्ता आग्रही थे। वे बड़ी मुश्किल से इस बात पर राजी हुए। उन्होंने कहा कि कमल मीटिंग में जरूर शामिल हो भले ही भाषण न दे। कमल इस बात को मान गया।

शाम की मीटिंग में सब लोग पहुंचे तो पता चला कि कार्यकर्ताओं ने कमल का नाम भी उससे बिना पूछे ही बोलने वालों में घोषित कर दिया है। यही नहीं पहले से एलान भी हो चुका है और पर्चे भी बंट चुके हैं। यह देखकर उसे ताज्जुब हुआ, पर खुशी भी हुई कि जेल जाने का मौका तो आया। लेकिन दूसरी ओर लाचारी भी महसूस होती थी कि बापूजी ने कानून भंग करने को मना करके सीधे आश्रम पहुंचने को लिखा है। आखिर में बाध्य होकर उसने मीटिंग में बोलना ही ठीक समझा। वहां वह मेले की व्यवस्था आदि के विषय पर ही बोला। उसने साफ जाहिर कर दिया कि बापूजी के आदेशानुसार किसी तरह राजनीति के विषय पर बोलना अनुचित है। लेकिन मीटिंग होने पर अन्य लोगों के साथ कमल को भी पुलिस ने पकड़ लिया।

वहां मजिस्ट्रेट नहीं था। उसे अपने सदर मुकाम से बुलाना पड़ा। तब तक तीन चार रोज सबको हिरासत में ही रखा गया। बागेश्वर में किसी ग्वाले के मकान के नीचे के हिस्से को जहां ढोरों को रखा जाता था हवालात का रूप दे दिया गया। मजिस्ट्रेट के सामने कमल ने अपनी अक्खड़ता के मुताबिक जवाब दिये, जिसकी वजह से उसका मुकदमा करने में मजिस्ट्रेट को बहुत देर लगी। मजिस्ट्रेट उसी रोज मुकदमा समाप्त करके अपने सदर मुकाम चला जाना चाहता था परन्तु रुकना पड़ा। इस नाराजी की वजह से या जो भी कुछ उसको लगा हो उसने कमल को छः महीने की कड़ी सजा कुछ जुरमाना और उसके बदले में सजा तथा 'सी' क्लास दिया। दूसरे रोज सबको पैदल ही सोमेश्वर तक लाया गया और वहां से बस द्वारा अलमोड़ा की जेल पहुंचा दिया गया। अलमोड़ा में कोई पन्द्रह रोज रखा फिर हरदोई जेल में, जहां छोटे लड़कों के लिए प्रबंध था, कमल व दूसरे एक साथी लड़के का तबादला कर दिया गया। हरदोई जेल में वह करीब चार-पांच महीने रहा। उसमें अधिकतर तो उसका समय 'सी' क्लास में ही बड़ी सजा के साथ कटा। करीब १७ वर्ष की उम्र में उसका ४२ पौंड वजन घट गया। इस बीच असेम्बली आदि में सवाल-जवाब होने की वजह से उसे करीब दो-तीन हफ्ते अस्थायी तौर पर 'बी' क्लास दिया और बाद में 'ए' क्लास कर दिया गया। उसके बाद उसको बरेली डिस्ट्रिक्ट जेल में भेज दिया गया। बरेली में 'ए' क्लास रहने से खुराक कुछ अच्छी मिली। आराम और अच्छे साथियों में रहने से (साथियों में श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित के पति श्री आर० एस० पण्डित भी थे। इनसे कमल का काफी निकट का परिचय था ही) उसके खोये हुए वजन में पन्द्रह-बीस पौंड वापस मिल गये। जेल में सजा का बाकी भाग पूरा करने के लिए करीब एक महीना ही रहना पड़ा। जुरमाने की वसूली में पुलिस ने वर्धा की दूकान पर जाकर

कई चीजें जब्त कर ली और उनको बेचकर किसी कदर जुरमाना वसूल किया।

जेल से छूटा पर उसने हिंदी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा की परीक्षा दी और १६३२ का सत्याग्रह बन्द हो जाने पर बापूजी की सलाह से प्रोफेसर जे० जे० वकील के स्कूल म पूना और विलेपारले म करीब साल भर पढ़ाई की और फिर हिंदी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा की परीक्षा दी। १६३५ म बापूजी न उसको अगरजी के अभ्यास के लिए सीलान भिजवा दिया। इसी बीच कलकत्तावाले श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार की लड़की के साथ उसकी सगाई की बातचीत चली।

सावित्री बहुत सुदर थी, इसलिए मेरा मन तो उसकी ओर झुका हुआ था, पर काफी दुबली होने से मन म डर भी था कि इसके बाल-बच्चे कैसे होंगे ?

लड़की वाला के विशेष आग्रह पर बापू न सगाई पक्की कर दी। कलकत्तावाला की स्वाभाविक इच्छा थी कि शादी ठाट-बाट स हो बारात म काफी लोग आवें। बापूजी स सलाह करके बारात म पद्रह आदमी ल जाना तय किया। जब पद्रह की सख्या म जिनम कि आधी स्त्रिया होंगी बहुता को निराशा हुई और कुछ को तो बुरा भी लगा।

विवाह म खादी का प्रयोग होना ही था। सावित्री की इच्छा जरी की साड़ी पहनने की थी। सो चखा-सघ को खास आडर दकर जरी की साड़ी मगाई गई।

लड़की वाला न कमलनयन के लिए खादी के ही कपड़े बनवाये। रेशमी शेरवानी और जरी का साफा। कलकत्ता से एक स्टेशन पहले ही वे कपड़े लेकर आये और उन्होंने चाहा था कि उन कपड़ों को पहनकर ही वह स्टेशन पर उतरे, पर कमलनयन वधा स ही सफेद कुर्ता धोती, टोपी और केसरिया दुपट्टा लगाकर रवाना हुआ था और इसी पोशाक म वह कलकत्ता उतरा। उसका कहना था कि खादी के सादे, अच्छे और सफेद कपड़े ही धार्मिक विधि के समय होन चाहिए। विवाह का वेदी पर भी उसन यही कपड़े पहन।

स्टेशन पर बारात के स्वागत का पूरा इतजाम था। पर जब बारात म तेरह आदमी देखे तो लड़कीवाला का उत्साह ठडा हो गया क्योंकि उन्होंने बड़ी तयारी का थी और समझा था कि कम से-कम पचास-साठ लाग तो होंगे ही।

सुबह हम लोग पहुचे और शाम का छह बजे फेर हुए। दूसरे ही दिन हमें रवाना होना था। बिड़लाजी अपने यहा पार्टी देना चाहते थे। लड़की वाले अपने यहा जिमाना चाहते थ। जमनालालजी न कहा कि हमको तो यहा एक भोजन करना है, कहीं भी हो। आखिर बिड़लाजी के यहा पार्टी हुई। लड़की वाल परिवार के सब लोगों के लिए कपड़े वगरा देना चाहते थे। लेकिन हमन लन से इनकार कर दिया। रामकृष्ण के लिए भी उन्होंने कमल के समान ही कपड़े और जेवर बनवाये थे, पर हमने कहा कि हम तो केवल वर के पाच कपड़े ले सकते हैं। मिलनी आदि के लगचार हमने छोड़ दिये। कमलनयन अभी तक टीके का एक ही रुपया—शकुन के तौर पर लेता रहा।

चौबीस—

इधर सत्याग्रह चल रहा था, उधर मैं विदेशी कपड़े के बहिष्कार शराब की दूकानों पर

पिकेटिंग आदि के कामों में लगी थी। जनवरी के दिन थे। लंदन में हो रही गोलमेज-परिषद खतम हुई। बापूजी तथा और बड़े-बड़े नेता जेल से छूटे। गांधी इर्विन समझौता हुआ। कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। बापूजी दूसरी गोलमेज परिषद में विलायत गये। वहां से खाली हाथ लौटे और सत्याग्रह फिर शुरू हो गया। बापूजी तथा सारे नेता लोग गिरफ्तार हो गये। मैं भी सत्याग्रह के काम में लग गई। इस बार वर्धा में बहनों को इसमें भाग लेने के लिए तैयार करने लगी। वर्धा के मूलचंदजी भैया की मां भी जो पर्दे में रहने वाली और पुराने खयाल की मारवाड़ी महिला थीं जेल जाने को तैयार हो गईं। मुझे जेल जाने की और बहनों को जेल के लिए तैयार करने की ऐसी धुन लगी जैसे पीहर जाने का ही उत्साह हो। मेरा यह काम जोर से चलने लगा तब सरकारी अधिकारियों ने मेरा बाहर रहना खतरनाक जानकर गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन जेल में ही मुकदमा हुआ और छह महीने की सजा दे दी गई।

जब तक मैं वर्धा जेल में रही तब तक खाने का डिब्बा घर से आता रहा। कुछ दिन पहले ही कमला के लड़का हुआ था और वह वहीं थी। उसका भी रह-रहकर ध्यान आता था। कुछ दिन वर्धा रहने के बाद नागपुर बदली का हुक्म आया। उस दिन रात को सोई तो सपने में कमला के बच्चे को झूला झुलाने लगी।

अब मैं नागपुर जेल में थी। वहां के सुपरिण्टेण्डेण्ट अनुशासन के बड़े कठोर थे और कैदी उन्हें जालिम कहा करते थे। मैं वहां ए क्लास में थी। उन्होंने मुझसे आवश्यक सामान आदि के बारे में पूछा। मैंने कह दिया— और तो जो कुछ है उसी में चल जायगा, लेकिन मेरा गाय के ही घी दूध का नियम है। उन्होंने कहा कि गाय का दूध तो यहां से दिया जायगा, घी घर से मंगवा सकती हो।

ठंडा तथा रूखा खाने से मुझे दिन में तीन-तीन, चार-चार टट्टियां और उल्टियां होने लगीं। बुखार भी आने लगा। डाक्टर ने दवा देने को कहा, पर मैंने दवा लेने से इनकार कर दिया। मेरी तबीयत दिन पर दिन बिगड़ती ही गई। कोठरी का ताला शाम को पांच बजे बंद हो जाता। रात को कोठरी में ही जो कमोड रखा जाता था उसीमें बार-बार टट्टी जाना पड़ता था। सात दिन में मेरा सत्रह पौंड वजन घट गया।

जेल के अधिकारियों ने सी क्लास की एक बहन को मेरे साथ रहने की अनुमति दे दी थी। मैंने मूलचंदजी भैया की मां को अपने पास बुला लिया। इनकी सेवा और दुर्गाबाई जोशी के इलाज से ही मैं उस समय बच सकी। दोनों की सेवाओं को मैं कभी भूल सकती हूं!

कुछ दिनों बाद खबर मिली कि बजाजवाड़ी, मगनवाड़ी और महिलाश्रम तीनों संस्थाएं जब्त हो गईं। तीनों जगह पुलिस की लारियां गईं और वहां का सामान उठाकर ले गईं। मुझपर सरकार ने एक हजार का जुरमाना किया था। हम वह देना नहीं था। अधिकारी जब्ती करके चाहे जो ले जायें। बजाजवाड़ी में रात को गऊ साथ हुए थे। मेरी ननद गुलाबगौरी राजस्थान से आई थीं। पुलिस ने सारा सामान जब्त करके मुहर लगा दी। बजाजवाड़ी की १०-१२ गायें भी जब्त हो गईं। पुलिस जब गायों का दूध बेचने हलवाइयों के पास गई तो उन्होंने जमनालालजी की गायों का दूध किसी भी भाव खरीदने से इनकार कर दिया। मुफ्त में भी वे दूध नहीं लेते थे। जब तक घास चारा था तब तक तो गायों को मिलता रहा। बाद में

बंद हो गया। पर पुलिस को क्या चिंता! बेचारी गायें भी भूख के मारे सूख गई। वे भी मानो जेल भाग रही थीं।

दूकान में बड़ी-बड़ी तिजोरियां थीं उनको उठाकर ले जाना हंसी खेल थोड़े ही था! दो चार आदमियों के बस की बात नहीं थी। पुलिस वाले सुबह से शाम तक सिर पटककर हैरान हो गये। उन्हें तिजोरी उठाने के लिए कोई हमाल नहीं मिला। तिजोरियों को उठाने का एक तरीका होता है और यह काम हमाल लोग ही कर सकते हैं। हमालों ने साफ कह दिया कि हम जमनालालजी की तिजोरियां नहीं उठावेंगे। पुलिस वाले उनको दस रुपये रोज तक की मजदूरी देने को तैयार थे परंतु हमालों में भी उस समय चेतना उमड पड़ी थी और देश हित के लिए उन्होंने सरकार का साथ देने से इनकार कर दिया। आखिर शाम को पुलिस के अनेक सिपाहियों ने मिलकर किसी तरह तिजोरियां उठाईं। लेकिन इस काम में पुलिस वालों के अंगूठे पिचक गये दरवाजों की चौखटें टूट गई फर्श फूट गया। जैसे तैसे उन्होंने तिजोरियां बाहर पटकीं। पांच महीने तक तिजोरियां सरकार के कब्जे में रहीं। उनमें लोगों का सबधियों का बहुत-सा जेवर पड़ा था। शादी-ब्याह का मौसम था, गहनों की जरूरत थी, पर किया क्या जा सकता था?

पच्चीस—

दूसरी लड़की मदालसा बचपन से ही आश्रम के वातावरण में रही थी। विनोबाजी के पास रहने के कारण उसमें अत्यंत सादगी और श्रमशीलता आ गई थी। शहरी या घर गृहस्थी के प्रपंच से भी वह दूर रही।

एक बार महिलाश्रम की लड़कियों के माथे में जुएं पड़ गई। बापू ने कहा कि बाल निकाल दो। लेकिन लड़कियां के बाल कैसे काटे जायें? बापू ने कहा तो सही पर तैयार कौन हो? लड़कियों को मां-बाप की इजाजत चाहिए! लेकिन मैंने तो मदालसा को बापू के सामने कर दिया। और कहा, 'बापूजी, इसके बाल काट सकते हैं।' बापू को क्या था, उन्होंने मशीन ली और अपने कांपते हुए हाथों से चलाने लगे। पूरा मुंडन मनु गांधी ने किया।

मैं उसको लेकर बजाजवाडी आई। सामने ही कुरसी पर दादीजी बैठी थीं। मदालसा को इस तरह देखकर वे रोने लगीं। जमनालालजी को भी इससे रंज हुआ। वह धीमे से बोले "बाल काटने की क्या जरूरत थी?" पहले तो मैंने कह दिया कि क्या हुआ काट दिये तो? घास है, फिर उग आयगी। पर बाद में मुझे भी बुरा लगा कि ब्याह योग्य लड़की के बाल कटाने की बजाय अपने कटाती तो विशेषता थी। पर मदालसा तो शुरू में ही उदासीन मीरा-सरीखी थी। इन सब बातों के होते हुए भी वह निर्विकार ही रही।

लखनऊ की कांग्रेस में श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल पर जमनालालजी की निगाह पड़ी। श्रीमन्जी उस समय विलायत से लौटे थे। जमनालालजी ने सोचा कि इस लड़के को ध्यान में रखना है। वह श्रीमनजी को वर्धा लाये। श्रीमन्जी काफी पढ़े लिखे होने पर भी विनम्र थे। उनकी बुद्धि तेज थी। जिस काम को हाथ में लेते, उसे बड़ी लगन से करने की आदत थी। जमनालालजी ने उनकी रुचि और योग्यता का काम उनको सौंपा। वे मारवाडी विद्यालय का

काम देखने लगे। श्रीमनजी डेढ़ वर्ष तक वर्धा रहे। वे तो सबको पसंद आ गये। बापू ने भी कहा कि लड़का तो ठीक है। बापू और विनोबा की अनुमति मिल गई।

उस समय मदालसा सफेद कपड़ों में रहती थी और बाल भी काटे हुए थे। जब श्रीमन्जी से पूछा गया तब उन्होंने मदालसा के इस वेश को देखकर कहा कि क्या यह इसी वेश में रहेगी? जमनालालजी ने हंसते हुए कहा कि शादी के बाद तो वह ढंग से ही रहेगी।

जमनालालजी मदालसा और श्रीमनजी को साथ लेकर कलकत्ता कमलनयन के विवाह में पहुंचे। वहीं पर जमनालालजी ने कमलनयन के फेरे होते ही मदालसा की सगाई का टीका कर दिया और सगाई के दस दिन बाद ही वर्धा में ब्याह हुआ। उस समय बंगले पर कांग्रेस कार्य समिति की बैठक चल रही थी। देश के बड़े-बड़े मेहमान घर पर ही थे।

सुबह गांधी चौक में सात बजे विवाह करना था। गांधी चौक में ही हम रहते थे। तीन पीढ़ी में लड़की का ब्याह घर पर करने का यह पहला मौका था।

सुबह दही और तेल लगाकर मैंने मदालसा को नहलाया और मंडप में ले गई। उस समय उसकी हालत यह थी कि मानो सूली पर चढ़ाई जा रही हो। उसका लाल चेहरा जैसे फटा जा रहा था। फेरों के बाद उसने बापूजी को और बा को प्रणाम किया। उसने अपने ससुर को प्रणाम करके जैसे ही सास को प्रणाम किया उन्होंने मदालसा को छाती से लगा लिया। इससे मदालसा को मानो आत्मीयता मिल गई। इस समय मदालसा के चेहरे और आंखों के भावों को पढ़कर कहा कि इसकी मां तो इसके लिए सास के समान है, मां तो इसने आज पाई है।

छब्बीस—

जमनालालजी की पत्नी होने के कारण देश में मेरा नाम भी बहुत से लोग जानने लगे थे। मिश्री के साथ सूत भी मीठा हो जाता है और मिश्री के भाव बिकता है। लेकिन जिस कारण मेरी प्रसिद्धि रिश्तेदारों के बीच है, वह तो है कंजूसी। इस कंजूस वृत्ति के कारण मेरा मजाक भी होता है। लोग परेशान भी होते हैं, उलाहना भी देते हैं लेकिन जो स्वभाव बन गया है उससे छुटकारा पाना भी मुश्किल ही है।

जब मैंने अपने पोते राहुल से पूछा कि 'बेटा, बताओ तुम्हारे मन पर मेरी कौन-सी बात जमी है?' तो उसने कहा, 'आपके कंजूसपने की। जब दादाजी (जमनालालजी) गोपुरी में रहते थे और हम उनके पास जाते थे तब वह हमें ग्रामोद्योग का गोरसपाक देना चाहते थे, लेकिन आप रोक देती थीं।' तीन-चार वर्ष की अवस्था की वह बात अब भी उसको याद है।

बापू भी 'कंजूसों के सरदार' के रूप में प्रसिद्ध थे। लेकिन उनमें और मुझमें जमीन आसमान का अंतर है। बापू अपनी कंजूसी को ऐसी कलात्मक रूप देते कि सामने वाला भी संतुष्ट हो जाता और सबक सीखकर लौटता। फिर भी इतना समाधान अवश्य है कि इतनी बड़ी दुनिया में कम-से-कम बापू ने तो मेरी कंजूसी की सराहना की थी। कंजूस की भाषा कंजूस ही समझ सकता है। उन्होंने तो मुझे सर्टिफिकेट भी दिया था।

बापू का एक कंबल छलनी-जैसा हो गया था। मैंने वह रफू करके और उस पर खादी

मीकर उनके पास भेज दिया। लदन की गोलमेज परिषद् म जब वह गये तब वही कबल उनके पास था।

मेरे कम खर्चीले स्वभाव के कारण साथवालो को कभी-कभी बडी परेशानी हो जाती। एक बार स्टेशन जाना था। दोपहर का समय था। मेरे साथ ननन्दोई हेडराजजी भी थे। मुझे तो धूप म चलने की आदत थी पर वह बहुत परेशान हो गये। स्टेशन पहुचते-पहुचते वह तो पसीने से तर हो गये। बोले—'आगे से सेठानीजी का साथ राम ही बचाये! बडी कजूस है।' उनका गरम होना स्वाभाविक था।

और तो क्या, आज भी जमनालालजी सपने म मुझे कजूसी का उलाहना देते दिखाई देते हैं। अभी-अभी की बात है कि उन्होंने मुझे स्वप्न म कहा कि देखो, देखो मेहमान आये है, उन्हे अच्छे-अच्छे फल देना। उन्होंने यह कहा तो, फिर भी उनको माना लग रहा था कि इसम यह होगा भी?

सत्ताईस—

– नामक-सत्याग्रह के बाद बापू ने प्रण किया कि आजादी मिलने पर ही साबरमती लौट सकते हैं। तब प्रश्न उठा कि अब बापू कहा रहे? बापू को तो सभी प्रात वाले अपने यहा बुलाने को उत्सुक थे, पर गुजरात वाले और खासकर सरदार चाहते थे कि बापू गुजरात मे ही रहे। उनका कार्यक्षेत्र भी प्रारभ म गुजरात ही रहा था। गुजरात के लोगो की उन पर अटूट भक्ति थी। उनके कार्यों और आन्दोलनो को गुजरात ने शुरू से ही अपनाया था। इसलिए सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रयत्न किया था कि बापू गुजरात म ही रहे और वहा आश्रम को अपना केन्द्र बनावें। पर जमनालालजी बापू को वर्धा लाना चाहते थे। यद्यपि महाराष्ट्र म गाधीजी के सिद्धातो के अनुकूल वातावरण का अभाव था, फिर भी जमनालालजी के कारण उन्होंने वर्धा को पसद किया। जमनालालजी विनोबा, काका कालेलकर आदि को पहले से ही वर्धा ले आये थे। जगह जगह म और भी गाधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ताओ को लाकर अनेक काम शुरू करवा दिये थे। धीरे धीरे ऐसा वातावरण पैदा हुआ कि बापूजी ने वर्धा को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

बापूजी को वर्धा म बसाने म जमनालालजी की मनमानी बात तो हो गई लेकिन उनकी जिम्मेदारिया बहुत बढ गई। बापू के विधायक काम ठीक तरह से चले, इसलिए साधन और व्यक्तियो को जुटाना तथा आने-जानेवाले मेहमानो की अच्छी व्यवस्था रखना एक बडा सवाल था। परन्तु वह इस काम म जुट गये अपने आपको उन्होंने बापू म ही मिला दिया—वे बापू म ही लीन हो गये। गाधीजी को वहा बसाने पर ग्रामोद्योग के लिए जमनालालजी ने अपना बगीचा उनको सौंप दिया। जब जमनालालजी ने यह बगीचा गाधीजी को सौंपने का निर्णय किया तब दूकानवाले सभी लोग नाराज हो गये और उनमे खलबली मच गई कि यह गाधी कहा से आ गया? इससे तो जमनालालजी अपना सब कुछ लुटा देंगे। वे गाधीजी तथा उनके कामो के महत्त्व को क्या जानें?

बगीचा सौंपने के बाद बापूजी ने जमनालालजी से कहा कि खादी के साथ-साथ ग्रामो

द्योग भी चलाने होंगे। हम गांवों को स्वावलंबी बनाना है। इसलिए वर्धा में ग्रामोद्योगों के प्रयोग शुरू करना तय हुआ। गांधीजी के एकनिष्ठ कार्यकर्ता और भतीजे श्री मगनलाल गांधी की मृत्यु बिहार में पहले हो गई थी। जमनालालजी को इसका काफी रंज हुआ था और वह मगनलाल की स्मृति के योग्य स्मारक बनाने की सोचते रहते थे। इसलिए उन्होंने उस बगीचे का नाम मगनवाड़ी रखने की घोषणा की और वहां बापू का भी पधारना हो गया। ग्रामोद्योगों के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और कार्यकर्ता श्री जे० सी० कुमारप्पा ने बापूजी के साथ काम करना पसंद किया।

बापू को जगह-जगह से हाथ की बनी चीजों की भेंटें मिलती थीं। उनके लिए संग्रह योग्य स्थान की जरूरत थी। इसलिए मगनवाड़ी में ही एक संग्रहालय बनाया गया, जिसका नाम भी मगन-संग्रहालय रखा गया। उसमें गांधीजी की भेंट में मिली वस्तुओं के साथ-साथ खादी और ग्रामोद्योग की सारी सामग्री रखी गई। बापू भी आनेवालों से कहा करते कि मगन संग्रहालय देखें।

उन दिनों बापू ग्राम-उद्योग और गांवों की सेवा करने पर बहुत जोर देते थे। इस कारण बापू ने वर्धा जैसे छोटे शहर के बजाय गांव में रहने का तय किया। वे सेगांव रहने चले गये। बाद में उसका नाम सेवाग्राम पड़ गया। वहां मीरा बहन की इच्छा से एक झोपड़ी बनी थी। बापू के आग्रह के कारण कम खर्च में ही ज्यों-त्यों करके मिट्टी से एक झोपड़ी बना ली। बाद में मीरा बहन बापू को अपनी झोपड़ी दिखाने ले गई और बापू को पसंद आई तो बोलीं आप यहां रहिये।

गांव में बापू को बड़ी असुविधा हुई और कष्ट उठाना पड़ा। बापूजी के साथ एक हरिजन भी था। गांव के कुएं से औरों के साथ वह भी पानी भरता था। गांववालों ने उस कुएं का पानी पीना छोड़ दिया। दो साल तक बापू की हजामत बनाने में भी गांव का नाई डरता रहा। गांव के लोग कहते थे कि बापू की हजामत तो कर सकते हैं, पर उनके साथ हरिजन जो रहता है। इसलिए हम अगर बापू को छुयेंगे तो जातिवाले बहिष्कार कर देंगे।

बापू के सेगांव जाने पर सरदार बहुत बिगड़े। उनका कहना था कि ऐसी जगह, जहां सड़क, तार, टेलीफोन, पोस्ट ऑफिस सभी की असुविधा है, बापूजी का रहना कैसे हो सकता है। अगर कभी मौका आवे तो क्या कर सकते हैं और बापू कुछ करने भी देंगे?

यह ठीक भी था। बापूजी से मिलने आनेवालों का अजीब तमाशा होता था। एक बार मैसूर की महारानी बापूजी से मिलने आई। वर्धा की टमटम गाड़ी सेवाग्राम गई। बारिश में कपड़े भीग गये। बापू ने सेवाग्राम में मीरा बहन के कपड़े दिये। लौटते समय बैलगाड़ी कीचड़ में फंस गई, तब उन्हें उतरकर पैदल चलना पड़ा। ऊपर से बारिश हो रही थी। पैरों में ऊंची एड़ी के सैंडल थे, जो कीचड़ में वजनदार हो गये और चलना कठिन हो गया। महारानी गीले कपड़ों और कीचड़ में लथपथ वर्धा पहुंचीं। यहां आने पर गरम पानी में नमक डालकर सेंका गया। कपड़े बदले। वह कहने लगीं, "यदि यह घटना मैसूर में होती तो मैं पंद्रह दिन बिछौने पर ही रहती, पर यहां तो मैं दूसरे ही दिन तैयार हो गई हूं।"

आखिर बापू की अनिच्छा रहते हुए भी सडक बन गई डाकखाना खुल गया और टेलीफोन भी लग गया।

अट्ठाईस—

बजाज-कुटुब राजस्थान म सीकर का रहने वाला है। सीकर जयपुर राज्य का एक बहुत बडा ठिकाना था। सीकर के राजा रावराजा कहलाते थे। उनके अधिकार भी जागीरदारो से अधिक थे। हम लोग यद्यपि वर्धा म बस गये थे, फिर भी सीकर आना जाना रहता ही था और वहा हमारा एक मकान भी था, जो कमरा के नाम से प्रसिद्ध था। वहा के सार्वजनिक कार्यो और हलचलो म भी जमनालालजी का हाथ रहता था।

सीकर के रावराजा भले स्वभाव के थे और प्रजा के साथ सहानुभूति रखते थे। उनके तथा जयपुर राज्य के बीच आपसी अधिकारो को लेकर कुछ-न-कुछ खचखच चलती ही रहती थी। रावराजा के उदार स्वभाव को जयपुर राज्य तथा अगरेज अधिकारी कम पसन्द करते। देशी राज्यो की प्रजा मे जागृति हो और राजा का प्रजा के साथ विशेष सपर्क रहे यह भी अगरेजो को नापसद था। इस कारण जयपुर राज्य और उसके प्रधान अगरेज अधिकारियो ने सीकर के रावराजा के साथ के झगडे को बहुत बढावा दिया। सीकर के राजकुमार को शिक्षण के लिए विलायत भेजने के मामले को लेकर जयपुर राज्य के अधिकारियो ने रावराजा के कुटुम्बियो पर रेल म ही गोली चलवा दी। इस घटना से सीकर की प्रजा बहुत उत्तेजित हो गई और जयपुर राज्य के खिलाफ शस्त्रो से लडने की तयारी शुरू कर दी। दोनो ओर से मोर्चेबदी होने लगी।

मैं उन दिनो सीकर ही थी। राजपूत ब्राह्मण, हरिजन, बनिया मुसलमान सभी ने लडने की तयारी कर ली थी। सीकर म अठारह दिन की जबरदस्त हडताल हुई। गाव म बहुत तीव्र उत्तेजना थी। मैं घर घर म जाकर लोगो को समझाती थी कि भयभीत मत होओ।

एक बार मैं लोसल से सीकर आ रही थी। जयपुर राज्य के सिपाहियो का आदेश था कि अगर कोई आदमी बिना सूचना दिये सीकर जाय तो गोली चला दी जा सकती है। मैं इस बात से अपरिचित थी। सीधी चली गई। सनिक ने भी शायद स्त्री समझकर मुझे चला जाने दिया होगा।

इस आपसी झगडे को निपटाने के लिए जयपुर और सीकर दोनो के लोगो की तरफ से जमनालालजी के पास अनेक तार और चिट्ठियाँ आई थी। राजाजी का सदेशा भी पहुचा था। जमनालालजी ने दोनो पक्षो से यह जानना आवश्यक समझा कि अगर उनका उपयोग हो सके तो वे आवें अन्यथा जाकर भी क्या होगा? अत म उन्हे सीकर जाना पडा। एक बार तो जयपुर राज्य और रावराजा म समझौता भी हो गया।

उसके बाद सीकर के रावराजा को अजमेर ले जाया गया और उन्हे पागल ठहराकर सीकर राज्य की व्यवस्था कोर्ट ऑफ वार्ड के मातहत कर दी गई। इसके अलावा रावराजा का जयपुर राज्य म प्रवेश करने की भी मनाही कर दी गई। इस बात म सीकर की प्रजा म काफी उत्तेजना फल गई। जमनालालजी ने इस मामले म काफी समय और शक्ति लगाकर शाति स

इसे सुलझाने का प्रयत्न किया और इस तरह खून-खराबी रुकी।

जमनालालजी जयपुर राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष थे। जयपुर राज्य को उनका संस्था का और कार्यकर्ताओं का बढ़ता हुआ प्रभाव कैसे अच्छा लगता ? भीतर ही भीतर नाराजगी बढ़ती जा रही थी। एक बार जमनालालजी प्रजामंडल की कार्यकारिणी बैठक के लिए जयपुर जा रहे थे। वह बैठक अकाल-सहायता के संबंध में ही होनेवाली थी। परंतु सवाई माधोपुर में ही पुलिस के गोरे अधिकारी ने उनके सामने हुक्म रख दिया कि उनके लिए जयपुर राज्य में प्रवेश करना मना है।

जमनालालजी को यह बात बहुत खटकी। उन्होंने पुलिस अधिकारियों से कहा कि यह बात अनुचित है। लेकिन इंस्पेक्टर-जनरल यंग ने कहा कि अभी तो आप मान जायें और वापस चले जायें मैं यह हुक्म रद्द कराने की कोशिश करूंगा।

जमनालालजी सत्याग्रह के महत्त्व को समझते थे इसलिए उन्होंने पहली बार मौका दिया कि अगर समझौते का कोई मार्ग निकलता है तो ठीक है। अतः वह लौट आये। अंत में बापू का आशीर्वाद लेकर उन्होंने १ फरवरी १९३८ के दिन जयपुर राज्य की आज्ञा का भंग करके राज्य की सीमा में प्रवेश कर दिया और इस तरह सत्यग्रह की शुरुआत हुई। पुलिस उनको पकड़कर मोटर द्वारा सीमा के बाहर छोड़ देती और वह पुनः भीतर प्रवेश कर जाते। जब दूसरी मोटर में से उतरने का आदेश दिया गया तब उन्होंने इस आदेश को अमान्य किया। जबरदस्ती उन्हें उतारा गया। उतरने की अनिच्छा के कारण उतारते समय उनके खरोंच आ गई और कुरता भी फट गया। सत्याग्रही जमनालालजी के चित्र में नाक के पास की खरोंच और बनियान पर लगा खून का दाग स्पष्ट है।

इस तरह सीमा के बाहर छोड़ देने के कारण उन्होंने अन्न का त्याग कर दिया और केवल गाजर पर रहने लगे। तीसरी बार उन्हें गिरफ्तार करके जयपुर से चालीस मील दूर रखा गया। वहां वह बारह-बारह मील रोज घूमते थे। घी तो उन्होंने शरीर में चरबी की अधिकता के कारण छोड़ दिया था। मोटी रोटी और साग अपने लिए बनवा लेते थे। इस प्रकार के खाने से उनके मन को भले ही संतोष रहा हो पर उसका शरीर पर परिणाम हुए बगैर कैसे रहता ? रूखे-सूखे भोजन के कारण कमजोरी बढ़ गई। घूमते भी बहुत थे। अंत में घुटने में दर्द बढ़ गया। इलाज कराया गया। पर इलाज के समय डाक्टर की गलती से बिजली से पैर जल गया। इलाज बिजली का चल रहा था। पर गलती से मांस जल गया, घाव हो गया। वे सब सहते रहे और डाक्टर भरोसे में रहा। डर के मारे डाक्टर फरार हो गया। पर उसी दिन ड्रेसिंग के समय उन्होंने अभय दान दे दिया। उनकी प्रकृति ही कुछ ऐसी थी कि अपने सुख-दर्द से वे हमेशा बेपरवाह रहते थे। जितने कठोर वह अपना दुख-दर्द सहने में थे, उतने ही नरम दूसरों के दर्द के प्रति थे। दूसरों का थोड़ा-सा दर्द भी असह्य होता था।

पैर में घाव होने के कारण उनको अब जयपुर के निकट रखना आवश्यक हो गया और उन्हें वणवती के बाग में रखा गया।

जब वह मोरागासर में रहते तब आसपास के गांवों में घूमने और लोगों के सुख-दुख की बातें ध्यानपूर्वक सुनते और जो कुछ उनसे बनता वह करते। वहां के लोगों का शेर के शिकार

का अधिकार न होने से शेरा का बहुत उपद्रव था। शेर जानवरा तथा आदमिया तक को ले जात। इस बारे म उन्होंने राज्याधिकारिया म लिखा-पढी की। इसी तरह एक गाव म पानी का बहुत कष्ट था। उन्होंने कहा कि गाववाले मिलकर कुआ खोद लें। अपनी ओर स रुपया का भी आश्वासन दिया।

इधर सत्याग्रह जोरा पर था। करीब पाच सौ स्त्री पुरुषा ने इसम भाग लिया। श्री हीरालाल शास्त्री राधाकृष्ण बजाज तथा उनके साथिया ने बहुत परिश्रम किया। बापूजी तथा जमनालालजी की इच्छा थी कि सख्या की अपेक्षा इमम चुने हुए सत्याग्रही भाग लें।

जमनालालजी के जान के बाद बात कुछ एमी हुई कि एक बार मुझ भी प्रजामडल की अध्यक्ष बनना पडा। प्रजामडल के सदस्या म कुछ मतभेद था। शास्त्रीजी मर पास आये और बाले कि कोई रास्ता बढाना है। मैंने कहा 'अगर मेरे अध्यक्ष बन जान म दाना पक्षा का समाधान हा ता मैं बन जाऊ। मैं अपनी शक्ति को पहचानती ता थी पर उनकी भावना समझकर मैंने कहा 'मेरा उपयोग करना चाहो ता कर सकते हो।' उन्होंने मुझे अध्यक्ष बना दिया।

देशी राज्या के सत्याग्रह क सबध म बापूजी की वाइसराय से भी कुछ बातें हुई थी। जब कहा गया कि आपम म समाधान हो जायगा तो सत्याग्रह बद कर दिया गया। सत्याग्रही तथा जमनालालजी भी छूट गये। जयपुर राज्य और प्रजामडल म समझौता हो गया। प्रजा मडल की बातें स्वीकार कर ली गइ। जमनालालजी ने वहा बहुत दिनो तक रहकर काय की व्यवस्था जमाइ।

उनतीस—

ओम हमारी तीसरी लडकी थी। आम थली म लिपटी हुइ जन्मी जिसे मारवाडी म 'कुतवडो' कहते हैं। थली फाडकर उस मेरी सास ने निकाला। बोली—'ए बाई, किया गुलाब का फूल सी सोवणी लाग छोरी तो भागवान है।

बचपन मे पूजा पाठ और ओम् का नियमित जाप करने की मेरी आदत थी। लेकिन जाप मे पूजा-पाठ म अडचन आने लगी। इस बात का मन म कुछ विचार रहता। सोचा कि इस लडकी का नाम ओम् रखा जाय तो 'ओम' का जाप इस निमित्त स होता रहेगा। मैं उसे 'ओम', ओम कहने लगी। यो उसका नाम ही ओम पड गया।

मुझे बच्चा का मारने की आदत शायद नौकरा के कारण पडी। नौकरा की बेपरवाही के कारण मुझ गुस्सा आता। मैं उनपर चिढती। पर चिढने पर वह काम छोडकर चले जायेंगे इस डर स गुस्से का दबाने की कोशिश करती पर वह बच्चा पर उतरता और उसका सबस ज्यादा शिकार बनी ओम्।

रामकृष्ण के जन्म की बात है। मैं जापे म थी। ओम् तो खेल म ही मस्त रहती थी। मैंने उसे किसी काम स बुलाया उसने अनसुनी कर दी जब आई तब मैंने इतने जोर स उसे मारा कि तपेली पिचक गई और मेरे हाथ को ऐसा झटका लगा कि उसका दद कई दिना तक रहा।

साबरमती-आश्रम म रहते थे तब की बात है। ओम के फोडे और फुंसिया हो गई थी। मैं उसे नहला रही थी। फोटे धोते समय वह रोई। मैंने उसे चुप होने के लिए कहा और फोडे धोती रही तो वह और जोर जोर से रोने लगी। मुझे गुस्सा आ गया। नहलाने का जो गिलास था उसीका सिर म दे मारा। चोट आई और खून बहने लगा। मैंने चोट धोकर पट्टी बाध दी। पट्टी भी खून से लाल हो गई। पर मेरे हाथ से छूटकर ओम भागी और फिर खेलने चली गई।

ओम मेरे मारने या गुस्सा होने पर भी वैसी ही रही। एक बार तो उसने मुझपर नाराज होकर तीन दिन तक कुछ खाया पिया ही नही। उन दिनो बजाजवाडी म मीटिंगो की धूम थी। एक के बाद एक महमानो की पगतें लगती और उठती। बच्चा के खान पीन की देख भाल रह जाती थी। जब पता चला कि तीन दिन स ओम ने खाना पीना छोड़ रखा है तो मुझे डर लगा कि जमनालालजी को पता चलेगा तो अनर्थ हो जायेगा। तब ओम को खाना खान का राजी करने लगी। वह पक्की हठीली थी। लेकिन जब उससे कहा कि उसके काकाजी को पता चलेगा और उनके मन को बडी तकलीफ होगी तो यह दलील काम कर गई और ओम ने खाना खा लिया। बच्चा म हमेशा यह भावना रही कि उनके काकाजी किसी भी तरह से कष्टो से बचें। तीन दिन स भूखी प्यासी थी पर मजाल क्या कि चेहरे पर से कोई ताड सके।

बापूजी और जमनालालजी के जेल मे छूटने पर बापूजी के हरिजन-दौरे की बात चली। सेठजी ने मुझस पूछा कि ओम को हरिजन दौरे म बापूजी के साथ भेजा जाय तो कैसा रहे? मैं उसे बापूजी के साथ भेजने के लिए राजी हो गई पर जमनालालजी को बापूजी स कहने म सकोच हो रहा था। बापूजी का दल छोटे से छोटा हो ऐसा वह प्रयत्न कर रहे थे लकिन बापूजी के साथ जाने म उसका हित होगा इसलिए वह बहुत सकोच के साथ बापूजी स बोले बापूजी ओम् को साथ न जाने म आप पर भार तो होगा ही पर उसे लाभ होगा। यह सुन बापूजी बोले भले एना थी भार थवानो ए तो रमकडू छ। (कोई हर्ज नही। उसका भी कोई भार होगा। वह तो खिलौना है!)

एक वर्ष तक ओम बापूजी के साथ रही। बापूजी ने उससे काम भी लिया और उसे मिजाज भी रहते। उसे बहुत सीखने को मिला। बापूजी ने दौरे स जो पत्र लिखे थे उसमे उन्होंने ओम के आनन्दी और मस्त स्वभाव के बारे म लिखा था। वह काम हँसते हँसते करती पर खान-पीने या रहन-सहन की शिकायत के बारे म चुप ही रहती। वैचित्र्य तो इतनी थी कि जहा भी मान का मिलता झट सो जाती। मोटर म बापूजी के पैरो के पास ही उनका सहारा लेकर सो जाती। बापूजी इसी कारण उसे माती सुन्दरी कहते थे। उसका वजन भी काफी अधिक था। यात्रा म काफी मोटी होकर लौटी। इसी दौरे म बापूजी पर पूना म बम फेंका गया था। ओम् भी साथ म थी। बापूजी और ओम आदि साथ के लोग बच गये। बापूजी सोती सुंदरी के सिवा ओम् को पडिता भी कहते थ। पडितो म उनका मतलब था दूसरो को उपदेश देने म कुशल। उसने बापूजी को अपना स्वास्थ्य अच्छा रखने के विषय म एक उपदेश भरा पत्र लिखा था। उत्तर म बापूजी ने उसे पण्डिता की पदवी दी थी।

जयपुर-सत्याग्रह के समय जमनालालजी का आगरे म राजनारायणजी के कुटुंब स

संबंध आया। घर के लोग भले और सच्चारी लगे। फिर जब राजनारायणजी व पिता स्वास्थ्य के लिए जुहू रहे तब जमनालालजी भी वहीं थे। उनसे अधिक संपर्क बढ़ा। बच्चों से भी उनका अधिक संपर्क आया।

जमनालालजी आगरे में विवाह का निश्चय करके लौटे। वह जिस दिन आये उस दिन से सातवें दिन विवाह था। पर जमनालालजी ने सावित्री और राम को व्यवस्था का काम सौंपा। मैं टाइफाइड में बीमार थी और मदालसा के घर थी। मैं तो सिर्फ फेरे के समय ही आई। विवाह की सारी तैयारी सावित्री और रामकृष्ण ने ही की थी। कपड़े-सामान से लगाकर खाने-पीने तक की व्यवस्था करना थी। मिठाइयों के नाम खोज-खोजकर एक लंबी फेहरिस्त बनाकर सावित्री जमनालालजी के पास पहुंची। उन्होंने कहा कि इसमें से जो अच्छी लगे वही एक मिठाई चुन लो और बनवाओ!

ओम् की विदाई के समय जमनालालजी की भी आखें गीली हो गई थीं।

जब ओम और राजनारायणजी नैनीताल थे तब जमनालालजी वहां गये। उन्हें राजनारायणजी और ओम का परस्पर प्रेम देखकर बहुत संतोष हुआ।

ओम डेढ़-दो महीने से वर्धा ही थी। राजनारायणजी उसे लेने वर्धा आये। कुछ दिन रहकर दोनों बर्ड गये। वहां से वे सीधे अपने कार्यक्रम के अनुसार नैनीताल जानेवाले थे पर मन उचटा सा रहा। उसने वापस वर्धा जाने की जिद की मानो वर्धा उसे बुला रहा हो। सामान खरीदना छोड़कर वर्धा पहुंचे। राजनारायणजी साथ थे। वे दोनों जमनालालजी की मृत्यु के दिन सवेरे आठ बजे ही वर्धा पहुंचे।

जमनालालजी के जाने से आघात तो सबको लगा पर कुटुंब वालों को स्वाभाविक तौर से अधिक ही लगा था। सब घरवालों के मन में यह भाव था कि हम उनके काम को करके उनकी आत्मा को संतोष दें। इसलिए सावित्री जब 'करेंगे या मरेंगे' आन्दोलन में जेल जाने लगी तब राजनारायणजी ने भी ओम् को इजाजत दे दी। ननद भौजाई को जेल जाते देखकर महिलाश्रम की लड़कियों को और भी उत्साह मिला और दस-दस की टुकड़ी में करीब ८० बहनें जेल पहुंच गई।

तीसरा—

रामकृष्ण आखिरी संतान है। वह बचपन में बड़ा स्वस्थ और शांत था। रोता भी कम था। एक बार बचपन में उसकी उंगली दरवाजे में दब गई और टुकड़ा कटकर गिर गया। उसे उठाकर वह दादीजी के पास गया और बोला, 'देखो दादीजी, मेरी एक उंगली की दो उंगली होगी।' दादीजी ने उंगली के दो टुकड़े देखे तो वह रोने लगी। यह देखकर वह भी रोने लगा। पहले तो उसे भान ही नहीं था।

बड़ों के सामने वह सीधा और आज्ञाकारी था पर बराबरी वालों से सदा हंसी मजाक किया करता। उसका यह स्वभाव आज भी है।

चौदह साल तक हमसे में सभी सिनेमा से दूर रहे। मिठाई न तो घर पर ही बनती थी और न बाहर ही खाई जाती। कुआरे लड़के-लड़कियों का शादी में जाना भी बंद था। एक

बार मेरी बड़ी भाभी आई तो मालीपुर से लड्डू साथ लाई थीं। उन्हें देखकर राम बोला: "मामाजी इस तरह क्या रखते हैं?" वह बोलीं: "मालीपुर के लड्डू।" बस इतना सुनकर वह तो भाग गया, पर यह देखकर मेरी भाभी को रोना आ गया। वह बोलीं: "तुम्हारे ... घर में बच्चे कैसे तरसते हैं। बाईजी, मैं तो अभी लड्डू बनाकर भेजती, मगर आपके घर में तो ऐसा चीज बनाने का हुक्म ही नहीं है।"

मेरी अनुपस्थिति में ओम् ने लड्डू खाया और मेरी भाभी से कहा— "मामाजी से न कहना, पर मेरे लिए लड्डू भेजना।"

मेरी भाभी ने इन्दौर जाकर पार्सल भेजा। पार्सल को खोला और देखा कि उसमें लड्डू हैं। तब विचार हुआ कि ये आये कहाँ से?

ओम् दौड़कर दादीजी से धीरे धीरे बोली— "दादीजी, ये तो मामीजी ने मेरे वहाँ से भेजे हैं।" तब जाकर पता चला कि यह सब ओम् का करामात है।

जब रामकृष्ण वर्धा में पढ़ता था तब उसने और उसके साथियों ने पत्रकार संघ चला रखा था, जिसमें सब बच्चे लगते-जुटते थे। साथ-साथ दुकानों में और शिक्षण और ... का भी काम करते। इस संघ में कभी-कभी बड़े-बूढ़े भी लगते थे।

व्यक्तिगत सत्याग्रह चला और जमनालालजी जेल जाने लगे तो राम ने उनसे कहा कि परीक्षा के बाद मेरा भी सत्याग्रह करने का इरादा है। समय थोड़ा था, ज्यादा बात तो क्या होती, पर वह इतना ही बोले कि बापूजी की सलाह से जो कुछ करना हो करना। तीन चार महीने बाद परीक्षा हो जाने पर राम बापूजी के पास पहुँचा। उस समय उसकी उमर सोलह साल की थी। बापूजी बोले— "सत्याग्रह के लिए अभी छोटे हो।" तब वह आग्रह करने लगा तो बापूजी ने उसे तीन चार दिन तक अपने पास रखकर उसकी जाँच-पड़ताल की। उससे कहा कि जबतक यह सत्याग्रह चलेगा तबतक तुमको बार बार जाना पड़ेगा। तुम्हारी तैयारी रहनी चाहिए। वह बोला— "आखिर कितने दिन तक जेल जाते रहना पड़ेगा?" वह बोले— "कम से कम पाँच वर्ष तो मान ही लेना चाहिए।" "मेरी पाँच साल की तैयारी है।" वह अपने विचार पर पक्का रहा और बापूजी को इजाजत देनी पड़ी।

उसने सत्याग्रह किया तो पहली बार सौ रुपये जुरमाना हुआ, फिर दूसरी बार किया तो दो सौ, तीसरी बार चार महीने की सजा हुई। सजा पूरी कर शनिवार को आया। सत्याग्रही को दस रोज में वापस जाने का आदेश था, लेकिन उसकी तो फिर से जाने की तैयारी थी। दूसरे दिन रविवार आ गया, इसलिए रुकना पड़ा। उसने सोमवार को फिर सत्याग्रह किया और छः महीने की सजा हुई। जब सत्याग्रह स्थगित हुआ तब वह विनोबाजी के साथ छूटा।

जेल जाने से पहले वह मैट्रिक पास हो गया था। जेल से छूटने पर उसने पढ़ाई शुरू की। लिखा पढ़ी के बाद कालेज में भरती हो सका। कालेज का सत्र तो बहुत पहले शुरू हो गया था, परीक्षा के लिए बहुत थोड़े दिन बाकी रह गए थे। इसलिए बड़ी मुश्किल से इजाजत मिली। परीक्षा दी और पास हो गया। इस अवधि में उसके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। ऐसे समय में चित्त को स्वस्थ रखकर पढ़ाई करना कठिन था, पर उसकी तो सदा से ही यही आदत रही है कि जो काम सौंप दिया जाय उसीमें वह लग जाता है। जमनालालजी की मृत्यु से दूसरे दिन

भी उसे मैंने कालेज भेजा। यह बात दूसरी थी कि उनकी मृत्यु के कारण कालेज बंद रहा में उसे लौट आना पडा।

उनके काकाजी की मृत्यु के बाद कुटुंबवालों ने अपने बाल दिये गंगाविशनजी राधाकृष्ण आदि कुटुंबवालों ने मुंडन करवाया, तब राम को भी कहा गया। वह बोला—'बाल देने में क्या पड़ा है? पिताजी के लिए हम जितना करें उतना थोड़ा ही है।' उसने सिर नहीं मुंडवाया। उधर कमलनयन गोला गोकर्णनाथ में था। उसने भी मुंडन नहीं करवाया। कमलनयन जब वर्धा आया तब उसने मुझसे कहा कि बाल देने से तुम्हें अच्छा लगता हो तो दे दूं। पर मैंने भी देखा इसमें क्या धरा है। भाइयों के विचार में कितना साम्य था। फिर कमलनयन ने यह भी कहा कि पिताजी के दुःख का मनहूस चेहरा बनाकर क्या प्रकट करना? जो दुःख हुआ उसका दिखावा थोड़े करना है। राम भी तीसरे दिन चनचक्कर क्लब में खेलने चला गया।

फिर से जुलाई में गर्मियों की छुट्टी के बाद कालेज शुरू हुआ। लेकिन अगस्त में जब 'करो या मरो' आंदोलन शुरू हुआ तब राम फिर जेल गया। १९४४ में छूटा। जेल में वह अपने साथियों से हिलमिल गया, जेल में छूटकर आनेवाले उसके विषय में प्रेम और आत्मीयता प्रकट करते।

उसने जेल में खेल-कूद, पढ़ने लिखने और कातने में अपना समय मजे से काटा, हां उसे यह डर अवश्य था कि बाहर निकलने पर भाई उसे व्यापार में लगा देंगे। उसने अपने पत्र में लिखा भी था। तब मैंने उसे लिखा कि तुमको चिंता करने की जरूरत क्या? जैसा तुम्हारा मन होगा वैसा बापूजी की सलाह से किया जायगा। और हुआ भी वैसा ही। बापूजी की सलाह से ही वह व्यापार में लगा, व्यापार में लगने तक देश का ही काम करता रहा। प्रथम बार जेल गया था तबसे अंतिम बार जेल से छूटने तक पौने चार साल हुए थे। उसने बापूजी से कहा—आपको दिये पांच वर्ष में से पंद्रह महीने बाकी हैं आप पंद्रह महीने चाहे जो काम लें। बंगाल, आसाम और मदरास के दौरे में राम को बापूजी अपने साथ ले गये। उसपर हरिजन फंड और बापू के दस्तखतों के पैसे वसूल करने के अतिरिक्त बापू के सामान को सम्हालने की जिम्मेदारी थी। इसलिए मद्रास में बापू उसे हमाल (मजदूर) कहते थे। साथी भी उसे 'बापू का हमाल' कहने लगे। उसके बाद वह नौजवानों और विद्यार्थियों में काम करने लगा। उसने विद्यार्थी कांग्रेस के काम में काफी हिस्सा लिया। एक बार वह मध्यप्रदेश की विद्यार्थी कांग्रेस का अध्यक्ष भी बना। अ० भा० विद्यार्थी कांग्रेस का वह खजांची भी था। विद्यार्थी कांग्रेस की ओर से प्राग में होनेवाली अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी कांग्रेस में भी वह गया था। युवक कांग्रेस शुरू करने में उसका हाथ रहा और उसका भी काम किया।

उसके विवाह की चर्चा जमनालालजी के सामने ही चल रही थी, लेकिन उस समय तो उसकी उमर उन्नीस वर्ष की ही थी। उन्हें इतनी जल्दी संबंध करना कम पसंद था। जब जेल से छूटा तब चर्चा चलने लगी। यों तो वातावरण ऐसा ही था कि अन्य जाति की अच्छी लड़की मिल जाय तो पहली बार दूसरी जाति से संबंध हो। बातें भी चलने लगीं, पर मेरा मन तो जाति की कन्या आवे तो अच्छा, ऐसा था। बातें हुईं लेकिन अंत में उसका संबंध

सावित्री की बहन विमला के साथ ही निश्चित हुआ। इस संबंध के मामले में सावित्री तो बिलकुल तटस्थ रही। दोनों भाइयों ने ही निर्णय किया और विवाह भी जैसे उनके पिताजी की इच्छा रही वैसा ही हुआ।

राम में आज भी अपने बड़ों के प्रति श्रद्धा है और बराबर बड़ों के अनुशासन में चलता है। मेहनत, काम की लगन एवं व्यवस्थितता के कारण वह व्यापार का बोझ अपने ऊपर होते हुए भी जमनालालजी के पत्रों का संकलन और डायरियों के प्रकाशन आदि करने में अपना समय देता है। पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद में उसने बहुत मेहनत की। बच्चों को मेरा अपने पिताजी की कीर्ति और कामों का खयाल रहता है।

इकतीस—

जमनालालजी के कान में दर्द रहा करता था। बहुत इलाज कराया पर तकलीफ बनी रही। उसका मेरे मन पर भी बोझ रहता था। मेरी झुंझलाहट इसलिए भी थी कि वह अस्वस्थ होते हुए भी निरंतर काम में लगे रहते थे। मेरे कहने का क्या असर होता। यदि वह घर पर रहते तो आने-जानेवालों का तांता लगा रहता। बात-बात में बोलने के स्थान पर रोना आ जाता था।

मैं चाहती थी कि उन्हें थोड़ा आराम मिले। मुझे उनकी सेवा करने का थोड़ा मौका मिले। पर ऐसा बनना कठिन था। इसका मुख्य कारण था सार्वजनिक काम, मेहमानों का आना-जाना, सेक्रेटरियों और नौकरों से माथापच्ची। मैं सोचने लगी कि ये ही बातें हैं, जिनके कारण वे आराम करने से और मैं सेवा करने से वंचित हूं। आदमी मोह के कारण क्या-क्या सोचता है। सो मैं उनको परेशान और व्यस्त रखनेवाली इन सब बातों से चिढ़ने लगी। वह कोई सार्वजनिक काम की बातें करते या दौरे में साथ चलने को कहते तो मुझे गुस्सा आ जाता। दिनों दिन हम दोनों के बीच खींचातानी बढ़ने लगी। वह स्वयं समाधान के लिए भरसक प्रयत्न करते थे और जानते भी थे कि दोनों में यह खींचातानी क्यों हो रही है। लेकिन उनका जीवन तो पूरी तरह से सार्वजनिक हो ही गया था। वह उससे चाहते तो भी छूट नहीं सकते थे। वह तो उसमें सिर से पैर तक डूब चुके थे। यह तो मेरा ही काम था कि मैं उनके स्वभाव और रुचि को समझकर उनका साथ देती और उनके आनंद में अपना आनंद मानती। इस तरह अगर होता तो उनके मन पर मेरा भार कम रहता।

उन्हें चना, मूंगफली, कच्ची मक्का आदि अच्छी लगती थी। श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में प्रतिवर्ष उत्सव के अंतिम दिन तले हुए काबुली चने प्रसाद के रूप में बांटे जाते थे। प्रसाद लेने के लिए भीड़ काफी होती थी। खाने में स्वादिष्ट लगते थे। एक वर्ष के उत्सव के समय जमनालालजी बाहर गये हुए थे। मैंने उनके लिए थोड़े चने बचाकर रख लिये थे। मैं चाहती थी कि वह अकेले में मिलें तो उनको ये चने खिलाऊं। अकेले में कोई चीज खाना उनके लिए जहर-सा था। सबको खिलाने में तथा सबके साथ खाने में ही उनको सुख मिलता था। मैं बार-बार टोकनी में वे चने छिपाकर ले जाती पर अकेले में मिलना ही मुश्किल था। चने लेकर सामने जाती तो वह कोई-न-कोई काम बता देते। किसीको सेवाग्राम दिखाना है, किसीको बाथ

रूम दिखाना है तो किसीके लिए कुछ और प्रबंध करना है। मैं स्वामी हो जाती पर करती क्या ? एक रोज वह भोजन करके उठे। कुछ लोग सुपारी खाने में लगे थे और कुछ आगे निकल गये थे। उनको बरामदे में से जाते देखकर मैंने उन्हें चने दिखाये। वह यह तो जानते थे कि अगर वह कुछ खा लेंगे तो मुझको संताप होगा लेकिन करें भी क्या ? सामने भी कुछ लोग थे और पीछे भी कुछ लोग थे। उन्होंने चने लिये और फंकी मार ली। अब उनकी बड़ी मुश्किल हुई। बातें करना और चबाना एक साथ कैसे हो सकता था ? वह सारे चने निगल गये।

इस तरह मेरी अशांति बढ़ती गई। छोटी मोटी बातों को लेकर असंतोष में भी वृद्धि होती गई और मैं चिड़चिड़ी बनती गई। नौकर भी बेपरवाह थे। जमनालालजी का रुख रखने के लिए तो वे खूब दौड़ धूप करते पर मेरी बात की अवहेलना कर जाते।

जमनालालजी के सेक्रेटरियों का ठाट तो और भी बढ़ा चढ़ा रहता था। वह हमेशा नये नये युवकों को सेक्रेटरी बनाते व्यवहार की बातें सिखाते उनकी जरूरतों का खयाल रखते। लेकिन जमनालालजी के कारोबार को देखकर उन युवकों में भी व्यापार करने और धन कमाने की इच्छा पैदा हो जाती। उनकी इच्छा को समझकर दो-तीन वर्ष बाद जमनालालजी अपने सेक्रेटरी को किसी अच्छे स्थान पर लगा देते।

वह किसी भी आदमी को रखते समय उसके लिए पीर-बावर्ची भिश्ती-खर वाली कसौटी तैयार रखते थे। वह यह कह देते थे कि उन्हें किसी भी समय कोई भी काम दिया जा सकता है। शुरू में उत्साह और चाह में हर आदमी उनकी बात मान लेता था और प्रेम भी वह ऐसा करते थे कि सेक्रेटरी भी उनका काम मन लगाकर करते थे।

दामोदरजी जमनालालजी के अंतिम सेक्रेटरी थे। मुझसे मीरा और दामोदरजी का परिचय कराते हुए जमनालालजी ने कहा था कि यह दम्पती बहुत सेवा भावी और भावुक हैं। अपने पास रखने लायक हैं। तुम्हारी कसौटी के मुताबिक ही ये अपने पास निभने जैसे हैं।

और दामोदरजी ने तो सचमुच ही जमनालालजी को बहुत प्रभावित किया और यहां तक अपना असर जमा लिया कि मुझे तो वह अपनी सौत-सी लगने लगे। वे मेहमानों के साथ खूब प्रेम से व्यवहार करते। सबकी जरूरतों को पूरी करने की धुन में लगे रहते और समान भाव से बरतते। मेहमानों को घर सा ही लगना चाहिए यह ध्यान रखते।

सेक्रेटरियों और नौकरों से मुझे जो परेशानी होती उसमें मैं विनोद में लेने और सहन करने का प्रयत्न करती। कहां तक सफल होती यह तो भगवान ही जाने, पर मैं अपनी धुन में गुनगुनाती रहती

राज सिकत्तरियों का भारी, राज सरवटों का भारी।

बत्तीस—

बापूजी के वर्धा आ जाने के बाद से वर्धा में नेताओं और कार्यकर्ताओं का आना जाना बढ़ता गया। बंबई कांग्रेस में बापूजी कांग्रेस से अलग हो गये और वर्धा में रहकर 'ग्राम उद्योग संघ' की स्थापना की। कन्याश्रम को छोड़कर बापू मगनवाड़ी में रहने लगे। बाद में सेवाग्राम

गये। पर कांग्रेस कार्य समिति (वर्किंग कमेटी) की मीटिंग अक्सर बजाजवाडी वर्धा में ही होती। रचनात्मक कामों की अन्य सभाएं तथा सम्मेलन आदि भी वर्धा में होते ही रहते। बापूजी और जमनालालजी से मिलने जुलनेवाले भी आते रहते। देशी विदेशी यात्रियों, पत्रकारों, नेताओं कार्यकर्ताओं के आवागमन से बजाजवाडी गुलजार रहती थी। लोगों का जमघट लगा ही रहता। इस कारण मेहमानघर बडा करना पडा। मकान और बनाने पडे। भोजनालय की व्यवस्था बढानी पडी। देश के बडे से बडे नेता से लगाकर राजे महाराजे और साधारण कार्यकर्ता सब वहां आते और बजाजवाडी में ठहरते। कभी कोई जान-पहचान वाला आता तो कभी बिना जान-पहचान वाला। कोई किसी काम से आता तो कोई यात्री यात्रा के विचार से। किसी असमंजस में पडे व्यक्ति को तांगेवाले ही बजाजवाडी ले आते। खादी पहननेवाला या कोई भी सार्वजनिक काम करनेवालों के लिए बजाजवाडी एक धर्मशाला जैसी बन गई थी। लेकिन आनेवाला कोई भी हो जमनालालजी सबकी सुख सुविधा का बराबर खयाल रखते।

सरोजिनी नायडू को तली हुई हरी मिर्चें पसन्द थी। राजाजी के लिए रसम मौलाना आजाद के लिए मोटी रोटी जवाहरलालजी के लिए आलू सूखी रोटी और मक्खन कृपालानीजी के लिए गरम सूप और उसमें मक्खन या नीम मिल जाय तो उत्तम खानसाहब के लिए खिचडी में खौलता हुआ घी, डा० पट्टाभि सीतारामय्या को भोजन के अंत में दहीभात जयराम दास दौलतराम को उबली हुई सब्जी शंकरराव देव को भात में छाछ गोविन्दवल्लभ पंतजी को दाल में घी और इनके अलावा जुदे जुदे नियम और व्रत वाले लोगों की रुचि और आवश्यकता के अनुसार उसका पूरा ध्यान जमनालालजी रखते और धीरे धीरे उन्होंने ऐसी व्यवस्था कर दी कि उनकी गैरहाजिरी में भी सब ज्यों-का-त्यों चलता।

मोतीलालजी वर्धा आये। जमनालालजी ने उनके ठहरने का पूरा इंतजाम किया। उन्हें दमे की बीमारी थी, सो चौकीदार आदि को रात में आवाज देने से मना कर दिया ताकि उन्हें ठीक से नींद आय। सुबह उठते पूछा रात को नींद ठीक आई न? मोतीलालजी ठहरे मजाकिया आदमी। बोले—एक बांसुरी की आवाज और भी चलती थी। जमनालालजी दंग। तहकीकात की कि कहां से आवाज आई पर कुछ पता न चला। फिर मोतीलालजी ने कहा—नीचे किसीके दमे का सुर ऊपर मेरे दमे का सुर मिलता था। तब खयाल आया कि नीचे काकाजी (कनीरामजी) थे—वह भी दमे से पीडित थे किन्तु जल्दी में यह खयाल नहीं रहा कि उनकी आवाज भी ऊपर जायगी। अब हंसें या अफसोस करें।

बंगले पर भोजन की पंगत भी अजीब होती थी। बडे से-बडे नेता और साधारण से साधारण कार्यकर्ता एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते। घर के नौकर सेक्रेटरी लडके लडकी दामाद आदि भोजन परोसते थे।

कांग्रेस कार्य-समिति की दिमाग खपानेवाली गम्भीर चर्चाओं के बाद पंगत का वातावरण एकदम हंसी व्यंग चुटकी और कहकहों से गूंज उठता था। घंटी बजने पर पंगत बैठती थी पर कभी मीटिंग जल्दी खतम हो जाती या विनोद में सरदार पटेल या कृपालानीजी या जवाहरलालजी पहले ही पंगत में पहुंच जाते और सामने रखी थाली को चम्मचों से बजाने लगते। पंगत में बैठे-बैठे ही कभी महादेवभाई जोर से कह उठते— अरे भाई, देरी हो तो

पहले पापड़ ही परोसना।' तब सरदार पटेल दूसरे कान में गंभीर स्वर में बोलते—'अरे महादेव, यह मारवाड़ी का दावा है। पापड़ संभलकर मांगना। पापड़ आया कि भोजन खलास !'

इसी पंगत में लड़का-बच्चा के नामकरण, किसी की सगाई, किसी लड़के के लिए लड़की की खोज, किसी लड़की के लिए लड़के की तलाश आदि का काम भी होता। मदालसा के बड़े लड़के 'भरत' का नाम इसी तरह की एक पंगत में रखा गया था।

पंगत में परोसने के नियम भी बने हुए थे। परोसनेवालों को यह हिदायत थी कि भोजन करनेवाले को मांगना न पड़े और परोसनेवाले को भोजन करनेवाले से पूछना न पड़े और परोसना चलता रहे। इतने पर अगर थाली में जूठन किसी ने छोड़ी तो जमनालालजी फौरन कहते—"आज फलां थाली में भोजन करनेवाले और उनको परोसनेवाले पर एक-एक रुपया जुरमाना किया गया।' कोई-कोई नेता या बालक थाली में जूठी चीजों पर उलटी कटोरी ढांक देता। जमनालालजी की निगाह इस भाप लेती और कटोरी उलटने को कहा जाता।

शुरू-शुरू में जमनालालजी को होड़ लगाकर भोजन कराने का भी बड़ा शौक था। बगीचे में संतरा के पेड़ के नीचे बैठकर शर्त लगाकर मक्खन संतरे इस प्रकार खिलाया करते थे। इसी प्रकार आम के दिनों में आम भी खिलाते थे। वर्षा के मौसम में हुड्डे (जवार के भुट्टे) भूनकर खाये जाते थे। मौसम में बर्ड नार इसकी गांठ होती। इनमें भी होड़ रहती। इसी तरह 'बाणी' (कच्ची जवार) का हलुवा, बाणी के ही दही-बड़े, बैंगन का भुरता, कच्ची मूली, अमरूद व मिरची की चटनी रहती थी। यह सब जवारी के भुट्टों की बनी चम्मचों से खाया जाता था। इस प्रकार पंगत की रंगत जमी रहती।

भोजन के बाद बीच के कमरे में बैठक जमती। बड़े-बड़े लोग बच्चों के खेल खेलते। जवाहरलालजी घोड़ा बनते। सरोजिनी नायडू सवार बनतीं लेकिन अपनी भारी भरकम देह को कम सम्हालतीं। दादा आदमी उनको पकड़कर उठाते लेकिन हंसी के मारे वह दुगुनी हो जाती थी। क्रिस्टर आसफअली सरकस जैसी कलाबाजी दिखाते। राजाजी माचिस की डिब्बी लेकर बच्चों को खेल दिखाते।

राजेन्द्रबाबू को दमे की शिकायत रहती थी। वे इन खेलों में शामिल न हो पाते थे। सो जमनालालजी उनके कमरे में जाकर शतरंज की बाजी लगाकर बैठ जाते।

ये सब दृश्य और रंगत आज सपने की बात हो गई।

सतीस—

व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेनेवालों को जेल से छूटने पर पुनः जेल जाना आवश्यक था। लेकिन बीमार आदमी को सत्याग्रह में भाग लेना मना था। इस सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्रही विनोबाजी चुने गये थे। इसके बाद तो एक-एक करके अनेक लोग जेल जाने लगे।

जमनालालजी की अस्वस्थता के कारण कुछ महीने पूर्व ही जेलवालों ने छोड़ दिया। बापूजी ने आराम करने को कहा लेकिन उन्होंने कहा कि मैं बिना काम किये कैसे रह सकता हूं ? मुझे तो किसी-न-किसी काम में लग ही जाना चाहिए। बापूजी ने कहा कि कम-से-कम जल

की अंतिम अवधि तक तो यह मानकर आराम करो कि अभी जेल में ही हो। मुद्दत पूरी होने के बाद काम के बारे में सोचेंगे। इसके बाद बापू ने उन्हें राजकुमारी अमृतकौर के यहां शिमला भेजा। उनकी बड़ी भारी कोठी है। उसमें उनके परिवार के पांच व्यक्ति रहते थे। एक कुत्ता भी था और नौकर थे ३५।

जमनालालजी ने वहीं से बापू पर अपनी इच्छा प्रकट की 'मुझे ऐसी आध्यात्मिक मां मिलनी चाहिए जो मुझे अपनी गोद में सुला सके।' बात बड़ी विचित्र थी। और तो सब कुछ मिल सकता है, परंतु मां कहां मिल सकती है? बापू ने कहा—"पहाड़ जैसे लड़के को गोद में सुलानेवाली मां कहां मिलेगी?" फिर भी बापू ने उनको लिखा कि शिमला से लौटते समय देहरादून में कमला नेहरू की गुरुमाता आनंदमयी से मिलते हुए आना। जमनालालजी लौटते हुए वहां गये। गये तो थे केवल दो घंटे के लिए, पर रह गये पंद्रह दिन।

माता आनंदमयी के पास हरेक भक्त एकांत समय में आत्म-निवेदन करता था। एक दिन जमनालालजी ने भी समय मांगा। उन्होंने कहा—"मां, क्या मैं आपकी गोद में सो सकता हूं?" माता आनंदमयी ने कहा—"मां की गोद में सोने में क्या हर्ज है?" बस, जमनालालजी आंखें मूंदकर माताजी की गोद में ऐसे सो गये, मानो कोई प्रेत पड़ा हो। थोड़ी देर बाद आंखें खोलकर उन्होंने कहा—"अगर इस समय मेरे प्राण भी छूट जायं तो कोई बात नहीं। मेरा अब सब बात से मन भर गया।" उनकी आध्यात्मिक मां की भूख आनंदमयी की गोद में सोने से पूरी हो गई। जमनालालजी ने माता से तीन बातों की मांग की :

१. मेरी इच्छा है कि आश्रम के निकट जमीन लेकर मकान बनवाऊं, ताकि कोई कार्यकर्ता आराम तथा मानसिक शांति प्राप्त करना चाहे तो उसे भेजा जा सके।

२. मुझे सेठजी के बजाय किसी भी छोटे नाम से संबोधित किया जाय।

३. मैं तभी जलपान करूंगा जब आप बताओगी कि मेरी मृत्यु कब होगी।

पहली बात की स्वीकृति आसान थी, दूसरी बात की मांग में माताजी ने 'भैया' शब्द चुन लिया। लेकिन तीसरी मांग बड़ी कठिन थी। माताजी ने कहा—"यों मृत्यु का समय तो किसीको क्या बताया जाय। हां, आदमी को यह समझना चाहिए कि हर क्षण उसके सिर पर उसकी मौत खड़ी है।" इससे जमनालालजी का समाधान कम होता। बोले—"यह तो ठीक है, पर समय बताओ।" आखिर माताजी ने कहा—"छः महीने की तैयारी से काम करो।" इस वचन पर जमनालालजी की बड़ी श्रद्धा हो गई, ऐसा लगता है। उनकी डायरियों में मिलता है कि छः महीने तक वर्धा ही में रहना, रेल या मोटर में नहीं बैठना। यह निर्णय उन्होंने १५ अगस्त १६४१ से १५ फरवरी १६४२ तक के लिए किया था।

इन दिनों उनका आत्म-मंथन बड़ी तेजी से चल रहा था। वह व्यापारिक तथा अन्य कार्यों से निवृत्त हो गये और अपनी व्यापारिक बुद्धि के अनुसार ऐसा हिसाब बैठाया कि यदि इन छः महीनों में जाना पड़ा तो उसकी तैयारी रहे। ऐसी साधना करें कि अधिक-से-अधिक समय पारमार्थिक कामों और चित्त-शुद्धि में लगे और आगे रहना पड़े तो आदतें सुधर जायें। इसलिए घर-बार से निवृत्ति लेकर जीवन को ऐसे कामों में लगाया, जिससे उनका आत्मीय भाव मूक प्राणियों तक बढ़े। इसलिए उन्होंने गो-सेवा को चुना था। मानव-सेवा में वह लीन रहा

कुछ संघर्ष होना संभव है। जमनालालजी संपूर्ण चित्त शुद्धि में लग गये। हर क्षण का सदुपयोग करने के प्रयत्न में रहे।

जब उनकी जन्मतिथि आती तब वह अपने पिछले साल का लेखा लेते और नये साल में पदार्पण करते समय अच्छे संकल्प करते। वे संकल्प पूरे हों इसलिए प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद गुरुजनों के आशीर्वाद लेते। उसके बाद ही चाल-पान करते।

बापूजी की सलाह से जमनालालजी ने गो सेवा का काम अपने लिए पसंद किया था और गो सेवा-संघ की स्थापना करके वह उस काम में लग गये। उन्होंने अपने आपको इस काम में इतना तल्लीन कर लिया कि सिर्फ गो सेवा की ही चर्चा करते थे। यों गो सेवा-संघ की स्थापना तो अक्तूबर, १९४१ में हुई थी और उसके वह अध्यक्ष बने थे, पर उसकी तैयारी तो उन्होंने इसके पहले ही कर ली थी।

एक बार गाय का खुर उनके पांव पर पड़ गया। खुर गड़ गया। पैर में सूजन हो जाने से चलने में कष्ट होता था। लेकिन दोष अपने को ही देते—'मैं कैसा आलसी हूं जो सेवा के लायक नहीं, गाय तो पशु है।

बछड़े पर हाथ फिराते और कहते—' इसपर हाथ फिराने से कितना सुख मिलता है। मूक पशु की सेवा में ही निःस्वार्थ प्यार है।

वे चाहते थे कि अपना बचा हुआ जीवन प्राचीन ऋषियों की तरह कुटिया में बितावें। इसलिए एक कुटिया गोपुरी के पास बनाकर रहना चाहते थे जहां रहकर वे गो सेवा और आत्मचिंतन में समय बितावें। उन्होंने कुटिया बनवाना शुरू करा दिया था और ताकीद कर दी थी कि वह जल्दी-से जल्दी बन जाय।

अधूरी बनी झोंपड़ी में दूसरे दिन ही से रहने चले गये। उन्हें पूरा एकांत चाहिए था। इसलिए मैं भी डरती हुई वहां उनके पास रहने नहीं जाती, क्योंकि मैं उनके खाने पीने की या आराम की चिंता करूं यह भी उन्हें असह्य था। वहां उन्होंने अपने पास कौसल्या नाम की एक गाय रक्खी थी। हाथ मुंह धोकर वे उसकी सेवा करते उसके बदन को सहलाते फिर वह अपनी मां के पास चले जाते और उनकी गोद में अपना सिर रखकर भजन सुनते और डायरी लिखते। उसके बाद प्रार्थना करके घूमने जाते। घूमते हुए सबसे मिलते सुख दुःख की बात पूछते और जिससे खास बात करनी होती उसे साथ ले लेते। इस प्रकार रात दिन जमनालालजी का चिंतन गो-सेवा-संबंधी कामों का ही चलता। कोई व्यापार की बात करता तो कहते— मेरे साथ व्यापार की बात मत करो। कुटिया का नाम जानकी-कुटीर रखा था।

इसी बीच राधाकृष्ण खादी के काम से सीकर जाने लगा तो मैं भी उसके साथ चली गई। वर्षों से जमनालालजी का नया जीवन क्रम देखकर मन कुछ खिन्न रहने लगा था। उनके काम में मेरा सहयोग तो संभव था नहीं। इस कारण मन को बहलाने के विचार से ही सीकर गई थी।

कुछ दिन बाद रामकृष्ण (सबसे छोटा पुत्र) लेने आया। मैं वापस वर्धा पहुंची।

मेरे लौटने पर जमनालालजी बड़े खुश हुए और हंसकर बोले— जानकीजी, आ गई। उन दिनों जमनालालजी नव-यज्ञ तथा गो सेवा-सम्मेलन के कामों में व्यस्त थे। मैं बंगले पर

रहने लगी। एक दिन वह बोले— तेरा क्या मन है? सेवाग्राम बापू के पास जाना हो तो वहां जा सकती हो। कुटिया पर आना हो तो कुटिया चलो। मैंने कहा— मैं तो कुटिया में चलूंगी। जमनालालजी बोले— तो अपना बिस्तर टमटम में रख। मेरी तो मनभाती बात हो गई। जल्दी-जल्दी बिस्तर लपेटकर मैंने टमटम में रखा और गोपुरी पहुंच गई। हम दोनों वहां पांच रोज ही साथ रह पाये।

मेरा मन किसी काम में लगा रहे, इस खयाल से गो-सेवा के लिए आये हुए एक साधु से उन्होंने कहा कि जानकीदेवी को सितार सिखा दो। मैं सीखने लगी, लेकिन जमनालालजी रात-दिन गो-सेवा के काम में ही लगे रहते थे।

गो-सेवा के काम को और बढ़ाने की दृष्टि से जमनालालजी ने बापूजी की सलाह से एक गो-सेवा-सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन सफलतापूर्वक हुआ। इसमें सारे हिंदुस्तान से लोग भाग लेने के लिए आये। जमनालालजी को पुराने मित्रों और कार्यकर्ताओं से मिलकर बड़ी खुशी हुई।

चौंतीस—

सम्मेलन पूरा होने के बाद से उनके सिर में दर्द रहने लगा। उनकी आदत ऐसी थी कि दर्द को चुपचाप बर्दाश्त करते। बहुत कम उसकी चर्चा करते। दर्द बहुत होता तभी उनके मुंह से बात निकलती।

मातादीनजी भगेरिया ने गांधीजी-सम्बन्धी काव्य लिखा था। इन दिनों वे आये हुए थे और जमनालालजी को सुनाना चाहते थे। जमनालालजी की ऐसी दशा कहां थी जो सुनें, पर उनका मन राजी रखने के लिए महिलाश्रम में उन्होंने एक दिन कार्यक्रम रखवाया, जिसमें महिलाश्रम की लड़कियां भी सुन सकें। हम लोग भी पहुंचे। जैसे-तैसे वह थोड़ी देर बैठे। जब दर्द बर्दाश्त के बाहर हुआ तो उठकर जानकी-कुटीर में चले गये और सो गये। दूसरे दिन भी सिर में दर्द था। लेकिन उन दिनों सेवाग्राम में घनश्यामदासजी बिड़ला ठहरे हुए थे। उनका फोन आया तो वह जाने के लिए तैयार हो गये। जब मैंने कहा कि आपने तो कहा था कि आज दर्द है इसलिए यहीं रहूंगा। तो वह बोले— आज बापू का मौन है। घनश्यामदासजी अकेले रहेंगे। उनसे कुछ हंसी-मजाक करेंगे। उनका दिल बहलेगा। यह कहकर वह टमटम में बैठे और सेवाग्राम को रवाना हो गये। लेकिन उनका सिर-दर्द बढ़ता ही गया। वहां पहुंचने पर महादेवभाई, किशोरलालभाई तथा कृष्णदास गांधी से बात की कि मुझे आपसे बात करनी है, पर आज तो सिर-दर्द बढ़ रहा है, फिर आकर बात करूंगा। बिड़लाजी से थोड़ी-बहुत बातचीत करके वापस आये। बापूजी से बिना मिले लौट आये, क्योंकि वह स्नानघर में थे। वह ऐसे ही लौट आये। बापूजी को मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि सिर में दर्द था तो मैं उतार देता।

सेवाग्राम से वह वापस आये। उन दिनों धार राज्य के प्रधान [illegible] के आने की बात थी। इसलिए बजाजवाड़ी में व्यवस्था समझाकर वह जल्दी ही जानकी-कुटीर लौट आये और सो गये। दूसरे दिन सवेरे भी सिर में कुछ दर्द था। इसलिए एनिमा लिया। इससे दर्द कुछ हलका हुआ तो बोले— अब मैंने बिना दवा के ही बीमारी दूर कर दी। फिर वह घूमने

चले गये। मैं भी साथ थी। बजाजवाड़ी पहुंचने पर ग्राम कार्ड शेड का कार्यक्रम रद्द होने की खबर मिली। वह लोगा से बातचीत करने लगे। मैं भी बगले म काम देखने लग गई। बाद म उन्होन बगले की व्यवस्था आदि के बार मे बात की। उसके बाद दुकान जाने को रवाना हुए। उस दिन एकादशी थी और सावित्री ने फलाहार के लिए दुकान पर हम दोना को बुलाया था। राजनारायणजी और ओम भी उसी दिन बम्बई से आये थ। जमनालालजी बोले कि आज ता ताश खेलेंगे, जिससे सिर हलका हो। वह दुकान पर एक साल के बाद आये थे।

कुछ देर सुस्ताने के बाद फलाहार किया। दो बजे सेवाग्राम जाने के लिए टमटम तयार करने को कहा। लेकिन ओम बोली कि आज हम आपके साथ चार बजे तक ब्रिज खेलना है। जमनालालजी बोले—"अच्छा, मैं थोडा आराम कर लेता हू, तू चरखा लगा दे। राजनारायणजी स बोले— 'तुमसे डेरी फार्म खोलने की बात करनी है सो मैं उठू तो याद दिला देना। उसके बाद पद्रह बीस मिनट बाहर शौच गये। लौटकर आये तो बहुत थके हुए थे, तकिए के सहारे पड गये। मैं उन्हे आराम करते देखकर दूसरे कमरे म चली गई। ओम् ने देखा कि काकाजी सोकर उठने के बाद ता चरखा कातनेवाले थे यह बात क्या है? सावित्री और ओम् भागी आई। जमनालालजी ने सावित्री से कहा—' मेनथाल हो तो लाओ। वह दोनों दौडी नीचे गई। घर म मेनथाल न मिलने पर दवाईखाने की दूकान से मगाया। उस समय उनके सिर म भयानक दर्द हो रहा था। उन्ह उलटी आई। उनके लिए उठ। उलटी करके फिर लेट गये। मैंने परो म घी मसलने के लिए ओम् को बुलाया तो इशारा करके कहा कि तुम्ही मलो। वह और बेटी कापर छुआने मे बहुत बचते थ। मैं घी मलने लगी। सिर मे दर्द ज्यादा बढा तो वह बोले— 'अरे, कोई एस्प्रीन ही दो।" इतना कहकर वह एकदम निढाल हो गये। उन्ह फिर उलटी हुई। इतने म डाक्टर भी आ गया। मैंने आख खोलकर देखा तो लाल सुर्ख थी। डाक्टर ने रक्त चाप लिया तो २५० था। उनकी नस काटने की बात डाक्टरो म चली लेकिन किसीकी हिम्मत न पडी। थोडी देर के बाद सिविल सर्जन ने आख देखी और वह बाहर चले गये। हमने समझा कि इन्ह कष्ट न हो इसलिए वह बाहर चले गये हैं। लेकिन समझते देर न लगी कि सबकुछ समाप्त हो गया है। बात चारो ओर फैल गई। विनोबाजी आ गये। बापू को फोन गया। वह भी आये। जहा वे पहले मौन-बैठते थे और जहा बैठकर उन्होंने दाम्पत्य की वैराग्य भरी चिट्ठी लिखी थी वहा उनके प्राण गये। ओम् ने कहा कि भले ही उन्होंने घर त्यागकर झोपडी म वास किया हो पर वह राजयोगी थ इसलिए महल म ही गये।

विनोबाजी तो आकर स्तब्ध उठ गये पर बापूजी ने आते ही जमनालालजी के सिर पर हाथ रखा। बापूजी को देखते ही मैं बोली— 'बापूजी आप इनके पास होते तो यह क्स जाते। इनकी तबीयत बिगडते ही जल्दी खबर भेज दी जाती तो अच्छा होता। बस, अब तो आप इन्ह जीवित कर दीजिये। आप ही जिला सकते हैं।

बापूजी बोले— जानकी, तुम्ह अब रोना नहीं है, तुम्हें तो हँसना है और बच्चों को भी हँसाना है। जमनालाल तो जिंदा ही है। जिसका यश अमर हो उसकी मृत्यु कैसी? उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके रास्ते न चलो। उसने परमार्थ की जिन्दगी बिताई। जो काम उसने अपने कंधो पर लिया था, उसे अब तुम सम्भालो। मैं तुम्ह झूठा धीरज देने नहीं

आया। जमनालाल तो जिंदा ही है। उसे जिन्दा रखना हमारा काम है।

मैंने विनोबाजी की तरफ इशारा करके कहा— 'तुम तो इनको भगवान के दर्शन कराओ।' पर वह चुपचाप बैठे रहे। बापू बोले— 'जानकी जमनालाल को तो भगवान के दर्शन हो चुके, अब तो तुम्हें करना बाकी है। उसकी तैयारी करो। जो काम उन्होंने आधा किया है उसे पूरा करो। उसके लिए अपना सर्वस्व की होम कर दो।'

बचपन में सती होने की मेरी इच्छा थी वह जाग उठी। मैं बोली—'बापूजी मैं सती होना चाहती हूं। आज्ञा दीजिये।' बापू बोले— 'शरीर को जलाने में क्या फायदा? वह तो तुच्छ है, मिट्टी है। अपने सब दुर्गुणों को जला देना ही सतीत्व है। अपने सब दुर्गुणों की चिता में होम करो। फिर बाकी बचेगा वह शुद्ध कंचन रहेगा। उसको कैसे जलाया जाय? उसे तो कृष्णार्पण ही किया जा सकता है। स्त्रियों को मैं त्याग मूर्ति मानता हूं क्योंकि हिन्दू स्त्री विधवा होने पर सारे भोगों को तिलांजलि देती है, विकारों का शमन करती है। अब तुम त्याग मूर्ति बन गई। अपने अवगुणों को जमनालाल की चिता में जला दो। अपना जो कुछ हो वह उसके काम में लगा दो। यही सती होना है। उठो तुम सती हो जाओ।' मैं बोली 'मैं और मेरी सम्पत्ति उनके काम के लिए अर्पित है।'

खबर तो चारों ओर फैल ही गई थी। बम्बई से फोन आया कि लोग स्पेशल गाड़ी लेकर जमनालालजी की अंतिम यात्रा में शामिल होना चाहते हैं। प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या किया जाय। मेरे ध्यान में उनके वे शब्द आ गये जो उन्होंने बम्बई में अभ्यंकरजी की मृत्यु पर कहे थे— 'प्राण चले जाने पर शरीर का क्या? उसके लिए धूमधाम क्या!' मैंने कहा—'मृत शरीर को रातभर रखना उनकी भावना के विरुद्ध है। सबको तकलीफ होगी। किसीका भी कष्ट उन्हें असहनीय था। तब यही निर्णय हुआ कि तुरंत ही तैयारी की जाय।' राधाकृष्ण ने पूछा कि स्नान कहां कराया जाय? मैं बोली— 'नीचे चौक में।' घर में गंगाजल का घड़ा था वह लाया गया। उनकी देह नीचे ले जाने लगे। मैं हाथ पकड़कर 'ओम ओम्' कहती हुई चली। गंगाजल से जमनालालजी को नहलाया गया। मेरी चरणामृत पीने की आदत थी सो मैंने अंजुली भरकर स्नान कराया हुआ गंगाजल पी लिया। मैंने उस जल से शीशी भर ली। पर बाद में विनोबाजी के समझाने पर उस जल को समाधि पर लगाये हुए पौधे पर चढ़ा दिया। समाचार मिलते ही लोग इकट्ठे हो गये। किसीको यह बात सच नहीं लगी। कोई कहता था कि हमने आज उन्हें गोरक्षण में देखा। कोई बोलता था कि बजाजवाड़ी में बैठे थे। किसी ने कहा दुकान पर जाते मैंने देखा। यह कैसे हो सकता है? नहलाने के बाद बापूजी ने अपना दुपट्टा उतारकर उढ़ा दिया। जमनालालजी के लिए अंतिम वस्त्र तो विनोबाजी के कते सूत की खादी का मंगाया गया। मैंने सोचा बापूजी का दुपट्टा क्यों जलाया जाय, इसलिए उसे उठाकर मैंने गले में लपेट लिया जो अब भी मेरे पास है।

जब अरथी को बांधने लगे तो दादीजी एकदम चिल्लाई कि यह क्या कर रहे हो। अबतक तो वे यह समझती रहीं कि यहां कोई बड़ी सभा है, लोग इकट्ठे हुए हैं, गांधीजी भी आये हैं। उन्हें पता भी क्या लगे कि ऐसी भयानक घटना हो गई है, क्योंकि रोना धोना तो सब मन में ही था। बाद भले ही चुपचाप इधर उधर रो लें, लेकिन जमनालालजी की हिदायत रही थी कि

मौत के समय रोया धोया न जाय, मौत का दुःख न माना जाय। दादीजी का रोना असीम था। बापूजी उन्हें बहुत देर तक समझाते रहे पर उनके रुदन को रोकना असम्भव था। इसी स्थान पर उनके तीन बेटे और एक जँवाई गया था, उसका स्मरण कर उनका दुःख बढ़ता ही जाता था।

तैयारी होने पर अर्थी चलने लगी। मैं भी आगे ओम् करती हुई अर्थी पकड़े हुए जा रही थी। महिलाश्रम की लड़कियाँ और कुटुम्ब की औरतें साथ थे, लगता मानो समुद्र ही उमड़ पड़ा हो। लड़कियाँ बोल रही थीं— 'राम धुन लागी, गोपाल धुन लागी।' सब लोग यही बोलते हुए जा रहे थे। मैंने कहा कि जो कंधा देना चाहे उसे देने दो। चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, जमनालालजी तो सबके थे।

दाह क्रिया बापूजी ने जमनालालजी की डायरी के साथ करना तय हुआ। चिता की तैयारी की गई। कपूर से चिता को प्रज्वलित किया गया। मैंने बापूजी के हाथ में पण्डा दिया। मैं कहीं चिता में कूद न जाऊं इसलिए बापूजी ने मुझे पकड़ लिया था। बापूजी ने विनोबाजी को वेद और उपनिषदों के मंत्र-पाठ करने को कहा। विनोबाजी ने उपनिषदों के मंत्रों का पाठ किया। रघुवर शास्त्री ने वेद मंत्र कहे। अब्दुस्सलाम ने कुरान की आयतें कहीं। बा, महादेवभाई तथा भगवानदेवी सेकसरिया को तो मूर्छा आ गई पर मैं शून्य भाव से चिता की ओर देखती रही। इस समय मन में यही भाव था मानो वह मुझमें प्रवेश कर रहे हैं। पर धीरे धीरे ज्यों ज्यों रात पड़ने लगी, खालीपन का अनुभव होने लगा। विनोबाजी रात भर मेरे पास बैठे थे। मैं उनसे बार-बार पूछती कि अब वह कहां मिलेंगे।

जमनालालजी के जाने की वेदना तो बाद में धीरे धीरे बढ़ने लगी और अब तो क्षण क्षण उनकी कमी महसूस होती रहती है।

पतीस—

जब जमनालालजी का देहान्त हुआ तब कमलनयन गोला के शक्कर के कारखाने में था। उसे कलकत्ते से फोन मिला। जब फोन से कहा गया कि वर्धा में बहुत बड़ी दुर्घटना हो गई तो उसके मन में यही विचार आया कि या तो काकाजी नहीं रहे या बापूजी नहीं रहे। लेकिन दूसरे ही क्षण यह विचार आया कि बापूजी की देश को बहुत जरूरत है और उनका रहना आवश्यक है। जब उसे निश्चित रूप से मालूम हुआ कि काकाजी नहीं रहे तब उसने कारखाने के सब कर्मचारियों और मजदूरों को जमा करके यह दुःखद समाचार बताया और कहा कि काकाजी के शोक में कारखाना बन्द नहीं होना चाहिए। ऐसी गम्भीरता उसमें उस समय थी। घटना हृदय को हिला देनेवाली थी। दश-मेयर पिता के गोलोकवास की खबर पाकर बेटे द्वारा ऐसी बातों का किया जाना मामूली बात थोड़े ही थी। लेकिन हमारे यहां ये बातें जमनालालजी के आचरण और व्यवहार के कारण स्वाभाविक बन गई थीं। गोला से रवाना होने पर उसे लखनऊ स्टेशन पर माता आनन्दमयी मिल गईं। उनकी वर्धा आने की तैयारी थी। जमनालालजी ने पिछले छह महीने में माता आनन्दमयी को वर्धा बुलाने के बहुत प्रयत्न किए थे लेकिन सब प्रयत्न विफल रहे। जमनालालजी जब किसी को वर्धा बुलाने का निश्चय करते तब बुलाकर ही चैन लेते, पर

माता आनन्दमयी के समाप्त एक न चली। पर जब वह आ रही थी, यह अद्भुत घटना थी। कमलनयन ने जब उनको बताया कि काकाजी तो चले गये हैं तब वह बोलीं कि 'भया को आत्म दर्शन हो रहा है। उसके बाद वह रुक गई और तीन दिन बाद वर्धा आईं।

जमनालालजी के शरीरान्त की खबर सुनने के बाद कमलनयन ने जल भी छोड दिया। स्टेशन पर जब उसे मालूम हुआ कि विनोबाजी रामायण का पाठ कर रहे हैं तब वह नहाकर वहा पहुचा। उस समय की उसकी दशा का वर्णन करना कठिन है। आते ही मेरे गले से लिपट गया। हम दोनो शून्यवत् थे। हमारे आसू सूख गये थे। पर लोगो की आखो से आसू बह रहे थे। जब उसे छाछ पीने को कहा गया तब मालूम हुआ कि तीन दिन से पानी ही पहा लिया है। आखिर उसने मुझ छाछ पिलाकर ही स्वय छाछ पी।

घर के लडके लडकियो बहुओ सबकी दशा एक सी थी। जैसे जमनालालजी की आत्मा ने हम सबके अन्दर प्रवेश किया हो इस तरह हम सब भावावेग मे थे। सबके मन मे एक यही बात रम रही थी कि उनके कार्यो मे योग देकर उनके जैसे बने। कमल ने वर्धा पहुचने पर सबसे पहले यह जानने की कोशिश की कि उसके काकाजी ने किस संस्था के लिए क्या देने का कहा था या उनकी क्या इच्छा थी। उसने सर्वप्रथम उनके सब वचनो की पूर्ति की। पवनार का बगला उसने विनोबाजी को अर्पित किया। बजाजवाडी मे आने जानेवालो के लिए जमनालालजी के द्वारा जैसी व्यवस्था चलती थी वह चालू रखने के लिए एक लाख रुपये उसने लक्ष्मीनारायण मंदिर मे जमा करा दिये जो सात साल मे खर्च हुए और अब वह खर्च लडके ही चलाते हैं। दोनो भाइयो ने विचार करके जमनालालजी की जो सम्पत्ति थी उसका ट्रस्ट बनवा दिया। जब घन श्यामदासजी बिडला ने घर का हिसाब देखा तो वह ताज्जुब मे रह गये। बोले कि जमनालालजी तो धन के बल की जगह आत्मबल पर ही अपना काम चलाते रहे। बिडलाजी उनके अभिन्न मित्र थे। उनको भी उनकी मृत्यु से बडा धक्का लगा। हमारे परिवार के प्रति उनकी जो आत्मीयता थी वह अबतक चल रही है।

जमनालालजी के शुरू किये गए रचनात्मक कामो का पूरा करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए बापूजी ने जमनालालजी के मित्रो तथा स्नेहियो की एक सभा बारहवी के दिन बुलाई जिसमे बापू ने कहा कि जमनालालजी के चाहनेवाले प्रेमियो और मित्रो का यह कर्त्तव्य है कि उनके कामो को करें जिससे उनकी आत्मा को सन्तोष मिले। उन दिनो वातावरण मे गम्भीरता थी और बापूजी जमनालालजी के प्रति लोगो के हृदय मे जो सद्भावना थी उसे काम मे लगाना चाहते थे। एक तो योही मृत्यु के बाद वैराग्य की भावना उमड पडती है फिर जमनालालजी जैसे कर्मशील और प्रेममूर्त्ति के वियोग से तो वैराग्यमय वातावरण और भी अधिक गहरा हो गया। उसपर बापूजी जैसे महापुरुष के बोलने का प्रभाव तो सबपर पडना ही था। उन दिनो मेरा हाल अजीब था। मेरे लिए यह आघात ऐसा था कि मैं सन्न सी हो गई थी। अब उनके जीवन का महान उद्देश्य पग पग पर याद आने लगा। उसकी सचाई प्रतीत होने लगी और उसको अपने जीवन मे उतारा जाय यही भावना बनती गई।

जमनालालजी के स्वर्गवास के बाद उनके शरीर की साक्षी देकर जो कुछ मेरे पास था उसके समर्पण का सकल्प तो मैंने कर ही लिया था, लेकिन अब अपने आपको काम मे लगाने की

बात थी। हमारे परिवार में बापूजी के विचारों का गहरा असर था। जो कुछ मुझसे बन पड़ा उसका श्रेय तो बापूजी को ही है। पिछले बीस साल में जो उपदेश वह देते रहे थे, उसीका यह परिणाम था। मैं अपना एक एक क्षण जमनालालजी के काम में लगाऊं यही बापूजी चाहते थे। इसी कारण बापूजी ने मुझपर गो सेवा की जिम्मेदारी डाली। मैंने गो सेवा का काम करने का संकल्प तो कर लिया पर जब मुझसे गो-सेवा-संघ की अध्यक्षा होने के लिए कहा गया तब मैं सहम गई। मैंने बापूजी से कहा कि मैं काम तो करूंगी, लेकिन इतना बोझ मुझपर मत डालिये। तब मुझे चुप रहने का इशारा कर उन्होंने गो-सेवा-संघ के काम का बोझ मुझपर डाल दिया और कहा—'तुम्हें ऐसे लोगों की मदद मिलेगी जो तन्त्र और व्यवहार को संभाल सकें।' इस दृष्टि से विनोबाजी तथा घनश्यामदासजी बिड़ला उपाध्यक्ष बनाये गए। वातावरण ही ऐसा था कि बापूजी ने जो कुछ कहा उसे मानना और अपनी शक्ति के अनुसार उस काम को करना, यही सबकी मनोवृत्ति थी। इसलिए विनोबाजी तथा घनश्यामदासजी ने भी स्वीकृति दे दी। बारहवीं का मतक के पीछे साड छोड़ने की प्रथा है। इसलिए पाच लाख के एक हजार साड उनके पीछे छोड़ने का संकल्प रामेश्वरदासजी बिड़ला ने किया और उसे उन्होंने पूरा किया।

मैं 'गो-सेवा-संघ' की अध्यक्षा बनी। शांतिकुमार मुरारजी भी एक उपाध्यक्ष बने। संस्था के खर्च आदि का प्रबन्ध मुझसे कैसे होगा इसकी चिंता रहती। शांतिकुमारजी विनोद से कहते—'मयाजी, तुम सबसे डरती क्यों हो या पूछती क्यों हो? जो जी में आवे सो करती जाओ, गाय को भैंस का पाड़ा होने से तो रहा।'

बापूजी ने बारह दिन के बाद मुझे सेवाग्राम बुला लिया। सावित्री भी मेरे साथ सेवाग्राम रहने चली आई थी। उसके जीवन में विशेष परिवर्तन आ गया था। सारे राजसी सुखों को छोड़कर वह आश्रम का जीवन बिताने लगी और वहां जो कुछ आश्रम का खाना मिलता वही खाकर आश्रम में काम करती। जब बापू का 'करो या मरो' आंदोलन शुरू हुआ तब वह भी जेल गई। वह नाजुक तो थी ही और सुख-वैभव में पली थी। उससे जेल जीवन कैसे बरदाश्त होगा, यह प्रश्न था। लेकिन उन दिनों उस पर भी एक तरह का नशा छाया हुआ था। ओम भी साथ गई। महिला-आश्रम की बहुत सी लड़कियां भी निकल पड़ीं। यद्यपि सावित्री ने जेल-जीवन को बड़े उत्साह और आनन्द के साथ बरदाश्त किया, मन को सम्हाले रही तथापि शरीर *को आखिर कैसे बरदाश्त होता? वह बीमार पड़ गई।* जेल से छूटकर जब वह आई तब उसे कुरसी पर लाया गया। उसका चेहरा देखकर लोगों को रोना आ गया। जेल से उसके स्वास्थ्य पर हुए परिणाम को दूर करने के लिए उसे तीन साल मसूरी रहना पड़ा।

राम भी ६ अगस्त को बापू की गिरफ्तारी के बाद गांवों में जाकर उनका संदेश सुनाने लगा। पुलिसवाले तो पीछे पड़े ही हुए थे। वह उनको छकाकर गांवों में जाता और लोगों को समझाता। एक बार पुलिस वालों ने उसे सेना में घेर लिया। वे पीछे दौड़े। राम पुल के नीचे छिप गया। पुलिस वालों ने लकड़ी के कुन्दों से मार-मारकर राम को निकाला और बाहर निकलने पर उसे बहुत पीटा भी और अपशब्द भी कहे। तब उसने कहा—'तुमको मारना है तो जितना चाहो मार लो। लेकिन गाली क्यों देते हो?' उसे जेल ले गए। बापूजी ने 'करो या मरो' का नारा इस तरह लगाया था कि सबके ऊपर उसका गहरा प्रभाव पड़ा और सभी लोग मरने का

डर छोडकर काम करने लगे। धीरे धीरे सब लोगो को पकड लिया गया। ममल इसलिए रह गया कि राधाकृष्ण के ऊपर सरकार ने एसा केस बनाया कि वह फासी पर ही चढाया जाय। उस केस के लिए उसे बाहर रहना पडा पर वह हर तरह से आन्दोलन को मदद पहुचाता रहा। उसने भी तन, मन और धन से इस आदोलन मे साथ दिया।

मैं गो सेवा के काम मे लगी ही थी कि धीरे धीरे सब लोग इस आन्दोलन के कारण जेल चले गये। उस समय 'गो सेवा सघ' के मत्री स्वामी आनन्द थे और सहायक मत्री थे श्री रिषभ दास राका। वे भी जेल चले गये, और पारनेरकरजी तथा स्वामी आनद आन्दोलन मे लग गये। राधाकृष्ण पर जो केस चला, वह भयानक था। वह जेल मे था ही। श्रीमनजी भी पकडे गये। बालुजकरजी पहले तो आदोलन के काम मे लगे और बाद मे वह भी जेल चले गये। जैसे-तैसे काम चलता रहा। मैं भी थोडी-बहुत देख रेख करती, पर ४२ के इस महान आदोलन के आगे रचनात्मक कामो की ओर कुछ दिनो तक बहुत ही कम ध्यान दिया गया। सरकार ने भी दमन बडे जोरो का किया। ऐसा मालूम पडता था कि अब दस साल तक काग्रेस का उठना मुश्किल है। इस तरह से उसे कुचल दिया गया। बच्चो तक को महात्मा गाधी की जय बोलने पर बेरहमी से पीटा गया।

इस आदोलन ने अनको के बलिदान लिये थे। अनेको ने कष्ट सहा था। बापू ने भी महादेवभाई को खोया। फिर बा भी गई। ये आघात तो बडे थे ही पर बापू ने तो कई जहर के प्याले पिये थे इसलिए वह बरदाश्त करते ही गये। यो बापूजी ने यह आदोलन बहुत सोच विचारकर और सरकार को बहुत मौके देकर शुरू किया था अग्रेजो को कठिनाई मे डालने का उनका इरादा नही था। उनकी अडचन से लाभ उठाना उन्हे नापसद था। इसलिए उन्होने बहुत मौका दिया। पर अग्रजो की नीयत साफ दिखाई न दी और क्रिप्स मिशन के आने पर बातचीत मे उन्हे सदेह का अनुभव हुआ तब तिलमिला उठे जब वह दिल्ली से लौटे तो बहुत ही गभीर थे और उन्होने निश्चय सा कर लिया था कि अब कुछ कठोर कदम ही उठाना चाहिए। काग्रेस की वर्किंग कमेटी की मीटिंगें हुइ। उनमे प्राय सभी बापूजी के विचार के ही थे। राजाजी का विचार कुछ भिन्न था। वह कहते थे कि इस मौके से लाभ उठाना ही चाहिए। बापू कुछ ऐसा कदम उठाना चाहते थे कि जिससे या तो आजादी का निश्चित वचन मिले वरना आत्मोत्सर्ग कर दें। सरकार पकडे तो आमरण अनशन कर देह-त्याग कर दें। अब सब गभीरता से सोचने लगे। साथियो मे सलाह होने लगी। विनोबाजी से पूछा गया। महादेवभाई और किशोरलालभाई तो ऐसे अनशन का विरोध करते थे। बापू के साथ दलीलें चलती थी लेकिन विनोबाजी ने तो यह कह दिया कि बापू का विचार ही ठीक है। सब गभीर और सुन्न हो गये।

जब बबई के लिए बापू रवाना हुए थे तब ऐसा ही लगता था कि अब बापू का लौटना कठिन है। बापू बा और महादेव भाइ के साथ गये थे लेकिन अब जेल से छूटकर लौटे तो बा और महादेवभाई का साथ छूट गया। उन्हे अकेले देखकर आश्रमवालो के हृदय विचलित हो गये। दुर्गाबहन की स्थिति का तो कहना ही क्या था।

बापू ने धीरे धीरे अपने रचनात्मक कामो को देखना भालना शुरू कर दिया और काम मे जुट गये। यही उनकी विशेषता थी कि जैसी भी परिस्थिति हो उसमे अपने काम को कैसे

लाभ पहुचायें, यह विचार कर काम म लग जाते। अपने पर सतुलन रखना उनकी विशेषता थी।

मणमालीभाई ने सेवाग्राम के खेत के लहसुन बहुत खाये। पेशाब म खून आया तो किसी ने जाकर बापू म कह दिया। बापू ने मणमालीभाई को बुलाया और पूछा— 'क्या है मणमाली ? इतना लहसुन खाते हो—पेशाब मे खून आता है ?' मणमालीभाई बोले—"बापू शरीर म मास और लोहा ही तो है। अगर पेशाब म लोहा गया तो क्या बडी बात है ? इसके अलावा जायगा भी क्या ?

बापू ने किसी तरह उनका लहसुन छुडाया और दूध पीने को कहा। फिर तो वह ३२ रतल तक दूध पीने लगे। आश्रम के बच्चो ने कहा कि सारा दूध तो काका ही पी जाते हैं हम क्या मिले ? इस पर दूध छोड दिया और खली खाने लगे। एक दिन सोचा कि गाय के गोबर म भी तत्त्व होता है तो बस गोबर खाना शुरू कर दिया। आश्रम के लोग डरे कि कही इन्होने सत्याग्रह तो शुरू नही कर दिया ! किसी तरह मना करके उनका गोबर खाना छुडाया।

छत्तीस—

बापू ने जब फिर स रचनात्मक कामो की तरफ ध्यान दिया तब उनके सामने 'गो-सेवा सघ' के काम का प्रश्न भी आया। नये सिर से फिर गो सेवा-सघ का काम शुरू हुआ। जमनालालजी ने अपने रहते जो गोरस भडार शुरू करवा दिया था, वह चल रहा था। उसमे गायो का मना दूध आता और बिकता रहता था। 'ग्राम-सेवा-मडल', बच्छराज-खेती तथा लक्ष्मीनारायण मदिर की डेरियाँ भी चल रही थी। व्यक्तिगत रूप म ग्वाले भी गायें पालने लगे थे। इस तरह वर्धा म गायो के काम की बढती हो रही थी पर काम को बाहर फैलाने और उसे देशव्यापी बनाने के लिए, बापूजी चाहते थ कि मैं उसम लग जाऊ। मैं बापूजी के कहने स इधर-उधर जाने लगी। राजेन्द्रबाबू की अध्यक्षता म गो-सेवा-सम्मेलन बुलाया गया। वह भी इस काय म रस लेने लगे और उन्होने बिहार म भी काम शुरू करने की दृष्टि से सम्मेलन बुलाया। वहा काम शुरू हुआ। मैं आगरा अमृतसर पटना, भागलपुर सीकर कलकत्ता, बबई आदि स्थानो म गई और काम बढाने का यथासभव प्रयत्न करती रही।

शातिकुमार मुरारजी की बापूजी तथा जमनालालजी पर श्रद्धा तो थी ही। वह गो सेवा का काम करने लगे और सघ के कुछ दिन मत्री भी रहे। उनका वर्धा आना जाना होता था और व बडे प्रेम और श्रद्धा से काम करते थे।

राधाकृष्ण इस काम म काफी रस लेता था और 'गो-सेवा-सघ' के काम की पुनरचना म उसका बहुत बडा हिस्सा रहा है। यो 'गो-सेवा-सघ' का काम तो वह करता ही था, पर दूसरे कामो की जिम्मेदारी भी उसपर इन दिनो थी और खासकर ग्राम-सेवा मडल की जिम्मेदारी रहने स रिषभदासजी को फिर मत्री बनाया गया। वह मेरे साथ कई जगह गये और काम को बढाने की कोशिश करते रहे। लेकिन इस महान काय के लिए जो शक्ति चाहिए थी उसकी मैं तथा मेरे साथी अपने म कमी पाते और इस काम की विशेष प्रगति रुकी रही। मैं कुछ दिन इस काम म लगी रही, पर न मालूम क्यो उत्साह कम होता गया और बापूजी ने जितनी अपेक्षा रखी थी उसम भी असफलता रही, इसका मुझे भी रज रहा। वह भी मुझे 'कामचोर' कहा करते थे।

धीरे धीरे मुझे उनके सामने जाने में संकोच भी होने लगा।

दिल्ली की भंगी-बस्ती में जब बापूजी रहते थे तब वहां एक बार मैं गई। बापूजी उन दिनों थकान के कारण चार घंटे मौन रहते थे। लेकिन मुझे देखते ही वह एकदम प्रेमवश बोल उठे—'चोर आ गई चोर आ गई।' यद्यपि बापू ने यह विनोद में कहा था लेकिन मैं उनकी हंसी में भाग न ले सकी क्योंकि मैं जानती थी कि इसके लिए उनके मन में कितना दर्द है।

जिस दिन बापू के गोली लगने की खबर आई उसी दिन सवेरे राजेन्द्रबाबू वर्धा आये थे। सब लोग खबर मिलने पर राजेन्द्रबाबू के पास इकट्ठे हुए। प्रार्थना हुई। राजेन्द्रबाबू ने दिल्ली जाने का तय किया पर सबकी राय यह रही कि रात को जाना ठीक न रहेगा। और वह रुक गये। लेकिन रात को एक बजे जवाहरलालजी का फोन आया कि उन्हें आना ही चाहिए। उनके लिए विमान की व्यवस्था की गई। उसमें मेरे लिए भी सीट रखी गई। जाने का मेरा मन तो था ही लेकिन मैंने सोचा कि आश्रमवालों के लिए रोक है तब मैं ही कैसे जाऊं? बापूजी के गोली लगने की खबर से मन पर विचित्र तरह का असर हुआ। खयाल आया कि देखो, बापूजी ने मुझसे आशा रखी थी वह यों ही रही। अब जब उनकी आंखें ही मुंद गईं तो मेरा उनके सामने जाना धोखा देना है। यह सोचकर मैं रुक गई।

रामकृष्ण दिल्ली से वापस आया तो बोला कि मां, तू क्यों रह गई? तुझे तो आना चाहिए था। उसके कहने पर मुझे भी लगा कि अच्छा होता कि मैं आखिरी दर्शन कर लेती। अब पछताने लगी। मेरे सामने ही तो हवाई जहाज गया था और दूसरे दिन वायूजी वापस भी आ गये। मैं भी आ जाती। सचमुच मैंने बहुत-कुछ खोया ऐसा याद में लगा।

बापूजी के जाने से देश में दुःख की लहर फैल गई और कई लोगों पर कई तरह से आघात हुए। हमारे यहां मदालसा पर बहुत ही असर पड़ा। उसने १२ रोज तक अन्न ही छोड़ दिया। उपनिषद की प्रार्थना के कागज छपाकर वह घर घर जाकर कहती—"अरे, अब तो जागो, बापू को खोकर भी क्या सोते रहोगे?" उसकी हालत विक्षिप्त जैसी हो गई थी। हम सबको बड़ी चिंता हो गई। श्रीमन्नारायणजी पर काम का इतना बोझ रहते भी उनका धीरज अपार था। इधर बापूजी के जाने का दुःख तो था ही उधर मदालसा की यह हालत! हमें यह डर था कि विक्षिप्त दशा में वह कब क्या कर बैठेगी? होठों में खून आ रहा था। मुंह में छाले पड़ गये थे।

हमारे घर के सभी लोग ऐसा महसूस करने लगे कि बापू के जाने से हमारे ऊपर से छत्रछाया उठ गई। बच्चे बापूजी के जाने से अपने को बिना बाप का मानने लगे क्योंकि जमनालालजी के जाने के बाद बापू का हाथ उनके सिर पर था।

जब अखबारवालों ने पूछा कि बापूजी के विषय में कुछ कहिये तब मैंने कहा—"हम आज बिना बाप के हो गये।" यह बात मैंने गोपुरी में कही। उधर वैसे ही शब्द कमलनयन ने बंबई में कहे।

बापूजी के जाने का मेरे मन पर पहले तो कम ही असर हुआ था पर धीरे धीरे जैसे जैसे दिन बीतने लगे वह असर बढ़ने लगा और मैं उनके अंतिम दर्शन से वंचित रही इसका रंज मन में रहने लगा। जब उनकी भस्मी बदरी केदार, गंगोत्री ले जाने की बात आई तब मेरे

मन में आया कि मैं भी उस पार्टी के साथ जा सकूँ, तो अच्छा। पर मन में फिर संकोच हुआ कि भस्मी के साथ जानेवालों की संख्या सीमित है। मेरे जाने से असुविधा होगी। पर मैंने आखिर डरते डरते ब्रजकृष्णजी चांदीवाला से पूछा कि क्या मैं जा सकती हूँ ? वह बदरी-केदार यात्रा की टोली के अगुआ थे। वह बोले कि पूछने का सवाल ही क्या है, आप मालिक हैं। यह सुनकर मुझे संतोष हुआ। मैंने सोचा कि बापूजी का गोली लगने के दिन जो संयम किया था, उसका प्रत्यक्ष फल मिल रहा है। मुझे ऐसा मालूम होने लगा, मानो बापूजी हाथ पकड़कर यात्रा करवा रहे हैं। मुझे आशा कहाँ थी कि मैं गंगोत्री, यमुनोत्री बदरी-केदार की कठिन यात्रा कर सकूँगी। मैं यह जानती थी कि इस तरह भस्मी को बड़े-बड़े तीर्थों में ले जाना भी आडंबर है। पर लोक भावना थी कि सद्धांतिक दृष्टि से भस्मी ले जाना बापू को पसंद न होने पर भी यह सब क्रिया-कांड अपने-आप होता गया। बापूजी की अस्थियाँ को स्पेशल ट्रेन से प्रयाग ले जाया गया था, तब भी मैं रुक गई थी। कमलनयन ही गया था। मेरे मन पर उस समय भी सिद्धांत की बात का ही असर था। पर इस बार मुझे ऐसा लगा कि मैं इस मौके को खो दूँगी, तो फिर कब मिलेगा। बापू के साथ मेरा उत्तराखंड का कार्यक्रम था लेकिन वह रह गया था। अब मुझे ऐसा ही लगा कि मैं बापू के साथ ही जा रही हूँ। यद्यपि बापू की भस्मी जा रही थी लेकिन बापू से भी ज्यादा सम्मान उसका हो रहा था। टेहरी राज्य की ओर से बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। पंडे लेकर लोग आगे चलते थे। बाजे बजाते हुए भस्मी ले जाई जा रही थी। कार्यक्रम निश्चित रहता था। जगह-जगह स्वागत होता जाता था। छोटे-बड़े, धनी गरीब स्त्री पुरुष विद्वान-अनपढ़, साधु-संन्यासी सभी भस्मी को प्रणाम करने और श्रद्धा भेंट करने आते थे। ऐसे ऐसे साधु भी आये, जो कभी अपनी गद्दी से नीचे उतरना और किसी के सामने जाना छोटापन समझते थे। लेकिन बापू ने सबके हृदय में जो स्थान पाया था वह अवर्णनीय था। हम लोगों की सुख-सुविधा की भी बहुत अच्छी व्यवस्था थी और गांधीजी के भक्त समझकर हमारे प्रति आदर प्रकट किया जाता था।

सबीस—

यों तो जमनालालजी के स्वर्गवास के बाद बजाजवाडी की चहल-पहल कुछ अंशों में कम हो गई थी, फिर भी जब तक बापू सेवाग्राम में थे तबतक आने-जानेवालों का तांता लगा ही रहता था। बापूजी के जाने के बाद लोगों का आना-जाना कम हो गया। लेकिन किशोरलालभाई के बजाजवाडी में बसने से एक तरह से वह उनकी बस्ती बन गई थी और वहाँ 'हरिजन' के काम के लिए कुछ काम करनेवाले रहते थे। इससे तथा किशोरलालभाई से मिलने-जुलने को आनेवालों से कुछ चहल-पहल रहती थी। जब मेरा मन न लगता तब उनके पास चली जाती। जब भी जाती वह और गोमतीबहन काम में लगे हुए दीखते। उन दोनों का शरीर तो हड्डियों का ढाँचा मात्र था। बीमारी लगी ही रहती थी। कहते हैं बीमारी से मनुष्य चिड़चिड़ा हो जाता है पर किशोरलालभाई तो इतनी तकलीफ भुगतकर भी सदा हँसमुख ही रहे। मैं जाती तो काम छोड़कर देखने लगते और कहते— "केम न बोलवानु प्रण कर्यु छे।" मतलब यह कि उनसे बात करूँ। मुझे डर लगता था कि उनसे बात करने से उनकी दम की तकलीफ बढ़ेगी। वे जैसे महान् तत्त्व-

ज्ञानी, विचारक और सिद्ध पुरुष थे, वैसे ही व्यावहारिक भी थे। इसलिए उनसे व्यवहार की सलाह लेने को सभी आते थे। उनको परेशानी होगी यह जानकर भी उनकी सलाह लेना जरूरी मालूम देता था। मुझे वर्धा बजाजवाडी में अकेले रहते देखकर एक बार उन्होंने राम से कहा—"रामकृष्ण जानकीबहन को यहां रखने की अपेक्षा या तो किसी काम में लगाओ या अपने पास रखो, क्योंकि इस तरह छोटे छोटे कामों में उलझे रहना अनुचित है।" रामकृष्ण ने कहा कि तुम बंबई आ जाओ। पहले भी वह तथा घर के लोग बंबई आने पर यहीं ही रहते थे।

बजाजवाडी में बच्चों के खेलने का मैदान था। रामकृष्ण और उसके साथी वहां खेलते थे। वह जब जेल में था तब वहां से लिखता रहता था कि मैदान को अच्छा बनाया जाय। रोलर घुमाकर मैदान पक्का कर दिया गया था। पर जब बंगाल के अकाल के बाद देश को अनाज अधिक उपजाने की जरूरत पड़ी तब मुझे लगा कि इस जमीन का कुछ उपयोग होना चाहिए। उन दिनों किशोरलालभाई बजाजवाडी में घूम रहे थे। मैंने उनसे कहा— इस मैदान में भी अनाज बोना चाहती हूं पर राम नाराज होगा। यह जमीन पक्की करने में काफी खर्च हुआ है। अब इस तोड़ने में अधिक खर्च होगा। क्या किया जाय ? वह बोले करो हिम्मत ! मैंने हिम्मत करके हल चलवाया और वहां मूंगफली की काफी अच्छी फसल हुई।

मशरूवाला-कुटुंब से हमारे कुटुंब की आत्मीयता पहले से ही थी। जमनालालजी का व्यापार में भी उनके कुटुंब के साथ संबंध था। किशोरलालभाई के त्याग से वे बहुत प्रभावित थे। वे हमेशा कहते कि देखो ये कितने त्यागी मितव्ययी तपस्वी और ज्ञानी हैं। इनका शरीर इतना कमजोर है फिर भी किसीसे सेवा लेने की बजाय देते ही हैं। और किसी के भी सुख दुख में पहुंच जाते हैं।

गोमतीबहन और मैं तो साबरमती विलेपारले तथा सेवाग्राम में साथ-साथ रहे थे। उनको बजाजवाडी में रहना सब तरह से अच्छा लगता था और यही जी चाहता था कि वे हमेशा बजाजवाडी में रहें।

बंबई में किशोरलालभाई के स्वर्गवास का फोन आया। मैं हक्की बक्की रह गई। गाड़ी छूटने में एक घंटे की देर थी। मैंने तैयारी कर ली पर गाड़ी पर पहुंचा कैसे जाय। रामकृष्ण आया तब आधा घंटा रह गया था। रेल पकड़ना तो मुश्किल था। अब क्या किया जाय ? मैं तो किशोरलालभाई के जाने की खबर सुनने के बाद बंबई में रह ही कैसे सकती थी ! मेरे सामने यही दृश्य आने लगा कि गोमतीबहन की रात कैसे कटेगी। मैं जल्दी से जल्दी वर्धा पहुंचना चाहती थी। कैसे पहुंचू ? आखिर विमान की बात सूझी। फोन से पूछने पर मालूम हुआ कि जगह भर गई है। शायद समय पर यदि कोई व्यक्ति न आये तो जगह मिल सकती है। यों तो विमान में जाने का खर्च बरदाश्त करने की हिम्मत बहुत कम पड़ती लेकिन आज तो मुझे वर्धा ही सूझ रहा था। मैं और रामकृष्ण तो थे ही, नीलूभाई के बहनोई भी थे। इस प्रकार तीन जानेवाले थे। जब राम ने पूछा कि अगर जगह एक ही मिले तो कौन जायगा ? मैंने कहा— मैं तो जाऊंगी ही। हम विमान पर गये। संयोग से वहां तीन जगह खाली मिल गई। हम सुबह ५ बजे बजाजवाडी पहुंचे।

उस समय किशोरलालभाई को माथे के नीचे तकिये का सहारा देकर सुलाया था। गले में फूल और सूत की मालाएं पहनाई गई थी। वह गाढ़ी निद्रा में सोये हुए लग रहे थे। चेहरे पर अपूर्व शांति थी। गीता का पाठ हो रहा था। वातावरण गंभीर और शान्त था।

सिरहाने गोमतीबहन बैठी थीं, मानो करुणा की मूर्ति हों। आंखों से आंसू बह रहे थे। आंखें सूज गई थी, पर हिम्मत और धीरज से वह इस दुःसह दुःख को सहन कर रही थीं। उन्होंने जीवन भर किशोरलालभाई में लीन होने का प्रयत्न किया था। अब उनका इस तरह से चले जाना लोगों को भी असह्य था तो फिर गोमतीबहन की तो बात ही क्या थी।

किशोरलालभाई बीमार ही रहते थे। कई बार तो उन्हें सांस लेने में भी कठिनाई होती थी। लेकिन आज जैसे उनकी सारी तकलीफें दूर हो गई हों। शांति में सोये हुए मालूम देते थे। श्रीकृष्णदास जाजू जैसे विरागी भी किशोरलालभाई के जाने में विह्वल हो गये।

उस समय ऐसा लगता था मानो किसी बड़े हवन या पूजन की तैयारी हो रही हो। अर्थी के साथ महिलाश्रम की लड़कियां बहनें तथा हजारों लोग थे। गोमतीबहन भी साथ गईं। करीब दस बजे गोपुरी में जमनालालजी की समाधि के पास दाह किया हुई। दोनों में भाई-जैसा प्रेम और मैत्री थी। जाने के बाद दोनों की दाह क्रिया भी पास पास हुई।

बाहर के काफी लोग थे क्योंकि किशोरलालभाई के मित्र और आत्मीय बहुत अधिक थे। उनको गोमतीबहन स्वयं अपने हाथ से चाय बनाकर पिलाती। पीनेवालों को संकोच तो होता था, पर इलाज भी क्या था। अतिथि-सत्कार तो गोमतीबहन के स्वभाव में ही समाया हुआ था।

हम सबकी यही इच्छा थी कि गोमतीबहन वर्धा में ही रहें पर वह बारडोली चली गईं और उनके जाने से बजाजवाड़ी की चहल-पहल और भी कम हो गई।

अड़तीस—

विनोबाजी को पहले-पहल मैंने साबरमती में देखा। वह तथा उनके भाई बालकोबाजी दिनभर गड्ढे आदि खोदते रहते। हमने सुन रखा था कि वह श्रम करके कम-से-कम में—आने-दो-आने में—अपना खर्च चलाते थे। वह बोलते कम थे। गीता का वर्ग लेते थे। उनके वर्ग में स्त्रियां भी जाती थीं। पढ़ाते समय समझाते बहुत अच्छा थे। समय के बड़े पाबन्द थे। वर्ग में अगर कोई विद्यार्थी एक मिनट भी देर से पहुंचता तो उस वर्ग के बाहर खड़ा रहना पड़ता। वह पढ़ाते समय इतने जोर से बोलते कि स्वयं पसीना-पसीना हो जाते। जब गीता का वर्ग शुरू करने की बात चली तब उन्होंने पढ़ने की इच्छा रखनेवाले विद्यार्थियों की योग्यता की जांच करने के लिए एक-एक को बुलाकर सबसे गीता के पांचवें अध्याय का नौवां श्लोक पढ़ने के लिए कहा। मैं भी उनमें थी। आगे चलकर मालूम हुआ कि यह श्लोक गीता में सबसे ज्यादा संयुक्ताक्षरवाला है।

विनोबाजी तथा उनके दोनों भाई बालब्रह्मचारी हैं। विनोबाजी विद्वान् तो हैं ही, इसलिए उनका हम लोगों पर बहुत प्रभाव था और हमारी उनके प्रति श्रद्धा भी खूब थी। लेकिन उनसे बोलने की हिम्मत किसकी हो क्योंकि वह बहुत कम बोलते थे। मेरे मन पर भी

उनका प्रभाव था। मैं सोचती थी कि मेरे बच्चे भी उनके जैसे ही बनें। एक दिन जब जमनालालजी ने मुझसे पूछा कि मैं अपने बच्चों को क्या बनाना चाहती हूं तो मैंने कह दिया कि विनोबा जैसा फकीर बनाना चाहती हूं। मैंने तो ये शब्द भावनावश कह दिये थे पर जमनालालजी तो उनके गंभीर अर्थ को समझते थे और यह भी जानते थे कि यह अपने हाथ की बात थोड़े ही है। उन्होंने विनोबाजी के सामने ही मुझसे कहा, "शब्द तो बड़े-बड़े सीख गई हो, पर उनका अर्थ भी जानती हो?"

मैं यही सोचती थी कि मेरे बच्चे भीष्म के समान ब्रह्मचारी और विद्वान् बनें। शादी-ब्याह तो सब करते हैं, लेकिन इससे बचने में ही विशेषता है। इसकी बच्चों के सामने चर्चा चलती। एक बार कमलनयन मजाक में बोला, "तू तो नौ बरस की विवाह कर लिया, म्हाने फकीर बणाने में तने के जोर आवे?" हमारे परिवार में तीन पीढ़ी के बाद बच्चे हुए थे। उनपर सबका लाड़-प्यार रहना स्वाभाविक था। फिर भी मैंने भावना और श्रद्धावश बच्चों को विनोबाजी के पास सीखने के लिए छोड़ दिया। केवल लड़के ही क्या, पद्रह-पद्रह बरस की लड़कियों को भी उनके हवाले कर दिया। जहां विनोबाजी के आश्रम में लड़कों का रहना कठिन था, वहां लड़कियों को भी रखना आसान थोड़े ही था! विनोबाजी के लिए लड़के और लड़की समान ही थे। सबसे समान परिश्रम कराते थे।

साबरमती में उनके प्रति जो श्रद्धा पैदा हुई थी, वह वर्धा में उनका संपर्क बढ़ने पर बढ़ती ही गई। जमनालालजी और बापू के चले जाने पर जो रीतापन अनुभव हुआ उससे विनोबाजी के और निकट जाना आवश्यक हो गया। मैं उनके साथ अनेक स्थलों पर घूमती रही। विनोबाजी का खान-पान, रहन-सहन, चलना-फिरना सब मुझे मनभाता लगता है। उनके साथ रहने में मुझे जीवन की सार्थकता महसूस होती है।

एक बार मैंने सपने में देखा कि मुझे मेरा स्वर्गीय छोटा भाई हाथ के थाले देकर बुला रहा है। जागने पर मैं उस सपने को भुला न सकी। खादी का कुरता पहने, सफेद टोपी लगाये स्वर्गीय भाई का मुझे "बाई आओ, बाई आओ" कहकर बुलाना ऐसा लगा, मानो अब मृत्यु का बुलावा आ गया है। मेरे मन में एक प्रकार का वहम घुस गया कि मैं अब बारह महीने में मर जाऊंगी। मैंने तय किया कि जो हो, बारह महीने तक विनोबाजी के साथ ही रहना चाहिए। अगर मैं मर जाऊं तो उनकी उपस्थिति में मरूं। इस तरह मैं विनोबाजी के साथ बारह महीने रही। बारह महीने पूरे होने पर मुझे विश्वास हो गया कि अब मैं एक बार तो बच ही गई।

शादी के बाद जब ओम लाल पीले कपड़े पहनकर विनोबाजी को नमस्कार करने गई तब वह बोले, "आओ होलिकाजी।" मैंने कहा, "यह शादी के बाद आई है। आपने इसे होलिका कैसे कहा?" बोले, "लाल रंग तो होलिका का है।" मैंने पूछा, "फिर अच्छा रंग कौन-सा है?" उन्होंने कहा, "हरा रंग अच्छा, क्योंकि इसमें सृष्टि का स्वाभाविक सौंदर्य भरा है।" मुझे बात जंच गई। मैंने अपने तकली पर कते सूत के ढाई गज लंबे दुपट्टे बनवाये। चालीस बने। उन्हें मैंने हरा रंगवाया और बापूजी के भस्मी प्रवाह के दिन, यानी १२ फरवरी को, जिस दिन पवनार में मेला लगता है, मैंने एक-एक दुपट्टा विनोबाजी तथा तुकडोजी को भेंट किया। विनोबाजी ने उस हरे दुपट्टे को दुपहरी की धूप में सिर पर ओढ़ लिया। जब मैंने तुकडोजी से उस दुपट्टे के

बन थ। य पवनार स्वा मगा स ज्यादा पास म आयेंगे इस दौरान मैं पैर म मोच हुई थी। पुडिया ही चादर सा गई। उसम बुखार आ गया। सर्वोदयसम्मेलन पाइलट सम्मेलन म आये हुए थ। उनके प्राकृतिक इलाज स कुछ दिनों म तबीयत तो ठीक हुई पर सर्वोदय-सम्मेलन म विशेष हिस्सा न ले सकी और तबीयत ठीक न होने स विनोबाजी के साथ तेलंगाना भी न जा सकी। तेलंगाना-यात्रा म सत्याग्रह का हठ पक्का पक्की हो गई। हैदराबाद म मौन के समय भूदान यज्ञ प्रारभ हो गया था। विनोबाजी मध्यप्रदेश म भी आये तो वहा भी यह काम चला। शुरू स ही विनोबाजी का प्रत्येक काम मुझे अच्छा लगता रहा। इसलिए यह भी अच्छा लगा। पर यह काम इतना बडा है यह मैं क्या जानू। शान्ति-सर्वोदय-सम्मेलन म गई तब वहा का उत्साह और वातावरण ही कुछ दूसरा था। सबम उत्साह था और सबको ऐसा लग रहा था कि इस यज्ञ म सबको भाग लेना चाहिए। राजेंद्रबाबू का भाषण बहुत प्रभावशाली हुआ लेकिन विनोबाजी का भाषण तो अदभुत था। सबकी श्रद्धा को उसने जगा दिया। बीच क समय म स्त्रियो का सम्मेलन था। निर्मला व बहन स मैं अध्यक्ष बन गई और मैंने बहनो स काचन मुक्ति के लिए अपील की कि व अब जेवर छोड दें।

एक बगाली लडकी न अगूठी लाकर दी। विनोबाजी आ गये थ। मैंने वह अगूठी उनकी अगुली म पहना दी। फिर बहुत-सी बहनें एक एक करके जेवर लाने लगीं। एक बहन न सूत भेजा। मैंने विनोबाजी के गले म पहनाया तो वह दाढी म उलझ गया। सब हसने लगे। बहनो को तो यह बात अचरजभरी लगी कि इतने गम्भीर सत स विनोद करने की हिम्मत भी किसीकी हो सकती है। जयप्रकाशजी ने कहा कि विनोबाजी म आप इतना मजाक कर लेती हैं! वहा करीब अट्ठाइस तोला सोना इकट्ठा हुआ। मैंने कहा कि बहनो की तो गायो पर ही भक्ति होती है इसलिए इसे गो सेवा म ही खर्च किया जाय। वह बोले कि भूदान की जमीन म कुओ की जरूरत तो होगी ही इसलिए उससे गाय और खेती दोनो को लाभ होगा।

चवालीस—

१९५३ म सर्वोदय सम्मेलन चाडिल बिहार म हुआ था। तब बहनो के सम्मेलन का आयोजन किया गया और बिना पूर्व सूचना के मुझे अध्यक्ष बनाया गया। मै सर्वोदय और भूदान की क्या बात कहती जो सूझा बोल दिया। मैंने कहा

आजकल विनोबाजी काचन मुक्ति की बात करते है। बहनो को तीस बरस पहले पूज्य बापूजी ने *अलकार दान की बात कही थी। मैं उस समय उनके साथ बिहार म घूमती थी। पूज्य* कस्तूरबा भी साथ म थी। बहनें अलकार देने के लिए बापूजी के पास नही पहुच पाती थी। नतीजा यह होता कि जब हम मागने के लिए आगे बढ़ती तो हमारी तरफ आभूषणो की बौछार होने लगती और दोनो हाथो से हम आभूषण झलने पडते। कितनी ही बहनो ने उस समय अलकार दान करने के साथ साथ अलकार का सयास भी ले लिया। मेरे अपने करीब एक लाख के जेवर थे। अगर मैं जेवरो का मोह रखती तो वे आज तक बस ही धर रहते। उसी एक लाख के पाच लाख हो गये और वह रकम गो सेवा के काम आई। विनोबाजी इस समय भूमिहीनो को भूमि दे रहे है, लेकिन बिना कुए के भूमि क्या उपजाय ? पानी होगा तो हरा घास होगा। गो सेवा भी

पगडते देखा तो बाबाजी ने वहाँ किसी भाई से कुदाली मांगकर कुआ खोदना शुरू कर दिया और कुछ दिनो मे श्रमदान से वहा कुआ बन गया। विनोबा जी तो भी दूसरी बार गया जिले मे रजौली थाने मे ही प्रवेश किया।

विनोबाजी पैदल घूमकर एक महीने मे राची आये और मैं गया से रल मे गई। राची मे भी घर घर समझाने लगी कि विनोबाजी आवें तो उनको कुआ की भेंट की जाय। १३॥। तोला सोना और तीस कुआ के लिए पाच पाच सौ के वचन मिले। वहा शुरू में स्थान मे कुए बनाने का काम तो कम हो सकता था इसलिए रकम वही पचा के पास रखकर मैं कलकत्ता आ गई। यहा ६१ कुआ के लिए तीस हजार पाच सौ रुपये तथा ८॥ तोला सोना मिला। यह रकम खादी भडार मे जमा करा दी गई।

राची के बाद मैं जुलाई मास मे कलकत्ता पहुची। सीतारामजी सेकसरिया के यहा ठहरी। यहा कूपदान मागने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान मीलो दूर जाना पडता। मुझसे न तो टकसी या रिक्शा का खर्च होता और न मुझे वाहन के लिए कहना अच्छा लगता। इसलिए मैंने एक योजना बना ली कि कोई परिचित वहाँ गाव मे जाता हो उसके पहले बात कर उसके साथ चली जाती। वापस लौटते समय भी वैसा ही करती और कोई मोटर न मिलती तो पैदल ही पहुच जाती। सीतारामजी मोटर के लिए आग्रहपूर्वक कहते पर मैं संकोच ही करती। यहा मैंने ६५ कुए प्राप्त किये थे।

जुगलकिशोरजी बिडला से मिली। पहले तो उन्होंने कहा कि गांधीजी, जवाहरलालजी ने मुसलमानो को बहुत चढा दिया अब विनोबा से कहो कि वे तो उनको बढावा न दें। मैंने कुआ के विषय मे काम की जानकारी दी। वे बोले यह काम तो बहुत अच्छा है। मुझे आफिस जाना है कहकर उन्होंने खडे होकर प्रणाम किया तो मैं बहुत सकुचाई। बोली—भाईजी आप तो बडे हैं फिर छोटो को प्रणाम कैसे? वे बोले— हा, है तू छोटी पर है साध्वी बडो भलो काम कर है। वे मोटर तक छोडने आये।

सोहनलालजी दूगड बडे भावुक थे। उन्होने भी मेरे काम मे साथ दिया। वे दान देने मे तो बडे उदार थे। सेठजी के प्रति उनकी बडी श्रद्धा थी। उन्होने तीन कुआ के १५०० रुपये दिये। उनकी मोटर मे वापस घर आने तो निकली, पर पछतावा ही रहा कि उनको कही काम होगा तो उन्हे दिक्कत होगी।

एक बात मुझे बहुत मीठी लगती है। मुझे जब कोई बडी मा कहता है तो वह शब्द मुझे बहुत अच्छा लगता है। कलकत्ता मे पन्ना और विजया बडी मा कहती और लक्ष्मी निवास बिडला भी मुझे एक बार बोले— बडी मा ! म्हारा अठे ही क्या नही उतरो। मुझे बहुत अच्छा लगा।

कलकत्ता मे सभी लोग परिचित थे। मैं इस तरह घर घर घूमू यह उन्हे कब पसन्द था। वे बोले कि आपको एक दो जगह से रकम मिल जाय तो काम हो सकता है फिर इस तरह क्या घूमती हो? मैं बोली— 'मुझे तो स्त्रियो मे प्रचार और देश की माग की जानकारी कराने के लिए घूमना है। इसलिए घर घर घूमती रही। जब मैं लेक पर जहा लोग सवेरे घूमने आते हैं कुए मागने पहुचती तो घनश्यामदासजी बिडला हसकर कहते आज भयाजी की बोली मे

"कितने कुएँ पड़े?" मैं कहती 'आज दो पड़े या आज तो खाली ही है।' मैं उनसे तो क्या माँगती!

पर एक दिन घनश्यामदासजी बोले, 'बिड़ला-पार्क आना।' यों जब भी कलकत्ते जाने का काम पड़ता और वे मिलने को बुलाते ही रहते। मैं भी जब कलकत्ता जाती तब मिलने जाया करती। मैं मिलने गई। उस दिन उनसे कई बड़े-बड़े लोग मिलने आये थे और वह काम में बहुत घिरे थे। परन्तु खबर मिलते ही वह एकदम बाहर आकर मेरे पास बैठ गये और प्रेम से पुरानी बातें करने लगे। बोले, 'मेरा और जमनालालजी का क्या संबंध था, यह तुमसे क्या छिपा है।' यह सुनते ही मेरी आँखों में आँसू आ गये। वह भी गंभीर हो गये। थोड़ी देर बाद बोले, 'पाँच कुएँ तुम्हारी माँगनी में लिखाता हूँ।' मैं बोली, 'इतने तो बहुत हैं, एक आदमी का एक कुआ बस।' वह बोले—'मेरे तीन बेटे और तीन बहुएँ हैं। तो छः कुएँ ले लो।' तब मैं बोली, 'पाँच तो कहा—वह ही सही। छः किनाद पाणी रख्या?' इसी बीच जुगलकिशोरजी एक कुएँ के लिए पाँच सौ रुपया कह चुके थे।

यों तो कलकत्ते में आने का मेरा मन कम था, वहाँ पर कुओं का काम करना था, पर गायों के विषय में एक शिष्ट-मंडल जवाहरलालजी के पास जा रहा था, उसमें जाने के लिए मुझे दिल्ली बुलाया गया, इसलिए मुझे वहाँ जाना पड़ा।

जब मैं दिल्ली पहुँची तो वहाँ वालों ने कहा कि यहाँ कुओं का काम होना मुश्किल है, यहाँ रोज ही बंद हुआ करते हैं। फिर भी मैं बृजकृष्णजी चाँदीवाला तथा नन्दलाल मेहता के पीछे पड़ी और मैंने घर-घर फिरना शुरू किया। सवेरे आठ बजे से यही धुन। एक दिन बाबा राघवदासजी बोले, 'जवाहरलालजी से कुआ कौन लाये?' मैंने कहा, 'मैं लाऊँगी।' ११ सितम्बर शुक्रवार को ग्यारह बजे उनसे मिली। उस दिन विनोबाजी का जन्मदिन था। मैं रामेश्वरी बहन तथा आशा के साथ पहुँची। जवाहरलालजी पानीपत से आये ही थे। थके हुए, मानो सोकर उठे हों। देखकर दया सी आई और ऐसा लगा कि ऐसे थके हुए से बात कैसे करूँ। मगर समय लिया तो बात करनी ही थी। मैंने कहा, 'आज विनोबाजी का जन्मदिन है, आपको हँसना पड़ेगा।' वह बोले, 'खूब हँसूँगा।' बैठ गये और फिर भूदान की बातें चलीं। रामेश्वरी बहन ने कहा कि ये औरतों से जेवर लूटती हैं और इस काम में जोरों से लग गई हैं। उन्होंने वह जेवर देखा जिसको मैंने विनोबाजी के गले में पहनाया था। फिर मैंने कहा, "भीष्म पितामह को अर्जुन ने पृथ्वी में बाण मारकर पानी पिलाया था, वैसे ही आप तीर मारकर पाताल फोड़िये, जिससे विनोबाजी को पानी ही पानी मिल जाय।" वह खूब हँसे। मैंने कहा कि अपने नाम का एक कुआ दीजिए, आपका आशीर्वाद चाहिए। रामेश्वरी बहन ने कहा कि राजघाट की प्रार्थना में आपका संदेश चाहिए। वह बोले, 'मैं भेज दूँगा।' उन्होंने संदेश के साथ एक कुएँ का आश्वासन याद करके भेज दिया।

शाम को राजघाट की प्रार्थना में राजेन्द्रबाबू आये। उनका भूदान के विषय में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ और उन्होंने कूप-दान की भी महत्ता बताई। मैंने कहा कि आपकी तरफ से एक कुआ छपरे में बन जाय। वह बोले, 'एक छपरे में तो कह ही दिया। एक अंबाला में भी बन जाय।' इस तरह दो कुओं का दान उनकी ओर से मिला। उन्होंने एक हजार रुपये रामेश्वरी बहन के पास भिजवा दिये। उनके व्याख्यान के बाद मैंने पूछा, 'भाईजी मैं बोलूँ क्या?' वह

वाले हा हां बोला। मैंने कहा, 'बापूजी ने तो बहुत प्रसन्नतापूर्वक गंभीरता के साथ आराम कहा है। यह तो रात है। मैं तो आपसे वहां के नाते प्रार्थना करती हूं कि आज १०८ कुएं पूरे कर दीजिए। सवेरे तक ७६ हुए थे एक जवाहरलालजी का इस तरह ८० हुए। एक आदमी पांच हजार रुपये नकदी दस कुओं के लिए ले आया। एक गुजराती भाई ने ८ कुओं का वचन दिया। इस तरह ९८ हो गये। उम्मीद ही कम थी कि इतने कुएं हो जायंगे। बापूजी भी गुड़ दर तक बैठे रहे। घर पहुंची तो श्रीमनजी ने कहा कि १०७ तो हो गये हैं एक बाकी है। वह एक बार में मीटिंग के लिए गये और वहां से करीब ११॥ बजे रात का आये। बारिश हो रही थी। उन्होंने दरवाजा खटखटाकर कहा 'माताजी एक कुआं आपके लिए ले आया हूं और वह भी पांच हजार वाला बड़ा। मेरा जी भर आया अनुभव किया कि यह बापू और विनोबाजी के तप का ही फल है कि मेरा संकल्प इस तरह पूरा हुआ।

उन दिनों विनोबाजी कांचन मुक्ति पर ही जोर देते थे इसलिए पैसा का आकर्षण तो उन्हें क्या होता। जब कोई उनको रुपया पैसा देना तो वह वापस कर देते। बिहार में भूदान-यज्ञ में किसी बहन ने आकर एक रुपया और दूसरी ने पांच रुपये दिये तो उन्होंने वापस कर दिये। नवादे में जयदयालजी डालमिया की बहन सौ रुपये का नोट लाई तो वह भी वापस कर दिया। हां जब बहनें जेवर देती तब वह मुझे कूप-दान के लिए सौंप देते। बहुत बहनों का यह सच्चा त्याग है। पर सब बहनें जेवर दें यह संभव कहां था और पैसे तो वह लौटा देते थे। तब क्या किया जाय? रांची में एक बहन ७ तोला सोना और दूसरी पांच सौ रुपये लाई। मैंने सोचा कि रुपये तो लेंगे कहां फिर क्या करें? पर एक बार देकर तो देखें। मैं उन बहनों को लेकर गई। विनोबाजी ने रुपये लेकर मेरे हाथ में दे दिये। तब मैंने कहा कि चलो अच्छा हुआ। रास्ता खुला। इस तरह कूप दान में रुपये लिये जाने लगे। जब कृष्णदासभाई मिले तो बोले कि आप तो विनोबाजी से भी बढ़कर निकली कि उनको पैसा लेना सिखा दिया। विनोबाजी इसीलिए कहा करते हैं कि जानकी बहन अपवाद हैं।

विनोबाजी के पेट में अलसर है। ऊपर से पैदल चलना और भ्रमण करना। खाना बच्चों जितना। डाक्टर लोग हैरान हैं। कहते हैं हमारी डाक्टरी के अनुसार तो विनोबाजी मर चुके हैं। इन्हें आराम करना चाहिए दवा लेनी चाहिए। विनोबाजी कहते हैं—आकाश के नीचे भ्रमण करना अमृत बाण दवा है। लेकिन डाक्टर इस चीज को कैसे समझें।

एक बार बातचीत के सिलसिले में विनोबाजी ने कहा कि रेल से आते समय सारे मान पत्र मैंने नदी में डाल दिये। सहसा मेरे मुंह से निकल गया कौन सी बड़ी बात की—खुद ही नदी में पड़ जाते। विनोबाजी एकदम चुप हो गये। मैं भी सोच में पड़ गई। आखिर इसमें भी विद्वानों की विद्वत्ता ही होगी। लेकिन एक बात तो है ही। चांदी और कांच में मढ़े चित्रों की उन्हें क्या परवा?

स्त्रियों की एक सभा में जेवर के त्याग पर मैं बोल रही थी। वैसे मुझे सभाओं में भाषण देने की आदत नहीं है। लेकिन अगर किसी चीज के बारे में मुझे श्रद्धा हो गई हो कि वह चीज उचित है तो फिर बोलते समय मैं भाषा की परवा नहीं करती दिल से बोलती हूं। और मैंने देखा है कि सुननेवाला पर उसका असर भी होता है। इस सभा में मेरे भाषण के बाद कई स्त्रियां

अपने जेवर उतार-उतारकर दने लगी। दो चार बहनो ने सोने की चूड़ियां लाकर दी। मैंने सोचा, चलो विनोबा का ही यह मान का दान द दो। इनन म एक छोटी लड़की तीन-साढ़े-तीन वष की होगी, काच की चूड़ी हाथ से निकालकर मा की गोद म बठे-बठे दने लगी। मैंन सोचा, यह सोने-चादी की थोड़े ही ह जो पेम मिलेंगे। परन्तु मन म भाव आया कि इस बच्चों को तो सोने चादी और काच का भेद थोड़े ही है। दूसरी बहनें द रही थी तो इसकी मा न भी सोचा होगा कुछ देना चाहिए। वातावरण के प्रभाव म वह अछूती थोड़े ही रह सकती थी। मैंने विनोबाजी को वह चूड़ी दिखाकर कहा— इस तो अपन पास रखनी चाहिए। भाई दामोदर की तो आखो म पानी भर आया इस दश्य को दखकर।

राजस्थान के दौरे के समय विनोबाजी मर पीहर लक्ष्मणगढ़ भी आय। उनके स्वागत के लिए पूरा प्रबध किया गया। लकिन गाव की राजनीति क कारण दो दल बन गय। एक दल का कहना था कि विनोबाजी इस रास्ते से जाय, दूसरा कहता—नहीं उस रास्ते स। मैं डर रही थी कि कहीं य लोग विनोबाजी क सामने उपद्रव न करें। और वही बात हुई। विनोबाजी क गाव म प्रवेश करने के पहले ही दोनो दलो म झगड़ा हो गया। दोनो दलो के नेता आपस मे गुथ गय। विनोबाजी को यह सब-कुछ अच्छा नहीं लगा। मैं तो अपराधी की तरह एक तरफ खड़ी रही। अत मे विनोबाजी को भी तनिक रोष हो आया। उन्होंने एक नेता का गुलबद पकड़कर जबरदस्ती हटाया और कहा— मैं तुम्हे एक घण्टा देता हू—आपस म तय कर लो मुझे किधर स जाना है—तभी मैं गाव मे जाऊगा वरना नहीं। यह कहकर वह पास के पेड़ के नीचे बैठ गय। मैं भी शर्मिंदा होकर पास ही बैठ गई—उनसे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं थी। साथ ही झगडा निपटाने की भी सामर्थ्य नहीं थी। थोड़ी देर बाद मैं धीरे-से बोली, 'विनोबाजी, मैं सोच रही थी यहा आपका स्वागत कम किया जायगा। ३५ वर्ष पहले जब जमनालालजी यहा आये थे तो दामोदर का स्वागत गोबर फेंककर किया था। और ससुरजी का स्वागत ऐसे हुआ।'

विनोबाजी ने मेरी ओर देखा और थोड़ा-सा मुस्कराये। मुझे विश्वास हो गया कि अब उनके मन म तनिक भी रोष नहीं है। लगभग ५० मिनट वहा बठे रहे तब जाकर दोनो दलो म समझौता हुआ और विनोबाजी न गाव म प्रवेश किया।

कालटी म श्रीमन्जी ने जवाहरलालजी और विनोबाजी की मुलाकात का प्रबंध कराया। विनोबाजी दरवाजे पर नेहरूजी की अगवानी क लिए खड़े थे। काफी समय बाद बापू के राजनीतिक और आध्यात्मिक शिष्यो का मिलन होनेवाला था।

नेहरूजी कार म स उतरे। श्रद्धा स हाथ जोड़कर उन्होंने विनोबा का अभिवादन किया। विनोबाजी न उनके हाथ अपने हाथ मे ले लिय। भावविह्वल हो गय। आखो की कोरो म अश्रु धारा बह निकली। हाथ पकड़े ही विनोबाजी नेहरूजी को कमरे म ले गय। मैं खिड़की की दरार म आखें लगाये देख रही थी। विनोबाजी के आसू रोके नहीं रुक रहे थे। नेहरूजी भी गुमसुम बठे थ। कुछ देर बाद उन्होंने रूमाल म अपनी नाक पोछी। दोनो म स कोई भी बात करने की स्थिति म नहीं था।

हृदय का भार कुछ हल्का हुआ तो विनोबा ने बोलना शुरू किया। मर्यादा पुरुषोत्तम की तरह जवाहरलालजी निगाह उठाकर फिर नीचे झुका लेते थे। विनोबा भी बोलते हुए एक

टक उनकी ओर ही देखत रहे।

आदत के मुताबिक एक बार जवाहरलालजी ने हाथ सिर गुजान के लिए कान तक उठे और फिर नीचे आ गये। अब दोनो बात कर रहे थे और आमने सामने देख रहे थे। बातचीत चलती रही। एक घटे का समय तय हुआ था—पर वहा तो बात की कीमत थी, समय का क्या महत्त्व था ?

इस बीच नदाजी आ गये। चलते समय नेहरूजी ने पूछा, ' रात का समय होगा क्या ? आठ बजे फिर मिलने का तय हुआ।

दामोदर ने कहा भरत मिलाप हो गया।' मेरी भी आखें भरी हुई थी। जवाहर लालजी की मोटर गई। जाते समय मैंने नेहरूजी स कहा कि आज तो विनोबा मा स्वरूपरानी की तरह ही रो पडे।

वह प्रसग देखकर मुझे वास्तव म मा स्वरूपरानी की याद हो आई। जवाहर उनका एक ही बेटा था। महीनो-बरसो बाद जवाहर घर आते तो मा बडे थाना म जवाहर के लिए खाने की चीजें सजाकर रखती। पर बेटे को देखत ही रोना शुरू हो जाता कि जाने कब चला जायेगा। थाल धरा रहता मा सोचती बच्चा खाना शुरू करे, बच्चा सोचता मा रोना बद करे तो शुरू करू।

चालीस—

जब मैं भूदान के लिए कलकत्ता में प्रयत्न कर रही थी तब भागीरथ कनोडिया बोले कि आपको यदि सरकार पद्मविभूषण की पदवी दे तो ले लेंगी ? आपपर विनोबाजी का प्रभाव है। सो पदवी मिलने पर कही ना तो न कर देंगी ?

मैंने इसम कोई दिलचस्पी नहा बताई क्योकि मुझे न तो इस बात म कुछ सार ही लगा और न ही इस विषय की कुछ जानकारी ही थी।

कुछ दिन बीत मैं तो उस बात को भूल ही गई थी पर बबई म कमल न एक दिन इस बात की चर्चा की। उसके पास पू० राजेन्द्रबाबू का पत्र आया था जो उसन मुझे पढकर सुनाया। मैंने कहा, ' बापूजी व पडितजी तो महान हैं। वे तो सबको सम्मान देकर बडा ही बनाना चाहते हैं लेकिन मैं उस योग्य नही हू। तेरे काकाजी की बात तो अलग थी उन्हे अग्रेज सरकार ने राय बहादुर की पदवी दी थी पर उन्होने तो उसे वापस भी कर दिया था। हा उसमे फर्क तो जरूर है। *वह पदवी तो विदेशी सरकार अपने को गुलाम बनाने के लिए देती थी। वह किसी स्वाभि* मानी पुरुष के लिए शोभनीय नही हो सकती पर आज तो यह अपनी सरकार की ओर से पदविया दी जाती हैं। सरकार म अपने बुजुग और अपने लोग ही है। पर मुझसे विशेष सेवा तो कहा बन पडती है। सबकुछ छोड छाड देने के बाद भी घरवाल और घर का मोह तो बना हुआ ही है। इसलिए जो नि स्वार्थ सेवा करते हैं उन्हीको सम्मान मिलना चाहिए।

इसपर कमल बोला पूज्य बापूजी व पडितजी यह सब सोचने के बाद ही तो सम्मानित करेंगे। व जो कुछ करते है वह सोच समझकर ही तो करते हैं। उसमे अपने को या और किसी का कहने के लिए क्या रह जाता है !

फिर मैंने उससे पूछा कि पदवी का नाम क्या है और वह किस तरह की पदवी है।

कमल ने कहा कि उसे पद्मविभूषण कहते हैं और राष्ट्रपतिजी देश में सेवा करनेवालों को इस पदवी को देकर सम्मानित करते हैं। पिछले साल आशादेवी को भी इसी तरह की पदवी दी गई थी, पर सर्व-सेवा-संघ में होने से उन्होंने स्वीकृति देने में लाचारी बताई थी।

मैंने कहा, 'हां, यह बात तो मैं जानती हूं पर यह मेरे नाम के आगे कैसे शोभा देगी?"

कमल ने कहा 'यह आवश्यक थोड़े ही है कि उसे सदा नाम के साथ लगाया जाय।'

मुझे विचार आया कि कहीं मुझे घमंड या मोह तो नहीं हो जायगा। मैंने अपना यह डर भी कमल को बताया। वह बोला, जब तुमने सबकुछ अर्पण कर रखा है तो इसका क्या मोह होगा? ऐसी कमजोरी मन में क्या आने देनी चाहिए।

मैं कुछ देर तक सोचती रही और कमल से बोली 'बापूजी और पंडितजी जो कुछ करें उसे 'ना' कैसे कहा जा सकता है?"

कमल बोला यह 'ना' बोलना भी एक तरह का घमंड हो सकता है।

मैं बोली तेरे काकाजी बापूजी को हमेशा अपने बड़े भाई के समान मानते थे। वह अपने घर के बड़े आदमी हैं उनकी भावना का आदर करना ही योग्य है। मैं असमंजस में पड़ गई हूं। एक ओर तो अपने को इस सम्मान के योग्य नहीं मानती और दूसरी ओर बापूजी पंडितजी जैसों की भावना। उनकी इच्छा अपने लिए आशीर्वाद ही है। फिर भी, मेरे जीवन की उन्नति की दृष्टि से या मुझसे अधिक सेवा हो सके इसलिए वे जो उचित समझें वही करें। उनका आशीर्वाद तो हर हालत में अपने साथ ही है। वे जो कुछ करेंगे, उसमें मुझे संतोष ही है।

यद्यपि पू० विनोबाजी का प्रभाव तो मुझपर है ही पर वह मुझे अपवाद कहा करते हैं। इसलिए इस विषय में भी अपनको अपवाद माना। फिर भी मुझे कमल की चर्चा से भी ऐसा नहीं लगा कि मुझे पदवी मिलेगी ही। कुछ समय और बीत गया।

१५ अगस्त १९५६ को मैं वर्धा थी। महिलाश्रम की लड़कियां और शांताबहन मेरे हाथ से झंडा चढ़ाना चाहती थीं। मैं वहां गई। प्रथम कताई का कार्यक्रम हुआ। कताई कर हम सब झंडे के मैदान में आये। इतने में चतुर्भुजी रेडियो सुनकर आये और बोले कि मैं एक खुशखबरी सुनाता हूं। माताजी को राष्ट्रपतिजी ने पद्मविभूषण की पदवी से विभूषित किया है।

यह सुनकर लड़कियां और शांताबाई को बहुत खुशी हुई। मेरे मन में भी खुशी हुई, पर खुशी प्रकट करने में शरम मालूम होने लगी। अचरज भी हुआ और इस विचार से आंख में आंसू आ गये कि वास्तव में मैं इस योग्य नहीं हूं। यह पदवी तो जमनालालजी के लिए ही योग्य थी, मैं तो उनके सामने इस योग्य कहां हूं?

पर इस पदवी ने मेरे पीहर में तो रोना-पीटना मचा दिया था। मेरे भाई रेडियो सुन रहे थे। जब यह सुना कि जानकीदेवी बजाज पद्मविभूषण हुई तो वह समझे परमपद प्राप्त हुआ। मेरे भाई रामानुज सम्प्रदाय के होने से मृत्यु के लिए 'परमपद' शब्द का उपयोग करते हैं। यह सुनते ही वह हक्के-बक्के रह गये। हमारे परिवार के वैद्यजी से किसीने पूछा कि चिरंजीलालजी

जाजोदिया की बहन की मृत्यु हो गई यहाँ बैठा गये थे क्या ? तब सेठजी को आश्चर्य हुआ। वह बोले—कल रात को ही तो राष्ट्रपतिजी ने उन्हें पद्मविभूषण की पदवी दी और आज यह क्या हो गया ? वह घर आये और पूछा मुझसे कि भाईजी खबर कब आई ? तब मेरे भाई बोले कि कल रात को रेडियो पर सुना था। सेठजी बोले कि भाईजी बाई को तो पद्मविभूषण की पदवी दी गई है। उसकी खबर थी आपने गलत समझ लिया। फिर भी भाई को विश्वास नहीं हुआ। जब अखबार मंगाकर देखा तब उनकी चिंता दूर हुई।

आज सोचती हूँ तो लगता है मैंने पद्मविभूषण स्वीकार करके ठीक किया। पूज्य राजेन्द्र बाबू और पण्डितजी के स्नेहपूर्वक दिये हुए सम्मान को मैं मन में किसी दंभ से इनकार कर देती तो बात हमेशा खटकती रहती।

इकतालीस—

नेहरू परिवार से बजाज परिवार का सम्बन्ध तीन पीढ़ियों का है। हमारे यहाँ पंडित मोतीलालजी पूज्य बापूजी से भी पहले वर्धा आये थे। वह वहाँ उतरे थे, यह बात मुझे अच्छी याद है। पंडित मदनमोहनजी मालवीय और वह साथ आये थे। मालवीयजी को ठहराया गया था सीढ़ियों के पासवाले कमरे में और मोतीलालजी को हवेली के आखिरी कमरे में जहाँ हम रहते थे। मुझे पिछले कमरे में भेज दिया गया था। पंडितजी की नींद में खलल न पड़े इसलिए चौकीदार को 'आलवेल' की आवाज न देने की सेठजी ने ताकीद कर दी थी।

जब सेठजी ने दूसरे दिन सुबह-सुबह जाकर उनसे पूछा कि आपको नींद तो अच्छी आई न, तब पंडितजी ने हँसते हुए कहा—हाँ, नींद तो ठीक ही आई, पर बीच बीच में बाँसुरी सुनाई देती थी।

बात दरअसल यह थी कि नीचे के कमरे में बनीरामजी (दादाजी) सोये हुए थे और उन्हें थी दमे की शिकायत। साँस लेने पर सड़ सड़ की ऊँची आवाज होती थी। उन्हींकी आवाज का लक्ष्य करके पंडितजी ने बाँसुरीवाली बात कही थी। सुनकर सेठजी को बुरा लगा कि यह बात पहले ध्यान में क्यों नहीं आई ? आ जाती तो उनके सोने का बंदोबस्त किसी दूसरी जगह करवा देते।

सेठजी भी बीच बीच में कई बार पंडितजी से मिलने इलाहाबाद जाया करते थे। मैं साथ होती तो मैं भी जाती। उन दिनों मैं प्रायः घूँघट में ही रहा करती थी।

एक बार की बात है, जब हम इलाहाबाद गये और आनंदभवन पहुँचे, तो कमलाजी सोई हुई थीं और उनकी बेटी इंदिरा खेल रही थी, बगीचे में। हमारे वहाँ पहुँचते ही कमलाजी ने कहा—बेटी को बुलाओ। वह आई। उस दिन पहली बार मैंने इंदिराजी को देखा।

१९३० में नमक-सत्याग्रह के सिलसिले में जब पं० मोतीलालजी नेहरू बंबई आये तो विलापार्ला छावनी में भी आये थे। उन्होंने वहाँ चलनेवाला सारा काम देखा और विशाल जन समूह में व्याख्यान दिया। व्याख्यान में उन्होंने बहनों और कार्यकर्ताओं की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

विलापार्ला छावनी को जब सरकार ने जब्त कर लिया तो मैं मध्यप्रदेश, बिहार होकर

विदेशी कपड़े के बहिष्कार के काम के लिए कलकत्ता पहुंची। मुझमें और मेरी सहयोगी बहनों में इस काम के प्रति बहुत जोश था। लोग, आन्दोलन चले तबतक, विदेशी वस्त्र न बेचें गांठें बांधकर रख दें यह प्रयत्न था। मैंने सोचा, इसमें क्या कठिनाई है। कपड़ा बांधकर रखनेवालों को पैसे की तंगी पड़ेगी, तो मैं ५-७ लाख रुपये वर्धा से मंगवाकर उन लोगों को कर्ज के तौर दे दूंगी। यह तो बाद में पता लगा कि बाजार में तो विलायती कपड़ा करोड़ों रुपये का है। इसके बाद सत्याग्रह करने और धरना देने की बात सोची गई। मुझमें इतना उत्साह था कि मुझे उसमें आनेवाली अड़चनों का ख्याल भी नहीं आया।

कलकत्ते की मारवाड़ी बहनें व्यापारियों को समझाने के काम में या सभाओं में तो साथ दे रही थीं किन्तु सत्याग्रह या धरने के लिए तैयार नहीं थीं। मैंने सोचा, वर्धा से महिलाश्रम की २०-२५ बहनें बुला लूंगी।

उन्हीं दिनों पं० मोतीलालजी भी कलकत्ता आये हुए थे। मैं उनके पास पहुंची और मैंने सत्याग्रह की संपूर्ण योजना पंडितजी के सामने रख दी। सब बातें सुन लेने के पश्चात् वह बोले "आपका सत्याग्रह सरकार अधिक चलने नहीं देगी। बीस-पच्चीस बहनों से यह काम नहीं चलेगा। उन्हें सरकार पकड़कर जेल में रख देगी तब आप क्या करेंगी?" तब मेरे ध्यान में आया कि बिना हजारों बहनों के सत्याग्रह सफल नहीं हो सकता। कलकत्ता में बहनों की बहुत बड़ी सभा हुई। उसमें पूज्य स्वरूपरानीजी व कमलाजी भी आई थीं। स्वरूपरानीजी के ये शब्द आज भी मुझे अक्षर-अक्षर याद हैं—"हमारे लाल जेल में पड़े हैं। हमें खादी पहनने को कहा जाता है, हमसे वह भी नहीं होता। हमें मोटी खादी तो क्या जरूरी हो तो दरिया भी पहन लेनी चाहिए।"

इसके कुछ दिनों बाद मोतीलालजी बीमार हो गये। बीमारी के समय और फिर बाद में भी सेठजी इलाहाबाद गये थे।

जवाहरलालजी और सेठजी तो एक दूसरे को भाई की तरह मानते थे। उनका पारस्परिक प्रेम अद्भुत था। आना जाना और मिलना तो प्रायः होता ही। किन्तु मैं उनके सामने जाने में सकुचाती थी और यदि उनके सामने जाने का काम पड़ भी गया, तो चुप रहा करती थी। वह जब जब वर्धा आते मैं उन्हें दूर से देखकर अपने भाग्य पर गर्व कर लेती थी।

एक बार की बात है, दिन भर वर्किंग कमेटी की बैठक चलती रही। शायद चर्चा ज्यादा गम्भीर रही हो, सबके दिमाग भारी हो गये थे। मैंने देखा, बैठक खत्म होने के बाद बजाजवाड़ी की बैठक में हँसी मजाक से थकावट मिटाने का प्रयत्न हो रहा था शायद। जवाहरलालजी घोड़ा बने हुए थे और उनपर सवार था सरोजिनी देवी। वह घुटनों और हाथों के बल चलते, तो सरोजिनी लुढ़क जाती। सुचेताजी उनका हाथ पकड़कर उन्हें उठाती।

इस तरह के आमोद प्रमोद प्रायः ही देखने को मिलते।

वर्किंग कमेटी की बैठक जब जब बापूजी के पास सेवाग्राम में होती तो नेतागण मोटर में बैठकर सेवाग्राम जाते।

एक बार जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्रबाबू आदि मोटर में बैठे ही थे कि मेरी नजर गाड़ी के भीतर चली गई। गाड़ी में एक सीट खाली थी। ज्योंही गाड़ी स्टार्ट होने को हुई मेरे दिमाग में आया यह सीट खाली क्यों जाय। मैंने ड्राइवर से कहा—ठहरो,

जाजोदिया की बहन की मृत्यु हो गई, वहा क्यो गये थे क्या ? तब बन्जी को अचरज हुआ। वह बोले—कल रात का ही तो राष्ट्रपतिजी न उन्ह पद्मविभूषण की पदवी दी और आज यह क्या हो गया ? वह घर आये और पूछन लगे कि भाईजी खबर कब आई ? तब मेरे भाई बोले कि कल रात को रेडियो पर सुना था। बदजी बोले कि भाईजी बाई का तो पद्मविभूषण की पदवी दी गई है। उसकी खबर थी आपने गलत समझ लिया। फिर भी भाई को विश्वास नहीं हुआ। जब अखबार मगाकर देखा तब उनकी चिन्ता दूर हुई।

आज सोचती हू तो लगता है मैंने पद्मविभूषण स्वीकार करके ठीक किया। पूज्य राजेन्द्र बाबू और पडितजी के स्नेहपूर्वक दिये हुए सम्मान को लेने से किसी दभ म इनकार कर देती तो बात हमेशा खटकती रहती।

इक्तालीस—

नेहरू-परिवार से बजाज-परिवार का सबध तीन पीढ़ियो का है। हमारे यहा पडित मोतीलालजी पूज्य बापूजी से भी पहले वर्धा आये थे। वह यहा उतरे थे वे बाते मुझे अबतक याद है। पडित मदनमोहनजी मालवीय और वह साथ आये थे। मालवीयजी को ठहराया गया था सीढ़िया के पासवाले कमरे म और मोतीलालजी को हवेली के आखिरी कमरे म जहा हम रहते थे। मुझे पिछले कमरे म भेज दिया गया था। पडितजी की नीद म खलल न पहुचे इसलिए चौकीदार को 'आलबल' की आवाज न देने की सेठजी ने ताकीद कर दी थी।

जब सेठजी ने दूसरे दिन सुबह-सुबह जाकर उनसे पूछा कि आपको नीद तो अच्छी आई न तब पडितजी ने हँसते हुए कहा हा नीद तो ठीक ही आई पर बीच बीच म बासुरी सुनाई देती थी।

बात दरअसल यह थी कि नीचे के कमरे म कनीरामजी (दादाजी) सोये हुए थे और उन्ह थी दम की शिकायत। सास लेने पर सड सड की ऊची आवाज होती थी। उन्हीकी आवाज को लक्ष्य करके पडितजी ने बासुरीवाली बात कही थी। सुनकर सेठजी को बुरा लगा कि यह बात पहले ध्यान म क्यो नहीं आई ? आ जाती तो उनके सोने का बदोबस्त किसी दूसरी जगह करवा देते।

सेठजी भी बीच बीच म कई बार पडितजी से मिलने इलाहाबाद जाया करते थे। मैं साथ होती तो मैं भी जाती। उन दिनो मैं प्राय घूघट म ही रहा करती थी।

एक बार की बात है जब हम इलाहाबाद गये और आनदभवन पहुचे तो कमलाजी सोई हुई थी और उनकी बेटी इदिरा खेल रही थी बगीचे म। हमारे वहा पहुचते ही कमलाजी ने कहा— बेटी को बुलाओ। वह आई। उस दिन पहली बार मैंने इदिराजी को देखा।

१९३० मे नमक-सत्याग्रह के सिलसिले म जब प० मोतीलालजी नेहरू बबई आये तो विलापार्ला छावनी म भी आये थे। उन्होने वहा चलनेवाला सारा काम देखा और विशाल जन समूह मे व्याख्यान दिया। व्याख्यान म उन्होने बहनो और कायकर्ताओ की भूरि भूरि प्रशसा की थी।

विलापार्ला छावनी को जब सरकार ने जब्त कर लिया तो मैं मध्यप्रदेश, बिहार होकर

विदेशी कपड़े के बहिष्कार के काम के लिए कलकत्ता पहुंची। मुझमें और मेरी सहयोगी बहनों में इस काम के प्रति बहुत जोश था। लोग, आन्दोलन चले तबतक विदेशी वस्त्र न बेचें, गाठें बांधकर रख दें, यह प्रयत्न था। मैंने सोचा, इसमें क्या कठिनाई है। कपड़ा बांधकर रखनेवालों को पैसे की तंगी पड़ेगी तो मैं ५-७ लाख रुपये वर्धा से मंगवाकर उन लोगों को कर्ज के बतौर दे दूंगी। यह तो बाद में पता लगा कि बाजार में तो विलायती कपड़ा करोड़ों रुपये का है। इसके बाद सत्याग्रह करने और धरना देने की बात सोची गई। मुझमें इतना उत्साह था कि मुझे उसमें आनेवाली अड़चनों का ख्याल भी नहीं आया।

कलकत्ते की मारवाड़ी बहनें व्यापारियों को समझाने के काम में या सभाओं में तो साथ दे रही थीं किन्तु सत्याग्रह या धरने के लिए तैयार नहीं थीं। मैंने सोचा, वर्धा से महिलाश्रम की २०-२५ बहनें बुला लूंगी।

उन्हीं दिनों पं० मोतीलालजी भी कलकत्ता आये हुए थे। मैं उनके पास पहुंची और मैंने सत्याग्रह की संपूर्ण योजना पण्डितजी के सामने रख दी। सब बातें सुन लेने के पश्चात् वह बोले, "आपका सत्याग्रह सरकार अधिक चलने नहीं देगी। बीस-पच्चीस बहनों से यह काम नहीं चलेगा। उन्हें सरकार पकड़कर जेल में रख देगी, तब आप क्या करेंगी?" तब मेरे ध्यान में आया कि बिना हजारों बहनों के सत्याग्रह सफल नहीं हो सकता। कलकत्ता में बहनों की बहुत बड़ी सभा हुई। उसमें पूज्य स्वरूपरानीजी व कमलाजी भी आई थीं। स्वरूपरानीजी के ये शब्द आज भी मुझे अक्षर-अक्षर याद हैं— "हमारे लाल जेल में पड़े हैं। हम खादी पहनने को कहा जाता है, हमसे वह भी नहीं होता। हम मोटी खादी तो क्या जरूरी हो तो दरियां भी पहन लेनी चाहिए।"

इसके कुछ दिनों बाद मोतीलालजी बीमार हो गये। बीमारी के समय और फिर बाद में भी सेठजी इलाहाबाद गये थे।

जवाहरलालजी और सेठजी तो एक-दूसरे को भाई की तरह मानते थे। उनका पारस्परिक प्रेम अद्भुत था। आना-जाना और मिलना तो प्रायः होता ही। किन्तु मैं उनके सामने जाने में सकुचाती थी और यदि उनके सामने जाने का काम पड़ भी गया तो चुप रहा करती थी। वह जब-जब वर्धा आते, मैं उन्हें दूर से देखकर अपने भाग्य पर गर्व कर लेती थी।

एक बार की बात है, दिन भर वर्किंग कमेटी की बैठक चलती रही। शायद चर्चा ज्यादा गंभीर रही हो, सबके दिमाग भारी हो गये थे। मैंने देखा, बैठक खत्म होने के बाद बजाजवाड़ी की बैठक में हंसी-मजाक से थकावट मिटाने का प्रयत्न हो रहा था शायद। जवाहरलालजी घोड़ा बने हुए थे और उनपर सवार थीं सरोजिनी देवी। वह घुटनों और हाथों के बल चलते, तो सरोजिनी लुढ़क जातीं। सुचेताजी उनका हाथ पकड़कर उन्हें बैठातीं।

इस तरह के आमोद-प्रमोद प्रायः ही देखने को मिलते।

वर्किंग कमेटी की बैठक जब-जब बापूजी के पास सेवाग्राम में होती, तो नेतागण मोटर में बैठकर सेवाग्राम जाते।

एक बार जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्रबाबू आदि मोटर में बैठे ही थे कि मेरी नजर गाड़ी के भीतर चली गई। गाड़ी में एक सीट खाली थी। ज्योंही गाड़ी स्टार्ट होने को हुई मेरे दिमाग में आया यह सीट खाली क्यों जाय। मैंने ड्राइवर से कहा—ठहरो,

एक सीट खाली है तो मैं किसीको बुला लाती हू। मैं चाहती थी कि जब मोटर जा ही रही है तो पेट्रोल का पूरा उपयोग हो। पास म सेठजी खडे थे। उन्होंने ड्राइवरको तुरत रवाना हो जाने के लिए कहा। उन लोगो के चले जाने के बाद मेरी ओर मुडकर बोले—तुम नही जानती कि इन लोगो का समय कितना मूल्यवान् है। आगे से खयाल रखना।

नेहरू-परिवार के साथ जमनालालजी के सबध कितने निकट के थे इस बात की मुझे जानकारी मिली, कमलाजी की बीमारी म। कमलाजी क्षयरोग होने के कारण भुवाली म रहती थी। वह बीमार पडती नही तो होता क्या जवाहरलालजी का तो एक पर सदैव जेल म ही रहता। और स्वय कमलाजी भी देशभक्ति म उनसे पीछे कहा था। फूल-सी कोमल कमलाजी भी सत्याग्रह आदोलन म अग्रपक्ति म रही, अपने स्वास्थ्य और आराम का खयाल न कर प्रचार के लिए यहा से वहा घूमती रहती। यात्राए भी उन्होंने की। देशभक्ति की तीव्र भावना और उस भावना के अनुसार प्रयत्नो से कमलाजी का बीमार होना स्वाभाविक ही था। उन्हे क्षय हो गया। डाक्टर की सलाह थी कि वह भुवाली सेनिटोरियम म आराम करें।

जिन दिनो कमलाजी भुवाली म रह रही थी उन दिनो भी जवाहरलालजी जेल म ही थे। कमलाजी ने बापूजी को पत्र लिखा था कि वह भुवाली आ सकें तो अच्छा। बापूजी यदि भुवाली जाते भी तो वहा अधिक नही रह पाते इसलिए उन्होंने यह उचित माना कि उनके बजाय जमनालालजी कुछ दिना वहा रहे। जमनालालजी वहा कुटुब-कबीले सहित पहुच गये। एक बगला किराये पर लिया गया। उसमे मैं अपने बच्चो के साथ तो थी ही हमारे ही साथ नर्मदा सोफिया आदि भी थे। लक्ष्मण रसोइया भी था।

जमनालालजी के भुवाली पहुच जाने से कमलाजी को बहुत सतोष हुआ और जमनालालजी वहा पहुचते ही कमलाजी की देखभाल सेवा सुश्रूषा म जुट गये। वह उनकी इलाज सबधी छोटी से छोटी बात का खयाल रखते थे। उनके खाने के लिए भी कुछ न कुछ बनवाकर अवश्य ले जाया करते। उस समय पूरा नेहरू-परिवार वही था। वे अलग बगले म रह रहे थे—स्वरूपरानीजी, विजयालक्ष्मी कृष्णा इन्दु मौसीजी आदि सभी लोग उन दिनो वही थे। जमनालालजी जिस प्रकार कमलाजी के लिए खाने का डिब्बा ले जाते उसी प्रकार नेहरू परिवार के लिए भी कुछ-न-कुछ चीज बनवाकर ले जाया करते। एक बार वह भोजन के साथ कढी ले गये। स्वरूपरानीजी कढी खाते हुए बोली—हमारे यहा कढी म, मेरी मा फूल की तरह मुलायम पकौडे डाला करती थी। घर आते ही उन्होंने लक्ष्मण को आदेश दिया, बोले— बहुत मुलायम और फूले हुए फूल जैसे पकौडे बनाकर कढी म डालना कल मैं स्वरूपरानीजी के लिए ले जाऊगा। दूसरे दिन वैसी ही कढी ले गये।

भुवाली म रहे तब जवाहरलालजी भी बीच-बीच म कमलाजी से मिलने सरकारी गाडी म आया करते। बडा ही करुण दृश्य उपस्थित होता। स्वरूपरानीजी की आखो म आसू होते और जब जवाहरलालजी वापस जाते तो सभी स्तब्ध बनकर उनको ओर देखते रहते। कमलाजी के मन की उस समय स्थिति क्या होती होगी यह तो परमेश्वर ही जाने, पर वह बहुत धैर्य रखती। उनकी मुद्रा गभीर रहती।

डॉक्टरो ने जवाब दे दिया कि कमलाजी का इलाज यहा नही हो सकता उन्हे स्विटजर

लड ले जाना ही ठिनकर होगा।

आखिर विदेश ले जाना ही निश्चित हुआ। नमी स जवाहरलालजी को मोटर स लाया गया। स्वरूपरानीजी भी बगले स आइ। सेनिटोरियम के आग कमलाजी को ले जाने मोटर आई। जवाहरलालजी न उन्हे गोद म उठाकर मोटर म रखा। साथ म इदिरा भी थी। स्वरूपरानीजी की आखो स अविरल आसुआ की धाराए वह रही थी। सभी लोग गभीर भाव स स्तब्ध से खड थे। जब कमलाजी की मोटर स्टशन की ओर और जवाहरलालजी की जल की ओर बढी तो खडे हुए लोगो का हृदय ही फट गया। सब सोच रह थे, क्या जाने कमलाजी और जवाहरलाल जी फिर मिलेंगे या नही? देखा नही जाता था वडा ही करुण दृश्य उस समय उपस्थित हो गया था।

गुजरे हुए दिनो की यादें आती हैं तो लगता है कि नेहरू-परिवार ने देश के लिए क्या नही भुगता और नेहरूजी की एकमात्र लाडली पुत्री इन्दिरा को भी पूरे जनम तपना ही पडा। नेहरू-परिवार को उसपर प्यार तो था, किंतु उसस प्यार करने की फुसत किस थी! दादा दादी मा सभी देशकाय म लगे रहे और देश के लिए जूझते हुए ही प्राणापण किया।

आखिर पापाण-हृदय सरकार भी इस ताप से आगे पिघली और उसने कमलाजी की तबीयत अधिक बिगड जाने पर नेहरूजी को रिहा किया। वह कमलाजी के पास स्विटजर लण्ड पहुचे किंतु उनका असीम प्यार और निकट सहवास कमलाजी को नही बचा पाया। नेहरूजी जब वहा से वापस लौटे तो अपने साथ कमलाजी की भस्मी लाये थे।

नेहरू-परिवार ने देशभक्ति की आग म अपना सबकुछ स्वाहा कर दिया। नेहरू-परिवार की मालकिन की ही आहुति जब इस यज्ञ म दे दी गई तो फिर धन सपत्ति तो उसके सामने मामूली बात थी। आजादी की लडाई के बाद खच ही खच होता गया इससे पहले कमलाजी की बीमारी म भी खच कम नही हुआ था। कसी-कसी चीजें उन लोगो को वेचनी पडी थीं कि वह सब याद आता है तो जी भर आता है। जेवर वेच दिये गए और उसके बाद जवाहरलालजी के चादी के वे खडाऊ जिन्हे उन्होंने जनेऊ के वक्त पहना था व भी कलकत्ता के किसी जौहरी को बच दिए गए। वे खडाऊ फिर से मिल सकें तो नेहरू-सग्रहालय की अनमोल वस्तु ठहरें।

इदिरा जब विलायत स लौटकर पहली बार वर्धा आई थी तो उसे देखकर मेरा हृदय भर आया था। छोटी-सी उमर म क्या-क्या देखना पडा। बचपन मे पिता राष्ट्रीय कामों के सिलसिले म जेल म ही रहा और अब मा भी बीमार होकर चल बसी।

मैं दूर दूर स उसकी ओर देखा करती, पर न जाने क्या उसके सामने पास आकर प्यार प्रगट करने की हिम्मत नही होती थी। वह काम मैंने जमनालालजी का सौंप दिया। मैंने जमनालालजी को उसकी पीठ पर प्रेम स हाथ फेरते देखा है। उसे बलो की टमटम म बैठाकर सेवाग्राम ले जाते। उसपर उनका पितृवत प्रेम था।

हम आजाद हुए, देश की बागडोर जवाहरलालजी के हाथ म आई। देश की बागडोर सभालने के पहले सभी नेता वर्धा म इकट्ठे हुए थे और गभीर वातावरण म निश्चय कर दिल्ली गये, वह दृश्य भी देखा।

देश की बागडोर सभालने के बाद जब जवाहरलालजी पहली बार वर्धा आए तो पिपरी म उनके स्वागत क लिए मडप बनाने की चर्चा चली। मैंने कहा—उनके लिए तो दूधी (लौकी) का स्वाभाविक मडप ही अच्छा रहेगा। उनका स्वागत लौकी की बेल से बने स्वाभाविक मडप म ही किया गया।

वह तब पूरे पूरे दिन काम म लगे रहते इसलिए उनसे मिलने और बात करने म मुझे बहुत सकोच रहता। किंतु जब कूपदान का काम मैंने अपने हाथ म लिया तो उनसे पास पहुच ही गई। उन्होने ११ सितम्बर को ११ बजे का समय मुझसे मिलने के लिए निकाला। मैं, रामेश्वरीबहन व आम तीनो उनसे मिलने पहुची। उस दिन शुक्रवार था। पडितजी किसी सभा से लौटे ही थे। काफी थके हुए थे। उनका थकान से भरा चेहरा देखकर मैंने कहा— आज विनोबाजी का जन्मदिन है। आज तो आपको हँसना ही पडेगा। इतना गभीर रहे आज काम नही चलेगा।

पडितजी मुसकुराते हुए बोले— जरूर हसूगा तब तो । और खिलखिलाकर हस पडे।

मैं बोली, अर्जुन ने जमीन म तीर मारकर भीष्म पितामह को पानी पिलाया था। आप भी ऐसा तीर चलाइये कि पाताल फूट जाय और भारत म इतना पानी हो जाय कि सारी धरती हरी भरी होकर लहलहा उठे जिसे देखकर विनोबा खुश हो जाय।

पडितजी ने एक कूप दान देने का आश्वासन दिया और राजघाट पर होनेवाली सभा म सन्देश भी दिया

आज आचार्य विनोबा भावे का जन्म दिन है। इस दिन को हम इस प्रकार मनाना चाहिए जिससे उनके काम म उन्हे सफलता मिले। काम उनका नही है हम सबका है हमारे देश का है।

देश भर म बडी-बडी यात्राए करके उन्होने हमारी जनता म एक नई जान डाली है। भूदान यज्ञ के सिलसिले म उनकी आवाज देशभर म गूज रही है बहुतो ने उसको सुना है और बहुतो ने उसका यथाशक्ति जवाब भी दिया है। मैं आशा करता हू कि आज के दिन इस महान कार्य को और भी बढाने की हम सब कोशिश करेंगे।

अब विनोबाजी ने एक नई बात देश के सामने रखी है और भूमिहीन किसानो को जमाने के लिए और उनकी सहायता के लिए सपत्ति दान की चर्चा भी की है। विशेषकर नये कुए बनाने के लिए उन्होने कहा है। किसान को खाली भूमि मिलने से, बगैर किसी और सहायता के बहुत लाभ नही होता। कुओ की सारे देश म बडी जरूरत है। मैं आशा करता हू कि सब लोग विनोबाजी के नये सन्देश पर विचार करेंगे और विशेषकर कुए बनवाने म मदद करेंगे।

जवाहरलालजी ने अत तक सेवा करते-करते देश के लिए प्राण दिये। लोगो ने अपने प्यारे नेता का जो आदर किया वह उनके रक्षा-कलश को दिल्ली से प्रयाग ले जाते समय देखा। मैं उस ट्रेन म थी। लोगो ने जवाहरलालजी को लाल फूल प्यारे थे इसलिए उन्हे लाल फूलो की कलश पर वर्षा कर जिस तरह आदर व्यक्त किया वह भुलाया नही जा सकता।

भले ही मेरे मन म इदिराजी के लिए ज्यादा प्रेम भरा हो पर मैं उसे प्रगट करने म

सदैव ही सकुचाती रही। अभी अभी जब आजाद़ी के सैनिकों को ताम्रपत्र भेंट किये गए, तो मेरा दिल्ली जाने का इरादा नही था, आग्रहवश गई। उस समय इंदिराजी से मिलने का समय मेरी ओर से मागा गया। मैं घर पहुची। जो समय दिया गया था उसमे ५ १० मिनिट देरी हो गई तो आते ही उन्होने उसके लिए खेद प्रगट किया। मैंने कहा कोई खास बात नही। मुझे यहा दूसरा काम भी क्या है?

वह डेढ घटे बैठी। पूरे समय मेरे मुह की ओर सहानुभूति और करुणा से देखती रही क्योंकि कमल की मृत्यु के बाद वह मुझसे पहली पहली बार मिली थी। उनकी भावना तो मैं उनके पत्र से ही जान चुकी थी। मैं भी उनके मुह की ओर देखती रही। बहुत कम बात हुई पर जो हुई वह उनकी देश की चिंता पर प्रकाश डालनेवाली थी।

वह बोली, "आप घोडा गाडी रख ले। मोटर का उपयोग न करें क्योंकि देश मे पेट्रोल की अबतक कमी है।' शायद उन्होंने यह बात जमनालालजी ने मोटर मे न बैठा कर बैलगाडी मे बिठाया था, उसकी याद करके कही हो।

आगे उन्होने कहा— आप इस बात का अधिक से अधिक प्रचार करें कि लोग हवाई जहाज मे कम बैठें क्योंकि हमारे पास हवाई जहाज चलानेवाले कम है और वे कम होने से हम परेशान करते है। देखिये न, मुझे पॉकेट-खर्च के लिए १६५० रुपया मिलता है जबकि उनको इससे बहुत अधिक मिलता है फिर भी उन्हे सतोष नही है।

मै समझ सकी कि उन्हे सबसे अधिक चिंता देश की है, देशवासियो की है, और वह हर पहलू पर व्यावहारिक दृष्टि से सोचती है।

बयालीस—

बापूजी के वे शब्द मेरे हृदय पर अकित थे—"अपना जो कुछ हो वह उसके कामो मे लगा दो। यही सती होना है।' इसलिए मेरे मन मे यही बात घूमने लगी कि उनके अतिम कार्य गोसेवा' को मैं कैसे अधिक बढाऊ। मैंने जो कुछ अपने पास था वह तो समर्पित कर ही दिया था पर अब साधना करने की बात थी काम मे लगना था। बापूजी भी यही चाहते थे।

जमनालालजी की तरह दूसरो का उपयोग लेकर काम को आगे बढा सकू यह मेरी शक्ति नही थी। वह तो सकडो लोगो का सपर्क कर उन्हे अपना बनाते और उसकी विशेषता का उपयोग लेकर काम को जमाते। कोई भूल करता तो उसे सभाल लेते उसे समझाकर फिर भूल न करे, ऐसा प्रयत्न करते। यह माथापच्ची मुझसे होन से रही थी। मुझमे जो कुछ हो सके वह तो मैं करने को सदा तैयार रहती। मैंने कभी अपने शरीर या सुख की पर्वाह नहीं की। दूसरे काम करें, तो मैं उसमे बाधक तो नही बनती पर दूसरो को प्रेरणा देकर या उसकी विशेष शक्ति को जानकर काम लेना यह मेरे बस की बात नही और जमनालालजी की तरह यह उदारता भी नही कि काम बिगडने पर उसे सुधारने के लिए फिर मौका दे सकू। मेरी विवशता थी। जमनालालजी का रहा अधूरा काम मुझसे पूरा कराने की बापू की तीव्र इच्छा को मैं समझती थी इसलिए प्रेमभरा कटाक्ष कर वह मुझे कामचोर कहते थे। उनकी मृत्यु के बाद यह बात मुझे और भी तीव्रता से महसूस होने लगी। जमनालालजी और बापू की कमी पूरी करने के

लिए मैं विनोबाजी के सपर्क म अपना रीतापन दूर करने लगी।

वह भूदान म घूमते तो मैं भी साथ जाने की कोशिश करती और अपना गोसेवा का राग अलापती रहती। भूदान की गूज म पीछे भी गो सेवा की भावना ही थी।

खासकर राजस्थान म मैंने विनोबाजी तथा जाजूजी के साथ लम्बे दौरे गोसेवा के काम की दृष्टि से किये। राजस्थान म गोसेवा की भावना बहुत व्यापक है। केवल राजस्थान म ही ३५० गोशालाए हैं जिनम लाखो की सपत्ति है। बडे-बडे मकान बन कुए बनाकर सेठ लोगो ने गायो को रखने के लिए सुविधाजनक स्थान बनाये। पूर्वजो की बनाई हुई गोशाला पर आज भी उनके बेटे-पोते खर्च करते हैं पर जिस तरह से गोशालाए चलानी चाहिए नही चलती। वहा सेठजी के बूढे मुनीम या उनके घर के लोग ही काम करते हैं जिन्ह गो पालन किस तरह किया जाय इसका शास्त्रीय ज्ञान तथा दीघदृष्टि नही होती। इस कारण गाय को पूज्य मानकर पूजा करके भी हम उसकी ठीक से सेवा नही कर पाते।

मेरे मन म कई बार विचार भी आया। ये गो शालाए मिलकर ठीक योजनापूर्वक काम करें तो गाय की बहुत बडी सेवा की जा सकती है उसे बचाया जा सकता है। गो-सवधन का शास्त्रीय ज्ञान देकर कायकर्ता तयार किये जाय और वे गो शालाओ के द्वारा नस्ल-सुधार व गोदुग्ध की पूर्ति का काम करें तो ये गो शालाए घाटे के स्थान पर कमाई कर गोसेवा के लिए अच्छे साधन बन सकती हैं। गाय के प्रति हिन्दू साधुओ म भी बहुत भक्ति है और वे गाय को बचाने के लिए कई बार प्राणार्पण तक की तयारी कर लेते है। यदि वे गोसेवा के काम म लग जाय तो जो काम कानून से होना कठिन है वह काय वे अपने पुरुषाथ से कर सकते हैं। यदि सच्चे सेवक हो तो धन की तो कमी नही पडेगी। जो बुजुर्गों द्वारा गो शालाए बनी हुई है उनम कुए है खेती है जमीन मकानात हैं। कई जगह तो सत महात्माओ के रहने का स्थान भी हैं। इन गो शालाओ म अपाहिज जानवरो को कौवे आदि का उपद्रव न हो इसलिए उनके रहने के स्थान म जालिया भी लगी हुई है। पानी पीने के लिए खेल बन हुए हैं पर उनका उपयोग आज ठीक नही होता। निस्स्वाथ सेवा करनेवाले साधु महात्मा यदि यह काम हाथ म लें तो बहुत-कुछ हो सकता है। पर उनमे केवल गाय के लिए पूज्य भाव हो इतना ही काफी नही वरन यह जानकारी भी जरूरी है कि गाय को किस तरह पाला जाय जिसस उसकी नस्ल का सुधार होकर दूध भी बढे।

यह काम तो बहुत बडा है। इसम सिफ गोशाला सुधरे इतना ही काफी नहीं है व्यापक पालन तो तब ही सकेगा जब किसान गाय को पाले। वह तभी सभव होगा जब हर किसान गाय को पालेगा और गाय के लिए चारा उपजा सकेगा, और यह बिना सिंचाई की व्यवस्था के सभव नही। इसलिए जगह जगह नहरें तालाब और कुए हो और किसानो के पास जो दूध हो उसे बेचने की व्यवस्था हो। आज तो शहरो म लोग गाय का दूध भी नही पीते क्योंकि उसमे मलाई कम होती है। भैंस के दूध से गाय का दूध गुणकारी अधिक है यह सभी डाक्टर-वैद्य या आचार शास्त्री कहते है फिर भी गाय का दूध कई शहरो म गाय की पूजा करनेवाले तक नहीपीते। इसलिए गो सेवा व्रती व्यक्ति बढाने का प्रयत्न बापूजी ने किया था और मैं तो वर्षों से स्वय गाय के दूध घी का ही प्रयोग करती हू और दूसरो को भी वही बात कहती हू। जब लोग गाय के घी

दूध का प्रयोग अधिक करेंगे तो गायें अधिक पाली जायगी। उनका दूध शहरों में ले जाने की व्यवस्था हो। आज जो अच्छी नस्ल की गायें शहरों में जाकर खत्म होती हैं वे भी बच जायगी।

कलकत्ता में हरियाणे की अच्छी नस्ल की गायें जाकर सूखने पर कसाइयों के हाथों मारी जाती हैं। इस बात का मुझे बड़ा रंज है और मैंने इसके लिए व्यापारियों, नेताओं तथा सरकार के प्रमुख लोगों से भी बहुत चर्चा की। राजेंद्रबाबू जब राष्ट्रपति थे तब मैंने कहा था कि हरियाणे से गायें कलकत्ता जाने के लिए आप पाबंदी कर दें तो वह बोले—'ऐसा विचार चला था तब हरियाणे के लोग आकर बोले कि ऐसा होगा तो हमारा बहुत नुकसान होगा। हमारी बहुत बड़ी आय इस पशु-पालन के उद्योग से होती है। यदि वहां गायों का जाना बन्द हो गया, तो हमारा बहुत नुकसान होगा।' फिर गायें सूखने पर बंगाल या बिहार के जंगलों में जहां चारा-पानी है वहां उन्हें रखकर पालन का प्रस्ताव रखा। लालबहादुर शास्त्री जब मंत्री थे उन्होंने बंगलों की सहूलियत में देने की बात भी कही। व्यापारी इस काम के लिए पैसा देने को भी तैयार हो गये पर मुझे वहां जो कमी मालूम दी वह इस योजना को अमल में लानेवाले प्रशिक्षित तथा निस्स्वार्थ कार्यकर्ताओं की थी।

मैं इस बात का अनुभव सदा करती हूं कि बापूजी कहते थे कि गाय का काम स्वराज्य प्राप्ति से भी कठिन है परन्तु हिन्दुस्तान को गाय बचानी ही होगी बिना गाय के कृषि प्रधान भारत और भारतीय संस्कृति बच नहीं सकती।

अब मेरी उम्र, मानसिक और शारीरिक अवस्था ऐसी हो गई है कि मैं कहीं बर्धा से बाहर और विनोबाजी का सत्संग छोड़कर जाना पसंद नहीं करती। पर आज भी कलकत्ता की गायें बचाने के लिए या गोसेवा के लिए कहीं जाना पड़े तो मैं कलकत्ता जाने को तैयार हूं क्योंकि बापू के प्रिय काम और जमनालालजी के अंतिम संकल्प की पूर्ति उससे होती है। मेरे लिए उससे बढ़कर दूसरी कोई बात इतनी महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि मैं इसे अपने जीवन की साधना मानती हूं और आज जब कमल चला गया है और मैं उतनी विचलित नहीं हूं, जितनी ऐसी हालत में कोई मां हो सकती है, तो लगता है कि शायद यह इसीलिए संभव हुआ कि मैं बापू के कहने के अनुसार काम में जुट गई।

सतालीस—

कमल के जन्म की खुशी में बंदूकें चली थीं। बजाज-परिवार और उनको चाहनेवालों में उसके जन्म की बहुत खुशी थी क्योंकि बजाज-परिवार की तीसरी पीढ़ी में घर में लड़का पैदा हुआ था। बच्छराजजी के पुत्र न होने से रामधनदासजी को गोद लिया था और रामधनदासजी की गोद जमनालालजी आये थे। सामने रहनेवाले दामोदर खरे वकील कहने लगे—'आप तो खुशियां मनाते हैं पर घर में जो आपवाला है उसके कानों में यह आवाज कैसे सुखप्रद हो सकती है?

आज देखते-देखते क्षण में ही सब क्या तमाशा हो गया? जमनालालजी ५३ वर्ष की अवस्था में इहलोक से विदा हुए तब मुझे व अन्य लोगों को लगा ४५ वर्ष और रह जाते तो कितना अच्छा होता? आश्चर्य होता है, वह चार-पांच वर्ष कमलनयन को कैसे मिल गये, वह ठीक

३७ वर्ष की उम्र में अपने पिता से जा मिला। भगवान की अनुपम लीला है। किसकी कब सुन लेते हैं! कमलनयन की बहुत सी बातें अब याद आती हैं।

जब कमलनयन पेट में आया उस समय उसके पिता जमनालालजी के विचार अत्यन्त शुद्ध व सुन्दर हो गये थे। हमेशा शुद्ध खाना व सत्संग का ही ध्यान रखते थे। मैं भी भगवान श्रीकृष्ण का ही ध्यान रखती थी। सोचती थी कि जो बालक हो उसके बाल काले घुंघराले हों, चेहरा अपने पिता के समान सुन्दर व तेजस्वी हो। सब गुण सम्पन्न, वीर्यवान, निर्भीक तथा साहसी हो। कमलनयन पैदा हुआ तब मुझे ऐसी ही प्रतीति हुई। मैं बार-बार ऐसी ही कामना करती कि मेरा बेटा कृष्ण की तरह योगी बने, उसके द्वारा देश और संसार की भलाई हो। अपनी यह कामना बहुत अंशों में सफल मानती हूं, क्योंकि कमल निडर, निर्लोभी और योगी की तरह निर्लेप था। उसमें दीर्घ दृष्टि थी, ध्यान का पक्का था, भगवान पर अपूर्व निष्ठा थी, अमीरी का उसमें मोह नहीं था, पर बोलता अधिक था, उसमें कुछ मेरी तरह कंजूसी भी थी।

आठ महीने के इस बालक को सर्वप्रथम मैं अपने पीहर जावरे ले गई तब सबने कहा—'कपड़े से ढककर रखो, नहीं तो नजर लग जायगी।' मुख पर ऐसी दीप्ति थी कि लोग सहज ही आकर्षित हो जाते थे। बम्बई में भी जब मैं कमलनयन को ले गई तो लोगों ने कहा कि बच्चे को अधिक कपड़े पहनाकर ढककर रखो। कमलनयन अपने वंश में जन्मा हुआ पहला लड़का था। उसकी सब ओर से देखभाल होती। मां का दूध पर्याप्त व अच्छी मात्रा में मिले, इसलिए मैं खूब दूध, घी, बादाम खाती व मालिश कराती। अच्छी तरह खाने के कारण मेरा दूध कमल को पिलाने के बाद भी बाकी रह जाता था, जो कि मैं अपने भाई की लड़की को भी पिला देती थी। मुझे गाय का दूध अच्छा मिले, इस कारण गाय को दूध, बादाम, गेहूं आदि खिलाते थे। एक वर्ष बाद जब मेरा दूध पीना छोड़ा तब उसके लिए अलग गाय रख दी थी। उसकी बड़ी बहन कमला की भी अलग गाय थी। बच्चों को उन्हीं की गायों का सिर्फ एक उफान का दूध ठंडे पानी के बर्तन में थोड़ा हिलाकर पीने लायक करके दिया जाता था।

कमल को उसके जन्म से चार साल तक चर्म रोग रहा, पर दवा-दारू कुछ नहीं की। घी, मक्खन, शहद से बिलकुल ठीक हो गया। कमल का दस-ग्यारह वर्ष तक कोई खास अध्ययन नहीं हुआ, कारण मैं अनपढ़ थी, कुछ समझ नहीं सकती थी। कुछ समय बाद जब बापूजी व विनोबाजी का अधिक संपर्क बना तो सेठजी तथा मुझे लगा कि सरकारी स्कूलों की पढ़ाई की अपेक्षा उसे विनोबाजी के साथ रखें, ताकि उसपर उनके संस्कार हों और उन जैसा ब्रह्मचारी बनकर देश की सेवा और अपनी उन्नति करे। इसलिए उसे आश्रम में भर्ती करा दिया गया। वहां उसे सभी छोटे-बड़े काम करने पड़ते थे। उसकी घर में रहकर खान-पान की अपनी कई आदतें थीं, जिनसे प्रारम्भ में उसे आश्रम में बहुत तकलीफ होती थी।

दूध उसे मलाई का तथा ठंडा पसंद नहीं था। वहां उसे जैसा चाहिए वैसा कौन पिलाता? आश्रम के नियम इतने कठिन थे, पर कमल बराबर उनका पालन करता था और हम भी उसमें उसकी सहायता करते थे। मैंने कभी भी कमल को घर से कुछ खान-पान का नहीं भेजा। इतना ही नहीं, घर आना तो उसका मन न चाहता, इस कारण उसके सामने मिष्ठान्न या स्वादिष्ट भोजन न खाते थे, न बनाते थे।

इसी बीच उसे काली बुखार हो गई। उस समय वह विनोबाजी के पास था। हम उसका इलाज न करा सकते थे, न पूछ सकते थे। घनश्यामदासजी बिड़ला ने कहा कि मैं इसे कलकत्ता ले जाऊंगा, वहां डाक्टरी इलाज से उसे ठीक कराऊंगा। पर मैंने व जमनालालजी ने साफ मना कर दिया। फिर विनोबाजी के इलाज से ही ठीक हुआ।

हिंदी, संस्कृत आदि तो उसने आश्रम में सीखी। किंतु व्यापार संभालने के लिए अंग्रेजी आवश्यक थी। पंडित जवाहरलालजी और घनश्यामदासजी बिड़ला का आग्रह था कि उसे आश्रम के बाहर भिजवाकर उच्च शिक्षा दी जानी चाहिए। इस कारण विनोबाजी ने उसे सिलोन भेजने की इजाजत दी। पूज्य बापूजी की सलाह से उसकी शिक्षा का कार्यक्रम बना। सिलोन जाते समय मैंने कमल से चाय न पीने के लिए कहा। उसने कभी चाय नहीं पी। पहले भी कभी नहीं पी थी। बात का इतना पक्का था कि मैं भी हिल जाती।

नमक-सत्याग्रह में मैंने कमल को भेजा उस समय वह बीमार था। १०४ डिग्री बुखार में मैं उसे वर्धा से साबरमती बापूजी के पास ले गई। जमनालालजी का और मुझको यह धुन थी कि आजादी की लड़ाई में बजाज-परिवार का अधिक-से-अधिक बलिदान हो। वह बीमार तो था ही रास्ते में उसकी आंखों की ज्योति जाती रही। तब गांधीजी ने उसे गुजरात विद्यापीठ में भेज दिया जहां इलाज से फिर ज्योति आई, क्योंकि सत्याग्रही घर वापस नहीं जा सकता था। मैं उस समय मां होकर भी यह सब उत्साह में करती जाती थी।

स्वतंत्रता की लड़ाई में अलमोड़ा जाते समय कमल ने एक व्याख्यान दे दिया। वह निडर तो था ही। व्याख्यान में उसने कुछ ऐसी बातें कहीं कि उसे जेल हुई और 'सी' क्लास में रख दिया गया। वहां उससे उसका नाम पूछा गया। उसने कहा— "हैवान।" जेल में उसने मांग की—"झाड़ू लगाने का काम करूंगा और नहाने व कपड़े धोने के लिए साबुन चाहिए।" तब उसे काल कोठरी में डाल दिया गया। वहां उसने सात दिन तक कुछ नहीं खाया। आठवें दिन पूछा— 'क्या चाहिए?' फिर उसने वही जवाब दिया—'झाड़ू और साबुन चाहिए।" मालूम हुआ कि जमनालालजी का लड़का है तब उसे 'बी' क्लास में भिजवा दिया गया। वहां उस समय बड़े-बड़े क्रांतिकारी रखे गये थे और उनमें से उसके साथ भी कुछ थे। काल-कोठरी में उसका १८ पौंड वजन घट गया था। वह सब 'बी' क्लास में रखने पर वापस आ गया। बस यही उसकी विशेषता थी—मिला तो भोगा—न मिला तो जो मिला उसमें ही खुश। वह मस्तमौला था। कोई लालसा, लिप्सा, तृष्णा नहीं। फक्कड़ व मस्तमौला—ऐसा था मेरा कमल।

जबतक उसके पिता जमनालालजी थे तबतक उसको किसी तरह की चिंता व बोझ नहीं था, पर उनकी मृत्यु ने उसके जीवन को बड़ा धक्का पहुंचाया। उनकी मृत्यु के समय वह उनके पास नहीं था, गोला था। वह मरते दम तक उस सदमे को न भूल सका। अपने पिता के काम की जिम्मेदारी सब तरह से उसने अपने कंधों पर उठा ली, जिसमें अपने शरीर का भी ध्यान न रखा। बाहर से हँसी मजाक करते हुए कमलनयन ने अपने पिता के व्यापार और इज्जत का बहुत ध्यान रखा। ऐसा लगता है कि हृदय और चीनी की बीमारी ने उसे ऐसा ग्रसा जैसे चन्द्रमा को राहु ने। पर फिर भी उसकी मृत्यु भीष्म पितामह की मृत्यु के समान इच्छामृत्यु ही हुई। वह एक योगी के समान जिया और परलोक सिधारा।

देते थे। इस प्रकार जीवन चल रहा था कि गांधीजी आये। उन्होंने तो हमारे जीवन में तूफान की तरह प्रवेश किया। सारा जीवन बदल गया। उसके बाद विनोबाजी ने परिश्रम और गहरे पढ़ा। इस प्रकार मेरा जीवन आज जो कुछ है वह माता पिता के संस्कारों के अलावा जमना-लालजी बापूजी और विनोबाजी का बनाया हुआ है। बापूजी का तो अपनी जीवन साधना करने में प्रयत्न करना पड़ा था। उन्होंने नियम से दृढ़ता से परिश्रम से अपना जीवन साधा। विनोबा के लिए सब सहज है। इस प्रकार इन तीन साधकों और महापुरुषों के निकट संग में रहकर और अपनी शक्ति भर प्रयत्न करते रहने पर अभी मैं कहीं और हूं उनकी अपेक्षा कम पुकार में है।

रह रहकर मेरे मन में यह विचार उठता है कि ये बातें क्या किसीके काम की होंगी भी? लोग इनमें से क्या लेंगे? मेरे पोते-पोती तो इन्हें जब यह सब मानो ये रूप में लिखती रही थी पढ़कर इनके कुछ प्रसंगों की हँसी उड़ाया करते थे। मेरे बड़े पोते राहुल ने तो एक दिन बचपन की मेरी उस घटना का जिक्र करते हुए जबकि मेरी सास ने मुझे व जमनालालजी को एक कमरे में सुलाया था और जमनालालजी ने मेरे पैर में बिछाती थाली थी पूछा "दादीजी आप तो सो गई थी। आपको कैसे पता चला कि दादाजी ने बिछाती थाली?" मैंने उससे कहा 'अरे रामभरोसे तूने और भी कुछ पढ़ा या इसीपर ध्यान गया?' इस तरह मुझे शंका ही है कि यह किसीके कुछ मतलब की होगी भी? दुनिया में पढ़ने और मनन करने का इतना पड़ा है तो उसमें और कोरे कागजों को काला करके कूड़ा क्या बढ़ाया जाय? पर कई एक भाइयों की तरफ से, जो इस प्रकार के संस्मरणों में दिलचस्पी रखते हैं और अच्छा समझते हैं सूचना आई कि इन्हें पुस्तक का रूप देना चाहिए। कुछका विशेष आग्रह भी हुआ। हारकर मैं इसके लिए तैयार हो गई।

मेरे जीवन पर जिन तीन महापुरुषों की गहरी छाप पड़ी उनमें जमनालालजी और बापूजी तो अब चले गये। विनोबाजी हैं। पर वह तो छोटे भाई के जैसे लगते हैं। उनके पास तो मैं निस्संकोच ही पहुंच जाती हूं। बापूजी के सामने जाने में डर सा लगता था। उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जमनालालजी ने उनको पिता माना था सो मैंने भी अंतःकरण के किसी कोने में उनको ससुर-सा समझकर उनका डर बसा लिया हो। जमनालालजी से तो उनके कामों को लेकर एक प्रकार की ईर्ष्या सी होती थी। उनसे लड़ झगड़ भी लेती थी। उनको राजी रखने का भी प्रयत्न करती थी पर इन दोनों के चले जाने से एक अभाव सा रीतापन-सा महसूस होता है। *पर उन दोनों की मृत्यु के समय उनके विचारों में चली होने के कारण धीरज* रख सकी। मुझे अंदर से काम करने की प्रेरणा होती है उत्साह भी है। पर कोई हाथ पकड़कर काम करा ले ऐसा मन में होता रहता है। विनोबाजी के भूदान में कूपदान में मन लगता है अच्छा भी लगता है, काम भी करती रहती हूं पर मन की शांति तो कुछ और ही चीज है। शक्ति भी अब शरीर में दिन पर दिन कम ही होती जाती है लेकिन रह रहकर यह बात मन में आती है कि कोई खींचकर काम करा ले।

जब काम काज में लग जाती हूं घूमती रहती हूं तब घर के लोगों को भूली सी रहती हूं। पहले भी यही हाल था। अब भी यही है। पर जब परिवार के बीच रह जाती हूं तो फिर

जाती हू। यो सब लडके, लडकिया दामाद सुखी है अपने अपने काम धन्धे म लगे हैं। अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार सब सेवा-काय भी करते ही हैं। यह मेरे लिए संतोष प्रद है।

कभी वर्धा, कभी दिल्ली कभी बबई और कभी विनोबाजी के साथ घूमती रहती हू। सबसे ज्यादा संतोष मुझे विनोबाजी के पास मिलता है। बबई म तो मेरे आकषण का केन्द्र मेरी तीन सहेलिया—श्रीमती शारदादेवी बिडला सरस्वतीदेवी गाडोदिया और शांतीबाई पित्ती हैं। उनमे शारदाबाई तो चली गइ। यो विचारो म हम सब भिन्न हैं, पर बबई मे जहा कोई सभा सम्मेलन हो कथा-कीतन हो या तालाबो म नहाने जाना हो तो हम इकट्ठी हो जाती हैं। पर इस मडली म घूमते घामते भी खादी प्राकृतिक चिकित्सा गो सेवा और सबसे ज्यादा कूपदान म अपनी शक्तिभर कोशिश करती रहती हू। साथ ही, बापूजी और जमनालालजी की आत्मा से सदा यह आशीर्वाद मागती रहती हू कि जितनी सेवा हो सके करते रहने की प्रेरणा वह देता रहे।

बहुत दिनो पहले मैंने प्राथना-स्वरूप कुछ तुकबन्दिया रची थी। कविता करना मैं क्या जानू ! पर मन म जो भाव आये, वे उल्टे-सीधे जोड लिये ये। इन पक्तियो के साथ यह कथा समाप्त करती हू।

हे परम सृष्टि-करतार
मानू मैं तेरा उपकार!
दिया पति मुझको अपने समान
दिये सब साधन औ सब साज
धाम, धन, बुद्धि कुटुब समाज
कमी क्यों दया परम की की ?
बनाओ मेरा हृदय उदार
हे परम सृष्टि-करतार!
रूप बिन खूब बचाई जी,
रूप बिन खूब सभाली जी
मिलता जो यदि रूप तो मैं
आकाश उडती जी,
किया तुमने मेरा उपकार
हे परम सृष्टि करतार ॥
सन्मति गाधी बलबल की
लाज बचाई इस मन की
अत म की कसी खिलवार
बताओ दुनिया के रचनार।
हे परम सृष्टि-करतार ॥

लगाई तुमने मारक चोट
दूर करने को मेरी खोट
जगाने को अपना ही देश
छुड़ाने को ममता की टेव?
तुम्हारी माया अपरम्पार,
हे परम सच्चिदाकार।
मानूं मैं तेरा उपकार॥





त्याग की प्रतिज्ञा

मो० क० गाधी

११ फरवरी को जब मैं जमनालालजी के द्वार पर पहुचा तो उनका देहात हो चुका था। मेरे पास वर्धा से सदेशा तो सिर्फ यही आया था कि खून का दौरा कम करने की दवा भेजें। मैं दवा भेजकर अपने दिल की तसल्ली कर सकता था लेकिन उस दिन मैंने महसूस किया कि नही मुझे खुद ही जाना चाहिए। जब वहा पहुचा, तो मामला कुछ और ही पाया। मैं उस अवसर पर निर्दयी बन गया।

जानकी अब तुम्हे रोना नही है। तुम्हे तो हँसना है और बच्चो को हँसाना है। जमनालाल तो जिन्दा ही है। जिसका यश अमर है तो फिर उसकी मृत्यु कसी ? उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके मार्ग का अनुसरण करने से मुह मोडो। जमनालाल ने परमार्थ की जिंदगी बिताई। तुम्हारी जसी साध्वी स्त्री उसे मिली तो फिर रोना कसा ? जो काम उसने अपने कधो पर लिया उसे अब तुम सभालो। उसी ध्येय के लिए तुम अपने आपको सपूर्णतया अर्पण कर दो और जमनालाल जिंदा ही है ऐसा मानो। तुम जानती हो कि मृत सत्यवान को सावित्री ने अपने तप से पुनर्जीवित कर लिया था। वह पुनर्जीवन शरीर का क्या हो सकता था ? शरीर तो नाशवान ही है। सावित्री ने अपने तप से सत्यवान के पद को सदा के लिए अमरत्व दे दिया। यही सावित्री सत्यवान की कथा का सच्चा अर्थ है। तुम भी अपने तप से अपने पति के

यश को जाग्रत रखोगी तो फिर जमनालाल जिन्दा ही हैं ऐसा हम मान सकते हैं।

मैं तुम्हें झूठा धीरज देने नहीं आया हूं। जमनालाल का शरीर मर गया, पर असल जमनालाल तो जिन्दा ही है और आगे के लिए उसे जिंदा रखना हमारा काम है।

जानकीदेवी पति के साथ सती होने की बात कर रही थी। मैंने कहा सचमुच सती बनना है तो जीती-जागती सती बन जाओ। धन का जितना त्याग कर सको कर दो। यह तो उनके लिए मामूली बात थी। आखिर धन से वह कितना सुख और आराम उठा सकती थी! लेकिन उसके सिवा जो मैंने कहा वह आसान नहीं था। मैंने कहा तुम अपने पति का स्थान ले लो। इतना कठोर मैं बन गया। मैंने प्रतिज्ञा ही करा ली।

जमनालालजी की आंख मुंदते ही मैंने उनके बोझ का बटवारा कर लिया है। उसमें उनके आखिरी काम (गो-सेवा) का पहला स्थान मिला है। यह काम स्वराज्य प्राप्ति के काम से भी कठिन है। स्वराज्य मिलने से वह अपने आप ही नहीं हो जायगा। यह सिर्फ पैसे से होने वाला काम नहीं। मैं इस बात का साक्षी हूं कि आजीवन अलौकिक निष्ठा से काम करनेवाले उस व्यक्ति ने किस अपूर्व निष्ठा से इस काम को शुरू किया था। उन्हें इस तरह काम करते देख एक दिन सहज ही मेरे मुंह से निकल गया था कि जिस ढंग से वह इस काम को कर रहे हैं उससे उनका शरीर सह सकेगा या नहीं? कहीं बीच में ही तो वह धोखा नहीं दे जायगा! आज मेरा यह कथन भविष्यवाणी सिद्ध हुआ है मानो उस समय भगवान ही मेरे मुंह से बोल रहे थे। सारांश यह कि ऐसे काम पैसे से नहीं एक निष्ठा से होते हैं।

जानकीदेवी ने तो ढाई लाख की रकम दान की है उसमें ढाई हजार रुपये खादी के काम में खर्च करने का वह पहले ही संकल्प कर चुकी थी। इसके सिवा वर्धा में एक प्रसूति गृह बनाने की उनकी इच्छा थी। कुछ रुपया उसमें लगेगा। बाकी करीब सवा दो लाख गोमाता के काम के लिए रह जाता है। बीस-पच्चीस हजार रुपया अखिल गो-सेवा संघ का था वह भी आज हमारे पास है। जानकीदेवी के दान की रकम मिलकर यह रकम हमारी आज की आवश्यकता के लिए काफी है।

इस तरह जानकीदेवी ने त्याग की प्रतिज्ञा ले ली है।

उनकी एक विशेषता बाल-वृत्ति

विनोबा

जानकीदेवी को जो भी विद्या मिली है अनुभव से मिली है। उसमें पढ़ाई लिखाई का उतना अंश कम है। इसलिए उनका इस जीवनी[1] का ढंग मराठी भाषा में बना गई है। यह

1 मेरी जीवन-यात्रा (आत्मकथा) प्रकाशक सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली।

लिखी नही गई है। जवानी कही गई है। इसलिए यह 'कहानी' है और मैं मानता हू यह पारिवारिक वतुला म रोचक भी होगी।

जानकीदेवी की एक विशेषता है कि अभी तक उनका बचपन कायम है। बात करने म उनका बहुत सकोच या हिचकिचाहट नही रहती। इस कहानी म भी उसका अनुभव आयगा। इस कारण उनका भाषण काफी असर डालता है। जमनालालजी का इतना वक्तृत्व नही मधता था। जानकीदेवी न उसका एक बहुत ही सरल कारण बताया। वह बोली 'जसा बोलो वसा करो यह एक नाहक का भूत जमनालालजी के पीछे लगा हुआ था। बोलन म कही अतिशयोक्ति न हो इसकी उनको फिक्र रहती थी। इसलिए वक्तृत्व उनकी वाणी स झरता ही नही था। हमको एसी कोई कद नही तो क्या वक्तृत्व नही मधेगा ?' जमनालालजी की वत्ति का जो विश्लेषण इसम किया गया है वह मार्मिक और यथाथ है। इसकी ताईद सभी परिचित लोग करेंगे। लेकिन जानकीदेवी के भाषणो म जो निसकोच वत्ति दीखती है उसका कारण वास्तव म उनकी बालवत्ति है। बोलन के अनुसार कृति करनी पडती है इसका भान उनको भी है। किय हुए सकल्प के पीछे वह कितना एकाग्र हो सकती हैं, इसका खयाल १०८ कूपदान पढ़ा का जो जिक्र उन्होंने किया है उसपर से आ सकता है।

भूदान यज्ञ मे उन्होन जो विशेष पराक्रम किया है उसका जिक्र इस कहानी म नही है। पाठको से यह बात छिपी नही रहनी चाहिए। बिहार की भूदान यात्रा खत्म करके हम बगाल म प्रवेश कर रहे थे उस दिन जानकीदेवी हमारे साथ थी। भीड बहुत थी जिनम लडको की भी बडी तादाद थी। भीड म स माग निकालन के लिए मैंने लडको के हाथ पकडकर दौडना शुरू किया। बुजुर्ग लोग पीछे रह गए। लडको के साथ हम दौडते हुए आगे चले गए। मुझे खयाल न रहा कि ६२ साल की एक बालिका भी लडको के साथ दौडती आ रही है। दौडते दौडते वह गिर पडी। उनके घुटने म चोट आई। दद शुरू हुआ, जो कम बसी आजतक जारी है। अब वह दौड तो क्या सकेगी पर ज्यादा चल भी नही सकती। पर उनका मन दौडता ही रहता है।

परमेश्वर स मेरी प्राथना है कि जानकीदेवी की यह बालवत्ति अत तक कायम रहे और हम सबको उसका स्पश हो।

सच्ची शिक्षा और सेवा की प्रतिनिधि

काकासाहेब कालेलकर

'स्कूल या कॉलेज म जाकर जो पढ़ते हैं वही सुशिक्षित, बाकी के अनपढ' एसा मानने का एक रिवाज हो गया है। उस दृष्टि स माता जानकीदेवी अनपढ थी सही लेकिन

बिलकुल छोटी उम्र में शादी होने के कारण श्री जमनालालजी जैसे पुरुषार्थी, व्यवहार चतुर और आदर्शपरायण पति का सत्संग मिला। पति ने प्रत्यक्ष सहवास के द्वारा, नित्य चर्चा के द्वारा, और दूर रहने पर पत्रव्यवहार के द्वारा जानकीदेवी की सर्वांगीण शिक्षा अपने हाथ में ले ली।

जमनालालजी सामान्य पुरुष नहीं थे। उन्होंने देश के सर्वोच्च नेताओं के साथ घनिष्ठ परिचय प्राप्त किया। उनकी संस्थाओं में जाकर रहे। उनको नई-नई संस्थाएं खोलने में मदद दी और ऐसे जीवन में हमेशा जानकीदेवी को अपने साथ में रखा। अपने हरेक काम का महत्त्व वह अपनी सहधर्मचारिणी को समझाते रहे।

उन्होंने गांधीजी से श्री विनोबाजी की सेवाएं मांग लीं और तब से विनोबाजी का संबंध सारे बजाज-परिवार के साथ बढ़ता ही गया। स्वयं गांधीजी ने और विनोबाजी ने भी जानकीदेवी के विकास में पूरी दिलचस्पी ली।

इस तरह जो शिक्षा जानकीदेवी को मिली उसका महत्त्व स्कूल और कॉलेज की शिक्षा से अनंत गुना अधिक था।

आजकल की स्कूल-कॉलेज की शिक्षा में अनुपयोगी बोझ कम नहीं रहता। शिक्षा संस्था में रहकर अपनी पढ़ाई चलाने के दिनों में विद्यार्थियों को विशाल समाज के परिचय से अलिप्त रहना पड़ता है। अपने-अपने विषयों में डूबे हुए अध्यापकों से सामान्य ज्ञान जो जीवन के लिए अत्यंत महत्त्व का होता है मिलना आसान नहीं होता।

जानकीदेवी इस तरह के बोझ से मुक्त रहीं और जमनालालजी-जैसे देश के नेता के साथ अखंड रहने का और तरह-तरह की राष्ट्रसेवा करनेवाली अनेक संस्थाओं का निरीक्षण करने का मौका उन्हें मिला। इससे बढ़कर दूसरी कौन-सी शिक्षा हम पसंद कर सकते हैं?

मैं तो कहूंगा कि जमनालालजी का और जानकीदेवी का पत्र-व्यवहार जो प्रकाशित हुआ है उसका पढ़ना असंख्य राष्ट्रसेवकों के लिए विविध और उपयोगी शिक्षा ही है। इसके अलावा जानकीदेवी ने अपनी जो कहानी लिखी है उसमें तो चिंतन करने की उनकी योग्यता और गांधीजी की प्रेरणा से मिली हुई सत्यनिष्ठा यह एक अद्भुत वस्तु है। जब-जब मैं जानकीदेवी से मिला हूं तब-तब मैंने समाज-कल्याण का चिंतन करनेवाली एक अनुभवी राष्ट्रसेविका को ही उनमें देखा है। जब-जब हम मिले हैं, हर प्रसंग में मैं तो उनकी नम्रता देखता हुई दंग रहा और उसी कारण मेरा उनके प्रति आदर बढ़ता ही गया। हम क्या मानें कि कमलनयन, रामकृष्ण जैसे लड़के और कमला, मदालसा और उमा जैसी लड़कियों को जो संस्कार मिला है उसमें केवल जमनालालजी, विनोबाजी और महात्माजी का ही हाथ है। मैं तो बजाज-परिवार के सारे वायुमंडल में जानकीदेवी के चारित्र्य की सुगंध भी देखता हूं। जिस तरह जमनालालजी का जीवन-चरित्र पढ़े बिना गांधीजी को हम पूर्णरूप में समझ नहीं सकते, उसी तरह जानकीदेवी के परिचय के बिना जमनालालजी और बजाज-कुटुंब की सम्कारिता और सेवा का पूर्ण अनुमान हम नहीं कर सकते। जानकीदेवी जैसी अनेकानेक संस्कारी नम्र महिलाओं के चित्र के बिना गांधी-युग का चित्र भी अपूर्ण ही रहेगा। सचमुच जानकीदेवी का व्यक्तित्व अविस्मरणीय है।

सेवा और त्याग का जीवित आदर्श

हरिभाऊ उपाध्याय

मयाजी पढ़ी लिखी विशेष न थी, तो भी उन्हें बहुत से अच्छे संस्कार छुटपन से ही मिले थे। बहुत से अच्छे अच्छे श्लोक तथा धार्मिक कथाएं (श्लोकबद्ध) छोटी उम्र में ही उन्हें याद करा दिये गए थे, जोकि उनको अभी तक याद हैं। अपने बच्चों को वह उन्हें बराबर भक्तिभाव से सुनाया करती थी। 'धरती माता तू बड़ी, तुमसे बड़ा न कोय', यह सुबह खुद भी भक्ति भाव से कहती और बच्चों से भी कहलवाती। इस अभ्यास के ही कारण जमनालालजी की अन्त्येष्टि क्रिया के समय तथा विनोबाजी के साथ कई श्लोक स्पष्टता के साथ बोल रही थी।

मयाजी को शुरू से ही श्रद्धा का अच्छा संस्कार मिला था। जब कई तरह की दिक्कतें व परीक्षाएं आती तब बड़ी हिम्मतवाला मनुष्य भी डिग सकता था पर मयाजी की श्रद्धा ने हमेशा उन्हें अपने रास्ते पर कायम रखा। पतिसेवा—पति का अनुगमन करना—यह श्रद्धा बड़े जोर से उनके हृदय में समाई हुई थी। इसीसे उन्होंने जमनालालजी के पीछे-पीछे चलने में घोर कठिनाई महसूस नहीं की। नहीं तो एक जबदस्त समाज-सुधारक देश सेवक और सो भी जमनालालजी जैसे अग्रगामी पुरुष की पत्नी बनना आसान बात नहीं थी। जमनालालजी का तो आग्रह रहता था कि जो वह बोलते, वह पहले खुद के और घरवालों के आचरण में आना चाहिए। पहले उन्होंने परदा छोड़ने की बात कही। मयाजी ने मान ली और जेवरों को भी तिलांजलि देकर मारवाड़ी महिलाओं के समक्ष आदर्श उपस्थित किया।

उस समय यह बड़ी मुश्किल बात थी खासकर एक मारवाड़ी स्त्री के लिए जो कि खुद अपढ़ हो और उन्हीं जैसी कट्टर स्त्रियों में घिरी रहती हो। जब उन्होंने घूंघट हटा लिया, तो दूकान के लोग जो सामने से निकलते बेचारे खुद ही मुंह फेर लेते। मयाजी ने किसी भी चीज को जो एक बार पकड़ा, तो फिर उसे आखिर तक निभाया। पीछे फिरकर देखा ही नहीं। न अफसोस किया न कभी पश्चात्ताप।

फिर आई खादी की बारी। घर में सब कहीं बिस्तर में गहनों के डब्बों में घाव पर पट्टी बांधने में खादी के अलावा कुछ भी नहीं होता था। विलायती कपड़ों की तो होली ही हो गई। वर्धा में उस समय जितनी बड़ी होली विदेशी कपड़ों की हुई उतनी शायद ही दूसरी जगह हुई हो। खादी के अलावा एक चिंदी भी घर में न हो ऐसा आग्रह रखती थी। जमनालालजी तो निश्चय कर लेते थे पर चीजें जुटाना और निभाने का भार पड़ता था मयाजी पर। किंतु इसमें कभी ढिलाई नहीं की, यहांतक कि एक समय जब जमनालालजी मिल खरीदने की सोचने लगे थे तब मयाजी बापूजी के पास पहुंची और उन्हें ऐसा करने से रुकवाया।

फिर साबरमती में उन्होंने बापूजी के सामने गाय के घी का नियम लिया। नियम कई लोगों ने लिया पर करीब करीब सभीका छूट गया। किंतु आजतक मयाजी का व्रत अखंड चल रहा है। कभी-कभी कई दिनों तक बिना घी के रहना पड़ा, फिर भी व्रत नहीं छूटा और इस बारे में उन्हें कभी दुःख भी नहीं होता न ऐसा ही लगता है कि कोई बड़ा त्याग किया है।

जमनालालजी ने तो जब १९४२ म गो सेवा संघ खोला तब नियम लिया, पर मयाजी का तो पहले से ही चालू था।

फिर आया हरिजन गृह प्रवेश का कार्यक्रम। वष्णवो के परिवार म पली हुई मयाजी को यह बात बडी कठिन मालूम हुई और आजतक इस बात को वह अपना नहा सकी हैं। वसे सिद्धात तो उनको मान्य हो गया है पर अरुचि अब भी कायम है। जो एकदम सफाई म रहता है, उससे उन्हे जरा भी घृणा नही आती। एकदम सफाई नही हो तो सहन नहीं होता। अपनी सहेलियो को छोडकर दूसरे माम मच्छी खानेवाला म दूर रहना ही उन्हे पसन्द पडता है। किंतु जमनालालजी के आग्रह के सामने उन्होने कभी ना नही कहा। जमनालालजी ने तो हरिजनो का गृह प्रवेश ही नही, रसोई प्रवेश भी कराया और मयाजी ने उसे धीरज के साथ सहा।

जमनालालजी ने अग्रवाल महासभा का काम शुरू किया, तो मारवाडी महिलाओ म काम करने का जिम्मा मयाजी के सिर आ गया। १९३३ म कलकत्ता म अखिल भारतीय अग्रवाल महिला परिषद की सभानेत्री बनकर गई और पर्दा आदि हटवाने का खूब आदोलन किया। बगाल बिहार म जोरो का दौरा किया। एक एक दिन म दो दो और तीन तीन गावो का दौरा होता था।

नागपुर जेल म बडे सकट से रहा। ए क्लास मिला था पर सजन साथ म थी म रही। किसीके हाथ का खाती नही थी, इस कारण कच्चे दूध का ही दही खाती थी दवा नही लेती थी। बच्चो को प्रथमा की परीक्षा म बठाना था। वे मानते नहीं थे तो खुद परीक्षा म बठना तय किया और बच्चो को बठाया। रात दिन पढती पर पास तो वहा से हो सकती थी? फिर मध्यमा की इजाजत मिलने पर उसम भी बठी।

गुस्सा था अधिक ही। जमनालालजी पर आता था और वह निकलता था बच्चो पर। नहाते समय या और समय वे रोते तो मार खाते। फिर हाथ म चाकू है या गिलास उसका खयाल नहा रहता था। लेकिन खून निकलते ही मरहम पट्टी भी खुद ही करती।

उनकी कत्तव्य निष्ठा का एक नमूना लीजिये। रामकृष्ण दिसबर १९४१ म जेल से छूटा था। वाइस चासलर की खास इजाजत से जनवरी ४२ म कॉलिज म भर्ती किया गया था। बाद म पूरी हाजिरी देना जरूरी था यह मयाजी को मालूम था। उसी बीच ११ फरवरी को जमनालालजी का देहात हुआ था। १२ फरवरी को, यानि दूसरे ही दिन मयाजी अपने आप रामकृष्ण से कहती है "राम, तू कालेज चला जाना। एक दिन भी क्या खोता है?" सभीको बडा अजीब सा लगा।

वश्य-कुल फिर धनी कुटुब म दान तो बहुत दिया जाता है परतु त्याग कठिनाई से होता है। त्याग म भी जानकीदेवी जमनालालजी से कम नही साबित हुई। पुराने रूढि मार्गी कुटुब म जन्म लेकर उन्होने जमनालालजी जसे महान सुधारक के चरण चिह्नो पर चलकर एक नहीं अनेक बार अद्भुत साहसिक त्यागशीलता का परिचय दिया है। विदेशी वस्त्रो तथा गहनो का त्याग करके उनके मुकाबले म मामूली ठहरता है। फिर वह त्याग का ढिंढोरा नही पीटती। जमनालालजी तो फिर भी देश सेवा के हो खातिर सही उसका थोडा-बहुत व्यापार कर लेते थे। जमनालालजी की मृत्यु के बाद का उनका सवस्व त्याग तो ऐतिहासिक गिना जायगा। बापू

के संकेत-मात्र से अपने पास की सारी धन-दौलत उसी क्षण गो-सेवा-संघ को दे दी। अपना जीवन भी होमने—सती होने—की तैयारी थी। बापू ने शरीर का खयाल कर जीवन होमने का मार्ग सुझाया। वह उसपर उसी क्षण से चल पड़ी। बापू ने कहा, "अब संन्यासिनी—भिखारी—बनकर रहना है।" उन्होंने फौरन कहा, "बापूजी, जैसी आपकी आज्ञा। धन को तो मैंने मिट्टी माना है। मुझे चाहिए भी क्या? खाने भर को तो मेरे बच्चे भी मुझे दे देंगे। आप हैं, भगवान हैं, यह संसार है। मुझे कौन भूखा मरने देगा? इसलिए मेरी संपत्ति और मैं सब कृष्णार्पण। मेरे लिए वह जो-कुछ छोड़ गये हैं सो सब मैं उनके काम के लिए अर्पण करती हूं।" इस प्रकार दो-ढाई लाख की रकम गो-सेवा के लिए अर्पण कर दी।

बापू ने कहा, "अब सब धन कृष्णार्पण करके तुम भिखारिन बन गई हो। अब लड़के तुम्हें खिलायेंगे तो तुम खाओगी, नहीं तो तुम्हें मेरे पास आना है। अब तुम्हें अपने लिए नहीं, बल्कि जमनालाल के इस गो-सेवा-कार्य के लिए ही जीना है। तुम्हें अब जमनालाल की गोपुरी में रहना है।"

तबसे कमल के घर रहना भी उन्हें पसंद नहीं। "बेटे पर अब मेरा क्या अधिकार है?" बेटे सब तरह उनका प्रबंध करने के लिए तैयार रहते हैं, परंतु उसे स्वीकार करना उन्हें अपना व्रत भंग मालूम होता है। एक धनी कुटुंब की स्वामिनी के मन की इतनी उच्च अवस्था! जमनालालजी को धन के प्रति जो निर्मोह जन्मजात था वह जानकीमैया के लिए अपनी तपश्चर्या से, जमनालालजी के उदाहरण तथा बापू और विनोबा के आशीर्वाद से, सहज हो गया। वैश्य तथा धनी परिवार में पति और पत्नी दोनों के त्याग का—हार्दिक त्याग का—ऐसा उदाहरण शायद ही कहीं मिले। अब भी शरीर वृद्ध अस्वस्थ रहते हुए भी मैयाजी कम-से-कम खर्च में अपना काम चलाती हैं। इसके लिए वह बगल की जमीन से अन्नादि उपजाने की कोशिश करती हैं। निकटस्थ व्यक्तियों से नित सलाह-मशविरा करती रहती हैं कि "कैसे मैं भी शरीर-श्रम से जीवन निर्वाह चलाऊं। लड़के लोग सब प्रकार व्यवस्था करते हैं, पर मुझे रुचता नहीं। मुझे तो मजदूरी करके ही पेट भरना चाहिए। क्या करूं?" किंतु यह पूरी तरह सध नहीं पाता, इसी उधेड़-बुन में वह परेशान रहती हैं।

नौ साल की अवस्था में ही ब्याह हो गया था। बच्छराजजी की पिछली कई पीढ़ियों में जानकीदेवी ही ऐसी बहू आईं, जिसने बजाज-परिवार को संतान-रत्न प्रदान किये। वह बहुत रूपवती नहीं थीं, अतः सगाई के समय उनके रूप-रंग की चर्चा भी चली, तो सदीबाई ने कहा कि इतनी रूपवती बहुएं आईं—वंश किसीसे नहीं चला। मुझे तो अब कुरूप ही बहू चाहिए। जानकीदेवी न केवल घर की लक्ष्मी, बल्कि देवी सावित्री हुईं। उनके पदार्पण के बाद बच्छराजजी के घर में केवल धन-धान्य, पुत्र-लक्ष्मी आदि ही नहीं, सेवा तथा त्याग का जीवित आदर्श भी झूमता हुआ आया। आज जमनालालजी नहीं हैं, परंतु उनके दिव्य आदर्श तथा उच्च चरित्र की जीवित ज्योति हम जानकीमैया में देख रहे हैं—हालांकि कुटुंब तथा बालबच्चों के मोह से वह पूर्ण मुक्त नहीं हो पाई हैं, प्रयत्न चलता रहता है, पर सफलता नहीं मिलती है। इस कारण जमनालालजी की शक्ति एवं प्रभाव का व्यापक रूप चाहे हम उनमें न निखारे दें, परंतु उसकी पवित्रता का केंद्र जानकी मैयाजी में सुरक्षित है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

उनके स्वभाव की कुछ विशेषताए

दादा धर्माधिकारी

मेरा एक स्वभाव-दोष है। किसी व्यक्ति की प्रशसा म मैं कोई खास बात नहीं कह पाता। किस्सा कुछ स्तोत्र लिखनेवाला जैसा हो जाता है। आप किसी भी देवता या देवी का स्तोत्र उठाकर पढ लीजिए। सबकी शैली और आशय प्राय एक ही होता है। ससार म दुगुण और सदगुण दोनो परपरा से निर्धारित है। किसीकी निन्दा करनी हो तो दुगुणो के भडार म से कुछ उठाकर उसके नाम पर चिपका दीजिए। किसीकी प्रशसा करनी हो तो सद्गुणो की निधि म से कुछ उठाकर उनसे उसके व्यक्तित्व को विभूषित कर दीजिये। और हो भी क्या सकता है? इसलिए मेरी मति कुठित हो जाती है।

दूसरी खामी और है। मेरी स्मरणशक्ति निरकुश है। जब मैं किसी घटना या प्रसग को याद करना चाहता हू तो मेरी स्मरणशक्ति हडताल कर देती है। किसी भाषण के सिलसिले म घटनाए और प्रसग अपने आप याद आ जाते हैं। यह मेरे वश की बात नहीं है।

माताजी (जानकीदेवी) से मेरा सबध लगभग सतीस-अडतीस साल पुराना है। उन्हे नजदीक से देखने का सदभाग्य भी मुझे मिला है। फिर भी मेरा यह अनुभव है कि किसीको यह दावा हर्गिज नही करना चाहिए कि वह किसी दूसरे व्यक्ति को पूरी तरह या अच्छी तरह जान सका है। हा किसी औपचारिक प्रसग म चार औपचारिक बातें भले ही कर लें।

जानकीदेवी म औपचारिकता का आत्यतिक अभाव है। वह 'बनना' जानती ही नही। उनके पास अपने नैसर्गिक चेहरे के सिवा और कोई मुखौटा है ही नही। उनके चारित्र्य का उपादान है सच्चाई ईमानदारी बाहर भीतर एक समान! बाल सदृश निष्कपटता और निश्छलता से उनका पिंड बना है। उन्हे बात बनाना या बात सवारना आता ही नही।

सन १९३५ मे मैं बजाजवाडी म रहने गया। मेरी बेटी की एक सहेली का हम सब बहुत प्यार करते थे। दिन म कई बार उसका उल्लेख और सराहना करते थे। एक दिन हमारे परिवार की एक बालिका हमारे घर मेहमान आई। हम लोगो की बातें सुनकर वह उस लडकी को देखने के लिए चचल हो उठी। सहसा उसे निहार निहारकर देख आई। कहने लगी 'बडी तारीफ सुनती थी। मालूम है बडी खूबसूरत है। मुरब्बे के आवले की तरह सारा मुह चेचक से छिदा हुआ जो है।' माताजी ने यह सब सुन लिया। फौरन उस बालिका के सामने बैठकर कहने लगीं 'उसे क्या कहती है? मेरा मुह देखले। चटनी बाटने की सिल जैसा है न? वह कम-से कम गोरी तो है! यहा तो रग भी पक्का है। सूरत क्या देखती है! भीतर तो मुरब्बे के आवले की मधुरता है। कसैलापान नहा है।

भाषा मेरी है। आशय माताजी का है। अपने ऊपर भी मजाक करने म उन्हे आनद आता है। यही तो विनोद-बुद्धि का मर्म है न?

कोई पतीस छत्तीस वर्ष हुए होंगे। देहरादून के कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता माताजी को करनी थी। परेशान थी। विद्वानो की सभा म क्या बोलूगी? मेरे पास

दौड़ी आई। कहने लगी अच्छा, भाषण लिख दो। मैंने बहुतेरा समझाया कि आप जो बोलती हैं, वही सुभाषित है। उनके जी एक न भाया। हारकर मैंने भाषण लिख दिया। वह छपवाया गया। बाद में कहने लगी 'मैं इसे पढ़ सकूंगी। तुम मेरे साथ देहरादून चलो। ट्रेन में इसे रटती चलूंगी।' मैं क्या करता! उनका स्नेह मेरे लिए जीवन की अनमोल निधि जो थी।

ट्रेन में भाषण लगातार रटती रहीं। देहरादून पहुंचे तो मुझसे सभा में चलने का आग्रह करने लगीं। मैंने कहा "एक शर्त पर चलता हूं। कहीं मेरे नाम का जिक्र आप न करें।' बात उन्होंने मान ली। सभा में भाषण करने खड़ी हुई तो शुरू में ही कहा, "यह छपा हुआ भाषण दादा धर्माधिकारी का लिखा हुआ है। मैं तो अपढ़ और अनाड़ी हूं। ऐसी विद्वत्ता मेरे पास कहां? इसलिए मैं इस भाषण को नहीं पढ़ूंगी। अपने मन से ही बोलूंगी।' और फिर जो भाषण किया, वह जीवंत वाणी का अनूठा आविष्कार था। उसमें प्रांजलता थी, सजीवता थी, ताजगी थी।

जानकीदेवी बार-बार कहती हैं कि मौत से मैं बहुत डरती हूं। यह वही जानकीदेवी हैं जो जमनालालजी के साथ सती होना चाहती थीं। बापू के समझाने पर भी मुश्किल से रुकीं। अब पूछने पर कहती हैं "उस वक्त एक आवेग था, एक उमंग थी। आवेश में और भावना के जोश में तो मनुष्य मृत्यु का आलिंगन शौक से कर लेता है, लेकिन मृत्यु का डर इस तरह नहीं जाता।'

सीधी-सादी बात में तत्त्वज्ञान का रहस्य भरा पड़ा है। जब मरने के लिए कोई प्रयोजन न हो, मरण में कोई 'शहादत' या 'शोहरत' न हो, किसी महान उद्देश्य की प्रेरणा न हो, तब मनुष्य मृत्यु के सामने क्या स्वस्थचित्त से उपस्थित हो सकता है? बड़े बड़े अध्यात्मवादियों के चित्त की समता और शक्ति भी बिना तत्त्वज्ञान के पुट के ठहर नहीं सकती। "महद्भयं वज्रमुद्यतम्।' माताजी एक आध्यात्मिक अवस्था का उल्लेख अपनेको निमित्त बनाकर करती हैं, लेकिन उसमें सचाई है, बनावटीपन नहीं है।

माताजी के स्वभाव में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जो बिलकुल बेसिर पैर की हैं। उनसे आप पचास पैसे या बीस रुपये मांगिये तो बहुत आनाकानी करेंगी, लेकिन एक रुपया या सौ का नोट मांगिये तो तुरंत दे देंगी, क्योंकि संख्या में बीस और पचास की अपेक्षा 'एक' कम है।

उनकी बड़ी आकांक्षा थी कि उनकी कोई कन्या 'विनोबा' बने। अपनी तरफ से उन्होंने कुछ भी उठा नहीं रखा। इतनी पारदर्शी प्रामाणिकता बहुत कम माताओं में देखने को मिलेगी। जानकीदेवी का व्यक्तित्व स्फटिकवत् पारदर्शी द्रव्य से बनाया गया है। उसमें छल-प्रपंच या दुराव छिपाव कहीं नहीं है। दोहरा जीवन नहीं, दोहरा व्यक्तित्व नहीं। अपने दोषों और त्रुटियों के लिए उन्हें दुःख और शर्म है, परंतु अपने जीवन के विरोध और विसंगतियों को छिपाने या रमणीय रूप देने की चतुरता नहीं है। क्या ऐसा व्यक्तित्व लुभावना नहीं है? यह मधुर प्रांजलता उनकी मुद्रा पर भी प्रकट होती है।

मंगल स्मरण

बालकोबा भावे

श्रीमती जानकीदेवी बजाज की निर्मित सादगी एवं अनासक्ति की भावना बहुत अच्छी है। मुझसे उनके संबंध में संस्मरण लिखने को कहा गया है। साबरमती आश्रम में स्व० जमनालालजी बजाज के साथ पूज्य गांधीजी को मिलने के लिए माताजी आती रहतीं। लेकिन मेरा कभी साबरमती आश्रम में माताजी से मिलना हुआ नहीं। १९३१ के साल में जब मैं विनोबाजी के वर्धा आश्रम में रहने आया, उस समय माताजी जमनालालजी के साथ विनोबाजी से मिलने आया करती थीं। मैं दूर से कभी उन्हें देखता था। लेकिन उनसे मिलना नहीं हुआ। सेवाग्राम आश्रम से १॥ मील दूर मैं एकांत में झोपड़ी में रहता था। तब मैं तपेदिक से बीमार था। मेरे पास सुबह शाम गांधीजी आया करते थे। उनके साथ जमनालालजी और माताजी कभी-कभी आते थे। तब उनके दर्शन हो जाते थे। लेकिन उनके साथ बातचीत कभी नहीं हुआ। उस समय इतना मैंने सुना था कि माताजी में पति भक्ति यानी जमनालालजी के प्रति बहुत भक्ति भाव था। जमनालालजी जब स्वर्गवासी हो गये तब उन्हें भी उनके साथ स्वर्गवासी होने की तीव्र इच्छा हो गई। उनके लिए जीना कठिन हो गया। मगर गांधीजी का सत्संग था, इसलिए यह जो उनपर वज्राघात हुआ था उससे वे धीरे धीरे संभल गईं।

१९६१ साल में मेरा ब्रह्मविद्या मन्दिर पवनार ६ महीने के लिए आना शुरू हुआ तब वह बीच-बीच में मुझसे मिलने आया करती थीं। कभी कमलनयनजी के साथ मुझसे मिलती थीं। उस समय उनके स्वभाव का कुछ परिचय हुआ। उनका विनोदी स्वभाव है। यह छाप जब भी मुझसे मिलती थीं तब पड़ जाती थी। मैं सर्दी के दिनों में गरम बंडी पहनता हूं, इसलिए एक बार एक अच्छे से अच्छा गरम कपड़ा लाकर दिया और कहा कि उसकी बंडी बनवाकर तुम सर्दी के दिनों में पहना करो। मैंने उसकी बंडी बनाई और हर साल जाड़े के दिनों में उस बंडी को पहनता हूं, तब उनका स्मरण हो जाता है।

दो साल पहले की बात है। विनोबाजी से वह पवनार में मिलने आई थीं, तब मेरे पास आकर बैठीं और कहा कि दिल्ली में श्री घनश्यामदासजी बिड़ला गांधीजी जहां जहां गए उनके लिए गद्दी बनाते गए। साथ में तकिया भी। अब वे काफी इकट्ठे हो गए हैं। घनश्यामदासजी ने मुझसे कहा कि ये सब गद्दियां और तकिया तुम ले जाओ। मैं वर्धा तुम्हारे पास लारी में इन गद्दियां और तकिया को भेजता हूं। तुम उन्हें जहां ठीक लगे वहां स्मारक के तौर पर रखो। इतनी सब गद्दियां सेवाग्राम में रखना संभव नहीं था। तब माताजी ने मुझसे कहा कि घनश्यामदासजी ने गद्दियां और तकिये भेजे हैं उनमें से एक गद्दी और एक तकिया आप रख लेंगे तो ठीक रहेगा। मैंने 'हां' कहा और उसे उरुलीकांचन ले गया। साथ में एक बड़ा तकिया भी दिया। मैं उन दोनों का उपयोग रोजाना करता हूं तब माताजी का और गांधीजी का स्मरण होता है।

इतनी बड़ी उम्र होते हुए भी उन्होंने अपनी सेहत अच्छी रखी है। विनोदी स्वभाव है।

आनद म रहती है। विनोबाजी के प्रति वहुत भक्ति भाव है। इसलिए उनसे मिलन आया करती है। उस समय मुझस भी मिलती हैं। कमलनयनजी के देहात स उन्ह भीतर आघात तो हुआ, मगर विनोबाजी क पास आकर उस समय रहन स उस आघात से मुक्त हो गइ। उनके जीवन की यही पूजी है। उस सत भक्ति के आधार स उनका जीवन सफल समझता हू।

सादगी और सच्चाई की मूर्ति

र० रा० दिवाकर

श्रीमती जानकीदेवी को देखकर हमारे मानस पटल पर एक ऐसा व्यक्ति उभर आता है जिसम बालक के समान सादगी और सच्चाई है लेकिन साथ ही दूसर की भलाई करन का स्पष्ट दिशा-बोध तथा एसी सहिष्णुता भी, जो एक निष्ठावान समाज सेवी म होनी चाहिए। स्व० श्री जमनालालजी के जीवन काल म भी वह भारत के उन नताओ की सर्वोत्तम मेजबान थी जो समय-समय पर बजाजवाडी आते रहते थ। उनके न केवल गौरवशाली पति थे अपितु गौरवशाली पुत्र स्व० कमलनयनजी थे। उनके सक्रिय युवा पुत्र रामकृष्णजी तथा सारी सच्ची पुत्री मदालसाजी आज भी विद्यमान हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि वृद्धावस्था तथा उनके माग म आनवाली कठिनाइया के बावजूद श्रीमती जानकीदेवी अपना अधिकाश समय जरूरतमदो की सवा म व्यतीत करती है।

निस्स्वार्थ समाज-सेवी और साध्वी

मोहनलाल सुखाडिया

श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बारे म कुछ भी लिखना आसान नहीं है। मेरा जीवन म राष्ट्र और समाज सवा करनेवाली कई महिलाओ स सपर्क हुआ लेकिन जिस निस्स्वार्थ भावना स श्रीमती जानकीदेवी बजाज रात दिन समाज और राष्ट्र की सवा म लगी हैं उसको देखकर उनक समक्ष मस्तक अपन आप झुक जाता है। वह करोडपति के परिवार की महिला होते हुए भी जिस त्याग क साथ जीवन-यापन करती हैं उसको मैंन अपनी आखो स देखा है। वह साध्वी है और भारतीय महिलाओ के लिए एक आदर्श है। महात्मा गाधी के सपर्क म

रहकर उन्होंने बहुत-कुछ सीखा। अपने जीवन में इने गिने व्यक्तियों को ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अभी अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री कमलनयन बजाजजी के देहावसान के समाचार पर भी उन्होंने जिस शांति और धैर्य का परिचय दिया, उससे यह स्पष्ट होता है कि वह सामान्य मानव से ऊपर उठ गई हैं। परमात्मा उनको दीर्घायु करें।

उनके असामान्य गुण

कृष्णचन्द्र

श्रीमती जानकीदेवी जिनको हम माताजी के नाम से पुकारते हैं सेवाग्राम आश्रम में भी पूज्य बापूजी के पास आती जाती होंगी लेकिन उनसे जिस परिचय कहना चाहिए वह तो यहीं निसर्गोपचार आश्रम में ही हुआ। वह यहां कई बार आ चुकी हैं और कम ज्यादा समय के लिए रही भी। इसमें उनका हमेशा यह प्रयत्न रहा कि घर के बाल-बच्चों तथा नवयुवा बहुओं को आश्रम का संस्कार मिले और पूज्य बालकोबाजी के सत्संग का लाभ हो। इसलिए इन लोगों को खींच-खींचकर लाती। उनको प्राकृतिक चिकित्सा की तरफ भी प्रवृत्त करती करवाती। उनके लिए सुविधाजनक अच्छी जगह मिले इसकी कोशिश करती यद्यपि वह स्वयं तो कहीं भी रह लेती। हमें उनका भार कभी लगा ही नहीं कि कोई सेठानीजी आई हैं कि उनकी कोई विशेष आव भगत करनी होगी। हम लोगों के साथ वह बिलकुल हिलमिलकर रहती यहांतक कि यहां के कार्यकर्ताओं से भी वह कुछ अदब से ही व्यवहार करती। यह भी उनकी नम्रता और सहज अपनत्व का द्योतक है।

दूसरी बात जो हमने उनमें देखी वह यह कि उनको चीजों की बरबादी से बहुत दर्द होता था। भाजी तरकारी की सफाई करते समय डंठल छिलके निकलते हैं तो उनका भी उपयोग किसी न किसी रूप में क्यों न कर लिया जाय! नींबू का रस निचोड़ लेने के बाद बचे हुए छिलके का अचार बना लेने का आग्रह वह करती। उनकी बात हमें जचती जरूर लेकिन परिस्थिति में व्यावहारिक न होने के कारण उनके पुनः पुनः आग्रह से हमें जरा परेशानी भी होती और माताजी से हम कहते भी लेकिन उनके दिल को कचोट उससे बहलाये बिना न रहती।

उनके भाषण सुनने को हमें विशेष मौके तो नहीं आये फिर भी एकआध बार जो यहां बोलीं, उसपर से लगा कि वह उसमें बिलकुल रम जाती है। सुननेवाले का ध्यान उन्हें नहीं रहता। वह अपने प्रवाह में बोलती जाती हैं। यहां एक बार मरीजों के सामने उनका भाषण हुआ। किस प्रसंग पर था याद नहीं लेकिन मारवाड़ी वचन उसमें बार-बार आते थे जो लोगों की समझ में नहीं आते थे। आखिर माताजी को बताना पड़ा और वह बिना बुरा माने आगे चलने से रुक गई। ऐसी हैं हमारी जानकीमैया। ईश्वर उन्हें स्वस्थ शतायुषी करें।

स्पष्टवादी तथा जिज्ञासु

सत्यभक्त

श्रीमती जानकीदेवी से मेरा परिचय ३६ वर्षों से है। कई बार वह मेरे आश्रम में आई हैं और कई बार सत्संग तथा प्रवचन में सम्मिलित हुई हैं। उन अवसरों पर जहां उनकी जिज्ञासा-वृत्ति का परिचय मिला, वहां उनकी स्पष्टवादिता भी सामने आई। साधारणतः महिलाओं में इतना साहस कम ही होता है कि जो विख्यात लोगों के समक्ष निर्भयता से मन की बात कह सकें और उनकी ठीक आलोचना भी कर सकें, पर यह साहस मैंने जानकीदेवी में पाया।

वह एक श्रीमंत घराने की बेटी और विख्यात श्रीमंत घराने की बहू एवं पत्नी थीं। उनके पति, पुत्र, जमाई भारत के प्रसिद्ध नेता थे। इस प्रकार हर तरफ से उन्हें असाधारण गौरव प्राप्त था, पर इतना गौरव और इतनी संपन्नता होने पर भी उनकी जैसी सादगी तथा मिलनसारिता अत्यंत दुर्लभ है। इतने गौरव और वैभव के होने पर भी किसी प्रकार का अहंकार न आना बहुत कम व्यक्तियों में पाया जाता है।

विद्या, कला आदि में पारंगत होकर लोग दिव्यता को पा लेते हैं, परंतु उनमें मनुष्योचित गांभीर्य, श्रम, सेवा-भाव आदि नहीं आ पाते, जबकि इस मनुष्यता के बिना दिव्यता का गौरव नाममात्र का रह जाता है। दिव्यता की अपेक्षा मनुष्यता का मूल्य बहुत अधिक है।

मानता हूं हो फरिश्ते शेखजी,
आदमी होना मगर दुश्वार है।

तप, त्याग और सेवा की त्रिवेणी

काशिनाथ त्रिवेदी

बापू ने हिंदू समाज की विधवा को 'त्यागमूर्ति' कहकर विधवा जीवन के धर्म को सटीक रूप में मुखरित किया था। सदियों से हिंदू समाज में, विशेषकर ऊंची जातियोंवाले हिंदू समाज में विधवा स्त्री का जीवन बहुत ही दीन, दयनीय और दलित बना रहा। परिवार में उसकी स्थिति अत्यंत गौण बना दी गई। उसे अशुभ और अमंगल का प्रतीक मान लिया गया और स्त्री-जीवन के सारे स्वस्थ और सहज अधिकारों से उसे वंचित कर दिया गया। परिवार में उसका स्थान दासी के स्थान से भी घटिया बनकर रह गया। उसपर सारे परिवार की सेवा और परिचर्या का असीम भार डाल दिया गया। बाल विधवाओं की स्थिति तो अत्यंत असहनीय

बना दी गई। उनको अपमानित, प्रताडित और कलंकित करने में अपनी ओर से समाज ने कोई कसर छोडी नहीं। उनके शरीर मन और आत्मा की भरपूर उपेक्षा की गई। उन्हें जीतेजी घोर नरक की यातनाएं सहनी पडी। उनके दुःख क्लेश कष्ट पीडा व्यथा और वेदना का कोई पार नहीं रहा। उसपर तुर्रा यह कि यह सब धर्म के नाम पर स्त्री के शील और उसके चारित्र्य की रक्षा के नाम पर किया गया। समाज में कुलीन हिंदू स्त्री का वैधव्य उसके लिए एक अटल और अकथ अभिशाप बन गया। उसके जीवन की करुण कथा ने किस सहृदय व्यक्ति के दिल और दिमाग को कसकर मरोडा और झकझोरा नहीं होगा ?

एक जमाना था जब हिंदू समाज की कुलीन कही जानेवाली जातियों में पति की मृत्यु के बाद पत्नी का जीवनाधिकार ही छीन लिया गया था। उसे जीतेजी अपने मृत पति के साथ जल जाना पडता था। इसे स्त्री का सती होना कहा जाता था और समाज में इसको ऊंची प्रतिष्ठा का निमित्त बना दिया गया था। जो स्त्री सती नहीं हो पाती थी समाज उसे तिरस्कार और संदेह की दृष्टि से देखता था। उस जमाने में यह सती प्रथा भी हिंदू-समाज के धर्म का एक अविभाज्य अंग बन चुकी थी। आगे चलकर इसने धर्मांधता का रूप धारण किया और शास्त्र से रूढि को प्रबल और अटल माननेवाले लोगों ने अपने ही समाज की उन अनगिनत स्त्रियों पर अवर्णनीय अत्याचार किये जो स्वेच्छा से अपने मृत पति के शव के साथ जिंदा जलने को तैयार न हो सकी।

कुलीन और सम्पन्न हिंदू विधवा के जीवन की इस ऐतिहासिक पार्श्वभूमि में जब हम अपनी माताजी के अर्थात पूजनीया श्री जानकीबहन बजाज के जीवन को निहारते हैं तो हमारी आंखों के सामने जो सुभग चित्र उभरता है वह अपने आपमें कितना सुहावना पवित्र पावन और मनभावन बन जाता है ! एक दिन था जब पुराने हिंदू संस्कारों से प्रेरित होकर जानकीबहन के मन में भी अपने पुण्यश्लोक पति की चिता पर चढने और जलकर सती बनने की प्रबल भावना जागी थी। पर हिंदू धर्म के मर्म को उसके शुद्ध और शाश्वत रूप में समझनेवाले बापू ने बजाज-परिवार के पिता और विधाता बापू ने जानकीबहन को नवजीवन का जो नया मंत्र दिया उसके कारण वैधव्य एक विभूति में बदल गया। स्त्री के सतीत्व को एक नई दिशा नई दृष्टि और नई प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। बापू ने कहा जमनालाल ने अपने अंतिम दिनों में स्वेच्छा से गोपाल बनकर गो सेवा का जो व्रत अंगीकार किया था उसे अपने शेष जीवन का व्रत बनाकर उसकी सिद्धि में तन मन धन से लगी रहोगी तो न केवल तुम अपना जीवन सफल करोगी बल्कि अपने पति के संकल्प को सिद्ध करके उनकी आत्मा को भी अमित शान्ति पहुंचा सकोगी।'

इस बात को तीस बरस बीत चुके हैं। सती की साधना अविरत गति से आगे बढती रही है। जानकीमैया भारत की गया को एक क्षण के लिए भी भूल नहीं पाती हैं। भारत का गो धन नष्ट होने से बचे गो-वंश की समुचित वृद्धि हो गाय का जीवन देश में निरापद बने उसका सही पालन-पोषण संवर्धन हो, सारा भारत गोकुल बने भारतवासियों को गाय के ही दूध दही, मक्खन मठा और घी का भरपूर लाभ मिले इन वर्षों में यही उनकी आंतरिक चिंता का और चिंतन का विषय रहा है। जब वह देश के गो धन को कसाईखानों में जाते और

करते देखती सुनती है तो उनकी आत्मा रो उठती है उनकी आकुलता और व्याकुलता बढ जाती है। वह समय नही पाती कि गो वश के सहार की इस करुण गाथा के कितने कठोर और कड़ुए कुफल इस देश और समाज को भुगतने पडगे ! कौन, कब, किस प्रकार, इस अनर्थ परपरा का सफल प्रतिकार कर पायगा इसके बारे म भी वह गभीर भाव से सोचती रहती है। उन्हे जब, जहा अपना कोई मिल जाता है, तब वह उस पूछे बिना रह नही पाती कि इस देश के गो धन का क्या होगा ? कसे उसका सहार रुकेगा और किस तरह उसका विकास हो सकेगा ? अपनी गति, मति और शक्ति के अनुसार वह इस देश के गो धन के हित और उत्कर्ष के लिए बराबर सोचती कहती और लिखती लिखाती रहती है। उनके तन और मन की शक्ति को मर्यादित करनेवाला बुढ़ापा भी उन्हे अपने इस प्रिय काम से विरत नही कर पाता।

जब युवक जमनालाल बजाज ने गाधीजी को पत्र लिखकर उनसे विनती की कि वह उन्हे अपना पाचवा पुत्र मानकर उनसे पुत्रवत काम ल और उन्हे देश और समाज की उत्तमोत्तम सेवा की दीक्षा दें तब समूचे बजाज-परिवार के जीवन म एक नया और मूलगामी मोड आया और उसने परिवार के प्रत्येक सदस्य को विवश किया कि वह अपनी रहन-सहन खान पान बोल चाल वेश भूषा और आशा आकाक्षा को इस तरह बदले कि सारा जीवन तप त्याग सेवा और समर्पण की एक जीती जागती मिसाल बन जाय। बापू के पाचवें पुत्र के नाते जमनालालजी ने न केवल अपनेको लोक सेवक के नये ढाचे मे ढालना शुरू किया बल्कि अपनी पत्नी पुत्री, पुत्र और परिवार के अन्य सदस्यो, मित्रो और परिचितो को भी नए जीवन की दीक्षा जाग्रत भाव म देनी शुरू कर दी। एक सुखी सपन्न और प्रतिष्ठित परिवार की बहू के नाते जानकीबहन का जो जीवन बजाज परिवार म बना था बापू के अदभुत स्पर्श स उसम क्रान्तिकारी परिवर्तन होने शुरू हुए। परदा छूटा। गहने छूटे। विलास और वैभव के प्रतीकरूप कीमती और विदेशी वस्त्र छूटे। नौकर चाकर के सहारे चलनेवाली गृहस्थी म गृहिणी का अपना श्रम अपनी सेवा और अपनी साधना जुटी। परिवार की सीमाए विस्तृत हुई। गिनती के कुछ व्यक्तियो का छोटा परिवार बढकर फलकर समूचे राष्ट्र का एक अविच्छिन्न अग बन गया। जाति वर्ण, धर्म देश, विदेश की सारी मर्यादाए लुप्त हो गई। बजाज परिवार ने महामानवो के एक विशाल परिवार मे अपनी एक खास जगह बना ली। बापू के कारण बजाज परिवार भारतीय राष्ट्र की स्वतत्रता के लिए जूझनेवाले योद्धाओ का एक यजमान परिवार बन गया। इस विलक्षण परिवार की गृह स्वामिनी के नाते जानकीबहन को सन १९२० २२ से लेकर आजतक कितने कठोर तप मे से, त्याग म से और कितनी विविध सेवाओ म से गुजरना पडा है और किस प्रकार एक महान ध्येय एव आदर्श को आत्मसात करने की दृष्टि से समर्पित जीवन जीने के लिए सतत खपना, खटना पडा है, उसकी अपनी एक अदभुत रामकथा ही बन गई है। स्वय श्री जानकीबहन ने बडे ही रोचक और सरल ढग से अपनी यह कहानी अपने शब्दो मे लिख डाली है। गाधी-युग के प्रतापी और पराक्रमी स्पर्श का मुखर करनेवाली उनकी वह जीवन-कहानी आज की नई पीढी के लिए भी दिशा-बोध की अनमोल सामग्री प्रस्तुत करती है।

आज की माताजी को जानकीमैया को जो उन दिनों जानकीदेवी बजाज के नाम से जानी पहचानी जाती थी, मैंने और मेरी पत्नी ने सबसे पहले सन १९२८ में उस समय देखा था जब वह अजमेर के निकट हटूण्डी गांव में बने गांधी आश्रम में पधारी थी। स्वर्गीय श्री हरिभाऊजी उपाध्याय इस आश्रम के संस्थापक और संचालक थे और उस समय तक वह बजाज परिवार के एक अत्यंत विश्वसनीय आदरणीय और स्पृहणीय सखा एवं साथी बन चुके थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि अपनी इस हटूण्डी यात्रा के चलते आश्रम की बहनों से माताजी की जो भेंट मुलाकात हुई उसमें मेरी पत्नी के शरीर पर कुछ गहने देखकर उन्होंने कहा था 'देखो बहन मैं तो एक लखपति सेठ की सेठानी हूं पर मेरे बदन पर गहनों का नाम नहीं है। तुम इन गहनों का बोझ क्यों लादे हुए हो ? स्त्री की शोभा और शक्ति उसके गहनों में नहीं, अंतर के गुणों में छिपी है। तुम गुणवती बनो और गहने छोड़ो तो बात बने।' दो सालों के अंदर ही मेरी पत्नी को बापू ने भी यही सलाह दी और हमारे परिवार के जीवन में से गहनों की आसक्ति सदा के लिए लुप्त हो गई। बापू का और माताजी का यह आशीर्वाद हम जिस तरह फला वैसा सबको फले, यही हमारी आंतरिक कामना और प्रार्थना रही है और रहेगी। माताजी की ८०वीं वर्षगांठ के पुण्य प्रसंग पर उनके चरणों में हमारी यह नम्र भेंट है।

उनके रचनात्मक कार्य

रिषभदास रांका

स्व० जमनालालजी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कार्यों में स्वेच्छा से पुत्र बनकर जो काम किया था उसका उल्लेख जमनालालजी के चले जाने पर महात्मा गांधी ने इन शब्दों में किया था

जमनालालजी मेरे पांचवें पुत्र बने। इस स्वेच्छा से गोद आये पुत्र ने कितना कुछ किया इसका पता बहुत कम लोगों को होगा। मैं कह सकता हूं कि इससे पहले किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।

जमनालालजी ने बिना किसी संकोच के अपने आपको और अपने सर्वस्व को मुझे समर्पित कर दिया था। मेरा शायद ही कोई ऐसा काम होगा जिसमें मुझे उनका हार्दिक सहयोग न मिला हो और जो अत्यंत कीमती साबित न हुआ हो।

स्व० बजाजजी ने स्वयं को गांधीजी को समर्पित करते समय संत तुकाराम की जिस उक्ति का ध्यान में रखा था वह है— त्याचे वन्दावी पाउलें अर्थात जो जैसा बोले वैसा ही आचरण भी करे उसके चरण वन्दनीय हैं। इस कसौटी पर स्वयं को उतारने के उनके प्रयत्न में माता जानकीदेवी का क्या योगदान रहा उसका मूल्यांकन करना आसान नहीं है क्योंकि

जानकीदेवी के परिचय म आनेवाला को उनका जीवन-व्यवहार बजाज के आचार विचारो स भिन्न दिखाई देता है। माताजी के जीवन के अतरग का समझे बिना उनके परिचय म आनेवाले पर सहज म ही यही प्रतिक्रिया हाती है कि उनका जीवन जमनालालजी के जीवन के अनुकूल नही था। परन्तु जब कोई उनके जीवन की विशेषताओ का समझने की चेष्टा करे तो उसे भिन्नता म भी अभिन्नता का दृढ आधार स्पष्ट दिखाई देगा।

मैंने माताजी को अत्यत निकटता से देखा परखा है। उनके साथ कार्य किया है और उनकी काय प्रणाली को सूक्ष्मता स देखा है। उन्होने अपना अत करण जिस प्रकार मेरे समक्ष प्रकट किया है शायद ही किसी अन्य के समक्ष प्रकट किया हो। उनके स्वभाव म कजूसी है किंतु हृदय म उदारता जमनालालजी की तरह ही है। पस पस की कजूसी करनेवाली माताजी की उदारता भी महान है। पस पस के लिए कजूसी करनेवाली जानकीदवी और उदार जमनालालजी म स्पष्ट अतर दिखाई देने पर भी कोई उन्ह उनकी अनुगामिनी कैसे स्वीकार करे? जमनालालजी की मृत्यु हो जाने पर अपने पति के साथ सती होने की इच्छा रखनेवाली जानकीदेवी स जब गाधीजी ने कहा सच्ची सती तो वह होती है जो अपने पति के कार्यों के लिए सवस्व समपण कर दे तो जानकीदेवी ने तत्काल अपनी सारी-की सारी पूजी (अढाई लाख रुपये) बजाजजी के गो सेवा काय के लिए दे दी। तत्काल बिना किसी हिच-किचाहट के अपनी सारी पूजी वह दान म दे देंगी इसकी तो किसी को अपेक्षा भी नही थी।

पति के प्रति जो श्रद्धा और समपण भाव माताजी म है उसे वह कभी शब्दो म नही कहती बल्कि काय रूप म व्यक्त करती है, लेकिन इन पक्तियो के लेखक से अभी कुछ दिना पहले ही उन्होने सहजभाव से जो शब्द कहे थे, वे अत्यत महत्त्वपूण है। माताजी ने प्रसगवश गौरवपूण ढग स कहा "इस युग म अपने पति की आज्ञा का पालन कर सवस्व त्याग करने वाली कस्तूरबा थीं और दूसरी है जानकी बजाज।'

निष्कपट हृदय स अपने अतर की भावना व्यक्त करनेवाली माताजी के इन शब्दो म पाठको को यह अथवा आत्मश्लाघा प्रतीत हो सकती है किंतु शब्दो की लाग लपेट या शब्दजाल उन्ह नही आता। उनके इस कथन म अह की अपेक्षा गौरव का भाव ही अधिक था।

जानकीदेवी को न धन का मोह रहा, न पुत्रो का। पति की आज्ञा उनका धम था।

माता को अपना पुत्र कितना प्रिय होता है इसका ठीक अनुभव तो माताओ को ही हो सकता है और अपने सुपुत्र कमलनयनजी बजाज के लिए उनके हृदय म कितनी गहरी भावनाए थी कितना अगाध प्रेम था यह सब उनकी डायरियो से सहज ही जाना जा सकता है। जमनालालजी की इस इच्छा के लिए कि आजादी के इस महायज्ञ म हमारे परिवार और प्रियजनो की बलि भी चढानी पडी, तो मुझे सतोष होगा अपने प्रिय पुत्र को आजादी की लडाई म खुशी और उत्साह से स्वय भेजा।

नमक-सत्याग्रह के लिए गाधीजी का साथ देनेवाले सवस्व त्यागियो म जानकीदेवी ने कमलनयन का नाम लिखवाया। वर्धा जाकर १०४ डिग्री बुखार म बीमार कमलनयनजी को स्वय लेकर आइ और सत्याग्रही टोली म शामिल किया।

गाधीजी ने पहले तो नाबालिग होने के कारण कमलनयनजी को उस टोली म भर्ती

करता था। इस प्रकार का निश्चय किया था किन्तु जानकीदेवी और जमनालालजी की इच्छा के अनुसार उन्हें सुनाया गया। जानकीदेवी की यह प्रवृत्ति अभिनन्दनीय है और आज भी है कि इस परिवार का कोई भी व्यक्ति स्वयं कार्य के लिए किसी को नहीं कहता। वे सारे कार्य माताजी के हृदय की आशंकाओं को उद्घाटित करते हैं।

जिस मर्यादित वैष्णव परिवार में उनका जन्म हुआ था, उसमें स्त्रियों और सरकार अमलदारों का पूरा असर था। उस परिवार में वे पली थीं। अपना सार के लिए सम्मोहनात्मक शक्ति को अपना कर जिस उत्साह से सत्याग्रह में भाग लिया, यह उनकी अन्तःशक्ति के प्रति निष्ठा का परिणाम है।

वह कहती हैं कि मिल कपड़ों का आन्दोलन शुरू हुआ। मैं मानती हूँ कि यदि मन में आन्दोलन का भाव ही न हो तो कोई कुछ नहीं कर सकता है। इसी अर्थ का पालन करने में उत्तम सफलता मिली। जब हम लोग पकड़े गये, तब जमनालालजी के साथ में गहना उतारने का निर्णय लिया। कपड़े, जेवर, गहना और कपड़ा आदि की गठरी जब बाहर किया था, पूरा सामान दिया और भारी त्याग के साथ अपना आपका पूरी तरह समर्पित करके ही लिया। काम की शुरुआत उसी क्षण से हुई जब भूल जाती हैं कि मानसिक तौर पर भी उनका कुछ नहीं रहा।

नमक सत्याग्रह के समय जमनालालजी के साथ पहले-पहल विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार था। तब मैंने निकट से अनुभव किया था कि वह किसी प्रकार का लापरवाह नहीं किया करती थीं। सरकार विरोधी प्रचार में लगी रहती थीं। उस समय में जितना उन्होंने कष्ट सहा, उतना कुछ सुनाया ही नहीं था।

विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और खादी प्रचार के काम में बिहार और बंगाल में उन्होंने जो काम किया, वह अद्भुत था। कई बार अपनी धुन में वह ऐसी बातें भी करने लगती हैं जिन्हें लोग अव्यावहारिक मानते हैं, किन्तु धुनी व्यक्ति की धुन ही तो सफलता बनकर रहती है। वह विदेशी वस्त्रों के खिलाफ आग्रह करने के लिए पं० मोतीलालजी के पास गईं। बोलीं, "विलायती कपड़े की बिक्री के विरोध में सत्याग्रह करना चाहती हूँ।"

मोतीलालजी बोले, "बात तो ठीक है, पर आपके पास सत्याग्रह करनेवाले कितने लोग हैं?"

जानकीदेवी ने जवाब दिया, "यहाँ तो अधिक नहीं हैं, पर वर्धा से २०-२५ बहनें बुलवा सकती हूँ।"

मोतीलालजी ने जवाब दिया, "इससे काम नहीं चलेगा। इन बहनों को सरकार गिरफ्तार कर लेगी तब? सत्याग्रह करना ही है तो कम-से-कम निरंतर चलने की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए और इसके लिए हजारों बहनों की जरूरत होगी।" मोतीलालजी के इस कथन पर उन्हें सत्याग्रह की वास्तविकता का ख्याल आया।

माताजी केवल प्रचार का ही काम करती हों, ऐसा भी नहीं है। खादी के रचनात्मक कार्य में भी उन्होंने बराबर योगदान दिया है। कताई में अच्छी पूनियों की जरूरत होती है, इसलिए कपास की खेती करके उस कपास की पूनियाँ बनाकर, चर्खे का यज्ञ चला। आदि

काय भी उन्होंने स्वय किये। आज भी वह सभा म बठी हो या बात कर रही हो उनकी तकली तो चलती ही रहती है।

अपने कते सूत का कपडा बनवाकर उसे हर रग स रगवाकर अपने आत्मीयजनो को भेंट देना तो उनकी हाबी ही बन गई है। माताजी की अपने इस काय के पीछे यह विश्वास है कि भारत की गरीबी यदि दूर करनी है तो उसके लिए खादी ही सबसे अधिक उपयुक्त साधन है।

खादी काय की ही तरह उनकी गो सेवा के काय म भी बहुत निष्ठा है। वह बापूजी के इस विचार को हृदयगम कर चुकी है "गो सेवा काय स्वराज्य प्राप्ति स भी अधिक कठिन काय है और भारत को यदि जीवित रखना है तो गायो को बचाना ही होगा।"

इस काय के लिए वह राजस्थान महाराष्ट्र बिहार बगाल आदि प्रदेशो म बहुत घूमी हैं। उन्होंने इस काम के विषय म बहुत गहराई स सोचा भी है इसीलिए वह कहा करती है कि यदि गायो को बचाना हो, तो गोवध का कानून ही पर्याप्त नहीं होगा। निस्स्वाथ गो सेवा करनेवाले जीवनदानी सेवक ही गायो को बचा सकते हैं। भारत म आज भी गोसेवा की भावना है। उसके लिए अथ की कमी नहीं है यदि कमी है तो सच्चे गो-सेवको की। गो रक्षा आदोलन म लगे साधुओ स भी वह कहती है कि आप गोरक्षा-आदोलन म लगे है सो तो अच्छा है किंतु पहले आप स्वय गो सेवा का व्रत लीजिए। जानकीदेवी ने लगभग ५० वष पूव केवल गाय के दूध घी के सेवन का व्रत लिया था जिसका वह आज भी पालन कर रही हैं।

उनकी इस उम्र म भी गो सेवा के लिए काम करने की तीव्र इच्छा है। वह कहती है— अब तो मुझे वर्धा रहना ही अधिक अच्छा लगता है। फिर भी यदि कहीं जाने को मन करता है तो मैं गो-सेवा के काय के लिए कलकत्ता जाना अधिक पसद करूगी। वहा भारत की अच्छे नस्ल की अधिक दूध देनेवाली गायें आकर दूध सूखने पर कसाई के हाथो बिककर कटती है। इससे गायो की उत्तम नस्लें खत्म हो रही है। पर मेरा साथ देनेवाला कोई तुम जैसा मत्री मिल जाय तो वह काम मुझे बहुत प्रिय है। दूध सूखने पर उन गायो को खरीदकर ऐसे स्थान पर रखा जाय जहा चारा सस्ता हो और उनकी उचित देखभाल की सुविधाजनक व्यवस्था हो सके और अच्छे साड से गाभिन कराकर ब्यान का समय निकट आने पर उन्हे पुन कलकत्ता भेजा जा सके। इस काम के लिए उन्होंने सरकार तथा मत्रियो से भी बात की थी और शास्त्रीजी ने उन्हे आश्वासन भी दिया था कि सस्ती दर स ऐसी गायें लाने ले जाने के लिए सहूलियत दर से वह रेल के डब्बो की व्यवस्था करवा देंगे।

बजाज-परिवार की विनोबाजी के प्रति बडी भक्ति है। उसमे भी माताजी आगे ही हैं। भूदान आदोलन म वह उनके साथ आध्र राजस्थान बिहार बगाल आदि क्षेत्रो म लगातार महीनो घूमी हैं।

भूदान म कुओ का महत्त्व समझकर उन्होंने कूपदान-आदोलन शुरू किया और चलाया। हजारो नये कुओ का निर्माण करवा दिया। कूपदान म बहनो के जेवर लेकर उन्हें काचन मुक्ति की सीख दी। धनवान जमीदारो स ही नहीं, बल्कि मत्रियो तथा उच्चाधिकारियो तक स

उन्होंने मांग की। उनसे न तो प्रधानमंत्री जवाहरलालजी ही बच पाये न तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी ही। कूपदान के लिए वह पंडितजी के पास चन्दा मांगने पहुंची। वर्तमान प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिराजी भी अपने पिता के पास बैठी थी। जानकीदेवी नेहरूजी के नाम का एक कुआं बनाना चाहती थी और एक कुएं की लागत ८००० होती थी। जानकीदेवी ने कहा कि रुपया का महत्त्व नहीं है आपका इस कार्य में आशीर्वाद और सहयोग चाहिए। इंदिराजी ने कहा कि इस महीने तो बजट में से ५०० रुपये निकालने संभव रहा है लेकिन मैं अगले माह आपको रुपये भिजवा दूंगी। बाद में रुपये भिजवा दिये गए।

जब वह कूपदान के लिए घूमती थी तो न तो वाहन की परवाह करती थी और न धूप सर्दी की। खान-पान के तो ऐसे हाल थे कि उन्हें देखकर घरवालों या आत्मीयों का भले ही चिंता हो पर वह इस ओर से बिलकुल उदासीन थी। बस काम हो जाय यही उनकी भावना रहती थी।

माताजी की इन समस्त विशेषताओं के साथ-साथ उनमें कुछ ऐसी भी बातें हैं जो उनके व्यक्तित्व को ठीक से समझने में बाधक बनती हैं और हैं भी अति तक पहुंची हुई।

सिर्फ पैसे की ही बात लें। थोड़ी सी फिजूलखर्ची भी वह बर्दाश्त नहीं कर सकती संतुलन तक खो देती है। पर इसके विपरीत वह स्वयं ही फल तथा सब्जियां इतनी अधिक खरीद लेती है कि सड़ने लगती है। सड़ी हुई वस्तुएं फेंकना भी उनके बस का नहीं इसलिए कई बार तो सड़े हुए फलों में से अच्छे अंश निकालकर खाती हुई भी वह देखी जाती हैं।

उनकी इस आदत के लिए कमलनयनजी कहा करते थे मां तू ये सड़े हुए फल क्या खाती है? अच्छे ही क्या नहीं खा लिया करती? आखिर तो आज के खरीदे हुए फल कल सड़ ही जायंगे!

दान देने में रुपया दो रुपया हाथ से देना भले ही उन्हें अखरे किंतु आप हजारों के चेक पर उनसे हस्ताक्षर करा सकते हैं। अभी-अभी की बात है। उनको लगा एक जगह काम के लिए दान दिया जाय पर उनको पचास हजार से एक लाख देना बेहतर लग रहा है क्योंकि पचास से एक का अंक छोटा है!

कंजूसी की ही तरह दूसरी अति है सफाई के मामले में जिसका मैं स्वयं शिकार हुआ हूं। मेरी पत्नी ने उनसे सफाई की बात सीख ली। माताजी स्वयं भी तो उसे अपनी चेली मानती है। चौके की बात तो छोड़ दीजिए पर संडास में भी वह दूसरे को जाने देना पसंद नहीं करती। इतनी अधिक साफ सफाई पसंद होने के कारण ही माताजी को नौकर संतोष नहीं दे पाते। इस नौकरों के कारण ही सेठजी के साथ भी कभी कभी माताजी की गर्मा गर्मी हो जाया करती थी।

मैं माताजी से कहा करता हूं माताजी आप छोटी छोटी बातों में अनुदार किंतु बड़े-बड़े कार्यों को करने में किसीसे पीछे नहीं रहती। लेकिन इन छोटी छोटी बातों के कारण ही आपके विषय में बाहरी लोगों को गलतफहमी हो जाती है इसलिए क्या आपको इन बातों को छोड़ देना ठीक नहीं लगता?

वह जवाब देती है मैं जानती हूं कि इससे केवल मेरे लिए गलतफहमी ही नहीं होती

पर इससे मेरे स्वयं के मन में भी अशांति रहती है पर करूं क्या, स्वभाव पड़ गया है कोशिश करती हूं, पर छूट नहीं पाती इस स्वभाव से।

माताजी अपनी अनेक विशेषताओं और स्वभाव के बावजूद समर्पित हैं। उनका समर्पण बापू, विनोबा एवं अपने पति जमनालालजी की त्रिमूर्ति के प्रति रहा और है। ऐसा समर्पण भाव विरला में ही मिलता है।

जीवित सती

बलवंतसिंह

श्रीमती जानकीदेवी बजाज के साथ मेरा बहुत ही निकट का संबंध है। उन्हें गो-सेवा का काम सबसे प्रिय है, उसीके लिए वह जीवित रही हैं, नहीं तो वह पूज्य जमनालालजी के साथ ही सती होनेवाली थीं। जो गो-सेवा जमनालालजी को प्राणों से भी प्यारी थी, उनकी मृत्यु के बाद जीवन-पर्यन्त अपनेको मिटाकर इस काम को करते रहना सती होना ही है। इसलिए वास्तव में तो वह जीवित सती ही हैं।

जब कभी उनसे मिलना होता है तब मुझे देखते ही बड़े प्यार से कहती हैं, "अरे दुश्मन, तू आ गया?" मैं भी हँसकर उनकी बातें टालने की कोशिश करता हूं कि कुछ खाने को मिल जाय। फिर उनकी वही गाय के कष्टों की रामकहानी आरंभ होती है, "अरे, देखो, कलकत्ता में इतनी गायें मर रही हैं, उनके लिए कुछ करो। वहां के लोग कुछ करना चाहते हैं, उनकी मदद करो। उस गोशाला को हाथ में लेकर उसे सुधारो। अच्छे सांड नहीं मिलते हैं, इसके लिए कुछ करो।' उस समय उनका करुणा से भरा चेहरा देखने योग्य होता है। वह समझती हैं कि इतना सब करने की शक्ति और सत्ता मेरे पास है और मेरे मंत्र फूंकने से ही सबकुछ हो जायगा। मुझे अपनी लाचारी पर शर्म आती है और उनकी बातों को टालना पड़ता है। कभी-कभी कहती हैं, "अरे, देश में इतने साधु हैं, जिनके पास कुछ भी काम नहीं है। अगर एक-एक गोशाला में एक-एक बैठ जाय तो कितना अच्छा काम कर सकते हैं?" उनकी बहुत-सी कल्पनाएं शेखचिल्ली की सी होती हैं। ऐसी भोली-भाली गोभक्त मां के लिए मैं कुछ भी न लिखूं तो मेरा धर्म चूकने जैसा होगा।

मैं सोचने लगा कि मेरे लेख का शीर्षक क्या हो? वह मुझे अपना दुश्मन मानती हैं और मैं उन्हें पागल मानता हूं। सोचा, 'पगली मां' ही अच्छा शीर्षक है। फिर जब मैं अतीत की तरफ मुड़कर सोचने लगा तो मुझे वह दिन याद आ गया जब ११ फरवरी, १९४२ की शाम को स्व० जमनालालजी की चिता धांय-धांय करके जल रही थी और वह उनके साथ सती होने के लिए उसमें कूदने का प्रयत्न कर रही थीं। तब बापूजी ने उनको समझाते हुए कहा था,

जमनालालजी के मृत शरीर के साथ जल जाने से धर्म का पालन थोड़ा ही होता है। धर्म का पालन तो जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पण किया था उसको पूरा करने से होगा। किसीके प्रेम या मोह के वश होकर प्राण देना आसान है लेकिन उसके काम के लिए जीना भारी काम है और वही उसके लिए सच्ची भक्ति और प्रेम है। बस आज से यह संकल्प करो जमनालालजी का काम तुम्हें पूरा करना है।

बापूजी के इस गीता ज्ञान का उनके चित्त पर इतना गहरा असर हुआ कि उसी अग्निदेव की साक्षी में उन्होंने अपना तन मन और धन जमनालालजी को प्राणों से प्रिय गो सेवा के काम के लिए समर्पण कर दिया और दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब उन्हीके काम को पूरा करने के लिए जीना है।

तन तो जलकर खाक हुआ, पर मन को मिला विश्राम रे।'

इस भजन की टेक के अनुसार उनका तन तो उसी दिन जलकर खाक हो चुका था लेकिन उनके मन को विश्राम जरूर मिला।

उनके पास न तो गोसेवा का शास्त्रीय ज्ञान था न जमनालालजी के जैसा प्रभाव ही था न बोलने और समझाने की कला ही थी। लेकिन शबरी की तरह राम के दर्शन पति के अधूरे काम को पूरा करने की धुन थी मीरा की तरह भगवान को खोजने (गोसेवा के मार्ग खोजने) का पागलपन था दर्द था।

दर्द की मारी मीरा बन बन डोले मेरा दर्द न जाने कोय।
मीरा की सब पीर मिटे जब बैद सांवरिया होय।

सचमुच ही वह उसी सांवरिया की खोज में पागल है जो गाय को आकर बचाये। उनके मुंह से यही निकलता है हे भगवान गोमाता कैसे बचेगी ?'

या तो बापूजी और विनोबाजी के जो भी रचनात्मक काम है और उनके सामने जो भी काम आ जाता है सबमें ही वह हाथ बटाती है। भूदान और कूपदान के लिए घर घर भटकी है। अच्छे घरों की सेठानियां तो माताजी को देखकर घबरा जाती है कि कुछ मांगने ही आई होगी। माताजी भी गोह की तरह ऐसी चिपकती है कि बिना कुछ लिये पिण्ड ही नहीं छोडती। इस प्रकार मांग मांगकर उन्होंने अनेक कुएं बनवाये है।

गोमाता के लिए उनके मन में जो तड़प है इस कारण वह इतनी बात करती है कि उनकी बात सुननेवाले भी उकता जाते है। लेकिन उनकी उन भोली भाली बातो के पीछे उनके दिल की गहराई में गोमाता का कितना दर्द भरा है इसका अन्दाज लगाना कठिन होता है। अगर उनको कोई यह विश्वास दिला दे कि आपकी रीढ़ की हड्डी से गाय बच सकती है तो दधीचि ऋषि की तरह वह अपनी रीढ़ की हड्डी खुशी से दे देगी।

पूरे ३० वर्ष से वह जिस निष्ठा से गोसेवा भूदान और कूपदान के काम में लगी है और आज भी इस उम्र में उनकी वही धुन कायम है उसे देखकर उत्साह और आनन्द का अनुभव होता है। उनकी सादगी श्रमशीलता कमखर्ची तो कृपणता को भी लज्जित करनेवाली है। मैं तो उनसे कहा करता हू कि आपका न मालूम कौन सा पुण्य आडे आ गया जिससे जमनालालजी के साथ शादी हो गई नहीं तो आपका स्थान तो होता। वह भी मुझे प्रेम में खूब गालियां

सुनाती हैं और मैं भी बच्चों से कहा करता हूं। लेकिन यह समझती हैं कि मैं उनका ही काम कर रहा हूं और मैं समझता हूं कि मैं आज भी अच्छा काम कर दूसरों से प्यार से गालियां सुनाती हैं। इसलिए इस गृह कलह का दूसरा कोई क्या करे ?

एक बार विनोबाजी से मुझे बजाजवाड़ी-परिवार के ही एक सज्जन के खिलाफ शिकायतें करनी थीं। मैंने बाहर निकाल दिया क्योंकि उनसे अकेले में बात करनी थी। वहींपर माताजी भी बैठी थी। उन्होंने विनोबाजी की तरफ देखकर कहा, "क्या मैं भी बाहर चली जाऊं ?" विनोबाजी ने मेरी तरफ इशारा किया—इनसे पूछो। मैंने कहा, "नहीं, आप बैठ सकती हैं।" मैंने खूब पेट भरकर शिकायतें कीं। विनोबाजी ने माताजी से पूछा, "बोलो, आपकी क्या राय है ?" माताजी बोलीं, "बनकर-शिकार तीर रहता है।" विनोबाजी हँस दिये। ऐसा हमारा एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध है। धना भगत का भजन है

रामबाण बाग्या होय ते जाणे,
ध्रुव ने बाग्या, प्रह्लाद ने बाग्या, ठरी वठा ठेरा गे।
गभबासमा शुकदेवजी ने बाग्या, वन चाल्या परमाणें ॥

इस दोहे में जिन अनेक भक्तों के नाम गिनाये हैं कि भगवान ने अनेक भक्तों को उबारा है। उसी माताजी को भी काल के मुंह में बचाकर अमृत पिलाया है जिसमें गुरुभक्ति और पतिभक्ति दोनों की साधना चल रही है।

राम का बाण जिसको लगा हो उसका क्या परिणाम होता है और उसकी कितनी गहरी चोट लगती है यह इस भजन में कवि ने बताया है। वही चोट माताजी के दिल पर बापूजी के इन वचनों के बाण की लगी— किसीके प्रेम या मोह के वश होकर प्राण देना आसान है, लेकिन उसके काम के लिए जीना भारी काम है। उसी भारी काम के पीछे माताजी अपने प्राणप्रिय पति के अधूरे संकल्प को पूरा करने के लिए अपने प्राणों की जीवित आहुति दे रही हैं। ऐसी बहनों का अभिनन्दन करना मानो राष्ट्र की उस गोभक्ति की भावना का आदर करना है, जिसके आधार पर हमारी सारी संस्कृति टिकी है।

बापूजी ने कहा है कि अगर हिन्दुस्तान की संस्कृति की व्याख्या एक शब्द में करनी हो तो वह गाय के साथ जुड़ी संस्कृति है। उस संस्कृति की रक्षा करने में जिन्होंने अपना जीवन खपाया है और आज भी खपा रही हैं उनका जितना सम्मान किया जाय थोड़ा है। यह सम्मान उनका व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्र की गोमूलक भावना का है, स्व० जमनालालजी की उस पवित्र भावना का है जो अन्तिम समय पर उनके मन में रही थी और जिसके लिए उन्होंने अपने आपको समर्पित किया था और जिसके लिए विनोबाजी ने कहा था कि जमनालालजी के साथ मेरा २० साल का परिचय था, लेकिन उनके मन की जैसी उन्नत अवस्था मैंने इन सवा दो महीनों में देखी वैसी कभी नहीं देखी थी। मन की ऐसी उन्नत अवस्था में मृत्यु प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है जो जमनालालजी प्राप्त कर सके। उसी पवित्र भावना की प्रेरणा का बल माताजी के साथ भी रहा है नहीं तो ऐसे जर्जरित और रोगी शरीर से इतना बोझा उठाना ही नहीं। जब इन सब भावनाओं का विचार करता हूं तो मेरा हृदय स्व० जमनालालजी के पवित्र स्मरण से भर आता है कि अगर उनको भगवान ने हमारे बीच में लम्बे समय

तक रखा होता तो गारावा और गोरगा का प्रश्न जन्म हन होकर ही रहता। माताजी न उग पौध को अपना गवस्व लगाकर साता है इसलिए उनको इग ननरवर्षा म निए मर न्दिर म बहुत आदर है।

प्रभु स प्राथना है कि वह स्वस्थावा म स्व० जमनालालजी की उग उच्च भावना क प्रतीक रूप म हमारे बीच म लम्बे समय तक रहकर उग पौधे को मारा का काम करती रह जिस जमनालालजी ने रोपा था।

उनका अद्भुत वात्सल्य

मा० म० शाह

पूजनीय माताजी स मरा सम्बन्ध सन् १९६१ म स्थापित हुआ जबकि मैंन वर्धा म कामग कलिज म प्राध्यापक क रूप म अपनी सवाआ का प्रारम किया। माताजी म सवा-परायणता सयम तथा सहिष्णुता आपाद मस्तक समायी हुई है। उनका कायक्षत्र गृहणिया की पुरानी अवाछनीय कुप्रथाआ को दूर करना गोसवा खादी का प्रचार सात्विक जीवन निर्वाह मुख्य रूप स रहा है। उनका जीवन तीन युगपुरुषा क सपक स कचन के समान दमक रहा है। पहल हैं उनके पति स्व० जमनालालजी बजाज (गाधीजी क पाचवें पुत्र) दूसर गाधीजी और तीसरे विनोबाजी। प्रथम दो युग पुरुषा की वजह स उन्होने गहन और पदा छोडा गाधी के प्रति अटूट श्रद्धा पन्न हुई गोसवा म सलग्न हुइ और सात्विक जीवन-यापन किया। विनोबाजी का सान्निध्य दु ख-सुख सभीम मिला है। प्रथम वज्राघात पति की मृत्यु का था। उस समय गाधी जी ने कहा था जानकी तुम्ह अब रोना नही है। तुम्ह तो हँसना है और बच्चा को भी हसाना है। जमनालाल तो जिन्दा ही हैं। जिसका यश अमर हो उसकी मृत्यु कसी ? उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके रास्त न चलो। हिन्दू-स्त्री विधवा होने पर सारे भोगा को तिलाजलि देती है विकारा का शमन करती है। गाधीजी की इस शिक्षा क कारण वह अपने को सम्हाल सका। दूसरा दु ख का पहाड तब टूटा जब उनक ज्यष्ठ पुत्र श्री कमलनयनजी का देहावसान एक हजार मील दूर गुजरात के राज्यपाल श्रीमन्नारायणजी क यहा १ मई १९७२ को अहमदाबाद म हुआ। इस समय माताजी वर्धा म थी। यह दु खद समाचार पहले विनोबाजी का मिला। उन्होने ही माताजी को जानकारी दी एव सात्वना भी।

इतन दु ख सहन करने के बाद भी माताजी आज सभीको मातृत्व प्रम देती है। सयम एव सादगी का जीवन व्यतीत करत हुई कई बार हमारे महाविद्यालय म विद्यार्थियो और प्राध्यापका को जीवन की अमूल्य मूलभूत बात बतलाती रहती है। मास मछली शराब आदि बुराइया से दूर रहकर गो माता की सवा करने पर जोर देती हैं। सादा जीवन क लिए तडक

भडक से दूर रहना उनका मूल मत्र है। वह कहती है कि आडम्बर से बचे बिना सयम से रहना सभव नहीं हो सकता।

विज्ञान के क्षेत्र मे वर्धा नगरी के विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन हेतु पूज्य माताजी के ज्येष्ठ चिरजीव स्व० श्री कमलनयनजी बजाज ने मातुश्री के नाम पर सन् १९६२ मे जानकीदेवी बजाज विज्ञान महाविद्यालय, वर्धा की स्थापना की। माताजी की शिक्षा-दीक्षा कम होने पर भी भारत के तीन युग प्रवर्तक रत्नों के सस्कार के कारण महाविद्यालय की विभिन्न प्रवृत्तियो मे वह काफी दिलचस्पी लेती हैं। विज्ञान प्रदर्शनी स्नेह सम्मेलन तथा अन्य समारोहो मे इस वृद्धावस्था मे भी मनोयोग-पूर्वक विद्यार्थियो एव प्राध्यापको का मार्गदर्शन करती रहती हैं। इससे हम शिक्षा के प्रति उनकी गहरी रुचि का पता चलता है। इसके साथ ही वह स्पष्टवक्ता हैं। गाधीजी विनोबाजी जमनालालजी एव अन्य भारतीय नेताओ तथा महात्माओ के पुराने सस्मरण जब वह बतलाती हैं तब ऐसा जान पडता है मानो पुरानी सभी बातें अभी हाल ही मे घटित हुई हो। उनकी स्मरण शक्ति ज्योति के समान प्रखर एव तीव्र है।

जब-जब माताजी से मिलता हू मातृत्व एव वात्सल्य प्राप्त होता है। उनके सान्निध्य में मैं सब दुख भूल जाता हू और असीम सुख का अनुभव करता हू।

परमपिता परमेश्वर से माताजी की दीर्घायु की मगल कामना करता हू।

उनके जीवन का आध्यात्मिक पहलू

सिद्धराज ढड्ढा

माता जानकीदेवी का व्यक्तित्व सचमुच विलक्षण है। उनको देखकर किसी प्रकार की असाधारणता या विशेषता का भान नही होता, बल्कि साधारण व्यक्तित्व से भी कुछ न्यून ही उनका दर्शन है। पुराने जमाने के मारवाडी-परिवार की करीब-करीब निरक्षर महिला के व्यक्तित्व के भी कई पहलू इतने सस्कारयुक्त और चमकदार हो, यह कल्पना भी होना मुश्किल है। आजादी के जमाने के प्रथम पक्ति के एक राष्ट्रीय नेता और धनवान व्यक्ति की पत्नी तथा करोडपति सतान की माता होते हुए भी जानकीदेवीजी ने समय बूझकर अपने जीवन को सादा और सयमी रखा है यह अपने आपमे एक बडी बात है। गो सेवा के लिए उनके मन मे अगाध लगन है मानो जमनालालजी के अतिम दिनो की भावना को उन्होने सजाकर रखा है। जब मिलते हैं तब एक वाक्य तो वह जरूर कहती है 'अरे भाई तुम लोग इतना काम करते हो गायो के लिए भी कुछ करो न!' भूदान आदोलन के उत्कर्ष के दिनों मे कूपदान का उन्होने उल्लेखनीय काम किया था। कई भूमिहीन लोगो को जिनको भूदान मे जमीनें मिली जमीनो पर जानकीदेवीजी के प्रयत्न मे कुए भी बने।

लेकिन उनके व्यक्तित्व की आध्यात्मिक गहराई का पता तो उस दिन लगा जिस दिन भाई कमलनयन का स्वर्गवास हुआ। वह सेवाग्राम में थीं। कमलनयनजी की मृत्यु अहमदाबाद में हुई। विनोबाजी ने खासतौर से संदेश भेजकर जानकीदेवीजी को सेवाग्राम से अपने पास पवनार बुलाया। संत विनोबा को भी सोचना पड़ा होगा कि एक वृद्ध माता को उसके पुत्र की मृत्यु का संवाद किस प्रकार सुनाया जाय। इस तरह की कोशिश भी की गई लेकिन सबसे सुनने पर जानकीदेवीजी की जो अनासक्तवृत्ति प्रकट हुई वह सचमुच आश्चर्यजनक थी। परिवार के लोगों ने भी संदेश भेजा कि वह अहमदाबाद न पहुंच सकें तो पवनार में काम करें या पूना ही पहुंच जायें लेकिन जानकीदेवीजी की प्रतिक्रिया थी कि यहां तो सब ही सूना है अब भागदौड़ करने से क्या फायदा!

असाधारण पहलू तो अनेक लोगों के व्यक्तित्व में होते हैं लेकिन प्रकाश में वे कुछ लोगों के ही आते हैं। प्रकाशमान व्यक्तित्ववालों में बड़ी ज्यादा संख्या शायद उन पहलवान लोगों की होती है। माता जानकीदेवीजी की गिनती निश्चित ही इन लोगों में हो सकती है।

चरैवेति-चरैवेति

देवेंद्रकुमार गुप्त

बापू के संपर्क में जो भी आया उसके अंतर की क्षमताओं को अपने-आप उभरने का मौका मिला। इसमें अनजाने वह सहायक होते थे। उनके स्वभाव की यह खूबी थी। माता जानकीदेवी की प्रतिभाओं को प्रशस्त करने में बापू की कीमिया काम कर रही थी। जब जमनालालजी गये उनके अधूरे काम को पूरा करने की लगन और उत्साह जानकी माता में उत्पन्न करने का कार्य बापू ने किया। अभी पिछले मास विनोबाजी विनोद से कह रहे थे : 'बापू ने १२५ बरस जीने का हिसाब बताया है जानकीदेवी को। अपने और काकाजी के दोनों के बरस पूरे करने हैं इसलिए अपने शरीर को सेवा के लिए खूब संभालकर रखना है।'

माताजी से मेरा संबंध कुछ दूर-दूर का ही आया, पर पिछले २६ सालों से मैं उनको सतत चलते देख रहा हूं। 'चरैवेति चरैवेति' का मंत्र अपने गुरु विनोबा से उन्होंने सीखा दीखता है। जब मगनवाड़ी में था, तो ग्रामोद्योगों के प्रयोगों में उनको रस लेते देखा—चक्की के सुधारों का उपयोग करते। चरखा तकली का साथ तो वह छोड़ ही नहीं सकतीं। भूदान के दिनों में कूपदान का काम हाथ में लिया और स्त्री शक्ति-जागरण का कार्य भी किया। गोसेवा का तो काम सदा था ही। दिल्ली में जब भी आती हैं और राजघाट समाधि के पास मिलती हैं तो कुछ न कुछ सुझाव उनके मन में रहते हैं। सतत विचार चलता रहता है। अभी कह रही थीं कि बापू की समाधि पर फूल चढ़ाते हैं यह ठीक नहीं। बापू फूलों का तोड़ना पसंद नहीं करते थे। यहां

तो सूत की साड़ी ही चढाने का प्रबंध करना चाहिए।

इस प्रकार उनका विवेक, सतत सेवा, चिंतनशीलता जाग्रत रहती है। वह अपने जीवन से हम सबको सन्मार्ग पर चलने को प्रवृत्त कर रही हैं।

उनकी सहज ऋजुता

दत्तात्रय दास्ताने

मैं विनोबाजी के आश्रम में सन १९२६ में आया। विनोबाजी को वर्धा लाने का सारा श्रेय स्व० सेठ जमनालालजी को है। इसलिए विनोबाजी के साथ बजाज-परिवार का स्नेह सहज ही जुड़ गया। लेकिन बजाज-परिवार के साथ दास्ताने परिवार भी विनोबाजी के माध्यम द्वारा जुड़ गया। १९२६ में मेरी माताजी स्व० बायताई दास्ताने को जमनालालजी वर्धा बुला लाये और विनोबाजी के आश्रम के पड़ोस में कार्यकर्ताओं की लड़कियों की पढ़ाई और सार-संभाल के लिए कन्याश्रम की स्थापना की। इस कन्याश्रम की कुल माता की जिम्मेदारी काकाजी ने बायताई दास्ताने को सौंप दी। इतना ही नहीं बल्कि अपनी दो लड़कियां—मदालसा और ओम (उमा)—को भी इस कन्याश्रम में अन्य लड़कियों के साथ रहने और शिक्षण पाने के लिए श्रीमती बायताई को सुपुर्द किया।

जमनालालजी को आमतौर से लोग सेठजी कहते थे लेकिन परिचित और निकटवर्तियों में वह काकाजी कहलाते थे। जमनालालजी के जीवन में सेठ का कोई भी लक्षण नहीं था। रहन-सहन और वेशभूषा नितांत सादी थी। चेहरे पर स्मित ऐसा कि सामान्य व्यक्ति भी उनका प्रेम पात्र बनने में हिचकिचाता नहीं था। इसलिए सेठजी की अपेक्षा यथार्थ में वह काकाजी थे।

काकाजी के इस सादेपन की छाप श्रीमती जानकीदेवी के रहन-सहन और वेशभूषा पर भी पाई जाती है। उनकी खादी की साड़ी महीन नहीं, बल्कि खद्दर की मोटी होती है। वर्धा में जमनालालजी की प्रतिष्ठा सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से भी ऊंची थी। फिर भी जानकीदेवीजी के व्यवहार में कहीं आडंबर या बड़प्पन की भावना नहीं दिखाई देती थी। हिंदू स्त्री के नाते अपने पति के हर प्रकार के जीवन में वह छाया की तरह साथ रही। इतना ही नहीं बल्कि मारवाड़ी समाज में उस जमाने में मानी जानेवाली सबसे कट्टरपन की निशानी पर्दा का भी उन्होंने त्याग किया। स्वयं तो पर्दे से मुक्त हुई ही मारवाड़ी स्त्रियों का पर्दा हटाने के प्रचार में भी वह अग्रसर रहीं।

सन १९२८-२९ की बात है। विनोबाजी के आश्रम में भोजन सादा रहता था। मिर्च मसाले का उपयोग तो था ही नहीं बल्कि नमक भी ऊपर से दिया जाता था। बीच-बीच में काकाजी और माताजी (जानकीदेवीजी) आश्रम में आकर सादा का सादा लेकिन सुस्वादु

भोजन करके जाते थे। आश्रम में गाय के दूध और घी का नियम था। घी पूरी मात्रा में मिलता नहीं था, इसलिए फुलके पर अलसी का तेल लगाया जाता था। माताजी मारवाड़ी परिवार की थीं। जिंदगी में कभी तेल खाया नहीं, छाक में भी घी पड़ता था। वह आश्रम के लोगों को हमेशा सुनाती, "तेल खाय जोड़ा और चना खाय घोड़ा। तेल और चना कोई आदमी का खाना है?" एक बार आश्रमवाला ने तय किया कि माताजी को तेल लगाये फुलके परोसकर देखा जाय कि वह खा सकती है या नहीं। लेकिन यह बात उनको पहले बताई न जाय। माताजी के लिए जब भी वह आश्रम में भोजन करतीं, घी लगाई रोटी परोसते थे। उस दिन माताजी तेल लगाई रोटी खा गई। खा ही नहीं गई, बल्कि पूछने लगीं कि इतना अच्छा घी कहां से लाये? गरम फुलके पर अलसी का तेल लगाने पर एक विशेष प्रकार की सुगंध रोटी से आती है। इसीलिए माताजी को लगा कि घी ही है। भोजन कर लेने के बाद उनको बताया गया कि वह अच्छा घी अलसी का तेल था।

जानकीदेवी यद्यपि पढ़ी लिखी नहीं हैं, फिर भी उनका वाक्चातुर्य और सभाओं में निर्भयता के साथ भाषण देने की पटुता सामान्य प्रचारक से बढ़कर है। विनोबाजी के भूदान-ग्रामदान आंदोलन के प्रारंभ में माताजी को कूपदान की धुन लगी। विनोबाजी के भाषण के बाद उनका भाषण होता था कूपदान के लिए। एक कुएं के लिए पांच सौ रुपये का दान, यह उनकी मांग होती थी। सभा में ही यह दान वह प्राप्त कर लेती थीं। किसीने गहने दिये तो उन्हें भी स्वीकार कर लेती थीं। इस प्रकार करीब चालीस-पचास हजार रुपये का दान उन दिनों में जानकीदेवी ने विनोबाजी के साथ घूम-घूमकर प्राप्त किया था।

जमनालालजी का मानस अंतिम दिनों में अंतर्मुख और अध्यात्म-प्रवण बना था। विनोबाजी के सान्निध्य से वह उस दिशा में तेजी से प्रगति कर पाये थे। श्रीमती जानकीदेवी का मन भी पिछले कुछ वर्षों से विनोबाजी के आध्यात्मिक विचारों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित हो चला है। इसी सत्संग का पाथेय उनका श्री कमलनयनजी की आकस्मिक मृत्यु के समय संबलरूप बना था। विनोबाजी के ब्रह्मविद्या मंदिर में अब उनको मानसिक शांति और आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती है। इस उम्र में भी उनका उत्साह और कार्य-शक्ति क्षीण नहीं हुई है।

हम भगवान से प्रार्थना करें कि वह 'जीवेत शरदः शतम्' अपने जीवन में सिद्ध करें और अखंड सत्संग का लाभ उनको मिलता रहे।

समर्पण-योगिनी

दामोदरदास मूंदड़ा

जमनालालजी पूज्य बापू के पांचवें पुत्र बने। स्वेच्छा से बने। बापू ने यथार्थ ही लिखा है, "इस स्वेच्छा से गोद आये पुत्र ने जितना कुछ किया, इसका पता बहुत कम लोगों को

होगा।'

जो आगे लिखा है वह विशेष मननीय है मैं कह सकता हूं कि इससे पहले किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।'

एक अपूर्व और अद्वितीय निवेदन है बापू का। कैसी ऊंचाई थी जमनालालजी की कि बापू उनपर ऐसे मुग्ध हो गये !

'किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।' बार-बार शब्दों की गहराई को देखकर मस्तक झुक जाता है—दोनों के चरणों में। धन्य पिता, धन्य पुत्र !

किंतु पुत्र के इस समर्पण योग में जानकीदेवीजी का जो गुप्त दान रहा है। बापू के ही शब्दों में कहना हो तो 'उसका पता भी बहुत कम लोगों को होगा।' एक पत्र में बापू ने जानकीदेवीजी तथा उनकी कतिपय सहेलियों से जोगिन बनने की अपेक्षा प्रकट की थी। लिखा था, 'जोगिन बनकर बाहर निकलना होगा। शोभित होना होगा। शोभित करना होगा।'

बापूजी की अपेक्षा ठीक ही निकली। माताजी जमनालालजी के साथ सती होना चाहती थीं। बापू ने समझाया कि वह क्रिया आसान है। नित्य जलते रहना कठिन है। माताजी सती होने के बजाय नित्य सतीत्व का—चिता पर नित्य चढ़े रहने का—जोगिनी की तरह नित्य जलते रहने का—अनुभव कर रही हैं जिसके कारण निश्चय ही जमनालालजी और बापू दोनों को समाधान हुए बिना नहीं रहेगा।

माताजी का नाम तो मैंने विद्यार्थी दशा में ही सुन रखा था। कराची कांग्रेस के समय कराची शहर में एक महती सार्वजनिक सभा में उनका भाषण भी रखा गया था। बड़ी-बड़ी स्त्रियां कराची कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि बनकर आई थीं। किंतु कराची नगर में भाषण का आयोजन माताजी के लिए ही हुआ था। यह आयोजन देखकर उनके वैशिष्ट्यपूर्ण व्यक्तित्व ने मुझे तभी से आकर्षित कर लिया था। किंतु निकट से देखने का अवसर तो आगे मिला।

उन दिनों बापू के उपवासों के कारण जमनालालजी पूना में ही थे। सेठ रामनारायणजी रुइया के आलीशान बंगले पर उनका निवास था। माताजी भी उनके साथ थीं। मुझे और मेरी पत्नी को मिलने के लिए वहीं बुलाया गया था। हम लोगों को जमनालालजी का वह कमरा दिखाया गया जहां वह बैठते-उठते थे, लोगों से मिलते थे। सामने के बरामदे में हमने देखा कि बिल्कुल फर्श पर, बिना कुछ बिछाये, हाथ का तकिया बनाये अत्यंत सादे वस्त्र पहिने, जो बहुत साफ भी नहीं थे कोई महिला लेटी है। सारे घर में बिजली का विशेष प्रबंध था। पंखे की व्यवस्था थी। किंतु मुक्त पवन का स्वेच्छा से स्पर्श होने देने का आनंद वह महिला लूट रही थी। हमने तो यही समझा कि कमरों में विश्राम लेने का अधिकार न रखनेवाले व्यक्तियों में से ही कोई हो सकती है। कामधंधों से फारिग होकर मालिक लोग विश्राम कर लें तबतक थोड़ा आराम अपना भी पा लें यह सोचकर चंद मिनिट चुपचाप जमीन से पीठ छुआने का प्रयत्न करने वाले व्यक्तियों में से ही कोई हो। किंतु हमारी विदाई की वेला में 'जानकीजी' को जब सेठजी ने बुलाया और हम लोगों का परिचय कराया तो हमने प्रणाम तो किया ही, किंतु मैंने अपने मन में क्या-कैसा अनुभव किया होगा वाचक उसकी कल्पना कर सकते हैं।

कुछ लोगों के व्यवहार के नाप दोहरे होते हैं—घर में एक, घर के बाहर एक। गार्हस्थिक सभा के लिए एक, शादी-ब्याह के लिए एक। सभा के सम्मुख एक, दुनिया के सामने एक। किंतु माताजी में जो सादगी उस दिन दिखाई दी, वही आजन्म रह रही है। उनके जीवन में दोहरे मान कभी भी नहीं देखे। यह इसलिए संभव हुआ कि जमनालालजी या बापू के विचारों ने जैसा पागल किया, वही पागलपन माताजी पर भी सवार था। पति से त्याग और बलिदान में वह किंचित् कभी पीछे नहीं रहना चाहती थी। नहीं रहीं। उनकी सादगी का जन्म खादी के विचार से हुआ है और इसीलिए वह स्थायी रह सकी है। खादी के विचार के पीछे जो पागलपन है, उसकी छू भी उन्हें पूरी-पूरी लग चुकी है। नागपुर में बापू ने जब विदेशी वस्त्रों की होली की बात कही और गहनों के बारे में कहा, तो जमनालालजी ने माताजी को लिखा, संवत भर किया। तुम गहना छोड़ दो तो मुझे अच्छा लगे।

हिंदू स्त्री के लिए पति का संकेत भी परम आदेश जैसा होता है और गहनों में कपड़ों का समावेश हो ही गया है। ऐसा ही माताजी ने माना। हीरे और माणियों के गहने सब उतारकर रख दिए। माशा भर भी सोना नहीं रखा। आजन्म छुआ नहीं। माताजी कहती हैं, मुझे इच्छा भी कभी नहीं हुई। सुवर्ण मृग की इच्छा करनेवाली जानकीजी भी माताजी पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहतीं—उनकी ऐसी वासना मुक्ति को देखकर! गहनों में पाव की कड़ियों का किस्सा वह बहुत मजेदार ढंग से सुनाती हैं। पाव की कड़ियां तो मरने पर ही निकलती हैं, सुनार ही निकालता है। मुझे उन कड़ियों से आसक्ति तो जरा भी नहीं थी, पर लोगों का डर था। माताजी और डर? डर काहे का था उन्हें? डर यही कि लोग क्या कहेंगे, क्योंकि पाव की कड़ियां—जैसे उन्होंने ऊपर कहा—या तो मरने पर सुनार निकालता है या एक विशिष्ट अवस्था में हर स्त्री को कुंकुम और गहनों के साथ निकाल देनी पड़ती हैं। डर इसीका था, किंतु माताजी कहती हैं,

मेरे लिए तो जमनालालजी की इच्छा ही प्रमाण थी। मैंने कड़ियां उतारकर रख दीं। बस गांव में एक ही चर्चा, बजाजों की बहू ने तो गहने उतारकर रख दिये। विधवा बन गई, वगैरा वगैरा।

खादी का, जिसकी कोख से प्रायः सादगी का जन्म हो ही जाता है, माताजी कहती हैं, मुझपर तो पागलपन पूरा ही सवार था, क्योंकि मेरे लिए तो खादी के सभी वस्त्र विदेशी थे। यह ख्याल ही नहीं किया कि वे स्वदेशी होंगे और उनकी होली की बात बापू ने नहीं कही थी। *बड़े बड़े रेशमी वस्त्र, हजारों रुपयों की कीमती चीजें, छत्र, चामर, सब सबकुछ हवन कर दिया।* एक बड़ा छत्र था, उसकी होली कैसे करें, सोचकर उसे मगनवाड़ी के कुएं में डलवा दिया। विवाह के समय के भारी भारी जरी के रेशमी कपड़े सब अग्नि में स्वाहा कर दिये। आज लगता है कि वे कपड़े, जो ज्यादातर स्वदेशी थे (गोटा तो चांदी-सोने के तारों का होता है), रहते तो शायद विनोबाजी किसी संग्रहालय में रखवा देते। पर मुझपर तो एक ही धुन सवार थी—होली।

धुन केवल खादी की ही सवार नहीं है।

जमनालालजी ने जो-जो काम हाथ में लिये, सबकी समान धुन माताजी पर सवार होती गई, आज भी सवार है।

गो सेवा का व्रत तो एक उनका बहुत पुराना है। कितना ही शारीरिक कष्ट क्या न सहना पडे, यदि गाय का घी दूध नही मिला, तो माताजी ने सेवन नहीं किया चाहे कितने ही दिन बिना घी-दूध के क्या न रहना पडे और उसके कारण कितनी ही हैरानी क्या न उठानी पडे। उठानी पडी ही है—और गंभीर रूप में उठानी पडी है। गो सेवा उनके लिए केवल गोमाता की हद तक सीमित नही, पशु-सेवा के प्रतीक के रूप में ही उन्होने उसे ममता और स्वीकारा है। इसलिए जब गाडी में या हल में जुते बैल को कीलवाली लकडी से टोंचा जाता है तो माताजी को बहुत दुःख होता है। प्राणियों का यह कष्ट बंद हो इसका वह सदा से प्रयत्न करती रही हैं। वह बंद नही हो पाया है इसका उन्हे बहुत दुःख भी है। माताजी सिर्फ सेवा का यह आनंद अपने लिए सीमित नहीं रखती। जो-जो गो-सेवक हो माताजी के स्नेह का भाजन बन जाता है।

जामनगर के बारदानवालो का किस्सा वह उस दिन कितने प्रेम से सुना रही थी मानो किसी भक्त का कीर्तन स्वयं भगवान करते हो। "उनकी सेवा तो अदभुत देखी। उन्होंने अपनी चौदहसौ गायोंवाली गो शाला मुझे दिखाई। क्या दोष निकालूं उस सेवा में? मैंने तो उन्हे जीवदया का महान पुजारी ही पाया। जो भी प्राणी उस गोशाला में आवे चाहे गाय हो या भैंस कबूतर हो या तीतर जो कोई भी दे जाय, जिस किसी स्थिति में दे जाय, सबको प्रेम से रख लिया जाता है सबकी प्रेम से सेवा की जाती है। एक बैल के सींग में कैंसर हो गया। डाक्टर लोग उस बैल की सेवा में जुटे हुए थे और वहा तो मैंने डाक्टरो को भी बिना कुछ लिए पशु सेवा में जुटे पाया। यह उन बारदानवालो के कारण संभव हो सका था। उन्हीकी भक्ति की शक्ति का प्रभाव था।

और फिर श्री बारदानवाला के साथ की बातचीत का जिक्र करते हुए कहा

'माताजी, बापूजी ने अपने आश्रम में एक बछडे को वेदना मुक्ति की भावना से ही क्यो न हो, शांत करा दिया। कलकत्ता के लोग नाराज है। हम इस पाप को अपने मर लेते हैं माताजी। पर अपने कलकत्ता के मित्रो के सहयोग से इतना तो करा दीजिए कि कलकत्ता की गाय बच सके।

कलकत्ता में मारवाडी समाज बहुत बडी सख्या में रहता है। श्री जमनालालजी को माननेवाले लोग हैं। श्री बारदानवाला को लगा कि माताजी के प्रयत्नो से वहा की यह घोर हिंसा रुकवा सकने में कुछ सफलता शायद मिल सकती है।

माताजी एसे बाहर किसीके यहा खाना पीना अक्सर कम ही करती हैं, परंतु इस गोभक्त के आग्रह को नही टाल सकी। 'मैंने क्या देखा कि उस घर में प्याज लहसुन का नाम नही। चाय-कॉफी कोई पीता नही और घर में भी पांच गायो की उत्तम सेवा होती है। घर में चारो ओर कृष्ण की मूर्तियां ही दिखाई देती हैं। एक मूर्ति तो डेढ हाथ ऊंची पूरी थी। अति सुन्दर मनोहर रूप। मुख पर अद्भुत हास्य। लगता था, बस मूर्ति अब पटपट बोलेगी ही। अपनी बात को जारी रखते हुए वह बोली हम लोग मेज पर ही भोजन कर रहे थे। जो भी आवे, वही उसी मेज पर भोजन के लिए बैठ जाओ। सामने ही मेहमान घर है। पचासो पलंग लगे हैं। गरीब आओ। धनी आओ। भले कोई वहा रह सकते हैं। यहां घर में, इसी मेज पर सब भोजन

किसी अनात किंतु सात्विक समाधान की रेखा उनके मुखपर इस समय बड़े अदभुत प्रकाश के साथ आलोकित हो रही थी। इसके पहले कि कोई पूछ बठे—'माताजी आपने फिर विनोवा को क्या जवाब दिया', उन्होंने स्वय और तत्काल कहा, "और मैंने भी कह दिया कि हा, ले सकती हू।

और फिर कुछ क्षणो के लिए तो वातावरण म गभीर शांति छा गई।

मुझे सहसा स्मरण हुआ, उस ऐतिहासिक पत्र का, जो बापू ने अपने लाडले पाचवें पुत्र के चले जाने के बाद स्व० भाई कमलनयन के नाम लिखा था। उस पत्र म बापू ने जमनालालजी के उत्तर जीवन के पारमार्थिक कामो के भविष्य के बारे म चिंता प्रकट करते हुए लिखा था 'जमनालालजी को मैं खो बठा हू, ऐसा जरा भी आभास मैं अपने मन म नही होने देना चाहता। उसकी कुजी तुम्हारे हाथ म है राधाकृष्ण के हाथ म है और जानकीदेवी के हाथ म है। किंतु जानकीदेवी के जख्मो को वह जानते थे। जानते थे कि बहादुर है, फिर भी जख्म तो अपना असर लाता ही है। दुनिया माताजी की विरह वेदना से परिचित नहा हो, बापू से किंतु कोई चीज छिपी नही थी। इसलिए जहा वह कमलनयनजी, राधाकृष्णजी से आशा करना योग्य समझते थे और माताजी की क्षमता से भी परिचित थे वहा अब उन्हें माताजी के बारे म कुछ चिंता-सी थी और इसलिए उन्होंने उस समय उस पत्र म लिखा, जानकीदेवी मे जिस विकास की मैंने आशा रखी थी वह तो जमनालाल के जाने के बाद सूख ही गई।

यद्यपि जमनालालजी के प्रति माताजी के समपण याग की दृष्टि से बापू का यह एक बडा गौरव-स्वरूप निवेदन भी माना जा सकता था फिर भी एक प्रकार की निराशा की भावना तो बापू के उन शब्दो म स्पष्ट दिखाई देती ही है।

किंतु आज बापू होते और विनोबाजी के साथ का उपरोक्त सवाद वह सुन पाते तो नाचते और धन्यता का अनुभव करते इसलिए भी कि बापू के जितने भी रचनात्मक काम हैं गोसेवा को वह सबसे कठिन मानते थे। बेलगाव के भाषण म उन्होंने स्वीकार किया था कि स्वराज्य दिलाना मुझे आसान लगता है किंतु गाय को बचाना बहुत ही कठिन प्रतीत होता है।

उनके पाचवे पुत्र ने उनका यह अत्यत कठिन काय ही अपने आखिरी काम के रूप म स्वीकारा था और माताजी आज इस अत्यत कठिन काम के लिए बडे आत्म विश्वास के साथ—बापू की आत्मा को भी समाधान प्रतीत हो ऐसे आत्म विश्वास के साथ—कटिबद्ध हैं।

उदारचेता, करुणामयी तथा कर्मनिष्ठ

प्रभुदास गांधी

भारत की भूमि पर बापू के सत्याग्रह आश्रम का अरुणोदय साबरमती में हुआ तो इसका मध्याह्न वर्धा में। एकादशव्रतों को सफलतापूर्वक अपने जीवन में सुप्रकाशित करके आचार्य विनोबा वर्धा सत्याग्रह आश्रम का संचालन करने गये। प्रतिवर्ष एक महीना गांधीजी भी वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम को और भी ओजस्वी और प्रकाशमय बनाने का रहने आया करते थे। जिस प्रकार आश्रम के उषाकाल में आश्रम के यश में अभिवृद्धि करनेवाली श्रीमती अनसूयाबहन आश्रम परिवार की स्वजन बनी उसी प्रकार आश्रम की मध्याह्न वेला में सत्याग्रह आश्रम के यश को और भी उज्ज्वल बनानेवाली श्रीमती जानकीबहन बजाज आश्रम परिवार की निरंतर और निकटतम सदस्या बन गई।

अनसूयाबहन पढ़ी लिखी विदुषी महिला थी। फिर युवावस्था में ही अपने गृहस्थी जीवन को वानप्रस्थी जीवन की ओर उन्होंने मोड़ लिया था। सत्याग्रह आश्रम में गांधीजी ने आध्यात्मिक साधना का जो आदर्श स्थापित किया था उसे आत्मसात करने के लिए यथा शक्ति जीवन भर मनन चिंतन और अनुशीलन करती रही।

जानकीबहन का व्यक्तित्व उनसे अलग ही देखने में आया। मुझे जानकीबहन को देखने का पहला अवसर मिला वह थोड़ा सा मनोरंजक और संकोच में डालनेवाला था। मैं उसे भूल नहीं पाया हूं।

वर्धा के सत्याग्रह-आश्रम का पहला वर्ष भी पूरा नहीं हो पाया था तभी की बात है। एक दिन शाम हो चुकी थी। धूप के रहते ही नियमानुसार आश्रमवासियों का समुदाय भोजन से निपट चुका था, चौका बर्तन आदि के बाद विधिवत सायंकालीन प्रार्थना और विनोबा का प्रवचन भी समाप्त हो गया था। दिनभर में हम लोगों को यही आध-पौन घंटा घूमने फिरने सुस्ताने को मिलता था वरना रात दिन समय की लगाम खिंची हुई रहती थी।

विराम के इस समय का लाभ लेकर मैं रसोई की कोठरी में जा पहुंचा और लालटेन के सहारे प्रातःकाल की रसोई के लिए पूर्व-तैयारी में लग गया। उस कोठरी में मैं अकेला ही था। पता नहीं चला कब तीन चार महिलाएं इकट्ठी उस कोठरी में आ गई। रसोई खड़े खड़े करने की वहां व्यवस्था थी। ईंट के बने-बनाये मेज-जैसे चबूतरे के जिस ओर मैं था उसके सामने आकर वे सब चूल्हे पर झांकने लगी।

सबने सुंदर साड़ियों पर महीन चादरें ओढ़ रखी थीं इसलिए समझ में आ गया कि ये सब मारवाड़ी बहनें हैं। सबसे आगेवाली बहन ने अपना घूंघट काफी ऊंचा उठा रखा था। उसने प्रश्न किया 'यह क्या कर रहे हो ?'

मैंने सरलता से उत्तर दिया सवेरे की रसोई की तैयारी कर रहा हूं।'

अभी से ? सवेरा होने में तो सारी रात बाकी है !

'मदर सात बजे से पहले रसोई पूरी कर लेनी होती है। सात से बुनाई का काम शुरू हो जाता है।'

'भोजन कब करते हो ?

दोपहर में बुनाई कताई में थोड़ी देर छुट्टी मिलती है तभी सब एक साथ भोजन करते हैं। उस समय रसोई बनाने के लिए समय नहीं रहता।

"रसोई ठंडी हो जाती होगी। रोटी भी सवेरे ही बना लेते हो ? इसी चूल्हे पर ?

रोटी बनाने में सहायता करनेवाले आवें इससे पहले और सब रसोई बन जानी चाहिए। इतना काम कर लेने की जिम्मेदारी मुझपर है। मुझसे जल्दी नहीं होती इसलिए सात जाने से पहले ही सारी तयारी कर लेता हूं।

'चूल्हे पर इन बरतनों में क्या रखा है ?"

बड़े में चावल पकाने का पानी छोटे में दाल पकाने का।'

'और ये लकड़िया भी अभी से चूल्हे में रख दी ?

प्रातः चार बजे की प्रार्थना फिर स्नान यह सब करने में देर हो जाती है। इसलिए लकड़िया ठीक से लगाने का काम अभी कर लेना पड़ता है।

मेरे इस उत्तर से वे सभी महिलाए मुस्कराने लगी। आपस में बोली रसोई का पानी तो सवेरे ताजा होना चाहिए।'

फिर जिन्होंने मुझसे प्रश्न किये थे उन्होंने मेरे हाथ के कपड़े के टुकड़े और लालटेन की ओर सकेत करके कहा ता इसे मिट्टी के तेल में भिगाकर आग भी अभी सुलगा देना। सवेरे का समय बच जायगा।'

इतना कहकर वह महिला वृन्द जिस खामोशी के साथ रसोईघर में आ धमका था उसी खामोशी और तत्परता से बाहर निकल गया। उनकी पीठ पर लहराती चादरों को देखते हुए मैं मन में सोचता रहा कि इन्होंने मेरा अच्छा मजाक बनाया। इन बरतनों में पानी छानकर भरा है। रातभर ढका रहेगा। इसमें बासीपन क्या आ जायगा ?

उन महिलाओं के जाने के बाद मुझे आश्रम के एक साथी ने बताया कि प्रश्न करनेवाली स्वयं जानकीदेवी बजाज ही थी। बड़े घर की है, इसलिए बाजार से होकर दिन में निकलना टालकर संध्या को वह आश्रम देखने आई। वहा वह घूघट नहीं करती। बड़े तेज स्वभाव की है।

सत्याग्रह आश्रम के काम से कभी-कभी शहर में जाने की मेरी बारी भी आ जाती थी। तब बाजार के एक सिरे पर बच्छराज कपनी का एक बड़ा मकान और उससे सटा लक्ष्मीनारायण मंदिर भी अंदर प्रवेश किये बिना देख लेता था। एक तो हम आश्रमवासी छुआछूत नहीं मानते थे दूसरे भगवान की मूर्ति के सामने चढाने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं होता था। इसलिए सेठों के भवन और भद्र लोगों के देवमंदिर की सीढ़ियां पर चढ़ने का मन में साहस नहीं होता था। बच्छराज कपनी के विशाल चौक में चक्कर लगाकर अंदर दुकान में बहीखाते लिखनेवालों को और आगन में खेलनेवाले बालक को देखकर अनुमान होता था कि सेठ जमनालाल बजाज कितने बड़े होंगे। उनको भी पास से देखने का मुझे विशेष अवसर नहीं मिला था। आगन में खेलनेवाले आठ-दस वर्ष के बालक को मैं सेठजी का लड़का समझता

था। गर्ई महीना बाद पता चला कि यह बमन नहीं बमता है और मक्खन नहीं न आ बा घटी गुनी है। गाडी पर बान्द बाइरर ही पर म बाहर निकाला जाता है। अगी गुनी ता घडी हाता तब गन्द बा नम्भूता म ल्गा मन आर वच बा बात था।

धाइ,ो म ी वर्धा मे ाथर आ म म रहा व बार यहा न गो रघु ा मग गावरमती मे ाथर आ म म आना हुआ। जानकीवहन का मुबारा स्वा वा अवगर मिला तर तर यह नई ही जानकीवहन बन चुकी थी। वर्धा म एक बार जुकाम लगा था। उनक माथ-साथ यश व बान का यह प्रगग था। गावरमती आ म म स्वावलम्बन वाला और व रहा व मराा ग जमनालालजी व लिए मलन का एक लिया गया था तथा स्वा ा बढ़ गया था। उनमे उनक बाल-बच्चा व माथ रहन व लिए जानकीवहन आई थी। अब न मन ख्दीर नमदी शी माडी और रा यह मनमन की वागार वाल्द नहीं पहनती थी। गहना का शाक भी बिलकुल जगा था। गाना की माडी गाना पर। इस तरह हमार आ म व अन्य भाइयों व गगान ही रह बन गई था।

एक बार मवार जो बज व नगर स कि किमी काम म आ म की गोशाला म गया। मैंगा गाय बाहर बन्द पनी ग थी और उन मब्द चौक रगड व पानी पर पर हम गोबर का बनान और झाडू म जगह स्वच्छ बनाने व काम म मशगूल बहनें लगी हुई थी। उनम एक जानकीवहन थी। मैं उनर पास जाकर खडा रहा। यह लित ही लगता था उस काम म तन्मय था। मन रहा रहा। जानकीवहन न मुझरा देखा ता बाली बुढह न (गाधीजी) कहा कि गाय व गाबर म गावर सावधानी स डालना, नीरह ना गाय बि मक्खियां का उपद्रव न हो। बता बहा मन मुझ क्या-क्या सिखायगा। आजकल मज मवर यह काम मर जिम्म कर दिया है। क्या हा गई न यह गोशाला साफ ? मैंन पहल उन्हान मार गोशाला मन की मधुर मन हास्य म भर दिया। मुझ जस आश्रम व जवान लडका व करन का कठिन श्रम भी उत्साह और प्रसन्नता स उनी बड घर की बहनजी भी कर रही हैं यह देखकर मर चित्त पर उनकी सरलता और मानवीयता का गहरा प्रभाव पडा। उनक सामन पडन म जो संकोच होता था वह मिट गया।

रघुवश म कविवर कालिदास न राजा दिलीप का वृत्तान्त दिया है कि राजमहल छोडकर वह सम्राट गुरु वशिष्ठ क आश्रम म जाकर किस तरह पर्णकुटी म रह और ग्वाल की तरह राजा रानी न किस प्रकार आश्रम की नन्दिनी गाय की सेवा की। जब कभी उस वर्णन को पढता हू मुझ साबरमती आश्रम की जमनाकुटीर म बसनवाल बजाज-परिवार का स्मरण हो आता है। हमार युग म सास्कृतिक विकास का सठनी का आश्रमवासी जीवन बिताना का अभ्यास करना यह कम विशिष्ट घटना नहा थी।

दिवगत कमलनयन बजाज बड विनादी थ। एक दिन उन्होंने बताया कि जब वर्धा आश्रम म मुझे पिताजी न भेजा तो वहापर सवेर क नाश्त म अपने सामने दूध देखकर मैं चक्कर म पड गया। मैंने कहा यह दूध है ? दूध तो पीला होता है। यह सफेद दूध यहीं पिया जाता है ? बडी मुश्किल स मैं समझ पाया कि मुझ घरपर तो केसर डाला हुआ मीठा दूध ही मिलता था। यहा आश्रम म सादा दूध ही मिलेगा। इस घटना स अनुमान किया जा सकता है कि जानकीवहन न अपने बालका सहित अपने जीवन म कितना भारी परिवर्तन कर दिया।

बाद में तो वह दिन आया जब आश्रम में मेरी माता के पास मंगलभावहन पूर्ववत आने-जाने लगीं। जमनालालजी का परिवार आश्रमवासियों का परिवार ही बन गया यहां तक कि मेरे विवाह-संस्कार की विधि वर्धा में पूज्य गांधीजी और कस्तूरबा ने अपनी उपस्थिति में आशीर्वाद देकर करवाई। उस समय सारी वधानिक क्रियाएं जानकीबहन ने स्वयं परिश्रम से संचालित कीं। गांधीजी ने मेरे माता पिता को लिख दिया था कि गुजरात से इतनी दूर आने का रेलभाड़ा खर्चा करना उचित नहीं है। वहीं से आशीर्वाद दे देना। मैं और बा दोनों यहां पर हैं ही।

ऐसे अवसर पर जानकीबहन ने बड़ी घनिष्टता और आत्मीयता से मेरी माता का स्थान स्वयं स्फूर्ति से ले लिया। लग्न मंडप में जाने से पहले, नई संशोधित विधि के अनुसार कूप-सेवा वृक्ष-सेवा, गोसेवा, सफाई और गीता-पाठ के पंच यज्ञ का संचालन जानकीबहन से करवाया। कुए पर बीच की सफाई में वह हमारे साथ रहीं और पुरोहित द्वारा संस्कार विधि समाप्त होने पर नववधू को नये घर में बड़े अपनेपन से प्रवेश करवाया। नववधू ने संस्कार विधि के समय भी किसी प्रकार का आभूषण नहीं पहना था। उसने अपने विद्यार्थी-जीवन से ही संकल्पपूर्वक आभूषण परित्याग कर रखा था। जानकीबहन नववधू को लेकर बापूजी के पास पहुंच गई और बापूजी से उन्होंने बाकायदा सम्मति प्राप्त की कि कम-से-कम हाथ में हाथकते सूत की बनी चूड़ी तो वधू को पहननी ही चाहिए। बापूजी ने अपनी सम्मति देने के साथ यह भी कहा कि जब गरीबी का जीवन जीना है तब सादगी घटे नहीं, यह ध्यान रखना।

धनी व्यक्ति अपने धन का स्वामी नहीं है, ट्रस्टी है—यह पाठ गांधीजी से सीखने और तदनुसार अपना जीवन बनाने में जानकीबहन ने जो यश पाया है वह साधारण कोटि का नहीं, विरला है।

जीवन के उत्तरार्ध में अपनी संपत्ति गोसेवा के कार्य के लिए समर्पित कर देने का गांधीजी का सुझाव भी जानकीबहन ने समझ-बूझकर अपना लिया और संपत्ति के साथ-साथ अपनी सेवा भी गोसेवा-समिति को दी।

प्रायः दस वर्ष का प्रसंग है। आचार्य विनोबा की भूदान-पदयात्रा राजस्थान में चल रही थी। वहां के समाज में जमनालालजी और जानकीबहन का स्थान मूर्धन्य रहा है। एक बार आचार्य कृपालानीजी के एक व्याख्यान में कही हुई बात याद आ रही है। उन्होंने कहा था प्रत्येक प्रदेश की संस्कृति और समाज में अपनी अपनी मौलिकता रहती है। कवि रवीन्द्रनाथ ने बंगाल में जन्म लिया और जमनालाल बजाज ने राजस्थान में। राजस्थान में गुरुदेव जैसा कवि सम्राट पैदा नहीं हो सकता और बंगाल में जमनालाल जैसा आदर्श व्यापारी पैदा नहीं हो सकता। भौगोलिक कलेवर एक ठोस बात है। दादा कृपालानी की इसी बात को ध्यान में रखकर कह सकते हैं कि जानकीदेवी जैसी पराक्रमशील व्यवहार चतुर और प्रबल अभिव्यक्ति का प्रकाश राजस्थान की भूमि द्वारा प्राप्त होता है। वहां के समाज का सहज नेतृत्व उनके हाथ में है।

ऐसी प्रतिष्ठित एसी श्रीमान जानकीबहन ग्रामीण-जीवन में आते प्रौढ़ बनकर पदयात्रा कर रही थीं। यात्रियों के साथ ही सोना नहाना, खाना चल रहा था। छोटा-सा बिस्तर और कातने की तकली यह उनका सामान था। व्रतधारी आश्रमवासी के अपरिग्रहीपन को उन्होंने

संकल्प-पूर्वक अपनाया था और चिंतन उनका करुणा से भरा हुआ था।

विनोबा ग्रामदान, कूपदान, कृषि-साधन-दान, संपत्तिदान, बुद्धिदान आदि नये-नये दान का जाप जपते आगे ही आगे चल रहे थे और जानकीबहन अपने परिचय और प्रभाव से जगह-जगह कूपदान, संपत्तिदान आदि दिलवाती जाती थीं। यह उनकी गहरी निष्ठा की सशक्ति थी। परंतु उनकी अपनी स्वतंत्र प्रतिभा भी काम कर रही थी। एक पनघट पर स्नानादि से निवृत्त होकर वह कुएं से लौट रही थीं और मैं उस ओर जा रहा था। मैंने प्रणाम किया। अपनी प्रसन्न मुद्रा में वह बोलीं, 'क्या है यह स्नान-पूजा है। हमारे लोग पूजा में भी जरा-सा बुद्धि से काम नहीं लेते। बस रिवाज को पकड़े रहते हैं। किस जमाने में हम लोग हैं, यह भी नहीं सोचते। मन्दिरों में जो दीप जलाया जाता है, वह घी से क्यों जलाया जाय? तेल क्या कम शुद्ध है? और घी जला-जलाकर मन्दिर की दीवार काली तक कर देते हैं। पूजा करो, मंत्र बोलो, आरती करो, सब ठीक है, परंतु जब गांव-गांव में गरीबी है, बच्चों को अन्न भी नहीं मिल पाता, तब घी का ऐसा गलत उपयोग क्यों किया जाय? मैं जहां जाती हूं, बड़े मठों में भी कहती हूं कि बंद करो यह ठाकुरजी के सामने घी का दिया जलाना। तेल का जलाओ दिया और ढोंग क्या करते हो तुम? पूजा के लिए जो घी पुजारी को देते हो, वह क्या सच्चा घी होता है? घी के नाम से वनस्पति घी ही तो जलाते हो। वह तेल नहीं है तो क्या है? मैंने तो अपनी पूजा में घी का दिया जलाना छोड़ ही दिया है, तेल का ही जलाती हूं।' ऐसा कहकर वह अपने काम पर चली गईं।

खादी की साड़ीवाली यह महिला किसी धनी परिवार की है, ऐसा आभास भी उनको देखने से नहीं होता था। किसी प्रकार की विद्वत्ता नहीं दीख रही थी, परंतु उनकी वाणी में तेज भरा हुआ था, कारुण्य मूर्तिमंत हो रहा था। समाज-हित का कितना गहन चिंतन स्वतंत्र रूप से वह कर रही हैं, यह प्रकट हो रहा था।

संपूर्ण मानव-समाज को उत्तरोत्तर ऊंची मानवीयता प्राप्त हो, इस दिशा में गांधीजी ने अपना सारा पुरुषार्थ केंद्रित कर रखा था। इसी ध्येय को लेकर उन्होंने जगह-जगह आश्रम चलाए और चलवाए। सामूहिक जीवन के विकास के इस गंगा-प्रवाह में बहुत सारे नर-नारी अवगाहन करने आये। हजारों ऐसे रहे, जिन्होंने आश्रमवासी न बनते हुए भी गांधीजी के सत्याग्रह आश्रम के साधनामय जीवन को अपनाया। मानव जाति की इस दिशा में जो कुछ प्रगति हो पाई है, इसका लेखा-जोखा जब कभी कोई प्रतिभासम्पन्न इतिहासवेत्ता अंकित करेगा, तब पहली पंक्ति में आनेवाले नामों में जिस प्रकार अहमदाबाद की दयापूर्ण, सेवा-परायण, यशस्वी अनसूयाबहन साराभाई का नाम रहेगा, उसी प्रकार उदारचेता, करुणामयी, शांतिदूत जानकीबहन बजाज का भी नाम रहेगा।

समर्पित जीवन

जेठालाल जोषी

पूज्य बापू तथा पूज्य विनोबाजी की प्रवत्तिया स परिचय रखनेवाला हर समाजसेवी व्यक्ति श्रीमती जानकीदेवी को अच्छी तरह जानता है। अब तो श्रीमती जानकीदेवी को माताजी के रूप म सभी सर्वोदयी कायकर्ता जानते ही नही सभी माताजी शब्द से उनका सबोधन करत हैं और उनका परिचय देत है।

श्रीमती जानकीदेवी न बापू तथा उनके बाद विनोबाजी की सर्वोदयी प्रवत्तियो को अपना समग्र जीवन अर्पित कर दिया है। पहले जसे कस्तूरबा 'बा शब्द स सबोधित की जाती थी और पहचानी जाती थी इसी तरह आज श्रीमती जानकीदेवी 'माताजी के पवित्र शब्द से पहचानी जाती है।

श्रीमती जानकीदेवी श्री जमनालालजी बजाज की अर्धांगिनी हैं। सठजी की सभी राष्ट्रीय सामाजिक सास्कृतिक शक्षणिक प्रवत्तियो म श्रीमती जानकीदेवी का पूरा समथन तथा सक्रिय साथ रहा है।

प्रारभ के दिनो म जमनालालजी बापू के साथ सत्याग्रहाश्रम, साबरमती म सपरिवार रहत थे। बापू सठ श्री जमनालालजी को अपना पाचवा पुत्र मानते थे। बापू का वर्धा सेवाग्राम जाने का मूल कारण भी तो जमनालालजी का आग्रह ही था।

मैं सन १९२५ के दिसम्बर की चौथी तारीख को अहमदाबाद आया। उन दिनो बापू साबरमती सत्याग्रहाश्रम म निवास करते थे। उन दिनो हम युवको के लिए साबरमती सत्याग्रहाश्रम मे बापू की प्राथना म जान का क्रम रहा करता था और आश्रम म जमनालालजी से भेट हो जाया करती थी।

सन १९२६ की बात है। मैं वनिता विश्राम महिला विद्यालय की तेरह बालाओ को लेकर आश्रम म बापू क दशनाथ गया था। बापू हृदयकुज म निवास करते थ। कस्तूरबा भी उसी मकान म रहती थी। उन दिनो जमनालालजी नदिनी' भवन म रहत थे। बाद म वह सपरिवार जमना-कुटीर म रहन चल गय थे। इस समय हम सबने बापू के दशन किये, कस्तूरबा न इन बालाओ को खादी पहनन की सीख दी। सठजी ने भी बापू की बातो को समझ कर जीवन म अपनान की सलाह दी। कु० मीराबहन से भी मिले। यही श्रीमती जानकीदेवी स भी शायद मिले थे।

बापू बाद मे वर्धा चले गय। वर्धा हर राष्ट्रीय प्रवत्ति का सगम-स्थान बन गया। मुझे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सदस्य की हैसियत स कई बार वहा जाना पडता है। प्रारभ के दिनो म अर्थात १९३७ स १९४६ के दिनो म वर्धा समिति क सदस्यो के लिए अतिथिगह जमनालालजी की कोठी रहता था। यहा आतिथ्य का उत्तरदायित्व श्रीमती जानकीदेवी ही सभालती थी इसलिए उनस भेंट हो जाती थी। वह आग्रहपूवक हर अतिथि की सुविधा का ध्यान रखत हुए आवश्यकतानुसार सूचनाए सहयोगी कायकर्ताओ को देती थी।

एक प्रसंग याद आता है। समिति में कुछ सदस्य आ गये थे। सम्मिलित समिति में सम्स्या के ठहरने का प्रबंध समिति में ही करना चाहा था। श्रद्धेय पुरुषोत्तमदासजी टंडन समिति की बैठकों में उपस्थित रहते थे। श्रीमती जानकीदेवीजी को यह पता चला कि इस बार सम्स्या के ठहरने का प्रबंध किसी और स्थान पर किया जानवाला है तो उन्होंने तुरंत संदेशा भेजा कि समिति के सभी मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था यथावत उनके निवास स्थान पर ही होगी। यह सौजन्यपूर्ण आत्मीयताभरा व्यवहार हमारे लिए प्रेरणादायी था।

समिति के अपने अतिथिगृह का निर्माण हो जाने के बाद समिति के अतिथिगृह में ठहरा करते थे।

श्रीमती जानकीदेवी अक्सर विनोबाजी के पवनार आश्रम में रहा करती थीं। इन्होंने अपना जीवन विनोबाजी के सर्वोदयी काम के लिए अर्पण कर दिया है। मैं तथा भाई श्री कान्तिलाल वर्धा जाते तब कभी-कभी श्रीमती जानकीदेवी से मिलने जाते थे। एक बार उनसे मिलने गये। वह उन दिनों मथी का प्रयोग कर रही थीं। उनको घुटनों में वात के कारण कुछ कष्ट था। माताजी ने बताया कि डाक्टरों के इंजक्शनों की अपेक्षा यह मेरा मथी का प्रयोग बड़ा कारगर है। वह प्रतिवर्ष मथी का प्रयोग करती थीं। उनका मथी का प्रयोग इस प्रकार है प्रतिदिन पांच तोले मथी पांच तोले चावल इन दोनों की खिचड़ी पकाई जाती है। इस खिचड़ी में काजू द्राक्ष पिस्ता इत्यादि कुल चीजें डाल दी जाती हैं और घी भी। यह खिचड़ी सात दिन खानी पड़ती है। इन दिनों परहेज भी रखना पड़ता है अर्थात् खिचड़ी खाई जाय। उन दिनों बिलकुल बंद कमरे में रहना होता है और खिचड़ी के अलावा दूसरा कोई पदार्थ नहीं खाया जाना चाहिए। इस प्रकार चौदह दिन परहेज रखना पड़ता है।

कभी कभी माताजी गोपुरी में भी रहती हैं। गोपुरी में विनोबाजी का भी निवास रहा करता था। एक बार हम विनोबाजी के दर्शनार्थ गये। वहीं पर माताजी श्रीमती जानकीदेवी से भेंट हो गई। माताजी ने दर्द भरी बात बताई कि आजकल लोग बापू की महत्त्वपूर्ण बात ही भूलते जा रहे हैं। उन्होंने इन बातों की ओर विशेष ध्यान दिलाया १ गोसरक्षण २ मद्यनिषेध और ३ खादी। माताजी ने आग्रहपूर्वक कहा कि इस ओर बराबर ध्यान रखना चाहिए। एक बार जब गोपुरी में माताजी से मिलने गया तो उन्होंने बताया कि आजकल की महंगाई के कारण लोगों का चरित्र गिरता जा रहा है। महंगाई की हद हो गई है। महंगाई दूर किये बिना लोगों को न तो संतोष होगा न उनकी जरूरतें पूरी हो सकेंगी।

एक और प्रसंग यहां याद आ रहा है। वर्धा समिति के प्रांगण में देशभर के हिन्दी के साहित्यकारों तथा मध्यमा के हिंदी सेवियों का सम्मेलन था। वर्धा समिति ने यह सम्मेलन इस लिए बुलाया था कि हिंदी के सब कर्णधार विद्वान, साहित्यकार मिलकर हिंदी साहित्य सम्मेलन को मुकदमेबाजी से बचाकर उसको स्वस्थ स्थिति में लायें।

उस समय मैंने टंडनजी से कुछ निवेदन जरा उग्रता से किया था। उससे माताजी को कुछ लग गया और बाद में मुझसे कहा कि तुम बाबूजी से इस प्रकार झगड़ते हो? मेरी बात तो सही थी। इस प्रकार सम्मेलन की मुकदमेबाजी में फंस जाना पड़ा यह मुझे बहुत बुरा लग रहा था। इसीसे जरा उग्रता से टंडनजी को निवेदन किया था।

श्रीमती जानकीदेवी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के रजत जयंती समारोह की स्वागताध्यक्षा मनोनीत की गई थी। उन्होंने इस उत्तरदायित्व को सभालने का कष्ट उठाया था।

श्रीमती जानकीदेवी श्री श्रीमन्नारायण के गुजरात के राज्यपाल नियुक्त होने पर कई बार अपनी पुत्री श्रीमती मदालसाबहन से तथा श्रीमनजी से मिलने अहमदाबाद आया करती थी। मैं दो-तीन बार उनसे राजभवन में मिला हूं। एक बार राजभवन में श्रीमदभागवत के पारायण का आयोजन था। आचार्य थे श्रीयुत पंडित विष्णुदेव भाई। माताजी नियमित पारायण में बैठती थी और बडी श्रद्धा से श्रीमदभागवत की कथा सुनती थी। एक अति करुण प्रसंग का यहां उल्लेख करना चाहता हूं। श्रीमती जानकीदेवी के बडे पुत्र श्रीयुत कमलनयन बजाज का अहमदाबाद के राजभवन में अचानक हृदयगति बंद हो जाने से निधन हो गया। उस करुण अवसर पर हम श्री कमलनयनजी का वसीयतनामा पढ़ने को मिला। उसमें उन्होंने अत्यंत वीतराग वृत्ति से कुटुंबी जनों को सलाह दी थी कि मेरी मृत्यु के कारण कोई मंगल कार्य न रोका जाय। मेरा शोक सिर्फ तीन दिन का ही रहे। मेरी देह का अग्निसंस्कार वहीं किया जाय, जहां मेरा देहावसान हुआ हो। इस प्रकार की मोहमुक्त भावना का निर्देश बताता है कि उनकी जीवन-शिक्षा उच्चकोटि के माता पिता के संरक्षण में हुई थी। ऐसे सुपुत्र की माता श्रीमती जानकीदेवी जैसी ही माता हो सकती हैं। श्रीमती जानकीदेवी भारत की सभी साध्वी नारियों की पहली पंक्ति में बैठनेवाली उच्च तथा आदर्श महिला हैं।

मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक अभ्यर्थना अर्पित करते हुए परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हम भारतीयों को इनके उज्ज्वल शील चरित्र से बहुत-कुछ सीखने का बल प्राप्त हो।

धुन की पक्की

रामेश्वरदयाल दुबे

वर्धा में 'माताजी' का अर्थ होता है—जानकीदेवी बजाज। वर्धा सेवाग्राम पवनार में विभिन्न रचनात्मक संस्थाएं हैं और इन संस्थाओं में सैकड़ों कार्यकर्ता हैं। इन सबके बीच जानकीदेवी बजाज 'माताजी' के नाम से पहचानी जाती हैं। सफेद खद्दर की साड़ी, हाथ में हरा झोला, पैर में पुरानी चप्पलें—बस यही माताजी की वेश भूषा है। वर्धा में होनेवाली प्राय प्रत्येक सभा में वह उपस्थित रहती है। चुपके से आकर पीछे बैठ जाती हैं। उनपर निगाह पड़ते ही संयोजक कार्यकर्ता उन्हें आग्रहपूर्वक मंच पर ले जाते हैं। माताजी के हाथ तकली चलाने में व्यस्त रहते हैं।

पिछले चालीस वर्ष से बजाजवाड़ी स्थित सेठ जमनालाल बजाज का एक बंगला राष्ट्रीय नेताओं का तथा भारत के विशिष्ट व्यक्तियों का स्थायी अतिथिगृह रहा है। आज भी यह क्रम चालू है।

स्व० सेठ जमनालालजी विनम्र मेजबान थे। नेताओं और विशिष्ट व्यक्तियों को प्रेमभरा आतिथ्य देने में उन्हें विशेष संतोष प्राप्त होता था। उसी परंपरा को माताजी अभी तक निभाती आ रही हैं। आये हुए मेहमान को किस समय क्या चाहिए इसकी चौकसी माताजी करती है। बजाजवाड़ी के अतिथिगृह में परोसा जानेवाला भोजन कोई विशेष भोजन नहीं होता। वह सादा सात्त्विक साधारण भोजन ही रहता है परंतु उसमें आत्मीयता का रस मिला रहता है इसलिए उसकी मिठास अनूठी होती है।

माताजी सभी मेहमानों की माताजी बन जाती है। उनकी बातों में सीधा-सादा घरेलूपन रहता है। आये हुए लोग उनके निकट परिवार के ही लोग बन जाते है। वह जब अपने जीवन के पिछले प्रसंग सुनाने लगती हैं तब सुननेवालों को तो मजा आता ही है उन्हें भी कम मजा नहीं आता।

पिछले प्रसंग सुनाने में माताजी को इतना आनन्द आता है कि एक ही प्रसंग को एक ही व्यक्ति को बार-बार सुना जाती है। गांधीजी के वर्धा आ जाने के बाद यात्रियों पत्रकारों नेताओं कार्यकर्ताओं के आवागमन से सेठजी की बजाजवाड़ी सदा गुलजार रहती थी। आने वाला कोई हो सेठजी के अतिथिभवन का द्वार सदा खुला रहता था। मेहमानों की पूरी देखभाल का समुचित प्रबंध था। सन १९३६ से लेकर सन् १९४५ तक मेहमानों की धूम मची रहती रही। इस अवधि में देश के प्राय सभी नेताओं से माताजी का निकट से परिचय हुआ। माताजी को इस बात का पूरा ज्ञान हो चुका था कि किस नेता को भोजन में क्या चीज पसंद है।

अपनी स्मृति के सहारे वह आज भी बता देती है कि सरोजिनी नायडू को हरी मिर्च पसंद थी राजाजी को रसम, मौलाना आजाद को मोटी रोटी और पंडित नेहरू को आलू। खानसाहब के लिए खिचड़ी में खौलता हुआ घी डालना जरूरी था और शंकरराव देव को भोजन के अंत में भात और छाछ मिलना ही चाहिए था।

बजाजवाड़ी के भीतरी बरामदे में नेतागण जमीन पर बैठकर भोजन करते थे। आमने सामने दो पंगतें लगती थी। भोजन के समय इन पंगतों में क्या-क्या रंगत रहती थी उसकी न जाने कितनी रोचक घटनाएं माताजी से सुनी जा सकती हैं।

माताजी की स्कूली शिक्षा बहुत कम हुई है या कहना चाहिए हुई ही नहीं किंतु अनुभव की पाठशाला का उनका अध्ययन गहरा है। सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित उनकी पुस्तक मेरी जीवन-यात्रा में यत्र-तत्र उनके अनुभव पाठकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

समय-समय पर उनके मन पर एक धुन सवार हो जाती है। तीन चार वर्ष पहले जब उन्हें यह ज्ञान हुआ कि कॉलेज में पढ़नेवाली होम साइंस विषय लेनेवाली लड़कियों को उनकी इच्छा न रहते हुए भी अंडे में बननेवाले खाद्य-पदार्थ बनाने पड़ते हैं तो उन्हें अच्छा न लगा। माताजी दिन रात इसीकी चर्चा करने लगीं। जब कोई किसी काम से उनके पास आया हो माताजी वाले उससे यह विनानाशक विषय पर अवश्य चर्चा करतीं। इतना ही नहीं उन्होंने

विश्वविद्यालय के अधिकारियों को भी पत्र लिखवाये, प्रयत्न किया। कहना न होगा कि माताजी अपनी धुन की पक्की हैं।

अभी हाल की घटना है। पता नहीं, किस घटना से उनके मन में यह विचार आया कि आजकल नेताओं को फूल की मालाओं से जो लाद दिया जाता है वह उचित नहीं। यह तो फूलों का दुरुपयोग है। बस, माताजी की दिन रात की चर्चा का यह विषय बन गया। उस दिन प्रांगण में एक विशिष्ट व्यक्ति का सम्मान था। माताजी की ओर से दो बार टेलीफोन आया और उसमें यही आदेश था कि फूल मालाएं न पहनाई जायं। सूत की गुंडी की माला पहनाना उचित होगा। दो बार कहकर हो माताजी को संताप न हुआ। वह दूसरे दिन प्रातःकाल घर पर ही आ गई और उसी फूलमालावाली बात को दुहराया तिहराया ही नहीं, चौहराया भी। जब मैंने कहा कि मेरे पास उतनी गुंडी नहीं हैं तो उन्होंने कहा, 'किसी आदमी को भेज दो मेरे यहां से गुंडी ले आवेगा।'

माताजी किसी विषय को कितनी दृढ़ता से पकड़ती हैं इसका यह प्रमाण है।

माताजी अपने विशारद परीक्षा फेल होने की घटना को बड़े गौरव के साथ सुनाया करती हैं। उनके शब्द होते हैं— दुबेजी, आपको मालूम है मैं विशारद फेल हूं। कहा तो तुम्हारी (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की) परीक्षाओं में भी बढ़कर फेल होकर दिखा दूं।

बात यह हुई थी कि स्व० जमनालाल बजाज चाहते थे कि उनके बच्चे हिंदी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लें, सम्मेलन की परीक्षाएं पास कर लें। इसके लिए श्री लोढेजी को शिक्षक (ट्यूटर) के रूप में नियुक्त किया। बच्चों की हिंदी-पढ़ाई शुरू हुई। बच्चे पढ़ने में अधिक रुचि लें, इस उद्देश्य से माता जानकीदेवी ने भी विशारद का आवेदन पत्र भर दिया। घर गृहस्थी के काम में फंसी रहनेवाली महिला पास हो जाती, तो आश्चर्य होता। माताजी फेल हो गई और जो फेल हो गई सो फेल ही बनी रहीं। माताजी बड़े गौरव से कहा करती हैं, "विशारद परीक्षा पास कर लेनेवाले अपने को केवल 'विशारद' कहा करते हैं मैं तो 'विशारद फेल' हूं। मेरी डिगरी उनसे ज्यादा बड़ी है।'

माताजी विनम्रता की मूर्ति हैं। उनके रहन-सहन, बातचीत को देख-सुनकर कोई यह अनुमान ही नहीं कर सकता कि वह एक उच्च धनी परिवार की महिला हैं।

बजाज परिवार के ही लोग नहीं, वर्धा के नागरिक और विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता आज भी माताजी से स्नेह पाकर संताप अनुभव करते हैं और भविष्य में करते रहना चाहते हैं।

उनके दुर्गुण दीखनेवाले गुण

यशपाल जैन

जानकीदेवीजी को हम लोग मैयाजी कहा करते हैं। उनसे पहली बार कब और कहां मिलना हुआ, अब याद नहीं आता है, लेकिन इतना ध्यान है कि उनकी पहली छाप मेरे मन पर अच्छी नहीं पड़ी थी। ऐसा अनुभव हुआ था कि उन्हें ढंग से बोलना नहीं आता। जो मन में आता है, अनगढ़ शब्दों में कह देती हैं। दूसरे, एक ही बात को बार-बार कहती हैं। यह नहीं सोचतीं कि वह जो कह रही हैं, उसमें सुननेवाला दिलचस्पी ले रहा है या नहीं। तीसरे, यह कि वह बहुत ही कंजूस हैं।

लेकिन बाद में ज्यों-ज्यों उनके संपर्क में आता गया, मैंने पाया कि जिन्हें मैं उनके दुर्गुण मान बैठा था, वे उनकी ऐसी विशेषताएं हैं, जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को असामान्य विशिष्टता प्रदान की है। आज अपने समाज में हम ऐसे व्यक्तियों का प्राधान्य पाते हैं, जिनकी बातों में कृत्रिम माधुर्य अधिक, वास्तविक हार्दिकता कम होती है। कहा जा सकता है कि वे उन भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जो उनके दिल से नहीं उठतीं। जो दिल से उठती हैं, उन्हें वे कहते नहीं। यही कारण है कि उन्हें चुने हुए शब्द बोलने के लिए विवश होना पड़ता है। मैयाजी के साथ ऐसी कोई विवशता नहीं है। उनके दिल में जो कुछ आता है, बिना लाग-लपेट के कह देती हैं। उन्हें इस बात की चिंता नहीं रहती कि उनके शब्दों से कोई नाराज होगा या खुश। उनसे मिलने के जाने कितने अवसर प्राप्त हुए हैं, बंबई में कई बार हम लोग साथ रहे हैं और विनोबाजी के भूदान-यज्ञ के सिलसिले में साथ-साथ पैदल यात्राएं भी की हैं। पर मैयाजी की वाणी में मैंने कभी शब्दों का आडंबर नहीं पाया।

कभी-कभी उनके हृदय की अकृत्रिमता बड़ा रोचक रूप धारण कर लेती है। एक बार वह दिल्ली आई हुई थीं। कोई विशेष अवसर था। उन्हें कुछ लोगों को भोजन कराना था। उन्होंने फोन किया। पूछा, 'तुम कौन जात हो?'

मैंने कहा, 'हरिजन।'

बोलीं, 'नहीं, ठीक बताओ।'

मैंने गंभीर भाव से कहा, 'मैं सच कह रहा हूं।'

'अच्छा, तुम्हारी औरत?' उन्होंने पूछा।

मैंने कहा, 'हरिजन की औरत हरिजन। मेरी स्त्री भी हरिजन है।'

बोलीं, 'ठीक-ठीक क्यों नहीं बताते?'

मैंने कहा, 'पहले आप यह तो बताइये कि यह सब क्या पूछ रही हैं?'

बोलीं, 'खाना खिलाना चाहती हूं।'

'यह पहले ही क्यों नहीं बता दिया?' मैंने हंसते हुए कहा, 'आप ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहती हैं। मैं भी कर्म से ब्राह्मण हूं।'

बोलीं, 'अच्छा-अच्छा, खाना खाने आ जाओ। अपनी औरत को भी साथ ले आना।'

इसक कुछ समय बाद श्रद्धय दासाहब (श्रीहरिभाऊजी उपाध्याय) ने किसी उत्सव के समय हम लोगा को हटूडी बुलाया। मयाजी भी वहा गइ। एक प्रमुख हरिजन मत्री आये। जब हम भाजन करने बठे तो मत्री को मेज कुर्सी दी गई। हम लोग जमीन पर बठे। मयाजी मेरे बराबर थी। मुझे पुराना प्रसग याद आ गया। मैंने कहा 'मैयाजी, आपने देखा—दासाहब न कितना पक्षपात किया है। हरिजन को ऊचा स्थान दिया है, हम लागा को नीचा!'

मयाजी मेर विनोद को नही समझी। बोली 'तुम्हे मालूम नही है एक दुघटना मे इन मत्रीजी के पर म चोट आ गइ थी। इसलिए वह नीचे नही बठ सकत।'

मैंने अपनी हँसी को दबाते हुए कहा 'मैं दासाहब को खूब जानता हू। उन्हाने ऐसा जानबूझकर किया है। मैं तो इस अयाय का सहन नही कर सकता।'

बोली 'तुम कसी बात करते हो? हरिभाऊजी कभी ऐसा भेदभाव नही करते।'

फिर तो एसी हँसी फूटी कि मुह पर रूमाल रखकर मुझे जबदस्ती उसे रोकना पडा।

एक बार सर्वोदय सम्मेलन म मयाजी न स्त्रिया से अपील की कि वे भूदान के लिए अपने आभूषण दान मे दे दें। विनोबाजी मच पर खामोश बठे थे। किसी बहन ने ऊपर आकर उनकी अगुली मे अपनी अगूठी पहना दी और दूसरी ने अपन गल का मगलसूत्र उतारकर उनके गले म डाल दिया। मैं सामने ही बठा था। थोडी देर बाद मुझस मिली तो बोली, 'इन मरी औरता को देखो विनोबाजी को अगूठी और मगलसूत्र पहना दिया। अरे उन्हाने कौन ब्याह किया है जो इन चीजो के महत्व को जाने!'

इतना कहकर वह हँस पडी। मैं उनकी ओर देखता रह गया।

इस प्रकार बीसियो अवसरो पर मैंने देखा है कि वह बनावटी भाषा बोल नही सकती। मैं मानता हू कि एसी भाषा उस हृदय स ही निकल सकती है जिसम कलुष न हो और जो किसी के प्रति दुर्भावना न रखता हो।

उनकी एक ही बात को बार बार कहन की आदत मे शुरू म मुझे बडा अटपटा लगा। जिन दिनो वह कूपदान के काय म सलग्न थी उनकी एक ही रट थी इतने रुपय इकट्ठे हो गये हैं। महावीरप्रसादजी (पोद्दार) से कहो कि विहार म कुए खुदवा दें। बार बार एक ही बात सुनते-सुनते मैं तग आ गया। मैंने कहा "आप ही उनसे क्या नही कहती?

बोली वह मेरी सुनते हैं?'

मैंने कहा जब आपकी नही सुनते तो मेरी कस सुन लेंगे!

इसका उनपर कोई असर नही हुआ। घुमा फिराकर फिर वही बात आ गई। मैंने कहा 'मयाजी, आपके पास रुपया है तो उससे कोई अच्छा काम कीजिए। उसे कुए म क्या डालती हैं?

मयाजी की वह रट जाने कबतक चलती रही। सोते-जागते उठते बठते, उसीके सपन उन्हें आते रहे।

एक बार वर्धा म बोली हाय मया गजब हो गया!'

मैंने पूछा, क्या हुआ?'

बोली, "यहा कालेज के पास मुर्गीपालन का काम शुरू हो रहा है। लडके-लडकिया अडे खायेंगे।"

मैंने कहा, आप कालेज के अधिकारियो से बात कीजिये।

बोली यह तो सरकार की ओर से हो रहा है। सरकार से कहना चाहिए। तुम दिल्ली मे हो। वहा सरकार से कहो ऐसा तो नही होना चाहिए।

एक दिन तक हर घडी उनके मुह पर यही बात रही।

एक बार दिल्ली आइ। फोन किया कलकत्ता मे अच्छी से अच्छी गाये कटती है। उन्हे कैसे रोका जाय। कमलासा वहा जा रही है। विनोबाजी बड दुखी है।

मैंने कहा मयाजी आज देश मे हवा ही कुछ ऐसी चल रही है। आप गाय की बात कहती है। आज तो आदमी आदमी को खाये जा रहा है। चीजो मे मिलावट का मतलब क्या है ?

सो तो ठीक है। वह बोली लेकिन अच्छी गायो की तो रक्षा होनी ही चाहिए।

उन्होने इस बारे मे दजनो लोगो को फोन किया सबसे से चर्चा की।

आखिर ऐसी बात क्या है जो वह एक ही चीज के इतने पीछे पड जाती हैं ? लोग ऊब जाते हैं पर वह नही थकती। इसका एक ही कारण है और वह यह कि समाज और देश के कल्याण के लिए उनमे असीम लगन है। लोकहित की जो भी बात उनके मन मे उठती है उनका हृदय और मस्तिष्क उससे आक्रात हो जाता है। यदि जन-कल्याण को चोट पहुचानेवाली कोई बुराई है तो उसका निराकरण होना चाहिए यदि जनता की भलाई की कोई बात है तो उसको मूर्त रूप मिलना चाहिए इस चीज की उत्कटता उन्हे चैन नही लेने देती। मैंने देखा है कि यदि बात पार नही पडती तो वह बडी वेदना अनुभव करती हैं और अपनी लाचारी को अत मे मन मारकर सहन कर लेती है।

उनकी कजूसी कुछ समय तक बडी अखरी पर बाद मे मैंने देखा कि उन्होने अपनी इच्छाओ को बेहद सीमित कर लिया है। अपरिग्रह का पाठ पढना है तो कोई उनके जीवन से पढ सकता है। उनके सामान को देखकर लगता है कि वह जीवन के सारे वैभवो को त्याग चुकी हैं। उनके परिवार मे किसी चीज का अभाव नही है पर वह जानती ह कि इच्छाए करो तो उनका अत नही होता और एक बार परिग्रह के चक्कर मे पडा तो मकडी के जाले की तरह उसमे फसते जाते हैं। अपने पति के जाने के बाद वह स्वेच्छा से सबकुछ त्याग कर अकिंचन बनी। वह नही चाहती कि समाज मे एक देन और दूसरा लेने की स्थिति मे रहे। उनके सामने बापू का आदश है।

उनकी कजूसी का मुझे कभी विचित्र अनुभव हुआ है। मयाजी के थैले मे आवले के टुकडे रहते हैं। जब साथ होती है तो मैं बार-बार आवला की माग करता रहता हू। कभी वह दो चार छोटे छोटे टुकडे दे देती हैं कभी टाल जाती है। पर जब मैं पिछली बार अफ्रीका जाते हुए एक दिन उन लोगो के साथ बबई मे ठहरा तो चलते समय देखता क्या हू मयाजी ने प्लास्टिक की एक थैली मे आवले भर रखे हैं। उस थैली को मेरी ओर बढाते हुए बोली, यह लो, सफर मे काम आवेंगे।'

[illegible] की बात थी। माताजी [illegible] थी [illegible]। बार-बार स्मृति के अनुसार [illegible] थी और पुनः बार-बार उसमें संशोधन करना पड़ता था। [illegible] भी [illegible] विचित्र था। यह जानती थीं कि उनकी पुस्तक में [illegible] के [illegible] हैं [illegible]। [illegible] 'नहीं' [illegible] का अपना स्थान और महत्त्व है [illegible] उपयोगिता है। [illegible] नहीं [illegible] बिना भाव का [illegible] कर्मों में [illegible] कठिनाई होती है। [illegible] सिलसिला शुरू हो गया।

माताजी रोज बजाजवाड़ी में [illegible] बैठतीं [illegible] कभी [illegible] में आती थीं। [illegible] महीने तक यह सिलसिला चला। मेरी जीवन-यात्रा के नाम से यह पुस्तक [illegible] साहित्य मंडल से प्रकाशित हुई।

माताजी की जीवन-यात्रा [illegible] की यात्रा रही है। इस यात्रा के प्राण-स्तम्भ थे जमनालालजी बजाज थे। उनकी जीवन-[illegible] के कारण माताजी को भी जमनालालजी के साथ-साथ अनेक उतार-चढ़ावों से गुजरना पड़ा है। अनेक मानसिक संघर्षों के साथ जूझना पड़ा है और काँटों की राह अपनानी पड़ी है। इस पुस्तक में माताजी ने अपने मानसिक संघर्ष, विचार तथा वृत्तियों का घटनाओं के आधार पर जो विश्लेषण किया है, वह बड़ा ही मार्मिक है। *एक सामान्य महिला को अपने परिवार में वैभव में [illegible] किस तरह [illegible]* डालना पड़ा तथा बाद में [illegible] किस तरह इस वैभव के बीच भी [illegible] निर्लिप्त होकर सादगी की तरफ, [illegible] की तरफ [illegible] की तरफ जाना पड़ा, यह सब एक भारतीय नारी की [illegible] बड़ी कठोर यात्रा है।

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अनेक अन्तर्विरोधों का समुच्चय होता है। माताजी भी इससे अपवाद नहीं हैं। भावुक होकर भी वह निर्भय हैं।

बापू और विनोबा-जैसे महापुरुषों की संगति के कारण उनमें एक ऐसी दृढ़ता आ गई कि उन्होंने अपने को देश की सेवा में लगा दिया। जमनालालजी का इसमें उनको सहारा अवश्य की लेकिन माताजी के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास एक अनोखी विशेषता है। तभी तो सेठ जी के अवसान के बाद वह अपनी सारी संपत्ति गोसेवा के लिए अर्पित कर सकीं। उनको भग वान पर बड़ा विश्वास है। उनको इसका बड़ा गर्व है कि वह बजाज-परिवार में आई और उन्हें देश की सेवा का मौका मिला। माताजी के देखते-देखते सेठजी गये, महादेवभाई गये, बा गई, बापू गये और अंत में उनके ज्येष्ठ पुत्र कमलनयनजी भी चले गये। इतनी बड़ी-बड़ी सभी व्यथाओं को उन्होंने जिस दृढ़ता से झेला है, उसे देख-समझकर भगवान में उनके विश्वास की गहराई की कुछ प्रतीति हो सकती है।

सवाल उठ सकता है कि उन्होंने नारी जागरण के इस युग में क्रांति का कितना साथ दिया? माताजी का जीवन समर्पित जीवन रहा है, विद्रोही नहीं। इस समर्पित जीवन की साधना में उन्हें अपने से जो संघर्ष करना पड़ा, उसका विश्लेषण कैसे किया जा सकता है? उनकी क्रांति अंतर्मुखी रही है और इस अंतर्मुखता ने उनको मातृत्व की महानता तक पहुंचा दिया है।

मुझे माताजी का स्नेह और वात्सल्य बराबर मिलता रहा है। जब भी उनसे भेंट हो

जाती है, परिवार के समाचार पूछती हैं। उनकी जीवन-यात्रा पुस्तक के बहान उनकी विशेषताओ, भावनाओ, सस्कारो का जो अतरग दशन हुआ, वह मेरे लिए बडा ही मूल्यवान सिद्ध हुआ है।

कुछ न भूलनेवाली घटनाए

उमाशकर शुक्ल

माताजी को पदमविभूषण की उपाधि मिली थी। मैं उनके पास उनका अभिनदन करने पहुचा और कहा कि आप इस प्रसग पर कुछ कहिए, तो वह बोली, 'मैं क्या कहू कुछ समझ म नही आता। और यह दखिय मरे पास देश के कोने-कोने स ढेर सारे पत्र आ रहे हैं। मैं किसीको जवाब नही दे रहा हू। मैंने कहा ऐसा क्या? आपको जवाब दना ही चाहिए तो मुस्कराकर बोली,— मैं तो हमेशा घूमती रहती हू। जहा जहा जाऊगी, वहा-वहा के लोगो को मिलकर उनके पत्रो क लिए धन्यवाद द दगी। इतना कहकर वह हँसन लगी। उनकी दष्टि म पदमविभूषण' की उपाधि का कोई विशेष महत्त्व न था।

० ० ०

माताजी अधिक पढी लिखी नही हैं। लेकिन बातें बडे पत की कहती हैं। उनके अनक व्याख्यान सुनने को मिले। मैंने एक दिन पूछ ही लिया कि माताजी आप इतना अच्छा व्याख्यान कैसे द लेती हैं? उन्होने उत्तर दिया सतसगति का असर है।' गाधीजी जैस महान नताओ स लेकर छोटे छोटे नेताओ तक उनका सपक रहा है। सभी नताओ की मनोरजक बातो का उनके पास भण्डार है। जमनालालजी का नाम वल्लभभाई पटेल ने 'शादीलाल' रख रखा यह बात माताजी ने ही बताई थी और तभी स वह बहुत प्रचलित हुई।

० ० ०

जमनालालजी के बगले के सामने एक पुराना तालाब है। एक दिन माताजी के ध्यान म आया कि तालाब का जीर्णोद्धार कराना चाहिए। तालाब कमेटी बन गई। मैं उसका सचिव बन गया और भाई मथुरादासजी बजाज बने उसके अध्यक्ष। माताजी ने जीर्णोद्धार के लिए चदा इकट्ठा किया और उसका पाइ पाइ का हिसाब रखा। खूब काम चला। बडे-बडे नताओ से उन्होने तालाब की खुदाई के लिए कुदाली चलवा ली। रफी अहमद किदवई के हाथो उसके जीर्णोद्धार का आरभ कराया। कुमारप्पाजी जाजूजी मशरूवालाजी, श्रीमनजी आदि सबसे तालाब खुदवाया गया। माताजी स्वय भी कुदाली चलाती थी। वह काम काफी दिनो तक चला।

० ० ०

विनोबाजी स माताजी उमर म दो तीन साल बडी है और इसलिए वह उनसे विनोद

भी खूब करती हैं। उनके साथ वह भूदान यात्रा में कुछ समय तक पैदल भी घूमी है। एक बार विनोबाजी ने उनसे कहा कि विष्णु सहस्रनाम की तरह आप एक हजार ऐसे व्यक्तियों के नाम उनके संक्षिप्त परिचय के साथ लिखें जिनसे आपका संबंध आया हो। माताजी ने करीब एक साल में वह सूची पूरी कर दी और विनोबाजी ने उसको देखकर प्रसन्नता प्रकट की। उसका नाम उन्होंने रख दिया, 'जानकी सहस्रनाम'। जिस जिससे उनका परिचय जीवन काल में आया उन सबके नाम उसमें हैं। विनोबाजी के जन्म दिवस पर वह 'जानकी सहस्रनाम' उनको भेंट किया गया।

० ० ०

आचार्य श्रीमन्नारायणजी की साठवीं वर्षगांठ पर मैंने एक अभिनंदन ग्रंथ कुछ महीनों पहले तैयार किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रांगण में वह समर्पित किया जानेवाला था। माताजी ने मुझे तीन चार दिन पहले बुलवाया और कहा "आप लोग श्रीमनजी को सूत के हार अर्पण करें। फूलों के हार में पैसे व्यर्थ खर्च न करें।" हमने वैसा ही किया। माताजी फिजूल खर्ची से स्वयं बचती हैं और दूसरों को भी बचाती हैं। मोटर रिक्शे में बैठने की बजाय वह पैदल चलना पसंद करती हैं दूर जाना हो तो बात दूसरी है। अपने सुख के लिए वह दूसरों को कष्ट पहुंचाना नहीं चाहतीं।

० ० ०

माताजी 'अखिल भारत गोसेवा संघ' की अध्यक्षा रह चुकी हैं और गायों के प्रति उनके मन में बड़ी आस्था है। वर्धा में गाय के दूध की नदियां बहें इसके लिए वह बहुत ही प्रयत्नशील रहीं। गोरस भंडार की उन्नति के लिए उन्होंने बहुत ही परिश्रम किया। गाय के दूध घी का व्रत लिया है और गायों के विकास के लिए वह अभी भी जहां जाती हैं प्रचार करती रहती हैं।

० ० ०

माताजी का जीवन सेवा, त्याग और साधना का त्रिवेणी संगम है। वह किसी पर नाराज होती हैं लेकिन उनकी नाराजी अस्थायी होती है। थोड़ी ही देर बाद वह उसे पुचकार लेती हैं और खूब प्यार करती हैं। मेरा बजाज परिवार से चालीस वर्ष पुराना संबंध है। माताजी का हृदय बहुत ही विशाल है। भगवान उन्हें शतजीवी करें।

मां ने क्या पाया, क्या खोया ?

रामकृष्ण बजाज

[२१ सितम्बर १९७२ को श्री रामकृष्ण ने ब्रह्म विद्या मंदिर, पवनार में विनोबाजी से भेंट की और अपनी माताजी (श्रीमती जानकीदेवीजी) को ध्यान में रखकर कुछ प्रश्न पूछे। ये प्रश्नोत्तर बड़े रोचक और उद्बोधक हैं। उन्हें यहां दिया जा रहा है।—संपादक]

प्रश्न आपकी मा से इतना प्रम क्या है ?

उत्तर मा को ही पूछना चाहिए। (हमी) हमारा प्रेम है क्योंकि मा निर्वैर है। माताजी का वर भी किसीस नही और लगाव भी किसीस नही। कमलनयन गया ता माताजी न कहा, रोना क्या ? अच्छा हुआ। एक घटे भर म मर गया अच्छा ही हुआ। यह माताजी की अनासक्ति ह नहा तो पुत्र के वियोग के कारण माताए बहाल हो जाती हैं।

प्रश्न मा ने क्या हासिल किया ?

उत्तर (माताजी स पूछने हुए) कुछ हासिल हुआ क्या ? (माताजी ने कहा — जीवन मुक्ति, ब्रह्माण्ड हासिल हुआ।)

जमनालालजी की मृत्यु के बाद माताजी ने सती हो जान का विचार किया था। बापू ने खूब समझाया। तब माताजी न अपनी सपत्ति भगवान का अपण करने का तय किया। वसा ही किया भी। अपनी सपत्ति नहीं रखी। तबसे माताजी मुक्त हैं। बापू ने अगर सती हो जाने के लिए हा कहा होता ता माताजी सती हो जाती।

वापू वह तो आपके ब्लडप्रेशर की दवा है।' वापू न जवाव दिया, 'दवा हो या और कुछ, है तो हिंसा ही।' और लहसुन खाना उन्होंने छोड दिया। वाद म लोगो के बहुत कहन सुनन और जोर देने पर उन्होंने फिर स शुरू किया।

वापू के सबध म एक बात का और ध्यान आ जाया करता है—और वह है उनका पत्र लेखन। ससार म शायद ही अन्य कोई महापुरुष होगा जिसन इतनी व्यस्तता और परेशानिया के बीच इतना पत्र व्यवहार किया हो। बालक वद्ध युवक पुरुष महिला अमीर, गरीब नेता कायकर्ता राजे महाराजे—किन किन श्रेणिया के व्यक्तिया का पत्र व्यवहार बापू से हुआ है। स्वय बापू के हाथ से लिखे पत्रा की सख्या इनम कम नहीं है। मेरा और बापूजी का जो पत्र व्यवहार हुआ उसम बापूजी के लिखे दो पत्रो स उनकी शली भाव और प्रभाव का अच्छा दिग्दशन हो जाता है। एक पत्र तो वह है जो उन्होंने २० ८ ३२ को यरवदा जेल स लिखा था।

दूसरा हरिजना क लिए प्रसिद्ध आमरण उपवास शुरू करन के पहले दिन का लिखा है।[1]

विनोदप्रियता तो बापू की प्रसिद्ध है ही। लेकिन कोरा विनोद ही नही, विचारो की गहनता व दढता भी बापू के सभाषण व पत्रा स भरपूर मात्रा म मिलेगी। जमनालालजी जसा पति और बापूजी का सानिध्य पाकर मैं भी अपनी बुद्धि व सामथ्य क अनुसार कुछ देश-सेवा व रचनात्मक काय करती रहती थी। बापू के पत्रा व उनसे वार्तालाप के द्वारा मुझे बहुत उत्साह मिलता था। सन् १९३ म जब मैं अखिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करन १० बहना के साथ कलकत्ता गई तब बापूजी न एक पत्र मुझे वर्धा भेजा।[2]

° ° °

पर उपदेश कुशल बहुतरे या दियातले अधेरा वाली श्रणी मे बापूजी नही थे। वह जो दूसरा स कहत थे पहले स्वय आचरण म लाते थ। दरिद्रनारायण की सवा की बात बापूजी अक्सर कहत थ। मेरे ऐसे कितने ही सस्मरण हैं जिनम बापू क अदर मैंने दरिद्रनारायण के दशन किये।

एक सुगहिणी की तरह बापू छोटी स छोटी चीज को सभालकर रखते थे। एक बार बिडला हाउस म बापू दौरे पर जानेवाले थे। उनके सामने एक तख्ती रहती थी जिसपर सब भाषाओ म लिखा एक कागज लगा रहता था। जब सामान बधन लगा, तो बापू ने कमलनयन (मेरे ज्येष्ठ पुत्र) स कहा कि तख्ती के पेंच खोलकर कागज म लपेट ले। कमल क ऐसा करने के बाद बापू न कहा लाओ—पेंच द। चार की जगह तीन ही पच मिले। एक पच कमल के हाथ स गिरकर गलीचे वगरा क नीचे चला गया होगा। बापू न तीन पच बडी सावधानी स एक डिब्बी म डाले और कहने लग— कहने को तो सिफ एक पेंच कम है। लेकिन अब अगले मुकाम पर पहुचकर कहूगा पच चाहिए तो एक मोटर दौडेगी—फिर दूसरी दौडगी। और वे लोग एक डिब्बा पेंच ले आयेंगे।

1 देखिए बापू का पत्र १९ ९ १९३२
2 देखिए बापू का पत्र २१ १० १९३३

नोआखाली यात्रा के पहले भंगी कालोनी में बापूजी उठे और एक एक अलमारी खोल कर देखने लगे। मैंने पूछा, "बापू यह क्या कर रहे है आप ?" तो बोले, "अरे—ये छोकरियां जो है। अगले मुकाम पर पहुंचकर कहेगी मेरा ऐनक रह गया—मेरे ऐनक का घर रह गया। इससे अच्छा तो यह कि चलने के पहले ही सबकुछ संभाल लिया जाय।'

० ० ०

एक दिन साबरमती में रामकृष्ण (मेरे कनिष्ठ पुत्र) को पांव में कुत्ते ने काट खाया पर उसने बताया नही। दो तीन दिन बाद मैंने देखा तो उसके पैर में पस पड गया था। मैंने पूछा क्या हुआ ? तो बोला—कुत्ते ने काट लिया था। मैं तुरंत बापू के पास गई। बापू ने कहा—डाक्टर का इलाज करवाना हो तो चाहे डॉक्टर को यहां बुलवा लो, चाहे राम को अहमदाबाद ले जाओ वह तो १४ इंजेक्शन लगाएगा रोज आना जाना होगा। लेकिन अगर मन मानता हो तो काली मिट्टी भिगोकर बांध दो। रामदास के हाथ में खुजली हो गई थी—डाक्टर के इलाज से लाभ नही हुआ तो मैंने गीली मिट्टी पुलटिस की तरह सारे हाथ में बांधी उसीसे वह ठीक हुआ।

आखिर मैंने मन पक्का कर लिया, गीली मिट्टी पांव पर बांध दी। दिन में दो बार बदल देती। धीरे धीरे पस निकलकर घाव बिलकुल सूख गया, हालांकि कई दिन तक मन में डर बना रहा कि कहीं कुत्ता पागल तो नही था।

० ० ०

श्रीगोपाल नेवटिया बहुत विनोदी प्रकृति के हैं। कमलनयन को लंगोटी लगाए खेतों में काम करते देखकर हँसते और कहते— यह काला भूत-सा घूमता है जमनालालजी का व्यापार क्या चलाएगा कुछ पढ़ना लिखना भी तो चाहिए इसे।' लेकिन हमने तो उसे बापू विनोबा को सौंप दिया था और हमें विश्वास था कि सच्चे अर्थों में उसकी पढ़ाई हो रही है।

कुए की मुंडेर पर खड़े होकर उसमें छलांग मारने का उसे बहुत शौक था। घंटों कुए में नहाया करता। इसी बीच उसे मलेरिया का बुखार रहने लगा, जो २ २॥ बरस तक चला। विनोबाजी अपने ढंग का इलाज करते थे। हम तो हालचाल पूछने जाते हुए भी डरते थे कारण कि जायगे और प्रेमवश कुछ खिलाने पिलाने का मन करेगा तो उससे आश्रम की मर्यादा भी भंग होगी और उसकी तबीयत पर भी असर पड़ेगा।

० ० ०

साबरमती में बाढ़ आई तब की बात है। जोरों से वर्षा होती थी और चारों तरफ पानी ही पानी। धूप के दर्शन तीन तीन दिन तक लगातार नहीं होते। ओम और मदालसा के शरीर में फोड़े हो गए। ओम के फोड़े तो कुछ दिन में ठीक हो गए लेकिन मदालसा का फोड़ा ५ ६ महीने तक ठीक ही नहीं हुआ। बापू घूमकर लौटते समय रोज खुद आकर उसकी मरहम-पट्टी करते। एक दिन बोले—इसे अरंडी का तेल पिलाना चाहिए। मदालसा तो अड गई—नहीं पिऊंगी। रोने लगी। बापू ने उसे समझाते हुए कहा—'पी ले बेटी ! मुझे जाकर नवजीवन का लेख लिखना है।' लेकिन मदालसा के कान पर जूं तक न रेंगी। मैंने उसे डांटा तो बापू ने मुझे मना किया। इतने धीरज और प्रेम से वह समझाते थे कि देखकर आश्चर्य होता। इतने व्यस्त समय में से एक ही रोगी के लिए इतना समय निकालना और उसके साथ इतने धीरज से बर्ताव करना

कोई आसान काम नही है।[1]

वापूजी को सेवाग्राम म मैंन कहा राधाकृष्ण का लडकी हुई है। वापूजी वाले जानकी वेन—आपको उसे समझाना चाहिए कि इतने बच्चे ठीक नही।' मैंने कहा, ह राम! तीन लडके थे सा एक लडकी तो होनी ही चाहिए। वापू मुस्कुराकर चुप हा गय।

ओम की पहली जचकी थी। उसन वापू स कहा— 'वापू मरे बेटा ही हाना चाहिए। हुई लडकी। वापू को दुकान से फोन किया तो वापू बोल— लडकी होने से ओम राई तो नही? फिर अमतुलवहन को अपनी चादर शहद पानी आदि देकर वच्ची को घुट्टी देन भेजा कि ओम को इससे अच्छा लगगा।

ओम् की जचकी क लिए भी वापू न ही सुशीलावहन नायर को भेजा था। वच्चा होने पर अदर की वहन को छूना नही आदि का मैं वहुत विचार करती थी। जो चीज चाहिए वाहर से ही दी जाती है। सुशीलावहन वाहर आकर गद्दे पर वठने लगी तो मैंने कहा—अदर की वहन को नहाये विना छुआ नही जाता।

जव वापू ओम् को दखन आय तो सुशीलावहन न वापू से कहा वापू ये जानकीवहन छूआछात वहुत मानती हैं। वापू ने मुझस पूछा केम जानकी वेन? तो मैं वाली वापू सेवा चाकरी तो वरावर करनी ही चाहिए लेकिन जचकी की गदगी को क्या लाड करना? वापू कुछ बोले नही। शायद मेरी वात उन्हे सही लगी हो।

० ० ०

महिला-आश्रम म वापूजी ने सात दिन का उपवास किया। मुझ पहरे पर रखा था। डा० लीलावती मिलने आई वापू स तो मैंने उन्ह अदर जान से रोक दिया। वह महादवभाई के पास गई और बोली कि मुझ जानकीवाई ने वापू के पास नही जाने दिया ता अव मै जाऊगी ही नही। महादेवभाई जमनालालजी के पास गए और मजाक म वोल कि यह पहरा तो वहुत कडा है मैं जाऊ और मुझे भी रोक द तो? खर—महादेवभाई और जमनालालजी दाना साथ आये और मजाक की वातें होने लगी।

रात को जव घर लौटी तो जमनालालजी के कान म से खून निकलते देखा। कान की तकलीफ तो उन्ह वर्षों स थी लेकिन उन दिनो कुछ ज्यादा हो गई थी। डाक्टरा न कहा था कि अगर कान म खून दिखे तो फौरन आपरेशन क लिए ववई आ जाना। अव ता मैं वहुत डरी। मन ही मन प्राथना कर—हे भगवान्—सुवह खून नही दिख ता १०० रु० वापू का शुभ काय म लगान क लिए दू। सुवह वापू का कहा ता उन्होंने फौरन ववई जान की सलाह दी। मैं चिंता म पड गई। जमनालालजी न कहा कि अगर आपरेशन करवाना हागा तो खवर करगा तव आ जाना। वहा डाक्टरा न आपरेशन करन का तय किया ता स्वामी आनद का वर्धा भेजा कि वापू को यह खवर देना और जानकीवाई का लत आना।

मैं ता आपरेशन क नाम स ही डर। मरी इच्छा ता थी कि आपरेशन क समय वापूजी वहा रहन। लकिन यह ता असभव ही था। महादवभाई को भी कस ल जाऊ वापू का कौन

1 दखिए, वापू का पत्र ३० ९ १९३४

सम्भालेगा ? इसी धुकुर-पुकुर में खबर आ गई। गाड़ी ८ बजे पहुचनी थी और आपरेशन ६ बजे होनेवाला था। एक तरह से यह अच्छा ही था वरना अगर मैं काफी जल्दी पहुंच जाती तो डाक्टरों से बहस मुबाहिसा करती रहती और उनके काम में बाधा पहुचती।

आपरेशन के बाद वर्धा गई तो बापू से १०० रु० वाली बात कही। बापू बोले—ना लाओ १०० रु०, दूसरे दिन खून तो दिखा नहीं। मैंने कहा—खून नहीं दिखे मतलब आपरेशन नहीं हो तभी तो १००रु० मिलते। इस तरह कई दिनों तक यह मजाक चला।

० ० ०

बालकोबाजी को टी० बी० थी। बापू ने उन्हें अपनी देख रेख में रखा और उनकी चिकित्सा का भार अपने ऊपर ले लिया। प्राकृतिक चिकित्सा से उनका उपचार किया। रोज उनके पास जाते—उनके खान-पीन का इतजाम करते। आश्रमवासियों को उनकी तरफ जाना मना था। बालकोबाजी की प्रकृति भी इतनी नाजुक कि चिड़ियों की आवाज भी उन्हें असह्य थी। १० १२ वर्ष बापू ने उनकी सेवा की। उनकी सेवा का ही परिणाम है कि आज बालकोबा बिलकुल स्वस्थ हैं जेठ की दुपहरी में भी खेत में गड्ढे खोदते हैं अपना सामान खुद उठाकर चलते हैं और सर्दी हो या बरसात ठंडे पानी का ही उपयोग करते हैं। दूध भी गरम करते हैं तो दही जमाने के लिए।

० ० ०

हर चीज में नये प्रयोगों के लिए बापू हमेशा तैयार रहते थे। नीम की चटनी का प्रयोग शुरू किया तो पंगत में प्रसाद-स्वरूप नीम की चटनी बटने लगी। कुछ लोग तो खुशी से खा लेते कि चलो खून शुद्ध होगा। काम-काज के कारण भूख भी लोगों को ज्यादा ही लगती थी। कुछ लड़कियां नीम के नाम से ही डरती थीं—जीभ पर नीम की चटनी लगाती और मुह बनाती। कई लोग धीरे धीरे आदी हो गये थे और नीम के पत्ते ही चबा जाते थे। लेकिन जो नीम की चटनी जीभ पर लगाने में ही डरें उन्हें कैसे खिलाई जाय ? ऐसे लोगों को बापू बिलकुल थोड़ी ही देते—लेकिन उसमें बच कोई नहीं सकता था।

वर्षा की गर्मी में दोपहर के समय आनेवाले लोगों को चाय की जगह कुछ तो देना ही चाहिए। सो बापूजी ने इमली और गुड़ का शर्बत मटके में ठंडा करके देने को कहा। मारवाड़ में तो कहावत है—गुड़ खाए घोड़ा तेल खाए जोड़ा (जूता)। और इमली का तो सवाल ही कहा ? लेकिन बापूजी के आश्रम में तो अनहोनी बातें ही होती थीं। खर्च और स्वास्थ्य की दृष्टि से इमली और गुड़ का शर्बत बहुत ही उपयुक्त है। मुझे डर था तो सिर्फ मदालसा का कि इस बेस ही फोड़े फुसी बहुत होते हैं। लेकिन वह भी विनोबा के पास रहकर पक्की हो गई थी। आश्रम में तो नीम इमली गुड़ का बोलबाला और चाय चीनी का मुह काला हो गया था।

० ० ०

जब बापूजी ने साबरमती आश्रम की स्थापना की, तो कई लोग वहा आकर बसे और उन्होंने अपना सारा जीवन बापूजी को सौंप दिया। इनमें से कई तो अकेले रहते थे और कई सपरिवार। पुरुष देश को स्वतंत्र कराने का जोश लेकर स्वेच्छा से आये थे लेकिन स्त्रियां तो अपने पतियों के पीछे ही आई थीं। बापू ने सोचा कि जबतक स्त्रियों के लिए आश्रम में

जबदस्त आकर्षण पैदा नहीं होगा तबतक वातावरण पैदा होने में कठिनाई होगी। पुरुषों के काम में भी अडचन होगी। इस दृष्टि से बापू ने आश्रम जीवन का ठोस कार्यक्रम आश्रमवासियों के सामने रखा। स्त्रियों में आश्रम जीवन के प्रति दिलचस्पी पैदा करने का उन्होंने प्रयत्न किया। स्त्रियों के लिए कक्षाएं शुरू की गई—स्वयं बापूजी भी पढ़ाते थे। धीरे धीरे उन्हें सूत कातने, खादी पहनने, जेवर छोडने प्रार्थना में शामिल होने काम काज में स्वावलंबी होने मितव्ययिता बरतने आदि की शिक्षा दी गई। बापू की कार्य प्रणाली के प्रति स्त्रियों में आकर्षण तो था ही। उनकी शिक्षाओं का प्रभाव भी उनपर पडने लगा और अपनी शक्ति के प्रति वे अधिकाधिक सजग होने लगी। यह सब बापूजी ने इतनी सरलता सहजता और स्वाभाविकता में किया कि किसीको पता भी नहीं चला कि उनका दृष्टिकोण बदला जा रहा है उनका कायापलट हो रहा है। बापू बडी ही आत्मीयता से घर-बाहर की खबर लेते रहते और दुख निवारण करने की कोशिश करते।

जो लोग अपने परिवार के साथ रहते थे उन्हें इतनी आजादी थी कि वे अपने घर पर भोजन कर सकते थे वरना तो आश्रम के नियम सबके लिए समान थे। लेकिन कुछ समय बाद आश्रम-जीवन में एकरूपता और समरसता लाने की दृष्टि से बापू ने सार्वजनिक रसोडा आश्रम में खोलने का निश्चय किया। इसमें दो लाभ वह सोचते थे—एक तो इससे आश्रमवासियों में सम्मिलित परिवार की भावना पैदा होगी और दूसरे सेवा के लिए समय का सदुपयोग होगा। लेकिन वह किसीपर जोर जबदस्ती करना नहीं चाहते थे। उनका कहना था कि स्त्रियों को स्वेच्छा से ही इस नियम को अपनाना चाहिए।

स्त्रियों मे बापू के इस विचार से काफी खलबली मची। यह तो वे जानती थी कि काम जितना घर पर करना पड़ेगा उससे ज्यादा काम तो है नहीं। लेकिन घर जो चाहो जब चाहो खानेवाली आजादी सार्वजनिक रसोई मे कहा से आ सकती थी ? यहा तो जो मिले वह खाओ और वह भी घटी के समयानुसार। यह बधन ही स्त्रियों को अप्रिय था। लेकिन बापू ने अपनी सेवाभावना दूरदर्शिता स्नेह और वात्सल्य से स्त्रियों को अपने वश में ही कर रखा था। बहस करने में तो बापू से कौन जीत सकेगा ? खुद बा भी बापू के सामने चुप रह गई थी जिस दिन बापू ने एक हरिजन कन्या को बा की गोद में देकर कहा था कि इसे मनु की तरह ही सभालना।

सार्वजनिक रसोई के विचार से अगर सबसे अधिक खुशी हुई तो मुझे हुई। मेरे लिए तो यह मनभाती बात हो गई। रसोई बनाना मुझे आता ही नहीं था तो उसमें आनंद क्या आता ? सो मेरी तो झझट छूटी।

साबरमती आश्रम में अचानक एक बछडा बीमार पड़ गया। गोशालावालो से जितनी बन पडी उसकी सेवा की। पर वह सभल नहीं सका। जब डाक्टरो ने कह दिया कि वह लाइलाज है तो बापू ने आश्रमवासियों को बुलाकर पूछा कि अब उसका क्या करना चाहिए ? वह हिलडुल नहीं सकता मक्खियां उसपर भिनभिनाती है कौए नाचते है कीडे मकोडे तग करते हैं।

ऐसी आन्तरिक व बाह्य वेदना यदि किसीके अपने बच्चे की भी हो, तो उसके माता

पिता उसे दु ख से छुटकारा दिलाने के लिए चाहेंगे कि मृत्यु से इसकी मृत्यु हो। लेकिन बापू के प्रश्न के उत्तर में आश्रमवासी क्या कहते ? चुप हो गये। वातावरण गभीर हो गया। अचानक बापू ने मुझसे पूछा 'जानकीबेन, तुम्हारी क्या राय है ?' अब इतने सब लोगों के बीच में बालती भी क्या ? सकोच अलग। बापू फिर बोले 'तुम तो पानी में आग लगा दो—ऐसी हो चुप क्या हो गई ?'' मैं एकदम हक्की बक्की रह गई। बापू ने सब लोगों के सामने यह क्या कह दिया ?

अत में शाम की प्रार्थना के बाद बापू ने डाक्टर से कहा कि कल सुबह इजक्शन लेकर आ जाना। जब बापू हृदय कुज' में पहुचे तो बा ने कहा, 'आप अगर बछडे को मरवा देंगे तो पाप लगेगा न !' बापू बोले तुम तो खुद उसे देख आई हो—कीए आखें नाचते है मक्खियां तग करती है अगर तुम उसके पास बैठो, मक्खियां उडाओ तो बोलो।'' बा क्या बोलती ? चुप हो गई।

दूसरे दिन सुबह बापू के सामने उस बछडे को इजेक्शन दिया गया और वह बेचारा दु ख से छुटकारा पाकर शात हो गया। इस घटना को लेकर सारे भारत में जो हलचल मची वह सब जानते ही हैं—बापू ने जिंदा गाय का बछडा मरवा दिया गोली से मरवा दिया आदि। जो कुछ हुआ वह उन सबने अपनी आखो से थोडे ही देखा था—बस सुनी-सुनाई बातें। उनका यही कहना था—बापू के आश्रम में यह हुआ कैसे ? लेकिन बछडे के बीमार पडने से लेकर उसके शात होने तक बापू का कितना विचार मथन चला होगा, वह या तो बापू ही जानें या भगवान !

शाम की प्रार्थना के बाद बापू ने आश्रमवासियों से कहा—यदि हम जिंदा रहना है तो गाय को जिंदा रखना होगा। गाय है तो बैल है बैल है तो खेती है और खेती है तो हम सबका जीवन है। स्वार्थ में ही परमार्थ निभता है। गाय को माता कह देने भर से उसे कितने दिन जिंदा रखा जा सकता है। उन्होंने आश्रमवासियों से कहा कि हम लोग आग्रह रखें कि गाय का ही घी दूध खायेंगे। बाकी काम घानी के तेल से चलाया जाय। बापू के कार्यक्रम ऐसे ठोस अनुभवों में से निकलते थे।

बापू के विचारों के मथन में से ऐसे विचार आते रहते थे।

° ° °

साबरमती आश्रम में मिस स्लेड आई। वह अविवाहित थी—बापू ने उनका नाम मीरा बेन रख दिया। धीरे धीरे उनपर बापू का रग चढता गया। खान-पान उठना-बैठना सबमें हिंदुस्तानीपन। जिस स्वाभाविकता से आश्रम जीवन को उन्होंने अपना लिया वह बापू की ही प्रेरणा से सभव हो सकता था।

वर्धा आने पर एक दिन मीराबहन ने बापू से कहा बापू आपको तो गाव में रहना चाहिए। तब बापू मगनवाडी वर्धा में रहते थे। बापू ने जमनालालजी से कहा, 'मीरा बहनी है कि मुझे गाव में रहना चाहिए। जमनालालजी बोले 'अभी कुछ ही दिन हुए मुझे सेगाव, जो यहा से ४ ५ मील दूर है मिला है वह मैं मीराबहन को दिखा दूगा। उन्हें पसद आया तो वहा रहने का इतजाम किया जा सकता है।

जमनालालजी ने वह जगह मीराबहन को दिखाई। वहां के कोठे, एक झोपड़ी, एक कुआ वगैरा वहा पहले ही बने हुए थे। मीराबहन ने कहा कि अगर बापू के लिए एक कुटिया बन जाय, तो चल सकता है। बापू बोले, "मेरे साथ रहने का लोभ छोड़कर एक-एक गाव की सेवा करने का काम तुम लोगो को लेना चाहिए।" मीराबहन बोली, "तो बापू—मैं वहा चली जाती हू।" तब भी मीराबहन की यही इच्छा थी कि एक कुटिया बापू के लिए बन जाय तो उन्हें भी वहा ले जाया जाय। लेकिन बापू से इजाजत लेने में तो सबको चतुराई ही बरतनी पड़ती थी। सो जमनालालजी ने बापू से कहा, "मीराबहन के लिए भी एक कुटिया तो वहा बनानी ही चाहिए, आखिर तो अंग्रेज बहन है, रहन की कुछ सहूलियत तो करनी ही चाहिए।" बापू बोले, "कुटिया बनाने मे मुझे एतराज नहीं है, लेकिन वह खुद अपने हाथ से बनाए और खर्च अधिक से अधिक १००) रु० हो।" मीराबहन राजी हो गई—उन्होंने मन में सोचा कि मैं बापू के रहने लायक झोपड़ी अपने हाथ से ही बनाऊगी।

मीराबहन बापू की सेवा करती और खाली समय में झोपड़ी बनाती। कच्ची मिट्टी की दीवारें उठाकर ऊपर फूस का छप्पर डाला। आखिर झोपड़ी बनकर तैयार हुई। अब मीरा की चतुराई चली। वह बापू से बोली, "बापू मैंने इतनी लगन से यह झोपड़ी बनाई है, इसमें आपको रहना चाहिए।" बापू उससे भी ज्यादा चतुर थे। बोले, "तू इससे आगे के गाव में जा तो मैं यहा आता हू।" मीरा इसपर भी राजी हो गई और जमनालालजी से दूसरी जगह देखने को कहा। जमनालालजी ने पास ही के वरोडा गाव मे जगह बताई। जब झोपड़ी तैयार हो गई तो मीराबहन वहा चली गई। लेकिन वहा से मीराबहन लगभग रोज ही सेगाव आती—कभी सोडा लेने तो कभी नमक। कस्तूरबा मजाक में कहती—"सोडा अनेमीठू रोज कई ओछू खलास थाय छे ! पण मीराए बापूनी पास रोज आवूज जोइये।"[1]

० ० ०

बापू सेवाग्राम में आये तो मानो वर्षा ने भी लोगो की परीक्षा लेना तय किया। घनघोर वर्षा—कई घर बह गए। बापू के विरोधी लोग कहते कि जबसे यह गाधी आया है, पानी ने पीछा पकड़ा है। अनुयायी लोग कहते—जो कुछ बचा है, वह गाधी का पुण्य समझो।

स्टेशन से सेगाव ५ मील और बजाजवाडी से ४ मील। जमनालालजी अतिथियो को स्टेशन से बजाजवाडी लाते, झटपट तैयार और नाश्ता कराके ७ = बजे सेवाग्राम भेजते, ताकि वे लोग ११ बजे भोजन के समय तक वापस बजाजवाडी आ जाय। दोपहर की गाडी से जाने वालो को खाना खिलाकर स्टेशन रवाना करते।

भारी संख्या में लोग बापू से मिलने आते थे। बापू तबतक स्थायी रूप से वहा बसे नहीं थे। अत लोग सोचते कि पता नहीं कब बापू चल दें। कोई पैदल पहुचता तो कोई बैलगाडी में। बापूजी मजाक में पूछते, "अपने पैरो से आये हो या जमनालाल के ?"

इन मिलनेवालो की भी मुसीबत रहती थी। जल्दी से सेगाव पहुचो और ११ बजे

1. सोडा-नमक का रोज-रोज खतम थोड़े ही हो जाता है। लेकिन मीरा को तो रोज बापू के पास आना है न।

खाने की घंटी बजने के पहले बजाजवाड़ी आ जाओ। उधर बापू का डर, इधर जमनालालजी का डर। सेगाँव का रास्ता खेतों में होकर जाता था। रास्ता क्या था पगडंडियाँ थीं। बरसात में कीचड़ वह भी काली चिकनी मिट्टी का। हाथ पर कपड़े, सब कीचड़ में। कहना की तो चप्पलें कीचड़ में ही रह जायें। एक हाथ से धोती ऊँची किये हुए और दूसरे हाथ में जूते चप्पल उठाए लोग बाग सेगाँव और बजाजवाड़ी के बीच चक्कर लगाया करते थे।

सरदार पटेल और घनश्यामदासजी ने बापू से कहा कि सेगाँव तक का रास्ता तो पक्का ही होना चाहिए। बापू ने कहा, 'अगर रास्ता पक्का ही करना था, तो फिर देहात में आने की मुझे क्या जरूरत थी? पैरों से रास्ता खुद ही बन जायगा। पैसा खर्च करने की क्या जरूरत?" जमनालालजी बोले, "रास्ता तो म्यूनिसिपलिटी भी बनवा सकती है।" बापू ने मना किया, "जरूरी काम तो वैसे ही चल जाता है।" पर सरदार यों ही छोड़नेवाले नहीं थे। बोले, 'बापू, आखिर हमारे समय की भी तो कोई कीमत है। सड़क, डाकघर, टेलीफोन, सवारी कुछ तो सहूलियत होनी चाहिए। इधर आपका डंडा—समय पर आओ तो मुलाकात होगी उधर जमनालालजी का डंडा—घंटी पर पहुँचो तो खाना मिलेगा।' लेकिन १० महीने तक यही क्रम रहा। बरसात खत्म होने पर कीचड़ तो सूख गया, लेकिन रास्ता तो वही खेतों में से ही था।

बापू के पास तो सभी जाति धर्म के लोग रहते थे। रहनेवालों का जीवन भी संन्यासियों के जैसा था। चाय बीड़ी तमाखू पान, नशा सब छोड़कर खादी, चर्खा, स्वावलंबन, सात्विक भोजन का कार्यक्रम! लेकिन वहाँ गाँव में रहनेवाले स्थानीय लोग इन सब बातों को क्या समझें? सेगाँव के कुएँ से आश्रमवासी पानी निकालने लगे, तो गाँववालों को कठिनाई हो गई कि बापू के साथ सभी जात धर्म के लोग हैं, हम इस कुएँ का पानी कैसे पियें? बापू के बाल काटने के लिए नाई को बुलाया तो बोला, "महाराज! मैं काट तो दूँ, लेकिन जातवाले मुझे जात बाहर कर देंगे।" बापू ने कहा, "ठीक है, जितना जातवाले सहन करें उतना ही उसे करना चाहिए।" दो वर्ष तक नाई को बापू की सेवा से वंचित रहना पड़ा।

लेकिन धीरे धीरे गाँव की कायापलट होने लगी। जिस गाँव में पहले दो आने रोज की भी मजदूरी मुश्किल से मिलती थी, वहाँ धीरे धीरे कताई, बुनाई आदि उद्योग शुरू हो गये। पढ़ाई का सिलसिला भी जारी हो गया। बापू ने गाँव को अपना कुटुंब ही बना लिया। और आज तो यह गाँव एक तीर्थ बन गया है।

सेगाँव का आश्रम बढ़ने लगा। गायें रखना जरूरी हो गया। बापू मीरा की कुटिया में और मीरा अगली कुटिया में गई। जगह की खींचातानी थी ही। बापू की कुटिया में एक कोने में खान अब्दुल गफ्फार खाँ, एक कोने में महादेवभाई का दफ्तर, एक तरफ बापू का खाना-पीना। ऊपर से मुलाकातियों की भीड़।

एक बार सेगाँव में मलेरिया फैला तो डाक्टरों ने बापू को सलाह दी कि जमीन पर सोने की बजाय पलंग पर मच्छरदानी लगाकर सोना चाहिए। लेकिन जगह की तंगी में बापू यह सुझाव कम मानते? और फिर उनका कहना था कि मच्छरों से बचाव तो सभी के लिए आवश्यक है और जब सब लोगों के लिए ऐसा प्रबंध होना कठिन है तो मैं अपने लिए कैसे कर

थे कि कितनी कठिनाइयों के बाद ये अधिकार बच्छराजजी ने प्राप्त किये थे। आज गांधी के चक्कर में आकर छोटे सेठ क्या कर रहे हैं? अगर सरकार अपना रूप दिखाये तो? ये विचार उन लोगों के मन में आते थे। लेकिन फिर तो बापू के उपदेशों से त्याग में ही उन्हें भोग दिखाई देने लगा।

रायबहादुरी लौटाने के वक्त की ही घटना है। वृद्धिचन्दजी पोद्दार जमनालालजी को समझाने गए। जमनालालजी पूजा में बैठे थे। वृद्धिचंदजी ने कहा—तुम्हारे पर सरकार की निगाह आ गई है, वह तुम्हारी बर्बादी के लिए लग जायगी। तुम अपनी जायदाद बाल-बच्चों और मित्रों के नाम कर दोगे तो पीछेवालों को आराम रहेगा आदि।

जमनालालजी बोले—'आप कहते हैं वैसा करूंगा तो जनता पर उसका असर उल्टा पड़ेगा। जनता कहेगी कि जायदाद बचाकर देशभक्ति करते हैं। यह जायदाद सरकार जब्त करेगी या हजम कर जायगी तो जनता में सरकार के प्रति अधिक रोष पैदा होगा। उससे सरकार की बाजू कमजोर होकर जनता का पक्ष प्रबल होगा।

बच्छराजजी स्वाभिमानी होने के कारण घर से भाग निकले थे और पुरुषार्थ से पैसे वाले बने। वह हृदय के सरल लेकिन स्वभाव के क्रोधी थे। गुस्सा आने पर वह फिर आगापीछा भूल जाते थे और कटुवचनों व गालियों की बौछार लगा देते थे। दूसरे ही क्षण सामनेवाले को बोलते—'अरे मेरी गाली तो घी की नाली है। ले, ये दो रुपये ले जा अपने बच्चे को लड्डू खिला देना।' नौकरों गुमाश्तों को उनके क्रोध की आदत सी हो गई थी।

इसके विपरीत बच्छराजजी की पत्नी सदीबाई में धार्मिकता कूट कूटकर भरी हुई थी। प्रतिदिन वह धार्मिक पुस्तकें बांचती, कथा सुनती। वर्धा में जितने भी साधु संत आते उनके लिए घर में लंगर हर वक्त खुला रहता। सदीबाई बच्छराजजी के लिए ८ बजे कलेवे का डिब्बा कारखाने में भेज देती और स्वयं ६ बजे भोजन कर लेती। कहती कि मैं तो पतिव्रता की जगह पेट भर्ता हूं। बच्छराजजी के निर्देशानुसार उनका भोजन छीके पर रख दिया जाता था। वह जब भी आते ठंडा, कच्चा पक्का या अलूना जैसा भी भोजन होता सब मिलाकर खा लेते। जल्दी से खाकर तुरंत फैक्टरी पहुंच जाते।

अन्न की आलोचना करना ही वह पाप समझते थे। यही उनका धर्म था। इसके अलावा दान धर्मादि उनकी पत्नी के ही जिम्मे था।

जमनालालजी बचपन से यह सब देखते थे। गुण ग्राहकता तो उनके स्वभाव में थी ही। सो हंस की तरह उन्होंने दोनों के गुण ग्रहण कर लिये। अपने दादा की तरह ही भोजन में मीन मेख निकालना जमनालालजी पाप समझते थे। हां—मेहमानों का वह पूरा ख्याल रखते थे। अपनी दादी की तरह अतिथि सत्कार में उन्हें बहुत प्रसन्नता होती थी। व्यापारी-बुद्धि उन्हें बच्छराजजी से मिली और व्यापार में धार्मिकता की भावना उन्हें दादीजी से प्राप्त हुई। ईमानदारी और सचाई से ही धन कमाना वरना व्यापार छोड देना—यह उनका सिद्धांत बन गया। इस बारे में पुराने मुनीम गुमाश्तों से उन्हें काफी संघर्ष करना पडा और अंत में उन लोगों को जमनालालजी की बात ही माननी पडी। यही कारण था कि व्यापारी समाज में उनकी साख बनी। व्यापार भी दिन दूना रात चौगुना बढा। आज तक वह साख कायम है।

इनसब चीजा का बदला कस चुकाए—आखिर वे तो कदी हो। इसका उन्ह बहुत मलाल रहता।

मैं कमला आम वगैरा कोई मिलन जाता ता कहते—इन स्त्रिया का गाना-नाच देखना और इनके पानी के घडा मे रुपये डालना प्रसाद के रूप म इन्ह कुछ बाटते जाना वगरा। परमाथ की भावना ता एसी थी कि बस उतावले रहते कि हर किसीको हर किसी तरह सुखी कर दे।

गाववाला को शेर का खतरा था तो नजरबद होते हुए भी राज से शिकायत की। झगडा किया। कुए दूर थ तो गाव म ही कुआ बनान को उत्सुक—आधा खच मैं दूगा आधा श्रमदान करो। उनका कहना था कि अगर सच्ची जरूरत होगी तो श्रमदान करके कुआ बनाएगे।

कुछ समय बाद तो गाववालो ने अपनी मुसीबत जमनालालजी स कहना ही छोड दिया कि हम तो सहज कह देंगे लेकिन सेठजी उन्ह दूर करन के लिए दिल जान लगा देंगे।

हम जब भी उनसे मिलन जाते वह जयपुर के सब मित्रा और कायकर्ताओ के घर का हालचाल पूछते। हमसे कहते कि हमे उन सबके यहा जाते रहना चाहिए उनके दुख-दद पूछना चाहिए कोई भी अडचन हो तो मुझे कहना आदि।

जेल से पत्र लिख लिखकर वह कायकर्ताओ का हौसला बढाया करते थे। देश के काम म परिवार के लोग आगे बढ़ें इसके लिए वह हमेशा सबको प्रोत्साहित करते रहते थे। विल पारले छावनी मे मैं शराब की दुकाना पर पिकेटिंग करती भाषण देती। जमनालालजी जेल म थे। मेरे भाषण वगैरा की खबरें जमनालालजी जेल म पढ़ते। सो जेल से मुझे एक पत्र लिखा—

अभी तक लोग तुम्हे जमनालालजी की पत्नी के रूप म जानते है लेकिन जब मैं जेल स छूटकर आऊगा तो लोग कहेंगे कि जानकीदेवी के पति आये है।

उनका बडप्पन इसीमे था कि छोटे स छोटे व्यक्ति को भी इतना बढावा देते कि वह अधिक उत्साह और तेजी स काम करने लगता।

धुलिया जेल म जमनालालजी को ए वग मिला था—लेकिन उन्होंने जान-बूझकर सी वग लिया। जलर तो चाहते थ कि व ए म ही रहे तो अच्छा वरना य दूसरे कदियो को बिगाडेंगे। सी वगवाला को मशक्कत करनी पडती है। जमनालालजी न भी काम मागा। उन्ह सब काम बता दिय गए। उन्होने बला की जगह खुद मोठ स पानी निकालने का काम चुना। उन्ह प्रसन्नता थी कि हमारे द्वारा निकाला गया पानी बहना की बरक म भी जाता है।

जेल जान के पहले जमनालालजी न वर्धा म मुझे कह दिया था कि मदालसा और ओम का झडा लेकर धुलिया स सत्याग्रह म भिजवा देना। उन्ह सतोष था कि वे दोना भी इसी जेल म अन्य बहना के साथ रहेंगी। जेल म उनसे मिल पाना तो असभव रहता लेकिन यह अहसास तो उन्ह रहता ही कि मेरी लडकिया इस दीवार के पीछे अन्य बहना के साथ है।

ओम् और मदालसा को धुलिया स सत्याग्रह म भेजना—यह बात वर्धा म तो मुझे जच

गई। लेकिन जब कुछ ही रोज बाद एक आदमी धुलिया से आया—ओम और मदालसा को लेने तो [illegible] मैं असमंजस में पड़ गई। ओम् को भेजने में संकोच कम था—कारण कि वह शरीर से मजबूत थी। लेकिन मदालसा की तबीयत ठीक नहीं थी और वैसे भी वह कुछ ज्यादा ही नाजुक थी। मेरे मन में विचार था कि वह जेल-जीवन को कैसे बरदाश्त कर पायेगी। मैंने उस धुलियावाले आदमी से कहा—भाई इन १२-१४ वर्ष की लड़कियों को जेल क्या भेजना? सो वह लौट गया।

बाद में जब जमनालालजी को पता लगा तो बोले—भेज देतीं इन्हें तो तुम्हारा क्या बिगड़ता? मैं भी सोचती कि भेज ही देती तो अच्छा था। कुछ अनुभव मिलता इन लड़कियों को। मदालसा को तो अब भी अफसोस है कि सारा देश जेल गया, लेकिन मां ने ममतावश मुझे ही जेल की तपश्चर्या से वंचित रखा।

जमनालालजी पुलिस-कचहरी के हमेशा विरुद्ध थे। जहांतक बन पड़े अपने झगड़े आपस में ही निबटा लेने चाहिए, ऐसा वह सोचते थे और ऐसा ही प्रयत्न भी करते थे। वर्धा की दुकान पर एक मुनीम थे—बहुत पुराने और ईमानदार। एक बार उनके लड़के ने दुकान पर चोरी कर ली। उन्होंने फौरन पुलिस को बुलाया और लड़के को पुलिस के हवाले कर दिया। जमनालालजी कहीं बाहर गये थे। लौटकर आये तो उन्हें पता चला। उन्हें बहुत दुःख हुआ। पुलिस बुलाकर मुनीमजी ने अपने लड़के और घर की इज्जत गंवाई। और जेल जाकर यह १८ वर्ष का लड़का सुधरने से तो रहा, बल्कि एक बार जेल जाकर तो वह और भी बदनाम हो जायगा। अगर आज मेरा लड़का चोरी करता तो आदि विचार उन्हें आये। लड़के को उन्होंने बुलाया और ऊपर ले जाकर घंटा उसे समझाया, लड़के ने भी गलती कबूल कर ली। हो सकता है कि पुलिस के सामने वह गलती कबूल ही नहीं करता।

दृढ़ता और निर्भीकता जमनालालजी के विशेष गुण थे। राजस्थान के बगड़ गांव में जमनालालजी ने सेवा-समिति की स्थापना की। राजा ने सोचा—जरूर यह कोई साजिश है। सेवा-समिति के सदस्यों को पकड़कर बन्द कर दिया। उन्हें तितर-बितर करने के लिए घोड़े दौड़ाये। जमनालालजी को राजा ने [illegible] किया। जमनालालजी राजा से मिलने बगड़ गए। राजा ने कहा—बगैर टोपी पहने मिलना। जमनालालजी ने निर्भीकता से कह दिया—'टोपी नहीं उतारूंगा। मिलना हो तो मिलो।' राजा मिले—जमनालालजी ने उन्हें समझाया। वह मान गए और लोगों को छोड़ दिया।

स्कूल-कालेज की पढ़ाई में हालांकि जमनालालजी अधिक आगे नहीं बढ़ सके, फिर भी अध्यवसाय से अपना व्यवहार-ज्ञान उन्होंने इतना बढ़ाया था कि व्यावसायिक और सार्वजनिक जीवन में उन्हें अत्यधिक सफलता मिली। बड़े-बड़े व्यापारी और नेतागण तक इनसे सलाह-मशविरा किया करते और उनके व्यवहार-ज्ञान की दाद देते थे।

नेहरू-परिवार से हमारा घनिष्ठ संबंध था। जमनालालजी का उस परिवार में बहुत असर था। हालांकि पश्चिमी ढंग का नेहरूजी पर काफी प्रभाव था, फिर भी जमनालालजी तो अपना जादू चलाते ही थे।

एक बार गर्मियों में नेहरू-परिवार के साथ घूमने का प्रोग्राम बनाया। शाम के समय

रामनारायणजी रुइया की पत्नी के साथ हम सब घूमने जाते। अब मेरे सामने समस्या कि रोज नये कपड़े कहां से लाऊं। तो मैंने एक तरीका निकाला। एक ही साड़ी और ब्लाउज दो दिन चलाती। तीसरे दिन बदलती। वे लोग मेरी साड़ी की बड़ाई करते। मैं कहती—जी, रोज घूमने जाना और आधा घंटा यही तय करने में लगाना कि आज कौन-सा कपड़ा पहनें, इससे अच्छा दो दिन एक ही कपड़ा पहनना—दो दिन का तो आराम रहे।

सुव्रताबाई को जमनालालजी धर्म-बहिन मानते थे। उनका नाम गुलाबबाई था, लेकिन जमनालालजी ने बदलकर सुव्रताबाई रख दिया। चूंकि उस परिवार में पश्चिमी जीवन का ज्यादा रंग था, इसलिए जमनालालजी की इच्छा रहती कि उन्हें साधु सन्तों की संगति मिले।

रामनारायणजी बीमारी से पीड़ित थे। डॉक्टरों का इलाज तो चलता ही था, लेकिन जमनालालजी ने सोचा कि अगर इन्हें आध्यात्मिक खुराक भी मिले तो उससे आराम मिलेगा। इस विचार से जमनालालजी ने अच्युतस्वामी से उनका साथ कराया। फिर श्री केदारनाथजी का साथ करने का सोचा। लेकिन उसके लिए सुव्रताबाई और रामनारायणजी को भी राजी करने की समस्या थी। नाथजी श्री किशोरीलालभाई के गुरु थे। और जमनालालजी भी उन्हें बहुत मानते थे। घर बार, खर्च, व्यापार आदि में सब उनसे सलाह लेते थे। लेकिन रामनारायणजी को साधु सन्तों से काम ही क्या? अंत में जमनालालजी की बात का उनपर असर हुआ और नाथजी के आध्यात्मिक ज्ञान का उनपर अच्छा प्रभाव पड़ा।

बापूजी के पांचवें पुत्र बनने से पहले जमनालालजी तीन वर्ष तक सर जगदीशचन्द्र बोस के पुत्र बनकर रहे थे। कलकत्ता में कई बार उनके दर्शनों के लिए जमनालालजी मुझे उनके यहां ले जाते थे। उनकी बहुत ही तारीफ करते थे। पर मैं क्या समझती कि विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने कितना भारी योगदान दिया है? दिखने में तो बिलकुल ही साधारण व्यक्ति लगते थे। ऐसी गुदड़ी पर एक कोने में बैठे रहते थे। रौब का तो काम ही क्या था? पर मुझे जानना चाहिए था कि गुदड़ी में भी लाल होते हैं।

एक बार वर्धा स्टेशन से गुजरे तो जमनालालजी कमला और कमल को स्टेशन ले गए थे। बेटे की बेटी आई है, तो उसे प्रेम भेंट देनी यह सोचकर श्री बोस ने अपने हाथ की चांदी की चौकोर घड़ी कमला को दी। कई वर्षों तक वह घड़ी मैंने इस्तेमाल की। एक बार लक्ष्मणगढ़ गई थी तब वह चोरी हो गई। मुझे उस घड़ी के चले जाने का बहुत अफसोस हुआ था और आज भी है।

जगदीशचन्द्र बोस की लेबोरेटरी के लिए जमनालालजी ने बहुत सहायता की थी। वह बोस को बहुत ही तपस्वी, विद्वान और देश का भला करनेवाला मानते थे। मैं जब जब उनसे मिली उनकी सरलता और सहृदयता की ही छाप मुझपर हमेशा पड़ी।

राजाजी बापू के मित्र व समधी भी थे। दोनों के विचारों में अक्सर मतभेद हो जाता। तब कई दिन तक आश्रम में बैठकर विचार विनिमय करते रहते। एक दिन तो घंटा कुटिया के बाहर खटिया पर बैठे आपस में बातें करते रहे। प्रार्थना का समय हुआ तो बापू को हमने यह कहते हुए सुना— राजाजी मैं आपको अपने विचार शब्दों में समझाने में असमर्थ हूं। राजाजी

ने जवाब दिया— 'बापू, मेरा भी यही हाल है।' दोनों अपने-अपने विचारों में पक्के थे। लेकिन दोनों के बीच प्रेम और श्रद्धा अटूट थी। दरअसल उस जमाने की राजनीति का स्तर इतना ऊंचा था कि विचार भेद कभी व्यक्तिगत मनोमालिन्य का कारण नहीं बना।

राजाजी अक्सर कांग्रेस कार्यसमिति की बैठकों में भाग लेने वर्धा आया करते थे। हमारे परिवार से घनिष्ठता होती गई और फिर तो वह भी परिवार के सदस्य की तरह ही हो गये। मद्रासी भोजन रसम आदि के वह बहुत शौकीन थे और खुद ही रसोई में आकर मसाला वगैरा जो चाहिए इधर-उधर तलाश करके ले लेते।

नागपुर झंडा सत्याग्रह में जमनालालजी जेल गए। उस दिन सारे वर्धा में सन्नाटा छाया हुआ था। रात को गांधी चौक में राजाजी का भाषण हुआ। बहुत ही मार्मिक भाषण था वह। उन्होंने कहा कि राम-वनवास के समय जो हाल अयोध्या नगरी का था वही हाल आज जमनालालजी की जेल-यात्रा के कारण वर्धा-नगरी का हो रहा है।

राजाजी की बड़ी पुत्री 'पापा' बाल विधवा थी। जमनालालजी उसे अपनी पुत्री की तरह ही चाहते थे। उन्होंने मद्रास में एक छोटा-सा मकान खरीदा था। बाद में उसे पापा के नाम कर दिया।

माखनलाल चतुर्वेदी (दादा) को जमनालालजी अपने बड़े भाई के रूप में आदर देते थे। उनसे हर बार मिलकर उन्हें बहुत ही आनंद होता था। दादा विद्वान तो थे ही, त्याग और सादगी की भी वह एक मूर्ति थे। इन तमाम गुणों के कारण 'एक भारतीय आत्मा' (जिस उपनाम से वह कविताएं लिखा करते थे) नाम वस्तुतः ही सार्थक लगता है। जमनालालजी जब खंडवा के आस पास भी जाते, तो खंडवा जाकर दादा से मिलने की कोशिश उनकी हमेशा रहती।

एक बार दादा वर्धा आये तो जमनालालजी बहुत खुश हुए। सुभद्राकुमारी चौहान और दादा की कविताएं सुनी और भावविभोर हो गये। दादा के गुणगान करते तो वह थकते ही नहीं थे।

दादा से मिलकर मुझे भी कविता लिखने का शौक चर्राया। कविता बनाने में मुझे रस तो खूब आता है, लेकिन तुक मिलाना बहुत कठिन लगता है। और फिर अलंकार, अनुप्रास का भी ज्ञान नहीं।'

कमल का जन्म हुआ तो स्त्रियों ने कहा—बाप बेटे को गोद में ले तब हाथ में कुछ देना है। तुम्हें तो क्या कमी है लेकिन बड़ी पोतियों में पुत्र रत्न हुआ है तो कुछ शगुन करना ही चाहिए। ४० दिन बाद जमनालालजी जापे की कोठरी में आये। मैं कमल को गोद में देने लगी तो पहले तो शरम से गोद में लें ही नहीं। उस जमाने के रीति-रिवाज ऐसे ही थे। मैंने उनसे कहा—स्त्रियां कहती हैं कि बेटे के हाथ में शगुन का कुछ देना है। वह बोले—छोटी दुकान में तुम्हारे पोहर का ५०० रु० जमा है, उसीमें १००० रु० और जमा करा देंगे। बेटे का इनाम मां को मिला समझ शायद थोड़ी खुशी हुई हो, बाकी पैसा जान की खुशी का सवाल ही कहां? अब्बल, कपड़ा पर कुछ भी लो और सही कर दो—नकद लेन-देन से तो भगवान ने हमेशा ही बचाया।

जेवर भी डालूराम नौकर सभालता था। ताला कुजी मुझे देने मे भी डरते थे कि मैं कही खो दू—या कुछ दे डालू किसीको। फिर बापू के आने के बाद ताला कुजी लगाते भी कहा। खुद ही खुले पडे थे। इसलिए मेरे लिए हजारो लाखो 'कागज के टुकडो' की कीमत क्या हो। हा—, छोटी थी तब जावरा—मेरे पीहर—मे मालिनो से आम-जाम वगैरा लेते थे तो उसे धेला छदाम कुछ देते थे। इसलिए आना पसा, पाई से जितना प्यार है उतना रुपये के नोटो से नहीं।

जब राम का जन्म हुआ तब जमनालालजी नागपुर जेल मे थे। अब बेटे की बधाई मे मुझे पत्र लिखा तो खुश (राजी) करने के लिए क्या लिखे? सो याद आया होगा कि कमल को १००० रु० दिये थे। तो पत्नी को खुश करने के लिए रकम का आकडा लिखा। अगर वह वर्धा मे ही होते उस समय तो यह तुच्छ विचार रुक जाता। पर दूर थे तो ११०० रु० लिख दिये। मुझे तो क्या खुशी होती? मेरे लिए तो एक लाख रुपया या एक रुपया समान था। अत मैंने उनके उसी पत्र मे लिख मारा कि जब हम अपना जीवन सार्वजनिक सेवा मे ही लगाना है तो पसो का मूल्य तो नही रहा।

गाधी चौक मे हमने तो सारी रकम बेटे और बहुओ मे बाट दी। व्यापार आदि की झझट से मुक्ति पाने की कोशिश मे ऐसा उन्होने किया होगा। मैंने मजाक मे सहज भाव से कह दिया कि मुझे तो आपने कभी एक कौडी भी नही दी। मेरे पीहर के ५०० रु० थे वे भी राम जाने। तब थोडी गभीरता से वह बोले—तुम्हे पसो का करना ही क्या है? लेकिन बाद मे दुकान वालो से उन्होने कहा कि २५००० रु० जानकीदेवी के खाते मे छोटी दुकान मे डाल देना। पसे के कारण मुझे हर्ष या शोक होने से रहा। सारा मन एक ही तो था। मैंने वह सारी पूजी खादी मे ही खर्च करने का तय किया। कारण कि मेरा खर्च तो कुछ खास था नही। जहा घर मे १०० ५० मेहमान रहते ही थे हमेशा वहा एक मैं भी। जमनालालजी की सपत्ति गो सेवा और बापू के अर्पण ही थी। जहा का फूल वही चढ गया।

मैं स्वभाव से कजूस हू। लोग भी कहते है और मैं भी जानती हू। एक बार सुमन (कमल की लडकी) ने कहा— दादीजी आप फटी साडी भी नही दे सकती हो किसीको, तो नई तो क्या दोगी?'

एक बार राम ने मजाक मे कहा कि मा को सेकड हैड चीजो की दुकान खोल देनी चाहिए। उसने भले ही मजाक मे कही हो लेकिन यह बात मुझे बहुत ही पसद आई। मन मे विचार आया कि जो चीज कोई बेकार समझे वह दे जाय और किसीको वह चीज अच्छी लगे और जरूरत हो तो सुविधाजनक कीमत पर ले जाय उसमे हर्जा क्या है? मैं इधर उधर का निरुपयोगी सामान जुटाती हू और सस्थाओ मे जहा उनका उपयोग होता है या हो सकता है दे आती हू।

एक बार गाडगे महाराज को जमनालालजी ने लक्ष्मीनारायण मदिर के उत्सव मे बुलाया। कीर्तन भजन चल रहा था कि गाडगे महाराज मुझसे बोले—'जमनालालजी के महल मानिया का अपना मानोगी तो इतना ही तुम्हारा है और इनको छोडोगी तो जग तुम्हारा होगा। मुझे देखो मैं एक मिट्टी की लुटिया लेकर फिरता हू तो सारी दुनिया मेरी है, हजारो लाख भेंट मे आते हैं और मैं बाट देता हू"।

कई बार यह भी ख्याल आ जाता है कि अपने लक्ष्मीनारायण मंदिर में थोड़ी सफाई करके झाड़ू निकालकर खाने में भी हरजा नहीं है—हां, यह बात जरूर है कि रसोई बनाने और झाड़ू निकालने का मुझे संताप ही रहा है। और वैसा निभ भी गया मेरा। कारण कि बापूजी की चर्चाओं आदि से प्रभावित होकर गेहूं की रोटी के बदले कच्चा गेहूं भिगोकर खाने में ज्यादा सुख मिलता है। इस तरह मेहनत से भी बचे, गेहूं भी कम लगा और लाभ तो ज्यादा है ही—कम से कम मुझे तो।

सोने के बारे में भी यही हाल है। जबसे साबरमती में यह सुना कि कड़ी चीज पर सोने से रीढ़ की हड्डी सीधी रहती है तो वह बात मेरे गले उतर गई। तबसे हमेशा लकड़ी के पाट के पलंग पर ही सोना शुरू कर दिया—निवाड़ के पलंग पर सोना ही छूट गया। जमीन पर सोना तो सबसे अच्छा लगता है। निवाड़ का पलंग या लकड़ी के पाट का पलंग कहीं मिले, न मिले, लेकिन जमीन तो हर जगह होती है।

रुई का व्यापार घर में था लेकिन मेहमानों का तांता लगा रहता था सो उस भीड़-भाड़ में रजाई-गद्दी अपनेको कहां मिले ? फिर हर बार धोने वगैरा की भी झंझट। सो कंबल पर जूनी—पुरानी धोतियों का खोल बनाकर अपना काम सुख से चल जाता है। जमनालालजी कहीं भी जाने के पहले मना कर देते कि उनके बिस्तर में रजाई गद्दी नहीं रखी जाय कारण कि बिस्तर भारी हो जाता है और नौकर को उठाने में कष्ट होता है। लेकिन मेहमानों के लिए हर चीज का होना उनकी दृष्टि में जरूरी था—इस हद तक कि कई बार तो मुझे झुंझलाहट हो जाती।

कमला का बच्चा होनेवाला था तब की बात है। उसके लिए एक बहुत ही नरम और बढ़िया रजाई मैंने बनवाई। वह कमरे में रखी हुई थी। उसी दिन शाम को एक बहन ट्रेन से आई और बजाजवाड़ी में ही ठहरी। १०३ डिग्री बुखार और शरीर में फोड़े। जमनालालजी तो बस उतावले—इनके लिए बिस्तर लगाओ, रजाई लाओ वगैरा वगैरा। उनके हुक्म के आगे फिर नौकर और किसकी सुनें ? बस फौरन बिस्तर लग गए और कमलावाली रजाई उसे उढ़ा दी। मैंने सोचा—हे राम ! न जाने कैसा बुखार है क्या बीमारी है और कमला की नई रजाई उसे दी। अब यह रजाई कमला के काम कैसे आयगी ? और फिर वह कमला के काम आई ही नहीं।

ऐसे ही एक बार कोई मेहमान वर्धा से गुजरनेवाली थीं। जमनालालजी मिलने स्टेशन गए। वहां गाड़ी ३-४ घंटे लेट। मेहमान को टी० बी० ! सो जमनालालजी ने नौकर दौड़ाया कि बंगले से जाकर बिस्तर ले आओ—उन्हें क्या बार-बार लाना ले जाना। आदमी आया और ताबड़तोड़ सामने जो भी बिस्तर बंधा दिखा ले भागा। जब मुझे पता चला कि यह बिस्तर तो उस टी० बी० के मरीज के लिए मंगाया गया है तो मेरी तो ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे। हे राम ! यह कहां की मेहमाननवाजी ! घरवालों का तो कुछ ख्याल करना चाहिए। लेकिन जमनालालजी की तो बस यही इच्छा कि जिसकी जितनी सेवा इस जन्म में हो सके कर लें।

तो इनसब झमेलों से छुट्टी पाने के लिए यही तय किया कि रुई के बिस्तर के इस्तेमाल

से ही बचना ।

एक बार मैं सावित्री के पास मसूरी गई थी । उसने मेरे लिए निवाड़ के पलंग पर बिस्तर लगवा दिया । मैं काफी थकी हुई थी सो लेट गई । लेकिन नींद नहीं आई । फिर मुझे ख्याल आया कि पलंग की ही गड़बड़ है । अब जमीन पर सो जाऊं तो नींद तो आ जाय लेकिन नौकर लोग जूते पहनकर घूमते हैं । फिर सुबह जल्दी उठने की आदत नहीं—और बहू अगर ऐसा सोते देख लेवे तो उसे बुरा लगे । जैसे-तैसे रात काटी । सुबह सहज भाव से बहू से गई रात का किस्सा सुनाया । वह बोली—तो फिर आप नीचे ही सो जातीं—कम-से-कम नींद तो आ जाती । तो मुझे ध्यान आया कि चलो जमीन पर तो सो सकूंगी अब । लेकिन सावित्री तुरंत रिक्शा में बैठकर बाजार गई और लकड़ी के पाटे का आर्डर देकर आई जो उसी दिन शाम तक आ गये । मैंने पूछा कितने के हैं तो वहां कौन बताये । बाद में पता चला कि ३५ रुपये के थे । रात को तो मैं उन पर सुख से सोई लेकिन जब मसूरी से आने लगी तो जी दुखा कि अब इन पाटों का क्या होगा? घर के बच्चे उनपर सोएं तो उनकी कमर सीधी हो जाय । लेकिन उन्हें तो चाहिए निवाड़ का पलंग और मोटे नरम गद्दे । आज के फैशन के जमाने में ये चीजें भला थोड़े ही चलती हैं ।

जमनालालजी का स्वर्गवास

स्त्री को पति का सही महत्त्व उसकी अनुपस्थिति में ज्यादा महसूस होता है । वैसे तो बेटे बेटियां पोते आदि की ममता भी स्त्री के लिए कम नहीं होती पर पति के समय घर में जो अधिकार स्त्री का होता है वह बच्चा बेटा के राज में नहीं होता । यदि स्त्री उदास है उसके मन में कुछ दर्द या कष्ट है उसकी आंख में पानी है तो पति पिघल जाता है, और वह जिस तरह पत्नी को खुश करने के लिए उत्सुक रहता है वह बात बेटों पोतों में कैसे आ सकती है । सिर में दर्द है पत्नी का चेहरा उदास है तो पति चाहे जितना थका हुआ हो अपनी थकावट और कष्ट भूलकर पहले पत्नी को संभाल लेगा । उसे संतोष देने का प्रयत्न करेगा । पर कोई यह समझ ले कि पति पत्नी में इतना अधिक स्नेह और आत्मीयता होने पर भी उनमें झगड़ा न होता हो तो वह भूल होगी । यदि अधिक से-अधिक झगड़ा किसीमें होता हो तो पति और पत्नी में ही । पति यदि अपना सारा गुस्सा कहीं उतारता है तो पत्नी पर ही । पति के लिए पत्नी से बढ़कर दूसरा कोई इतना निकट का आत्मीय नहीं होता ।

जमनालालजी का मुझपर बेहद प्रेम था और मेरा उनके प्रति अत्यधिक स्नेह और आदर । यदि एक तरफ भगवान हों और दूसरी तरफ जमनालालजी हों तो मैं भगवान की तरफ न देखकर जमनालालजी के साथ रहना ही अधिक पसंद करूंगी । यह कोई शारीरिक आकर्षण की बात नहीं थी क्योंकि वह संबंध तो हमने कई वर्षों पहले ही त्याग दिया था । फिर भी न मालूम उनके प्रति ऐसा कौन-सा आकर्षण था कि मैं उनकी सेवा और सुख-सुविधा के पीछे पागल बनी रहती थी । यह तबकी बात है जब हमारी उम्र काफी प्रौढ़ हो गई थी और हमने शारीरिक संबंध सर्वथा त्याग दिया था । अब रात को जब भी आंख खुलती तो देखती कि कहीं वह जग तो नहीं गये और वह न भी जग हों तो जग जायंगे और मैं सोती ही रहूंगी, ऐसी चिंता सदा मन में बनी रहती थी । जागने पर उनके विषय में हजार तरह की चिंताएं आती रहती ।

हमारे परस्पर के प्रेम में न मालूम कितने हिस्सा बटानेवाले थे, जो हम निकट नहीं आने देते। इसमें आपस में चखचख चलती ही रहती। मैं चाहती थी कि वह सेवा लें तो मुझसे ही लें। उन्हें कोई अपनी सेवा करवानी हो तो मुझसे करवायें और कहें। लेकिन उनकी सेवा करने के लिए तो एक फौज सी ही तयार रहती थी। मुझे अवसर ही कहां मिलता। नौकर सेक्रेटरी कार्यकर्ता आदि के कारण उनके और मेरे बीच जो खाई बन गई थी उस कैसे पाटा जाय। यदि उन्होंने स्नान के लिए कपडे मांगे तो नौकर दौडे। बाहर जाना है और पानी पीना है तो पानी लेकर दूसरे ही तयार रहते, सर में दर्द हो रहा है तो मलने के लिए मेरा नंबर ही नहीं लगता। मेरी व्यथा वह जानते न हों सो बात नहीं पर दूसरे का मन भी दुखाना नहीं चाहते थे। मेरा मन दुखने पर मुझे तो समझा भी सकते थे और आखिर मैं तो उनकी थी ही, पर दूसरों की मनोभावना का ध्यान तो उन्हें प्रथम करना पडता था, इसलिए मैं रात दिन ईर्ष्या की अग्नि में जला करती थी।

यह बात सही है कि वह महान थे। उनका काम करना या अनुकरण करना मेरे बस की बात नहीं है। पर जितना कर सकती हूं उतना ही करूं कुछ तो इस विचार से और कुछ अधिकार रहित बन जाने के कारण मेरी गुस्सा पीने की आदत बन गई है क्योंकि अब मेरे गुस्से का मूल्य भी क्या है और जलन तो मिट ही गई है। यही कारण है कि मैं उनके बिना भी इतनी दीर्घ अवधि तक जीवित हूं और अच्छी तरह जीवित हूं। अब रात को जल्दी सोकर भी ६ बजे तक सोती रहती हूं। पहले तो नींद खुलती और उनकी चिंता करती अब न उनकी चिंता ही करनी पडती है और न उनकी सेवा दूसरे करें ऐसी डाह ही रही है। फिर मैं यह कैसे कहूं कि उनके जाने में मुझे दुःख हुआ और यदि हुआ तो अपने स्वार्थ के लिए ही हुआ था। वह जाने से इसलिए सुखी हुए कि उन्होंने सेवा में अपने शरीर को इतना घिस डाला था कि वह बिलकुल खोखला बन गया था। हां, यह बात सही है कि यदि वह आज रहते तो देश का, हजारों नहीं लाखों का भला करते। पर वह कैसे टिकते उनके कष्टों को देखकर ही तो भगवान ने उनपर दया की। उन्हें अपने पास बुला लिया।

६ फरवरी, १९४२ की बात है। राधाकृष्ण एक पुराने नौकर बृजलालजी को जमनालालजी के पास गोपुरी ले गया और बोला— बृजलालजी का दुकान या ग्राम सेवा मंडल कहीं भी जमना मुश्किल है तो आप कहें वैसा करें। जमनालालजी ने कहा— 'बृजलालजी, तुम फिकर मत करो काम बहुत है। दो दिन में गोपुरी से कारावाडी के रास्ते में जो गड्ढे हैं और जो ऊबड-खाबड हिस्सा है उसे पाट दो।'

बृजलालजी ने १० ता० को ही सारा रास्ता साफ करवा दिया। ११ ता० को सुबह जमनालालजी उस साफ रास्ते से होकर आस-पास की संस्थाओं का चक्कर लगाते हुए लक्ष्मी नारायण मंदिर, खादी भंडार और वहां से दुकानवाले घर पर गये। उसी दिन ३ ४ बजे उनका शरीरांत हुआ। अजीब संयोग है। वर्षों तक उस ऊबड खाबड रास्ते पर चले अंतिम समय साफ रास्ते पर होकर गये। उस दिन सभी बातें अर्थभरी हुई—आज सोचने पर ऐसा लगता है। सुबह दुकान जाते समय मुझसे बोले— 'लोगों के आने में देर है तुम साथ चलो—रास्ते में बातें करते चलेंगे। इतने में रामनारायणजी चौधरी वगैरा आ गये तो उनसे बोले—'अभी तो

जानकीदेवी को समय दिया है। सो वे लोग राजी से अलग दूर चलने लगे। मुझे कुछ डर-सा लगने लगा—आखिर आज खास बात क्या करनी है मुझसे ? मेरे पास तो इधर उधर की शिकायतों के अलावा और बात ही क्या—और उससे उन्हें तो खुशी होने से रही। तो मैं बोली— आज ही ऐसी क्या बात है ? इन लोगों से बातें करो। खैर—वह उनसे बात करते हुए चले। लेकिन मुझे अब भी सोच बना रहता है कि ऐसी क्या बात है जो उस दिन मुझसे करना चाहते थे।

दो एक दिन पहले ही उन्होंने मुझसे कहा था कि मृत्युपत्र ले आना, उन्हें रद्दी कर देंगे। मैं बोली— दुकान की तिजोरी में रखे हैं जाऊंगी तब लेती जाऊंगी। ११ ता० को जा रही थी तो लेती आती—लेकिन मौका ही नहीं आया। फाड़ने से रह गए तो अच्छा ही हुआ—उनसे जमनालालजी के बचपन से लेकर अंत तक के विचारों का पता चलता है।

जमनालालजी का मनोमंथन

जमनालालजी के मन में किशोरावस्था से ही आध्यात्मिक उन्नति व शांति के लिए विचारमंथन चलता था। उनके जीवन का यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू था। जीवन के अंतिम काल में माता आनंदमयी से मिलकर उन्हें असीम समाधान मिला था। विचारों की यह उथल पुथल किन्हीं विशेष कारणों से थी और उनके समाधान के लिए उनकी छटपटाहट अंत तक बनी रही। वे कारण विशेष क्या थे यह जानने के लिए जरूरी है कि पुनरावृत्ति होने पर भी संक्षेप में जमनालालजी के जीवन का लेखा जोखा लिया जाय।

सीकर के काशी का बास नामक गांव में जमनालालजी का जन्म हुआ। पिता कनीरामजी तीन भाई थे। तीनों भाइयों के परिवार एक ही हवेली में रहते थे हालांकि चूल्हा चक्की अलग था। ३० ३२ जनों से भरीपूरी हवेली थी यह। कनीरामजी की पत्नी बिरदीदेवी सुन्दर थी और जमनालालजी भी अपनी मां पर ही गये थे। गोरा चेहरा और भरा बदन मांजी उनके चेहरे पर जगह जगह काला रंग लगा देती थी कि कहीं नजर न लग जाय। खाना पीना खेलना-कूदना—एस ही जीवन गुजर रहा था।

वर्धा के सेठ बच्छराज बजाज सीकर आये। बच्छराजजी पांच भाई थे, लेकिन किसीके भी संतान नहीं थी। सो बच्छराजजी अपने दत्तक पुत्र रामधनदासजी को जात दिलाने सीकर गए। वहीं अकस्मात् रामधनदासजी की मृत्यु हो गई। सीकरवासी बहुत परेशान हुए उन्होंने सोचा कि इन्हें तो अब बच्चा देकर ही वापस भेजना चाहिए। रामधनदासजी के भी कोई संतान नहीं थी। सो वे बच्छराजजी काशी-का-बास कनीरामजी के यहां आये। बच्छराजजी की पत्नी सदीबाई भी काफी सुंदर थी। उन्हें पीढ़े पर बठाया। कुछ ही दिन पहले जमनालालजी की दादी (कनीरामजी की माता) का स्वर्गवास हुआ था। सदीबाई को देखते ही जमनालालजी दादी आ गई—दादी आ गई कहते हुए सदीबाई के पास आ गये। सदीबाई बोली कि यह तो मेरे पास आ रहा है। जमनालालजी की मां ने कहा— आपका ही है। सदीबाई ने गांठ बांध ली। जब कनीरामजी और बिरदीदेवी को बच्छराजजी के काशी-का-बास आने का कारण पता चला तो वे बहुत असमंजस में पड़े। बच्छराजजी और सदीबाई ने जमनालालजी को दत्तक लेने

का सुझाव कनीरामजी के सामने रखा। वृद्धिदेवी अपने बेटे को बहुत ही चाहती थी। जमनालालजी के अलग होने का सपने तक में ख्याल नहीं कर सकती थीं। अत में कनीरामजी ने वृद्धिदेवी से कहा—'हम अपने वचन का तो पालन करना ही चाहिए चाहे फिर वह बात सहज भाव से ही क्यों न कही गई हो।'

बच्छराजजी ने कनीरामजी को भेंट स्वरूप कुछ धन देना चाहा। लेकिन कनीरामजी बहुत स्वाभिमानी व्यक्ति थे। वह इसके लिए किसी भी तरह तैयार नहीं हुए। अत में बच्छराजजी व गाव के अन्य लोगों के बहुत आग्रह करने पर कनीरामजी ने कहा कि यदि आप कुछ करना ही चाहते हैं तो इस गाव में एक कुआ खुदवा दीजिए ताकि यह गाव जल-कष्ट से मुक्ति पा सके।

इस तरह ५ वर्ष की उम्र में जमनालालजी बच्छराजजी के दत्तक पौत्र होकर राजस्थानी क्षेत्र काशी-का बास से महाराष्ट्र में वर्धा गए। प्रात बदला, भाषा, रहन-सहन खाना पीना सब कुछ बदल गया। फिर काशी-का बास में चहल पहल से भरा घर उन्मुक्त वातावरण था। वह सब छोडकर वर्धा के सुनसान घर में आना पड़ा जहा जमापूजी तीन प्राणी बच्छराजजी सदीबाई और गोद की विधवा मा बसतीबाई। न किसीसे जान न पहचान।

बच्छराजजी की पत्नी सदीबाई बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की भली स्त्री थी। जमनालाल जी पर उनका बहुत असर था। अपनी जन्म की मा की दूरी को वह सदीबाई की वजह से थोडा बहुत शायद भुला भी पाते, लेकिन जमनालालजी के ११ वर्ष के होते न होते सदीबाई का भी स्वर्गवास हो गया। इससे जमनालालजी अनमने-से रहने लगे। स्नेह का एक बहुत बडा आधार टूट गया था।

सदीबाई के जाने से बच्छराजजी को भी बहुत आघात लगा। उन्होंने सोचा कि पोते की शादी कर दें तो अच्छा बहू का मुहतो देख लें। १२ वर्ष की उम्र में जमनालालजी का विवाह मुझसे हुआ। मैं तो ६ वर्ष की बच्ची ही थी। हम दोनो ही विवाह के महत्त्व से अनभिज्ञ और एक-दूसरे से बिलकुल अपरिचित थे।

विवाह के समय जमनालालजी के जन्मपिता कनीरामजी को भी सपरिवार सीकर से बुलाया था। साथ में जमनालालजी के छोटे भाई बद्रीप्रसादजी भी थे। विवाह के बाद ही बद्रीप्रसादजी को मियादी बुखार आया और ८ दिन के बाद ही वह चल बसे। उनकी उम्र कोई ११ वर्ष की रही होगी। जमनालालजी और कनीरामजी पर तो जैसे दुख का पहाड ही टूट पडा। लेकिन अभी तो और भी दुख उनके भाग्य में बदे थे। करीब १० महीने बाद ही जमनालालजी की दत्तक मा का भी देहात हो गया। वर्धा का सुनसान घर और भी सुनसान हो गया।

जब जमनालालजी १७ वर्ष के हुए तब एक ऐसी घटना घटी जिसमें उनकी सपूर्ण मन स्थिति सस्कार भाव-स्वभाव का पूरा दिग्दर्शन हो जाता है। जमनालालजी को बाहर गाव किसी विवाह में जाना था। वह तैयार होकर दादा बच्छराजजी के पास आये। बच्छराजजी ने कहा कि कान में मोती की बाली तो पहन लो। जमनालालजी ने इतना ही कहा कि न पहनने से क्या फरक पडता है।

बच्छराजजी भले ही तेज स्वभाव के हों और हमेशा गालियों में ही बात करते हों, लेकिन जमनालालजी को वह बेहद प्यार करते थे। जमनालालजी का भी उनमें लगाव होना स्वाभाविक ही था। इस घटना के कुछ महीनों बाद ही बच्छराजजी का स्वर्गवास हो गया। जमनालालजी को आघात लगा। अगर कोई धीरज था तो यही कि जमनालालजी के संग बड़े भाई माधवलालजी साथ में ही थे और बच्छराजजी का कारोबार अच्छी तरह संभालते थे। विधि को शायद यह भी मंजूर नहीं था। कुछ समय बाद माधवलालजी को मियादी बुखार चढ़ा और नौ ही दिन में वह भी चल बसे। बहुत भारी सदमा जमनालालजी को लगा। वह इसे सह नहीं पाये और बेसुध हो गये। दादी का निर्मल प्यार, मां का लाड, दादीजी का स्नेह और भाइयों की ममता की याद उन्हें सताने लगी। उनका जन्मजात वैराग्य और भी तीव्र हो उठा। वह साधु बनने तथा गंगा के किनारे कुटिया बनाकर रहने की बात सोचने लगे।

अपनी बहनों की ओर से भी जमनालालजी को चिंता और दुःख था। मेरी तीन ननद थीं—तीनों ही मुझसे छोटी। एक दांतारामगढ़ में ब्याही थी विवाह के बाद एक बच्चा होने पर चल बसी। वह बच्चा भी न रहा। दूसरी बहन गुलाबबाई का विवाह डूडराजजी खेतान से हुआ था। उनके कोई बालबच्चा न होने से वह भी दुःखी। तीसरी केशरबाई। १२ वर्ष की उम्र में केशरबाई का विवाह फतेहपुर के जोरावरमलजी पोद्दार से हुआ। जोरावरमलजी अपनी गोद की चाची मां के कहने में थे सो केशरबाई ने बहुत दुःख भोगा। जमनालालजी ने दोनों में मेल कराने की दृष्टि से दोनों को वर्धा लाकर रखा, बाद में बंबई में व्यवसाय खुलवा दिया। कुछ समय बाद जोरावरमलजी केशरबाई और उनके तीन बच्चों को वर्धा बुला लिया और वे साथ ही रहने लगे। समय आनंद से गुजर रहा था कि जोरावरमलजी विषम ज्वर में चल बसे। बहन के वैधव्य का दुःख भी जमनालालजी को झेलना पड़ा। अबतक हमारे भी तीन बच्चे हो चुके थे। जमनालालजी चाहते थे कि केशरबाई के बच्चों की देखभाल हमारे बच्चों की तरह ही हो। मैं भी इस बात का बराबर ध्यान रखती। पहनने ओढ़ने, खान पान रहन-सहन में सादगी रखती। लगभग केशरबाई की तरह ही रहती। कुछ समय तो यह ठीक चला लेकिन बाद में छोटी छोटी बातों पर कभी कहासुनी भी हो जाती। कुछ तो वह भी केशरबाई के बच्चों का ही पक्ष लेते। समय पाकर मेरे मन में यह असर होने लगा कि जमनालालजी से लेकर घर के सब लोग केशरबाई का ही पक्ष लेते हैं। मेरे इस भाव का भी जमनालालजी के मन पर बोझ रहता था।

इस बीच जमनालालजी का संपर्क बापूजी से हुआ। उन्हें तो मानो मनभाते भगवान ही मिल गए। इतने दुःखों से तप्त उनके हृदय को बापूजी के कार्य जीवन विचार और शब्दों का चंदन मिला। उन्हें लगा कि बापू से एक नई जीवन दिशा उन्हें मिलेगी। बापू के हर आदेश को हर विचार को अपने जीवन में उतार लेने की उनकी साध सतत रहती। इस ओर वह मुझसे अधिकाधिक अपेक्षा रखने लगे। मेरे लिए तो उनकी वाणी वेदवाक्य थी। सो जैसा वह कहते करने का पूरा प्रयत्न रखती। गहना छूटा घूंघट छूटा विदेशी कपड़ों की होली जलाई, खादी को अपनाया सत्याग्रह में भाग लिया जेल गई आश्रम-जीवन अपनाया, सब किया। इस बारे में जमनालालजी को मेरी ओर से काफी संतोष था। और ऐसा वह कहते भी थे। अपने कई पत्रों में इसका जिक्र भी उन्होंने किया है। हालांकि यह अतिशयोक्ति ही थी, लेकिन वह मुझसे

कहा करते थे कि त्याग में तो तुम मुझसे आगे हो। एक बार उन्होंने बापू के सामने अपनी सारी जमीन जायदाद छोड़ने की बात कही। बापू ने मुझे बुलाकर कहा कि यह जमीन जायदाद तुम्हारे नाम कर दें? मैंने कहा—'बच्चे अपने भाग्य का खायेंगे। मेरा भाग्य तो इनके साथ बंधा है। जैसा ये खाएंगे पहनेंगे, वैसा मैं भी खाऊंगी पहनूंगी। जिस सांप को ये छोड़ रहे हैं, उसे मैं गले में क्यों लपेटूं।

लेकिन जहांतक उदारता व प्रेम का प्रश्न था, मैं उसे व्यावहारिक मर्यादा से ऊपर नहीं अपना सकी थी। उन्हें तो अपने और पराए बच्चों में समानता लगती थी। महिलाश्रम की लड़कियों की सम्हाल रखते और मुझसे कहते इनकी मां बन जाओ। लेकिन मैं दूसरे बच्चों को अपने बच्चों जैसा प्यार कैसे कर पाती! मैं तो अपने बच्चों को भी जैसा चाहिए वैसा प्यार नहीं कर पाई। उनके जैसी समान दृष्टि लाऊं, तो कहां से लाऊं। हर व्यक्ति को कुटुंबी जन के जैसा चाहना—यह हो सकना मुझसे कठिन था। उन्हें मेरा यह स्वभाव अच्छा नहीं लगता था। वह चाहते थे कि उदारता और प्रेम में मैं उनसे आगे निकलूं। पर यह मुझसे अंत तक नहीं बन पाया। दरअसल उनकी अति उदारता की वजह से मुझपर उसका उलटा ही असर पड़ता था। मैं सोचती—बाल विवाह के कारण पीहर अधिक नहीं रह पाई बच्ची होने के कारण ससुराल में भी आनंद नहीं मिला जब समझने योग्य हुई तो पति के साथ सुख और सौभाग्यवती होते हुए भी विधवा का-सा उदास और खिन्न जीवन ही बिताना पड़ा।

और भी कई बातें ऐसी थी जिनसे मुझे बहुत परेशानी होती थी। जमनालालजी के कान और सिर में बहुत दर्द रहा करता था। बहुत इलाज कराया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। मेरी झुंझलाहट इसलिए भी थी कि वह अस्वस्थ रहते हुए भी हमेशा नए नए झंझट मोल लेते रहते थे। अमुक स्त्री का पति मर गया, अब उसके घर का प्रबंध कैसे होगा, अमुक की शादी करवानी है, फलां कार्यकर्ता बहुत मुसीबत में है आज जो लोग आनेवाले हैं उन्हें कहां ठहराना और उनके लिए खाने में क्या बनेगा आदि। ऊपर से राष्ट्रीय सार्वजनिक कार्यों का बोझा। मैं चाहती थी कि वह कुछ आराम करें, लेकिन वह तो जैसे दूसरों के दुख दर्द को अपना दुख दर्द मान बैठे थे। अंत में वह इतना थक जाते कि मुझे भी उनसे बात करने में दया-सी आने लगती और मैं अपने बच्चों को भी उनके पास जाने और बोलने से रोकती। इस तरह जीवन में अस्वाभाविकता सी आने लगी। गुस्सा तो मन में रहता ही। लेकिन क्या करती।

मेरी इस दिन रात की अतिचिंता के कारण यदि मैं उनसे कुछ कहती तो वह दुराग्रह की सीमा तक पहुंच जाता। इससे उन्हें झुंझलाहट और बेचैनी होती।

धीरे धीरे मेरी अशांति बढ़ती गई। छोटी मोटी बातों को लेकर असंतोष भी बढ़ता गया और मैं चिड़चिड़ी बनती गई। मेरे स्वभाव को चिड़चिड़ा बनाने में नौकरों ने भी मदद की। जमनालालजी को खुश रखने के लिए तो वे बहुत दौड़ धूप करते, पर मेरी बात की अवहेलना की जाती। नौकरों के प्रति जमनालालजी का स्वभावगत उदार व्यवहार भी मुझे असह्य होने लगा।

जमनालालजी के मैनेजरिया का ठाठ तो और भी बढ़ा चढ़ा रहता था। जमनालालजी उनको बहुत स्वतंत्रता देते थे, उनके गुणों को खोजकर उनसे काम ले लेते थे। लेकिन मुझे तो

उसके अनुरूप मिल नही पाया। बापू और विनोबा के बाद जीवन म एक आध्यात्मिक मा की कमी उन्हें खलती थी। ४ ११ ३८ के अपने पत्र म बापूजी का वह लिखते हैं 'मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरे म जो कमजोरिया हैं व व जिन कारणा से घुसी हैं व भी मालूम है उनको निकालने की इच्छा भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परन्तु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसम प्रेम मया व उदारता भरी हुई हो जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवा म मेरे मन को शांति मिले। क्या इस प्रकार की बहन या भाई आपकी निगाह म हैं? अगर निगाह म हो तो क्या उसका मेरे साथ रहकर मेरी सेवा करना सभव है ? '

ऐसी मनोदशा लेकर वह माता आनदमयी से मिलने गये। जीवन म शायद पहली बार ऐसा शात सात्विक प्राकृतिक वातावरण उन्हें मिला था। कुटुब-कबीले की चिंताओ सावजनिक समस्याओ कायकर्ताओ की स्थिरता से कोसो दूर ऐसा रमणीक वातावरण पाकर शाति का आभास होना स्वाभाविक ही था। ऐसे शुद्ध वातावरण म जब माता आनदमयी से उनकी भेंट हुई तो उन्हें मनभाती-सी चीज मिल गई। मा से अन्य बाता के अलावा जमनालालजी ने एक इच्छा प्रकट की— मा मैं आपकी गोद म सो सकता हू ? वर्धा म भी जब जमनालालजी तडके सुबह उठते तो अक्सर अपनी जन्म की मा की गोद म सिर रखकर लेट जाते थे और उनसे भजन गाने का कहते। इससे उन्हें बहुत शाति मिलती थी। सो मैं कल्पना कर सकती हू कि इतने वर्षों के व्यवधान के बाद जब वह माता आनदमयी की गोद म सिर रखकर लेटे होंगे तो उनके रोम रोम को कितनी शाति मिली होगी।

कुछ दिन पहले इसी विषय पर श्रीमनजी से चर्चा हो रही थी। उन्होंने बताया कि मनोविज्ञान की खोजो से यह सिद्ध हुआ है कि कुछ व्यक्तियो को अपनी माता से बहुत लगाव होता है और वृद्धावस्था तक मे उन्हें अपनी मा की गोद की लालसा होती है। मन म यदि विकार आते भी हो तो मा की गोद म उन्हें एक मोड मिल जाता है और वे उच्च व पवित्र विचारो मे बदल जाते हैं[1] इस चर्चा के बाद मुझे जमनालालजी के जीवन उनकी आध्यात्मिक माता की भूख और जीवन के अत म मिली शाति म काफी सगति लगी। सारा सिलसिला मानो अपने आप जुडता चला गया।

तीन चीजो की कमी बचपन से ही जमनालालजी को सहनी पडी। पिता का स्नेह मा की ममता और गुरु का सान्निध्य। कालातर मे बापू से उन्हें पिता का मार्गदर्शन मिला और विनोबा से गुरु का ज्ञान। लेकिन सपूर्ण शाति तो उन्हें मा की गोद पाकर ही मिल सकती थी। वह भी ऐसी मा जो आध्यात्मिकता की खुराक उन्हें दे सके। बापू का मार्गदर्शन और विनोबा का ज्ञान पाकर जमनालालजी को एक उच्च आदर्श जीवन की कल्पना तो मिली, उस आदर्श के अनुरूप जीवन बरतने की अदम्य इच्छा भी उनके सहवास से जमनालालजी म गहरी हुई। लेकिन उस ध्येय तक पहुचने के लिए सतत उत्साह बनाये रखनेवाली मा उन्हें अबतक नही

[1] सुप्रसिद्ध मनोविज्ञान शास्त्री फ्रायड के अनुसार इस स्थिति को ओडिपस काम्पलेक्स (oedipus complex) कहते हैं।

मिल पाई थी और इस संबंध में उनका मानस मंथन तीव्रतर होता जा रहा था। माता आनंदमयी से मिलकर आध्यात्मिक मा की उनकी खोज पूरी हुई।

माता आनंदमयी के पास से लौटकर वह वर्धा आये। सब सार्वजनिक व व्यापारिक कामों से उन्होंने अपने-आपको मुक्त कर लिया। सिर्फ गोसेवा का काम उन्होंने अपने जिम्मे लिया और गोपुरी में एक झोंपड़ी बनवाकर उसमें रहने लगे। कुछ समय बाद मुझे भी वहां ले गये। अब उनका चित्त काफी शांत हो गया था। बापू को उन्होंने लिखा भी—'मुझे अपने काम में, गोसेवा संघ में व पू० विनोबा के साथ या अकेले ही देहातों में घूमने में ठीक शांति व उत्साह मिलता जा रहा है। मेरी गाड़ी ठीक चल रही है।"

११ फरवरी, १९४२ को रक्तचाप बढ़ जाने के कारण जमनालालजी का देहावसान हुआ। इस सारे जीवन पर दुबारा नजर डालती हूं, तो लगता है कि हमारे जीवन में जो स्थिति निर्माण हो गई थी उसके कारण यदि जमनालालजी न जाते तो मुझे जाना पड़ता। उनके जाने की तात्कालिक प्रतिक्रिया मेरे मन पर यही हुई कि मैं उनकी चिता में जलकर सती बनूं। बापूजी से मैंने कहा भी। आज सोचती हूं तो लगता है कि एक समय वह इच्छा जरूर थी लेकिन उस समय तो यह बात मैंने केवल आवेश में ही कही थी। उनके जाने बाद ३० वर्ष मैंने निकाल दिये। मेरा कहीं कुछ तो नहीं हुआ। खाती हूं, पीती हूं, सभी काम तो चल रहे हैं। बल्कि यह कहूं तो भी झूठ न होगा कि मैं आज विशेष दुखी भी नहीं हूं, क्योंकि मेरी ईर्ष्या व जलन छूट गई। जमनालालजी की चिंता नहीं रही और उनके गुण ही गुण याद आते हैं।

जब मैंने अपने मन की स्थिति स्व० महादेवभाई की पत्नी दुर्गाबहन को कही जो रो-रोकर महादेवभाई के पीछे आधी रह गई थी तो वह कहने लगी—"जानकीबहन, यह क्या कहती हो कि जमनालालजी के चले जाने से तुम्हें दुख नहीं हुआ?" मैंने कहा, "दुर्गाबहन, यदि मैं उन्हें प्राण देकर भी बचा सकती तो जरूर बचाने का प्रयत्न करती। लेकिन जब देखा कि मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती, तो फिर रोना और दुखी होना व्यर्थ माना। बस! अब तो मुझे यही अच्छा लगता है कि मैं कर सकूं उतना उनका काम करूं। रोने-धोने से लाभ भी क्या है? उल्टे बहुत हैं रोने से जाने वाली आत्मा को कष्ट होता है।

जमनालालजी के पूरे जीवन पर जब भी सोचती हूं तो हमेशा यही लगता है कि वह एक 'योगभ्रष्ट' योगी थे। कुछ जीवन बाकी रह गया था, वही भोगने आये थे।

विनोबा : मेरे भाई

विनोबाजी २२-२३ वर्ष की उम्र में घर से विरक्त होकर निकले थे। निकले तो थे हिमालय जाने के लिए, लेकिन रास्ते में बापू रूपी हिमालय उन्हें मिल गए। बापू के बनारस के भाषण से इतने प्रभावित हुए कि उन्हीं में रम गए। प्रायः मौन ही रहते थे और आवश्यकता के अलावा बोलना उन्हें काँटों के समान लगता था। जमनालालजी के आग्रह से बापू ने उन्हें सत्याग्रह आश्रम की शाखा खोलने के लिए वर्धा भेजा। अभ्यास करना-कराना, संस्था में जमीन खोदने आदि के काम में सतत लगे रहना और शरीर-श्रम करके ही कमाना व उसीमें निर्वाह करने का प्रयत्न करना—यह उनकी तपस्या थी। एकादशव्रत में जो दस कठोर व्रत दिये हैं उन्हें पूरी तरह जीवन में उतारने की साधना उन्होंने की है।

दस आश्रमवासियों के बीच १०० रु० मासिक लेना विनोबाजी ने जमनालालजी के आग्रह से माना था। हर महीने मोघेजी वर्धा की दुकान से १०० रु० ले जाते थे। एक दिन विनोबाजी उस तरफ घूमने जा रहे थे तो मोघेजी से कहते गये कि मैं दुकान की तरफ जा रहा हूँ तो पैसे मैं ही लेता आऊँगा। दुकान पर जाकर बोले— "आश्रमाचे पैसे द्या।[1]" दुकानवाले बोले— "मलातर शेठजींनी सांगीतले नाही।[2]" सुनकर विनोबाजी तो चल दिये। उनके लिए तो यह पैसे माँगने का पहला व आखिरी अवसर था। जब जमनालालजी को यह खबर लगी तो उन्होंने दुकानवालों की खूब खबर ली। "तुम लोगों को पैसों की कीमत है, आदमियों की नहीं। मैं कितनी मुश्किल से लोगों को लाता हूँ और तुम लोगों को कोई कदर ही नहीं।" इतना डाँटा कि दुकानवालों की आँखों में पानी आ गया।

देश जब विनोबाजी को जानता भी नहीं था, तब व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए पहले सत्याग्रही के रूप में बापू ने विनोबाजी को ही चुना था। सत्य का आग्रह तो बापू और विनोबा में समान ही रहा। बापू अगर बहिर्मुखी और आत्मनिष्ठ थे तो विनोबा अंतर्मुखी व ब्रह्मनिष्ठ हैं। दोनों ने एक-दूसरे को इस कदर साध लिया था कि दोनों एकरूप ही हो गये थे।

दिल्ली में बापूजी ने २१ दिन का उपवास किया। सबको चिंता होना स्वाभाविक ही था। महादेवभाई ने सोचा कि विनोबा को वर्धा से बुला लिया जाय तो बापू को आत्मिक खुराक मिलेगी। फिर प्रार्थना में भी इतने लोग आते हैं तो बापू का बोझ कुछ हलका हो जायगा। सबको यह बात जँची। महादेवभाई ने यह भी सोचा कि इस बारे में अगर बापू से पूछा और उन्होंने मना कर दिया तो बात वहीं खतम हो जायगी। सो बापू से पूछे बगैर उन्होंने वर्धा फोन किया कि बापू ने उपवास शुरू किया है, अगर विनोबा आ जाय तो बापू को आत्मिक बल मिलेगा। मैं, कमल, राधाकृष्ण और धोत्रेजी विनोबा के पास गए। विनोबा टहल रहे थे। हम लोग बैठ गये तो विनोबा भी आकर चुपचाप बैठ गये। आखिर कमल हिम्मत करके

१ आश्रम के पैसे दे दो।
२ हमें सेठजी ने इस बारे में कुछ कहा नहीं।

बोला, 'बापू का उपवास चला है सो तो आप जानते ही हैं। अभी दिल्ली से महादेवभाई का फोन आया था कि विनोबा आ जाय तो बापू को अच्छा रहेगा प्रार्थना का लाभ मिलेगा।" विनोबा सुनकर चुप रहे। फिर आहिस्ता से बोले, बापू का कोई खतरा नहीं है। उनके साथ भगवान है। अब हम सब चुप। फिर थोड़ा ठहरकर विनोबा ने पूछा 'बापू ने बुलाया है क्या ?' हम क्या जवाब देते ? फोन तो महादेवभाई का था। हम एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। उन दिनों विनोबाजी प्रतिदिन पास के गांव सुरगांव में सफाई के लिए जाते थे। एक वर्ष के लिए क्षेत्र सन्यास सरीखा ही था। यह बात बापूजी को मालूम थी। हम सब अपना सा मुंह लेकर बजाजवाड़ी लौट आये। दिल्ली फोन किया कि विनोबा पूछते हैं बापू ने बुलाया है क्या ? यह सुनकर महादेवभाई भी असमंजस में पड़ गए कि बापू से पूछे बगैर फोन किया था, लेकिन अब तो बापू से कहना ही पड़ेगा। सो डरते डरते बापू के पास गए और कहा कि हमने विनोबा को बुलाने वर्धा फोन किया था ताकि प्रार्थना में सहूलियत रहे और आपको भी अच्छा लगेगा। लेकिन विनोबा पूछ रहे हैं—"बापू ने बुलाया है क्या ?'

यह सुनकर बापू भी चुप हो गये। फिर धीरे से उन्होंने पूछा 'विनोबा आना चाहते हैं क्या ? हम एक दूसरे के पास ही हैं। इतना तादात्म्य स्थापित हो गया था एक दूसरे में। विनोबा पूछते हैं 'बापू ने बुलाया है क्या ?' बापू जवाब देते हैं, 'विनोबा आना चाहते हैं क्या ?"

दरअसल दुनिया बात ज्यादा करती है, काम कम। विनोबा ने कभी बापू से बहस नहीं की। बापू ने कहा और विनोबा ने शुरू कर दिया। कभी आगे रहकर कुछ पूछा नहीं। हां, बापू के सामने जब कोई धर्म संकट आता तो वह विनोबा को बुलाकर उनकी राय जरूर लेते। वरना दोनों के मिलने का क्या काम।

जमनालालजी विनोबा से शुरू से ही बहुत प्रभावित थे। नागपुर जेल में जब हम उनसे मिलने जाते तो वह विनोबाजी की ही चर्चा करते रहते। बाद में धुलिया जेल में तो जमनालालजी और विनोबाजी का साथ ही हो गया। जमनालालजी की इच्छा बनी रहती कि उनके सान्निध्य का जितना लाभ लिया जा सके उतना अच्छा। जेल में यह अनुकूलता भी ज्यादा थी। जमनालालजी के आग्रह से विनोबा ने गीता का समश्लोकी अनुवाद मराठी में किया, जो बाद में गीताई नाम से प्रकाशित और प्रसिद्ध हुआ।

विनोबाजी जमनालालजी से पहले ही जेल से छूटकर आ गये थे। आते समय जमनालालजी ने उनसे कहा कि कमल तो जेल में है ही मदालसा और ओम का शिक्षण आपकी ही देखरेख में हो तो अच्छा। वर्धा स्टेशन पर उतरकर पहली बात विनोबाजी ने मुझ से कही तो वही—मदालसा ओम् के शिक्षण की। मुझे भी आश्रम में ही रहने को कहा। इस तरह दोनों लड़कियों की पढ़ाई शुरू हो गई। मैं भी श्रद्धापूर्वक कक्षा में आती जाती।

लड़कियों को पढ़ाने का विनोबाजी का यह पहला अवसर था। इससे पहले वे लड़कों को ही पढ़ाते थे और पढ़ाई के सिवा बोलना तो मानो उनकी जीभ में कांटा ही लगता था। आश्रम के नियम लड़कों के लिए भी इतने कड़े थे कि लड़कियों की तो बात ही क्या। लेकिन विनोबाजी के पढ़ाने की खूबी थी कि जो भी विद्यार्थी एक बार उनके पास गया वह उनका ही होकर रह गया।

कृष्णदास गांधी और सरलादेवी चौधरी के पुत्र दीपक चौधरी उस समय करीब १४-१५ वर्ष के थे और आश्रम में ही रहते थे। दोनों के दोनों बड़े ही चतुर और सुन्दर। आश्रम में उन्हें देखकर पहले-पहल मैं यही तो मानती कि इतने भोले-भाले कम हैं जो इतने चतुर सुन्दर बच्चों को आश्रम में भेज दिया। यह भी कोई बड़ाई है? लेकिन यह विनोबाजी का प्रभाव था कि कुछ समय बाद हमने भी कमल को वहीं पढ़ने भेज दिया।

यह विनोबाजी के यहां उनके आश्रम में रहता था। खाना खाते समय एक दिन विनोबाजी ने कमल से पूछा—यहां का खाना तुझे अच्छा लगता है न? कमल ने कहा—अच्छा तो बिल्कुल नहीं लगता। विनोबाजी उसके जवाब से खुश हुए और बोले—ऐसा लड़का रोज यही खाना खाता है और कभी शिकायत तक नहीं की। लेकिन पूछा तो सच-सच बता दिया। होना भी ऐसा ही चाहिए।

हर रविवार को आश्रमवासी आश्रम का सामान लाने बाजार जाते थे। कमलनयन को धूप में नंगे पैर कंधे पर आलू की भारी गठरी लादे आश्रम जाते देख बाजार के लोग कहा करते—कई पीढ़ियों में तो भगवान ने लक्ष्मी दी। लोग बैठे-बैठे हजारों खर्चा कर रहे हैं और ये लोग गांधी के चक्कर में पड़े हुए हैं। आज बच्छराजजी होते तो ऐसा होने देते क्या? मेरे जेठ का लड़का राधाकृष्ण तो विनोबा के शिष्यत्व में रंगकर इतना गहरा हो गया कि लोग उसे छोटा विनोबा ही कहते हैं। एक रोज शाम की प्रार्थना में राधाकृष्ण नंगे बदन बैठा था। एक भौंरा उसके शरीर पर रेंगता हुआ कंधे तक आ गया। लेकिन राधाकृष्ण तो आंखें मूंदे वैसे ही बैठा रहा।

मदालसा का शिक्षण विनोबा ने ज्ञानेश्वरी द्वारा चलाया। विनोबाजी के दोनों भाई—शिवाजी और बालकोबाजी भी वहां थे। तीनों भाई ब्रह्मचारी हैं और त्याग विद्या ज्ञान में एक दूसरे से बढ़कर नमूने ही हैं। बालकोबाजी संगीत में निपुण हैं। हमारे बच्चों को उनसे सितार का शिक्षण मिला। शिवाजी को चित्रकला में अभिरुचि है। वह चित्र बनाते और फाड़कर फेंक देते। कमल ने पूछा—आप इतनी मेहनत से चित्र बनाते हैं फिर फाड़कर क्यों फेंक देते हैं। शिवाजी बोले—अपने शौक के लिए बनाया—फिर संग्रह क्या करना।

ऐसे ही विनोबाजी बापू के पत्रों को फाड़कर फेंक दिया करते। लोगों ने कहा—विनोबाजी, बापूजी के पत्र तो सहेजकर रखने चाहिए। विनोबा का जवाब यही रहता—पढ़ लिया, काम हो गया उसको रखने का मोह क्या?

कमलनयन की उम्र उस समय कोई १२-१३ वर्ष की रही होगी। आश्रम के नियम बहुत कड़े थे। विनोबाजी का कहना था कि बच्चों के माता पिता आश्रम के सब बच्चों के साथ समान व्यवहार करें। जमनालालजी के लिए तो यह स्वाभाविक ही था लेकिन मेरा तो कमलनयन से बोलना चालना मिलना जुलना तकरीबन बंद ही हो गया। मैं समान दृष्टि लाऊं तो कहां से लाऊं?

मेहमानों के लिए बगीचे से फल आये थे। मैं बरामदे में बैठी फल खा रही थी कि कमल वहां से गुजरा। आश्रम के नियम तो ठीक थे लेकिन मां का दिल तो नियमों में बंधने से रहा। मैंने सोचा कि मैं फल खा रही हूं—बेटे ने देख भी लिया है और मैं उसे फल भी नहीं दे सकती।

तो ख्याल आया कि कुछ फल आश्रम के रसोडे में दे आऊं। भावना तो स्वार्थ की ही थी कि उस बहाने कम से कम मेरे बेटे का भी मिल हो जायगा। सो मैं २०-२५ अमरूद लेकर रसोडे में गई और वहां की अलमारी में रख आई।

उन दिनों रोटी बनाने का काम बालकोबाजी करते थे। तोलकर रोटी दी जाती थी। परोसने का काम विनोबाजी करते थे। परोसने के समय विनोबाजी ने अलमारी खोली तो वहां अमरूद। पूछा—कहां से आये। किसीने कहा—जानकीबाई रख गई है। विनोबाजी ने अमरूद काटे, तोले और उतनी ही मात्रा में रोटी कम कर दी। उनका कहना था कि अमरूद में रोटी के ही गुण और ताकत मौजूद है, ज्यादा खाने से पचाना मुश्किल होता है। बाद में जब मुझे पता चला तो मैंने सोचा—चूल्हे में पड़े, उन्हें तो देना ही बेकार है।

घर में दूध तो गाय का ही आता था। एक बार काफी दूध बच गया तो मैंने सोचा इसका मावा बनाकर बरफी बनवा ली जाय। जमनालालजी से पूछा। उन्हें तो लोगों को खिलाना अच्छा लगता ही था। बोले—हां, बरफी तो बन सकती है, लेकिन कमल पास में ही रहता है, यह सोच लेना। मैंने कहा—उसे फल देना ही मुश्किल है, मिठाई की तो बात ही क्या? कई बार बुरा भी बहुत लगता था—खाने-पीने और ओढ़ने-पहनने किसी भी चीज का तो कमी नहीं लेकिन फिर भी अपने बच्चों को अनुशासन और नियमों के कारण कुछ दे नहीं सकते।

एक बार दोपहर के समय कस्तूरबा बकरी का दूध लेकर बापू के लिए बिस्कुट बनाने आई। कमलनयन अपनी चटाई का आसन ठीक करने देने के लिए उधर आया। बा ने उसे बुलाकर एक बिस्कुट दे दिया कि खाकर देख कैसा बना है? उसने बिस्कुट लिया कि मैं एकदम चौंककर बोली— "है?" उसे भी तुरंत ख्याल आ गया कि आश्रम के नियमानुसार मैं कैसे ले सकता हूं? बिस्कुट उसके हाथ से छूट गया और वह भाग गया। बा ने कहा—जानकीबेन यह क्या किया? बच्चा खा लेता तो क्या था? मुझे भी लगा कि बा के हाथ का प्रसाद खा लेने में कोई हर्ज नहीं था। लेकिन आश्रम के नियमों का भूत तो सिर पर चढ़ा हुआ था न!

पवनार में लाल बंगले के पास ही काले पत्थर का पहाड़ है। विनोबाजी प्रतिदिन ८ घंटा खोदने का काम करते थे। आसपास की संस्था के लोग भी समय निकालकर कुदाल फावड़ा लेकर कुआं खोदने में मदद करते थे। कोई मिनिस्टर या बड़े नेता विनोबाजी से मिलने आते, उन्हें भी यह काम करना पड़ता था। १८ दिन मैं भी गई। विनोबाजी ने कहा—८ घंटे श्रम करो तो १३ आने मिलेंगे और तभी कोई रोटी खाने का अधिकारी हो सकता है। तो मैं १ घंटा चक्की पीसना, १ घंटा कुएं पर रहट चलाना और छः घंटा झूठमूठ खाली भरी टोकरी कुएं पर इधर से उधर देने का खेल कर देती थी। खाना भी क्या मिलता था—दाल, ज्वार की रोटी, मूंगफली का मक्खन और सब्जी। विनोबाजी कहते थे कि दूध, दही, घी, तेल तो तब मिले जब कुआं खुदे, उसमें से पानी मिले, पानी से खेती हो, खेती से घास पैदा हो, जिससे गाय रखी जाय। तबतक इसीसे काम चलाना होगा।

आज के मशीनी युग में रहनेवालों को यह बात हास्यास्पद लग सकती है। लेकिन आगे-पीछे लोगों को यह मानना ही पड़ेगा कि देश की असली तरक्की तभी हो सकती है जब श्रम का मूल्य समझा जायगा और हम अपने पैरों पर खुद खड़े होंगे।

शुरू में तो डर था कि गुड़ और मूंगफली के नाश्ते से पेट दुखेगा। लेकिन २१ दिन बाद आदत हो गई और वह अच्छी भी लगने लगी। कमला का लड़का सुनील बंबई से आया तो विनोबा ने उससे भी कुएं पर काम करवाया—पत्थर डलवाए, टोकरियां उठवाईं। यह काम करके उसे बड़ा गर्व मालूम हुआ, ऐसा भास लगता था। सच में आश्रम में किताबों में खोये रहनेवाले और यह भोजन खानेवाले तो सारे पिंजर हो गये थे, लेकिन उनके उत्साह में कोई कमी नहीं थी। काश—आज सारे देश में यही मनोभावना पैदा हो जाय, तब तो इस देश की कायापलट होते देर नहीं लगेगी।

कस्तूरबा ग्राम, इंदौर में विनोबाजी ठहरे थे। सात दिन सात विषयों पर उनका प्रवचन हुआ—कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा। सुबह सवा चार बजे घूमने निकले, करीब ३॥ मील दूर के गांव की ओर चले। मैं और कमल का छोटा लड़का शिशिर भी साथ थे। १॥ मील दूर जाकर खेत में बैठ गए। सूर्योदय होनेवाला था। विनोबाजी कहने लगे—रात्रि ६ से १२ बजे का समय भोगियों का, १२ से ३ चोरों का और ३ से ६ योगियों का होता है। यह योगियों का समय ही लोग गंवा देते हैं।

तमाम प्रवास में शिशिर को बहुत उत्साह रहा और शहरी जीवन में रहने-सहने का आदी वह लड़का इस जीवन से बहुत प्रभावित हुआ।

विनोबाजी मसूरी जानेवाले थे। ओम् तब वहीं थी। उसे पता लगा कि विनोबाजी बिड़ला हाउस में ठहरनेवाले हैं तो उसने दामोदर को लिखा। विनोबा ने लिखवाया कि हमें तो मालूम नहीं था कि ओम् वहां है— माझी झोपडी आहे ती बरी आहे।[1] ओम् की खुशी का क्या कहना। विनोबा आते ही ओम् से बोले— मैं २० वर्ष पहले घर से निकला था हिमालय जाने के लिए, पर रास्ते में गांधीजी रूपी हिमालय मिल गये, मैं उन्हीं में लीन रहा। अब मीरा बहन ने आग्रह किया तो प्रश्न उठा कि मसूरी आऊं उनसे मिलने या वह आयें? तो एक पंथ दो काज। मैंने ही मसूरी आने का सोचा। तुम्हारे पास तो अच्छा ही है। शाम की प्रार्थना के बाद ओम की बेटी रुचिरा से बोले— पाटी-कलम लाओ, तुम्हें अक्षर बताएंगे। वह पाटी-कलम लाई। उन्होंने पाटी पर कुछ चित्र सा बनाया। मैं बोली—बापू के चेहरे जैसा लगता है। मेरा बोलना था कि उन्होंने हाथ फेरकर मिटा दिया। मैंने कहा— मिटाया क्यों? और लिखो।" बोले—'लिखने से थोड़े ही बनेगा अब! बन गया सो बन गया।' बाद में वह रुचिरा को अक्षर बताते रहे।

तब मुझे एक बात याद आ गई। एक बार वर्धा में मदालसा के घर आये थे तब सहज में बोले कि गृहस्थ लोग साधु संतों की सेवा अनेक तरह से करते हैं पर संत लोग भी बदले में ज्ञान उपदेश तो देते ही हैं। बिना श्रम के कुछ भी न लेना विनोबा की अब की नहीं, शुरू की आदत है।

११ फरवरी जमनालालजी की पुण्यतिथि। मैंने विनोबा से कहा कि वर्धा में आज के दिन गीता के अठारह अध्यायों का पाठ होता है। आज यहां मसूरी में भी हो। वह बोले कि

१ मेरी तो वह झोपड़ी ही भली है।

१८ अध्याय का मोह छोड़कर कुछ पाठ कर लिया जाय। मैंने कहा—१८ अध्याय तो वैसे ही बच जाते हैं, आज तो आप भी हमारे बीच हैं। फिर यजमान जैसा कहे वैसा करना चाहिए। घरवालों की इच्छा मानकर शुरू किया। पर ११वें अध्याय में विराट रूप दर्शन तक आते-आते भावावेग इतना बढ़ गया कि आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। इतने गद्गद हो गए कि आगे चलना मुश्किल हो गया, शब्द निकलना ही रुक गया। किसी तरह रुकते रुकते १८ अध्याय पूरे हुए। दूसरे दिन मैंने विनोबाजी से कहा—आगे से मैं मर जाऊं तब भी, आपसे १८ अध्याय का पाठ करने की तो बात ही न करूं।

दरअसल विनोबाजी बहुत ही भावुक-हृदय हैं। उनके अनेक भावावेग के दृश्य मैंने देखे हैं। बंगलौर में जब जवाहरलालजी विनोबा से मिलने उनकी कुटिया में आये, तो विनोबा का भावातिरेक से अपने-आपको बचाना असंभव हो गया। जवाहरलालजी को देखते ही उनकी आंखों से स्नेहसिक्त आंसुओं की धारा बह निकली और कुछ समय तक तो वह उनसे बात ही नहीं कर सके, कंठ बिलकुल अवरुद्ध हो चुका था।

एक बार जमनालालजी ने विनोबाजी से चर्चा की कि राम लक्ष्मण की सब पूजा करते हैं, पर तपश्चर्या भरत की कम नहीं थी। फिर भी भरतजी का मंदिर कहीं देखने में नहीं आता। उन्होंने कहा कि मंदिर तो क्या बनेगा, लेकिन अपने वर्धा के लक्ष्मीनारायण मंदिर में ही भरत की मूर्ति रख ली जाय तो अच्छा। इसके कुछ दिनों बाद जमनालालजी जेल चले गए। एक दिन पवनार में गड्ढा खोदते-खोदते विनोबाजी को भरत भेंट की मूर्ति मिल गई। विनोबाजी को जमनालालजी की इच्छा स्मरण हो आई। उन्होंने पवनार के पास ही एक छोटी-सी झोंपड़ी में उस मूर्ति की स्थापना की और खुद वहां पाठ करने लगे। पाठ करते समय इतने तन्मय और भाव विभोर हो जाते थे कि इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए गांव तथा आसपास तक के लोग इकट्ठे हो जाते।

लगभग इसी समय पवनार में विनोबाजी कांचन मुक्ति का भी प्रयोग कर रहे थे। वह चाहते थे कि संस्थाएं परावलंबी न रहें, परिश्रम पर ही उनका खर्च चले। ज्ञान, कर्म और भक्ति के त्रिवेणी-संगम का दर्शन उस समय सारे देश ने किया था।

अहिंसा को विनोबा ने पूरी तरह जीवन में उतारा है। अपने कारण किसी को जरा भी तकलीफ हो, यह उनकी बर्दाश्त के बाहर है।

मसूरी में ३-४ दिन से लगातार वर्षा हो रही थी। मैंने विनोबा से कहा कि पहाड़ की इसी झड़ी में कपड़ा तक का सूखना मुश्किल हो गया है। विनोबाजी जब नहाने गए तो लौटकर उन्होंने वही धोती पहन ली।

ऐसे ही एक बार बीकानेर में विनोबा नागौर गए। वहां पानी की कमी थी। स्त्रियां सिर पर पानी के घड़े रखकर कुआं से लाती थीं। पद-यात्रावालों को मारवाड़ का अनुभव था नहीं। उन लोगों ने खूब सारे कपड़े धोने के लिए निकाले। मैं बोली—नागौर में पानी का अकाल है, स्त्रियों को सिर पर रखकर लाना पड़ता है। दूर-दूर से या फिर ऊंटों पर आता है। विनोबा भी पास ही में बैठे थे। कुछ देर बाद वह नहाने गए और वही धोती पहन ली।

विनोबाजी ने राजस्थान का दौरा किया, तब मुझे यह देखकर बहुत ही दुःख हुआ कि

शुरू में तो डर था कि गुड और मूगफली के मक्खन से पेट दुखेगा। लेकिन २१ दिन बाद आदत हो गई और वह अच्छी भी लगने लगी। कमला का लडका सुशील जब ट्रेन में आया तो विनोबा ने उससे भी कुएं पर काम करवाया, पत्थर डलवाए टोकरियां उठवाई। यह काम करके उसे बडा गर्व मालूम हुआ ऐसा भाष लगता था। सच में आश्रम में विनोबा के साथ रहनेवाले और यह भोजन खानेवाले तो सारे फिजूर हो गये थे लेकिन उनके उत्साह में कोई कमी नहीं थी। काश—आज सारे देश में यही मनोभावना पैदा हो जाय तब तो इस देश की कायापलट होते देर नहीं लगेगी।

कस्तूरबा ग्राम इंदौर में विनोबाजी ठहरे थे। सात दिन सात विषयों पर उनका प्रवचन हुआ—कीर्ति श्री वाणी, स्मृति मेधा, धृति क्षमा। सुबह सवा पांच बजे सबेरे दिन लेकर ३।। मील दूर के गांव की ओर चले। मैं और कमल का छोटा लडका शिशिर भी साथ थे। १।। मील दूर जाकर खेत में बैठ गए। सूर्योदय होनेवाला था। विनोबाजी कहने लगे—रात्रि ६ से १२ बजे का समय भोगियों का १२ से ३ चोरों का और ३ से ६ योगियों का होता है। यह योगियों का समय ही लोग गंवा देते हैं।

तमाम प्रवास में शिशिर को बहुत उत्साह रहा और शहरी जीवन के रहन सहन का आदी वह लडका इस जीवन से बहुत प्रभावित हुआ।

विनोबाजी मसूरी जानेवाले थे। ओम् तब वहीं थी। उसे पता लगा कि विनोबाजी बिडला हाउस में ठहरनेवाले हैं तो उसने दामोदर को लिखा। विनोबा ने लिखवाया कि हम तो मालूम नहीं था कि ओम् वहां है— माझी झोपडी आहे ती बरी आहे।[1] ओम् की खुशी का क्या कहना। विनोबा आते ही ओम से बोले— मैं २० वर्ष पहले घर से निकला था हिमालय जाने के लिए पर रास्ते में गांधीजी रूपी हिमालय मिल गये मैं उन्हीं में लीन रहा। अब मीरा बहन ने आग्रह किया तो प्रश्न उठा कि मसूरी आऊं उनसे मिलने या वह आयें ? तो एक पंथ दो काज। मैंने ही मसूरी आने का सोचा। तुम्हारे पास तो अच्छा ही है। शाम की प्रार्थना के बाद ओम की बेटी रुचिरा से बोले— 'पाटी कलम लाओ तुम्हें अक्षर बताएंगे।' वह पाटी-कलम लाई। उन्होंने पाटी पर कुछ चित्र सा बनाया। मैं बोली—बापू के चेहरे जैसा लगता है। मेरा बोलना था कि उन्होंने हाथ फेरकर मिटा दिया। मैंने कहा— मिटाया क्यों ? और लिखो।" बोले— लिखने से थोडे ही बनेगा अब ! बन गया सो बन गया।' बाद में वह रुचिरा को अक्षर बताते रहे।

तब मुझे एक बात याद आ गई। एक बार वर्धा में मदालसा के घर आये थे तब सहज में बोले कि गृहस्थ लोग साधु संतों की सेवा अनेक तरह से करते हैं पर संत लोग भी बदले में ज्ञान उपदेश तो देते ही हैं। बिना श्रम के कुछ भी न लेना विनोबा की अब की नहीं, शुरू की आदत है।

११ फरवरी जमनालालजी की पुण्यतिथि। मैंने विनोबा से कहा कि वर्धा में आज के दिन गीता के अठारह अध्यायों का पाठ होता है। आज यहां मसूरी में भी हो। वह बोले कि

१ मेरी तो वह झोंपडी ही भली है।

१८ अध्याय का मोह छोडकर कुछ पाठ कर लिया जाय। मैंने कहा—१८ अध्याय तो बस ही बच जाते हैं, आज तो आप भी हमारे बीच है। फिर यजमान जैसा कहे वैसा करना चाहिए। घरवालों की इच्छा मानकर शुरू किया। पर ११वें अध्याय में विराट रूप दर्शन तक आते आते भावावेग इतना बढ गया कि आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। इतने गदगद हो गए कि आगे चलना मुश्किल हो गया, शब्द निकलना ही रुक गया। किसी तरह रुकते रुकते १८ अध्याय पूरे हुए। दूसरे दिन मैंने विनोबाजी से कहा—आज से, मैं मर जाऊं तब भी, आपसे १८ अध्याय का पाठ करने की तो बात ही न करूं।

दरअसल विनोबाजी बहुत ही भावुक हृदय है। उनके अनेक भावावेग के दृश्य मैंने देखे है। बगलौर में जब जवाहरलालजी विनोबा से मिलने उनकी कुटिया में आये, तो विनोबा का भावातिरेक से अपने आपको बचाना असंभव हो गया। जवाहरलालजी को देखते ही उनकी आंखों से स्नेहसिक्त आंसुओं की धारा बह निकली और कुछ समय तक तो वह उनसे बात ही नहीं कर सके, कंठ बिलकुल अवरुद्ध हो चुका था।

एक बार जमनालालजी ने विनोबाजी से चर्चा की कि राम लक्ष्मण की सब पूजा करते हैं पर तपश्चर्या भरत की कम नहीं थी। फिर भी भरतजी का मंदिर कहीं देखने में नहीं आता। उन्होंने कहा कि मंदिर तो क्या बनेगा लेकिन अपने बर्धा के लक्ष्मीनारायण मंदिर में ही भरत की मूर्ति रख ली जाय तो अच्छा। इसके कुछ दिनों बाद जमनालालजी जेल चले गए। एक दिन पवनार में गड्ढा खोदते-खोदते विनोबाजी को भरत भेंट की मूर्ति मिल गई। विनोबाजी को जमनालालजी की इच्छा स्मरण हो आई। उन्होंने पवनार के पास ही एक छोटी-सी झोपडी में उस मूर्ति की स्थापना की और खुद वहां पाठ करने लगे। पाठ करते समय इतने तन्मय और भाव विभोर हो जाते थे कि इस अदभुत दृश्य को देखने के लिए गांव तथा आसपास तक के लोग इकट्ठे हो जाते।

लगभग इसी समय पवनार में विनोबाजी कांचन मुक्ति का भी प्रयोग कर रहे थे। वह चाहते थे कि संस्थाएं परावलंबी न रहे, परिश्रम पर ही उनका खर्च चले। ज्ञान, कर्म और भक्ति के त्रिवेणी संगम का दर्शन उस समय सारे देश ने किया था।

अहिंसा को विनोबा ने पूरी तरह जीवन में उतारा है। अपने कारण किसी को जरा भी तकलीफ हो यह उनकी बर्दाश्त के बाहर है।

मसूरी में ३ ४ दिन से लगातार वर्षा हो रही थी। मैंने विनोबा से कहा कि पहाड की इसी झडी में कपडा तक का सूखना मुश्किल हो गया है। विनोबाजी जब नहाने गए तो लौटकर उन्होंने वही धोती पहन ली।

ऐसे ही एक बार बीकानेर से विनोबा नागोर गए। वहां पानी की कमी थी। स्त्रियां सिर पर पानी के घडे रखकर कुओं से लाती थी। पद यात्रावालों को मारवाड का अनुभव था नहीं। उन लोगों ने खूब सारे कपडे धोने के लिए निकाले। मैं बोली—नागौर में पानी का अकाल है स्त्रियों को सिर पर रखकर लाना पडता है। दूर दूर से या फिर ऊंटो पर आता है। विनोबा भी पास ही में बैठे थे। कुछ देर बाद वह नहाने गए और वही धोती पहन ली।

विनोबाजी ने राजस्थान का दौरा किया तब मुझे यह देखकर बहुत ही दुःख हुआ कि

गाम्भी का गाम्भर अधिकार गर विनोबाजी ने स्थापित कर दिए आर तर नहीं। नागर उनर मन म यह आनता हा कि बाबा न मालूम क्या मान ? यदि सरकार का कोई मनी आता ना व जरूर आते।

एक बार मुझ यह भाग मजबूर किया कि अगर आज जगतताराओं हा। ना क्या करत ? यह स्वामीजी का उपाधि था अदरप जरूर करते—उपाधि भी, अब ति अहमदों गुजरात उसको भी बात सुन और बात ना नाम ना करते। लेकिन अगर इतना दूर रह न पानी र पानी–नाम न हाथ रहा ना यह आयगा।

विनोबाजी स्वामीजी के लिए कहते कि स्वामीजी लाग बुद्धिमान हैं किन्तु मन मानता बनाता जाता है पानी भी है जिसमें सवाल का हित। ऐसा है मात्रा का हिसाब उनकी तरह ता रहत हैं इतना हानिकार है।

सब सबा सघ की बठक था। हिन्दुस्तान भी विनत तन म सम्मिलित थ। चर्चा का विषय था कि सरकार की भूदान वितरण योजना का सरकार का क्या उत्तर रहा। चर्चा के बाद यह नतीजा निकला कि सरकार का मन्त्र नहीं रहा। मैं पूछा— ना गता ती अपन हाथ ना मैं बात करनी हूँ क्या ? धीरेनभाई बोले— ना गया अब क्या करते हैं ? लेकिन मरा ता रहना पहिले ही था। मैं बोली—अच्छा न हो ना मन्य रहा गर्मी। लेकिन आखिर आप लोगों न हिन्दुस्तान का यहा बुलाया क्या था ? इतना आना न आत। उन्‍ह बुलाया और जब उन्होंने आपकी बातें मान ली ता अब नाराज क्या करते हैं आप लोग ? क्या आपने उन्हें गान म पाप भार न इस्तीफा देने के लिए बुलाया था ? और धीरेनभाई—आप ताज्जी जग पर हैं। (अपने हृदिस्ताण म) इसीलिए आप ही कमर टूट गए। आपका ता अब इस्तीफा द देना चाहिए। असल म कानून–कायदे की बात कुछ जानते ही हाते नहीं हैं। विनोबाजी का भी जब शुरू म थाड़ी जमीन मिली थी तो वह (वितरण का काम) किसी तरह चला लेते थ लेकिन जब लाखा एकड़ जमीन मिलने लगी तो व भी कायदे का सहारा लेने लग हैं। सरकार सब सेवा सघ के पास जाती है स्त्रीयों का प्रोत्साहन देती है और भी सहयोग देती है तो आप लोग दूर क्या भागते हैं सरकार स ? लेकिन नहीं है ता आप यहा य पालिसी की बातें क्या करते हो ? नाराज म इतना बोलकर मैं बैठ गई। लेकिन जिस तरह कुछ देर बठक म सन्नाटा छा गया उस देखकर लगा कि मरी बात का कुछ असर भी हुआ है।

बाद म सतीशबाबू बोले— आप तो कहती है कि मुझे समझाना नहीं आता लेकिन आज ता आप इतना अच्छा बाला।

कार्यकर्ताओं की एक सभा म विनोबाजी का भाषण था। ११ बजे का समय था। विनोबा जी ने कहा कि यह समय तो कार्यकर्ताओं के खाने का है—वे सुनेंगे क्या मेरा भाषण ? मैं मजाक म बोली—आप खाने म स नमक मिर्च निकाल देने की बात कहते हैं—तो समाधि तो आप ही लगवाते हैं इनकी। ये लोग नमक मिरची खाएगे तो शरीर म चेतनता तो रहेगी।

विनोबाजी की प्रार्थना म विष्णु सहस्रनाम का पाठ होता है। मैंने विनोबाजी स कहा— मैं ता वैष्णवों की बेटी ठहरी—९ १० वर्ष की थी तबसे १६ वर्ष की उम्र तक दोनों समय विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने के बाद भोजन करती थी। शुद्ध और अशुद्ध का तो राम मालिक

लेकिन हजार नाम का पुण्य तो मिलता ही था। लेकिन आपके लप्पड-सप्पड क्रम ने सब भुला ही दिया।' विनोबाजी बोले— 'हमने कब भुलाया ?' तो मैंने कहा—"आपने नहीं तो आपके बाप-गांधीजी न सही। अब ४७ वर्ष बाद पाठ करें तो कैसे करें। तब तो लप सप जो भी आता बोल लेती। लेकिन आपके साथ पाठ करने में उच्चारण का भी तो चक्कर है।'

मेरे जीवन पर तीन महापुरुषों की गहरी छाप पड़ी उनमें अब जमनालालजी और बापूजी तो अब रहे नहीं। विनोबाजी हैं। पर वह तो छोटे भाई के जैसे लगते हैं। उनके पास जाने में मुझे जरा भी डर नहीं लगता। बापूजी के सामने जाने में डर-सा लगता था। उसका एक कारण यह भी रहा हो कि जमनालालजी ने उनको पिता माना था। सो मैंने भी अन्तःकरण के किसी कोने में उनको श्वसुर तुल्य समझकर उनका डर बैठा लिया हो। जमनालालजी से तो उनके कामों को लेकर एक प्रकार की ईर्ष्या भी होती थी। उनसे लड़ झगड़ भी लेती थी। उनको राजी रखने का भी प्रयत्न करती। लेकिन विनोबा से मनोविनोद भी होता रहता है उनके भूदान और कूप दान के कामों में रस भी आता है।

पंजाब में पठानकोट में एक बार विनोबाजी अक्खड़ मस्त बैठे थे। मैं भी पास जा बैठी। गपशप करने बैठ जाती हूं तो वह ध्यान से मेरी बात सुनते हैं। वह सोचते हैं कि जानकीबाई बच्चे की तरह निस्संकोच बोलती है तो सुन लो। कुछ भावना स्नेह उदारता भी रहती है। मैं बोली 'हां और ना' पर सारी भाषा बनी है लेकिन 'ना' को अपशकुन मानते हैं। तो क्या केवल 'हां' से काम चल सकता है? पहले के लोग 'नहीं' कहना अपनी कायरता मानते थे। सब बातें "हांजी हांजी" कहते थे और अपना वचन निभाते थे। लेकिन आजकल तो जीवन नौकरों के सहारे चलता है। स्कूली शिक्षण के कारण स्वतंत्रता भी अधिक आ गई है। घर में कोई कुछ मांगे तो झट से कहते हैं— 'नहीं है।" कौन उठे, देखे।'

विनोबाजी मेरी बात बड़े मजे में सुनते रहे। उनके अपने विचार भी चल रहे होंगे। लेकिन मुझे भी राजी तो करना था, सो एक वाक्य में उत्तर दिया—'नहीं' में भी तो आखिर 'हां' ही है।' यह सुनकर मैं तो चुप हो गई। लेकिन अब भी यही लगता है कि जब ईश्वर की सृष्टि में परिपूर्णता है तो "ना" का तो निषेध होना ही चाहिए।

विनोबाजी कम बोलते हैं और जब बोलते हैं तो कम शब्दों में बोलते हैं। उनका भाषण और लेखन साधारण बोलचाल की भाषा में होता है और उनके विचार इतने तर्कपूर्ण और युक्तिसंगत होते हैं कि सहज ही मानस में पैठते चले जाते हैं। अक्सर हमारी लिखित बातचीत भी होती रहती है।

एक बार मैंने कागज के पुर्जे पर लिखा—'अमरावती में भागवत सुनकर आई थी। रात को स्वप्न में गांधीजी का चेहरा दिखा। तुरंत बाद नंदजी की गोद में कृष्ण दिखे। फिर गुम हो गए।

इसपर विनोबाजी ने लिखा— ये अच्छे लक्षण हैं। धीरे धीरे सूक्ष्म दर्शन भी होंगे।"

इसी तरह एक अन्य मौके पर मैंने लिखा— 'आपके लिए तो सब दिन एक समान हैं। लेकिन अभी दीवाली की सफाई में सब जगह गंदगी फैलेगी। आपको वहां जंतु लग जाय तो ? सो कम-से-कम दीवाली हो जाने दीजिए तब जाइएगा। इसके उत्तर में विनोबाजी ने केवल

पर वापस लिखा— विजयालक्ष्मी शीघ्र नयाम्।

वर्धा की बात है। मैंने कागज के टुकड़े पर लिखा—१ बापू ने बजाज परिवार पर बड़ा उपकार किया। अब बापू की जगह आप हैं। २ बापूजी जमनालालजी जानकीदेवी—बजाजवाडी में ये विभूति थे। बाबा राधाकृष्ण श्रीमन्—ये आज हैं।

विनोबाजी ने उसी कागज के टुकड़े पर नीचे लिखा— १ बापू की जगह कोई किसी हालत में नहीं ले सकता। २ पंडितजी की जगह [illegible] नहीं ले सकती। ३ जमनालालजी की हैसियत श्रीमन्जी भी नहीं पा सकती। आगे कोई सिद्धान्त गलत साबित हो तो ?

यह ही जब मैंने यह लिखा कि आप जमनालालजी के साथ नाराज होते थे। अब कमल के साथ रहें तो नाराज होना पड़ता है। तो विनोबाजी ने फौरन ही कागज पर लिख दिया— जमनालालजी का काम कमलनयन पूरा करेगा—उसके बाद [illegible]।

एक दिन मैंने सहज ही विनोबा से पूछा—आज जमनालालजी होते तो क्या करते ? यह सुनकर विनोबाजी एकदम गंभीर हो गये—ऐसा कि मुझे डर लगा कि अब नाराजी से उन्हें चोट बहुत लगेगी। थोड़ी देर बाद बहुत ही मुश्किल से बोले—जमनालालजी १६ वर्ष की उम्र में नेजाजी महाराज[1] से मिले होंगे। उनसे मिलकर नेजाजी महाराज बोले कि हीरा धूल-कचरे में खो दिया यानी कि अनमोल जीवन धनी के घर पैदा होकर खो जायगा। तब से ही वह अन्त तक धन व्यापार का मोह छोड़ने का प्रयत्न करते रहे और उसमें काफी हद तक सफल हुए।

महर्षि रमण और अरविन्द के दर्शन करके जब जमनालालजी वापस वर्धा लौटे तो मन स्थिति काफी शांत थी। लेकिन विनोबा से उन्हें हमेशा अधिकाधिक प्रेरणा और शांति मिलती थी। कहते थे—पहाड़ों और कंदराओं में संतों की खोज की क्या जरूरत, जबकि विनोबा जैसे संत अपने घर में ही हैं। अपनको तो इनसे बहुत ही संतोष है। मृत्यु-पत्र में भी जमनालालजी ने विनोबा का नाम लिखा है कि मेरे बाद परिवार के सदस्य गुरु समझकर विनोबाजी से हर मामले में सलाह लें।

त्याग, तपश्चर्या और ज्ञान तो विनोबाजी में भरपूर है ही। व्यावहारिकता की थोड़ी कमी लगती थी, लेकिन बापू के जाने के बाद जबसे उन्होंने भूदान का कार्य संभाला, यह भी कमी पूरी होती जा रही है। यूं लगता है कि बापू अब उनमें ही प्रवेश कर गये हैं और दोनों की शक्ति एक जगह इकट्ठी होकर चमक उठी है।

१ जमनालालजी की दादी सदीबाई साधु-संतों पर श्रद्धा रखती थीं। नेजाजी महाराज ऐसे ही एक संत थे और बहुत सिद्ध-पुरुष माने जाते थे।

राजेन्द्रबाबू सादगी और सरलता की मूर्ति

श्रद्धेय राजेन्द्रबाबू का हमारे परिवार से पिछले ३० ३५ वर्षों का सम्बंध रहा। उनके बारे में जितना याद करूं थोड़ा है। शांत सरल स्वभाव, अभिमान से कोसों दूर। इतने वर्ष गुजर गए इतने उतार चढ़ाव आये—उनके जीवन में भी और देश के इतिहास में भी। लेकिन राजेन्द्रबाबू तो जैसे तब थे, वैसे ही अंत तक रहे। मुझे तो उनके जितने भी संस्मरण याद आते हैं, सबमें उनकी सादगी सहजता, सरलता और शांत-स्वभाव के ही दर्शन होते हैं।

बाबूजी को पहली बार साबरमती में देखा। बापू के पास वह आये थे। दुबला शरीर, ऊंची धोती वाली खादी की लंबी बांहोंवाली रुई की सदरी और सिर पर बेतरतीब टोपी। कौन जानता था कि सादगी का यह प्रतीक आगे जाकर भारत का राष्ट्रपति बनेगा।

साबरमती में वर्षों तक बाबूजी सकुटुंब रहे। उनके पुत्र मृत्युंजयबाबू आश्रम में पढ़ते थे। मैं भी उनकी कक्षा में आ जाती थी। प्रश्न बहुत पूछती—इतने कि एक दिन मृत्युंजयबाबू ने कहा कि बाल की खाल नहीं निकालते हैं। तबसे मैं तो चुप रहने लगी।

वर्धा में जब कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक होती थी तब बहुत चहल-पहल रहती। सब नेताओं का भोजन आदि बजाजवाड़ी में ही होता। जमनालालजी खुद अपनी देख रेख में सारी व्यवस्था करवाते, हर व्यक्ति की रुचि का भोजन बनवाते तथा सुख सुविधा का ख्याल रखते थे।

भोजन के बाद बीच के कमरे में बैठक जमती। जवाहरलालजी, सरोजिनी नायडू, बैरिस्टर आसफअली राजाजी आदि चलकूद में लग जाते। लेकिन राजेन्द्रबाबू को दमे की बीमारी थी तो वह इस उछलकूद में हिस्सा नहीं ले सकते थे। वह अतिथिगृह में ही रहते। जमनालालजी वहां जाते और उनके साथ घंटा शतरंज खेलते ताकि उन्हें बोलने से बचाया जाय। शतरंज के खेल का जमनालालजी 'बुद्धिबल' कहा करते थे।

रात को एक तरफ बाबूजी और दूसरी तरफ किशोरलालभाई मशरूवाला सोते। दोनों को ही दमा। जब दमे का जोर होता तो किसीको भी पूछने की हिम्मत नहीं होती। सुबह किशोरीलालभाई कहते— 'रात का तो होड लगी थी कि किसकी आवाज जोर से निकले।' महात्मा को तो कष्ट भी शांति से ही झेलने पड़ते हैं न।

गो सेवा संघ की जो मीटिंग वर्धा में हुई थी उसमें राजेन्द्रबाबू अध्यक्ष बने। राधाकृष्ण ने बाबूजी से कहा कि अब तो आपको गाय के घी दूध का नियम लेना चाहिए। बाबूजी ठहरे सरल आदमी। बिना सोचे विचारे ही कह दिया—'अच्छा'।

बापू को इस बात का पता तो लगना ही था। बोले—'राजेन्द्रबाबू इस नियम का पालन आपसे कैसे होगा। आपको तो खाने में कच्चे-पक्के का भी ध्यान नहीं रहता जो सामने आया जैसा भी आया खा लिया।' मैं बोली— 'हां बापूजी भैंसकी भी उनके हैं तो मथुरा बाबू। अगर इनकी थाली बाबूजी के सामने चली गई और बाबूजी ने गाय के घी का भोजन खुद खा लिया तो भी दोनों के ध्यान में आना कठिन है।' फिर तो हंसी का ऐसा फव्वारा छूटा

कि बस ! किंतु बाबूजी ने गम्भीरता से कहा कि मैं अध्यक्ष बना तो गोव्रती भी बनना लाजिमी ही है। उसके बाद उन्होंने काफी कड़ाई से पालन भी किया। मैं तो अवश्य यह मानती हूं कि बाबूजी के दमे को कम करने में गाय के घी दूध ने चमत्कार ही दिखाया है।

राष्ट्रपति चुन जाने के बाद बाबूजी वर्धा आये और बजाजवाडी में ही ठहरे। पंगत में जीमकर उठे और हाथ मुंह धोने गये तो चन्द्रधरबाबू बोले— माताजी अब तो बाबूजी राष्ट्रपति की हैसियत से आयेंगे तो आपके यहां थोड़े ही ठहरेंगे और ठहर सकेंगे भी कैसे इनका स्टाफ वगैरा जो साथ होगा। सरकारी रेस्टहाउस में ही उतरना ठीक होगा।' मैंने बाबूजी से पूछा, 'चन्द्रधरबाबू कहते हैं आप अब आयेंगे तो यहां नहीं ठहरेंगे क्या ?' बाबूजी तुरंत बोले— तो और कहां जायेंगे ?' इतनी नम्रता और सरलता से उन्होंने यह बात कही कि हृदय पिघल गया।

एक बार बाबूजी कहीं बाहर जा रहे थे। बोले—हमारे हवाई जहाज में केवल दो ही जनों की जगह है सो आप भी चलिए। मैं तैयार हो गई। तमाम रास्ते हवाई जहाज के बारे में बातें समझाते रहे—हवा आदि के संबंध की। इसी तरह एक बार बाबूजी हवाई जहाज से कलकत्ता जा रहे थे। मैं भी साथ जानेवाली थी। सीतारामजी सेकसरिया को कलकत्ता जाना था—गाड़ी में रिजर्वेशन नहीं हुआ। मैंने बाबूजी से कहा कि सीतारामजी भी जाना चाहते हैं। बाबूजी ने तुरंत इंतजाम कर दिया। लेकिन सीतारामजी नहीं गये। बाबूजी ने याद करके पूछा भी था। रास्ते में बहुत मजा आया। मथुराबाबू लुगाई जैसे बोलते—बाबूजी यह देखिये नीचे देखिये, इधर देखिये उधर देखिए। और बाबूजी का धीरज तो अपार। किसी भी तरह झुंझलाहट नहीं चेहरे पर।

एक रोज लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया की पत्नी सरस्वतीदेवी बोलीं— हमें भी राष्ट्रपतिजी की कोठी दिखा दो। मैंने कहा— चलो राजवंशीदेवीजी से मिलने चलें। बिना इजाजत के जा सकते थे सो गये। सारी कोठी देखी। बाबूजी नहीं मिले। मिलते तो कहती कि आप गाडोदिया के यहां जाया करते थे वहां खाना खाते थे। अब राजधानी के ठाट-बाट का खाना हमें भी खिलाओ। धनंजयबाबू की पत्नी से कहा कि तुम कह देना। उन्होंने कहा, "आप चिट्ठी लिख दीजिए मैं दे दूंगी। मैं चिट्ठी लिखकर रख आई। बाबूजी ने फोन करवाया कि सरस्वतीजी को लेकर आप सब भोजन पर आइये। सरस्वतीजी तो सुबह ही बंबई चली गई थीं। मैं कमलनयन श्रीमन्नजी, कमला रामनारायणजी मदालसा, ओम वगैरा गए। बाबूजी ने फौरन पूछा—'वह कहां हैं सरस्वतीदेवी ?' मैंने कहा वह तो सुबह ही बंबई चली गई अचानक !

भूदान की एक सभा में बाबूजी राजघाट आये थे। मैंने वहां कूपदान की अपील की थी तो बाबूजी की उपस्थिति में ही १५-२० हजार रुपयों की कीमत के ३० कुएं लोगों ने दिये। बाबूजी देर तक बैठे रहे। सर्दी के कारण खांसी बढ़ जाने की आशंका थी। सो उनके ए०डी० सी० ने मुझसे कहा कि बाबूजी को अब जाने दीजिए। उनकी तबीयत के बारे में मुझे भी फिक्र हो रही थी। लेकिन वे खुद ही बोले— हां, दो चार हो जाएं तो चलें।

यह मेरे लिए गौरव की ही बात थी कि बाबूजी के द्वारा मुझे पद्म विभूषण का पदक मिला।

लेकिन मेरा दिल भर आया था कि यह चीज तो जमनालालजी की है मैं इसके काबिल कहा हू। कमलनयन ने मजाक किया कि मेरा पदक अगर वह लगा ले तो कौन जानेगा ? देखा तो पता चला कि उसपर नाम लिखा ही नही है। बाद में जब बाबूजी पूना में राजनारायणजी (मेरे दामाद) की तबीयत का हाल पूछने ओम के घर आये तो मैंने उनसे कहा कि यह पदक जो आप देते है उसपर नाम तो खुदा होना चाहिए। अगर जवाहरलालजी का 'भारत रत्न' का पदक म्यूजियम में रखा हो तो किसे पता चलेगा यह उनका पदक है ? श्रीप्रकाशजी भी साथ में थे। बाबूजी ने फौरन अपनी सेक्रेटरी से कहा— "नान, यह बात सोच विचार की है तुम ध्यान करके याद दिलाना।' पीछे तो बाबूजी की तबीयत खराब हो जाने की वजह से वह बात वही रह गई।

राष्ट्रपति होने के बाद बाबूजी एक बार वर्धा आये। अतिथिगृह में ठहरे। मैंने घर का आंवले का मुरब्बा उनके हाथ में रख दिया—कुछ सावला-सा हो गया था। उन्होंने झट मुह में रख लिया। कमल बोला—'क्या दे दिया बाबूजी को यह काला सा ?' मैंने कहा—'भाई घर का आंवला ही तो दिया है।' लेकिन फौरन मुझे बापू की बात याद आ गई—राजेंद्रबाबू आपको खाने में कच्चे पक्के का भी ध्यान नहीं रहता जो सामने आया जैसा भी आया खा लिया।

इसी तरह एक बार राजधानी में बाबूजी की वर्षगाठ पर मैं कुछ तुलसीदल ले गई। फूल माला तो क्या ले जाती। मैंने उनके हाथ पर रखकर कहा—बाबूजी यह तुलसीजी तो आप आप खा सकते हैं। उन्होंने झट मुह में डाल ली।

जमनालालजी और बाबूजी में सगे भाई जितना प्रेम था। एक बार दिल्ली में मैं बाबूजी के साथ मोटर में जा रही थी। जाने किन विचारो में थी कि अचानक मैंने कहा—आज आपको देखकर जमनालालजी कितने खुश होते ? बाबूजी की आखे लाल लाल होकर डबडबा गई। मैं चुप हो गई। उन डबडबाई आखो के पीछे उमडता स्नेह का समुद्र मुझसे छिपा थोड़े ही रह सकता था।

महादेवभाई बापू के गणेश

महादेवभाई और जमनालालजी गांधीजी के लिए मानो देवदूत बनकर ही आये थे। सगे भाइयो से बढ़कर आपस में दोनो का प्रेम था। दोनो सब प्रकार के दिखावे से दूर रहकर बापू के कार्यों की उन्नति के ही चिंतन में हमेशा लगे रहते थे। महादेवभाई जानते थे कि बापू के दिमाग में से रोज नई योजनाएं निकलती हैं जिन्हें पूरा करने के लिए भरपूर साधन

आवश्यक है, क्योंकि बापू खुद तो दरिद्रनारायण का चोला पहने बैठे हैं। उनकी योजनाओं को पूर्ण करने के लिए भगवान ने जमनालालजी को ही मानो कुबेर बनाकर भेजा है, ऐसा महादेवभाई मानते थे और मजाक में वह भी कहते थे। जमनालालजी भी यह समझते थे कि व्यासजी का महाभारत लिखाने के लिए जैसे गणेशजी मिले, वैसे ही बापू को ऐसी योजनाओं को लेखनी में उतारनेवाले महादेवभाई बापू को मिले हैं।

बापू की योजनाओं को कार्यरूप देने के लिए ये दोनों एक-दूसरे की उपयोगिता को अच्छी तरह समझते थे और इसलिए दोनों में अटूट प्रेम होना स्वाभाविक ही था। आत्म निरीक्षण की बातें दोनों आपस में अक्सर किया करते थे।

बापू ने २१ दिन का उपवास किया शायद तभी की बात है। जमनालालजी महादेवभाई से बोले— "हम अपने मित्र या पुत्र की मृत्यु भी शायद सहन कर लें लेकिन बापू के बारे में तो सोचना भी कठिन है। अगर बापू को कुछ हो गया तो ?" फिर दोनों ही बहुत गंभीर हो गये। बापू का जीवन ही इन दोनों का सुहाग था। पर शायद इन दोनों को यह पता नहीं था कि ये दोनों भी बापू के सुहाग थे वरना दोनों के दोनों बापू के सामने ही न चले जाते। इस तरह से यह अच्छा ही हुआ। शायद बाद की भारत की दशा और बापू पर बाद में आनेवाले संकटों को आंखों से देखना उनके लिए असह्य हो जाता।

महादेवभाई वैसे तो रामचंद्रजी के सेवक हनुमान सरीखे थे, किंतु बापू के प्रयोगों के प्रति तटस्थ ही रहते थे। इनसब झमेलों से दूर वह मगनवाड़ी में ही सपरिवार रहते थे जो बापू के रहने की जगह सेवाग्राम से करीब ५ मील दूर है। रोज सुबह ५ मील पैदल चलकर सेवाग्राम जाते और पैदल ही लौटते। जमनालालजी बहुत चाहते कि महादेवभाई के लिए सवारी का इंतजाम कर दें पर वह हमेशा मना कर देते। उनका कहना था कि जमनालालजी पर बापू की वजह से पहले ही बहुत बोझ पड़ रहा है मैं उसमें और क्या वृद्धि करूं ? यह भी कहते कि ५ मील चलना तो व्यायाम में ही आ जाता है ५ मील और सही। और फिर सवारी के भरोसे रहनेवाले व्यक्ति का समय और वह खुद भी पराधीन हो जाता है। साथ ही डर भी था कि बापू पूछेंगे कैसे आये तो क्या जवाब दूंगा ?

महादेवभाई गये यह खबर मिलते ही रात को करीब आठ बजे कमल सेवाग्राम फोन करने लगा। मैंने कहा—'रात को फोन क्या करता है ? दुर्गाबहन की रात कैसे कटेगी ?' तो कमल चिढ़कर बोला—"ऐसी बात कोई छुपती है क्या ? तू तो अब राजी हो गई होगी।" उस समय तो मैं चुप रही। बाद में जब कमल से पूछा कि ऐसा तूने कैसे कहा तो बोला—'अपना घर जलता देखकर दुःख होता है लेकिन दूसरे का घर भी जलता हो तो धीरज बंधता है।' एक तरह से कमल की बात सही थी। मैंने सोचा कि महादेवभाई तो बापू की आंख सामने ही चले गये, तो जमनालालजी को बापू कैसे बचा सकते थे। और इसी विचार से मन का दुःख मेरा कम होता था।

खान अब्दुल गफ्फार खां सरहदी गांधी

खान अब्दुल गफ्फार खां के और हमारे परिवार के बीच घर का सा ही संबंध हो गया था। बादशाह खान जब जेल से छूटे तो वर्धा आये। सीमाप्रांत में उनके जाने पर प्रतिबंध था। सो वह सेवाग्राम में बापूजी की कुटिया में ही रहते थे। बापू के ही कमरे में उनका दफ्तर भी खुल गया।

जेल में बादशाह खान की तबीयत बहुत खराब रही थी, वह बहुत कमजोर हो गये थे और उनका वजन भी काफी घट गया था। हालांकि जेल-अधिकारियों ने उन्हें सब सहूलियतें देने के लिए जोर दिया, लेकिन उन्हें अपने लिए कोई भी सुविधा लेना पसंद ही नहीं था।

सेवाग्राम में भी उनके लिए विशेष कुछ बने यह वह नहीं चाहते थे। जो कुछ आश्रम में बनता वही वह खाते और उसीसे संतुष्ट रहते। अण्डा मांस आदि तो आश्रम में बनने से रहा—लेकिन उन्हें कोई शिकायत नहीं थी।

एक दिन बापूजी ने जमनालालजी से कहा कि खानसाहब का वजन तो बढ़ना ही चाहिए। जमनालालजी ने कहा— यदि आप कहें और खानसाहब मान जायं तो मैं इन्हें बजाजवाड़ी ले जाऊं। वहां इनके खाने आदि का प्रबंध भी ठीक तरह से हो सकेगा। यहां तो इनका आना जाना रहेगा ही। बादशाह खान तैयार हो गये, बापू की इजाजत भी मिल गई और बजाजवाड़ी में उनके रहने का स्वतंत्र प्रबंध करवा दिया गया।

हालांकि बापूजी मांसाहारी खाने के विरुद्ध थे किंतु वह अपने विचार किसी पर थोपते नहीं थे। खासकर उन लोगों पर जो इस प्रकार के खाने के इस कदर आदी हो गये थे कि एकाएक केवल शाकाहारी भोजन शुरू करना उनके स्वास्थ्य पर भी असर कर सकता था। इसी दृष्टि से एक दिन बापू ने बादशाह खान से कहा कि आप चाहें तो आपके लिए अंडा का इंतजाम अलग से हो सकता है, आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से भी एकदम सब चीजें छोड़ देना ठीक नहीं। जमनालालजी भी बोले कि उनके लिए अलग प्रबंध करने में कोई असुविधा नहीं होगी।

लेकिन बादशाह खान ने जवाब दिया: बापू, मैं जमनालालजी के घर में ठहरा हूं, मांस-अंडे की बात सोचना भी कठिन है और फिर अगर खुदा इस खिदमतगार को जिंदा रखना चाहता है तो बगैर अंडे भी रख सकता है। मरना होगा तो अंडा खाकर भी मौत हो सकती है। और अंत तक उन्होंने घर में बना भोजन ही खाया। हां उनकी खिचड़ी में खूब गरम किया हुआ घी जरूर होना चाहिए था और हर रोज जमनालालजी खुद देखते थे कि वह उनकी खिचड़ी में डाला गया है।

बाद में तो बादशाह खान के बड़े भाई डा० खानसाहब, उनकी लड़की, दोनों लड़के—वली और लाली डा० खान की लड़की वगैरा भी आ गये और इस तरह हमारे परिवार में इतने सदस्य और बढ़ गये।

डॉ० खान खानसाहब से चौदह वर्ष बड़े थे, लेकिन दिखते छोटे थे। गोरा, गठा हुआ

शरीर और मिज़ाज से मस्त मौला। हँसी मजाक करते रहते—उदासी तो उनके पास फटकती तक न थी।

खानसाहब का लडका सादुल्ला भी बहुत हृष्ट पुष्ट और सुदर था। छोटा होने के कारण वह और भी प्यारा लगता था। जमनालालजी उसे कमल राम की तरह ही मानते थे। जब वह उनके साथ बाहर जाता तो लोग उसे उनका ही लडका समझते थे।

सादुल्ला की शादी सोफिया से तय करने के जिम्मेदार जमनालालजी ही थे। लबाई सुदरता विद्वत्ता और योग्यता की दृष्टि से यह जोडी बहुत उपयुक्त थी। जब यह शादी तय हुई तो गाधीजी ने जमनालालजी से कहा भी— शादी विवाहो की जिम्मेदारी तुमने ली और निभा भी रहे हो लेकिन यह जोडी मिलाने मे तो तुमने कमाल ही कर दिया।

सोफिया बबई की थी और स्वय सेविकाओ की नायक थी। जमनालालजी उसे अपनी बेटी मानने लगे थे और मदालसा की तरह ही रखना चाहते थे। लेकिन मैं उसे चूल्हे चौके के काम से बचाती थी। जमनालालजी मेरे स्वभाव को जानते ही थे। सोफिया भी बेचारी मेरे सस्कारो का बहुत ख्याल करती थी। लेकिन बच्चे मेरे स्वभाव का मजा लिया करते थे। उन सबमे ओम बहुत चट थी। वह खानसाहब के बच्चो को हाथ मे पापड देकर मेरे पलग पर बठा दिया करती और फिर सब बच्चे मेरे गुस्से का जायका लेते। हालाकि जमनालालजी मेरे स्वभाव से परिचित थे लेकिन वह मेरे विचारो को बदलने की हमेशा कोशिश करते थे। खाने की घटी बजने पर जमनालालजी सोफिया से कहते—"सोफिया खाना खिलाने की तयारी करो। अब बेचारी सोफिया की हालत बुरी—कभी मेरी तरफ देखती कभी जमनालालजी की तरफ।

खानसाहब जेल जानेवाले थे उस दिन की बात है। जसा मुस्लिम रिवाज है परिवार के सब लोग साथ बठकर एक ही थाली मे खाना खा रहे हैं। सो जमनालालजी ने सबको एक ही थाली पर बठाया और साथ मे खुद भी खाने लगे। अचानक ही उस दिन मैं अतिथिशाला मे चली गई। उन्हे इस प्रकार खाते देख मैं तो दग ही रह गई। जमनालालजी ने भाप लिया कि मुझे यह सब अच्छा नही लगा। बाद मे मुझे समझाने लगे कि ये लोग एक साथ बठकर खाना प्रेमसूचक मानते हैं और फिर खानसाहब की विदाई का दिन है आज।

मैंने कहा बस साथ बठकर खाने से ही प्रेम दिखाना है क्या ? लेकिन मैं जानती थी कि सफाई और जूठे आदि का जहाँ तक सवाल था जमनालालजी मुझसे कही अधिक ख्याल रखते थे। यहातक कि उनकी जूठी थाली मे मेरा खाना तक उन्हे पसद नही था। मेरा तो ज्यादा दिखावा ही था।

आजादी के बाद एक लबे अरसे तक खान-परिवार से सपर्क कुछ छूट-सा गया। हालाकि इन तमाम वर्षों मे बादशाह खान पर जो मुसीबतें आई और जिस बहादुरी और दृढता से उन्होने इन मुसीबतो का झेला इनमे बाकी का हम दिलचस्पी और सहानुभूति से देखते रहे। अभी पिछले वर्ष कमलनयन व मदालसा बादशाह खान से मिलने अफगानिस्तान गये थे। उन्हे इस बात का बडा अफसोस है कि जिस लगन और तत्परता से खुदाई खिदमतगार हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लडे आजादी के बाद हिन्दुस्तानियो ने उन्हे भुला दिया। हालाकि उनकी उम्र और स्वास्थ्य ढल गया है लेकिन उनका हौसला अब भी बुलद है। अफगानिस्तान से

उनके खत आते रहते है। १८ ॥ ६५ को लिखे उनके पत्र से उनके दिल के दर्द और भारत के प्रति उनकी मोहब्बत का अच्छा दिग्दर्शन होता है। वह पत्र इस प्रकार है

दारुलेमान काबुल

प्यारी बहन,

खुश और सलामत रहो। तस्लीमात।

आपका रहम और मोहब्बत से भरा हुआ खत कमलनयनसाहब के हाथ से मिला। यादावरी का बहुत-बहुत शुक्रिया। आप लोग मुझे भूले हुए नही और मैं कैसे आप लोगो को भूल सकता हू ?

हम लोग तो एक घर और एक खानदान के लोग थे। लेकिन बदकिस्मती से बटवारे ने हम जुदा कर दिया। हमारे जिस्म तो एक दूसरे से जुदा हैं, लेकिन दिल जुदा नही। मुझे इस बात की खुशी भी है और रज भी। खुशी इस बात की है कि हमने आप लोगो को नही छोडा और रज इस बात का है कि काग्रेस ने हमे छोड दिया, और हमारी बदकिस्मती यह भी कि महात्माजी हमारे बीच से चले गए। मैं कोशिश करूगा कि जब भी ऐसा मौका परमात्मा पैदा करेगा तो जरूर वर्धा आऊगा।

आखिर मे दुआ करता हू कि आप लोगो को आफात बलयात से हमेशा के लिए सलामत और दूर रक्खे। फकत

अब्दुल गफ्फार खा

कस्तूरबा प्रेम की प्रतिमा

बा सरलता, व्यवस्थितता सफाई और प्रेम की मूर्ति ही थी। वह बोलती कम थी और जब बोलती तब नपा तुला और काम की ही बात बोलती। कभी भाषण का भी काम पडा, तो दो शब्दो मे प्रेमभरे और हृदयस्पर्शी शब्द बोल जाती थी।

साबरमती आश्रम की बात है। बापूजी आश्रमवासियो को हर रोज कुछ-न कुछ सुनाया करते थे। एक दिन उन्होने कहा— मनुष्य के लिए अपरिग्रह जरूरी है।" जितना सामान आवश्यक हो उतना ही रखना चाहिए। ज्यादा रखने से सभालने की जवाबदारी बढती है। मानो मैं जाऊ, और मेरा एनक है तो बा को वह आफिस मे जमा कर देना चाहिए। जिसके उपयोग का होगा उसके उपयोग मे आ सकता है। प्रार्थना के बाद आश्रम की कुछ बहनें जब बा के पास बैठी तब बा ने कहा— आज बापूजी क्या बोले मेरी समझ मे नही आया कि धणी (पति) की वस्तु की धणियाणी (पत्नी) मालकिन नही हो सकती ! बा की सरलता पर बहनो को हँसी

आई। मैं भी उस समय वहा मौजूद थी। मैंने कहा— बा, बापूजी ने तो यह कहा है कि अपनी जरूरत की चीज ही अपने पास रखनी चाहिए—ज्यादा रखने में जवाबदारी बढ़ती है। इसपर बापूजी ने अपने ऊपर कहा कि मानो मैं मर जाऊ तो मेरे नशम का बा क्या करेगी। उसका काम है कि आफिस में जमा करा दे। यह तो उन्होंने आश्रमवासियों के लिए समझाने के लिए कहा था।

जब बापू ने आगाखा महल में उपवास किया तब हम लोग उनसे मिलने जाया करते थे। तो एक रोज बा बोली— देखो, बापूजी रोज उपवास करके बैठ जाते हैं। मुझको चिंता रहती है कि अब क्या होगा?' फिर बापूजी के पास हम सबको दर्शन कराने के लिए ले गई और बापूजी से बोली— 'तमे आखी जिन्दगी जेल मा रहेशो अने त्या उपवास पण करशो। हमारा स्वराज कौन जाने क्यारे मलशे पण लोको ने जेल मा पूर्या पछी तेवो ना बालको अने औरतो ना शू।'[1] ये कितना बड़ा उद्गार है बा के हृदय का कि बापू जन्मभर जेल में रह सकते हैं पर जो हजारों लोग जेल में जाते हैं उनके स्त्री-बच्चों और परिवार का क्या हाल होता होगा। जब कोई बा से मिलता तो बा उसे कुछ न कुछ खाने को जरूर देती। और लेनेवाले को ऐसा लगता कि मेरी मा मुझे प्रसाद दे रही है। पर जेल में बा को इस बात के लिए भी बड़ा भारी संयम करना पड़ता था। बस तो आश्रम जीवन भी संयम का ही घर था।

बा के जाने के बाद बापूजी के मुह से ऐसे शब्द निकले कि बा की मौजूदगी में अव्यवस्था कैसे हो सकती थी? एक दिन सेवाग्राम में बापू की खड़ाऊ गुम हो गई तो बा एकदम घबरा गई कि कैसे भूल हो गई। बापूजी का समय हो गया है। अब क्या कहेंगे? खड़ाऊ कहा गई? किसी ने कहा— बा, मैं अभी दौड़कर बाजार से ले आऊ? पर बा तो जानती थी कि बनानेवाले तो बहुत है पर पहननेवाला तो एक ही है। उनसे कैसे पूछें। बा गंभीर हो गई। ऐसी छोटी छोटी बातों का बा को कितना सहन करना पड़ता होगा यह सोचने की बात है। बा ने अपना जीवन ही ऐसा बना लिया था कि सारा नापतौल और टाइम का काम। एक रोज बा ने कहा— मुझे एक साड़ी की जरूरत है। बापूजी बोले— मेरा काता हुआ सूत पड़ा है उसकी बनवा लो। मदालसा ने कहा— बापूजी सेवाग्राम से वर्धा जाते हैं तो भंडार से ले आयेंगे।' बापूजी ने कहा— 'अपने तो दरिद्रनारायण है। जनता के पैसे का ऐसे थोड़े ही उपयोग कर सकते हैं।' फिर बा तो चुप ही रह गई और धीरे से बोली, 'सूत तो मेरे पास भी अपने हाथ का कता पड़ा है।' इस तरह साड़ी की बात बा के मुह से कहने के बाद भी वहीं रह गई। फिर मदालसा ने खादी भंडार में जाकर बा के लिए एक बिस्तरबंद जबरदस्ती सिलवा दिया। वह सिलकर आया तो बा ने बापूजी को दिखाया। बापूजी बोले कि तुम्हें जरूरत है क्या? बा बोली—जरूरत तो खास नहीं थी, मदालसा ने सिला दिया मैंने तो मना ही किया था। बाद में मदालसा ने बहुत कोशिश की लेकिन बा फिर उसे थोड़े ही ले सकती थी। बरसों तक पड़ा रहा। आखिर मैं काम में ला रही हू।

ये बातें देखने में छोटी छोटी लगती है किंतु महान पुरुषों के पीछे स्त्रियों को सहन तो

[1] आप तो जीवन भर जेल में रहोगे और वहा उपवास भी करोगे। आपका स्वराज तो कौन जाने कब मिलेगा, लेकिन इन हजारों लोगों के जेल जाने पर इनके बच्चों व पत्नियों का क्या होगा?

करना ही पड़ता है। लेकिन परिग्रहवाला को अपना अपरिग्रह के आनंद का सुख भी अपार होता है कि जहां जाओ-आओ, थोड़े में ही निभाने की आदत हो जाती है। सबका काम आराम से चलता है।

बापू का यह तरीका था कि जिनके घर ठहरें उनके घर की बहनें चाहें तो बापू के लिए खाना ले जाकर दे सकती थीं। तैयार तो कस्तूरबा तथा आश्रम की बहनें कर देती थीं। खाने में बकरी का दूध, फल और खाखरा, गेहूं के आटे के बने पतले पापड़ आदि चीजें होती थीं। बापू नपातुला खाना लेते थे। संतरा पर अक्सर झगड़ा होता। बापू बहुत थे—तीन संतरे छीलना। देनेवाली बड़े-से-बड़े संतरा और चौथे की एकाध फांक कम करके देती थी, पर बापू तो सब ताड़ लेते थे। यह झगड़ा अक्सर चलता ही रहता।

एक दिन तैयार की हुई थाली को बापू तक पहुंचाने के लिए मैंने कस्तूरबा से कहा कि मैं दे आऊं। बा ने मुझे दे दी। छोटी कांसी की थाली, बकरी के दूध का कांसी का गिलास, छिले हुए संतरा का कटोरा, एक चम्मच और यह सब लकड़ी की पतली-सी थाली से ढका हुआ। बा ने तो मेरे आग्रह पर दे दिया। पर बापू तक पहुंचाने के लिए भी तो तरीका आना चाहिए। बापू ऊपर विनोबा के कमरे में रहते थे। कमरे के बाहर मेरे हाथ से ऊपर की ढकी हुई लकड़ी की थाली गिरकर दो टुकड़े हो गई। मूर्खता में किये हुए नुकसान का बापू पर क्या असर होगा, यह मैं जानती थी। यह भी ख्याल आता कि अब बा भी क्या कहेगी। डरते-डरते बापू के पास गई और खाना टुकड़े दिखाकर बोली— 'बापू, यह तो मुझसे टूट गई।' बापू हँसे तो सही और बोले— 'तुमसे तो उम्मीद ही यही थी। पर बा से क्या कहोगी?' बापू के खा चुकने के बाद मैं डरते-डरते बर्तन लेकर बा के पास गई और टुकड़े सामने रख दिये। बा देखते ही हक्की-बक्की रह गई। जिस बात का डर था वही हुआ। बापू का व्यवस्थित टाइम का काम, पुरानी चीज का प्रेम, ग्रामोद्योग की बनी चीज हर जगह मिलती कैसे? फिर बापू की इजाजत भी लेना जरूरी थी। और अपने लिए बाजार से मोल मंगाना भी उनके लिए असह्य था। मेरा 'मालिकपन' का अभिमान खत्म हुआ।

रामदासभाई बापू के तीसरे पुत्र

रामदासभाई बापू के तीसरे पुत्र थे। जमनालालजी को गांधीजी ने अपना 'पांचवां पुत्र' माना था। इस नाते जमनालालजी को रामदासभाई उम्र में बड़े होते हुए भी आदर और मान की नजर से देखते थे। जमनालालजी भी उन्हें भाई की तरह मानते थे और गांधीजी के परिवार का पूरा ध्यान रखते थे। अब रामदासभाई के चले जाने से गांधीजी और उनके पुत्रों का एक

युग समाप्त हो गया। जमनालालजी गाधीजी के पाचवे पुत्र थे, पर वह तो सबसे पहले ही चल बसे थे।

गाधीजी अपने सब पुत्रो मे रामदासभाई का कुछ ज्यादा ध्यान रखते थे। उनकी पढाई लिखाई और लडको की अपेक्षा कम हुई थी और उनके जन्म से पहले बा की तबीयत भी खराब रहती थी। इससे वह शरीर से कमजोर थे और मानसिक विकास भी और बच्चो की अपेक्षा कुछ कम ही था। पर जहा बापूजी के विचारो को समझने और उनपर अमल करने की बात होती, वहा वह एक आदशवादी की तरह ही सोचते और बरतते थे।

जब रामदासभाई का विवाह हुआ उसके बाद बापूजी ने उनसे कह दिया कि अब तुम आश्रम मे मेरे पास नही रह सकते। सो कुछ दिन उन्होने बारडोली-आश्रम मे खादी का काम किया। फिर सन् १९३० के आदोलन मे जेल जाना आना लगा रहा। १९३३ के बाद जब गाधीजी वर्धा रहने लगे तो जमनालालजी ने रामदासभाई के लिए पहले एक प्रेस चालन की व्यवस्था कराई पर रामदासभाई की सिद्धात दृढता से वह चालू नहा हो पाई। उस व्यवस्था मे भागीदारी के सम्बन्ध मे एक शत ऐसी थी जिस सिद्धात रूप मे रामदासभाई गलत मानते थे और नतीजा यह हुआ कि वह भागीदारी बनने से पहले टूट गई। फिर नागपुर मे टाटा की वस्तुओ की एजेसी जमनालालजी के प्रयत्नो से उनको मिली। उसमे भी वेतन और कमीशन के मामले मे रामदासभाई का आग्रह यह रहा कि अपने खर्च से ज्यादा नही लिया जाय। और खर्चा बापूजी के आश्रम जीवन जसा ही सादगी के आदश के अनुरूप था। इसका नतीजा यह होता कि निमला बहन को घर गहस्थी की सार-सहाल करने मे ज्यादा सहन करना और कष्ट भी उठाना पडता था।

चालीस-बयालीस बरस पहले जब रामदासभाई का विवाह हुआ तो बापूजी ने रामदासभाई और निमलाबहन को हाथ का कता-बुना एक थान तकली आश्रम भजनावली और भगवद्गीता की एक एक प्रति दी और कहा कि रामदास को सभालने मे निमला को पूरा ध्यान देना होगा क्योकि रामदास आदशवादी ज्यादा है और व्यवहार की कुछ कमी उसमे है।

रामदासभाई नम्र सहिष्णु सेवा भावी और जिज्ञासु थे। हर बात समझते और समझकर उसपर चलने का प्रयत्न करते थे अमल करते समय जहा सिद्धात मे बाधा आती वहा वह आदश और सिद्धात को पहला स्थान देते थे। यह मानना पडेगा कि पिछले चालीस वर्षों मे रामदासभाई की सिद्धात प्रियता के कारण निमलाबहन को बहुत जागरूक रहना पडा था और हमेशा रामदासभाई के मन स्वभाव और काय का ध्यान रखना पडता था कि जिससे रामदासभाई का आदश भी निभे और व्यवहार भी चले।

सुना था कि बापूजी को गोली मारनेवाले नाथूराम गोडसे से भी रामदासभाई जेल मे मिलने गये और उन्होने गोडसे को समझाने की कोशिश की थी कि तुमने मेरे पिताजी को मारा इससे मेरे मन मे तुम्हारे प्रति कोई क्रोध या घणा नही है। पर तुम्हारा यह काम मेरी समझ मे नही आया सो तुम्हारा मानस समझने आया हू। गोडसे रामदासभाई को क्या समझाता, पर रामदासभाई की वत्ति और मानस का इस घटना से अच्छा आभास होता है।

रामदासभाई ने गुजराती मे अपने संस्मरण लिखे है। इतने बडे पिता के पुत्र होने का

उनको गौरव मिला था पर उसका कभी भी उनके मन म कोई गुमान नही था। उनकी नम्रता सरलता, सभ्यता और सज्जनता स वह पुस्तक भरी हुई है।

रामदासभाई के चले जान स गाधी युग स सपक का एक और सूत्र टूट गया।

भणसालीभाई हठयोगी

भणसाली भाई न चिमूर अत्याचार के विरोध म बजाजवाडी वधा म ६३ दिन का एतिहासिक उपवास किया था। वहा भणसाली कुटीर" नाम का पाटिया भी लगा है। मैंन इनको करीब ३० वष पहल साबरमती-आश्रम म बापू के पास दखा था। भणसालीभाइ उपवास के 'शौकीन थे। उ होंने १७ २५ और ५१ दिन के उपवास साबरमती म किय थ। बापू ने तो स्वय अधिक से अधिक २१ दिन के उपवास किय थ। पर वह एक आश्रमवासी की हिम्मत पर गव करत थे क्योंकि प्रयोगो का बापू को भी शौक था। इसीलिए उ होंन इजाजत दी पर शत रखी कि घबराहट हो उसी समय छोड देना है। बापू न कहा कि उपवास करना ही है तो वधनमुक्त होकर करो। वह उपवास केवल पानी पर ही करते है। भणसाली भाइ मन म तो जितन दिन के उपवास करन है उतना विचार रखते ही थे। साथ ही अपने आत्मविश्वास और बापू के साथ की चर्चाओ स प्रफुल्लित व निश्चित रहत थ। वल्लभभाई पटेल व अबालाल साराभाई वगरा पूछते थे बापू ! आ घडिय घडिय उपवास करवानो क्या ढग चाले छे ? [1] बापू हँसत हुए कहते, यह आश्रम तो प्रयोगशाला है इसम हठयोग का स्थान नही है पर भणसालीभाई के उत्साह का एक नाप है। सहज स्वभाव स हो सके वहातक की मर्यादा तो रखी है।'

एक बार भणसालीभाई अपन होठो को सिलाने के लिए सुनारो के पास गय। सुनारो ने कहा कि यह पाप वावा कस किया जाय ? तब एक सीधे सादे सुनार को यह कहकर भणसाली भाई न पटा लिया कि तुझे धम होगा और मैं झूठ बोलन स बचूगा। होठ सिलवाकर वह मगनवाडी आये। कुए से पानी निकालन जसा रस्सा कमर म बाधत थे और मोटे टाट के टुकडे को लगोट की तरह कमर म लपेटत थे। एक कटोर म एक पाव आटा घरो म मागकर लाते और कच्चा आटा पानी मे घोलकर सू-सू करके पी लेते। कडवे नीम के पत्ते एक अगुली स मुह म दबाकर चबाते रहते।

आहार मे नीम की मात्रा ज्यादा होने स सारे शरीर म नीबू क जसे पीप के फोडे होन लग। उनमे स कुछ अपने-आप बठ जाते थे और कुछ उभर आते थे। इलाज वगैरा का तो ख्याल

[1] ये बार बार उपवास करने का क्या ढग चल रहा है ?

ही कहा था ? यह सब हाल देखकर बापू हैरान होकर बोले भणसाली ! यह तो अघोरी धंधे है।' मुह के सिले हुए तार तुडवाए तो लिखकर बापू स कहा कि जानबूझ हा बोलूगा जिसस झूठ बोलने स बचा रहू। टाट छुडाकर खादी का लगोट लगवाया। उसके बाद खाना पीना और कच्ची सस्ती चीजे जस कादा, मूली गाजर टोकरी म भरकर चबाते रहना यह क्रम उनका नियमितरूप से चलने लगा। खुद कच्चा खाते पर आश्रमवासियो के लिए रात को १२ स ४ बजे के बीच म आटा पीसकर रख आते थे, यह सोचकर कि ४ बजे दूसरो के पीसने का समय हो जायेगा और उस समय चक्की खाली नही मिल पायगी। बापू भी कड़वा नीम पीसकर सबको खिलाने लगे थ और खुद भी दूध म मिलाकर पीते थे। एक बार सेवाग्राम की खेती म लहसुन ज्यादा हुआ। यह देखकर भणसालीजी उसीको ज्यादा खाने लगे। तो पेशाब म खून आने लगा। किसीने बापू से कह दिया। बापू ने कहा ' भणसाली आ शु ?' तो वह बोले शरीर मा मास अने लोही तो होय एमा शु ?'[1] तो बापू ने लहसुन छुडवाया और दूध पीना शुरू करवाया। अब ३२ सेर दूध पीने लगे। जब आश्रम के बच्चो ने मजाक म कहा कि गोशाला का दूध तो काका ही पी जाते है तो वह गाय के खाने की खल्ली (मूगफली की ढेप) खाने लगे। एक दफा उन्होने सोचा कि गाय के गोबर मे भी सत्व तो रहता ही है और अनाज के दाने भी रहते है, बस बीन बीनकर खाना शुरू कर दिया। आश्रमवासियो ने घबराकर सत्याग्रह की धमकी देकर छुडवाया।

भणसालीभाई बापू की सेवाग्राम कुटी म घडी का समय मिलाने रोज जाते थे। बापू उन्ह देखते ही समय बता देते और वह चले जाते। यह उनका रोज का मिलन समझा। भणसाली काका का सोने का भी अपना अनोखा ही ढग था। रात को गायो के पानी पीने की हौदी म ठडे पानी म सिरहाने पत्थर लगाकर सोते थे वह भी सर्दी के मौसम म। दोपहर को १२ बजे धूप म ककडो पर सोते थे। पर उनका शरीर सदा स्वस्थ रहता। वह सदा अवधूत के समान मस्त रहते। १९४२ म बापू आगाखा महल म नजरबद थे तब चिमूर के अत्याचारो पर तरस खाकर भणसाली भाई बोले कि अब तो अनशन करके मरना ही अच्छा है कारण कि बापू का पता ही नही कि देश म क्या हो रहा है ऐसी दशा म जीवन व्यर्थ है।' और वह पैदल ही सेवाग्राम से चिमूर के लिए चल पडे। वर्धा म लक्ष्मीनारायण मदिर स उनको विदा किया और ३ ४ मील तक लोग साथ गये। आगे एक मोहनलाल नाम के आदमी को साथ ले गये। १८ २० मील जाकर गिर पडे। पुलिसवाले उठाकर सेवाग्राम म छोड गये। इस तरह से दिनो दिन शक्ति टूटने लगी। गाव म चिंता फैल गई। दूर दूर से दर्शनार्थी आने लगे। सरकार से समझौता कराने की कोशिश होने लगी। पर मामला सभल नही सका। इस तरह १४ रोज तक बिना जल लिये १८ २० मील जाना और पुलिस द्वारा लाकर छोड जाना यही क्रम चलता रहा। पानी का सिर्फ कुल्ला करते थे। चलते समय पैरो को घसीटकर चलते थे और फिर रामभरोसे चलते जाते। जहा गिरते वहा से पुलिसवाले वापस ले आते। तब कमलनयन को बम्बई स बुलवाया और उसने बालकपन के अधिकार से समझाया काका यह क्या करते हो ? वह बोले ' मरना ही है तो

1 शरीर म मास और खून ही तो होता है उसम क्या हुआ ?

जल्दी मरना। पानी पीने से दो महीने तक सेवा लेनी होगी। इससे क्या लाभ? तब कमल ने कन्हैयालालजी मुंशी को बम्बई से बुलवाया। और सब तो समझाकर हार गये थे। मुंशीजी ने कहा कि प्रचार के लिए तो मौका मिलने दो। जब काका ने पानी पीना शुरू किया तो १८-२० सेर तक पी जाते थे। बजाजवाड़ी में कीर्तन भजन और दर्शकों की भीड़ का तांता लगा रहता था। प्रभाकरजी ने खूब प्रेम से सेवा की। चालीसवें रोज बैठाकर तस्वीर खींची। गले में बापू के हाथ की सूत की माला अमतुलबहन ने पहनाई। बाद में तो लेटे हुए ही बातें करते थे। १४ दिन बिना पानी पिये २०-२० मील चलने से कमर के नीचे का भाग लकड़ा हुआ-सा हो गया था। उसका बाद में भी कमर पर असर रहा।

एक रोज मुझसे बोले, "मां, एक बात करोगी?" मैं तो डर गई कि पता नहीं क्या बोल उठेंगे। हां व ना कहना कठिन था। पर वह ही बोले "एक लकड़े की पट्टी पर कीलों की पट्टा लगाकर मुझे उसपर सुला दो।" हाय राम!" कहकर मैं घोर से बोली। काका खाने की घंटी बज गई। वह बोले, जाओ मां, खाना खाओ।' रोज बस्ती से १०-१० आदमियों की टुकड़ियां आती जाती थीं। मैं जमनालालजी की कुटिया में मुंशीजी से बोली 'भगवान ने आज गजब कर दिया। कहते हैं कि लोहे की कीलें ठुकवाकर लकड़ी की पटिया पर मुझको सुला दो। तो मुंशीजी बोले, तुम खाना खाओ, मैं वहां जाता हूं। फिर मुंशीजी ने उन्हें समझाया, काका आपने जानकीबहन से क्या कह दिया? वह बोले 'हां, मुझे कीलों पर सुला दो। तो मुंशीजी बोले, काका, यह गृहस्थियों का घर है। काका ने कहा, तो मुझे बाहर सड़क पर ले चलो ना?" मुंशीजी ने कहा, 'काका! आज जमनालालजी नहीं है तो जानकीबहन पर इतना संकट डालोगे क्या?' यह सुनकर सरलस्वरूप बालक के जैसे भणसालीभाई चुप रह गये। १०-१० रोज के बच्चों को लेकर भी बहनें दर्शनों के लिए आतीं और काका की तरफ देखकर रोती थीं कि ये कैसे जियेंगे? कमल कहता था, काका तो अमर हो जायंगे, ऐसी मौत किसको मिलती है? पर बापू के आंदोलन की सफल कैसे बनाई जाय? काका कालेलकर व अमतुल बहन ने अपने नाम दिये। पर इस तरह से मरना कोई खेल थोड़े ही था! रोना इसलिए आता था कि जो दो चम्मच गुड़ के पानी पिलाने से जी सकता है, उसका मरना कैसे देखा जायगा?

एक रोज वह बोले, मां, मेरी आंखें, जीभ अंदर खिंच रही है। मैं बेहोशी में कुछ खाने को मांगूं तो भी मत देना, मेरा व्रत भंग हो जायगा। माताएं तो फूट-फूटकर रोती थीं।

काका समझाते थे, पांच तत्त्व का शरीर है, पांचों तत्त्वों में मिल जायगा। इसकी चिंता क्या? सरकारी इंतजाम था कि भणसालीभाई मरें तो चुपके से दबा दिये जायं, और बम्बईवालों का प्रोग्राम था कि स्पेशल ट्रेन लेकर आवें। अखबारवालों ने इंतजाम किया था कि अखबार में 'ज्योति' निकाली जाय। जिस दिन अखबार में ज्योति न निकले उस दिन भणसालीभाई गये ऐसा समझ लेना। क्योंकि तार, डाक, टेलीफोन से खबर देना सरकार ने बंद कर दिया था। सरकारी अफसर छुट्टियों पर घर नहीं गए। २१ दिन के बाद आज मरेंगे, आज मरेंगे सोचते सोचते ५६ दिन हो गए। अब अफसरों ने कहा कि इनको रात को कुछ खिलाते होंगे, वरना पानी पर कम जी सकता है इतने रोज? अनेक तरह की अफवाह उड़ती थी। नागपुर से अफसर आये और भणसालीभाई के शरीर को देखकर घबरा गये। उन्होंने माफी मांगी। मर

जायेंगे तो आफत हो जायगी। इसपर मुंशीजी और कमलनयन ने भणसाली भाई को खबर दी कि सरकार आपसे माफी मांगती है, आप उपवास छोड़ दीजिये। गांव में डौंडी पीटी गई और लोग जमा हो गये। डी० सी० और उनकी पत्नी भी आये। फूलों की मालाएं पहने हुए भणसालीभाई का चेहरा चमक रहा था। वह शरीर का मोह छोड़कर ऊपर ही ध्यान करते थे, इसलिए उनके शरीर का खून चेहरे पर चमकता था। डी० सी० देखते ही रहे। तब मैं समझ गई और काका के पेट से चादर हटा दी। उनकी नाभि और पीठ की हड्डी एक दूसरे से चिपक गई थी। यह देखकर वह दंग रह गए और बोले कि ऐसी तपश्चर्या हिंदुस्तान के सिवाय किसी देश में देखने को नहीं मिलती।

जब प्रार्थना के बाद उपवास छूटा तो काका की तो वही बात—कच्चा आटा घोलकर पिला दो। पर अपना मन कैसे माने। हमने समझाया कि डाक्टरों के हिसाब से आपको आज तो मौसंबी संतरे का रस ही लेना पड़ेगा। संक्रांत के कारण माताएं तिल के लड्डू और फल भेंट करने लाईं, तो काका लड्डू उठाकर खाने लगे। अब इस बाल हठ को कैसे रोकें? मुझे आकर लोग कहते थे कि काका तो लड्डुओं पर टूट रहे हैं। आप समझाओगी तभी मानेंगे। मैं बार बार दौड़कर जाती थी, "काका, यह क्या करते हो?" तो कहते, "कुछ नहीं होगा।" जब कहते कि काका, हम तो डरते हैं तब वह मान जाते।

अब भणसालीभाई ने नागपुर के पास टाकली में आश्रम खोल रखा है। बहन पुष्पाजी उसे चलाती हैं। नागपुरवासी सब तरह की मदद करते हैं। अभी फिर से सुना कि ६६ दिन के उपवास काका ने शुरू कर दिये। लगता है कि उनका रहना और जाना अमर ही है, लेकिन लोगों से सहन होना कठिन है। अनसूयाबाई का पत्र आया कि वह खुश हैं और जरूरत पड़ेगी तो प्रभाकरजी को बुला लेंगे, ऐसा कहते हैं।

भणसालीभाई अपने स्वभाव के निराले ही हैं। इनके मददगार तो भगवान ही हैं।




कुछ चुने हुए पत्र

बापू की ओर से

यं० मं०[1]

चि० जानकीबेन, २७-७-३०

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्या न होगा? अब तो भाषण करती हो, अखबारों में भी नाम आता है। समय-समय पर जब जानकीबाई बजाज का नाम अखबारों में देखता हूं तो उससे ऐसा ही लगना चाहिए न कि जमनालाल और हम सब भले ही जेल गये और वहीं रहें! मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देनेवाले अविश्वास के पीछे पूरा आत्मविश्वास था। ईश्वर उसमें वृद्धि करे। कमलनयन को जल्दी नहीं करनी है। खादी उत्पत्ति के काम में अभी भले ही लगा रहे। टुकडी के बाहर निकलने पर बालजीभाई को लिख।

बापू के आशीर्वाद

•

यं० मं० २०-८-३२

चि० जानकीमैया,

खूब! आखिर मैंसिन की दो सतरें लिखने की तकलीफ की तो! जेल जाकर भी आखिर आलस्य नहीं गया न? 'अ' वर्ग देने में ही भूल हुई। 'क' वर्ग देकर खूब काम कराना चाहिए था। आलस्य तो ठीक परंतु अब शरीर की हालत ठीक कर लेना। विनोबा के शिकंजे में खूब फंसी हो। पत्र बराबर नहीं आयेंगे तो सजा मिलेगी। पुरानी कामली, जिसपर तुमने खादी सीकर फिर से नई बनाई थी, वह राजमहल में हो आई यह बात मैं कह चुका हूं न? यहां भी वह है। अभी तो बहुत चलेगी।

बापू के आशीर्वाद

•

1. यरवडा मंदिर अर्थात यरवडा सेंट्रल जेल पूना।

जानकीदेवी की ओर से

पूज्य बापूजी, वर्धा, अगस्त, १९३२

आपका काड ता० १५ ८ का मिला था। उसम आपन शिवाजी वगरा की खबर मगवाई थी। उसका उत्तर पहुच गया होगा।

आपका पत्र ता० २० ८ ३२ का भी मिला। आप कहती है कि बापूजी को विशप काम नही होगा जिसस बड-बड विशेषण लगात हैं। मरा 'ज' वग आपका पटकेगा यह मैं जानती थी। आप क वग के लिए इच्छा रखें या उसस भी नीचे के वग क लिए। अगर आप मुझे रसोइ सिखाना चाहत हा ता यह हा नही सकता। और यहा वर्धा तहसील की १०० बहनें हान के कारण दूसरी मेहनत करना चाहू तो भी आलस्य म ही समा जाती हू। लकिन मुझे ता एक ही भय था कि कही क की खुराक स मर जाती तो ?

आप आलस्य आलस्य कहत हैं, पर २०पुस्तकें जो जिंदगी म नही पढी थीं सा पाच मास म पूरी की। यहा आते ही दूसरी जेल म फस गई ! ता० ४ ८ ३२ को छूटी और ता० ■ ८ को हिंदी साहित्य की प्रथमा परीक्षा का फाम भर दिया। ओम, प्रह्लाद उसका छोटा भाई श्रीराम परीक्षा म बठनवाले थ ही। कमल को भी फसा दिया। मुझ तो आप वही से आशीर्वाद दें कि जिससे म पास हो जाऊ।

आप दूसरा को कहते हैं कि दया करो और अपन बीमार हाथ स कितना काम लत है। आपने विनोबा के शिकजे म आने का लिखा सो तो य काटे आप ही के बोये हुए हैं। लेकिन एक नई खबर सुनाती हू कि विनोबाजी भी अब मेरे शिकज म आने लग है। वह भी आज आपको पत्र दनवाले है।

आपने पुरानी कामली की याद कराई सो ऐसे काम तो बिना आलस्य के ही हो सकत हैं !

मेरी तबीयत ठीक है। कमला का वजन बिना कोशिश के ही सपाटे मे बढ रहा है। ४४ पौड हो गया था सा ३५ तो भर आया, अब न बढे तो अच्छा है।

जानकी का प्रणाम

•

बापू की ओर से

चि० जानकीमया य० म० १९ ९ ३२

क वग का खाना खाकर मरने का भय तुम जसा का हाता है इसीस बिना खाय जीने का रास्ता मैंन पकडा है। कल स यह देख लना। खा-खाकर तो सारा ससार मरता है। अ वग का खाकर कितना जी सकागे यह देख लगे। परतु अनशन करते करते जीन की कला कसी है ! एक शत जरूर है। तमाम मर्यादा का जागन बनकर बाहर निकलना पडेगा और अस्पृश्या को

स्पृश्य बनाकर खुद भी ईश्वरी शक्ति होने का दावा साबित करना पडेगा। इतना करना और फिर 'अ' वर्ग का ही खाना खाती रहना। परतु यदि कोई 'अ' वर्ग का न दे तो 'क' वर्ग के खाने से भी सतोष मानना।

परतु मान लो कि जागना का भी कोई बस न चला तो भले ही यह मिट्टी का पुतला टूटकर अभी गिर जाय मैं तो जीनेवाला ही हू। जबतक एक भी सेवा मेरा काम करती होगी तबतक कौन कहेगा कि मैं मर गया? भले ही आत्मा की अमरता सबधी गीता का तत्त्वज्ञान हम छोड दें जो अमरता मैंने बताई है वह तो हम चर्म-चक्षुओ से भी देख सकते है। इसलिए खबरदार जो जरा भी घबरा गई तो। शोभित होना और शोभित करना। तन मन धन ईश्वर को सौपकर सुखी होना व रहना। नखरीली ओम को और नानी मदालसा को आज नही लिख सकूगा।

यह तुम सबके लिए है ऐसा समझना। तुम्हारा सौभाग्य अखड रहे।

बापू के आशीर्वाद



वर्धा २५ १० ३३

प्रिय भगिनी

आप बहनो से परदा तुडवाने के लिए कलकत्ता जा रही हैं, इसलिए धन्यवाद। परदा वहम ही नही है उसमे मुझे पाप की बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुषमात्र विषयासक्त रहते है? क्या स्त्री अपनी पवित्रता और परदा नही रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है जो सभी पुरुषो मे सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि प्रधान युग मे स्त्री धर्म की रक्षा करनी चाहती है तो उसे दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करने का अर्थ खादी प्रचार, कातना इत्यादि हरिजनसेवा का अर्थ अस्पृश्यतारूपी कलक धोना। ये दो बडे भगवान के काय (है)। और विद्या पाने का काय परदा रखने के साथ कभी नही चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजी के साथ जगलो मे भटकी होगी? सीता से बडी पवित्र स्त्री जगत मे कभी हुई है? बहनो से कहो परदा तोडो धर्म रखो।[1]

आपका
मोहनदास गाधी



१ जानकीदेवी अखिल भारतवर्षीय मारवाडी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा होकर कलकत्ते गई थी। गाधीजी ने उनकी मार्फत उपयुक्त सन्देश वहा की बहनो के लिए भेजा था।

चि० जानकीबहन

यदि दिमाग की कमजोरी के कारण जमनालाल को गुस्सा आता हो तो उसका निवारण की क्या बात है? बीमार के गुस्से पर भला कोई ध्यान देता है? बीमार की दिल से हमदर्दी ही की जाती है। या केवल विनोद के लिए गुस्सा कर लिया है?

बापू के आशीर्वाद

•

पचगनी, १-७-४४

चि० जानकीबहन

ईश्वर की कृपा होगी तो तुम्हारी खबर सब के लिए लायगी आनन्द का दर्शन करता हूं। कृपा तो भूल से लिख गया। ईश्वर की तो हमेशा कृपा ही होती है। हम उस कृपा को न पहचान सकें यह हमारी मूर्खता है। पर उसकी इच्छा के तो हम अपनी इच्छा या अनिच्छा से अधीन हैं ही। अर्थात् उसकी इच्छा होगी तो तीनों को मिलेंगे। मदालसा और ओम यहां होंगी यह ठीक है। सावित्री की अनुपस्थिति खटकी। कमला का तो कहना ही क्या? वह तो बहुत ज[illegible]ली है। अब और नाम भरने लगूंगा तो दूसरी चिट्ठी लिखनी पड़ेगी और फिर क्या?

बापू के आशीर्वाद

•

विनोबा की ओर से

नालवाड़ी, ८-३-३८

श्री जानकीबाई

आपने तार देकर मुझे बुलाया। तुम तीनों[1] वहां हो और तीनों के लिए मुझे श्रद्धा है। इसलिए स्वाभाविक रूप से आने का विचार भी हो रहा था लेकिन आखिर न आने का ही तय किया। वहां आकर भी मैं आपको क्या शांति दे सकनेवाला था? मेरी मनोवृत्ति जरा और तरह की है। संसार को मिथ्या मानकर बैठा हुआ मैं एक रसहीन आदमी वहां के नैसर्गिक आनन्द में, शायद नमक की डली बन गया होता। रविबाबू ने एक गीत लिखा है। उसमें कहा है

'एकला चलो, एकला चलो,
ओरे ओरे ओ अभागा

१ जानकीदेवी महादेवीताई और मदालसा

' ऐ अभागे । तू अकेला ही चल । ' यह गीत मैं हमेशा अपने ऊपर लागू करता हू, लेकिन 'अरे अभागे' नहीं कहता, 'अरे भाग्यवान' कहता हू ।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है ।

विनोबा

•

जानकीदेवी की ओर से

श्रीहरि

वर्धा, १४-६-१४

श्रीयुत प्राणनाथ

जोग लिखी वर्धा से आपकी दासी का प्रणाम बचना । पत्र आपका आया, पढकर बडा आनद हुआ । प्रेम का ऐसा आनद दूसरों के लिए भी होना चाहिए । मुझे चिंता है कि मैं आपके विचारो के माफिक अभी हू नही । आपके साथ रहने से शायद बन जाऊ । दानीजी के यहा अच्छी व्यवस्था के साथ आप रहते हैं सो ठीक है । आपने लिखा कि दानीजी दूसरी जगह जाने नही देते । सो कोई हरज नही । आपका रहना भला किसको भारी पडेगा । वहा जाने से मानसिक चिंता बहुत कम हो गई लिखा सो आनद की बात है । आपके गुणो के पीछे किसी बात की कमी नही है फिर भी मनुष्य शरीर है । थोडी-बहुत चिंता हो ही जाती है ।

आपने लिखा कि तुमने प्रेमपूर्वक मगल-कामना चाहते हुए मुझे विदा किया और इसके लिए आपने बहुत आभार भी माना लेकिन मुझे तो यही हर्ष है कि आपके-जैसा सरल स्वभावी ईश्वर रूपी मनुष्य पति के रूप मे मुझे मिला है, और शोक यह है कि ऐसे मनुष्य फिर कहा मिलेंगे । ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मेरा मन भी आपके जैसा निर्मल करे और जनम-जनम आपका साथ दे । मुझपर ईश्वर की कृपा है कि इसी जन्म मे हीरा हाथ लग गया है लेकिन मेरे से लाभ उठाया नही जाता ।

अक्षरो मे या समाचारो मे गलती हो तो क्षमा करेंगे । वर्धा मे वहा चिंता कम रहती है, लिखा सो ठीक ही है । कारण यहा आपके साथ बातचीत करनेवाले कोई थे नही । वहा सब प्रकार की सगत रहती है ।

आपका पत्र आने से दिल पर बहुत असर हुआ है । आपका जैसा हुकुम है वैसा ही खाने पीने का ख्याल रखूगी । आप कोई चिंता न करें । डालूराम वगैरा के बारे मे भी जो आपने लिखा है वह करूगी । चिट्ठी आने से एक बार मिले बराबर लगता है । आप चित्त को सब प्रकार प्रसन्न रखियेगा । एक-दो रोज ज्यादा लग जाय तो फिकर नही ।

कमला को आपकी तरफ से प्यार किया है ।

आपकी शुभचिंतक
सौ० जानकीबाई

जमनालालजी की ओर से

कलकत्ता

पौष व० ६ सं० १९७३

श्रीमती प्रिय दर्शी (६-१-१७)

सप्रेम आशीर्वाद। विवाह, कांग्रेस सभा, मिलना आदि की गड़बड़ में पत्र नहीं लिखा गया। स्वास्थ्य बहुत ठीक है।

यहां मारवाड़ी जाति में विद्या प्रचार का उमदा प्रयत्न हो रहा है। श्री परमात्मा ने थोड़ी सफलता भी प्रदान की है। आशा है और भी सफलता मिलेगी। श्री गांधीजी महाराज उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहां आये थे। अपनी तरफ से ही सब प्रबंध किया गया था। दस रोज तक इनकी सेवा करने का अच्छा मौका मिल गया।

अब मेरा विचार रंगून की तरफ जाने का है। टिकट अभी तक नहीं मिला है कारण कि स्टीमर थोड़े जाते हैं और जानेवाले बहुत हैं। अगर ता० ११ जनवरी तक टिकट मिल जायगा तो १५-२० रोज उधर घूम आऊंगा। बहुत दिनों से इच्छा है। अगर टिकट नहीं मिला तो ४-५ रोज में वर्धा आ जाऊंगा।

तुम्हारे कारण घर की, वर्धा की तरफ की कोई फिक्र नहीं है। कमला, बालू, मदालसा को बहुत राजी रखना। कमला को पढ़ाने के लिए मास्टर बराबर आता होगा। पढ़ाने का बराबर ख्याल रखना।

और तो इन दिनों सब ही आनंद रहा, केवल श्री दामोदरदासजी राठी के स्वर्गवास होने के समाचार सुनकर चित्त थोड़ा व्याकुल हुआ था। परंतु अच्युत स्वामीजी महाराज के सत्संग का सौभाग्य मुझे कई दिनों से मिलता आया है, इसलिए जीवन मरण का प्रपंच थोड़ा बहुत समझ सका हूं। संसार स्वप्नवत है, इसमें सुख है नहीं, जो भी है सब कल्पित है, इस प्रकार विचार करने से शांति मिलती है। सुख-दुख और यह संसार सब मिथ्या है। इसलिए शरीर से जो कुछ सेवा बन सके वह निःस्वार्थ भाव से करने का हमेशा प्रयत्न रखना ही मनुष्य-जन्म का मुख्य कर्तव्य है। आशा है, तुम भी यदि यही ध्येय सामने रखकर कार्य करोगी तो तुम्हें भी अवश्य शांति मिलेगी।

सरकार से राय बहादुर की पदवी मिलने के कारण कई जगह से मित्रों के बधाई के तार पत्र आदि आते हैं। यह सब तो आडंबर है। तथापि श्री परमात्मा ने किया तो इस तरह के आडंबर का भी सेवा करने में उपयोग हो सकेगा। ईश्वर से यही प्रार्थना हमेशा करते रहना आवश्यक है कि वह सद्‌बुद्धि प्रदान करें, निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए बल प्रदान करें।

पत्रोत्तर देने की आवश्यकता नहीं। कोई चीज चाहिए तो लिख देना।

तुम्हारा

जमनालाल बजाज

जमनालालजी की ओर से

पटना के नजदीक (रेल में),
१५-८-२१

प्रिय देवी

सप्रेम वन्देमातरम। तुम्हे बहुत दिनो से पत्र लिखने का विचार था परंतु लिख नही पाया। बबई में स्वदेशी का काम ठीक चल रहा है। तुम्हारे लिए साडी का कपडा नमूने के लिए भिजवाया है सो मिला होगा। अब बापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत फायदा पहुचेगा ऐसा मेरा विश्वास बध गया है। मेरी इच्छा तो यह है कि तुम और मैं दोनो उनके साथ भ्रमण में रहा करें जिससे उनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा हमारा ज्ञान भी बढे। ईश्वर की दया से हमारी यह इच्छा भी पूर्ण हो जायगी।

एक बार देश में जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देंगे तो वहा तुम्हे भी साथ ले जाने का विचार है। अगर कलकत्ते जाना हुआ तो तार से दुकान पर खबर दे दूगा। वहा के पते पर तुम्हारे मन के विचार पूरी तरह लिख भेजना।

घर में आये हुए अतिथि की सेवा तथा प्रबंध बराबर रखना।

अहमदाबाद से हिंदी नवजीवन ता० १६ को निकलेगा। इसे पूरे ध्यान से पढा करना।

तुम्हारा
जमनालाल

•

तेजपुर (आसाम)
भादवा वदी ४, स० १६७८
(२२-८-२१)

प्रिय देवी

सप्रेम वन्देमातरम। पत्र तुम्हे पटना से पोस्ट किया था वह मिला होगा। उसमें सब बात लिखी ही थी। पटना में एक रात कलकत्ता ठहरते हुए ता० १८ को गोहाटी पहुचे। श्रावणी पूर्णिमा उसी दिन थी। रास्ते में एक स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापू के हाथ से नई जनेऊ पहनी व उसी रोज शाम को ही राखी बधवाई। कलकत्ता से हाथ का कता हुआ और कुसुम्बे में रगा हुआ सूत का तार साथ ले आया था। उन्होने बडे प्रेम और प्रसन्नता से राखी बाधी। मैंने राखी बाधने की दक्षिणा के लिए पूछा तो उन्होने विराजमन सभालने के लिए कहा। तब मैंने कहा कि आप आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल इतना बढा दीजिये। यह बात तुम्हारे ध्यान में रहे इसलिए लिखी है। रक्षा-बधन का दिन खाली नही गया। मेरी समझ में तो बापू ने इस भाव से राखी अभी तक और किसी को नही बाधी होगी।

जिस तरह हम लोगों की जवाबदारी बढ़ती जाती है उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढ़ा देगा, ऐसा मुझे विश्वास है। अपनी दिनचर्या हम जितनी सादगी और सत्संगति में बितायेंगे साधना में उतनी ही सफलता हम प्राप्त होगी। मुझे तुमको यही लिखना है कि गृहस्थी के छोटे छोटे प्रपंचों की तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य के असली कर्तव्य की तरफ अपना ध्यान मोड़ो। हमें हमेशा प्राणिमात्र के लिए प्रेममय बर्ताव कायम रखते हुए आनंदमय जीवन बिताना है। यह आनंद जितना बढ़ेगा उतनी ही जल्दी हमें ध्येय की प्राप्ति होगी। इसलिए मन लगाकर कर्तव्य करती जाओ। खूब प्रसन्न रहो। जिंदगी को भार रूप मत समझो। जहांतक स्वराज्य नहीं प्राप्त हो वहां तक स्वराज्य के सिवाय दूसरी बातों का खयाल भी हमें नहीं आना चाहिए। इतना मन उसमें लगा दो। सत्याग्रह-आश्रम में हमेशा जाया करनी होगी। वहां जाने से मन को अवश्य शांति मिलेगी। यदि पूज्य विनोबाजी का तुम्हारे ऊपर विश्वास पैदा हो गया तो आध्यात्मिक ताकत बढ़ाने का मार्ग भी वह तुम्हें बतायेंगे। उनकी सत्संगति से तुम्हारी दिनचर्या अवश्य सुधर जायगी।

सब बच्चों तथा कुटुंबियों में खूब प्रेम का बर्ताव रखना। अतिथियों का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारा,
जमनालाल

•

जानकीदेवी की ओर से

वर्धा ४-६-२१

श्रीयुत प्राणनाथ

नमस्कार प्रणाम।

आपके तीन पत्र मिले। पढ़कर आनंद हुआ। पत्रों से मन पर असर भी खूब होता है। *आपके काम में बाधा होगी इसलिए आपके हाथ का पत्र नहीं मंगवाना चाहती।*

मंदिर में तो विदेशी कपड़ा नाम के लिए भी नहीं है। मुकुट चांदी-सोने के बनवाने का विचार है। फिलहाल खादी के बना लिये हैं।

घर के लिए फर्नीचर की भी अड़चन है। उसमें विचारों के माफिक फेरफार हो रहा है। अलग एक कमरे में नया कपड़ा रखा है उसमें घर का तो एक हजार से ज्यादा नहीं है, किंतु मंदिर की हजारों रुपये की पोशाकें हैं। उनके बारे में जैसा सोचा जायगा वैसा करेंगे। अपने तो प्राण ही बापू के अर्पण है। दूसरी तो बात ही क्या? मुझे तो स्वप्न में भी बापू ही दीखते हैं। सोकर उठती हूं तो बापू की आज्ञानुसार खादी के कपड़े पहने हुए परमात्मा से आशीर्वाद मांगती हूं कि बापूजी का आत्मबल बढ़े। उन्हें काम में सफलता हो। आपकी इच्छानुसार आपको तथा मुझे वह सद्बुद्धि प्रदान करें।

मुझे तो पूर्ण आशा है कि हमें कार्य में सफलता जरूर मिलेगी। बाकी लोगों का तो उत्साह जितना सामने रहता है उतना पीछे नहीं रहता। लेकिन समय आने पर ईश्वर आप ही शक्ति देगा।

बम्बई में कपड़े भिजवाये थे जिनमें कुछ का एक तथा कुछ के दोनों सूत मिल के थे। ये कपड़े लोगों के विश्वास पर भिजवा दिये गए थे। किंतु अपने लिए तो दोनों सूत हाथ के ही होने चाहिए ऐसी इच्छा रहती है। आश्रम में तो ऐसा है ही। धोती जोड़ा और मंदिर के प्रसाद के पत्र पुरुषोत्तमदास सुनीमजी के साथ आपके लिए भेज हैं। धोती जोड़ा वजन में बहुत ही हल्का है। उसके सूत हाथ के हैं। आप उन्हें पहनना। बस मेरे भी काम आ जायगा।

इस जाने के बारे में आपने पूछा है सो वहां आपका ज्यादा रहना तो होगा नहीं। अकेली मैं भी नहीं रह सकूंगी। बच्चों को साथ ले चलने का दुःख ठंडा मुल्क। तकलीफ होती है। जाने की इच्छा यो थी कि आपके साथ स्त्रियों की एक-दो सभाएं भी हो जातीं। स्त्रियों में आपकी बातों का भी प्रचार तो करनी ही होगी। आप आनंद के साथ कार्य करते रहिये। इधर आने का कार्यक्रम अपनी जरूरत के मुताबिक रखना। काम के साथ आराम की भी जरूरत है, कारण ज्यादा मेहनत किसी न किसी रूप में फिर तकलीफ देती ही है।

आप कहां भी रहें परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपका कुशल समाचार मिलता रहे। आपके साथ रहने की मेरी बहुत इच्छा रहती है किंतु बच्चे छोटे हैं उन्हें अकेला छोड़ना ठीक नहीं [illegible] भी ठीक नहीं। आश्रम में [illegible] रहती हूं। आपने लिखा है कि माया जितनी कम हो उतनी ही अच्छी [illegible] कि आपको बापूजी के साथ की जितनी जरूरत है उतनी ही मुझे आपके साथ की है। [illegible] तो मुझे बड़ी के माफिक हो गया है। आपकी [illegible] हूं। उसमें तो बहुत आनंद है। परन्तु हमारे शरीर में [illegible] कुछ सायद बनें तभी वैसा आनंद ले सकते हैं। जबकि [illegible] बापूजी की [illegible] में उसका [illegible] उपयोग करने का अधिकार आपको है। [illegible] इसका अनुभव मुझे हो [illegible] है। [illegible] आप चिंता न करें।

[illegible] आपके लिए मुताबिक [illegible] रहती हूं। [illegible] भी है। [illegible]

[illegible] (२० वीं) आई है। मैंने [illegible] लिखा है कि आप [illegible] महीने [illegible] सो आप ही का है। [illegible] हमारा भजना और [illegible] ठीक [illegible] है। [illegible] मन [illegible] नहीं [illegible]। आप चिंता बिल्कुल न करें।

[illegible] कहां [illegible] सो अपना हाल [illegible] मुताबिक [illegible] नहीं

छोडते । बात तो इसके सिवा दूसरी अच्छी ही नही लगती । खादी ही-खादी दीखती है ।

हिंदी नवजीवन' बराबर पढती हू । तीसरा अक आज ही आया है । आप आसाम की ओर बापू के साथ थे, इसलिए चिता नही हुई । आपकी इच्छा के माफिक तो मैं आपके साथ रहने मे ही बन सकती । अन्यथा कठिन है । आपको समय मिले तो समाचार देना । कुछ जल्दी नही है । मैं कुशल हू । आप निश्चित रहिये । प्रेमानद रखिये ।

आपकी प्रेमालु
कमला की मा

•

जमनालालजी की ओर से

वर्धा ६ ११ २८

प्रिय देवी,

मैं काफी समय से तुम्हें पत्र लिखना चाहता था परतु लिख नही सका । दीपावली के निमित्त भी तुम्हारे नाम से पत्र नही भेज सका । तुमने जिस प्रेम व श्रद्धा भक्ति से मेरी सेवा की और मेरे कारण कई तरह के कष्टो का सामना तुम कर रही हो वह मुझे भली प्रकार ज्ञात है । इसके अलावा तुम्हारे सरीखी पवित्र देवी के साथ जिस निर्मल प्रेम व भक्ति के साथ मेरी ओर से व्यवहार होना चाहिए वह नही हो सका, इसका भी सुख दुख व स्मरण बना रहता है तुम्हारे साथ बातचीत करते समय जितना प्रेम हृदय मे रहता है वह मैं प्रकट नही कर सकता । इस त्रुटि का मुझे पता है । परतु मैं तुम्हे इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हू कि बहुत अशो मे मैं तुमको अपने आपसे ज्यादा पवित्र समझता हू । तुम्हारे हृदय मे उदारता व प्रेम अधिक बढते हुए देखने की मेरी इच्छा रहती है । आशा है आश्रम जीवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ तुम्हे अवश्य मिलेगा जिससे हम लोगो के भावी जीवन मे सुख की वृद्धि होगी । मुझमे जो टोकने की आदत पडी हुई है उसका दुखदायक उपयोग बोलचाल मे होता है । आशा है, इसे तुम क्षमा करोगी । असल मे मेरी यह इच्छा रहती है कि तुम मुझसे अधिक उदारता प्रेम व सरलता अपने जीवन मे प्राप्त करो ।

कमला के विवाह के लिए फतहपुर लिख दिया गया है कि मेरे विचार तो उन्हे मालूम ही है । इतने पर भी उनकी इच्छा हो तो वे जिस महूर्त पर चाहेंगे विवाह कर दिया जायगा ।[1]

•

[1] यह पत्र अधूरा ही मिला है ।

वर्धा, (१० १ २६)

प्रिय जानकीदेवी

पत्र तुम्हारा मिला। मैं रात पूना से वापस आया। चिरजीव कमला के विवाह के बारे में चिरजीव मणिबहन का पत्र मिला। वर्धा में विवाह होता तो खुशी होती अगर दोनों ओर से सिद्धांत के माफिक विवाह होने में पूरी सुविधा होती। यह नहीं है। सामनेवालों की बाधा में इस प्रकार विवाह करने में बहुत सी बाधाएं हैं। इससे आश्रम का ही नक्की करना उचित है।

कुछ रोज बाद साबरमती जाने का मेरा विचार है। तब और खुलासा बातें पूज्य बापूजी से कर ली जायगी। पूज्य बापूजी ने पूज्य काका साहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम में करने का विचार लिख दिया है। मुझे यह पूना में मालूम हुआ।

कमला का मन जिन जिन गहने दागीना पर हो वे अवश्य उसे दे दिये जायं। इसमें मेरी पूर्ण सम्मति है। परंतु मेरी समझ यह है कि गहनों पर जितना ज्यादा तुम मन समझती हो उतना शायद नहीं है। गहने नहीं मिलते इसलिए वह पढ़ाई पर मन नहीं लगाती यह बात मेरे विचार से सही नहीं है। मेरी समझ से एक तो उसके आस पास का वातावरण बहुत पुराने ढंग का है दूसरे उसकी याददाश्त थोड़ी कमजोर है इसलिए उससे याद करना आदि नहीं बनता। उसे ठीक तरह से समझाकर पढ़ाया जाय तो लाभ हो सकता है। अब तो पढ़ाई का भार मणिबहन पर छोड़ दिया है उसे ठीक लगे उसके मुताबिक किया जाय।

जमनालाल का वंदेमातरम

•

जानकीदेवी की ओर से

साबरमती, १५ ११ २६

प्राणेश्वर

दीपमालिका की पूजन बापू ने कराई सो ठीक। आपको काम था सो आपको तो छिप जाने पर भी लोग छोड़ेंगे नहीं।

आपने लिखा कि बापूजी की संगत से उदार तथा ध्येयपूर्ण जीवन बिताने का निश्चय करके आओगी सो उदारता में तो मैं जानती हूं थोड़ा फरक जरूर पड़ेगा। कारण यहां पैसा की छूट न होने पर भी जरूरत होने पर राजाओं से ज्यादा उदारता देखकर बार-बार विचार आया करता है। जीवन भर का निश्चय करना खेल थोड़े ही है वह तो मुश्किल से होगा। जैसे जैसे ज्ञान होगा त्याग हो जायगा। त्याग से ज्ञान नहीं होगा। मैं देखती हूं और अनुभवी विद्वानों की सलाह तो यही मिली कि इच्छा के विरुद्ध करने से बेलाबेन को अभी तक शांति नहीं हुई। इतनी समझदारी से रहती है खुद समझदार भी है परंतु जबरन शांति रखनी पड़ने पर ताराबेन व बेलाबेन को हिस्टीरिया की बीमारी हो गई। और इन बातों का असर पुरुषों को भी अशांत

करता होगा। बाकी मेरे लिए यह बात तो नहीं है।

आपने लिखा कि घर का परिवर्तन होना चाहिए सो मेरी पूरी इच्छा है। परंतु एक बरस आप घर पर रहकर एक बार पटरी बठा दो। कारण यह है कि आजतक तो मैंने घर का भार कभी उठाया नहीं, और अब हिम्मत करूं तो कुछ स्वार्थ हो तभी कष्ट उठाया जाय। स्वार्थ यही कि घर के आदमी से ही घर कहलाता है। दूसरी बात तो फिर आप से आप ही हो जाती है। आपकी कमजोरी तो मैं सभालने की चेष्टा करूं हिम्मत भी रखूं लेकिन कमजोरी तो मुझमें भी है। आपके साथ रहने से जोखिम भी मालूम होती है। बाकी ब्रह्मचर्य के बारे में आपकी जो पालन करने की इच्छा है वह मेरे लिए भी यह आत्मा से व्रत-सा हो गया है। घर के बारे में बापूजी को अपनी स्पष्ट इच्छा बता दूंगी। आप चिंता न करिये।

मुझे आपके खाने-पीने से अशांति रहती है। यदि आप घर का बना घी और घर का पिसा आटा खाने का भी नियम ले लो तो पूरी शांति हो जाय। परंतु आप तो मूंगफली खाते हो। सिर में चक्कर आवें तब भी उसका दोष नहीं समझते। इसमें सस्तेपन के सिवाय दूसरी विशेषता मुझे नहीं दीखती।

आपने लिखा कि तुम्हें आत्म विश्वास होना चाहिए सो उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती, कारण कि आत्म विश्वास हुआ तो 'आत्मवत सर्वभूतेषु' होने में क्या देर है।

खैर, आपके पत्र से मुझे शांति मिली और मेरा विचार आपकी इच्छानुसार करने का है। घर का भार तो हरेक स्त्री उठाती है और अब उठाये बिना जो दूसरे भी काम हम जमाना चाहते हैं सो, वैसा होना कठिन है। अपने घर का रंग कुछ निराला ही था। आपको भी इसका अनुभव तो हुआ ही है। अब आप ही ठीक हो जावेगा। आपने आदर्शपन का भार लेने को लिखा सो इसे मन में रखकर चलें तो हो सकता है।

कमला की मां



विलेपार्ले छावनी
(जवाब दिया, २७ ६ ३० को)

प्राणेश

शांतिबाई ने आज छावनी में आकर पत्र दिये। शांतिबाई दो चार दिन यहां रहने को आयेंगी। छावनी से २० कदम पर भाड़े से घर लिया है। राजकुमारी और मदु भी वहां रहती है। रात को कभी मैं सोने चली जाती हूं। मेरा और रिषभदासजी का खाना छावनी में होता है। रिषभदासजी छावनी में ही सोते हैं। उन्होंने जवाबदारी भी अच्छी ले रखी है। शांतिबाई भी वहीं रह जायेंगी। भाड़ा, खाना-खर्च अपना ही लिखाती हूं।

हमारी जरा देर की गिरफ्तारी और छूटने की खबर आप जान गये। अभी औरतों को पकड़ना मुश्किल है। जेल के बारे में शिवाजीभाई समझानेवाले हैं। मेरी तबीयत अब ठीक है।

मेरी स्वार्थ की भावना ही मन को दुख देती है पर अब ठीक हो जायेगी। और बातों मे तो हिम्मत बढती जाती है। खाने पीने का अब ठीक कर लूगी। यहा छावनी म अनुभव का लाभ भी बहुत है। अगर सूरत की तरफ के आश्रमो म रहती तो मेरा टिकना मुश्किल हो जाता। यहा भी स्वभाव म मन की स्थिरता न होने से कभी-कभी कहा जाऊ क्या करू, ऐसा हो जाता है। पर फिर कहती हू कि भरतजी ने तो चौदह साल निकाले थे। उस परिमाण म तो यह समय कुछ भी नही है। कठिनाई तो आप लोगो की है।

सी क्लास की खुराक खरी भावना स लेने से प्रसन्नता तो जरूर रहेगी पर वजन एकदम कम हो जायगा और कमजोरी से खासी वगैरा का भी डर है। परन्तु आप लोग तो सभी चतुर हो इसपर विचारोगे ही। आपको सगति इच्छानुसार ही मिलती जा रही है, यह भी प्रभु की कृपा ही है। अपने कुटुब के लिए सचमुच मन म तो अभिमान आता है पर व्यवहार म सभाल नही पाती हू। मैं तो अपने आपको धन्य मानती हू कि इस युग म स्त्री जन्म मिला। निर्बुद्धि निर्बल कहलानेवाली स्त्रिया से सरकार कापने वाली है और स्वराज्य स्त्रियो के हाथ स आनेवाला है। मैं तो मानती हू कि इस वानर सेना ही जीतेगी न कि विद्वान बलवान लोग। इसलिए आप सुख स बैठे रह।

मुझे टोकने क बारे म तो आप निश्चित रहिये। जिसपर पूरा विश्वास और अधिकार हो उस ही टोका जा सकता है। मैं तो गुलाबबाई स मजाक करती रहती हू कि अब मैं मिलने नही जाऊगी। मुझस हमेशा लडते है। पर हम सब लडते लडते ही चढेंगे। मरने के बारे म समय आवेगा तब देखेगे कि हसना आता है कि रोना। भावी अच्छा होगा तो अच्छी मृत्यु होगी। दूसरे की चिंता करने का समय नही है यह बिलकुल ठीक है।

कमलनयन को जहा खास लडाई का मामना हो वही भेजें तो कर म किय का सतोष हो। पर बबई म यहा छावनी क अन्दर जगह कम है। बरसात क दिनो म मलेरिया हो जाने का भय है। और ताप आ जाय तो मुझे पास जाने की इच्छा हो जाय। उसका शरीर थोडे दिनो स ही तो खानपान स व्यवस्थित हो पाया है। वह और विद्यापीठवाले छोटी उमर के चार लडके है बापू की टुकडी क। व चाहे सो करें। चारो यही है। उनसे मैं कुछ भी नही कहती हू। गोमतीबहन बहुत ही हिम्मत और जवाबदारी स काम करती हैं।

सचाई स काम करने स ईश्वर सहायता देता है। घर म खुराक इतनी भी नही ले सकते थे पर यहा ठीक चलना है। आपके सब पत्र मैंने पढे हैं। विनोबाजी आपकी बहुत सकन है। मैं तो इतना कुछ नही करता हू। शाम को ६ बजे म पहले सोने म नीद पूरी होती है। गोमतीबहन भी कहती थी देखना कमजोरी आ जायगी। स्त्री रोगो तो अपनको अनुकूल आनी मुश्किल है।

धर्मानदजी कौसाबी की पुस्तक दखेंगे। पर मुझम और मुझ-जैसी स्त्रियो स पुस्तक मुश्किल स पूरी होती है। वह यहा रहते हैं। समय हो तो मदद का आधा घटा बता जाते हैं। आपको नमस्कार कहा है उन्होंने। वह सुपरिटेंडेंट को पत्र भिजवा देंगे। गोमतीबहन को सब पत्र पढा दिये। विनोबा को पत्र प्रार्थना म पढेंगे। 'टाइम्स' म छावनी की खबर देखकर हैं।

कमला की मा का प्रणाम

विलेपार्ले, १६ = ३०

पूज्य श्री

ता० ११ का पत्र मिला। आपने बहुत सा कहलाया पर आपके कहने का मुझपर पूरा असर नहीं होता है। यह अपने सबके स्वभाव में है कि जब हम अपने आदमी को देखते हैं तो मन कुछ दूसरा ही हो जाता है। हम जो पूरे सच्चे हों तो बंधन से ही छूट जायं न!

मुझे आप पहले साथ रखने को कहते थे पर मैं इनकार कर देती थी। अब इच्छा हुई है पर अब कौन जाने कितनी परीक्षा के बाद मौका आता है! बड़ी परीक्षा यह भी तो है कि अपने स्वभाव में, कुछ अंश में मुझे परिवर्तन भी करना पड़े। खैर यह भी देख लेंगे। यह भी एक आनंद है।

जेल से बचे रहने की तो इच्छा नहीं है। पर जब काम ढीला पड़ा है तो किसी ने पकड़ा नहीं। अब जब काम जोर में चलता है तब लोगों के कहने से यह लगता है कि जेल जाने के बजाय काम ही करना चाहिए। जैसे आप जेल गये तो आपकी वह जगह तो भरी नहीं। फिर बाहरवाला का कहना भी ठीक लगता है और मुझे भी समाधान है। पर अभी तो स्त्रियों से सरकार भी डरती है। पर जाने का प्रसंग आना मुश्किल नहीं है। कठिन प्रसंग आवेगा तो जेल जाना ही है और समझौता पद्रह आने तो होगा नहीं एसा लगता है।[1] इतने से मैं स्वराज्य आया तो टिकेगा कैसे? इसमें न सरकार का लाभ न हम। यह कैसे सुलझ सकेगा यह ईश्वर जाने। पर अभी सबकी दृष्टि एक सी रही है। नया काम किसी को सूझता नहीं। बस जोश दिनादिन बढ़ता ही है। कमल का हटूंडी (अजमेर) जाना सब तरह से योग्य है।

मुझे छगनलालभाई दीवावाले जेल नहीं जाने देते। कहते हैं कि तुम्हें कीर्ति की बड़ी इच्छा है काम करते हुए पकड़ लेंगे तो पकड़ लेंगे। मैं क्या करूं? परंतु पहले मैं उनकी अक्ल से चलती थी, अब अपनी भी लगाऊंगी। जेल की मेरी पूरी तयारी है। आपने जो चिट्ठियां भेजी सो मिल गई है। बापूजी की भी। सूत के बारे में हम आवेंगे तब आप कहेंगे जैसी भेज देंगे। आपको कौन-सी पसंद आई यह मालूम पड़ना चाहिए।

मेरा प्रणाम

•

१ इन दिनों श्री सप्रू व जयकर जेल में महात्मा गांधी और पं० मोतीलाल नेहरू से मिलकर समझौते की बातचीत कर रहे थे।

जमनालालजी की ओर से

नागपुर जेल,
पौष सुदी १४, संवत १९८७
(३-१-३१)

प्रिय जानकी,

तुम्हारा, श्रीकृष्णदासजी व चि० मदालसा के पत्र पढ़कर खुशी हुई।

अगर श्री सीतारामजी को कमाने का सौभाग्य मुझे ही है तो मुझे उसके लिए सुख व संतोष है। परन्तु भाई सीतारामजी में सेवावृत्ति बहुत पहले से जागृत थी। वही अब काम आ रही है। मैंने तो इनसे बड़ी आशाएं बांध रखी हैं।

परदे के बारे में तुमने लिखा सो ठीक है। फैशन, नाटक, तमाशे, पहाड़ों पर या दूसरे मुल्कों में जाकर लोग पर्दा नहीं करते। यानी पर्दा करना लोग नहीं चाहते हैं, परन्तु समाज के मिथ्या डर व सेवावृत्ति की कमी के कारण उन्हें पर्दा करना पड़ता है।

परदे के रिवाज से देश की बड़ी भयंकर हानि हुई है। जिसके हृदय में न्याय व सत्य के साथ सेवावृत्ति है, वह तो इस राक्षसी प्रथा को जड़ से ही नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। लोगों को यह डर है कि परदा चले जाने से आंख की शर्म व मर्यादा भी चली जायगी। सो मुझे तो इसका डर कम है। अगर वह एक बार चली भी जाय व थोड़ी हानि भी पहुंचे तो भी अंत में तो परिणाम उत्तम ही होगा। सो तुम इस विश्वास को खूब समझाकर जोर देकर व्याख्यानों के सिवाय खानगी बातचीत में भी उपयोग करती रहना।

रानीगंज में सुन्दर काम हुआ। *और भी देहातों में श्री महावीरप्रसादजी व कृष्णदासजी* के साथ जाना पड़े तो जरूर जाओ। वहां भी अच्छा परिणाम आना संभव है। अगर बंगाल में प्रतिष्ठावाले व प्रामाणिक थोड़े लोग भी जी तोड़कर इस काम के पीछे पड़ जायं तो बहुत लाभ पहुंचे। आज तो विदेशी वस्त्र का पूर्ण बहिष्कार होने पर ही भारत को सच्चा स्वराज्य प्राप्त होना व टिकना संभव दिखाई देता है। बंगाल में तुम्हें दो चार मास भी रहना पड़े तो जरूर रहना। चि० मदालसा को बराबर समझा देना।

तुमने लिखा कि अनुभव खूब मिल रहा है, सो यह अनुभव तो जिंदगी भर काम *आयेगा व बाद में मेरे साथ घूमने में भी खूब मदद देगा। घर को ठीक तौर से संगठित करने में भी* इससे सहायता मिलेगी। मेरी बहुत वर्षों से यह इच्छा थी कि तुम व बालकों की कद्र मेरे कारण न होकर अपने पवित्र सेवा-कार्य के कारण हो, क्योंकि उसमें तुम्हारा व बालकों का ही नहीं मेरा भी श्रेय व गौरव है। इस इच्छा की पूर्ति अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रही है।

केसर ने चि० प्रह्लाद को दूसरी बार भी हिम्मत से जेल भेज दिया, यह देखकर आनन्द होता है। अपने घर में अब सब छोटे-बड़े कम ज्यादा प्रमाण में सेवा-कार्य करनेवाले निकलेंगे, ऐसा विश्वास होता जा रहा है। सेवाधर्म में जो अलौकिक आनन्द व सुख मिलता है, वह संसार की किसी अनमोल वस्तु, मान-सम्मान या वैभव से प्राप्त नहीं हो सकता। थोड़े समय के लिए

चाहे वह अपने को मोह माया के कारण सुखी समझने लग जाय, परन्तु बनावटी सुख ज्यादा टिक नहीं सकता। परमात्मा हमें सच्ची सेवावृत्ति बनाये रखने की सद्बुद्धि प्रदान करें यही प्रार्थना हम सबको हमेशा करते रहनी चाहिए। दूसरी प्रार्थना की आवश्यकता ही नहीं।

मदालसा के पढ़ाने की व्यवस्था कर दी सो ठीक किया। श्री महावीरजी व सीतारामजी ने शिक्षकों को पसंद किया है तो अवश्य ही चरित्रवान होंगे। मेरा यह मानना है कि चरित्रवान की संगत से जो लाभ बालकों को हो सकता है वह केवल विद्वान की संगत में नहीं हो सकता। उलटे बहुत बार उसमें हानि का ही डर रहता है।

आज मुझे पू० राजेन्द्रबाबू मिल गये। आनन्द हुआ। तुमसे वह ता० ८ या ९ जनवरी को कलकत्ता में मिलेंगे।

अभी इसी २७ तारीख को बिड़ला-परिवार, जो बंबई में था, सब छोटे-बड़े सहित मुझसे मिल गया है। आनंद आया। बाजरे की रोटी और दही सबने दो रोज खूब खाया और भी कई चीजें उनके प्रेम के कारण खाई।

प्रिय कृष्णदासजी से कह देना कि उनका पत्र पढ़कर मुझे सुख मिला। ईश्वर अवश्य सफलता देगा। तुमको वह चाहे तबतक कलकत्ता रख सकते हैं। श्री बैजनाथजी केडिया को जेल में मेरा नाम लेकर कहलाने से शायद कुछ फायदा पहुंचे। उन्हें कहला दिया गया होगा कि मारवाड़ियों के हाथ से रोजगार निकलकर मुसलमानों के हाथ चला जायगा। उन्हें समझाना चाहिए कि मान लो ऐसा ही होगा तो इतना अपवित्र धंधा वे लोग करना चाहें तो करें। मारवाड़ी जाति तो उस घोर पाप से बच जायगी जो उसने जानकर या अनजान में किया है। खूब जोर से काम होने से बंबई के माफिक रास्ता बैठ जायगा।

मेरा पत्र प्रेस में न छपे व ऐसे लोगों के हाथ में न जाने पावे, जिससे दुरुपयोग किया जाय। मुझे बीच-बीच में बंबई द्वारा खबर भेजते रहें यह भी कह देना।

मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। अभी तो बड़ा उत्साह व ताकत मालूम देती है। श्री नरीमानजी को तो मैंने भगाते हुए पांव में मोच पड़ने से, दो चार रोज के लिए लंगड़ा भी कर दिया है।

भाई सीतारामजी! तुम्हें मैं क्या लिखूं। तुम्हारी व पन्ना की माता की सेवावृत्ति व चेहरा जब जब याद आता है बड़ा सुख मिलता है। अभी तो पूरी ताकत मेरी समझ से विदेशी वस्त्र बहिष्कार पर ही लगानी उचित होगी। इसमें किसीके प्रति दया या उदारता दिखलाने का हमें हक नहीं है। जितना ज्यादा परिचय व प्रेम संबंध हो उतना ही ज्यादा जोर अहिंसावृत्ति पर कायम रहना चाहिए।

जमनालाल का वंदेमातरम

•

पवनार (वर्धा), कार्तिक सु० १३ सं० १९९५
जमनालाल (४-११-३८)

प्रिय जानकी

मुझे यहां ठीक शांति मिल रही है। मुझे ४९ वर्ष पूरे हो गये। पचासवां वर्ष चालू हुआ है। तुम तो भली प्रकार जानती ही हो कि मुझे कुछ वर्षों से जोश व उत्साह नहीं मालूम होता है। इसका कारण तो साफ ही है कि मेरा जीवन शुद्ध नहीं रह सका। मेरे मन की महत्त्वाकांक्षा मन में ही रही है। मेरा संकल्प तो यह रहता आया है कि मैं जनता-जनार्दन की सेवा पूरी प्रामाणिकता एवं सच्चाई के साथ करूं। परंतु देखा जाय तो मैं तुम्हारे जैसी पवित्र व पूजन योग्य देवी का भी समाधान नहीं कर सका। तुमने मेरे पीछे जो त्याग किया, जिस प्रकार उत्साह के साथ सहन की, वह मैं कैसे भूल सकता हूं? तुम्हारा उपकार क्या थोड़ा है? परंतु दुख है कि मैं उसके लायक नहीं निकला। मैंने तुम्हें खूब सताया और अभी भी सता रहा हूं। क्या करूं, कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा है। कई बार मन में निश्चय करता हूं कि मैं तुम्हें अब नहीं सताऊंगा, तुम्हारी इच्छा पूरी करने की कोशिश करूंगा। परंतु पता नहीं, जब बात होती है तो ज्यादातर मुझे क्रोध आ जाता है। तुम्हारे प्रति अन्याय कर बैठता हूं। बाद में दुख व पछतावा भी होता है। परंतु उपाय नहीं सूझता। यह तो तुम भी कबूल करोगी कि तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम तो है ही। तुम्हें सब प्रकार से ऊंची उठी हुई देखने की मेरी कितनी इच्छा रहती है, इसलिए तुममें जरा-सी भी भूल हो तो मुझसे बरदाश्त नहीं होती। इसके विपरीत मैं तो भयंकर भूल कर बैठता हूं, फिर भी तुम्हें सताने को तैयार रहता हूं। मालूम नहीं क्यों ऐसा होता है? मेरे मन में भीतर-ही-भीतर खूब संघर्ष चलता रहता है। उसका परिणाम अब इस निराशा में प्रकट होने लगा दिखाई देता है।

यह बात तो सत्य है कि मेरे सोचने-विचारने का तरीका तुम्हारे तरीके से बिल्कुल उल्टा है। कितना अच्छा होता अगर मेरा तरीका मैं तुम्हें समझा पाता या तुम्हारा तरीका मैं ग्रहण कर पाता। परंतु अब तो यह असंभव है। कमल को यहां रख लेने में मेरे मन में तुम्हारा भी विचार रहा करता था कि यह तो भी तुम्हें संतोष पहुंचा सकेगा और मैं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी उन्नति का मार्ग साधने में लग जाऊंगा। तुम मेरे अपराधों को उदारतापूर्वक माफ कर सको तो कर दो व परमात्मा से प्रार्थना किया करो कि मुझे सद्बुद्धि प्रदान करे। मुझमें जो कमजोरियां आ गई हैं या आना चाहती हैं, उन्हें न आने देवें और जो हैं वे जल्दी निकल जायं।

तुम भी अपनी कमजोरियां तुम्हारे स्वास्थ्य को बर्दाश्त हो, उस मुताबिक धीरे-धीरे निकालने का प्रयत्न रखोगी तो उसका लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा। साथ में मुझे व सब घर के लोगों को सुख व शांति मिलेगी। तुम्हारे प्रति सबका प्रेम व भक्ति बढ़ेगी। ज्यादा क्या लिखूं? तुमसे कई बार बहुत स्पष्ट बातें की व करने का प्रयत्न किया, परंतु उससे तुम्हें भी लाभ नहीं पहुंचा व मुझे भी शांति नहीं मिली। इसलिए चर्चा बंद करनी पड़ी, क्योंकि झूठ बोलने का मौका आवे या विचार भी आवे तो उससे तो कोई लाभ पहुंच ही नहीं सकता।

अब मेरी तुमसे यही प्रार्थना है, जो बहुत वर्षों से रही है और यह तुम भली प्रकार जानती हो—कि तुम मेरा पांव न धोया करो। मुझे उस समय प्रायः हमेशा ही दुख पहुंचता है। कारण साफ है। मैं अपने आपको उसके योग्य नहीं समझता। आशा है, इस प्रार्थना को तुम

उल्टा अर्थ नहीं करोगी। मैंने जिस भावना से लिखा है, वही अर्थ लोगी। मुझे अब संसार के मामूली साधारण मनुष्यों की पंगत में आने दो। शायद उसके बाद मुझमें उत्साह पैदा हो और जीवन में रस आये। आज जो रस दिखता है, उसमें बनावटीपन का भाग ज्यादा है। जबतक एकांत जीवन में मनुष्य को रस या उत्साह नहीं मालूम होता है तबतक बाहरी उत्साह से क्या लाभ हो सकता है? मेरी बीमारी तो अब मानसिक है। वह तो किसी चतुर व अनुभवी डाक्टर की संगति से ही निकल सकेगी। तुम मुझे मेरी बीमारी दूर करने के हेतु लंबी मुद्दत के लिए कोई उदार सेवाभावी, मेरे प्रति प्रेम रखने वाले चरित्रवान सेवक के साथ किसी उपयुक्त डाक्टर के पास जाने के लिए प्रसन्नतापूर्वक छुट्टी दे सकोगी तो उसमें हम दोनों का बड़ा कल्याण होगा। संभव है, आगे जाकर फिर संतोष के दिन आवें। प्रयत्न करना हमारा कर्त्तव्य है, फल ईश्वर के हाथ है। मैंने अभी हिम्मत बिल्कुल तो नहीं हारी है। ईश्वर हमें सद्बुद्धि दें।

जमनालाल का वंदेमातरम

•

जानकीदेवी की ओर से

(जवाब दिया २६-१-३८ को)

लो भई, चिट्ठियों से ध्यान करने में भी कुछ विशेषता होगी। भगवान भक्तों की कसौटी पर कसता ही है। पर अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। भगवान जब समय-समय पर हाथ पकड़कर रक्षा करता आया है, तो अंत भी वह जरूर सुधारेगा ही।

मैं तो आपको योगभ्रष्ट योगी ही मानती आई हूं। आपके ही पीछे दुनिया का सारा वैभव देखा और उसके सिवाय और किसी स्वर्ग की इच्छा नहीं की। मोक्ष की तो इच्छा करनी ही नहीं।

आपके पैरों के जल का आचमन जबसे मैंने शुरू किया है, तब से एक ही इच्छा रही है। चरणोदक हमेशा शीशी में भरकर साथ रखती हूं कि जहां भी रहूं, वह साथ रहे और मरूं तो मेरे मुंह में डाला जाय। अब तो निश्चय ही कर लिया है कि यदि चरणोदक अंतकाल में मिलेगा तभी गंगाजल-तुलसी वगैरा प्रेम से लूंगी। इच्छा तो यही है कि मेरे मरते समय आप अपने हाथ से अपना चरणोदक दें। पीछे चाहे गंगाजल, तुलसीदल मिले न मिले। तब चतुर्थ से पर पहुंचने की ताकत आ जायगी।

अंध, बधिर, क्रोधी, अति दीना—यह बात अभी तो हिंदू धर्म में निकलना कठिन है। और आपके पश्चात्ताप का तो कोई कारण है नहीं। आपने किसीका बुरा तो चाहा ही नहीं गया। पर एक बात जरूर है। थोथी चर्चा ही वातावरण में ज्यादा रही। मैं सबको सुखी कर दूं, यही भावना दुखदायी बन गई है।

मैं आपको नर मानूं कि नारायण, यही मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मेरी कमजोरियां आपके तेज में बाधक हो रही हैं। यह प्रत्यक्ष देख रही हूं। इसमें मेरा कोई पाप आड़े आ रहा

है क्या ?

लिखना नहीं तो मन मुग्ध की तरह जो तरह लिखा कर दूँ तो सारा साधारण तो तजमय बना हुआ है ही सारा मैं मुग्ध हो जाय। पर मेरा मन तो ऐसा पागल हो गया है कि आपको आकर पालन जो देखा ही सारे शरीर में पागल हो जाती है। कहीं बापू न पागल न हो जाऊँ! उपाय मेरे पास नहीं रहा है। आत्मा एक है किन्तु मैं क्या मानूँ? और आत्मा ही परमात्मा है यह सत्य है। पर क्या करूँ ?

आपको तो मैं क्षमा क्या दूँ ? मैं तुम्हें कई बार आपसे माफी माँगती हूँ। पत्र के पत्र पर तो कुछ रहता ही नहीं। केवल आपकी इच्छा पूरी करूँ यही इच्छा है। और भगवान जरूर वह दिन दिखायेगा कि आपको पूर्ण शांति मन की अवश्य मिलेगी। मैं प्रयत्न करूँगी। आप मुझसे खुश रहा करो। आपके दिल में तो मैं ही रहती हूँ और आशा है कि आगे भी रहूँगी।

अब मन में है वह बात भी लिख दूँ। वैसे तो आप जानते ही हैं पर मुझे तो कहना है कि अमुक बात तू ठीक कहती थी लेकिन मैंने उसपर ध्यान नहीं दिया उसके लिए मुझे आनंद मिलेगा। प्रमाण में हम सब घर के लोग तो ही हैं पर आपका तो मैं हर बार उपासनी थी। फिर आपका प्रेम में बाँध जाय कहाँ ? पर मैंने अपना विश्वास ही खो दिया उसका कैसे प्राप्त करूँ ? मन न मिल जाय जिसको किस्मत पर लगी है प्रीत बांध पक्का किया। मैं आपके पत्र की बात टेम्परेरी मानती हूँ नहीं तो खतरनाक है।

दो बातें मुझे लिखनी हैं—

१ यह सही है कि मुझे क्या करना चाहिए यह मैं जानती हूँ। पर इसका यह तो मतलब नहीं होना चाहिए कि मैं मन की बात भी किसीसे कह-सुन न सकूँ।

२ आप जो कुछ कहते हैं उसका आपकी इच्छानुसार पालन नहीं होता है यह मैं मानती हूँ। लेकिन पालन क्यों नहीं होता इसपर आप विचार नहीं करते। यही सारी उलझन की जड़ है जो मुझे न मरने देती है न जीने। क्रोध में रोकर अपना दुख आपको सुनाऊँ तो आपकी बीमारी का डर रहता है और न सुनाऊँ तो कबतक सहूँ—आखिर कोई सीमा तो होनी चाहिए न ?

माता तो जैसे बच्चे की दोष भूल वैसे ही पति की। अनुचित वाक्य अपमान निंदा तिरस्कार भी सह लिए तो चंदन है। कृष्ण लीला भगवान ने भले ही दिखाई पर मन की शांति मिलने की आशा पूरी करना भी तो आवश्यक है। समझाने से ही मन समझे क्या ? जबकि पास में साधन भी हो। थोड़े से ही तो यह मन विचारा खुश होनेवाला है। आप जानते हैं मेरे मन की ताकत कितनी है। सो दुखी न करके मुझे संतोष से समझा दीजिये भूलचूक क्षमा कीजिये।

जानकी के प्रणाम

इस पत्र का जवाब जमनालालजी ने २९ १२ ३८ को इसी पत्र में नीचे लिख दिया था

तुम्हारा लिखना बहुत अंशों में ठीक है। मैंने अब व्यवहार में तुम्हें संतोष पहुँचाने का प्रयत्न अधिक प्रमाण में करने का निश्चय किया है।—ज०

जमनालालजी के उपयुक्त जवाब पर जानकीदेवी का यह नोट है—

दो बातें पूरी की। प्रश्न यह है कि अदर तो सच्चा प्यार है ही, परतु प्रकट म भी प्यार मिलेगा, तभी शांति मिल सकेगी। फिर कुछ भी कहगे तो दु ख नही होगा। दु ख ता तभी होता है जब और कोइ कहन आता है और वह सब सुनना पडता है। तो यह सब साफ होने पर ही आगे का रास्ता साफ होगा न ? दवान से तो नही होगा।

जानकीदेवी



सीकर १० ७ ३६

पूज्यश्री

सतवाणी पूरी कर दी है। कविता भेज रही हू

रानीजी ने भेज बुलाया करी खूब मनुहार,
आदर देकर बाता पूछी किया प्रेम व्यवहार।
रानी घणी सयानी जी।
मति बिगडी काण अफसर की किया जा आपको कद,
मनचाहा एकात आपको पाकर था आनद।
दोनों की मनमानी जी।
उजडी बगिया दूर पडी थी सबने दी था त्याग
बसे आप तो ताता लागा जागे उसके भाग।
बीती बात पुरानी जी।
मास तीन जब होने आये, जगा पुराना शाप,
हुआ दद घुटने म भारी दिया बडा सताप।
दु ख से भरी कहानी जी।
सेंक हुआ बिजली का चालू चिंता थी दिन रात,
खरी कसौटी के सम्मुख थी, सहनशक्ति की बात।
आप हार नहीं मानी जी।
जला पाव का मास सेंक म, बातों म था ध्यान,
गध उडी घबराया डाक्टर, सूखे उसके प्राण।
शक्ति आपकी जानी जी।
योग भ्रष्ट भागी यागी ने लिया मनुज अवतार
बध छुडाने और मिटाने, मातभूमि का भार।
प्रजा बडी हरखानी जी।

धन्य भाग हैं धन्य साधना, साधु, सन्त महान!
बापू का प्रण पूरा होगा जब बोलेंगे सब राम।
गुरु जानकी बाईजी।

माँजी तो मुझे देखकर बहुत राजी हुईं। उनको मैं रोज आटा गरम लिया करती हूँ, क्योंकि मक्का और बाजरे में आटा कम खाना ही अच्छा है। ठण्डी ठीक रहता है। बादाम का और मिश्री दवा की तरह लेती थी। इसकी ज्यादा भी आदत नहीं है। अतः आप भी भेज दें तो ठीक है। मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है। आप जरा भी फिकर मत करना। माँजी की बातों में मेरा भी मन बहला रहता है। उनका मुझपर प्रेम भी है। उनका मन होगा तो अब उनको साथ में ले आऊँगी। और आपके पास भेज दूँगी। बाकी तो काम क्या करती हैं? वे दीन-दुःखी बातें बार-बार याद करती हैं पर आपके पास रहने में आराम और उनको ज्यादा अच्छा लगेगा।[1]

जानकी

•

(जून १९४१)

पूज्यश्री

आपकी लीला अक्सर समझ में नहीं आती। घर का हर आदमी आपके जैसा बन जाय यह तो हो नहीं सकता। आप मुझे अपने से भी ऊँचा देखना चाहते हैं और इसी आशा से क्रोध भी आपको हो जाता है। यह क्रोध तो प्रेम का ही रूप है। मैं तो आपकी माँग स्पष्ट मानती हूँ

1 जयपुर-सत्याग्रह के दौरान में जब जमनालालजी मोरांसागर के बाग में नजरबन्द थे तब जानकीदेवीजी ने ऊपर का पत्र उन्हें लिखा था। यह अधूरा ही मिला है। इस पत्र के साथ एक पत्र विट्ठल के नाम का भी था जो इस नजरबंदी के दरम्यान बड़े भक्ति भाव से जमनालालजी की सेवा कर रहा था। जानकीदेवीजी को उससे बड़ा संतोष मिला था। विट्ठल आज भी जमनालालजी की दुकान में काम कर रहा है। विट्ठल को लिखा पत्र इस प्रकार है—

विट्ठल

तुम्हारा रहना करना देखकर मेरे मन में शांति हो गई है। अनार इसलिए भेजा है कि उसका रस लेने से खून में ठंडक होती है और ताकत बढ़ती है। सो काकाजी से तो पूछकर देते रहना। हम यहाँ सरबती गेहूँ खाते हैं उसका दाना छोटा होता है पर रोटी कोरी भी मीठी लगती है। उसका नमूना और आटा भी भेजेंगे। खास टीकड़ी का बाजरा मँगाया है सो रोटी या खिचड़ी बनाकर देखना। मुगोड़ी नई बनाकर भेजी है। उसमें जरा हींग और अदरख डालने से ठीक रहता है। मीठा नीम अपने झाड़ का ही है। वह छौंक में भी दे सकते हो और साग में शायद भी डाल सकते हो। खाते समय उसे निकाल लिया जा सकता है। उसमें सुगंध भी है और विटामिन तो हैं ही।

काकाजी टब में नहावें तब पेट पर कपड़ा फिराते हुए टब का पानी छल छल करता हुआ जितना हिलता रहे उतना अच्छा। इसका ख्याल रखना। मैं तो टब में बैठती हूँ तो उससे मेरी आँख की नजर भी ठीक होने लगी है और उसके तो बहुत फायदे हैं ही।

समझती आई हू और इसी धारणा को लेकर डरते हुए जीवन निबाहती आई हू। आपकी लीला ऊपर से कठोर पर भीतर से कोमल—यह मैं क्या जानू! मेरे दिल म यह लोभ तो स्वाभाविक था कि आप दीघजीवी बनें और कही मैं आपको खो न बठू। आप जैसे बडे आदमी से सतान प्राप्ति हो गई, मरे लिए इतना काफी है। आपके मुह से वैराग्यभरे शब्द तो निकलते ही रहते हैं। मुझे गव था कि मेरे पति न तो मुन जैसे चेहरे के हैं न बूढे न दुजवर हैं। मैं सबसे भाग्यवान हू। परतु मेरा वह गव नष्ट हुआ। दुखी दुनिया का और पुरुषो की स्वाथवृत्ति का पूरा अनुभव मुझे हो गया।

जरा मेरी जिंदगी के बारे मे तो सोचिये कि

१ १३ साल अबाध अवस्था म बीते तब जीवन का रस तो कुछ जानती ही नही थी,

२ पाच साल, गभवती अवस्था के जिसम पुरुष को छूना पाप समझा

३ सत्रह साल जोश म गये,

४ तीन साल जल के

५ शेष आठ साल मे से मुसाफिरी के निकालिये। कितने दिन साथ रहा? लेकिन विश्वास दृढ था, शरीर भी आपने चगा था सयम मे समय बीता। सतियां हुई क्योकि उन्होने सहन किया किंतु सता तो आजतक एक भी नही सुना। गव किसी का रहता नही। अपने को तो मैंने भी नीच माना। वह नीचता छोडकर सुबुद्धि इस जन्म म नही पा सकूगी पर आपने तो आशावाद की हद कर दी। लेकिन भगवान गव दूर करना चाहते हो तो!

आप समझते हैं सब कुछ सुख सुविधाए उपलब्ध हैं, पर क्या यह भी जानते हैं कि मेरी नीद व मेरा दिल तो जसे उड ही गये है। कुछ खो गया सा लगता है। मैं तो दूसरा स्नानघर आदि भी पसद नही करती। आपके स्नानघर म ही नहाना अच्छा लगता है। मन की ऐसी स्थिति म, मेरी सुने बिना ही, आप मुझे इस प्रकार दबाओ कि आपकी बात मुझे कबूल ही करना चाहिए, और कबूल न करू तो मुझे डर कि कही आपके सिर की नसें न फट जायें। उतरती अवस्था म पुरुष की डाट से हृदय फट जाता है। लडके-बच्चो का तो फिर भी सहन कर लेते है। किंतु पुरुष का मुश्किल से सहन होता है। फिर, और बातो मे चाहे कितना गुस्सा हो खास बातो का तो सतोषदायक उत्तर मिलना चाहिए। फिर अन्य बातो के बारे म मनुष्य लापरवाह बन सकता है। भीतर और ही कुछ चाहता हो तो मनुष्य का हर बात मे चिडचिडा होना स्वाभाविक है और इससे आपको और गुस्सा आता है। मैं आपकी आशाओ को कैसे पूरी कर सकू? आप जरूर मेरी आशाओ को पूरी कर सकते है। यह मत भूलिए कि मेरी शाति म आपकी शाति भी समाई हुई है।

अपने आदमी से भी हारकर इस तरह कागजो से बात करनी पडे, यह भी क्या जीवन है! मैं कुछ बातें और रखती हू। पढते पढते गुस्सा आवे तो पढना वही बद कर दें

१ आप किसी के पीछे बिक जाओ, यह कोई कसे सहन करेगा?

२ तीन बातें आपके मन म मेरे बारे म पद्रह आने झूठी जम गई हैं, वे आज तो नही बताऊगी, पर कालातर के बाद तो सब ठीक मान ही लेंगे। इसी आशा पर ही तो जीवित हू। और यह आप भी अच्छी तरह जानते हैं। वे तीन बातें कौन-सी हैं अभी न पूछना ही ठीक होगा।

३. कमल ने कहा था आप पवनार से सीधे आओ तो पहुंचा दीजिए और आज तो आने में मामला सुलझता हो तो डरना नहीं, उसे मंजूर कर लेना चाहिए।

यह सब लिखने से मेरा मगज तो हल्का हुआ, पर आप पर क्या असर होगा? यह पत्र फाड़ डालूं या भिजवाऊं?[1]

[illegible]

•

पवनार

(जवाब दिया २८-१०-४१ को)

पूज्यश्री,

समस्याओं के समाधान खोजती रहती हूं। लेकिन ये तीन शिकायतें मिटा नहीं पा रही हूं। ज्यों-ज्यों समय बीतता है ये ज्यादा दुःख देनेवाली बनती जा रही हैं। आप ही इनका समाधान कर सकते हैं। इसलिए इनका खुलासा किया है। इन विचारों के लिए क्षमा चाहती हूं।

पहली शिकायत काशी के संबंध की है—आपने मेरे भरोसे एक स्त्री को छोड़ा पर आपको पछताना ही पड़ा। आपका यह लिखना ठीक भी है। मुझे भी हमेशा यह लगता रहा है कि मेरे पास काशी और राधा (काशी की लड़की) थोड़े-थोड़े में के लिए तंगी भोगती है। मेरे मन में संकीर्णता भले ही हो, पर फिर भी ऊपर से तो कहती ही रहती हूं और मन में यह समझती भी रहती हूं कि दूसरों को देने और खिलाने से तो काशी के घर कुछ पहुंचे या राधा को खाना मिले तो ठीक। काशी के विचारों में तो स्थितप्रज्ञता है। पर राधा को एक रोज आपने चौके में मदद करते देख लिया, सो मजाक में ही आप बोले, किंतु मुफ्त में काम क्यों करती है? और आपने उसे साड़ी दिलवा दी। उसी दिन से उस छोकरी के मुंह से मेरे प्रति उपेक्षा प्रकट होने लगी।

मेरे मन में भी दर्द तो है ही। और जो कुछ बचता है, वह औरों की अपेक्षा काशी को मिले तो अच्छा ही लगता है। पर अब मेरे मन में फरक आ रहा है। यह अगर काशी को

१. गांधीजी का मार्गदर्शन पाकर जब जमनालालजी आत्मसाक्षात्कार के पथ पर आरूढ़ हुए तो उन्होंने अपने परिवार और स्वजन मित्रों को भी इस साधना में लगाने का प्रयास किया। इस महान् यात्रा में जानकीदेवी छाया की तरह उनका साथ देने का प्रयत्न करती रहीं, किंतु स्वभाव एवं क्षेत्र में भिन्न दो सहयात्रियों में दृष्टिभेद होता ही है। जमनालालजी और जानकीदेवी के जीवन प्रवाह में भी यही दृष्टिभेद था। प्रारंभ में वह उतना प्रखर नहीं था जितना बाद में प्रकट होने लगा। समस्याएं उठती थीं और फिर सुलझती जाती थीं क्योंकि दोनों परस्पर स्पष्टतर होते गये, यहां तक कि अपनी वैयक्तिक समस्याएं भी दोनों सार्वजनिक जीवन की कसौटी पर कसने लगे थे। जानकीदेवी के कई पत्र इन समस्याओं और उससे संघर्ष का उल्लेख करते हैं। इन वर्षों में लिखे गए जानकीदेवी के कुछ खास पत्रों में से उपर्युक्त पत्र एक है।

मालूम पडेगा तो वह दु खी ही होगी।

ज्यादा सोचू तो थोडा-सा यह भी लगता है कि दूसरी शिकायत है मदू के सबध की। मदू को तो आप सब जानते हो। आपका प्रेम मुझे न मिलने से मैं उसे जितना चाहिए उतना प्रेम नही दे सकती।

तीसरी शिकायत रामगोपाल की पत्नी के सबध की है। इसको मैं व राधाकिशन जितना जानते हैं उतना और कोई नही। मैं अच्छी म अच्छी बात कहू वह भी काटी जाय तो मेरी अक्ल ही काटी जाय, ऐसा मुझे लगता है। उसकी माग तो ५०) रुपये है। उतनी मैं पूरी करना चाहती हू। दूकान से रुपय न दे सकें तो मेरा देना ठीक है। पर आप जो कहोगे सो कबूल है।

चौथी शिकायत स्वय शैतान जानकी की है। बापू के पास गये पीछे कल छाती म धडकन और सिर म हिस्टीरिया के असर ने सताया, पर मूर्खता मेरी है और मैं लाचार हू। मेरा मोह सब जगह से निकलकर अब आपके प्रति रह गया है। पर कल्याण तो मोह म नही है। मेरी समझ से मैं आपकी इच्छा पूरी करने म सदा लगी रही। पर बीच म भगवान ने परीक्षा ली तो क्या किया जाय ?

अब भी मन्द करने की मन म रहती है। आपसे दूर रहने मे दोनो का भला है, ऐसा भी लगता है पर क्या बताऊ !

अगर आप कोई प्रायश्चित्त करना कराना चाहे तो हम लोग तय करें। फिर अमल म लाने की ताकत तो आपमे है ही।

अत मे एक बात यह कि नौकरों के सामने स्वाभाविक रूप मे अनजान आपसे डाटना फटकारना हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि वे लापरवाह हो जाते हैं और उनकी नजर म मेरे प्रति अपमान का-सा भाव आ जाता है।

इसके लिए मुझे ऐसा लगता है कि आपका खाना, भले कोई भी तयार कर दे पर खिलाऊ मैं। यह परीक्षा भी कडी ही है।

इन चारो बातो म राधाकिशन या किशोरलालभाई जो निकाल दे दें वह मजूर करने की कोशिश करने के लिए मैं तैयार हू ?

बलिहारी उस धर्म की जित स्वारथ बिन मान
एक दूसरे के लिए नर नारी दे प्रान।

जानकी

जानकीदेवी की इन शिकायतो का जवाब जमनालालजी ने उसी कागज पर इस प्रकार लिख दिया—

श्री किशोरलालभाई जाजूजी, हरिभाऊजी या राधाकिसन मिलकर या अकेले किसी के भी समाधान से तुम्हे सतोष हो, उससे समाधान करा सकती हो। वह जो फसला करेंगे उसका ध्यान मैं भी रखूगा। —ज०

इतना लिखने के बाद जमनालालजी ने जानकीदेवी की प्रत्येक शिकायत का नीचे लिखा सिलसिलेवार जवाब दिया —

२७ १० ४१

१ काशी के बारे में मेरी भावना व विचार मैं तुम्हें अभी तक नहीं समझा सका इसका मुझे भी दुख है। अगर मेरे विचार तुम समझना चाहती व समझ सकती तो तुम्हें भी दुख नहीं होता व मुझे भी समाधान मिल जाता। काशी से तुम खूब प्रेम करती हो। तुम्हारे स्वभाव को देखते हुए खूब प्रेम से तुमने उसे निभाया है यह मैं मानता हूं। परंतु मेरी वृत्ति व विचार से हम लोगों को व अगर मैं घर में रहता हूं व मुखिया हूं तो मुझे इस बार काशी चाहे जिसकी गलती से ओम् के साथ गई उसका प्रायश्चित्त कराना जरूरी मालूम देता है। काशी या लड़की को अगर सुधारना भी है तो तुम्हारे तरीके से वह नहीं सुधर सकती है। यह बात मैंने तुम्हें भी कही है।

२ मदू के बारे में तुमने जो यह लिखा कि मेरा प्रेम तुम्हें न मिलने से तुम उसे प्रेम नहीं कर पाती सो मेरा प्रेम तुमपर है या नहीं इस बारे में मैं क्या कहूं। हां मोह अगर है तो मैं उसे हटाना चाहता हूं—पूरी कोशिश करके।

३ चि० रामगोपाल की पत्नी को मेरी समझ से १० १५ रुपये की मदद की जरूरत है। दूकान से ज्यादा दिलाने की कोशिश करने से दूसरे आदमियों पर बुरा असर पड़ता है। तुम अपने पास से जरूरत के माफिक १० १५ रुपये महीने की मदद जबतक उसका लड़का कमाने लायक न हो जाय तबतक करना चाहो तो जरूर कर सकती हो।

४ शैतान जानकी का मतलब मेरी समझ में नहीं आया।

नौकर के सामने डांट फटकारने की इच्छा तो रहती नहीं। खासकर तो खान-पान के मामले में तथा नौकरों के मामले में हम लोगों का बहुत गहरा मतभेद बहुत वर्ष से चल रहा है। मेरी इच्छा रहती है कि तुम्हारी वृत्ति में फरक पड़ जाय तो सुख से समय बहने लगे। मेरे मोह के कारण इसमें मेरी ज्यादा कोशिश रहती है। यह मैं जानता भी हूं कि उसका परिणाम ठीक न आकर विपरीत ही आता है। परंतु मैं भी अपनी आदत से लाचार हो गया हूं। संभाल रखते हुए भी तुम्हें कहने की भूल हो ही जाती है। पर मान अपमान की तुम्हारी कल्पना व मेरी कल्पना में बहुत फर्क है।

जैसा कि बालक व मित्र लोग करते हैं मैं भी मानता हूं कि हम लोग मोह को तो कम करें व प्रेम को बढ़ाते रहें। यह काम तो रात दिन नजदीक रहकर संभव नहीं है। इसलिए दूर रहकर प्रसन्नतापूर्वक समझकर व्यवहार रखें तो आशा है दोनों सुखी रह सकते हैं। बालकों व नौकरों पर भी अच्छा असर हो सकता है।

मुझे तो अब तुम्हें सुधारने का प्रयत्न करने का मोह छोड़कर खुद अपनेको ही सुधारना चाहिए। अपनी कमजोरियां निकालते रहना चाहिए। दूर रहकर शांत, शुद्ध व प्रेममय वातावरण में ही यह संभव है। मैं तो समझता हूं कि तुम्हें भी खुद अपने ही लिए प्रयत्न करते रहने में जो सुख व समाधान मिल सकेगा वह और तरह से नहीं। तुम्हें जिस प्रकार शांति व समाधान मिल सके, उसका मार्ग पू० बापू की सलाह से तुम्हें निश्चित कर लेना चाहिए। —ज०

•

जानकीदेवी की ओर से

बजाजवाडी वर्धा,
ता० २२ १ ५४

प्यारे बेटे कमल,

बबई तो डाक्टरी नगरी है। यहा रोगो से कोई कहा तक बचे। बस अब तेरे शुभ दिनो की शुरुआत हो रही है होनी चाहिए। मैं आशा करती हू कि अब तेरा स्वास्थ्य छोटे मोटे उपायो से भी सुधर जायेगा। वैसे शुक्लजी है। व तेरे पिताजी से बडे हैं मगर अभी तक स्वास्थ्य उत्तम है शरीर का रग ऐसा लाल है कि धरती रच जाय। ये पान जरूर खाते है मगर आदमी चालीस के बाद लापरवाही छोड देता है सभल कर रहने लगता है। जवानी के जोश मे व्यक्ति लापरवाह बना रहता है। मैं तो रूप की कमी के कारण धन आदि के गर्वो से बच गई। रोग तो सभी को सताते है। बापू को भी उनका सामना करना पडा किंतु बाद म वे कितने सचेत हो गये थे। होश म आने के बाद सभी पछताते है कि पहले समझ जाते तो बीमारी से बच जाते। दातो की तकलीफ के लिए तुम ऐसा करो कि तम्बाकू के पत्ते कढाई म जलाओ। जब पत्ते जरा सजीव रह जाय तो उस कढाई म कटोरी से पीस कर डब्बी मे भर लो। शुरू बहुत थोडी मात्रा स करना। पहले जी मचलाता है। तुमने देखा होगा कि तम्बाकू खाने वालो के दात साधारणतया अच्छे रहते हैं। थोडी मात्रा म पान तम्बाकू स शायद कीटाणु मर जाते होंगे। पान पोछकर सूखा मसाला जो राम के पास है, डाक्टर ले सकते हो। चूना और पान का रस खून को शुद्ध करता है। घेले की चीज भी लाभ कर जाती है यह सभी जानते है।

तू बचपन म लगोटी लगाये नगे पाव ही घूमता था लकडी के पाटे पर सोता था। लोग इसे देखकर दुख मनाते थे लेकिन मैं तो खुश होती थी। आज तू आराम स रहता है, लोग इससे खुश होते हैं पर मुझे तो दया खेद, अफसोस आदि के विचार ही सताते हैं। कारण ज्यादा आराम रोग की जड है। तू इस तरह उलझन म फस रहा है। तुझे कोई ऐसी बीमारी नही है। शक्कर की बीमारी से तो आधी दुनिया भरी है। तीन तीन बार चाय पीने वालो को भी राम निभाते है तो तेरी भी बीमारी निकल जायेगी। तेरे साथ तो व्यसन का कोई सवाल ही नही है। उरलीकाचन जाते ही हिम्मत आ जायगी, दवा छूट जायगी।

—मा के आशीर्वाद

•

प्यारे बेटे कमल

कल का पत्र तो अच्छा लगा, पर लिखे हुए अक्षरो स लगता था कि अभी कमजोरी बनी हुई है तू जल्दी ही चगा हो जायगा। तू बारह मास और बडा हो गया और तेरे साथ-साथ पाचो बहन भाई भी। तू बचपन म सदा नीरोगी और शान्त रहा। जयपुर जाने का विचार किया है सो ठीक है। खाने म हाथ के पिसे आटे का प्रयोग करे तो अच्छा। घूमने जाता है, यह

ता रामबाण इलाज है। शिवाजी कहते थे, विनोबाजी घूमन स ही जीत हैं। तेरे ज म के पहल तरे पिताजी माल टाल खाते थे पर सठाई म बठे रहने के कारण हमेशा खासी चलती थी, कभी कभी तो दमे से रात भर बठे रहन थे। स्वभाव तेर ही माफिक था पूछने म डर लगता था। कष्ट मे बालत से कष्ट बढ जाता है इसलिए वे चुप रहते थे। डाक्टर पूछते थे कि क्या वश म किसी और को दमा था ? बच्छराजजी स तो परपरा म राग आन का कोई कारण न था, क्योकि यह सबध खून का नही था। फिर जब बापूजी का साथ मिला तो उनके साथ घूमन लग और उसके बाद उन्ह पाचन की शिकायत नही रही—तुम लोगो ने भी पाचन क बारे म उन्ह कभी *शिकायत करते नही सुना होगा।* पहल अगर उनसे कोई कसरत करन को कहता तो सोचते थे कि इस शरीर से कसरत कसे होगी। जल्दी उठकर पाच बजे घूमन जाओ तो यह बडा अच्छा व्यायाम है। सीतारामजी सेकसरिया कहा करते है कि इसस शरीर पर एसा काबू आ जाता है कि कब्ज आदि की कोई शिकायत नही रहती भूख भी उत्तम लगती है। पेट अच्छा होना स्वास्थ्य की कुजी है।

सावित्री , भूल गयी थी। बेटा, बहू ता स्थितप्रज्ञ है ही। अपन आप एसी बाते किस याद रहती है ? भगवान क चादी के जेवर थ, चोरी होन पर उनकी जो लिस्ट बनी थी वे उसम दज हागे। जेवरात की सूची एक बही म डालूराम सेता ने लिख कर रखी है। एक ज म कुण्डली की पुस्तक भी मिली है। राम के ज म के बाद की कोई कुडली उसम नही है पहल की सब कुडलिया उसम है। कागज सड गया है तीस पृष्ठ की पुस्तक है। बच्छराजजी कनीरामजी जमनालालजी, जानकीबाई कमलाबाई और लक्ष्मीकात—यह तेरा ज म क नाम है—की कुडलिया हैं। मदुबाई उमाबाई की कुडलिया है सा शिवाजी को दिया देगे। राम की कुडली राम के पास है वह काहे का भेजेगा।

मैं तो सास के प्यार और व्यवहार से वचित रही। तुझे याद भी नही हागा पर मैंने किशोरलालभाई स कहा था कि रामायण क बालकाड और अयोध्याकाड बाच लूगी लेकिन हमेशा की तरह यू ही कह दिया था। जा कहा था मा किया नही विनोबा के पास बहुत कुछ पढ लिया अब क्या पढू। अभी तरी बीमारी म राम न कहा कि तुझे वर्धा म बीमार नही पडना चाहिए। तू रात दिन मीटिंगा म लगा रहता है जान के दिन भी मीटिंग रखी थी। य सब हमार गुण तुमम आय हैं। राम कहता था कि बार-बार बीमार पडन स ता मर जाना अच्छा। मैंन भी कभी एसा कहा है कि लोग दश के लिए मरते है मरा कमल भी जेल म देह छाड द तो इसस क्या हाता है पर यह शब्द सोचते सुनते लिखत कलेजा काप जाता है। पहल शब्दा के अथ पर ध्यान कम जाता था बच्छराजजी दिन भर कठोर वचन बालते रहते थ, तर काकाजी इस कारण कवन हा जात थ स्वय सदा अच्छ शब्द बालते थ, पर मर काना का मर जा आदि शब्दा की आदत हा गई।

—मा का आशीर्वाद

•

राची ६ ६ १९५२

चि० मदू

कार्ड मिला। गया म तो खूब परीक्षा हुई। लडकिया भी क्या काम कर सकती है। यहा विनोबा की भाति एक विद्वान व्यक्ति मिला उत्साही भी है। गर्मी तो बंधा जमी ही है, लेकिन लगता है दो चार रोज म वर्षा आ जायगी। विनोबा के पास आना-जाना नही होता। डेढ सौ मील मोटर म जाने की जरूरत भी नही है। कोई काम भी क्या है? गया म दो रोज उनके साथ रही। यहा के लोग आठ दस रोज रखना चाहते हैं। पच्चीस को उनका राची आने का प्रोग्राम है। वे कहते है कि दस हजार एकड रोज भूमि मिल तो राची वाले जितने दिन रखना चाहे मुझे वहा रख लें। आशा है कि वे लोग इतनी अपेक्षा पूरी कर सकेंगे। मैं रामकुमारजी के बगीचे के घर म सोने जाती हू। वह यहा स एक मील है। दिन म एक बार रामकुमारजी के यहा भोजन करती हू, रात म फल दूध ले लेती हूँ। सुबह मैं नहाकर ६ बजे दही लेकर निकलती हू। रात का साग सब्जी व आम लेकर सो जाती हू। चिंतामणि अपना भोजन खुद बनाता है।

गया स वर्धा जानेवाला कोई भी आदमी नही मिला। तीन मास का सूत चौवन आटी मैंने भेज दिया है। यहा खान-पान की बडी तकलीफ रही। जब यहा म निकलने का समय आ गया है तब कुछ इतजाम जम गया है। पानी के लिए कोई ठीक प्रबंध नही था खुद सुराही रखी तो ताजा पानी पी जाते थे। भगवान ने किसी तरह समय निकाल दिया। यहा तक काकाजी को जानने वाले बहुत लोग हैं। दिनभर रामकुमारजी के यहा रहती हू। वहा, छोटे-बडे कई बच्चे हैं। मन लगा रहता है। उनके यहा भोजन हाथ से बनाया जाता है, सास-बहू होशियार हैं। कलकत्ता यहा स पास है। इसलिए या तो वहा मीटिंग होगी या इदौर म। इदौर म मीटिंग हुई तो कस्तूरबाग्राम म जहा नई कालोनी बन रही है एक घर लेकर अलग रह लेंगे।

मेरा रजू दुबला क्या है? डाक्टर को मत दिखाना। ओम के पास नीम की गिलोय का सत है उससे गर्मी शात हो जायगी।

मा के आशीर्वाद

•

बजाजवाडी,

चि० राम,

भगवान की असीम कृपा से सब जन बच्छराजजी, दादाजी की गादी पर दीपावली मनावें, फिर दूसरे दिन लक्ष्मीनारायण मंदिर का अन्नकूट का प्रसाद लेवें। शाम की गाडी से सब कुशल-पूर्वक वापस आ सकें। मेरा तो यही जीवित श्राद्ध है। सब की अनुकूलता है। मौसम अच्छा है। बालकोबाजी परमधाम म हैं ही। बच्चा का डर था, पर वे मान गये हैं। बबई म तो विमला ने ५ ७ दिन की ही बात कही थी। कल वाली टिकट कटा लें। पीछे मुश्किल होगी। मेरे मन मे तो स्वार्थ ही यह है कि किसी तरह दीपावली पर वह ज्यादा दिन रहे तो

शरीर को लाभ है। मेरी हाजिरी में सब ढंग से, मैं करा रही हूं, ऐसा चाहती हूं। बड़ा की भूमि में बड़ा का क्या-क्या है? दूर से विमला क्या जाने।

अब तो तू मेरे मन की बात समझ गया। सो विमला को यहां दीवाली पर रहने को लिखो ऐसी मेरी इच्छा है। आज तक तो मौका ही नहीं मिला। आगे भगवान जाने पर तू वहां रहेगा तो विमला को मैं कैसे रखूं? बच्चे रह जाते जाय। स्कूल की लाग वाला होती है तब तो लाचारी है वरना क्या बात है? तू वहां पर रहता है स्कूल शुरू पर अच्छा होती है। पर बड़े की परीक्षा में अपनी भी परीक्षा है न भाई। तब फिर मेरा भी सबको आने का मन कैसे होगा सोच ले।

मां के आशीर्वाद

•

बजाजवाड़ी वर्धा
१ १ ५६

चि० राम

१ विनोबाजी ने कहा है कि पुस्तक पूरी होते ही भेज देना। १५ मिनट देखने से सारा दृश्य सामने आ जाता है। प्रस्तावना हम ही लिखेंगे। और तुरत लिख देंगे ऐसा प्रेम से उत्साह दिखाया है। मार्तण्ड का पत्र आया करीब १५ दिन में पुस्तक पूरी होते ही विनोबा के पास भेज देंगे।

२ जल की १०० बहनों वाला फोटो पुस्तक में देना है सो तुम्हारे पास फोटो हो तो भेज दो नहीं तो भरत के साथ काच निकालकर भेज सकते हैं। रात, भरत हविरा ६ ७ ता० को जायेंगे। मदालसा का विचार है कि यहां उसकी तबीयत को लाभ होगा, ऐसा लगता है। भरत को समझाया तो है कि ओम के पास रह जाय। जितने दिन रहना होगा, वर्धा ही अच्छा है। बगले पर ही है। अपने घर का सामान ठीक ठाक कर रही है। यहां एक सिविल सर्जन[1] आया है। वह होम्योपेथ और सर्जन होते हुए उसको पैसे से घृणा है। घटा गरीब-अमीर रोगी को समय देता है। नमक व अचार के साथ दो दफे यहां रोटी खा गये। उन्हें मेरी टांग दिखाने को बुलाया था तब मुश्किल से १५ रु० लिये। अंग्रेजी दवा का मैंने मना किया। उसने तुरत आयुर्वेदिक बताई। तीनों बच्चों को होम्योपथिक। भरत रजत के नाक में हड्डी मदालसा के जैसी दिखती है। होम्योपथी से ठीक हो जायगी, ऐसी उनकी श्रद्धा है। बायोकेमिक १२ शीशी घर मे रखो तो डाक्टर से बच सकते है। उसने पुस्तक का नाम भी मदालसा को बताया है। गूलर के पेड का दूध रूई में लगाकर एक पैसे जितना दोनों तरफ गले पर रात को चिपकाने से लाभ होता है। ८० दिन में उस पेड को अजीर के जैसे फल लगते है। इन तीनों बच्चों को

1 हरनारायण दुबे

लाकर दिखाना है। बगल पर बड़ा-सा वह झाड़ है न। अपने बच्चों को भी इसको दिखाना चाहिए। शक्कर की बीमारी का भी पूछना है। गांव के सब लोग सिविल सर्जन से खुश हैं। मेरे पांव को १० दिन बिजली लगाने को कहा है। मदालसा के लिए तीन दिन से सोचकर कहेंगे। कल फाइल लेकर आये थे। पंगत में आकर जीम गये—टंडनजी, मिश्रजी, गोविन्ददासजी के साथ। वर्धा में ऐसे डॉक्टर की जरूरत थी। महोदय को बिजली से सेकने को कह दिया है।

मां के आशीर्वाद

•

मसूर, विनोबा की पार्टी में
ता० २० ८ ५७

चि० राम

मैं श्रीमनजी के साथ प्लेन से ता० १८ को आई। ता० २ को ढेबरभाई, श्रीमनजी राजेन्द्रबाबू के तो सेवाग्राम में ठहरने की बात है। प्लेन से नागपुर होकर ता० ३० तक वर्धा पहुंचूंगी। श्रीमनजी कहते हैं और मेरा मन तो रहता ही है। दीवाली की छुट्टियां में कमला, उमा, वीणा को लेकर रामेश्वरजी ने वर्धा आने को कहा है। कमला उमा को लेकर ता० १ को आ जाओ। उमा को राजेन्द्रबाबू की आरती कराने का मौका शायद ही मिले, क्योंकि वह सेवाग्राम में दिन में ही रहेंगे। रात का प्रोग्राम नहीं है ऐसा सुना है। आगे तो ता० ३ को कालेज के लिए चली जावे। छुट्टियां में फिर आ जावे। कमला को तो रामेश्वरजी कहते हैं कि वर्धा में ही स्वास्थ्य सुधरेगा। सो डेढ़ महीना मिल जावेगा। आरती और आजादी में छुट्टी आवे या तुम्हारे वहां रह लें। बच्चों की छुट्टियों में विमला गाची जायगी ऐसा सुना है। यों तो वर्धा आना सबों को अच्छा है। कमल को भी दीवाली पर आने को कहा था। सभी वर्धा की दीवाली मनावें। मौसम अच्छा है। हरणों की बहार है। श्रीमनजी ने कहा माताजी के आने से जल्दी जायेंगे। ढेबरभाई वगैरा तो बगल में ही ठहरेंगे। आज श्राद्ध की ग्यारस है। विनोबा का साथ मिला। नागपुर वाले काकाजी बीमार थे, सो उन्हें भी देख लूं जल्दी पहुंचूं। एक दो रोज यहां मिल जाय। आराम भी है। खर्च भी अब करना चाहिए। आठ दिन वर्धा में रहकर इन्दौर में कस्तूरबा की मीटिंग में ८ १० रोज रहकर दीपावली पर वापस वर्धा। ककड़ी का मौसम है सो सब वर्धा आ जाना खाने को। बगल पर गेस्ट हाउस मिलाकर चाहे जितने लोग रहें दुकान से अधिक आराम रहेगा। सावित्री आवे तो सुमन वगैरा को पूरा आराम मिलेगा। कभी तो सारे लोग साथ रहें। मदू आ जाए। बुआ आ सकती है।

मां का सबों को आशीर्वाद

•

कलकत्ता, ता० ८-६-१९६३

चि० विमला

मैं कल कलकत्ता सीतारामजी के घर आ गई। बाबा ता० १३ को आयेंगे। मेरा कलकत्ता ही रहने का मन है। बाबा ७ दिन तक शांत जगह पर मौन रखने वाले हैं। बाकी कलकत्ता का समय उदारता से मानते हैं। यहां पर आज तुम्हारा कुछ काम हो तो आसानी से हो सकता है। पुस्तकें ६ मिल गई। बाबा की पुस्तक भी है। बाकी देखी। मैं बाकी राम ने लिखा है पूरी रचना तो बाल निशान पर दो धाम पत्रों पर। मैंने कहा निशान आपका क्या है सभी राम हैं। हां १८-२० मिनिट में पढ़ जाते हैं।

गंगासागर वैसे तो जुहू का किनारा-सा ही है। कपिल देवजी की मूर्ति है। पर यात्रियों के लिए यात्रा भारी है। गंगा व सागर के संगम का माहात्म्य है। बाबा के साथ खूब रहना।

—मां के आशीर्वाद

•

बजाजवाड़ी

१९५२

चि० सुमतारानी

आज तुम्हारी मेथी की साग बनाकर खाई। अबकी छुट्टियों में भी तुम यहां आना। राहुल का पता क्या है? तुम कितना वजन ले गई? अब वहां भी राहुल मक्खन खा सकता है क्या? छोटे का तो कूदने में ही वजन भाग जाता है। आंवले का चूरा शीशी में भर लेना। टुकड़े चाहिए तो कमला बुआजी को भेज दें। छोटे बच्चों को समझाना सिगरेट नाम की रंगीन शक्कर की लकड़ी चूसने से गला खराब होता है। सो दुकानदार को अगर समझाया जाय तो सब बच्चों का भला होगा। मीठी लकड़ी मुलेठी लेवें तो गला और खांसी भी ठीक होगी।

एक मजेदार बात सुनाऊं। रिषभदासजी के साथ आते हुए मैंने उनसे कहा आप दुकान पर जाओ। मैं पहुंच जाऊंगी। आधे रास्ते में मुसलमानी मोहल्ले में पहुंच गई। खाना खाकर ११॥ बजे निकली। एक घंटा गली रास्ता में घूम फिरकर बार-बार वहीं आ जाऊं। कुछ निशान दीखे तो उधर जाऊं पर नये घर के एक लड़के से चुपके से पूछा ज्ञान मंदिर किधर है तो बोला बजाजवाड़ी चले जाओ। अब शरमाकर चली पर किधर जाऊं? थक गई। डर तो क्या था! ज्ञान मंदिर का शिखर वगैरा कुछ निशान दीखे तो आगे बढ़ूं। एक टांगा खाली खड़ा था। बैठूं, पर घर पास ही होगा तो? तांगा चला तो हिम्मत से बैठी रही। दूर निकला घर। पर मैं दो चार आने, वह मांगे आठ आने। आखिर संक्रांति का दिन है यह सोचकर आठ आना दे दिया।

दादीजी

•

"सौ साल जीवें"

वधमान वत्ति से हृदय का विकास करते हुए

विनोबा

आज मुझे यहा दो काम करने हैं। दोनो काम आसान है। एक है—माताजी के जीवन के ८० साल आज पूरे होते है उनके लिए शुभकामना करना। उनका आरोग्य अच्छा है। ८० साल की उम्र म भी व बच्चो के समान बालवत्ति रखनी हैं। मैं आशा करता हू कि हम सब लोगो की शुभकामना से वह अवश्य मरते तक जी लेंगी।

लेकिन हम लोगो म, खास करके वदिक परपरा म, आशीवाद दिया जाता है— 'जीवेत शरद शतम्" (सौ साल जियें।) १०० साल जीने की बात वदिक संस्कृति म आती है। ईशा वास्य उपनिषद' म यही बात आती है १०० साल जीने की लेकिन वेदो न जो आशीर्वाद दिया १०० साल का, उसके साथ एक शब्द जोड दिया— ध्यविषयो वधमाना । बढ़ते हुए ससार म जीव-वत्तिया विकसित होती जा रही हैं। चितन शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। एसी हालत रखते हुए १०० साल जीना। वत्ति क्षीण होती जा रही है, चितन शक्ति रही नही, एसी क्षीणता म जीना नही। यह जो 'वधमान शब्द' है बहुत महत्व का है। यह शब्द उठा लिया जनो ने। जनो न महावीर को 'वधमान नाम दे दिया। वधमान अर्थात नित्य बढनवाला। कल का आज नही और आज का कल नही। रोज इसका विकास होता ही रहा है। मनोविकार चित्तविकार बुद्धिविकार अपराध हो रहा है ऐसी है वधमान स्थिति महावीर की स्थिति।

मैं आशा करूगा कि वधमान वत्ति से उत्तरोत्तर हृदय का विकास करते हुए माताजी १०० साल जीवें। (आपको भी जीना पडेगा ऐसा माताजी न बीच म ही कहा)। ठीक है। सहनाववतु सह नौ भुनक्तु। यहा फुटबाल का खेल चला है। हमन गेंद उनके पास भेज दी और उन्होने हमारे पास भेज दी। तो उसको स्वीकार करते है।

दूसरी बात। उनका कुछ गुणगान आप लोग सुनना चाहगे। लेकिन इसको स्तवन कहते हैं स्तुति। वह परमात्मा की करना उत्तम रहता है। मानव की स्तुति उसके सामने करना यानी उसको जहर पिलाना है। कवि न कहा है, 'विपष्ठवना स्तवनेहर', एक जहर है। इसको भगवान शकर ही हजम कर सकते हैं। जहर को हजम करने की शक्ति मानव मे नही है। इस वास्ते मानव के सामने उनकी स्तुति करना उचित नही है। इसलिए स्तुति खतम। और निंदा करनी हो तो आप लोगो की उपस्थिति म इनकी निंदा नही कर सकता। कोई दोष इनके दीख पडते हो तो प्रेमपूर्वक इनको एकान्त म समझाना होगा। तो आपकी हाजिरी म उनकी निंदा नही हो सकती है और उनकी हाजिरी म उनकी स्तुति नही हो सकती। आप दोनो ही यहा हाजिर हैं इसलिए न निंदा, न स्तुति। फिर क्या रहेगा? मौन समाप्ति।

श्रीमती जानकीदेवी बजाज के जन्म दिवस पर ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार म ७ जनवरी १९७३ को दिया गया प्रवचन।

'मेरे साथ आप सब सौ वर्ष जीवो'

जानकीदेवी बजाज

मुझे जीने का बहुत शौक है और मैं चाहती हूँ कि सबका १०० वर्ष आशीर्वाद मिल सकें।

सबका खान पान और रहन-सहन ठीक रहे। बाबा कहते हैं कि १०० वर्ष जी सकते हैं। तो बाबा और मैं १०० वर्ष जीने का नक्की करते हैं। हमारे साथ आप सब १०० वर्ष जीवो। दुनिया में १०० वर्ष की उम्र को पकड़कर खान-पान सब शुद्ध रखें।

अब स्त्री शक्ति और गाय। मान गाय और माय। गाय को बचाना है और स्त्री शक्ति को जगाना है। गाय से बैल, बैल से खेती, खेत से प्राणिमात्र का जीवन। इसीलिए बापू ने खादी और गाय, दो बताई थी। खादी में शुद्धता की बात समझाई थी। खादी शुद्ध पवित्र। शरीर में पसीना सोखती है और शुद्ध हवा देती है। शरीर का पोषण खादी में है। गाय से सबका जीवन है। गाय को बचाना है तो आज से तैयार हूँ। कलकत्ता में लोग सब इस काम के लिए तैयार हैं। बाबा ने कहा गोहत्या बंद करनी है। गांधीजी ने कहा था कि राज मिलाना आसान है लेकिन गोहत्या बंद करना कठिन है। बाबा ने कहा कलकत्ता को जवान जवान गायें जाती हैं पहले उनको बचाना चाहिए। लोग कहते हैं कि गाय कायदा बनाने से बचेंगी। नहीं कायदा तो टूटता जाता है। पर हाँ बाबा ने कहा गाय मारना बंद होगा और कायदा बनेगा तो वह कायदा टिकेगा। इस तरह दुनिया (जनता) ही कोशिश करे और सरकार मदद दे तो काम हो सकता है।

स्त्री शक्ति जगानी है तो स्त्रियों को ही आगे आना होगा। समाज में पुरुष सबल कहलाते हैं और माताएं निर्बल अबला। अरे अबला कैसे है? तुमको पैदा करती है। नौ महीने पेट में रखती है। बाद में बच्चा कैसे पैदा होता है वह पीर तो माँ ही जानती है। पुरुष इस दुख को कैसे समझ सकते हैं। वह बच्चा पैदा करे खर्च चलावे भूखी रहे पर कोई सुनवाई नहीं। यही बहनें अपनी माताओं-बहनों को जगावेंगी तभी स्त्री शक्ति जागेगी। जिस दिन स्त्रियां खुद खड़ी होंगी उस समय उठ सकेंगी।

इस तरह गाय और माय इन दोनों की जितनी उन्नति होगी उतनी ही देश की उन्नति होगी।




नारी जीवन की सार्थकता

श्री मा आनन्दमयी

प्रश्न नारी जीवन का सहज स्वरूप क्या है मा ?

मा नारी तो आत्मसत्ता आत्मा ही है।
सहज स्वरूप तो नित्य है ही।
और मनकल्पित भावनामूलक सहज स्वरूप का जो प्रश्न पूछा है वह तो मनोराज्य के अंतर्गत है।

प्रश्न इस सहज स्वरूप में स्थित होने के लिए नारी जीवन में अवलम्बनीय क्या है ? अर्थात जीवन को किस प्रकार नियमित करें, किस मार्ग पर किस सहारे से चला जाय ?

मा देखो इस शरीर की एक बात है—श्रेय ग्रहण प्रेय त्याग। एक तो सत्संग, श्रवणादि और प्रार्थना हो, हे भगवान तुम्हारा ही यह शरीर है। इस मन प्राण से केवल तुम्हारी ही सेवा बने। अपने को हरेक कार्य में भगवान के हाथ का यन्त्र—भगवान के लिए भगवान जो करायें वही हम करें—यह मन में रखने की कोशिश और सभी कार्यक्रम में अपने में भी जो कुछ है समग्र शरीर से जो-जो क्रिया बने शरीर भी, भगवान के चरणों में अर्पित हो, मनुष्य की तो सारी क्रिया और विचार में ही भगवान में समर्पण-बुद्धि होनी चाहिए।
भगवान की शरण में जो है उन्हें नियमित सहारा भी है। भगवान ही सार कार्यक्रम रूप में प्रकाश होकर अपना कार्य अपने में आप ही पूर्ण करते हैं।

प्रश्न नारी जीवन की सार्थकता किसमें है मा ?

मा नारी-जीवन की सार्थकता, भगवान की शरणागति—क्रिया के व्रत में है। भगवान परममाता परमपिता सखा स्वामी, बन्धु है न ? अपने प्रिय को मातृत्व जागरण का मार्ग भी देते हैं। उसी मातृत्व में बनी रहना। भगवद्बुद्धि से सबकी सेवा करना। उसी सेवा क्रिया में जो पितृमातृ—स्थानीय सच्ची भक्ति श्रद्धा भाव लेकर भगवान तुम्हीं इस रूप में सेवा ग्रहण करो, और सन्तान-स्थानीयगण की स्नेह आदर प्रेम से सेवा करे। भगवान इसी रूप में सेवा ग्रहण करते हैं। मन में यही भाव सर्वक्षण सुरभित बना रहे केवल चेष्टा।
सब सेवा ही पूर्णांगी हो यह लक्ष्य बने।

प्रश्न नारी का आंतरिक समर्पणभाव किस तरह समृद्ध हो सकता है और यह समृद्धि समर्पण के लक्ष्य तक पहुंचाने में किस प्रकार सहायक हो सकती है ?

मा गुरुनिर्देशक्रिया में व्रती रहने में ही क्रम-समृद्धि है। अपना आंतरिक सारा लक्ष्य पूर्ण होने की आशा की जा सकती है।
गुरुनिर्देशक्रिया ठीक-ठीक बने तो अपने आप शक्ति उत्पन्न होती है और शिष्य-सन्तान का नवजीवन गठन होता है। उसी गठित जीवन में लक्ष्य-पूर्त्ति की जो शक्ति, क्रिया

जाग्रत होती है यह धारणा ही [illegible] पूर्ण करने के लिए [illegible] सहायक होती है।

प्रश्न मां, वर्तमान समाज व्यवस्था में जिस प्रकार विपरीत [illegible] दिखाई पड़ती है नारी जीवन में [illegible] [illegible] हुए [illegible] प्रश्न में [illegible] विचार [illegible] को सुधारने में नारी किस प्रकार सहायक हो सकती है?

मां [illegible] सकती है यदि [illegible] [illegible] [illegible] अर्थात् [illegible] विचार सकेगा जो कुछ आज [illegible] स्थिर रहे [illegible] साधना की आशा हो सकती है।

तुम्हारा प्रार्थना [illegible] ही होनी चाहिए। [illegible] कहा गया है—भगवान [illegible] निर्गुण निराकार सगुण साकार में भी [illegible] है। [illegible] जहां जहां जो [illegible]। स्वयं जो जो [illegible] प्रकाश [illegible] है [illegible] भी [illegible] [illegible] ?

[illegible] होती है [illegible] और [illegible] होती है [illegible]। जो [illegible] में [illegible] [illegible] स्थिर धीर गंभीर [illegible] प्रकाश हो उसी [illegible] में [illegible]। भगवान ही जब अपनी क्रिया में [illegible] प्रकाश हों सभी में [illegible] हो सकती है।

प्रश्न नारी जीवन में उपयुक्त [illegible] करते हुए विश्वशांति का प्रकाश कैसे हो सकता है मां?

मां भगवान् नित्य शान्तिस्वरूप हैं। यह ध्यान में [illegible] होगा। अशांति [illegible] न पाये। [illegible] में बनी रहे। [illegible] भगवत्स्वरूप अनुकूल क्रिया [illegible] प्रयोजन।

कारण जीवजगत जगत [illegible] जीव [illegible] [illegible] क्रिया में [illegible] [illegible] [illegible] आदि गवेषण [illegible] सत्य अनुसंधान का उसीके अनुकूल भाव [illegible] प्रयोजन हो।

विश्वरूप तो स्वयं भगवान हैं। विश्वशांति जो चाहते [illegible] परम [illegible] में जबतक प्रतीकरूप [illegible] अतीत [illegible] प्रकाश न हो तो [illegible] विश्वातीत में जो अवर्णनीय है विश्वराज्य में वही है। अभी समझो जब अपनेको अपने में ही पकड़ा न दें तबतक तो विश्वशांतिरूप कहां?

अच्छा अभी तुम्हारी बात है मां जीव जगत में तो सामयिक शांति सामयिक अशांति! दुनिया है न। जो दो लेकर ही द्वन्द्व। द्वन्द्व भाव अधिकार में। दो में जो क्षरित होना दुःख भी। क्षणिक सुख क्षणिक दुःख तो दो सब जहां—दुनिया में—है ही। मनमाना राज्य में जहां।

हां मनोराज्य के अंतर्गत शांति शांति के लिए मां नाना सेवा में व्रती है न? भगवान ही केवल सेवा ले रहे हैं नाना भावरूप में—यह भावना मन में दृढ़ रूप से रक्षित रखे। सेवा करनेवाले को भी सदा ही भगवान के पास अपना लक्ष्यपूर्ण होने के लिए कृपा प्रार्थना करणीय ही है।

निष्काम सेवा अगर क्रमगति से ठीक बने, आगे चलकर जो स्थिति वह हो तो सत्य स्वरूप स्वयं भगवान सत्य सेवक कौन है—अपनेको पकड़ा देते हैं।

अपना बाजा मदालसा मां ने जैसा बजाया, वैसा सुना।

'भारतीय नारी माता है'

सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

जब यह कहा जाता है कि नर और नारी पुरुष और प्रकृति की भांति हैं तो इसका अभिप्राय यह होता है कि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव-जाति मे नर नारी का लिंग भेद होने के कारण श्रम का विभाजन करना आवश्यक हो गया है। कुछ कार्य ऐसे है जिन्हे पुरुष नही कर सकते। इस प्रकार का विशेष कार्य का कौशल स्त्रियो को उनके नारीत्व से वंचित नही करता और न इससे नर और नारी के स्वाभाविक संबंध ही बिगडने पाते है। पुरुष स्रष्टा है नारी प्रेमिका। नारी के विशेष गुण है दया और कोमलता शांति और प्रेम समर्पण और बलिदान। पाशविकता हिंसा क्रोध और विद्वेष उसके स्वाभाविक गुण नही हैं। पुरुष का प्रभुत्व स्वाभाविक नही है। ऐसे अनेक युग और समाज के रूप रहे हैं जिनमे पुरुष का प्रभुत्व उतना सुनिश्चित नही था जितना हम अज्ञानवश मान लेते है। चारता के परिणाम स्त्रियो की पुरुषोचित गुणो की अपेक्षा कही अधिक अच्छी तरह रक्षा कर सकते है। स्त्री और पुरुष मे अन्तर आवश्यक है और उनका प्रयोजन पारस्परिक शिक्षण है। नारी मूलत पुरुष की शिक्षक है तब भी जबकि वह बच्चा होता है और उस समय भी जबकि वह वयस्क हो जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण मे कहा गया है, क्योकि पिता फिर अपनी पत्नी से उत्पन्न होता है (जायते पुन) इसीलिए वह जाया कहलाती है। वह उसकी दूसरी माता है।' गीतगोविन्द उस श्लोक से प्रारंभ होता है जिसमे राधा से कृष्ण को घर ले जाने का अनुरोध किया गया है, उसके स्वभाव की पूर्णता को आगे बढाने के लिए क्योकि वह भीरु बालक है।

जब आकाश बादलो से काला पड जाता है, भविष्य का मार्ग घने वन मे से होता है, जब हम अधकार मे बिल्कुल अकेले होते है प्रकाश की एक भी किरण नही दीख पडती और जब सब ओर कठिनाइयां ही कठिनाइयां होती हैं तब हम अपने-आपको किसी प्रेममयी नारी के हाथ मे छोड देते है।

नारी शिशु को 'दुहित' नाम दिया गया है। इस शब्द से ध्वनित होता है कि स्त्री का मुख्य काम गाय दुहना है। बुनना सिलाई कढाई भी बहुत महत्त्वपूर्ण समझी जाती थी। ब्राह्मण कन्याओ को वेदो की शिक्षा दी जाती थी और क्षत्रिय वर्ग की कन्याओ को धनुष-बाण का प्रयोग सिखाया जाता था। भारत की मूर्तियो मे कुशल अश्वारोही स्त्रियो की सेना का चित्रण है। पतजलि ने भाला चलानेवाली महिलाओ (शक्तिकी) का उल्लेख किया है। मेगस्थनीज ने चद्रगुप्त की अगरक्षक सशस्त्र महिलाओ का वर्णन किया है। कौटिल्य ने महिला धनुर्धरो की चर्चा की है। (स्त्री गण धर्विभि)। घरो मे और भारत के वन विश्वविद्यालयो (आश्रमो) मे लडको और लडकियो को साथ साथ शिक्षा दी जाती थी। वाल्मीकि के आश्रम मे आत्रेयी राम के पुत्र लव और कुश के साथ पढा करती थी। सगीत नृत्य और चित्रकला आदि ललित कलाओ की शिक्षा लडकियो को विशेष रूप से दी जाती थी।

हाल के दिनो मे भी स्त्रियो ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि वे उन कामो को कुशलता

स र सकती है जो सामान्यता पुरुषा का सौप जात हैं।

फिर भी आज तक यही दृष्टिकोण जड जमाय हुए है कि बौद्धिक योग्यता की दृष्टि म स्त्रिया पुरुषा म घटिया होती है। अपेक्षाकृत दुबल और सुकुमारी है और इसलिए उन्हें रक्षा की आवश्यकता है।

जबतक घर मानव जीवन का केन्द्र है तबतक स्त्री सबस महत्त्वपूण सदस्य बनी रहेगी। परन्तु घर का स्थान शन शन होटल ल रहा है किसान की कुटिया का स्थान होटल क कमरा के फलट लते जा रहे हैं। हम एक आवारा जीवन बिता रहे हैं परन्तु हिन्दू आदश यह है कि परिवार को अटूट बनाय रखा जाय। मनुष्य की जड अपन दश म ही जमी होती है। भारतीय नारी माता है।

शास्त्रा म कहा गया है कि पत्नी पति की अर्द्धांगिनी और जीवन क उद्देश्या की साधना म उसकी सहचारिणी है।

प्रत्यक पीढी म भारत म एसी करोडा स्त्रिया होती रही हैं जिन्ह यद्यपि कोई यश नहा मिला फिर भी जिनक दनिक अस्तित्व न मानव जाति को सभ्य बनान म सहायता दी है और जिनके हृदय का जाश आत्म-बलिदानी उत्साह आडम्बरहीन निष्ठा तथा कठिनतम परीक्षा की घडी म कष्ट-सहन की क्षमता हमारी नारी-जाति के गौरव की वस्तुआ म स है। स्त्रिया माता के रूप म वतमान व्यवस्था क अत्याचार और अन्याय क प्रति और भी अधिक सचत होती है आत्मा म एक गहरा और दूरगामी परिवतन ला सकती हैं और उस एक नई जीवन शली का रूप दे सकती हैं। जिस दिन एसा होगा उसी दिन नवीन मानव का जन्म होगा।[1]

१ हिन्दू समाज म नारी लेख का अश ज्ञानवती दरबार द्वारा अनूदित।

प्रसिद्ध भारतीय नारिया : प्राचीन

अ

अक्षमाला पुनजन्म का प्राप्त वशिष्ठ की पत्नीअरुधती (म उ ११७ ११कु)

अगजा ब्रह्मा की कया। (मत्स्य ३ १२)

अच्छादा अच्छोद सरावर का निर्माण करन वाले अग्निष्वात पितरा के वश म उत्पन्न। यही कालातर म सत्यवती क नाम स प्रसिद्ध हुई। (ब्रह्माड ३ १० ५८ ७८ म आ ६४ ६४कु)

अजामुखी लका के अशाक वन म सीता की देखरेख क लिए रखी गइ बकरी जसे मुख वाली एक राक्षसी। (वा रा सु २४)

अजिह्विका अशाक वन म सीता के पास रखी गई बिना जीभवाली एक राक्षसी। तात्पय कदाचित सदा चुपचाप आज्ञापालन करने वाली परिचारिका से है। (म १ २८०)

अजना पूवजम म यह पुजकस्थली नामक अप्सरा थी। शाप के प्रभाव स कुजर नामक वानर की कया बनकर जन्मी। केसरी नामक वानर की पत्नी। (शिव शत २०)

कही इसे गौतम ऋषि की कया भी कहा गया है। (भवि प्रति ४ १३) इसन मतग ऋषि के कहने पर पति के साथ वेंकटाचल पवत के पुष्करणी तीथ म स्नान करके वाराह और वेंकटेश को प्रणाम किया आकाशगगा के तट पर वायु की आराधना की। एक हजार वष के तप स वायु के द्वारा उसके मारुति नामक पुत्र प्राप्त हुआ। (स्कद २ ४०) अजनी भी इसीका नामातर है। इसे इच्छा रूप धारण करन की शक्ति प्राप्त थी। (वा रा कि ६६)

अदिति मित्रवरुण और अयमा की माता (ऋ ८ ४ ७६ ८ २८ ३ १० ३ ८३)। पौराणिक कथाओ के अनुसार अदिति प्राचेतस दक्ष प्रजापति की कया और कश्यप पत्नी है। पर वदा म यह विष्णु की पत्नी कही गइ है। देवगण, अदिति आप तथा पृथ्वी की सतान हैं। अदिति का द्यौ और पृथ्वी स एक रूप माना गया है। अनक स्थाना पर इसे भिन लेखा गया है। गाय का भी अदिति नाम दिया है। ऋग्वेद म पृथ्वी के चद्र की तुलना अदिति के दुग्ध से की गइ है। अदिति द्वादश आदित्या की माता है इसलिए तेज प्राप्ति के लिए उसकी प्राथना की जाती है।

विष्णु की माता। तत्तरीय सहिता म इसक आठ बडे ही बलवान पुत्रा का उल्लेख है। इनको अष्टवसु कहा है। महाभारत के अनुशासन पव म इसे विष्णु की माता कहा है और कहा है कि विष्णु के पहल इसके ग्यारह अय पुत्र हो चुके थ। नरकासुर द्वारा अदिति के कुडला को चुरा ल जान की कथा प्रसिद्ध है। कृष्ण नरकासुर का वध करके इन कुडला को वापस लाय थ। (म उ ४८)

अदृश्यती मैत्रावरुणि वसिष्ठ पुत्र शक्ति की पत्नी। पराशर ऋषि की माता। महाभारत अनुशासन पर्व में चित्रमुख नामक वैश्य की कन्या इस तपबल से ब्राह्मणत्व प्राप्त हो गया था।

अनती शतरूपा का नामांतर।

अनपाया कश्यप व मुनि की कन्या आद्रका की बहिन।

अनला रोहिणी की दो कन्याओं में से एक शुकी की माता। वाल्मीकि रामायण के अनुसार विश्वावसु नामक राक्षस की पत्नी।

अनसूया ब्रह्मा के मानस पुत्र अत्रि ऋषि की पत्नी। गरुड़ पुराण के अनुसार दश-कन्या। कर्दम और देवहुती की पुत्री। सुप्रसिद्ध पतिव्रता। ३०० वर्ष तप करके शंकर को प्रसन्न किया। दत्तात्रेय दुर्वासा और चन्द्र तीन पुत्र। चित्रकूट की गंगा मन्दाकिनी इसीने प्रवाहित की। राम के वनगमन के समय अत्रि के आश्रम में उनका आतिथ्य किया।

अनुमति अंगिरा ऋषि और श्रद्धा की चार कन्याओं में से कनिष्ठ। आदित्यों में से धातृ आदित्य की पत्नी।

अनुम्लोचा एक अप्सरा—भाद्रपद के आदित्य के साथ रहती है। (भा १२ ११)

अनुराधा दक्ष व असिक्नी कन्याओं में से एक। सोमपत्नी।

अनूचाना कश्यप और प्राधा से उत्पन्न अप्सराओं में से एक। (म आ १३२)

अनौपम्या बाणासुर की पत्नी।

अपर्णा महादेव की पत्नी हिमालय की कन्या। पूर्वपति महादेव की प्राप्ति की इच्छा से केवल पत्तों को आहार बनाया। उद्देश्य प्राप्ति न होने पर पत्तों का आहार भी बंद किया, इसीलिए अपर्णा कहलाई। तपस्या के बाद यही उमा कहलाई। (ह व १ १८)

अपहारिणी ब्रह्मघाता नामक राक्षस की कन्या। अमृत मंथन, क्षेम धर्म ब्रह्मास्त्र... [illegible] इसके भाई और अपहारिणी क्षमा, मनस्विनी व रत्नवर्णी बहनें थीं।

अपाला अत्रि की कन्या। ब्रह्मज्ञानी, किन्तु कुष्ठ रोग के कारण इसे पति ने छोड़ दिया था। मायके में रहकर इन्द्र को प्रसन्न करने के निमित्त तप किया और इन्द्र ने प्रसन्न होकर इसे रोग मुक्त किया (ऋ ८ ९१)

अभिमती अदिति के अष्टवसु कहलानेवाले आठ पुत्रों में से द्रोणवसु की पत्नी।

अमला वैवस्वत मन्वन्तर में अत्रि ऋषि की प्रसिद्ध ब्रह्मनिष्ठ कन्या।

अमावास्या पुरूरवा के वंश में दो अमावसु हुए। एक पुरूरवा के पुत्रों में से था। दूसरे अमावसु के वंश में कुशों से उत्पन्न पुरुष कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का मूल पुरुष माना गया है। ब्रह्म पुराण विष्णुपुराण हरिवंश पुराण आदि कई स्थानों में उल्लेख और वंशावली मिलती है। पूर्वजन्म में अच्छोद की कन्या अमावसु अमावास्या कहलाती थी। वही कालांतर में मत्स्या, काली, सत्यवती आदि हुई। (मत्स्य १४)

अमोघा शंतनु ऋषि की पत्नी। लोहित नामक तेजस्वी तीर्थाधिपति की निर्माणकर्ती।

अंबा काशिराज की कन्याओं में सबसे बड़ी। भीष्म ने उसे स्वयंवर में जीतकर उसका विवाह विचित्रवीर्य से करवाना चाहा था। (म आ १०२, म उ १८६)

अंबालिका काशिराज की तीन कन्याओं में कनिष्ठ। विचित्रवीर्य की भार्या। व्यास से उत्पन्न पुत्र पाण्डु की माता।

अंबिका काशिराज की मझली कन्या।

विचित्रवीय की पत्नी। व्यास से उत्पन्न पुत्र, धतराष्ट्र की माता।

अभिणी इसने सूय से ब्रह्मविद्या सीखी थी।

अरजा उशनस शुक्र की कन्या। दडकारण्य म भागव ऋषि के आश्रम म रहकर गौरला स्पद बनी (वा रा उत्तर ६६)

अरिष्टा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या। कश्यप की पत्नी। यह प्राधा नाम से भी विख्यात है। (म आ ६६)

अरुणा कश्यप और प्राधा की कन्या।

अरुधती (२६) कदम प्रजापति और देवहूती की कन्या। वशिष्ठ की पत्नी (भा ३ २४) वायुपुराण, ब्रह्माडपुराण आदि के अनुसार कश्यप की लडकी जिसने गौरीव्रत करके पतिरूप म वशिष्ठ को प्राप्त किया था। एक कथा के अनुसार मधातिथि मुनि की कन्या जिसे ब्रह्मा की प्राथना मानकर सावित्री ने उत्तम शिक्षण दिया और बाद म उसका विवाह वशिष्ठ स सपन्न किया। (कालि २३) कहते है, भगवान शकर ने इसने लगातार बारह वष तक विभिन्न विषयो पर इतनी अच्छी तरह चचा की कि इतने काल के निकल जाने का पता ही नही चला। (म श ४८)

अरूपा कश्यप प्राधा की पुत्री।

आद्रका कश्यप और मुनि की कन्या जो शाप वश मछली हो गई थी। मत्स्य नामक राजा इसका पुत्र और मत्स्यगधा इसकी कन्या थी। (म आ ६४)

अर्चिष्मती बृहस्पति की दूसरी पत्नी शुभा से उत्पन्न सात कन्याओ म स एक।

अलक्ष्मी कालकूट के बाद समुद्र म निकली शक्ति, इसका मुख कृष्ण आखें लाल और केश पीले थ। यह वद्धा थी। उद्दालक ऋषि की पत्नी। उद्दालक मद्यपायी ऋषि थ। वह इसे छोडकर चले गये। तब इसे विष्णु ने पीपल के वक्ष के मूल म रहने को कहा। तब इस अलक्ष्मी की पूजा लक्ष्मी को प्राप्त करने वाली बन गई। (पद्म उ ११६)

अलबुषा कश्यप व प्राधा की कन्याओ म स एक।

अलबुसा अवलबुसा एक देवी बाद मे कृतवमा राजा के घर जन्मी। वहा मृगवती कहलाई। जमदग्नि ऋषि का आशीर्वाद पाकर पूव स्थिति को प्राप्त हुई। (स्कद, ३ १ ५)

अशना बलि की पत्नी (भा ६ १८) बाणासुर आदि सौ बलवान पुत्रो की माता। (भा १० ६३)

अशोक सुदरी कल्पवक्ष की कृपा से प्राप्त पावती की अत्यत सुदर मानस पुत्री। इसका विवाह सोमवश के राजा नहुष स हुआ था। (पद्म भू १०२ ११७)

अश्विनी सोम की विवाहित दक्ष प्रजापति की सत्ताईस स्त्रियो म स एक। सत्ताईस नक्षत्र इन्हीके नामो पर है। (म शा ६७ १६ कु)

असिक्नी प्राचेतस दक्ष की पत्नी। पचजन प्रजापति की कन्या होने से पाचजनी कहलाई।

असिता कश्यप व मुनि की एक कन्या।

असिर्पाणनी कश्यप और मुनि की कन्या।

असुरा कश्यप व प्राधा की कन्या—एक अप्सरा।

अस्ति जरासध की दो कन्याओ म बडी। प्राप्ति इसकी छोटी बहन। दोनो का विवाह कस स हुआ था। कस-वध के बाद दोनो ही मायके म रहने लगी थी। (भा १० ५०, म स १४ ३२ कु)

अहल्या पूरा नाम अहल्या मत्रेयी (श ब्रा

३ ३ ४ १८, ज ब्रा २०७९, प ब्रा १०१) पिता का नाम मुदगल। (भा ६ २१) वध्यश्व की मेनका से उत्पन्न कन्या। (ह व ३२) ब्रह्मा की मानस पुत्री (ब्रह्म ८७) अहल्या का अर्थ होता है किसी भी प्रकार के दोष से हीन ब्रह्मा की सर्वथा निर्दोष कन्या। यह गौतम की पत्नी हुई। इंद्र ने इससे छल किया। गौतम ने जब इसे जाना तो क्रोध में आकर इसे शिला रूप दे दिया। बाद में स्वयं गौतम ने अपनी त्रुटि समझकर कोटितीर्थ में इसकी मुक्ति के लिए तप किया। (वा रा बा ४८) (आ रा सार १०३ स्कंद १ २ ५२ गणेश १०३)

आ

आंगिरसी आठ वसुओं में से प्रभास की पत्नी। बृहस्पति की बहिन (भा ६ ६ १५)

आगी अपराचीन-पुत्र अरिह की पत्नी। पुत्र का नाम महाभौम (म आ ६३) अरिह को अमिताभ देवों में से एक कहा गया है।

आकूति स्वायंभुव मनु और शतरूपा की तीन कन्याओं में से एक। रुचि ऋषि की पत्नी। यज्ञ और दक्षिणा की माता (भा १ ३ १२, विष्णु ३ १ ३६)

आत्रेयी अत्रि ऋषि की कन्या। अग्निपुत्र अंगिरा की पत्नी। दत्त, दुर्वासा और सोम नामक भाइयों की बहिन। इसके पुत्र आंगिरस कहलाते हैं। पति का व्यवहार अकारण क्रूर था। सास से शिकायत करने पर उसने सलाह दी कि अंगिरस अग्निपुत्र होने के कारण अतिशय तेजस्वी है। उसे जवल रूप से स्नात करके शांत कर। तब आत्रेयी ने पुरुष्णी नदी बनकर पति को शांत किया और फिर गंगा की सहायक नदी बन गई। (ब्रह्म १४४)

आम्भृणी वाच आम्भृणी। एक सूक्त द्रष्ट्री (ऋ० १० १२५ ५ ७)

आप वरुण की पत्नी। अग्नि से इस पृथ्वी व आकाश ऐसी दो संतान प्राप्त हुई। (तै स ५ ५४)

आयति मेरु कन्या, नियति की बहन व धातृऋषि की पत्नी।

आरणि मनुकन्या च्यवन ऋषि की दो पत्नियों में से एक।

आर्द्रा सोम की सत्ताईस पत्नियों में से एक। ऊर्व ऋषि की माता। सत्ताईस नक्षत्रों में से भी एक। (म आ ६७)

आलवी कश्यप और खशा की कन्या।

आश्माकी प्राचीन्वत की पत्नी। यादव कन्या। शर्याति की माता (म आ ६३ १२ क्)

आश्लेषा सोम की सत्ताईस स्त्रियों में से एक। एक नक्षत्र।

आसुरी देवताजित की स्त्री। देवधुम्न की माता।

आहुरी पुनर्वसु राजा की कन्या व आहुक की बहिन।

इ

इडा गिरेरवसपण के बाद मनु द्वारा संतति के लिए किए गए यज्ञ के फलस्वरूप उत्पन्न कन्या। इसीने गार्हपत्य दक्षिणाग्नि और आहवनीय अग्नियों की स्थापना की (श ब्रा १ ६ ३ ७ ११, तै ब्रा १ १ ४)

इंदुमती सिंहलद्वीप के चंद्रसेन राजा की कन्या मंदोदरी। इसने 'पुरुष कपटी होते हैं' ऐसा कहकर राजा सुधन्वा से विवाह की माता द्वारा की गई योजना का अस्वीकार कर दिया था। (दे भा ५ १७ १८)

सोमवशीय आयु राजा की स्त्री (पद्म भू १०८)

इद्रसेना नल और दमयती की कन्या। (म व ५७) पाचालवशीय, ब्रहिष्ठ राजा मुदगल की पत्नी। (ऋ १० १०२ २)

इद्रस्नुषा की ऋचादृष्टी। (ऋ १० २८ १)

इद्राणी ऋग्वेद म इसकी अनेक रचनाए है। (ऋ १० ८६ २, १० १५९) पुत्र की कामना से गौरीव्रत करते ही इसे जयत नाम का पुत्र हुआ। (भवि ब्राह्म २२) अन्य नाम शचि पौलामी सूय से इसका सवाद प्रसिद्ध है। (म अनु १४ ५६ कु)

इलविला तृणबिंदु अलबुषा की कन्या (ब्रह्माण्ड ३ ८ ३९ ४२)

इला ववस्वत मनु की कन्या। (म आ ६३ ६९ ह व १ १०, ब्रह्म ७ मत्स्य ११ भा ९ १) बुध की पत्नी। पुरुरवा की माता। वायु की कन्या, उत्तानपाद ध्रुव की दूसरी स्त्री, इसका उत्कल नाम का पुत्र था। वसुदेव की स्त्रिया म से एक।

प्राचेतस दक्ष प्रजापति व आसिक्नी की कन्या। समस्त वृक्षादि इसीकी प्रजा है। (९ ६) भागवत के सिवा इसका नाम सवत्र 'इरा' मिलता है।

उ

उग्रदष्ट्री (स्वा प्रिय) मेरु की कन्या व आग्नीध्रपुत्र हरिवष की पत्नी।

उग्रपश्या एक अप्सरा (त आ २ ८)

उग्रसेना अक्रूर की पत्निया म से एक। अक्रूर पर कस बलराम और कृष्ण समान रूप से विश्वास रखते थे।

उग्रा सिंधु नामक दत्य की माता। (गणेश २ १२४)

उत्कचा, उत्कचोत्कृष्टा व उत्कटा कश्यप और खशा की कन्या।

उत्कला ऋषभदेव के वशज सम्राट नामक राजा की स्त्री, मरीचि की माता।

उत्तमा मगधदेश के राजा। देवदास की पत्नी। यमुना म स्नान करके मुक्ति पाई। (पद्म उ २१६)

उत्तरा सोम की २७ स्त्रिया म से एक। एक नक्षत्र।

विराट राजा की कन्या। अभिमन्यु की पत्नी। परीक्षित की माता।

उन्नति दक्ष और प्रसूति की कन्या। धम की पत्नी। (भा ३ १२ ५४)

उपचित्रा (मा वष्णि) वसुदेव की मदिरा से उत्पन्न कन्या।

उपदानवी मायासुर की तीन कन्याओ म सबस बडी। हिरण्याक्ष की पत्नी।

उपदेवा कृष्ण के पिता वसुदेव की पत्नी। इसके कल्प इत्यादि दस पुत्र थ।

उमा हिमालय और मना की कन्या। भगवान् रुद्र की पत्नी (पद्म सृ ९) उप निषदा म विद्या को उमा हैमवती कहा है। (ज० उ त्रा ४ २० १२)

उम्लोचा एक अप्सरा (म आ १३२ कु)

उर्मिला सीरध्वज जनक की कन्या। सीता की बहिन। लक्ष्मण की पत्नी।

उवरा एक अप्सरा (म अनु ५० कु)

उवशी ऋग्वेदकाल से प्रसिद्ध अप्सरा। ऋग्वद के दसवें मडल का उवशी पुरूरवा सवाद प्रसिद्ध है। अजुन के जन्म के समय हुए आनदोत्सव म भाग लेनेवाली ग्यारह अप्सराओ म एक (म आ सूत्र) यह सदा कुबेर की सभा म (म स १८) रहती थी। यह ब्रह्मवादिनी भी थी। (ब्रह्मा उ २ ३३)

उलूकी कश्यप और ताम्रा की कन्या। (म आ ६६)

उलूपी ऐरावत नामक नागकुल के कौरव नामक नाग की कन्या। ऐरावत के पुत्र की पत्नी। (म आ २१४ भी। ६० के) बालविधवा। अनतर अर्जुन से गांधर्व विधि से विवाह। जब पांडवों ने महाप्रस्थान किया तब उलूपी उनके साथ गई थी बाद में इसने गंगा में कूदकर देहत्याग किया। (म महा १)

उषा बलि दैत्य के पुत्र बाणासुर की कन्या। इसका विवाह अनिरुद्ध से हुआ था (पद्म उ २५०, भा १०६२ ६३ शिव रु यु ५१ ५६)

ऊ

ऊर्जस्वती प्रियव्रत व बर्हिष्मती की कन्या। शुक्र की पत्नी (भा ५ १ २४)

ऊर्जा दक्ष की कन्या। स्वायंभुव मन्वतर के वसिष्ठ की पत्नी। इसके ७ पुत्र चित्रकेतु, सुरोचि विरजामित्र उल्वण वसुभृत यान और द्युमान थे (भा ४ १ ३८) कहीं वहीं अन्य बिलकुल ही भिन्न आठ पुडरिका रक्षस (राभ) गत ऊर्ध्वबाहु सवन पवन सुतपस और शकु नामक पुत्रों का उल्लेख मिलता है। (ब्रह्मांड २ १२ ३६ ४३)

ऊर्णा स्वायंभुव मन्वतर में मरीचिप्रजापति की स्त्री। २ चित्ररथ राजा की पत्नी सम्राट नामक राजा की माता (भा ५ १५ १४)

ऊर्वशी देखिए, उर्वशी।

ऋ

ऋक्षा अजमीढ की स्त्री। कुरु के पिता सवरण की माता। (म आ ६३ ६५) सवरण ने वसिष्ठ की सहायता से पाचाल राजा से बदला लिया और फिर वसिष्ठ ने तपती से इसका विवाह करा दिया। (म आ १७१ ७४)

ऋची आप्नवान की पत्नी (ब्रह्मांड ३ १ ७४)

ऋद्धि वैश्रवण (कुबेर) की पत्नी। कुबेर का रूप राक्षसों जैसा और बल असुरों जैसा कहा गया है। (ब्रह्मांड ३ ८ ४० ४४)

ऋषिकुल्या ऋषभ देववंशीय भूम की दो स्त्रियों में से एक। उद्गीथ इसका पुत्र था।

ए

एकपर्णा हिमवान व मना से हुई तीन कन्याओं में से दूसरी। अपर्णा और पर्णा अन्य बहनें। असितमुनि की पत्नी देवल की माता। (ब्रह्मांड ३ ८ २६ ३३ १०, १ २१ ह व १ १८)

एकपाटला कदाचित एकपर्णा का नामांतर इसके शंख और लिखित दो अयोनिज पुत्र कहे गये हैं।

एकपादा सीता के सरक्षण के लिए रखी गई राक्षसियों में से एक (म व २८०)

एकलोचना सीता के सरक्षण में रखी गई राक्षसियों में से एक (म व २८०)

एकांगी एक ग्वालिन जिसे गौव्रत रखने के फलस्वरूप ऐश्वर्य मिला। (स्कद २ ४ ६)

एकादशी विष्णु की देवमाया से निर्मित शक्ति तालजघ के पुत्र मुर दैत्य को मारा। तब विष्णु ने इसे सर्वपापनाशिनी एकादशी का नाम दिया।

एकानंगा यशोदा की कन्या कृष्ण की बहिन।

एकानका अंगिरस की कन्या दूसरा नाम कुहू (म व २२१)

एकावली एकवीर नामक राजा की स्त्री। रम्य राजा तथा रत्नमरग्रा की कन्या।

ऐ

ऐक्ष्वाकी (सा) भूमन्युपुत्र सुहोत्र की स्त्री। इसे सुहोत्र से अजमीढ सुमीढ और पुरुमीढ नामक पुत्र हुए (म आ ९४)

ओ

ओघवती प्रतीक की कन्या। सुदर्शन की पत्नी। (भा ९ २)

२ (मू नग) ओघवत राजा की कन्या आघरथ की बहन (म अनु २)

क

कंसवती उग्रसेन की कन्या। कंस की बहन। वसुदेव के भाई देवश्रव्य की पत्नी। सुवीर और इषुमान की माता। (भा ९-२४)

कंसा उग्रसेन की कन्या। वसुदेव के भाई स्वभाग की पत्नी। (भा ९ २४) चित्रकेतु बृहद्ध और उद्धव की माता।

कंसारी याज्ञवल्क्य की बहन। बृहस्पति के शाप से इसे अपने भाई से पिप्पलाद पुत्र हुआ। (स्कंद ५ ३ ४२)

पिप्पलाद ने साम से समस्त विद्या प्राप्त की थी।

ककुभ धर्म मुनि की अरुंधती नामक पत्नी का दूसरा नाम। यह दक्षकन्या थी। (भा ३ ६)

कंका उग्रसेन की कन्या। कंस की भगिनी। वसुदेव के भाई आनक की स्त्री।

कंकी विष्णु मतानुसार उग्रसेन की कन्या।

कंजाजना राम के पुत्र लव की स्त्री।

कद्रू कलिंग की कन्या और अक्रोधन की पत्नी। देवातिथि की माता। (म आ ६३)

कणीशा कश्यप और क्रोधा की कन्या। प्रजापति पुलह की पत्नी।

कपिला दक्ष और असिक्नी की पुत्री। कश्यप की पत्नी।

२ पंचशिख ऋषि की माता (नारद १ ४५)

कवधी पंचशिख मुनि की माता। (देखिए कपिला २)

कमला वल्लभभीम की पत्नी। (गणेश १ १८ ४०)

कयाधू तारक के जम्भासुर नामक सेनापति की कन्या। हिरण्यकशिपु की पत्नी। प्रह्लाद की माता। इसे नारद ने उपदेश दिया था जिसे गर्भस्थित बालक प्रह्लाद ने याद रखा (भा ६ १८ ७ ७)

करेणुमती पाण्डुपुत्र नकुल की पत्नी। शिशुपाल की कन्या।

कर्कटी हिमालय के उत्तर में रहनेवाली एक राक्षसी। इसे जन संहार का वर प्राप्त था। इसने बाद में हिंसा छोड़कर हिमालयवास किया। तब इसका नाम कंदरावती पड़ा। (यो वा ३ ६८ ८४)

कर्णिका एक अप्सरा। २ वसुदेव के भाई कंक की पत्नी। ऋतुधामन और जय की माता।

कलहा सौराष्ट्र के भिक्षु नामक ब्राह्मण की पत्नी।

कला कर्दम प्रजापति व देवहूति की ९ कन्याओं में पहिली। मारीच मुनि की पत्नी। (भा ३ ४ १)

कल्याणिनी ध्रुव नामक वसु की स्त्री।

कवषा एक मुनिपत्नी, तुर मुनि की माता।

कह्वा (सो-कुकुर) वायुमत से उग्रसेन की कन्या है।

काकी कश्यप और ताम्रा की कन्याओं में से एक।

कांचनमालिनी एक अप्सरा। प्रयाग में माघस्नान करके मुक्त हुई। (पद्म उ १२७)

कात्यायनी याज्ञवल्क्य की दो स्त्रियों में से एक (ब्र उ २ ४ १ ८ ४ १)

कांतिमती भरतपुत्र पुष्कल की पत्नी। (पद्म पा १२)

कामकटका घटोत्कच की पत्नी। इसने प्रण किया था कि जो व्यक्ति गुण बुद्धि और बल में जीतेगा उससे विवाह करूँगी। घटोत्कच ने इसे जीता। (स्कंद० १ २ ५६ ६०)

कामा देवी। इसने कामकटका को अपराजेय बना दिया था किंतु घटोत्कच ने इसको जीत लिया।

कामायनी श्रद्धा का नाम। सूक्त द्रष्टी (ऋ १० १५१)

२ कर्दम प्रजापति और देवहूति की कन्या।

३ अंगिरा ऋषि की पत्नी दक्ष प्रजापति और प्रसूति की कन्या।

४ धर्म प्रजापति की पत्नी। शुभ की माता।

६ सूर्य की पुत्री।

७ वैवस्वत मनु की पत्नी।

काम्या कर्दम प्रजापति की कन्या (म आ १३२)

कामोदा क्षीर समुद्र से उत्पन्न कामोदा रमा वरा और वारुणि नामक कन्याओं में से एक। इसके हँसने से जो आँसू गिरते थे वे कमल हो जाते थे। यही तुलसी है।

कांतिमती शुक्र की कन्या व अणुह की पत्नी।

कालका वैश्वानर दानव की कन्या। कश्यप प्रजापति की स्त्री (भा० ६६) एक मत के अनुसार मारीच नामक असुर की पत्नी। पर यह गलत है क्योंकि कश्यप का एक नाम मारीच भी है। इसके कालेय अथवा काल कंज नामक असंख्य पुत्र हुए।

काला देवों की स्तुति से प्रसन्न होकर पार्वती ने शुंभ निशुंभ का मारने को जो शक्ति पैदा की थी इसीका नाम काला था। इसने धूम्रलोचन, चंडमुंड रक्तबीज, व शुंभ और निशुंभ का वध किया। (दे भा ५ २२ ३१) इसी को काली, कालिका और कौशिकी भी कहा गया है। कश्यप की पत्नी। (देखिए काष्ठा)

कालिंदी श्रीकृष्ण की पत्नी। पूर्वजन्म में सूर्य कन्या थी। यमुना तट पर श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिए तप करने पर श्रीकृष्ण ने इसका पाणिग्रहण किया। (१० ६ १)

काली मत्स्य के पेट से उत्पन्न उपरिचर वसु राजा की कन्या। मत्स्यगंधा, योजनगंधा इसीके नामांतर। यही बाद में सत्यवती कहलाई।

२ (देखिए दुर्गा)

३ भीम की पत्नी। सर्वगत की माता। (६ २२ ३१) काशी काश्य काशयी इसके नामांतर।

काश्यपी (देखिए शिखंडिनी)

काश्या भीम की पत्नी काली का दूसरा नाम।

काष्ठा प्राचेतस दक्ष प्रजापति असिक्नी की कन्या। कश्यप की पुत्री।

कीर्तिमती शुक्राचार्य और पीवरी की कन्या। नीप अथवा अणुह राजा की स्त्री। पुत्र का नाम ब्रह्मदत्त। नामांतर कृत्वी।

कुटुम्बिनी गणपति के भक्त कामद वैश्य की पत्नी (गणेश १ ७ १२)

कुंडला मदालसा की सखी। विंध्यवान की पुत्री। पुष्करमाली की पत्नी। उसका पति शुंभ के द्वारा मारा गया था।

कुंती यदुकुलोत्पन्न राजा शूर की कन्या और वसुदेव की बहन। (म आ ६८ २९८) नामांतर पृथा।

इसका जन्म कुंतिभोज नामक नगर में हुआ। कुंतिभोज राजा की दत्तक पुत्री।

कुतिभोज ने इस अतिथि सत्कार का काम सौंपा था। यह काम इसने सदा बडी कुशलता से किया। इसने अपने सत्कार चातुर्य से दुर्वासा मुनि को प्रसन्न किया और दुर्वासा ने इसे एक मंत्र दिया, जिसके प्रभाव से यह किसी भी देवता को बुलाने म समर्थ बनी। कौतूहलवश उसने कुमारी रहते हुए ही सूर्य को बुला लिया और तब कर्ण हुआ। स्वयवर म इसने पाण्डु को वरा। (म आ १११ ११२)

कुब्जा दुर्दैव से बाल्यावस्था मे ही विधवा हो गई। पर पुण्यकर्मों के कारण यह साठ वर्ष तक जीवित रही। नियम से प्रति वर्ष माघस्नान करती थी। इसे वैकुठ लाभ मिला। बाद म सुदोपसुद का वध करने के लिए तिलोत्तमा के रूप म अवतरित हुई। (पद्म उ १२६)

२ कस की दासी शरीर म तीन स्थान पर वक्र थी। कृष्ण की कृपा से यह विकृति ठीक हुई।

३ कैकेयी की दासी मथरा का दूसरा नाम।

कुमारी एक अप्सरा। पुरूरवा ने केशी नामक दैत्य को मारकर इसे उसके बधन से मुक्त किया था।

२ जयत की पत्नी (भवि प्रति ३ २५) (देखिए चित्रलेखा)

कुमुद्वती राम के पुत्र कुश की पत्नी। अतिथि की माता (आ रा विवाह ४)

कुभीनसी बलि दैत्य की कन्या। बाणासुर की बहन। (मत्स्य १८६)

२ सुमाली और केतुमती की कन्या। रावण की मा कैकसी की बहन।

३ माल्यवान की कन्या अनला की विश्वावसु से उत्पन्न कन्या। लवणासुर की माता।

४ पुष्पोत्कटा और विश्रवा ऋषि की कन्या।

५ चित्ररथ नामक गधर्व की पत्नी।

६ अगारपर्ण गधर्व की पत्नी।

कुदला हसध्वज की कन्या और सुधन्वा की बहन।

कुसुमामोदिनी पार्वती की मा की सखी (पद्म स ४४)

पार्वती के मदराचल पर तप करते समय इसके प्रताप म वहा किसीका भी प्रवेश असभाव्य बन गया था। (पद्म सृ ४८)

कुहू अगिरा और श्रद्धा की चार कन्याओं म से सबसे छोटी।

२ धाता नामक आदित्य की पत्नी।

३ मायासुर की तीन कन्याओ म से एक।

कृत्तिका प्राचेतस दक्ष की सोम को दी हुई २७ कन्याओ म से एक। एक नक्षत्र भी।

२ अग्निनाम वसु की पत्नी। स्कद की माता (भा ६ ६ मत्स्य ५ २७)

कृत्वी कृष्णद्वैपायन पुत्र शुक की कन्या। कीर्तिमती इसीका दूसरा नाम। अजमीढ कुलोत्पन्न नीप अथवा अणुह राजा की स्त्री।

कृपी (सौ अज) विष्णु वायु और मत्स्य पुराणो के अनुसार यह सत्यधृति की कन्या थी। इसका पालन पोषण शातनु ने किया। द्रोणाचार्य की पत्नी। अश्वत्थामा की माता। (म आ १४०, विष्णु ४ २० अग्नि २७७)

केतुमती सुमाली राक्षस की पत्नी। रावण की मातामही।

केशिनी कश्यप व प्राधा की कन्याओ म से एक (म आ ६६ २० कु)

२ सगर की दो स्त्रिया म से एक। शैब्या और भानुमति नामातर। (म व १०५ १० कु) असमजस की माता।

३ (मा पु) सुहोत्र के पुत्र आजमीढ की तीन स्त्रिया म से एक। (म १०१ २० कु)

४ विश्रवा मुनि की पत्नी। रावण कुंभकर्ण और विभीषण की माता। कैकसी नामांतर (भा ४ १ ३७ ७ १ ८३)

५ दमयंती ने चारबार इस दूती की चतुराई के बल पर नल का पता लगाया था।

६ अप्रतिम लावण्यमती एक राजकन्या जिसने स्वयंवर में सुधन्वा और प्रह्लाद पुत्र विरोचन में कौन श्रेष्ठ है यह प्रह्लाद से ही पूछा। प्रह्लाद ने सुधन्वा को अधिक वरीय कहा। किंतु सुधन्वा ने उदारता बरती और तब केशिनी ने उसे वरा।

कैकसी सुमाली राक्षस की कन्या। विश्रवा मुनि की पत्नी। रावण कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण की माता। (वा रा उ ९, स्कंद ३ १ ४७)

कैकेयी केकय देश के अश्वपति राजा की कन्या व दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता। युद्धक्षेत्र में एक बार राजा के प्राण बचाने पर राजा ने प्रसन्न होकर तीन वर दिये। (ब्रह्म १२३)। राम के राज्याभिषेक के समय इन्हीं से उसने मंथरा की सलाह पर दो वर माग कि राम को वनवास और भरत को राजगद्दी दी जाय। भरत को जब पूरी घटना मालूम हुई तब वह मां पर अत्यंत क्रुद्ध हुए। इसने भी सच्चे हृदय से पश्चात्ताप किया। भरत ने राम को वापिस घर लाने की जो योजना बनाई थी उसे सफल बनाने की दृष्टि से यह भी कौशल्या और सुमित्रा के साथ गई थी। (वा रा ८३०५)

कोटरा बाणासुर की मां (भा १० ६३ २०)

कौशिकी। जमदग्नि की माता सत्यवती। नदी में रूपांतरित होने पर यह नाम पड़ा। (वा रा बा २४ म आ २३५)

कौसला कृष्णपत्नी सत्या का दूसरा नाम।

कौशल्या कोशल देश के भानुमान राजा की कन्या और दशरथ की पटरानी। (वा रा अयो ३१ २२ २०) रामचंद्र की माता। राम के राज्याभिषेक का समाचार इसे राम द्वारा ही मिला। कैकेयी का वचन स्वयं दशरथ गए थे। (वा रा अयो ७३ १०) कैकेयी और उसके परिवार द्वारा बार-बार इसका अपमान होता था। (वा रा २० ३९)। यह स्वभाव से मधुर थी। सुनना में कम मिलने पर भी प्रसन्न रहती थी। राम को स्वभाव के शील शांति स्थिरता आदि गुण माता से मिले थे।

२ काशिराज की कन्या अम्बिका का नामांतर।

३ कृष्ण के पिता वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

क्रिया स्वायंभुव मन्वंतर में दक्ष प्रजापति की कन्या। धर्ममुनि की पत्नी। (म आ ६७ १४ के) योग इसका पुत्र है। साठ हजार बालखिल्य ऋषियों की माता।

३ कर्दम मुनि की नौ कन्याओं में से एक। क्रतु की पत्नी।

४ द्वादशादित्यों में से अंशुमान आदित्य की पत्नी।

क्रोधा यह दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की स्त्री थी। इसका एक नाम क्रोध वशा भी था। इस नाम के कारण इसके पुत्र क्रोधवश कहलाए। (म आ ६६ कु)

क्रौंची कश्यप और ताम्रा की कन्या।

क्ष

क्षमा दक्षकन्या व पुलह की पत्नी वास्तुशास्त्र ब्रह्मधान की कन्या।

क्षमा एक अप्सरा। कश्यप और मुनि की कन्या।



खसा प्रचेतस दक्षप्रजापति व असिक्नी की कन्या। कश्यप प्रजापति की पत्नी।

ख्याति कर्दम और देवहूती की कन्या। भृगु की पत्नी।

ग

गंगा एक स्वर्गस्थ देवता जह्नु अथवा भगीरथ के कारण जाह्नवी भागीरथी आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। अपने आठवें पुत्र भीष्म के साथ यह अंत में स्वर्ग गई। शांतनु को पिंडदान देने में गंगा ने भीष्म की सहायता की थी। (म अनु ८४) परशुराम से युद्ध करते समय भीष्म के रथ का सारथी गिर गया तब इसने घोड़ों को वश में करके भीष्म का रक्षण किया। (म उ १८२) गंगा ने प्राचीमाधव नामक विष्णु से पूछा—मुझमें पापी स्नान करते हैं उनके पाप मुझमें छूट जाते हैं। इन पापों से मेरी मुक्ति कैसे होगी। इसपर विष्णु ने इसे पूर्ववाहिनी सरस्वती में रोज स्नान करने की सलाह दी। यह स्नान इसके लिए असाध्य होने के कारण यह त्रिस्पृशा का उपवास करती थी। जिस तिथि को एकादशी द्वादशी और त्रयोदशी एक साथ स्पर्श करें उसे त्रिस्पृशा कहते हैं। इसी उपवास से उसकी पापमुक्ति हुई। (पद्म उ ३४)

गजमुक्ता अथवा गजमुक्तिका गजसेन की कन्या, युधिष्ठिर के अंशभूत बलखानि की स्त्री। इसे गजमुक्ता ने स्वयंवर में चुना था। सामंतपुत्र रक्तबीज या मुंड में युद्ध में मारे जाने पर गजमुक्ता सती हुई। (भवि प्रति ४ २५)

गंधर्वसेना कैलास के स्वयंप्रभा नगर के धनवाहन नामक गंधर्व की लड़की। सोमवार का व्रत रखने से कुष्ठमुक्त हुई। (स्कंद ७ १ २४ २५)

गंधवती सत्यवती का नामांतर (म आ ६४ कु)

गभस्तिनी लोपामुद्रा की बहिन व अगस्त्य मुनि की पत्नी (ब्रह्म ११० ७) इसे नातिपथी भी कहते हैं। (ब्रह्म ११० ६१)

गयंती मनु के पुत्र गय की पत्नी (भा ५ १५)

गांदिनी काशिराज की कन्या। अनेक वर्ष गर्भ में रही। गोदान करने पर जन्म हुआ। यदुवंश में विवाहित अक्रूर इत्यादि इसीके पुत्र थे। (वायु २ ३४ ९ व ३४)

गांधारी गांधार देशाधिपति सुबल राजा की कन्या (म आ ६३ ५८ कु) इसे रुद्र से १०० पुत्रों की प्राप्ति का वर मिला था। धृतराष्ट्र की पत्नी। (म आ ११६ १० कु) पति के अंधत्व के कारण अपनी आंखों पर सदा पट्टी बांधकर रखी। (म आ ११२ कु)। इसके दुर्योधन इत्यादि सौ कौरव और एक दु शला ऐसी एक सौ एक संतान हुई।

महाभारत के बाद पुत्र शोक से संतप्त गांधारी को व्यास ने सांत्वना दी और गांधारी ने द्रौपदी और कुंती को। (म स्त्री १५ १७) युद्ध के बाद यह पति-सहित पांडवों के साथ रहने लगी। भीम का व्यवहार इसके लिए उद्दण्ड था। इससे त्रस्त होकर यह विदुर और अपने पति के साथ वन में जाकर रहने लगी। वहीं इसने देहत्याग किया। (भा १ १३ २७, ६ २२, २६ म आश्र १७ ३६ कु०)

गायत्री पहले चाक्षुष मन्वन्तर में ब्रह्मदेव ने यज्ञ किया। उसमें शंकर विष्णु इत्यादि देव तथा भृगु इत्यादि मुनि आये। यज्ञदेवों

ने ब्रह्मदेव की स्वरा नामक पत्नी को बुलाया। वह किसी काम में लगी थी, उसके न आने पर देवताओं ने गायत्री को बुलाया। काम निपट जाने पर स्वरा जब वहां आई, तो अपने स्थान पर गायत्री को बैठा देख उसने सबको जड़ हो जाने का शाप दिया। गायत्री ने भी स्वरा को वही शाप दिया। इसपर देवताओं ने जड़ का अर्थ बदलकर जल कर दिया और प्रत्येक नदी देवता होगी, ऐसा निश्चय किया। (पद्म स १७) गायत्री मंत्र और गायत्री छंद की प्रशंसा ब्राह्मण उपनिषद् व महाभारत में है। (शा छा उ ३ १२ १)

सूर्यमंत्र होने के कारण इसे सावित्री भी कहते हैं।

गार्गी वाचक्नवी वचक्नु मुनि की कन्या होने के कारण इसे गार्गी वाचक्नवी कहते हैं। यह ब्रह्मनिष्ठ थी और इसीलिए परमहंस कोटि की थी। देवराति जनक की सभा में याज्ञवल्क्य से इसका विवाद हुआ था। ऋग्वेद के ब्रह्मयज्ञांग तर्पण में इसका उल्लेख है। (बृ उ ३ ६ १ ८ १ आश्व गृ ३ ४ ४ शां गृ ४ १०, अथर्व परि ४३ ४ २३)

गिरिका कोलाहल पर्वत और शक्तिमती नदी के संयोग से इसकी उत्पत्ति हुई। शक्तिमती नदी ने यह कन्या उपरिचरवसुराजा को दी। यह बृहद्रथ आदि छः पुत्रों तथा मत्स्यगंधिनी नामक कन्या की मां थी। (म आ ६४)

गिरिजा भगवान शंकर की पत्नी, तारकासुर के वध के लिए शंकर ने गिरिजा से विवाह किया। (भक्ति प्रति ४ १४ देखिए दुर्गा)

गुणकेशी इंद्र के सारथि मातलि व उसकी स्त्री सुधर्मा की कन्या। इसने चिकुर नाग के पुत्र सुमुख से विवाह की इच्छा प्रकट की। पिता ने गरुड़ के भय को सोचकर इंद्र से अमृत प्राप्त करके सुमुख को पिलाया और विष्णु ने भी गरुड़ से कहकर उनका वैर भाव समाप्त करा दिया। तब सुमुख से इसका विवाह हुआ। (म उ ९७ १०५)

गुणवती सिंहलद्वीप के चंद्रसेन राजा की पत्नी।

२ निम्न के पुत्र सत्राजित की कन्या जो आगे सत्यभामा हुई। (पद्म उ ८८)

गृध्रिका कश्यप और ताम्रा की कन्या।

२ अरुण की पत्नी। सम्पाति व जटायु की माता। (ब्रह्माण्ड ३ ७ ४४६)

गो मानस की कन्या।

२ ब्रह्मदत्त राजा की पत्नी व देव ऋषि की कन्या।

३ सरस्वती शमीक ऋषि की पत्नी।

गोधा मंत्रदृष्टा (ऋ १० १३४ ६ ७)

गोपाली गार्ग्य की पत्नी। कालयवन की माता। कालयवन को उसके पिता ने यादवों का नाश करने के लिए शंकर की तपस्या करके पाया था। (ह व २ ५२, विष्णु ५ २३)

गौतमी अश्वत्थामा की माता (भा १७ ४७)

२ एक ब्राह्मण-स्त्री जिसने अपने पुत्र को मार डालनेवाले सर्प को भूतदया के कारण छोड़ दिया था।

गौरी मत्स्य पुराण के अनुसार अंतिना की कन्या। प्रतिरथ और सुबाहु की बहिन। मांधाता की माता।

२ (देखिए दुर्गा)

ग्राव (दक्ष प्रजापति की कन्या। कश्यप प्रजापति की पत्नी। कश्यप प्रजापति की अन्य

पत्नियां—अदिति, अरिष्टा, इरा, कद्रू कपिला, कालका, काला।

घ

घृताची कश्यप की स्त्री प्राधा से हुई अप्सराओं में से एक। (म आ १८० कु) यह प्रति माघ मास में सूर्य के साथ घूमती है। (भा १२ ११ ३९) व्यास से शुक्र की माता (म आ ५ ६ कु)

घोषा कक्षीवान की कन्या (ऋ १० ३९ ४०) कुष्ठ रोग होने के कारण अविवाहित अवस्था में पिता के यहां रहना पड रहा था। अश्विनीकुमारों की कृपा से रोगमुक्त हुई। (ऋ १० ३९ ३ ४०) शत्रु को पराजित करने के लिए इसकी प्रार्थना की जाती है। (ऋ १० ४० ५)

च

चचला एक वैश्या। विष्णु के मन्दिर में इसने सहज ही अंगुली को चूने में भिगोकर दीवार पर छाप लगा दी इसी कारण मुक्त होकर वैकुंठ गई। (पदम उ ६)

चडिका देखिए दुर्गा।

चंडी उद्दालक की पत्नी (ज अ १६) बाद में कौसल्या होकर जन्मी (पदम उ १०६ ७)

चंडोदरी अशोक वन की एक राक्षस स्त्री। (वा रा सु ८)

चन्द्रकला सुबाहु की स्त्री (पद्म क्रि ५)

चन्द्रकांत पूर्वजन्म में वेश्या बाद में अपने पुण्य के प्रताप से बाण-कन्या उषा के रूप में जन्मी। तब अनिरुद्ध से विवाह हुआ। (भवि प्रति ३ २२)

चन्द्ररूपा रामतरस्वरूप में प्रजापति नामक राजा की भार्या। इसने त्रिरात्र तुलसी-व्रत किया था। (पदम उ ५५)

चन्द्रा वृषपर्व दानव की कन्या। शर्मिष्ठा की भगिनी।

चन्द्रावती (एति) अनगपाल राजा की कन्या। पुत्र जयचद की माता। (भवि प्रति ३ ६)

चन्द्रावली कृष्ण की प्रिय पत्नी। (पदम पा ७०)

चन्द्रिका सुप्रभ गन्धर्व की कन्या (पदम उ १२८)

चम्पकमालिनी कौतलक देश के राजा की कन्या। चन्द्रहास की पत्नी।

२ कुश की नौ कन्याओं में से एक।

चपा राक्षसी चन्द्रसेना का नामान्तर।

चर्पणी वरुण नामक नवम आदित्य की कन्या। भृगु की माता। (भा ६ १८ ४)

चारुलेखा एक अप्सरा (म स १० ११ कु)

चारुमती रुक्मणी और कृष्ण की कन्या। प्रद्युम्न आदि की बहिन। कृतवर्मा के पुत्र बालि की पत्नी। (म उ १५८, भा १० ५४ ह व० २ ६० विष्णु ५ २६ पद्म ३ २४७ २४९)

चारुहासिनी कोडिन्यपुर के रुक्मांगद के पिता भीम की पत्नी (गणेश १ १९ ७)

चित्रगंधा गोकुल की एक गोपी। इसका जन्म जाबालि द्वारा श्रीकृष्ण की उपासना करने पर प्रचण्ड नामक गोप के घर हुआ। (पद्म पा ७२)

चित्ररेखा कृष्ण की प्रिय गोपी। (पदम पा ७७)

२ बाणासुर के कुम्भाड नामक प्रधान की पुत्री चित्रकला में प्रवीणा, उषा की सखी। यह अपने योग सामर्थ्य से अनिरुद्ध को सुप्तावस्था में उषा के कक्ष में उठा लाई थी। (भा म ६२ १८)

चित्रलेखा केशी दैत्य के कारावास में

वन्दिनी अप्सरा जिसे पुरूरवा ने केशी को मारकर मुक्त किया।

वाल्मीक राजा की कन्या। (भवि प्रति ३०२३)

चित्रवती वसु की पत्नी।

चित्रसेना एक अप्सरा, जो कश्यप व प्राधा से हुई थी।

चित्रा (सा वसु) वायुपुराण के मत से वसुदेव और मदिरा की कन्या।

२ सेन की एक पत्नी नगल भी।

३ कुशल वास्तुकर्त्री चित्रगुप्त की पत्नी। (भवि प्रति ४ १८)

चित्राकुमारी (सो वसु) वायुपुराण के मत से पौरवी से उत्पन्न वसुदेव की पुत्री।

चित्रांगदा चित्रवाहन राजा की कन्या व अर्जुन की भार्या। बभ्रुवाहन की माता। यह पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में हस्तिनापुर गई थी (म आपव ८६ ६ कु) पाण्डवों के महाप्रस्थान के समय पिता के घर चली आई थी।

चित्रिणी काममन राजा की कन्या। सूय की तपस्या के फलस्वरूप मायावती के काय विद्या और कामिनीप्रिय ब्राह्मण मित्र शर्मा से इसका विवाह हुआ था। (भवि प्रति ४ ७)

चूडाला शिखीध्वज राजा की भार्या। यह आत्मनिष्ठ थी। राज्य छोडकर जंगल में गए पति को आत्मज्ञान का माग दिखाकर फिर से राजकाज में लगाया। (यो वा ७ १११)

चला ज्यामघ राजा की भार्या। शिवि राजा की कन्या। शैब्या भी कहलाती है।

छ

छाया त्वष्टा की कन्या सूय की पत्नी संज्ञा को सूय का तेज सहन नहीं होता था। इसी लिए उसने अपनी प्रतिच्छाया की तरह यह स्त्री उत्पन्न की और इसे अपने पति और बच्चों की सेवा में रखा। (हृ व० १ ६)

ज

जटिला गौतम के वंश में उत्पन्न सप्तर्षियों की पत्नी। (म अ २११ १८ कु)

जतुधाना सुरसा और कश्यप के पुत्र यातुधान की माता।

जबाला सत्यकाम जाबालि की माता। (छा० ३ ४ ४ ६)

जयंती यज्ञ नामक इन्द्र की कन्या ऋषभ देव की पत्नी भरत आदि सौ पुत्रों की माता (भा ५ ४ ८)

जया कृशाश्वप्रजापति की कन्या। पार्वती की दासी (स्कंद १ ३ २ १८)

एक मत के अनुसार पार्वती की सखी (वामन ४)

जरत्कारु पितरों की मुक्ति के लिए जरत्कारु ऋषि ने अपने ही नाम की इस कन्या से विवाह किया। यह वासुकी की बहिन थी। गर्भवती होने पर जरत्कारु ऋषि ने इसे त्याग दिया था।

जरद गौरी आस्तिक की माता। नामान्तर जरत्कारु।

जरा जरासंध की उपमाता (म वो १८१) यह जरासंध और बलराम युद्ध के समय उनके शस्त्रों की चपेट में पडकर हत हुई।

जलधरा काशिराज की कन्या। भीमसेन की पत्नी। शर्वत्रात की माता। (म आ ६३ ७६ कु)

जलापा ब्रह्मवादिनी। यह मानवी थी (ब्रह्माड २ ३३ १८)

जानपदी जालपदी अथवा जानुपदी का

नामान्तर। कृप और कृपा की माता। (म आ १४० कु)

जाम्बवती ऋक्षराज जाम्बवत की कन्या श्रीकृष्ण की अष्टनायिकाओं में से एक। (म स ५७ २३ कु) इसने अग्नि प्रवेश करके देहत्याग किया था।

जानमती म्लेच्छ राजा वादन की कन्या व यशानदी नामक राजा की स्त्री। प्रसिद्ध नागपूजक वाहिन्य की माता। (भवि प्रति ४ २३)

जालवती देवकन्या कृप और कृपा की माता। (म आ १४० ६ कु)

जितवती उशीनर की कन्या द्यौ नामक वसु की पत्नी।

जीवती परगु नामक वैश्य की स्त्री। तरुणावस्था में ही विधवा और फिर वेश्या हो गई थी। अपने तोते को रामनाम रटवाती थी। इसलिए वैकुंठ मिला। (पद्म कि १५)

जुहू बृहस्पति की स्त्री (ऋ १० १०९)

ज्योत्स्ना सोम की कन्या व वरुणपुत्र पुष्कर की पत्नी। (म उ ९८ १३ कु)

ज्वलना तक्षक की कन्या व सोमवश के ऋचेयु की पत्नी। (म आ ६३ २५ कु)

ज्वलन्ती तक्षक की कन्या व ताम्रा की पत्नी। अत्यनार की माता। (म आ ६३ २५ कु)

ज्वाला नीलध्वज की पत्नी। नीलध्वज ने अर्जुन का घोड़ा लौटा दिया था। इसे यह बात पसद नहीं आई। इसने नीलध्वज को अर्जुन से लड़ने के लिए बहुत उकसाया पर नीलध्वज नहीं माना। वह अंत में गगा का उकसाकर अर्जुन को शाप दिलाकर ही शांत हुई। (ज उ ब्रा ८ १६१)

त

तपती सावित्री की बहिन विवस्वान सूर्य और छाया की कन्या। सवरण ने इससे विवाह का प्रस्ताव किया। तपती ने पिता की अनुकूलता आवश्यक मानी। सवरण ने सूर्य के प्रसन्न होने पर इससे विवाह किया। (म आ ६३ ४१ कु भा ९ २२ ८ ६ ६ २१)

ताटका सुकेतु नाम के यक्ष की कन्या, इसमें इच्छानुसार रूप बदलने की शक्ति थी। इसके शरीर में हजार हाथियों का बल था। जम्भपुत्र सुद की पत्नी। मारीच व सुबाहु की माता। यज्ञों का विध्वस करने के कारण विश्वामित्र के आदेश से राम ने इसका वध किया। (वा रा बा २५ २६)

ताड़का ताटका का नामान्तर।

तामरसा अभिमुनि की पत्नी (ब्रह्माड ३८ ७४ ८७)

ताम्रा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या। कश्यप की पत्नियों में से एक। अरुणा काकी, क्रौंची गृध्रिका धृतराष्ट्री, भासी शुकी शुची श्येनी सुग्रीवा तथा गाय और भस इसकी सन्तान कही गई हैं।

२ वसुदेव की पत्नियों में से एक, सहदेव की माता।

तारा बृहस्पति की दो पत्नियों में से दूसरी। इसे सोम भगाकर ले गए थे। ऋग्वेद में इस कथा का अस्पष्टता से उल्लेख है। (ऋग्वेद १० १०९) सोम से इसे पुत्र रूप में लड़का बुध की प्राप्ति हुई। (ऋ १० १०९)

सुषेण की कन्या, वालि की पत्नी। अगद की माता (वा रा कि २२ १३) सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी। (देखिए,

तारामति)

तारामती मत्स्य देश के राजा की कन्या। अयोध्यापति हरिश्चन्द्र की पत्नी है। (मार्क ७ ६) रोहिताश्व की माता। (स्कन्द ७ १८ ७ २८ २७)

तारावती भागवती के सूर्यवंशी राजा ककुत्स्थ की कन्या। [illegible] चन्द्रशेखर की पत्नी। भैरव की माता। (कालि ४० ८२)

[illegible] [illegible] की कन्या। पूर्वजन्म में वसु नामक अप्सरा। दुर्वासा के शाप से नागिनी हुई। (मार्क [illegible] ३१ ८८)

तितिक्षा स्वायम्भुव मन्वन्तर के दक्ष प्रजापति की कन्या। धर्म की पत्नी। क्षेम की माता।

तिलोत्तमा कश्यप और अरिष्टा की कन्या। पूर्वजन्म में कुब्जा। सुन्दोपसुन्द इसके कारण परस्पर लड़कर मरे। (म आ २११ १२ पद्म ३ १२६)

तुलसी वृन्दा के शरीर के पसीने से उत्पन्न (पद्म ३ १८) शंखचूड नामक असुर की पतिव्रता पत्नी जिसके शाप से विष्णु शालिग्राम बने। (ब्रह्म वै २ २१) एक बार गणपति ने इसे क्रुद्ध होकर वृक्षरूप होने का शाप दिया। समुद्र मंथन के अमृत के कुछ बूंद धरती पर गिरे। इन्हीं से तुलसी का वृक्ष रूप निकला। बाद में ब्रह्मा ने इसे विष्णु को ब्याह दिया। (पद्म सृ ६१ स्कन्द २ ४ ८)

तुषिता स्वारोचिष मन्वन्तर के वेदशिरस मुनि की पत्नी। विभु की माता। (भा २ १ ५१)

तुष्टि स्वायम्भुव मन्वन्तर में दक्ष ने धर्म को जो दस कन्याएं दीं, उनमें तथा सविता और [illegible] की माता। (भा [illegible])

त्रिजटा लंका की राक्षसी। रावण द्वारा सीता-रक्षा के लिए रखी गई थी।

[illegible] अशोकवन में सीता की रक्षा के लिए रखी गई राक्षसियों में से एक।

[illegible] [illegible] की कन्या [illegible] की पत्नी। [illegible] नामक [illegible] पुत्रों की माता। (म आ [illegible])

[illegible] [illegible] की कन्या। [illegible] की पत्नी।

दक्षिणा रुचि और आकूति की कन्या। यज्ञ की पत्नी। तुषित नाम के बारह पुत्रों की माता। यज्ञ दक्षिणा का भाई है किन्तु यज्ञ विष्णु का अवतार और दक्षिणा लक्ष्मी का अवतार। इसलिए इनका विवाह हुआ। (भा ४ १ [illegible] २ ४२)

दमयन्ती विदर्भ देश के राजा भीमराज की कन्या थी। इसीलिए दमन ऋषि की कृपा से इनके पुत्र व पुत्री दमयन्ती हुई। भाइयों के नाम दम दान्त और दमन थे। दमयन्ती अपूर्व सुन्दरी थी।

इसने एक स्वर्ण हंस से नल राजा के गुणों का वर्णन सुना। उसी हंस के द्वारा अपना प्रेम निवेदन उसने नल राजा तक पहुंचवाया। उसने स्वयंवर में आये देवताओं को न चुन कर नल राजा के गले में माला डाली। नल को द्यूत में राज्य हार जाने के कारण दमयन्ती समेत एक वस्त्र में वन में जाना पड़ा। वन में भी इनपर अनेक संकट आये। उनसे ऊबकर नल इसे एक दिन सोता छोड़कर चले गये। यह वहां से किसी तरह अपने पिता के यहां आ गई। नल राजा ऋतुपर्ण के यहां बाहुक नाम रखकर सारथी हो गये। नल को पुनः बुलाने के लिए दूसरे स्वयंवर की युक्ति निकाली गई। इस दूसरे स्वयं

घर म नल राजा ऋतुपर्ण के सारथी होने के कारण आये और इनका पुनर्मिलन हो गया। (भा व ५४ ७८)

दर्वा चक्रवर्ती महामना उशीनर की पत्नी। सुव्रत की माता। (वायु – २ ३७ १७ २४ विष्णु ४ १८, मत्स्य ४८)

दशमी ब्रह्मदेव की मानस कन्या।

दशार्णा गांधारराज सुबल की कन्या व धृतराष्ट्र की पत्नी।

दाक्षायणी सती का नामान्तर।

दाता एक अप्सरा (म अ ३ ५० ४८)

दिति प्राचेतस दक्ष प्रजापति और आसिक्नी की कन्या। कश्यप की पत्नी। ऋग्वेद म तीन स्थानो पर अदिति के साथ उल्लेख है। अथर्ववेद म इसके पुत्र दैत्य गिनाये गए है। इससे लगता है यह अदिति की विरोधी शक्ति है। (ऋ ४ ६२ ८ ४ २ ११ ७ १५ १२)

दिव्या पुलोम की कन्या व भृगु की पत्नी। इसीसे भृगु (देवता) हुए। (ब्रह्माड २ ३८)

दिव्यादेवी प्लक्षद्वीप के राजा दिवोदास की कन्या। रूपदेश का चित्रसेन राजा इसके साथ विवाह के समय ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। फिर विद्वान ब्राह्मणो के कहने पर इसने रूपसेन राजा से विवाह किया, पर उसकी भी मृत्यु हो गई। इस प्रकार इसने इक्कीस बार विवाह किया, पर हर बार पति की मृत्यु हो गई। तब राजा ने मंत्रियो की सलाह से स्वयंवर किया। उसमे आये राजा आपस म ही लडकर मर गए। यह जब दिव्यादेवी को मालूम हुआ तो उसे बहुत बुरा लगा और वह जगल म चली गई। (पदम भू ८८) वहा उज्वल नामक तोते ने इसे अशून्यशयन व्रत करने को कहा—४ वर्ष यह व्रत करने पर विष्णु ने इसे दर्शन दिये और अपने साथ विष्णुलोक ले गए (पदम भू ८८) पूर्वजन्म म यह चित्रा नाम से सुवीर नामक वैश्य की पत्नी थी। (देखिए चित्रा)

दीर्घजिह्वा अशोकवन की एक राक्षसी।

दीर्घिका वीरधमन की कन्या। अत्यधिक ऊंची थी। ऊंची लड़की से विवाह करनेवाले की मृत्यु ६ महीने म होती है, ऐसा शास्त्रीय अपवाद होने के कारण इसका विवाह नही होता था। बाद म यह तप करते-करते बूढी हो गई। तब एक वृद्ध कुष्ठ रोगी इसके पास आया व उसकी इच्छा से इसने उस वृद्ध रोगी से विवाह कर लिया। शाडिली इसका ही नामांतर होना चाहिए। (स्कद ६ १३५) माण्डव्य ऋषि के शाप को इसने सूर्योदय रोक कर व्यर्थ कर दिया था। (म भा १०७ १०८)

दु शला धृतराष्ट्र की कन्या इसके दुर्योधनादिक सौ भाई थे। सिंधुराज जयद्रथ की पत्नी। (भा ६ २२) सुरथ की माता।

दुर्गा विश्वव्यापक आदि माया। यह सात्विक राजसी और तामसी वृत्तियो से युक्त है। इसीलिए इसे त्रिगुणात्मिका भी कहा जाता है। इसके रूप से प्रभाव इत्यादि को व्यक्त करते हुए इसके गौरी पार्वती उमा, काली चडी चडिका, भुवनेश्वरी, महमाया, मुक्तकेशी रौद्रा भद्रा शाकम्भरी भास्करा, चामुडा इत्यादि अनेक नाम हैं। देवताओ को सकट म मुक्त करने के लिए अनेक बार अनेक रूप म अवतार लिये।

(दे भ ७ ७, का पु ६४)

दुर्मुखी अशोकवन म सीता-सरक्षण के लिए रखी गई राक्षसियो म से एक।

दुर्वाक्षी वसुदेव के भाई वृक की पत्नी।

दूषणा ऋषभदेव के वश के भौवन राजा की

पत्नी। देवताओं में शिल्पी त्वष्टा की माता।

दृषद्वती अश्व राजा की पत्नी।

२ विश्वामित्र की पत्नी (ब्रह्म १० ६७ ह व १ २७)

३ काशी के राजा प्रथम दिवोदास की पत्नी। प्रतर्दन की माता (ब्रह्म ११ ४० ४८)

देवकी देवक की कन्या तथा वसुदेव की पत्नी। इसके विवाह के समय आकाशवाणी हुई थी कि इसके आठवें लड़के के हाथों कंस की मृत्यु होगी। इसीलिए कंस ने इसे कारागृह में वसुदेव के साथ डाल दिया। कृष्ण जन्म के समय इसने पुत्र को यशोदा के पास भेजकर उसकी रक्षा कर ली। (पद्म ब्र १३)

बलराम और कृष्ण को छोड़कर इसके बच्चे कंस ने मार दिए थे। कृष्ण के द्वारा कंस का वध हो जाने पर कृष्ण ने अपने मृत भाइयों को जीवित कर लिया। (भा ९ २४ १० ३ ४४) पूर्वजन्म में यह सुतपस की पत्नी, पृश्नि थी (भा १० ३) २ शैब्या की कन्या युधिष्ठिर की पत्नियों में से एक। यौधेय की माता। (म आ ६३ ७५ कु)

देवकुल्या मारीचि ऋषि के पुत्र की कन्या। पूर्वजन्म में कृष्ण के पादप्रक्षालन के कारण स्वधुनी बनी। (भा ४ १४) २ भागवत के मत से पूर्णिमा की कन्या।

देवयानी शुक्र की कन्या (म आ ६५) इसकी मां इन्द्र की कन्या जयंती थी। (मत्स्य ४७) बृहस्पतिपुत्र कच जीवनी विद्या ग्रहण करने शुक्राचार्य के पास आये। कच से इसकी विवाह करने की इच्छा थी पर कच ने गुरुपुत्री होने के कारण इसकी इच्छा अस्वीकृत की और इसने उसे शाप दिया कि प्राप्त विद्या तुझे फलद्रूप नहीं होगी। कच ने भी शाप दिया कि कोई ऋषिपुत्र तेरे साथ विवाह नहीं करेगा। बाद में इसका विवाह नहुषपुत्र ययाति नामक राजा से हुआ। ययाति से इसके दो पुत्र यदु और तुर्वसु हुए। (म आ ७८ ७६ ८३)

देववती ग्रामणी नामक गंधर्व की कन्या। सुकेश राक्षस की पत्नी। सुमाली और माल्यवान की माता। (वा रा ७ ५)

देववीति मेरु की नौ कन्याओं में से एक। आग्नीध्रपुत्र कुमार की पत्नी।

देववर्णिनी भरद्वाज मुनि की कन्या व विश्रवामुनि की स्त्री। वैश्रवणमुनि की माता।

देवसेना दक्ष प्रजापति की कन्या। केशी दैत्य इसका अपहरण करके ले जाना चाहता था, तब इन्द्र ने इसे छुड़वाया। बाद में इसका विवाह कार्तिकेय से हुआ। (म व २२६ १ २२६ ५२ कु)

देवहूति स्वायंभुव मनु की कन्या और कर्दम प्रजापति की पत्नी। (भा ३ १२ ५४) इसके नौ कन्या और कपिल नामक एक पुत्र था। कपिल ने इसे सांख्यशास्त्र का उपदेश किया था। (भा ३ २४ ६ ३३)

देवी एक अप्सरा।

२ प्रह्लाद पुत्र विरोचन की पत्नी (भा ६ १८ १६)

३ वरुण की पत्नी बल और सुरा की माता। (म आ ६७ ५२ कु)

दैत्यसेना दक्ष प्रजापति की कन्या। केशी दैत्य की पत्नी। (म व २२६ १ कु)

दोषा (स्वा० उत्तान) पुष्पार्ण राजा की पत्नी। इसके प्रदोष, निशीथ और व्युष्ट तीन पुत्र थे।

दोमुखी त्वष्टा की पत्नी यशोधरा का पतृक नाम। वरोचिनी और रचना नामांतर। विश्वकर्मा की माता।

द्यावापृथिवी ऋग्वेद में बार-बार इन्हें माता पिता कहा है। द्यौ पिता तथा पृथ्वी माता। ये इन्द्राग्नि देवताओं और सब प्रजाओं के माता पिता हैं।

द्रविडा वायुमत के अनुसार तृणबिन्दु की कन्या। पुलस्त्य की पत्नी इलविला की माता।

द्युति (स्वा प्रिय) नक्त की पत्नी गय की माता। (भा ५ १५ ६)

द्रौपदी सोमवंश के द्रुपद राजा की कन्या—इसमें लक्ष्मी का अंश था। यह अयोनिजा थी। यज्ञ में इसकी उत्पत्ति हुई थी। (म आ ६८ १८४) पंचपतित्व की कथा प्रसिद्ध है। (ब्रह्म व २१८)

इसके स्वयंवर में मत्स्यवेध कर अर्जुन ने इसे विवाह लिया। यह पाण्डवों की पत्नी की तरह जानी जाती है।

जुए में सब संपत्ति हार जाने पर दु शासन द्वारा इसके चीरहरण के समय श्रीकृष्ण ने इसकी लाज बचाई (म स ६० ५३) इसके बाद सारी संपत्ति हारने के कारण पाण्डवों को वनगमन करना पड़ा। द्रौपदी भी इसके साथ गई वहां दुर्वासा के शिष्यों के साथ आगमन पर अतिथि-सत्कार के संकट से भी कृष्ण ने इसे उबारा। (म व २६८ कु) पाण्डवों के अज्ञातवास का समय इसने सैरंध्री के रूप में काटा (म वि १६ कु)

अज्ञातवास काटकर आने पर दुर्योधन से राज्य का हिस्सा न मिलने पर भी युधिष्ठिर का मन युद्ध करने का नहीं था। द्रौपदी अपने अपमान को अभी तक भूल नहीं पाई थी। उसने पाण्डवों को युद्ध के लिए उत्साया व कृष्ण को भी ताना मारकर इस हेतु बुलाया (म उ ८७)

युद्ध में विजय के पश्चात् निष्कंटक राज्य सुख भोगकर बाद में महाप्रस्थान में जाते हुए यह रास्ते में गिर गई, क्योंकि यह अर्जुन को अधिक प्रेम करती थी। (म म रा २) पर कृष्ण के स्मरण से इसे स्वर्ग लाभ हुआ।

धनिष्ठा सोम की सत्ताईस पत्नियों में से एक। प्राचेतस दक्ष की कन्या। एक नक्षत्र।

ध्रुवा उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव की कन्या।

धमिल्ला अनुशाल्व राजा की स्त्री (जै अ ६१)

धारिणी अग्निष्वात्तादि पितरों की मानस कन्या। वयुना की बहन।

धर्मद्रवा ब्रह्मदेव की सात पत्नियों में से एक। यही गंगा है। इसे ब्रह्मदेव ने अपने कमंडलु में रख छोड़ा था। अपने वामनावतार से देवताओं को निर्भय करने पर ब्रह्मा ने इसे विष्णु के चरणों पर डाला। यह जाकर हेमकूट पर्वत पर गिरी तब शंकर ने अपनी जटाओं में सुरक्षित कर लिया भगीरथ के आग्रह पर ऐरावत ने अपने दांतों से हेमकूट में तीन छेद किए। उन मार्गों से प्रवाहित होने के कारण इसे त्रिधाता भी कहते हैं। (पद्म स ६२)

धर्मव्रता धर्म की धर्मवती से हुई कन्या—ब्रह्मपुत्र मारीचि की पत्नी। (अग्नि ११४) पति ने शंकालु होकर शिला हो जाने का शाप दिया यह शिला होकर गया में विष्णु की मूर्ति बनी। नामांतर देव व्रता। (अग्नि ११४)

धान्यमालिनी रावण-पत्नी। अतिकाय की माता (वा रा सु २२)

धारिणी स्वधा की कन्या। अविवाहित रही। ब्रह्मनिष्ठ। (भा ४ १ ६४)

धिषणा कृशाश्व मुनि की पत्नी।

धुंधुली आत्मदेव की पत्नी। धुंधकारी की माता (पद्म३ ६६)

धूमिनी अजमीढ राजा की पत्नी। ऋक्ष की माता (म आ १०१ २० कु)

धर्मोर्णा यम की पत्नी (म अनु २७१ ११ कु)

२ मार्कण्डेय की पत्नी (म अनु २४८ ४ कु)

धूम्रा धर्म नामक वसु की पत्नी। (म आ ६७ १६ कु)

धृतदेवा देवक राजा की कन्या। वसुदेव की पत्नी। विपृष्ट की माता। (भा ६ २४)

धृतराष्ट्री ताम्रा की पुत्री गरुड़ की पत्नी। हंसा की माता। (म आ ६७ ५८ कु)

धृति धर्म ऋषि की स्त्री।

२ मनु नामक रुद्र की पत्नी। महाधृति का नामान्तर

धेनुमती देवद्युम्न राजा की स्त्री। परमेष्ठी की माता। (भा ५ १५ ३)

ध्वजवती हरिमेध ऋषि की कन्या (मा उ ११०)

नड्वला वीरण प्रजापति की कन्या। चक्षुमनु की पत्नी। (भा ४ १३ १६)

नन्दा धर्म प्रजापति के पुत्र हर्ष की स्त्री (म आ ६७ ३३ कु)

२ कपोत नाग की कन्या (मार्क ६९)

नभस्वती विजिताश्व राजा की पत्नी। हविर्धान की माता (भा ४ २४ ५)

नर्मदा सोमप नामक पितरों की मानस कन्या। २ एक गंधर्वी (वा रा अ ४१५)

३ मांधाता की पुत्र वधू। पुरुकुत्स की पत्नी। ४ नदी। इक्ष्वाकुकुलनन्दन। दुर्योधन वरण करने की इच्छा से मनुष्य रूप ग्रहण कर उसका वरा। (म अनु २ १८ कु)

नागवीथी धर्म ऋषि की कन्या

नाग्नजिती (देखिए ५ सत्या)।

नायु दक्ष व असिक्नी की कन्या। कश्यप की पत्नी।

नारदी नारद ने एक बार कान्तारण्य के कौसुम सरोवर में स्नान किया, इससे उसका पुरुषत्व नष्ट हो गया और वह स्त्री बन गया। इस अवस्था में उसे नारदी कहा गया।

नारायणी अथवा नालायनी मुद्गल ऋषि की स्त्री। इसे इन्द्रसेना भी कहते हैं।

२ दुर्गा का नामान्तर। (मार्क ८८)

नारी मरुकन्या। आग्नीध्रपुत्र कुरु की पत्नी।

निवृत्ति सुबल की कन्या गांधारी की बहन व धृतराष्ट्र की भार्या—(म आ ११६ २३ कु)

निक्षुभी एक अप्सरा। मृत्युलोक में जन्म लेकर मिहिरगोत्र के सुजिह्व नामक धर्मपुत्र की कन्या। (भवि ब्रह्म १३९ १४०)

नियति मेरु की कन्या व स्वायंभुव मन्वंतर के विधाता की पत्नी। (भा ८ १२)

नियुत्सा राजा प्रस्ताव की पत्नी। विभु की माता।

निकृता कश्यप व खशा की कन्या।

निपावरी मन्त्रदृष्टी। नामान्तर सिकता। (ऋ ९ ८६ ११ २० ३१ ४०)

नीला कपिल व केशिनी की कन्या। (ब्रह्माण्ड ३ ७ ४७ ४६)

नलिनी अजामीढ की एक पत्नी।

नीली अजामीढ की पत्नी। २ दुष्यन्त की पत्नी। ३ परमेष्ठिन की पत्नी। (म आ १०१ २० कु)

पंचचूडा एक अप्सरा। इसका नारद के साथ स्त्री स्वभाव पर विवाद हुआ था। (म अनु ३८)

पंचजनी ऋषभदेव के पुत्र भरत की पत्नी। सुमति राष्ट्रभृत, सुदर्शन आवरण और धूम्रकेतु की माता। (भा ५ ७ १ ३)

पतगी प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या। ताक्ष्य कश्यप की पत्नी।

पथ्या मनु की कन्या—अथर्वन अगिरस की पत्नी। धर्ष्णि की माता। (ब्रह्माड ३ १ १०५)

पद्मगधा पूर्वजन्म म एक कौवी। इसकी हड्डिया गगा म गिर गई थीं। दूसरे जन्म म इन्द्र की विशेष दासी।

पद्मजा यौद्धसिंह की कन्या। जयत की पत्नी थी। (भवि प्रति ३ २६)

पद्मावती विदभ नप सत्यकेतु की कन्या। माथुर देश के मथुरा नगर क उग्रसेन राजा की पत्नी। कस की माता।

पद्मिनी विंदुगढ के राजा शारदानद की कन्या।

परिमला इद्रप्रस्थ के प्रद्योत राजा की कन्या। कच्छप राजा क पुत्र कमलापति की पत्नी। (भवि प्रति ३२६)

पर्णिनी एक अप्सरा (ब्रह्माड ३ ७ १८ २८)

पाचजनी आसिक्नी का नामान्तर।

पाचाली द्रुपदकन्या का नामातर (भा १ ७ ३८)

पारशवी देवराजा की कन्या। विदुर की पत्नी।

पार्वती हिमालय व मेना की कन्या—नारद के कहने से हिमालय ने इस शकर के साथ ब्याहा था। (स्कद १ ३ ३ १२) अशोक सुदरी इसकी मानस कन्या थी।

पिंगला अवतिनगर की एक वेश्या। २ मिथिला की वेश्या जिसवाद म विराग हुआ (भा २१ ८) भीष्म ने युधिष्ठिर को इसकी कथा सुनाइ थी। (म शा १७३ ८६ ६४ कु) ३ राम के शाप से कुब्जा और सीता के दु शाप स कृष्ण ने इसका उद्धार किया।

पितृवती इसने सूर्योपासना की। फलस्वरूप इसे सात पुत्र हुए। (भवि प्रति ४७)

पीवरी अग्निष्वात पितरो की कन्या व व्यासपुत्र शुक की पत्नी। (ब्रह्माड ३ १० ८० ८१)

पुजिकस्थला एक अप्सरा (म आ ३२ ४६) पुनर्जन्म म अजना (वा रा कि ६६)

पुजिकस्थली वशाखा म सूय के साथ रहने वाली अप्सरा। (भा १२ ११ २८)।

पुटरिका कश्यप व मुनि की कन्या, एक अप्सरा।

पुरुकुत्सानी पुरुकुत्स की पत्नी त्रसदस्यु की माता। (ऋ ४ ४२ ६)

पुलोमजा पुलोम दैत्य की कन्या। यह शिव व्रतप्रभाव से शची हुई। (स्कद ४ २ ८०)

पुलोमा ब्रह्ममानस पुत्री म स वारुणि भृगु की पत्नी। (विष्णुधर्म १ ३२ गणेश ५ २६) पौलोमी नामातर। (म आ ५ ६, विष्णु ७ ३२)

पुष्करमालिनी विदभ देश के सत्य ऋषि की पत्नी। शापभय के कारण पति की इच्छानुसार व्यवहार करती थी। यह पशु यज्ञ का मान्य नहीं करती थी। (म शा २७२)

पुष्करिणी व्युष्ट राजा की पत्नी। मवतेजस की माता।

पुष्पदती चित्रसेन गधर्व की नातिन। माल्यवान के कारण इद्र की कोपभाजन बनी। (पद्म ३ ४६)

पुष्पवती कृष्णाक्ष की पत्नी। मकरद की बहन (भवि प्रति ३ २१)

पुष्पोत्कटा सुमाली और केतुमती की कन्या (वा र उ ५ ४०)

विश्रव्य की पत्नी और रावण तथा कुभकर्ण की माता। (म व २७६ ७ १)

पुण्यान्री यारस नगर के राजा तारा की कन्या। (भवि प्रति २७)

पूतक्रता पूतक्रतु की पत्नी। (ऋ ८/६ ४)

पूतना कंस की बहन। कंस ने इसे कृष्ण का विनाश करने के लिए गोकुल में नंद के घर भिजवाया। पर योजना में इसीके प्राण गए। (म स ४२ कु भा १० ६ पद्म ब्र १३)

पूणरसा कृष्ण की प्राणसखी। (पद्म पा ७४)

पूर्वाचिति अप्सरा। अग्नीध्र की पत्नी। नौ पुत्रों को जन्म देने के बाद यह पुन मानस पिता ब्रह्मदेव के पास चली गई थी। (भा ५ २ ३ २०)

पूर्वा सोम की सत्ताईस स्त्रियों में से एक।

पूर्वाभाद्रपदा सोम की सत्ताईस स्त्रियों में से एक।

पृश्नि सविता नामक आदित्य की पत्नी।

पौरवी। युधिष्ठिर की पत्नी। (भा ९ २२ ३०)

पौरकुतसा गाधि की माता। (रेणुका ७) पौरा नाम से भी जानी जाती है।

पौलोमी उदशादित्यों में से शक्र नामक आदित्य की स्त्री। (भा ६ १८ ७)

पौदरी पुरु की पत्नी (म आ ८८ ४ कु)

प्रघसा अशोकवन में सीता सरक्षणार्थ राक्षसी।

प्रजागरा एक अप्सरा।

प्रतिरूपा अग्नीध्रपुत्र किंपुरुष की पत्नी। मेरु की कन्या। (भा ५ २ २३)

प्रतीच्या पुलस्त्य की पत्नी (म उ १७७ १६ कु)

प्रन्वेषी दीर्घतमा ऋषि की पत्नी—दीर्घतमा अंधे थे, इसीलिए यह पुनर्विवाह करना चाहती थी। त्याग तो किया पर विवाह दूसरा नहीं किया। (म आ ११२ २ कु)

प्रभाता प्रत्यूष व प्रभास की माता (म आ ६७२ कु) कहीं-कहीं पत्नी भी कही गई है।

प्रभावती स्वयंप्रभा का नामांतर २ सौवीर देव राजा की पत्नी। ३ इन्द्रध्वज राजा के पुत्र गुधन्वा की पत्नी। ४ स्वधर्मा की पत्नी की बड़ी बहिन अंग के राजा चित्ररथ की पत्नी (म अनु ७७ ८ कु) ५ वन की पत्नी। ६ वज्रनाभ की कन्या प्रद्युम्न ने इससे विवाह किया था।

प्रभा अगस्त्य के मामा वर्मा की पत्नी। इसे एक वर्ष में ही दस लड़के हुए। (भवि प्रति ३ ११)

प्रमद्वरा मेनका की विश्वावसु गंधर्व से हुई कन्या। रुरु की पत्नी।

प्रमदनी एक अप्सरा का नाम (अ व ४ ३ ७ ३)

प्रमाथिनी एक अप्सरा (म आ १२२ ४५ कु)

प्रमिला स्त्री राज्य की स्वामिनी—पांडवों के अश्वमेध के घोड़े को इसने पकड़ लिया था। युद्ध में अर्जुन इसे हरा नहीं पाया। बाद में अर्जुन ने इससे सख्यभाव स्थापित किया और इससे विवाह किया। (जै अ २१ २२)

प्रमोदा विसेन की कन्या विग्रम की पत्नी। (भवि प्रति ४ ३)

प्रमोदिनी सुसंगित नामक गंधर्व की कन्या (पद्म उ १२८)

प्रम्लोचा अप्सरा। कण्डु ऋषि की तपस्या को भंग करने इंद्र ने इसे भेजा था। (भा ४ ३० १३)

प्रशर्मा एक अप्सरा (म अनु ५० ४८ कु)

प्रसूति स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से

एक, दक्ष प्रजापति की पत्नी। (भा ३ १२ ५४, ४ १ १)

प्रातिथेयी देखिए वडवा और गभस्तिनी।

प्राधा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या कश्यप की भार्या।

प्रियंवदा राधिका की सखी (पद्म वा ७४)

प्रियवर्चा कुबेर की एक अप्सरा। इसका अर्जुन ने उद्धार किया। (स्कन्द १ २१)

प्रीति दक्ष की कन्या और पुलस्त्य की पत्नी।

प्रोवा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या, कश्यप की भार्या।

बृहन्नला देखिए, अर्जुन।

ब्रह्मधना राक्षस की पत्नी, अबुक केलि छाय धति इत्यादि नौ पुत्र थे। (ब्रह्माड ३ ७ ९८)

ब्रह्मवादिनी प्रभास नामक वसु की पत्नी।

ब्रह्महत्या शकर ने उत्पन्न करके इस भस्म के साथ रहने का आदेश दिया था। (शिव शत ८) जान पडता है यह केवल रूपक है।

ब्राह्मी गापानक देश के दलवाहन राजा की कन्या। इसकी बहन देवकी वत्सराज की पत्नी थी। (भवि प्रति ३ ९)

ब

बकी पूतना राक्षसी।

बर्हिष्मती स्वायभुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रियव्रत की पत्नी। स्वायभुव मन्वतर के प्रजापति की कन्या। (भा ५ १ २४)

बला अत्रि मुनि की पत्नी।

बहुला विदुर नामक ब्राह्मण की पत्नी थी। पति वेश्यागामी था। उसकी मृत्यु के बाद गोकर्ण स्थान पर पुराण श्रवण करके उसे पापमुक्त किया। (स्कन्द ३ ३ २२)

बालाग्नि कण्व ऋषि की कन्या (पद्म उ १५२)

बाहुका परीक्षित की पत्नी।

बाह्यका सात्वत-पुत्र भजमान की स्त्री।

बिन्दुमती मरीचि राजा की पत्नी—बिन्दुमत की माता।

बृहती देवसावर्णि मन्वतर के विष्णु की माता, देवहोत्र की पत्नी। (भा ८ १३ ३२)

बृहत्सेना दमयती की विश्वासपात्र परिचारिका। (म व ६०)

बृहदवासा सोमपुत्री, भानु नामक अग्नि की भार्या (म व २२३ ९ कु)

भ

भद्रवती पहले परीक्षित की भार्या। जनमेजय की माता। (म आ ९५ ८६ कु)

भद्रा मेरु की कन्या, प्रियव्रत के पौत्र भद्राश्व की पत्नी। (भा ५ २ २३) । २ अत्रि की पत्नी ३ कुबेर की पत्नी ४ सोम की पुत्री वरुण ने एक बार अपहरण किया ५ वसुदेव की एक पत्नी ६ धृष्टकेतु की कन्या।

भद्रावती वृषकेतु की पत्नी, भद्रा का नामातर। इसका विवाह कृष्ण से हुआ था।

भया हेति नामक राक्षस की पत्नी विद्युत्केश की माता।

भरणी प्राचेतस दक्ष की कन्या। सोम की एक पत्नी।

भरती भरत नामक अग्नि की कन्या।

भानुमती सगर की पत्नी असमजस की माता।

भासा महाभौम और सुयना के पुत्र अयुता नायी की पत्नी। अक्रोधन की माता। (म आ ९३ १९ कु)

भीमकी रुक्मणी का नामातर।

भुवना बृहस्पति की बहन व विश्वकर्मन की माता। अष्टवसुओ में से प्रभास की स्त्री।

(ब्रह्माड ३३ २१ २६)

भूता कश्यप और क्रोधा की कन्या पुलह की पत्नी।

भूमिनी अजामीढ की स्त्री।

भाजा वीरव्रत राजा की कन्या। २ आयक नाम की कन्या। ३ ज्यामघ द्वारा अपहृरित कन्या। ४ सौवीरकन्या, सात्यकी की पत्नी।

भ्रामरी एक राक्षसी (गणेश २ २१)

म

मघा दक्ष प्रजापति द्वारा सोम को दी गई सत्ताईस कन्याओं म स एक।

मगला एक देवी इसने त्रिपुर वध के समय शकर को वर दिया था।

मजुघोष्म शुक की स्त्री। (भवि प्रति ३ २६)

मणिवरा रजनाभ की स्त्री।

मत्स्यगधा एक मत्स्यकन्या कृष्णद्वैपायन व्यास की माता, सत्यवती नाम स भी इसका उल्लेख मिलता है।

मदनमजरी नीलध्वजपुत्र प्रवीर की पत्नी।

मदनसुदरी कृष्ण की प्रिय गोपी।

मदनावती कश्मीर देश के ककय राजा की कन्या।

मनोनिका मनरा की कन्या विद्रूप राक्षस की पत्नी कधर व विद्रूप का वध करके इसे पत्नी बनाया।

मदयन्ती कल्माषपाद की पत्नी अश्मक की माता।

मदालसा ऋतुध्वज राजा की पत्नी अलक राजा की माता—यह अत्यत ब्रह्मनिष्ठ थी।

मदिरा समुद्रमथन म निकली नामान्तर सुरा।

मनोरमणा अगम्य के राजा मायावमा का प्रसग म उत्पन्न कन्या वितव नामक न्य स इसका विवाह हुआ था। यह स्पष्ट जान पडता है।

मद्रा अत्रि की दस पत्निया म से एक।

मधुमती गुणाधीप राजा हरिशर्मा के पुरोहित की कन्या। इसके पिता ने एक भाई ने एक, और स्वय एक इसने तीन वर ढूढे। विवाह के समय ही इसकी मृत्यु सर्पदश से हो गई। तब एक पति इसकी हड्डिया ले गया दूसरा राख। तीसर ने लक्ष्मणपुरी के रामशर्मा से सजीवनी मन्त्र लाकर इस पुन जीवित किया। जीवन देने वाला पिता माना गया। अस्थि रखनवाला भाई और तीसरा जिसे स्वय इसने चुना था पति।

मनस्विनी चद्र की माता (मा आ ६७)

मनोभवा कश्यप और मुनि की कन्या।

मनोरमा कश्यप और प्राधा की कन्या।

मनोहरा एक देवागना (म आ ६७ २२)

मथरा विरोचन दत्य की कन्या, सारी सृष्टि के विनाश की इसकी योजना को इन्द्र ने इसका वध करके असफल किया। (वा रा बा २५) २ ककेयी की दासी। (वा रा अयो ७ ६)

मदाकिनी पुलत्स्यपुत्र विश्रवा की दो स्त्रियो म स एक का नाम। इस शकर की कृपा से कुबेर नामक पुत्र हुआ।

मदोदरी रावण की स्त्री—मयासुर और रभा अथवा मयासुर व हेमा स उत्पन्न हुई कन्या। (स्कद ५ ३ ३५)

ममता उचथ्य की स्त्री व दीघतमस् की माता।

मरुत्वती प्राचेतस दक्ष की कन्या व धर्म ऋषि की पत्नी। मरुत्वत और जयत की माता। (भा ६ ६ ४ ८ पद्म र ४०)

मर्यादा अपराचीन की पत्नी। अपराचन की

माता।

मलदा अत्रि की स्त्री (ब्रह्मांड ३ ८ ७४ ८७)

महाकाली महादेव की शक्ति। (दे भा ६ ६)

महादेवा वायुमत से देवक की कन्या।

महानदा अत्यंत शिवभक्त एक वेश्या। (शिव शत २६)

महाभागा कश्यप व खशा की पत्नी।

महामती अंगिरस की सात स्त्रियां में से एक।

महिष्मती बृहस्पति व शुभा की कन्या।

मही धृतव्रत नामक ब्राह्मण की पत्नी। वैधव्य प्राप्त होने के बाद निराश्रित होने पर वेश्या वृत्ति करने लगी। अंत में गंगास्नान से इसका उद्धार हुआ। (ब्रह्म ९२)

मांडवी कुशध्वज की कन्या, भरत की पत्नी। (वा रा बा ७३)

मातंगी कश्यप व क्रोधा की नौ कन्याओं में से एक। मातंग की माता। (म आ ६७ ६१ ६६ कु)

मातृका अर्यमा नामक आदित्य की स्त्री (भा ६६ ४२)

माद्री मद्र देश के शल्य राजा की बहन। पिता का नाम ऋतायन। (म म ८१ १४) पाण्डु राजा के लिए भीष्म ने इसे माग लिया था। (म आ ११३)

माधवी नहुष कुलोत्पन्न ययाति राजा की कन्या (म उ ११५)

मानवी यह दंडा (श ब्रा १ ८ १ २६) और पशु की पत्नी (ऋ १० ८६ २३) का पतृक नाम।

मान्यवती भीम की कन्या व करधमपुत्र अतिक्षितायी की स्त्री। उसने स्वयंवर में से इसे भगाकर विवाह किया था। (मार्क ११६ १७)

माया अधर्म और मृषा कन्या। (भा ४ ८ २) ब्रह्मदेव की सृष्टि निर्माण में गायत्री, सत्यवती ज्ञानविद्या लक्ष्मी उमा वर्णिका, धर्मद्रवा—सप्तरूपा में मन्द दी।

मायावती मदन की स्त्री रति। मदन-दहन के बाद का नाम। प्रद्युम्न की पत्नी। (भा १० ५५ १६)

मारिषा प्रचेतस की पत्नी। पुत्र प्राचेतस दक्ष। इस वृक्षकन्या मानकर वार्क्षी नाम भी दिया गया है।

मारण प्रिया कश्यप व प्राधा की कन्या।

मार्जारास्या केसरी वानर की पत्नी। (आ रा सार १३)

मालती शत्रुधाति राजा की पत्नी। २ अश्वपति की पत्नी (दखिए सावित्री)

मालावती कुशध्वज की स्त्री व वेदवती की माता।

मानिनी इस ब्राह्मणी को कुतिया के जन्म में वैशाख शुद्ध द्वादशी के दिन इसी व्रत के पुण्य में इसे मुक्ति मिली और यह उर्वशी हो गई। (स्कन्द २ ७ २४) २ विभीषण की माता का नाम ३ अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम। ४ पुष्कर और प्रम्लोचा की कन्या।

मित्रविंदा अवंतीदेशीय जयसेन व वसुदेव की भगिनी। राजाधिदेवी की कन्या। विंद व अनुविंद की बहन। (भा १० ५८)

मिश्रकेशी कश्यप और प्राधा की कन्या।

मुग्धावती विदूरथ की लड़की, कुंज भा इसे भगाकर ले गया था। (मार्क ११३)

मुदगला एक ब्रह्मवादिनी।

मुदगलानी पहले मुद्गल की पत्नी। इंद्रसेना नालायनी का नामांतर। (म व ११४ २४ कु)

मुहूर्ता प्राचेतस दक्ष की कन्या व धर्म ऋषि

की स्त्री। मुहूत नामक देव इसका पुत्र था। (भा० ६ ६ ४६)

मृगमदा कश्यप व क्रोधा की कन्या। पुलह की भार्या, पशु आदि प्राणी इसकी सतानें हैं।

मृषा अधर्म की पत्नी। दभ और माया की माता। (भा ४ ८ २)

मेधा दक्ष की कन्या धर्म की स्त्री। स्मृति की माता।

मेधाविनी कुलिंद राजा की स्त्री व चन्द्रहास की माता।

मेनका प्राधा की अप्सरा कन्याओं में से एक। ऊर्णायु गधर्व की स्त्री। इन्द्र ने विश्वामित्र के तपोभग के लिए इसे भेजा था। विश्वामित्र से इसे शकुन्तला नामक कन्या हुई।

मेरुदेवी मेरु की कन्या व आग्नीध्र पुत्र नाभि राजा की पत्नी (भा १ ३ १३ ४ २)

मैत्री स्वायभुव मन्वतर के अनुसार धर्म ऋषि को दी हुई तेरह कन्याओं में से एक। प्रसाद की माता।

मैत्रेयी याज्ञवल्क्य की दो पत्नियों में से एक ब्रह्मवादिनी। (ब उ ११ ४ ५ १)

मोहना सुग्रीव की पत्नी (पद्म पा ६७)

मोहिनी एक वेश्या (पद्म उ २२०) २ समुद्र मथन में निकले १४ रत्नों में से एक। (भा १ ३ ८)

मौर्वी कामकटका मुर दैत्य की कन्या कामन्दी से इसे अजेयता का वरदान मिला था—कृष्ण द्वारा मुर वध किए जाने पर यह कृष्ण से तीन दिन तक युद्ध करती रही अन्त में यह युद्ध कामन्दी ने रुकवाया। घटोत्कच की पत्नी। (स्कद १ २ ५६ ६०)

य

यमी या यमुना सूर्य पुत्री। (प १० १०) नामान्तर यमुना

यशोदा हविष्मत पितरों की कन्या (ह व १ १८) २ नद की पत्नी। कृष्ण की पालन कर्त्री माता। (भा १० २ ६) विश्वमहत की स्त्री (ब्रह्मांड ३ १० ९०)

यशोधरा विरोचन की कन्या होने के कारण इसे वैरोचनी यशोधरा भी कहा जाता है। त्वष्टा की पत्नी। विश्वरूप और विश्वकर्मा की पत्नी। रचना का नामान्तर। (ब्रह्मांड ३ १ ८६ ८७)

यामिनि प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या। तार्क्ष्य कश्यप की भार्या, शलभ की माता (भा ६ ६ २१)

यायी दक्ष की कन्या व धर्म की स्त्री।

योगवती मेना की तृतीय कन्या व जगीषव्य की पत्नी।

र

रक्षा ऋक्षा की बहन प्रजापति की स्त्री—जाम्बवत की माता।

रंगिता एक अप्सरा (म आ ६६ ५० कु) कश्यप और प्राधा की सन्तान।

रगवणी सारंग गोप की कन्या।

रचना एक दैत्य कन्या व त्वष्टृ प्रजापति की पत्नी।

रता एक देवस्त्री। इसके लड़के का नाम अहम्। (म आ ६७ २० कु)

रति कामदेव की स्त्री (म अ ६७ ३३ कु) इसकी उत्पत्ति प्रजापति के स्वेद से हुई। (कालि ३)

रतिकला कृष्ण की एक प्राण सखी।

रतिविग्रहा हस्तिनापुर की एक वेश्या। ब्राह्मणों को अन्नदान किया था इसीलिए वैकुंठधाम मिला।

रतिमञ्जरी कृष्ण की प्राणसखी।

रत्नकूटा अत्रि की स्त्री (ब्रह्मांड २ ७ ८ ८७)

रत्ना अक्रूर की स्त्रियां म से एक।
रत्नावलि रत्नेश्वर के सामने नृत्य किया था, इसीलिए पाताल के रत्नचूडा से इसका विवाह हुआ।
रथंतरी इलिल की पत्नी। दुष्यंत आदि ५ पुत्र थे। (म आ ६३ २९ कु)
रथराजी वसुदेव की स्त्रियां म से एक।
रंभा कश्यप व प्राधा की कन्या। इसे इन्द्र ने विश्वामित्र का तप भंग करने भेजा था, पर वह उसम सफल नही हुई। (म अनु ६ ११ कु)
रम्या मेरु की ९ कन्याओं म से पांचवीं, यह रम्यक की स्त्री थी। रसमंथरा, रसवल्लरी, रसानंदा—कृष्ण की प्राणसखियां (पद्म पा ७४)
राका भागवत मत से श्रद्धा से उत्पन्न अंगीरस की कन्या।
रागा वृहस्पति और शुभा की हुई ७ कन्याओं म म एक।
राजाधिदेवी सात्वतवंशीय शूर राजा को मारिषा स हुई ५ कन्याओं म से सबसे छोटी। यह अपत्य राजा जयसेन को दी गई थी। (भा ९ २४ ३१ १० ५८ ३१)
राज्ञी रैवत मनु की कन्या व विवस्वान आदित्य की तीन स्त्रियां म से एक। रात्रि भारद्वाजी सूक्तद्रष्ट्री (ऋ १० १२७)
राधा जब विष्णु ने कृष्ण का अवतार मृत्युलोक म लिया तब राधा को इनके कहने पर पृथ्वी पर आना पडा। वृषभानु राजा जब यज्ञस्तव भूमि शुद्ध कर रहे थे तब यह उन्हें वहां पडी मिली। राजा ने इसका अपनी कन्या के समान पालन किया (पद्म ब्र ७) राधा सृष्ट्युपकारक पांच शक्तियां म म एक है। (दे भा ९ १ नारद २ ८१)
२ (सो अनु) अधिरथ सूत की स्त्री (म आ ६७) राधिका नामांतर। राष्ट्रपाला अथवा राष्ट्रपालिका—विष्णु और मत्स्य के मत से उग्रसेन की कन्या थी। वायुपुराण म इसे राष्ट्रपाली कहा गया है। (भा ९ २४ २५ ४२)
रिपा कश्यप व क्रोध की कन्या। धर्म की स्त्री।
रुक्मवती भीष्मक पुत्र रुक्मी की कन्या (भा १० ६१ २३)
रुक्मणी विदर्भाधिपति भीष्मक अथवा हिरण्यरोमन राजा की लक्ष्मी के अंश से हुई कन्या। (म उ ५८ ह व २ ५९) नारद म कृष्ण वर्णन सुनने पर इसे कृष्ण से प्रीत हुई। कृष्ण की भी इच्छा इससे विवाह की थी। रुक्मणी का बडा भाई रुक्मी जरासंध के पक्ष का था, इसीलिए उसे यह विवाह पसंद नहीं था। वह इसका विवाह शिशुपाल से करना चाहता था। अततोगत्वा कृष्ण और रुक्मी म युद्ध हुआ। विजयी होने के बाद रुक्मणी को द्वारिका लाकर कृष्ण ने धूमधाम से विवाह किया (म उ ५८ भा १० ५४ ८३ ह व ६०)
रुमा पनस नाम के वानर की कन्या, सुग्रीव की पत्नी (ब्रह्मांड ३ ७ २२१)
रुशती यह अश्वी ने श्यावक को दी थी। (ऋ १ ११७ ८)
रूपवती त्रेतायुग की एक वेश्या इसकी और इसके प्रेमी देवदास की मुक्ति वैशाख-स्नान से हुई। (पद्म पा ९७)
रेणुका जमदग्नि की पत्नी—इक्ष्वाकुवंशीय रेणु की कन्या थी। (भा ९ १५ १२)
रोमशा कक्षीवत का आश्रयदाता, भाव्य या भावयव्य की पत्नी (ऋ १ १२६)
रोहिणी प्राचेतस दक्ष की ६० कन्याओं म से एक। सोम की सत्ताईस स्त्रियां म से एक।

ल

लक्षणा दुष्यन्त की पहली पत्नी (म आ ८८ १८ कु) इसे लाक्षी भी कहा है।

लक्ष्मणा कश्यप व मुनि की कन्या एवं अप्सरा।

लक्ष्मी दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म प्रजापति की स्त्री। (म आ ६७ १८ कु) २ *सागर से उत्पन्न विष्णु की पत्नी।* (पद्म सृ ४)

लज्जा दक्ष प्रजापति की कन्या धर्म की पत्नी।

लपिता मन्दपाल की दूसरी स्त्री (म आ २२५ १७ कु)

लवा प्राचेतस दक्ष की कन्या व धर्म की पत्नी। विद्योत की माता। (भा ६ ६ ४)

ललाटाक्षी सीता के संरक्षण में रखी गई लंका की राक्षसी।

ललिता सती का नामान्तर (पद्म सृ २६) २ कृष्ण की एक पत्नी। (पद्म पा ७४)

लयगा एक गाथा।

लावण्यवती पुण्यवाहन राजा की स्त्री (पद्म सृ २०)

लीला पद्मराजा की स्त्री थी। पति के मृत होने पर सरस्वती की कृपा से उसे पुनः प्राप्त किया।

लीलावती ध्रुवसन्धि राजा की एक स्त्री। पुत्र शत्रुजित

लोपामुद्रा मन्त्रद्रष्ट्री (ऋ १ १७९ १ २) विदर्भ राजा की कन्या इसे मन्त्रवती भी कहते हैं। (म व ९६ २८ कु) इसका विवाह अगस्त्य मुनि से हुआ था।

लोला मधु नामक राक्षस की माता। (वा रा उ ६१)

व

वशा कश्यप व प्राधा की कन्या।

वज्रज्वाला कुम्भकर्ण की स्त्री (वा रा उ १२ २४)

वडवा सूर्य की स्त्री संज्ञा, अश्विनीकुमारों की माता। (भा ६ ६ ४०)

वडवा प्रातिथेयी *ब्रह्मचर्य व्रत से रहने वाली एक ब्राह्मणी कन्या। (आश्व गृ ३ ३)*

वध्रिमती एक स्त्री का नाम—इसके पति को पुरुषत्व की प्राप्ति अश्वी की कृपा से हुई थी। (ऋ १ ११६ १३ ११७ २४)

वपुष्टमा सुवर्णवर्मा की कन्या व जनमेजय की स्त्री।

वपु एक अप्सरा (मार्क १ ४६ ५६, २ ४१)

वपुष्मती सिंधुराज की कन्या—मरुत की पत्नी (मार्क १२८)

वरवरा कश्यप व मुनि की कन्या—एक अप्सरा।

वरस्त्री बृहस्पति की बहन व प्रभासवसु की स्त्री (म आ ६७ २६ कु)

वरांगना उग्रसेन कन्या।

वरांगी वज्रांग की पत्नी (मत्स्य १४८)

वर्गा एक अप्सरा शाप के प्रभाव से मगर हो गई थी।

वलया मगध देश के देवराग ब्राह्मण की कन्या (पद्म उ २१६)

वसिष्ठा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या। कश्यप की भार्या।

वसुक्रपत्नी मन्त्रद्रष्ट्री (ऋ १० २८ १)

वसुधा मालि राक्षस की स्त्री।

वसोर्धारा अग्निवसु की पत्नी।

वाता भाग्यवान की कन्या। विधष्या की पत्नी।

वाच् अम्भृणी सूक्तदष्टी (ऋ १० १२५)
वाचक्नवी वचक्नु कन्या गार्गी का पैतृक नाम।
वासि सर्पों का पतृक नाम।
वामदेवी ऋचि ऋषि की भार्या (म आ ६३ २४ कु)
वाराहि सप्त मातृकाओ मे से एक।
वारुणी स्वायम्भुव मन्वतर के वरुण की स्त्री।
वासना अक नामक वसु की कन्या।
विकटा अशोकवन म सीता-सरक्षण के लिए रखी गई राक्षसिया म स एक।
विकटावती यह पश्चिम द्वीप म रहकर अष्ट प्रधानो की सहायता से यहा का राज्य करती थी। पति पुलोमार्चि (भवि प्रति ८ २२)
विकुठा रवत व चाक्षुष मन्वतर के वकुठ नामक अवतार की माता व शुभ्र की स्त्री।
विजया शल्यराजा की कन्या व सहदेव की भार्या। पुत्र सुहोत्र (म आ ६३ ७८ कु भा ६ २२ ३१)
वितावा मौत्य मन्वतर के वृहद्भानु की माता।
विदुला सौवीर देश के राजा की पत्नी विदुला के पुत्र का नाम सजय था। (म उ १३३ १३६)
विद्या एक बार विद्या ब्राह्मण के पास गई व उससे कहा कि मैं तेरा मूलधन हू—मुझे नष्ट करनेवाले विद्यार्थी को कभी मत सौंपो।
(वदिक मत्र सायणाचार्य ऋग्वेद प्रस्तावना)
विद्युता एक अप्सरा। (म अनु १० ६८ कु)
विद्युत्पर्णा कश्यप व प्राधा की कन्या।
विद्युत्प्रभा एक अप्सरा।
विनता प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की कन्या—अरिष्टनमी कश्यप की भार्या।
विन्ध्यावली बलि दैत्य की पत्नी।
विपाठा दुगम की पत्नी। (मार्क ७२ ४६ १)
विभावरी ब्रह्मदेव की कन्या—यही बाद म पार्वती हुई।
विमनुष्या कश्यप व मुनि की कन्या।
विरजा शुक्पुत्र ऋक्ष की स्त्री व ब्रह्मा की कन्या।
२ सुस्वधा नामक पितरो की कन्या
३ एक राक्षसी
४ कृष्ण की राधा के समान ही प्रिय स्त्री
विरोचना त्वष्ट की स्त्री व प्रह्लाद की लडकी—विरज राजा की माता (भा ५ १५ १५)
विशाखा सोम की स्त्रिया मे स एक।
विशाला वरुण की कन्या।
विश्पला खेल की पत्नी का नाम।
विश्ववारा आत्रेयी एक सूक्त दष्ट्री (ऋ ५ २८)
विश्वा प्राचेतस दक्ष प्रजापति व असिक्नी की दो कन्याओ म से एक धर्म को दूसरी कश्यप को दी गई थी।
विश्वाची प्रस्था की अप्सरा कन्या (म स १० १०)
विषया धष्टवुद्धि प्रधान की कन्या
विषूची विरज राजा की स्त्री (भा ५ १५ १५)
वीरा वीरचन्द्र की कन्या—अविच्छित की माता (मार्क ११८ २)
वीरिणी वीरण प्रजापति की कन्या व प्रचि तस दक्ष की स्त्री थी।
वकदेव या वकदेवी विष्णुमतानुसार देवक कन्या है। यह वसुदेव की स्त्री
ववादरी पूतना की बहन।
वचया वशीवत् की पत्नी।

वतस्थला एक अप्सरा।
वत्ति मनु नामक रुद्र की पत्नी। (भा ३ १२ १३)
वद्धसेना सुमति राजा की स्त्री व देवजित की माता (भा ५ १२ १५)
वद्धा आष्टिषेणपुत्र ऋतध्वज से सुश्यामा की कन्या।
वदा कालनेमि व स्वणा की कन्या (पद्म उ ४ शिवरुद्र)
वदवती कुशध्वज जनक की मालावती से हुई कन्या।
वदर्भी विदभ राजा की कन्या का नाम।
वदेही जनमेजय पुत्र शतानीक की स्त्री।
२ विदेह की कन्या सीता का नामान्तर।
वशालिनी विशाला की कन्या—इसने सर्पों को अभय दिया था। (मार्क ११६ १२६) मरत की माता।

श

शकुतला इस नाइयिनी अप्सरा कहा गया है। श ब्रा १३ ५ ४ १३)
यह मनका और विश्वामित्र की कन्या थी। इसका लालन-पालन शकुत पक्षी ने किया फिर कण्व ऋषि ने। दुष्यत से इसका गधव विवाह हुआ था। भरत की माता।
शची पुलामा की कन्या पुत्र जयत। (ब्रह्माण्ड ३ ६ २६)
सूय स सवाद हुआ था। (म अनु १४ ५ ६ कु)
शनतारका सोमा की सत्ताईस स्त्रिया म से एक।
शतरूपा स्वायभुव मनु की स्त्री। ब्रह्मदेव की कन्या। सरस्वती भी कहा है। (भा ३ १२ ५२)
शतशीशा वासुकी नाग की पत्नी।
शतहृदा जव पत्नी व विराध माता।
शबरी एक भीलनी। पपा सरोवर क पश्चिम म रहनवाले मतग मुनि और उनके शिष्यो की परिचारिका। राम लक्ष्मण का उत्तम आतिथ्य किया।
शरयु वीर नामक अग्नि की पत्नी।
शम्बटा सुवल राजा की कन्या। गाधारी की बहन व धृतराष्ट्र की पत्नी (म आ १६६ २४ कु)
शर्मिष्ठा ही वपपर्वा नामक दत्य के राजा की कन्या। ययाति की प्रिय स्त्री।
शवरी दोप वसु की पत्नी।
शलभा आन की पत्नी। (ब्रह्माड ३ ८ ७४ ८७)
शशिकला काशीराज सुबाहु की कन्या व सूयवशीय सुदशन की पत्नी।
शशीयसी तरत की पत्नी (ऋ ५ ६१ ६)
शश्वती आगिरसी—मत्रद्रष्टी (ऋ ८ १ ३४)
शाकम्भरी (देखिए दुर्गा)
शाकिनी दूब ब्राह्मण की स्त्री।
शाडिली शाडिल्य ऋषि की कन्या—इसी को स्वयप्रभा कहते है। (म भी ८ ६ कु०) प्रसिद्ध तपस्विनी हुई।
शाता यह मत्स्य व भारत क मत स दशरथ कन्या वायु व रामायण क मत स (वा रा बा ११) यह रोमपाद कन्या है। रोमपाद दशरथ का भी नामातर है।
शाति दक्ष प्रजापति की कन्या व धम की पत्नी।
२ यह देवहूति स हुई कदमकन्या व अथव की पत्नी।
शातिदेवी देवक कन्या व वसुदेव की पत्नी।
शारदा महेश्वर व्रत माहात्म्य म इसकी कथा आती है। (स्कद २ २ १८ १९)

शारद्वती द्रोणाचार्य की भार्या कृपी का नामांतर।

शार्दूली कश्यप व क्रोधा की कन्या।

शालावती विश्वामित्र की स्त्री।

शिखंडिनी विजिताश्व राजा की स्त्री।

शिखंडनी। अप्सरा काश्यपी। ये दोनों सूक्त दृष्टियां है।

शिवा अंगिरस की पत्नी। (म व २२७ १ कु)

शीततोया वरुण की पत्नी।

शुकी कश्यप व ताम्रा की कन्या।

शुचिका कश्यप व मुनि की कन्या।

शुभा बृहस्पति की तीन स्त्रियां में से एक।

शुभांगी कुरु राजा की स्त्री पुत्र विदूरथ (म आ ६३ ४२ कु)

शूद्रा अत्रि की पत्नी (ब्रह्मांड ३ ८ ७४ ८७)

शूर्पणखा या शूर्पणखी विश्वस और केकसी की कन्या। रावण, कुम्भकर्ण विभीषण की बहन। माता का नाम राका मानकर खर का इसका सगा भाई माना गया है। (म १ २ ७६ ८ कु) कालकेयाधिपति से इसका विवाह हुआ था। दण्डकारण्य में आए राम पर आसक्त हुई थी। राम ने लक्ष्मण के पास भेजा। लक्ष्मण ने भी विवाह में इन्कार कर दिया। यह खीझकर सीता पर हमला करने दौड़ी। तब लक्ष्मण ने इसके नाक-कान काट कर इसे विद्रूप कर दिया। (वा रा अर १७ १६)

शैव्या धुमसेन की स्त्री और सत्यवान की माता। (म व २६६ २ कु)

२ सुनंदा का नामांतर ३ सगर पत्नी। ४ मित्रविन्दा का नामांतर।

श्यामवाला यह द्वापर युग के भद्रश्रवा की लड़की थी। यह सौराष्ट्र की थी। लक्ष्मीव्रत का महात्म्य बताने के लिए इसकी कथा कही जाती है। (पद्म ब्र ११)

श्यामा मेरु की कन्या व हिरण्य की पत्नी।

श्येनी कश्यप व ताम्रा की कन्या समाण की माता गरुड की स्त्री थी। (ब्रह्मांड ३ ३ ४४६) वाल्मीकि रामायण में अरुण की स्त्री। तथा जटायु व संपाति की माता। (वा रा अर १४ ३३)

श्रद्धा स्वायंभुव मन्वंतर में कर्दम प्रजापति व देवहूति की कन्या। अंगिरा ऋषि की पत्नी। २ शुभ की माता। ३ सूर्य की कन्या। ४ वैवस्वत मनु की पत्नी।

श्रद्धा कामायनी सूक्तद्रष्टी (ऋ १० १५१)

श्रद्धादेवी वसुदेव की स्त्रियां में से एक।

श्री भृगु व ख्याति की कन्या भृगु ने विष्णु को दी थी। इसकी उत्पत्ति क्षीरसागर में हुई ऐसा कहा जाता है। (म आ १८ ४६ कु)

श्रीदेवा (वी) देवक कन्या। वसुदेव की पत्नी।

श्रीमती अंबरीष राजा की कन्या (देखिए दमयंती)

श्रीमाता दमन मातंगी का रूप लेकर कर्नाटक राक्षस को मारा—यह कर्नाटक राक्षस ब्राह्मण के रूप में ऋषि स्त्रियां को भगाकर ले जाता था। (स्कंद ३ २ १७ १८)

श्रुतकीर्ति कुशध्वज जनक की कन्या व दशरथ पुत्र शत्रुघ्न की स्त्री (वा रा बा ७३)

श्रुतश्रवा (वी) शूर राजा की कन्या व वसुदेव की बहन।

जिम्मेदारी अहिल्याबाई पर आ गई। २१ वर्ष का इसका लडका मालेराव गद्दी पर बैठा, पर १० महीने होते न होते उसे पागलपन के दौरे आने लगे। किसी ब्राह्मण को धोखा देने के अपराध में इसने अपने लडके को मृत्युदंड दिया। वह दन्तकथा इसकी न्यायप्रियता और निष्ठुरता के उदाहरण की तरह प्रचलित है। यह धर्मशील, विदुषी नीतिनिपुणा थी। इसके द्वारा तैयार की हुई स्त्रियों की एक सेना का उल्लेख मिलता है। यह मराठा राजाओं और पेशवाओं को समय-समय पर सैन्य सहायता देती रही।

अंबाबाई मराठी कवयित्री। कुछ ही पद मिलते हैं। (स सू)

अंबाबिका विजयनगर के तुलुव घराने के नरसिंह राव उर्फ नरसी की पत्नी। अच्युत राय और रंगराय की माता।

अंबिकादेवी पश्चिम चालुक्यों में से सत्याश्रय द्वितीय की पत्नी।

अंबिकाबाई दाभाडे शितोळे देशमुख की पुत्री। १७५२ में यशवंतराव दाभाडे से विवाहित, प्रसिद्ध उमाबाई की बहू। सास बहू की ठीक नहीं बनती थी। लडका त्र्यंबक राव। शादी के कुछ दिनों बाद यशवंतराव का देहांत हो गया। (म रि म वि पृ ३०० २१)

अंबिकाबाई भोंसले रुस्तमराव जादव की कन्या व छत्रपति शाहू की पत्नी। शाहू के कैद में रहते हुए औरंगजेब ने यह शादी १६९९ में बहुत धूमधाम से करवाई थी।

अंबाबाई महाडिक सईबाई से शिवाजी की पुत्री। हरजीराजे महाडिक से इसका विवाह हुआ था। शिवाजी ने हरजीराव को जिंजी प्रांत की जागीरदारी दी थी। (शिवाजी निबंधावली पृ २२५)

अमंगदेवी राजेंद्र चोल प्रथम की लडकी तथा युवराज प्रथम की पत्नी। राजेंद्र द्वितीय या कुलोत्तुंग चोल प्रथम की माता।

आ

आकाबाई वऱ्हाड के रुद्राजी पंत देशपांडे की कन्या रामदासस्वामी की शिष्या। बाल विधवा। गुरु की मृत्यु के ४० वर्षों बाद शक सं १६४० में मृत्यु को प्राप्त हुई। (मंडल षष्ट सम्मेलन वृत्त पृ १८६)

आनंदीबाई निंबालकर सुप्रसिद्ध महादाजी शिंदे की बहन। निजाम के सरदार रावरंभी महाराज निंबालकर की पत्नी। १७८५ में मृत्यु। (म रि उ २ पृ २२३ २४)

आनंदीबाई पेशवा राघोबा दादा उर्फ रघुनाथ राव पेशवा से १७५५ में विवाह। मराठों के इतिहास में कर्मठ स्त्री की तरह प्रसिद्ध। राघोबा राजकाज में इसकी सलाह मानता था। राघोबा की मृत्यु के बाद पुत्र बाजीराव के पेशवा बनने तक कभी नजर कैद तो कभी कैद रहा। मृत्यु १७९४।

आनंदीबाई भोंसले शाहू द्वितीय की चौथी पत्नी १७८६ में विवाह। शिर्के की पुत्री पति की मृत्यु के बाद अपने पुत्र प्रतापसिंह के नाबालिग रहने तक इसने कुशलता से राजकाज चलाया। १८२२ में मृत्यु हुई।

आनंदीबाई होल्कर यशवंतराव होल्कर की पत्नी। (म रि उ ३ पृ १८६)

आपम्मा तमिल कवि अव्वैयार की बहन। अविवाहित रही तथा नीतिपात्तल नाम का ग्रंथ लिखा। (क च)

आबन्नार बेगम अकबर की एक रानी।

आयशा अबूबाकर की कन्या थी। मोहम्मद पैगंबर की अत्यंत लाडली पत्नी थी।

आल्हणदेवी हूण कन्या। कलचुरी के राजा

रण की पत्नी। २ मेवाड के वीरसिंह की कन्या। गयकण की पत्नी। भेलघाट के शिव मंदिर म उल्लेख। पुत्र नरसिंह देव और जयसिंह दव चदि दश क राजा।

इ

इच्छनी कुमारी आबू के परमार वश के जत राजा की लडकी। भीमदव न इसस विवाह के लिए युद्ध किया था। (मु रि भा १ ला पृ ६० १६७)

इरावती मगध क शुगवशीय पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र की पत्नी। यह कालिदास के *मालविकाग्निमित्र नाटक का नायक है।*

इद्रकुमारी अजीतसिंह की लडकी। फरख की पत्नी। विवाह म धम परिवतन हुआ पर विधवा होन के बाद पुन धम परिवर्तित करके हिंदू हो गई।

ई

ईशानदेवी अशोक पुत्र जलोका की पत्नी। शव पथ को माननवाली अनेक शिवालयो का निमाण किया था। (स्मित पृ २०१)

ईश्वरा पजाब के सिंघपुर (सिंहपुर) क यादववश के भास्कर वमन की लडकी। जालधर क चद्रगुप्त स ई ७०० म विवाहित।

ईसरादेवी रघुवशी प्रतिहार नाग भट्ट की *पत्नी। रामभद्र की माता।*

ईष्टाशवल्लभी चोल राजा कुलातुग की द्वितीयपत्नी।

उ

उन्यमती अनहिलवाड क सोलकी राजा प्रथम भीमन्व की पत्नी थी। १०४५ म रानी की बावडी बनवाइ।

उपकोशा वररुचि नामक कवि की पत्नी। यह भी सुप्रसिद्ध कवियित्री थी।

उदयपुरी बगम औरगजब की एक पत्नी। कदाचित उदयपुर क सीसोदिया घरान स सम्बद्ध। कामबख्श की माता। १७०७ म मत्यु।

उमान्वी कूपक वश की कन्या। यदुवश के राजा जयसिंह की पत्नी। पति क साथ केरल राज्य की दख रख करती थी।

उमाबाई रामदास क प्रथम शिष्य उद्धव गोसाइ की माता।

उमाबाई दाभाडे खडराव दाभाड की पत्नी। *युद्ध नीति म अत्यत कुशल थी। १७५३ म* मृत्यु (वाटसन हिस्ट्री आफ गुजरात)

उमाबाई भासले फलटन क निंबालकर मालोजी नाइक द्वितीय की लडकी व मालोजी भासले की पत्नी। शहाजी और शरीफजी की माता।

उमाबाई होल्कर मल्हारराव होल्कर की पत्नी। १८१५ म अमीर खा क द्वारा मारी गई। (म रि उ वि ३पृ ४३८)

ऊ

ऊधमबाइ मुहम्मदशाह से विवाह हुआ था। १७४८ म इसका पुत्र अहमदशाह गद्दी पर बठा।

क

कनकाई तुकाराम महाराज की माता बाल्होबा की पत्नी।

कनकावती बनवासी के कदम्ब वश क मयूर वमा की लडकी। दक्षिण तुलुव क प्रतिनिधि चद्रमन क पुत्र लोकादित्य की पत्नी

कनखलिपा (योगिनी) चौरासी सिद्धो म इस स्त्री का सत्तरवी माना गया है।

कल्पना की शिष्या सनातनवगवय सुत्रा गम ग्रंथ की रचना की।

कमलादेवी कदव परमादि कदव की पुत्री। कामभूप की पत्नी।

कमलाबाई पालकर शिवाजी की लडकी। मा का नाम सकवारबाई। जानोजी पालकर की पत्नी।(शिवाजी निबंधावली १पृ २२५)

कर्णावती उदयपुर के महाराणा सांगा की पत्नी। १६२३ म जब बहादुरशाह ने चित्तौडगढ पर कब्जा किया तो इसने हुमायू को राखी भेजकर सहायता मांगी।

कर्माबाइ जगन्नाथपुरी की निवासिनी। साधु संतो का सत्कार और धार्मिक चर्या विशेषता थी। (भक्ति वि ज ३५)

कचला वासव के गंग की पत्नी। २ गोविंद रस गंग की पुत्री। (१०५०)

कंति पहली कन्नड कवयित्री। इसम पहले किसी कन्नड कवयित्री का उल्लेख नहीं मिलता। नागचंद्र नामक काव्य मवाद इसकी सुप्रसिद्ध रचना है, समय ११०० ११०६ के लगभग।

कामाख्या एक योगिनी। जादू, टोना हठयोग म सिद्ध। दुष्ट वृत्ति की थी। दूसरे योगियों को साधना से विरक्त करने म इसे आनंद आता था। योगी चक्रपाणि को अपने पथ म विरक्त करने के प्रयास म इसे मुह की खानी पडी। इस घटना से इसका हृदय परिवर्तन हुआ। इसके बाद इसने अपनी योगविद्या का केवल कल्याणकारी उपयोग किया।

कारुवाकी अशोक मौर्य की एक पत्नी। तीवर की माता। अशोक के एक शिलालेख म इसकी दानशीलता का उल्लेख है।

कालीकुमारी बुंदेल राजा चपतराय की पत्नी। पति की मृत्यु का समाचार पाते ही इसने स्वयं अपना सिर काट लिया था। (मु रि भा २ पृ २७०)

काशीबाई पेठे त्र्यंबक अमृतेश्वर पेठे की पत्नी। इसकी मृत्यु दिनांक २७ ६ १८१२ म हुई (म रि उ २ पृ १५७)

काशीबाई पेशवे बड बाजीराव की पत्नी। जोशी वंश के महादाजी पंत की लडकी थी। मृत्यु २७ ११ १७५८ म हुई।

काशीबाइ प्रतिनिधि भवानराव प्रतिनिधि की पत्नी। अत्यंत साहसी और पराक्रमी थी। इसका काल १७९८ के आसपास माना गया।

काशीबाई भामल। शिवाजी महाराज की सातवी पत्नी। तथा जाधवराव की कन्या। विवाह १६५७ म हुआ था।

कांचनदेवी सिद्धराज जयसिंह की पुत्री। अजमेर के अर्णवराज उर्फ आना चौहान की पत्नी। पुत्र सोमेश्वर।

किरणमयी हिंदी कवयित्री। बीकानेर के राजा रायसिंह क भाई पृथ्वीसिंह की पत्नी।

कुमारदेवी लिच्छवि वंश की राजकन्या। गुप्त घराने के चंद्रगुप्त प्रथम की रानी।

कृष्णमा विजयनगर के रामराय के भाई वेंकट आद्री की पत्नी। रंगप्पा और राम की माता।

कृष्णाकुमारी मेवाड के राणा भीमसिंह की लडकी। अपूर्व सुन्दरी थी, इसके कारण जोधपुर के मानसिंह और जयपुर के जगतसिंह का युद्ध हुआ। जहर स मृत्यु सन १८१० जुलाई २१ को हुई।

कृष्णाबाई (नरियाबाइ निवालकर) परन्मी राजपूत धामीराम की बडी बहन। राम राजा का पालन-पोषण किया। रामराजा को १७५० म सतारा की गद्दी पर बठाया गया।

कृष्णम्मा — विजयनगर के आरविडु घराने के वेंकट द्वितीय की पत्नी। यह निःसंतान रही।

केसरी — महादजी शिंदे और नाना फड़नवीस इनसे सलाह मशविरा करते थे। (स १७९६ म रि उ वि २ पृष्ठ ३४ ८५)

कमलाबाई होल्कर — मल्हारराव की मां। अपने सरदारों के साथ राज्य के कामकाज में हाथ बटाती थी। (म रि उ वि ३ पृ ८८३)

रानी कोणदेवी — प्रख्यात आदित्यसेन गुप्त की पत्नी। (६५५ ६६०)

कोसला देवी — मगध के बिंबसार की पत्नी। इसके पिता का नाम महाकोशल था। कुणिक की माता—जैनधर्मावलम्बी थी।

कोडम्मा — विजयनगर के रामराय की तीसरी पत्नी तथा चालुक्यराज वंश के तिम्मा की लड़की।

कोण्डमिम्मा — विजयनगर के आरविडु के वेंकटपति द्वितीय की तीसरी पत्नी।

ख

खना — एक बंगाली कवियित्री थी। भाषा के रूप के आधार पर इसका काल ६ वां शताब्दी माना गया है।

ग

गंगाबाई — गायकवाड़ की दासी। दमाजी गायकवाड़ की माता। ... की अनुमति से बड़ौदा में ... सम्पत्ति के रूप में दी गई थी। (सनद की ता १२ = १७४६)

गंगाबाई पेशवे — साठेवंश की लड़की थी। नारायणराव पेशवा की पत्नी। मृत्यु १= ७ १७७७ में हुई।

गंगाबाई शिंदे — महादजी शिंदे की पत्नी थी। यह पड़वेकर जाधव वंश की थी।

गिरिअम्मा — कानडी ब्राह्मण कवियित्री थी। चंद्रहास कथा सीताकल्याण उद्दालक कथा, पुस्तक रूप में तथा अन्य कई कविताएं मिलती हैं। इसका काल १७८० के लगभग माना गया है।

गिरिजाबाई — पैठण के एकनाथ की पत्नी थी।

गुणवंताबाई भोसले — इंगले की कन्या था तथा शिवाजी महाराज की आठवां पत्नी थी। इसका विवाह १५ अप्रैल १६५७ में हुआ था।

गोणाई — नामदेव की माता।

गोपा — शुद्धोदन के पुत्र बुद्ध की पत्नी थी। दण्डपाणि शाक्य की लड़की थी।

गोपिकाबाई पेशवे — भिकाजी रास्ते की कन्या। भिकाजी साहूकार था। एक बार शाहू इसके यहां मेहमान बनकर कुछ दिन रहे। उन्हें यह कन्या अच्छी लगी और नानासाहब से इसका विवाह तय कर दिया। १७३० में विवाह हुआ। गंगापुर नामक स्थान में ३ अगस्त १७७८ को इसकी मृत्यु हुई।

गौतमाबाई — मल्हारराव होल्कर की पत्नी था। पति के सामने सितम्बर २९ सन् १७६१

किया।

घ

घुसीता बंगाल के वंश घराने की तथा खारवेल की पत्नी थी।

च

चट्टलादेवी गोवा के कदंब वंश के पहले विजयादित्य की पत्नी थी। इसका लड़का जयकेशिन था।

चन्नदेवी (चन्नमादेवी) विजयनगर के अरविद वंश की लिम्मल की दूसरी पत्नी थी। लिम्मल के राज्याभिषेक के समय यह थी।

चनम्मा सगमवंश के चेनम्मा का नामांतर।

चन्नम्मा धारवाड के पास कित्तूर नामक स्थान की एक शूर स्त्री थी। शिवाजी को कुछ दिन अपने यहां कैदी की तरह रखा था। कित्तूर की रुद्रम और बेडवड की मल्लम्म नामक स्त्रियां भी कर्नाटक प्रदेश की शूरवती स्त्रियां थीं। इनकी वीरता के 'पोवाडे' आज भी उस प्रदेश में प्रचलित है।

चंदना यह महावीर की पहली श्रमणा (शिष्या) थी। महावीर को कैवल्य प्राप्ति के बाद यह उनकी शिष्या हुई।

चंद्रलेखा कन्हाड के शिलाहार राजा की लड़की। स्वयंवर में विक्रम उत्तर चालुक्य को चुना (बिल्हण के अनुसार)

चपादे एक हिंदी कवियित्री। बीकानेर के राजा रायसिंह के भाई पृथ्वीराज की यह पत्नी थी। यह जैसलमेर के राजाराव लहर की लड़की थी।

चामलादेवी कदंब द्वितीय तैल कदंब की स्त्री। इसका पुत्र तनम।

चारुमती सम्राट अशोक की लड़की। पिता के साथ नेपाल यात्रा पर गई थी। वहीं संन्यासिनी बनकर मठ में रहने लगी। उसने नेपाल में देवपटना नामक नगर अपने पति की स्मृति में बसाया। पति का नाम देवपाल क्षत्रिय था।

चांदबीबी यह बीजापुर की अली आदिल शाह की पत्नी थी व अहमदनगर के हुसेन निजामशाह की कन्या थी। यह अपने पति के राजकाज में सहायता करती थी। कुशाग्र सुशील होने के अतिरिक्त युद्धकला में भी निपुण थी। फारसी अरबी के साथ इसे कानडी और मराठी का भी पर्याप्त ज्ञान था। इसका काल १५४७ १५९९ माना गया है।

चिन्नदेवी विजयनगर के पहले कृष्णराय की यह पत्नी थी।

चिमाबाई भासले मुधाजी भासले की पत्नी।

चेलुवाम्बा अठारहवीं शताब्दी की कानडी कवियित्री। ग्रंथ—वरनन्दी कल्याण व्यक्टा चलमाहात्म्य लालिपद, चलर्मलुमनलालिपद तुलाकावेरीमहात्म्य टीका। मैसूर के महाराजा दो कृष्णराज की पटरानी थी।

चेलना बिंबसार राजा की पत्नी व चेतक की लड़की।

ज

जनादेवी नामदेव की दासी। नामदेव के साथ अभंग करती थी। यह एक शूद्र की लड़की थी। इसने स १३५० में समाधि ग्रहण की। उपलब्ध ग्रंथ—हरिश्चंद्राख्यान प्रह्लाद चरित्र, कृष्ण जन्म बाल क्रीडा।

जहानारा यह शाहजहां तथा मुमताज महल की बड़ी लड़की थी। यह आजन्म अविवाहित रही। उसकी कब्र लाहौर के एक साधु

की वश के पास है। इसका काल (स १६१४ ८१) आका गया है विशेष जानकारी (म रि भा २ पृ २१८)

जावल देवी यह ववर राष्ट्रकूट की लडकी तथा द्वितीय तल चालुक्य की पत्नी थी।

जातुकर्णी भवभूति की मा।

जानी बेगम दाराशुकोह की लडकी तथा औरगजेब की पुत्रवधू थी। सभाजी की सेना ने एकाएक अत पुर पर हमला बाल दिया था तब इसने बडी बहादुरी स सामना किया। इसके साथ अनिरुद्धसिंह भी था। (माच म १६८३)

जिऊबाई नाना फडनवीस की पत्नी।

जिजाबाई (१५ ८ १६७४) लखुजी जाधव की लडकी तथा छत्रपति शिवाजी की मा। शिवाजी इसके दूसरे पुत्र थ। पहला लडका सभाजी। सभाजी के विवाह के बाद सन् १६३० म शिवाजी का जन्म हुआ था। इसी वर्ष इसके पति शाहजी न तुलाबाई नामक स्त्री से विवाह किया। इस विवाह के बाद स इसकी अपने पति से अनबन रहने लगी। शाहजी की मृत्यु होने पर इसकी सती होने की तीव्र इच्छा थी पर शिवाजी ने ऐसा नही होने दिया। प्रजा का ध्यान शिवाजी से भी ज्यादा रखा करती थी। १६७४ मे पाचाड गाव मे इसकी मृत्यु हुई।

जोधाबाई अकबर की एक राजपूत पत्नी। जोधपुर के मालदेव की लडकी थी। अकबर की मृत्यु के बाद इसने विष खाकर अपने प्राणो का अत किया। शाहजहा इसीका पुत्र था। इसका विवाह सन १८१६ म हुआ था।

जोम्मा प्रथम बुक्कराय सगम की पत्नी थी। (सन १७८५ १८५२)

जेबुन्निसा औरगजेब की बडी पुत्री। विदुषी थी—दीवान ए मख्फी नामक ग्रथ लिखा था। शभु छत्रपति स इसका प्रेम सबध था। (सन १६३८ १७०२)

ठ

ठकाबाई गूजर द्वितीय रघुजी भोसले की बहन थी। नागपुर म नवलोजी गूजर के साथ इसकी शादी हुई थी। (ना प्रा ३ पृ ३६५)

त

तनवलदेवी आहवाल्लिय वीरगुप्त की लडकी थी।

ताई तलिन एक सती की पत्नी थी। प्रतिनिधि घराने की परशुराम श्रीनिवास की रखैल थी।

ताईबाई कोल्हटकर भास्करराम कोल्हटकर की पत्नी थी। (ना मा प्रा ३ पृ ६६)

ताजमहल अबुलहसन कुतुबशाह की पत्नी।

तानी बीबी प्रथम इब्राहिम आदिलशाह की लडकी व आली बरीद की पत्नी।

तारादेवी यह टोड के सुरताण सालकी की कन्या थी। जयमल्ल के छोटे भाई पृथ्वीराज स इसका विवाह हुआ था। यह सती हुई थी। (जन्म स १६७५ मृत्यु १७६१)।

ताराबाई भोसले छत्रपति राजाराम की पत्नी। पिता का नाम हमीरराव मोहिते था।

तिप्पम्मा विजयनगर के तुलुव वश के नरसिंह राय की पत्नी थी तथा वीर नरसिंह की मा थी।

तिम्माबा यह रगराज की पत्नी थी। विजयनगर के सदाशिवराय तुलुव की मा थी।

तिरुमल्लादेवी विजयनगर के कृष्णदेवराय की पत्नी।

तिरुमल्लाबिका यह श्रीरग की पत्नी थी तथा विजयनगर के रामराय की मा थी।

रामराय के तिरमल्ल और व्यंकटाद्रि नामक भाई थे। बाद में रामराय गद्दी पर बैठा।

तिष्यरक्षिता मौर्यवंश के सम्राट अशोक की पत्नी।

तीरगाड वेंकम्मा एक ब्राह्मण कवयित्री वेंकटाचल महात्म्य और राजयोगसार नामक दो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं।

तुकाबाई भामले शहाजी राजा की दूसरी पत्नी थी तथा माहित वंश की कन्या थी। एकोजी की माता। इसका भाई संभाजी माहित था। माहिते वंश से शिवाजी का विरोध था। (वार्षिक इति शके १८३६ न ७)।

तुलसीबाई यशवंतराय होल्कर की रखैल थी। इसने होल्करशाही की देखरेख १० वर्ष तक की। इसके बाद ता २० १२ १८१७ को इसकी हत्या हो गई।

तोतारबी अप्पय दीक्षित की अब्राह्मण पत्नी तथा रंगराजा चार्य की लड़की थी। रंग राजाध्वरी की माता।

त्यागवल्ली कुलोत्तुंग चोल की तीसरी पत्नी।

द

दत्तदेवी गुप्तवंश के समुद्रगुप्त की पत्नी। इसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय था।

दयाबाई (सं १७६०) हिन्दी कवयित्री। चरणदास की शिष्या सहजोईबाई की गुरु बहन। 'दरियाबोध' नामक ग्रंथ उपलब्ध।

दर्याबाई निंबालकर शिवाजी द्वितीय की लड़की तथा रामराज की बहन। राजकाज में शाहू की सलाहकार थी। (प द ८ ३६)

दर्याबाई भोसले नागपुर के जानोजी भोसले की पत्नी थी। इसके कारण भोसलों में गृहयुद्ध हुआ।

दुर्गाबाई नाईक बारामतीकर राघोबादादा पेशवा की कन्या पांडुरंग नाईक बारामतीकर की पत्नी थी। विवाह सं १७७३ में हुआ।

दुर्गाबाई भामले शरीफजी भामले की पत्नी थी। विजयराव विश्वासराव नाम के जुन्नार के मराठे सरदार की यह लड़की थी।

दुर्गावती (रानी) (मृ १५६४) महोबा के चन्देल राजपूत वंश के राजा शालिवाहन की लड़की थी। गढमंडला के दलपत राजा से विवाह हुआ था। जल्दी ही विधवा हो गई। नाबालिग लड़के को गद्दी पर बिठाकर स्वयं राजकाज सँभालती रहीं। अकबर ने आसफखां के संचालन में इसपर आक्रमण किया। हाथी पर बैठकर युद्ध में वीरता से भाग लिया। हारने की उम्मीद होने पर खंजर मारकर आत्महत्या कर ली। (भु रि भा २ रा पृ ६७)

देवलदेवी (मृ १४१८ २२) खिजरखां की पत्नी।

देहनागादेवी रघुवंशी प्रतिहार भोज की माता।

ध

धारिणी मालविकाग्निमित्र को आश्रय देनेवाली एक रानी थी।

ध्रुवदेवी गुप्तवंश के दूसरे चन्द्रगुप्त की पत्नी थी। इसके लड़के कुमारगुप्त व गोविंद गुप्त।

न

नरसिंगम्मा विजयनगर के तिरुमल्ल आरविद की पत्नी।

नागलंबिका लिंगायत धर्म संस्थापक बसव की दूसरी बहन चन्नबसव की माँ।

नागला विजयनगर के नरसिंहराय तुलुव की दूसरी पत्नी।

नागी नामदेव की दासी।

नारी द्र रामगोपाध्याय नामक मनगु पडित की दूसरी लडकी। बाल विधवा थी। इसने संस्कृत भाषा म नारी नामक एक आत्म कथात्मक नाटक लिखा।

नीलम्मा वसव की पत्नी थी। लिगायत धम के प्रचार म सक्रिय भाग लिया।

नाहलादेवी कपूर वश मदनवर्मा की पत्नी। नाहलेश्वरनामक मन्दिर का निमाण करवाया। उस मन्दिर म बौद्ध भिक्षुओ के अलावा अन्य मत के साधु सत भी रहते थे ऐसा वहा के शिलालेख स सकेत मिलता है।

प

पद्मावती १ बुद्ध की माता २ गीत गोविन्द रचयिता जयदेव की पत्नी ३ लिगायत धम सस्थापक वसव की पत्नी।

पद्मिनी (स १३०३) जायसी के पद्मावत नामक ग्रथ की नायिका जो ऐतिहासिक पदमिनी के जीवन पर आधारित था। ग्रथ के अनुसार सिंहलद्वीप के गधवसेन की लडकी थी। रत्नसिंह स इसका विवाह हुआ। अला उद्दीन के साथ युद्ध करते हुए रत्नसिंह वीर गति को प्राप्त हुआ पद्मिनी सती हो गई।

पन्नादाई महाराणा सागा के पुत्र उदयसिंह को अपने पुत्र की बलि देकर बनवीर स बचाया—बनवीर पृथ्वीराज की रखैल का पुत्र था और विक्रमादित्य को मारकर अनीति स राजा बन बैठा था। इसीलिए गद्दी के असली हकदार उदयसिंह की जान का दुश्मन था।

परिमल देवी सिंध के दाहिर राजा की कन्या। उन दो बहनो म स दूसरी जिन्हे सिंध विजय के बाद मुहम्मद ने खलीफा वलीद क पास तोहफे की तरह भिजवाया। 'सूयदेवी' म इस रोमाचकारी कथा का वणन है। (लगभग स ७१३)

पद्मिनी देवी गोलकुडा के राजा की कन्या थी। यह अतीव सुन्दरी थी। इसीलिए इसका नाम पद्मिनी था। बाद में अलाउद्दीन के लिए मलिक काफूर इसे लाया था। अलाउद्दीन ने इसे यह नाम दिया (सु सि १३०६)

पम्पा विजयनगर के दूसरे हरिहर सगम की पत्नी।

पावतीबाई शि तुलाजीराव पवार की पुत्री थी तथा महादजी शिन्दे की पत्नी थी।

पावतीबाई पेशवे सदाशिवराव भाऊ पेशवे की पत्नी। मृत्यु सन् १७८३ म हुई।

पुतलाबाई शिवाजी महाराज की चौथी पत्नी। यह सूपा पालकर वश की कन्या थी। विवाह सन् १६५३ म रायगढ म हुआ।

पुरीबाई उमरठ नामक गाव की एक स्त्री। इस गुजराती कवियित्री का 'सीतास्वरूप वणन' नामक काव्य ग्रथ अत्यत लोकप्रिय हुआ।

पृथाबाई अजमेर के दूसरे पृथ्वीराज की लडकी थी। मेवाड के सामतसिंह स इसका विवाह हुआ था। सामतसिंह को समतसी कहते थे।

पेनोडमाम्बा विजयनगर के दूसरे वेंकटपति की पत्नी थी। पिता का नाम जिलेल्ला रग राजा था।

प्रभावती गुप्ता गुप्तवश के दूसरे चद्रगुप्त की लडकी। वाकाटक वश के इसर रुद्रसेन से इसका विवाह सन ३९५ म हुआ था। दिवाकर सेन और दामोदर सेन की माता। इन्ही दोनो पुत्रो म स किसी एक को प्रवर सेन के नाम से गद्दी पर बिठाया। राजकाज यही देखती थी।

प्रसाधना देवी प्रतिहार रघुवश के विनायक पाल की पत्नी थी। महेंद्रपाल द्वितीय की माता थी।

प्राणमजरी यह प्रेमनिधि की तीसरी पत्नी

थी।

प्रमाबाइ (१६५८ के लगभग) कवयित्री। इसके मराठी पद व अभंग लोकप्रिय हुए। इसका जीवन चरित्र 'भक्त लीलामृत' में वर्णित है। यह कृष्ण भक्त थी।

फ

फातिमा सुलतान उर्फ बादशाह साहेबा यह दूसरे इब्राहिम आदिलशाह की लडकी थी। शाह हबीबुल्ला बिन शाह से १८ वर्ष की आयु में स १६०५ में इसका विवाह हुआ था।

ब

बनुबाइ गूजर यह दूसरे रघूजी भोसले की कन्या थी। नाना गूजर के साथ इसका विवाह हुआ था। इसके लडके बाजीबा को भोसले की स्त्री दुर्गाबाई ने गोद लेकर तृतीय रघूजी कहकर २६ ६ १८१८ में गद्दी पर बठाया।

बयाबाइ भोसले यह पहले रघूजी की आजी अर्थात बापूजी भोसले की पत्नी थी। बिंबाजी, सताजी व राणोजी नामक पुत्रो की माता।

बयाबाई रामदासी (सन् १७०० के लगभग) रामदासस्वामी की शिष्या। हिन्दी व मराठी की कवयित्री थी।

बहिणाबाई इसका मायका पश्चिम के वेरूल के देवगाव मे था। आऊदेव कुलकर्णी की कन्या थी। शिवापुर के एक ज्योतिषी की दूसरी पत्नी। तुकोबा का अभंग जयराम गोसाईं के मुख से सुनकर तुकोबा की भक्त हुई। तुकोबा के प्रति यह आसक्ति इसके पति को नापसद थी। पर इसने तो अपना मार्ग तय कर लिया था। देहू नामक स्थान पर इसने तुकोबा के दर्शन किए। इसका लडका विठोबा था। इसने अभंग रूप में अपने बारह पूर्वजन्मो की कथा लिखी है। १३ वा जन्म बहिणाबाई के रूप में हुआ। ज्ञान प्रकाश नामक श्री उमरी द्वारा सपादित पुस्तक में इसके अभंग है। सन १७०० में समाधि ली। (म क च ६ पा ६८ १६२)

बाकाबाई यह दूसरे रघूजी भोसले की चौथी पत्नी थी। रघूजी भोसले के बाद उनका लडका परसोजी गद्दी पर बठा—वह नीम पगला था। इसीलिए राज्य चलाने के लिए अप्पासाहेब से इसका युद्ध सीताबर्डी में १२१७ में हुआ।

बाचलादेवी पाडय राजकन्या थी तथा दूसरे (तनु) कदब की पत्नी थी।

बादशाह बीबी यह दूसरे अली आदिलशाह की लडकी थी।

बायजी बाई शिंदे (सन १७८४ १८६३) सर्जेराव घाटगे की लडकी थी तथा दौलत राव शिन्दे की पत्नी थी। अतीव सुदर होने के कारण इसे सौंदर्यलतिका भी कहते थे।

बाला बाई शितोले प्रसिद्ध महादजी शिंदे की लडकी थी। विवाह सन १७७६ में नरसिंह राव शितोले से हुआ।

बालीबाइ उर्फ दीपाबाई यह शिवाजी की कन्या थी। विसाजी राव नामक सरदार से इसका विवाह हुआ था। (शिवाजी निबंधावली १ पृ २२५)

बेगम सुमरू (मृत्यु सन १८३६) वाल्टर रन हाट नामक यूरोपियन सैन्य अधिकारी की पत्नी थी जो एक मुसलमान उमराव की कन्या थी। बाद में इसने क्रिश्चियन धर्म स्वीकारा।

भ

भवानीवाई महाडीक (सन् १६७९ १७२८) सभाजी की लडकी थी। शिवाजी की नातिन थी। हरजीराज महाडीक के पुत्र शकरजी राजे से विवाह हुआ था।

भवानीवाई शिदे यह मिधाजी घाटगे की कन्या थी व महादजी शिदे की पत्नी थी।

भागावती (सन १६०० के लगभग) मुहम्मदकुली कुतुबशाह की पत्नी थी। इसीके नामपर भागानगर बसाया जो अब हैदराबाद के नाम से जाना जाता है।

भागीरथीबाई शिदे (मृत्यु सन् १७९६) यह पटेकर की कन्या व महादजी की पत्नी थी।

भागीरथीबाई होल्कर हरिराव होल्कर की पत्नी।

भाग्यवती पश्चिम के चालुक्यवश के दश वर्मा की पत्नी थी।

भामिनी कालीफनाभ की मा व सुरथ राजा की पत्नी।

भिऊबाई बारामतीकर (मृत्यु सन १७४८) यह बालाजी विश्वनाथ की लडकी थी। इसका विवाह आबूजी नाईक बारामतीकर से सन् १७१२ मे हुआ। पूना के शनिवार पेठ मे अमृतेश्वर का मंदिर इसीने बनवाया।

भीमाबाई बुले यशवतराव होल्कर की लडकी थी।

भूयिका देवी यह रघुवशी प्रतिहार देवराज की पत्नी थी। इसका लडका वत्सराज था।

म

मथुराबाई आगरे (सन् १७३० के लगभग) कान्होजी आगरे की पत्नी थी व बालाजी महाडिक की कन्या थी। यह विदुषी तथा व्रतपरायण थी। इसके द्वारा लिखे वर्णन पत्र पाप्य है। (रा म ३ २० ८६ ८७)

ममता तुलसीदास की मा।

मयणल्लदेवी आदिकदब के पहले कर्ण राजा की पत्नी थी। विधवा होने पर अपने पुत्र सिद्धराज की नाबालिग अवस्था मे राज्य की व्यवस्था इसीने की।

मयुम बीजापुर के युसुफ आदिलशाह की लडकी तथा पहले बुरहान निजामशाह की पत्नी थी।

मल्लाम्बी सगम विजयनगर के सगम वश के दूसरे हरिहर की पत्नी। देवगिरी के रामदेवराव के वश की थी। इसे मल्लादेवी भी कहते हैं।

मसीती युसुफ आदिलशाह की लडकी व अहमद बाहमनी की पत्नी।

मस्तानी (मृत्यु सन् १७४०) बाजीराव पेशवा की रखैल थी, नृत्य और सगीत मे कुशल विलासी स्त्री थी। बाजीराव को शराब पीने की आदत इसीने डाली। इसकी कब्र पाबल नामक स्थान मे है।

महादेवी यह कुमार गुप्त द्वितीय की पत्नी थी।

महादेवी अक्का कानडी कवियित्री थी। इसके उपलब्ध ग्रथ योगाग त्रिविध वचन और सृष्टि वचन है। महादेवी अक्का पुराण नामक ग्रथ लिंगायत धर्म मे प्रचलित है, जो इसीपर लिखा गया है।

महादेवी मलयवती इसका उल्लेख वात्सायन के कामसूत्र मे मिलता है। इसने कुतला शातकर्णी का कैची से खून किया था। यह कुतलाशातकर्ण पत्नी नही थी, बल्कि गणिका थी ऐसा अनुमान है।

महाप्रजावती गौतम बुद्ध की सौतेली मा थी। गौतम बुद्ध ने इसे दीक्षा दी थी।

महालक्ष्मी भत भट्ट गुहिलोत की पत्नी थी। हथुडी के राठोर वंश की कन्या थी।

महासनगुप्त देवी मालवा के गुप्त घराने के जीवित गुप्त की लडकी थी तथा आदित्य वर्द्धन की पत्नी थी।

महीन्देवी रघुवंशी प्रतिहार के विनायक पाल की मा।

माणिक्यदेवी यह गोवा के कदंब घराने के त्रिभुवनमल्ल की पत्नी थी। शिवचित्त देव द्वितीय की माता थी।

मानबाई अंबर के राजा भगवानदास की लडकी थी। जहाँगीर से उसका विवाह हुआ था। १६०४ १६०४ को विष खाकर आत्म हत्या की थी।

माया देवी शुद्धोदन की पत्नी और गौतम बुद्ध की मा।

मालविका विदर्भराजा की लडकी व अग्नि मित्र की पत्नी।

मीनाक्षी (सन् १७३१ १७३६) यह मदु राई के अंतिम राजा की रानी थी।

मीनाक्षी पांड्य (सन १२०० के लगभग) यह प्रथम सुंदर पांड्य की पत्नी थी।

मीराबाई (मृत्यु सन् १५४६) सुप्रसिद्ध हिंदी कवयित्री—राजा रत्नसिंह की लडकी थी। उदयपुर के राजा भोजराज गुहिलोत से इसका विवाह हुआ था। विवाह के कुछ समय बाद वह विधवा हो गई। कर्नल टोड ने उसे महाराणा कुंभा की पत्नी बताया है पर यह गलत है। यह कृष्ण भक्त थी। इसके बाद विक्रमादित्य को जो उस समय गद्दी पर था इसकी भगवद्भक्ति से चिढ थी। उसीने मीराबाई को भक्ति से विरक्त करने के लिए नाना प्रकार के कष्ट दिए। गीत गोविंद पर लिखी टीका तथा राग गोविंद इसके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

मुक्ताबाई (जन्म १२७९ समाधि स १२९७) सुप्रसिद्ध मराठी कवयित्री, ज्ञानेश्वर की बहन थी। इसके गुरु निवृत्तदेव तथा शिष्य चांगदेव थे। रचनाएं निवृत्ति प्रसादे मुक्ताबाई नामक ग्रंथ में मिलती हैं, ग्रंथ अप्रकाशित है।

मुम्मदवा रुद्रम्मा काकतीय की लडकी व महादेव की पत्नी। रुद्र की माता।

मृगावती वासवी व शतानिक की पत्नी।

मेखलया (योगिनी) ८४ सिद्धा में से ६६वी थी।

मैलावा यह चौथ विजयादित्य चालुक्य की पत्नी थी।

मैलला देवी छठवें विक्रमादित्य की लडकी थी। गोवा के दूसरे जयकदंब से इसका विवाह हुआ था।

मैनाबाई आंग्रे मेसाजी आंग्रे की लडकी व दौलतराव शिंदे की मा।

मैनाबाई पवार धार के आनंदराव पवार की पत्नी। बडौदा के गायकवाड घराने की थी। तरुणावस्था में विधवा हुई। श्री नारायण गणेश शरसाडकर ने मैना चरित्र नामक ग्रंथ में इसके चरित्र का वर्णन किया है। इसी प्रकार मुंशी देवीप्रसाद ने ना प्र सभा के त्रैमासिक में भी इसका वर्णन किया है। (४५६७०)

मैनाबाई भोसले यह व्यंकोजी उर्फ मन्या बापू भोसले की कन्या व आपासाहेब भोसले की पत्नी थी। इसकी मृत्यु सन १८१६ में हुई।

मैनाबाई होल्कर (सन् १८१५) यशवंतराव होल्कर की पत्नी थी।

मैनावती कांचनपुर के त्रैलोक्यचंद्र राजा की पत्नी थी। जालंधरनाथ की शिष्या हुई। यह विचारवान और मानी स्त्री थी।

मोप्पमा काकतीय प्रावी राजा की पत्नी। (हनुमत्कुडा के प्राचीन सहस्त्रस्तभ मदिर के शिलालेख के आधार पर)

मोहनागी कृष्णदेव रायल्लू की कन्या थी। यह विदुषी थी। इसन मारीचि परिणय नामक नाटक की रचना की थी।

य

यमुनाबाई शिंदे (मृत्यु सन् १८१४) यह रामसिंह राउल देवडाईकर की बहन व महादजी शिंदे की पत्नी थी।

याकबे यह वेट त्रिभुवन की पत्नी थी। इसका लडका परगद वेट था।

येसूबाई डफडे (मृत्यु सन १७५७) यह जती के बाबाजी की पत्नी थी। पोते यशवतराव को गद्दी पर बिठाने के बाद इसका देहात हो गया।

यसुबाई भोसले (जन्म सन १६५७ मृत्यु १७२० के बाद) सभाजी की पत्नी थी। यह पिलाजी शिर्के की लडकी थी। इसका दूसरा नाम जिउबाई था। विवाह के समय इसकी उम्र १० वर्ष थी। (रा ख ३ पृ १५४)

यौवनश्री यह विहार के तीसर विग्रह पाल की पत्नी थी कर्ण कल्चुरी की लडकी। इसका काल १०५० के लगभग माना गया है।

र

रखुमाबाई निवृत्तिज्ञानदेव की मा।

रखुमाबाई पवार लिवकराव पेठे की कन्या व चिमाजी आप्पा पवार की पत्नी।

रघवाम्बा विजयनगर के दूसरे वेंकटपति दवराय आरविदु की पत्नी।

रजिया गुलाम (स १२३६ ३९) दिल्ली के गुलामवश के शासक शमशुद्दीन अल्तमश की लडकी थी। पिता की मर्जी स दिल्ली की गद्दी पर बठी।

रणन्वी परवत राष्ट्रकूट की लडकी व धम पाल की पत्नी।

रमाऊ सावाजी भोसले की पत्नी। मृत्यु सन् १७५७ म हुई।

रमाबाई सन १४७७ के आसपास मेवाड के कुभराणा की लडकी व सोरठ के मडलिक यादव की पत्नी।

रगम्मा तिरुमल्ल आरविदु की पत्नी।

राजसुदरी राजेन्द्र चोल की कन्या व राजराज गग की पत्नी।

राजकुवर उर्फ नानीबाई यह शिवाजी की कन्या थी। इसकी मा का नाम सगुणाबाई था। गणोजी राजे शिर्के मलेकर को दी गई थी। (शि नि १ प २२५)

राजसबाई भोसले (सन १७१४) राजाराम की पत्नी—इसका पुत्र सभाजी गद्दी पर बठा, दूसरा पुत्र शिवाजी पागल सा था। उसे और ताराबाई को इसन जेल मे रखा।

राज्यदेवी बाणभट्ट की माता।

राणूबाई जाधव शिवाजी की कन्या। इसकी मा का नाम सईबाई था। इसका विवाह जाधव वश म हुआ था। (शि नि प २२४)

राणूबाई ठोसर श्री समर्थ रामदास की माता।

राधाबाई पशवे बालाजी विश्वनाथ की पत्नी थी। सन १७२१ मे नानासाहब पेशवा न इस रुपया से तौला था। इसकी मृत्यु सन् १७५३ म हुई।

राधाबाई भावे रामदुर्ग के नारायणराव की पत्नी थी। सन १८२७ म पति की मृत्यु के बाद अग्रेजो क आग्रह पर हरिहर नरगुदकर नामक लडके को गोद लिया।

राधाबाई मान म्हसवडकर नागोजी माने की पत्नी थी। इसके भाई की सताजी न हत्या की इसीलिए इसन सताजी स युद्ध किया जिसम वह मारा गया। (सन् १६९७)

राधाबाई शिंदे यह पर्चासिंह राहुत की बहिन व महादजी शिंदे की पत्नी थी।

रुक्मिणि एकनाथ स्वामी की मां।

रूपमती मालव के बाजबहादुर की रानी थी। अपूर्व सुन्दरी थी। वाद्य तथा संगीत का गहन अध्ययन था। इसका विवाह सन १५४७ में हुआ था। यह कवियित्री भी थी। मालवा में आज भी इसके लोकगीत प्रचलित हैं।

रेणुकाबाई जत संस्थान के कान्होजीराव की पहली पत्नी थी। कान्होजी की मृत्यु के बाद सन् १८१० से राज्य इसीने चलाया। इसकी मृत्यु सन् १८२२ में हुई।

रोशनारा शाहजहां की लड़की थी तथा औरंगजेब के पक्ष में थी। यह अविवाहित थी। (काल सन १६१७-१६७१)

ल

लज्जा हैहयकुल की राजकन्या, बंगाल के विग्रहपाल की पत्नी थी।

लक्ष्म्मा रामराय अरविंद की चौथी पत्नी। श्री रंगराय की माता।

लक्ष्मीदेवी गोवा के कदंब घराने की दूसरे विजयादित्य की पत्नी। जयकिशन ततीय की माता।

लक्ष्मीबाई झांसीवाली (जन्म स १८३५ मृत्यु जून सन् १८५८) यह मोरोपंत तांबे की लड़की थी तथा झांसी के राजा गंगाधरराव नेवालकर की पत्नी थी। विधवा होने के बाद १८५७ के गदर में भाग लिया था। झांसी का किला दस दिन की लड़ाई के बाद इसके हाथ से चला गया। वहां से पुरुष वेश में काल्पी जाकर पेशवा के साथ होकर ग्वालियर का किला पुनः अपने कब्जे में किया, उसीकी रक्षा में वीरगति को प्राप्त हुई।

लाडिली बेगम नूरजहां के पहले पति की लड़की थी।

लालकुंवर (सन १७१२) एक नर्तकी। इसके एक बार जहांदारशाह दिल्ली के राजा ने अपना संपूर्ण राज्य अर्पण कर दिया था।

लाल्हणदेवी विग्रह प्रतिहार की पत्नी थी। मलय वर्मा की माता थी। इसके पिता का नाम केल्हणदेव था।

लाहिनी आबू के परमार धुधक की कन्या। चपपुत्र विग्रहराज की पत्नी थी। विधवा होने के बाद अपने भाई पूर्णपाल के साथ रहने लगी थी। वसिष्ठपुर सूर्यमंदिर और सरस्वतीवापी का जीर्णोद्धार किया। (एपि इंडि भा ९ पृ १२१५)

लीलादेवी भोज की पत्नी।

लोकमहादेवी पश्चिम चालुक्य के दूसरे विक्रमादित्य की पत्नी।

लोकमहादेवी मधुरांतकी त्यागवल्ली का नामांतर।

व

वत्सदेवी परगुप्त की पत्नी।

वय्यम्मा यह तजार के लिम्मण्णा की पत्नी थी और सेन्वाप्पा की मां थी।

वसिष्ठी यह गौतमी पुत्र शातकर्ण की पत्नी थी। इसने अपनी रियासत का एक गांव बौद्ध भिक्षुओं को दिया था।

वासवदत्ता उज्जयिनी के चंड प्रद्योत की कन्या व उदयन की पत्नी।

विरूबाई शाहू महाराज की एक दासी। मृत्यु सवत १७१९ में हुई।

वेणुबाई समर्थ रामदास की एक शिष्या थी। सिर्वाति राम नामक ग्रंथ की रचना मराठी भाषा में की।

स

सग्धा — यह अमोघवर्ष राष्ट्रकूट की कन्या व तृतीय नन्दिवर्मन पल्लव की पत्नी।

शिवा — वैशाली के चेटक लिच्छवी की कन्या। यह उज्जयिनी के चंड प्रद्योत की पत्नी थी।

शृंगारम्मा — कन्नड़ी कवयित्री थी [illegible] की थी। पद्मिनी कल्याण नामक ग्रंथ प्रसिद्ध हुआ।

ससामनाम्री — यह मालव के परमार [illegible] की कन्या थी। [illegible] सिन्धुराज की रानी थी।

सहजयोगिनी चिंता — चौरासी सिद्धों में से थी। व्यक्तभावानुगततत्त्वसिद्धि नामक ग्रंथ लिखा।

सहजोबाई — (सन् १७८१) चरणदास की शिष्या हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री।

संघमित्रा — सम्राट अशोक की कन्या। लंका द्वीप धर्मप्रचार के लिए गई थी। इसका एक स्तूप स्तूपाराम में मिलता है।

सावित्रीबाई भोसले — यह रत्नाकर जाधव की कन्या थी तथा शाहू की पत्नी थी। मृत्यु सन् १७३१ के आसपास हुई।

हैं और आउटरम तथा हैवलाक कानपुर से नयी कुमुक लेकर लखनऊ आ रहे हैं। हजरत महल ने साहस के साथ नयी आई हुई अंग्रेजी फौज का मुकाबिला किया किंतु आउटरम ने आरामबाग में विद्रोहियों पर फतह पा ली। २३ सितंबर की इस विजय के बाद वह २५ सितंबर को घिरी हुई रसीडेंसी को बचाने भी जा पहुंचा। कानपुर में अंग्रेजों की फतह से भी बेगम के लोगों पर असर हुआ लेकिन बेगम ने उनका उत्साह बढ़ाने के लिए दरबार बुलाया और उन्हें विजय का विश्वास दिलाया। मन-ही-मन उसने तय कर लिया था अगर अंग्रेज फतहयाब हुए तो जहर खाकर अपना अंत कर लेगी।

नवंबर में सर कालिन कैम्पबेल लखनऊ पहुंचा। बेगम ने जबरदस्त लड़ाई की लेकिन उसकी ताकत रोज-रोज कम होती जा रही थी और सिपाही भी भयभीत होने लगे थे। कैम्पबेल के प्रयत्नों से रजीडेंसी में घिरे हुए अंग्रेज आरामबाग में दूसरी फौजों से जा मिले तभी कानपुर के विद्रोही वहां आ पहुंचे और कैम्पबेल को पीछे लौटना पड़ा। इससे भारतीय जवानों का बल लौट आया। बेगम ने बनारस और इलाहाबाद पर भी कब्जा करने का हुक्म दिया। उसने आजमगढ़ और जौनपुर पर भी कूच की तैयारी की। २५ फरवरी को वह खुद हाथी पर सवार होकर मैदान में पहुंची और आरामबाग पर हमला बोल दिया।

२ मार्च, १८५८ को अंग्रेजों ने लखनऊ पर शक्ति इकट्ठा करके हमला किया। सर कालिन कैम्पबेल और नेपाल के जंगबहादुर कमान में थे। गली के बाद एक ठिकाने उनके कब्जे में आने लगे। सिर्फ लखनऊ की खास कचहरी में ८६० सिपाही मारे गये।

हजरत महल इस सबके बीच मजबूती से सेना का संचालन करती रही। १८ मार्च १८५८ को लखनऊ के सारे मजबूत मोर्चे अंग्रेजों के हाथ में चले गये मगर बेगम १६ मार्च तक मूसाबाग पर कब्जा किये रही। बाद में बेगम ने मौलवी अहमदुल्लाशाह को शाहजहांपुर पर हमला करने में मदद दी। १८ अक्टूबर १८५८ को उसने एक लंबे खत में हमले की योजना लिखकर समझाई।

मगर शक्ति घटती गई और बेगम हजरत महल नेपाल निकल गईं। उसका बेटा बिरजिस कादिर साथ रहा। नेपाल सरकार ने बेगम को पहले तो शरण नहीं दी मगर जब बेगम ने अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण करने से इंकार कर दिया तो अंग्रेजों ने उसके सामने सम्मानपूर्ण शर्तें पेश कीं। बेगम ने इन शर्तों को भी स्वीकार नहीं किया और उनकी दी पेंशन लेने से भी इंकार कर दिया। वह अपने अंतिम दिनों तक यथासंभव स्वाभिमान की रक्षा करते हुए नेपाल में ही रही और १८७९ में अपने उद्देश्य के लिए कष्ट सहते हुए उसने देहत्याग किया।

हसीना बीजापुर के इब्राहिम आदिलशाह की कन्या मुलिका निजाम की पत्नी।

हरियदेवी मेवाड़ के अल्लट राजा की पत्नी थी। एक हूण राजा की कन्या थी। हर्षपुर नामक गांव सन् ६७७ में बसाया (इंडि. एंटि. मा ३९ प १९१)

हरिपमती तत्त्वशास्त्र प्रेमविधि की सास। हरिदेव की पत्नी।

प्रसिद्ध भारतीय नारिया : अर्वाचीन

अ

अनसूयाबाई काल   १९२० म भगिनी मडल की स्थापना करके उसके माध्यम स सावजनिक काम किये। बाद म अखिल भारतीय महिला परिषद की सदस्या। १९२८ म मध्यप्रदेश असेंबली की सदस्या और डिपुटी स्पीकर। १९३० म गाधीजी की गिरफ्तारी पर इस पद स इस्तीफा। १९३० म सविनय अवज्ञा म भाग। जलयात्रा। १९३७ म फिर म० प्र० म डिपुटी स्पीकर। दूसरे महायुद्ध के समय काग्रेस के सिद्धात के अनुसार फिर इस पद म इस्तीफा। भारत छोडो आन्दो म सक्रिय भाग। उनके प्रय नो स आष्टी चिमूर के २५ तरुणो की फासी की सजा रद्द हुई। स्वतत्रता के बाद केंद्रीय विधान सभा की सदस्या। १९५८ म निधन।

अनसूया महापात्र   १९२२। नई तालीम केन्द्र म निरन्तर दस वष तक काम किया। १९५८ से अम्बर प्रशिक्षण लकर पदयात्रा द्वारा गावो म खादी प्रचार। तीन वष बालवाडी का सचालन। सन् १९६६ म स्त्री सवा विशय कायकत्र।

अन्नपूर्णा दास   सवाग्राम म बुनियादी तालीम ली। प्रशि ण भी दिया। कस्तूरबा ट्रस्ट की सदस्या। सम्प्रति दानि मना विद्यालय की सचालिका।

अन्नपूर्णा महाराना   १९१५। स्वतत्रता आन्दोलन म भाग। १९४७ स सावजनिक सवा म रत।

अन्नपूर्णा महाराणा   १९१७। ३० ३२ ४२ और ४४ के आन्दोलनो म जेलयात्राए। गाधीजी की उत्कल पदयात्रा के समय उनके साथ रही। १९४७ स खादी बुनियादी तालीम हरिजन सेवा और कस्तूरबा ट्रस्ट के कायकलापो म योगदान के सिवा गाधी विनोबा साहित्य का उडिया म अनुवाद काय। सप्रति ग्रामदान आन्दोलन की अपने क्षत्र म प्रमुख कायकर्त्री।

अनुप्रिया बरुआ   १९४२ म सुधानता दत्त के सहयोग स असम म दमन स सत्रस्त क्षेत्रो म व्यापक दौरा करके जनता को आश्वस्त किया। रचनात्मक की गतिविधिया चलाइ। सरकार न इस सगठन को तोड डाला। दो वर्षो तक निरतर पुलिस के अत्याचार सह। उसके मार्गदशन म आन्दोलन रत। कनक लता बरुआ को २० सितबर १९४२ को छाती म गोली मारकर पुलिस न मार डाला।

अमरकुमारी   गुरुदासपुर के वकील मदनलाल की पत्नी। १९२१ म गाधीजी के आह्वान पर सावजनिक क्षत्र म पदापण। १९२२ म लायलपुर गई और वहा के डिपुटी कमिश्नर के शब्दो म सार जिल म आग लगा दी। १९३० म जलधर जिल म काम किया। राजद्रोह के अपराध म गिरफ्तार। १९३२

में अपनी अन्य सहयोगिनियां आदर्शकुमारी यशोदाकुमारी और कृष्णकुमारी के साथ गिरफ्तार और जेल की सजा। लाहौर के वकीलों के प्रयत्नों के बावजूद जमानत पर छूटने से इन्कार। बाद में प्रांत के बाहर सीमांत प्रदेश तक गतिविधियां बढ़ाकर फिर बन्नू में गिरफ्तार। १९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह। १९४२ सितंबर में फिर गिरफ्तार। जेल में दुर्व्यवहार के विरोध में प्रदर्शन और सत्याग्रह। ९ अक्टूबर १९४२ को जेल में ही ध्वजारोहण। १९४४ में स्वास्थ्य के बिलकुल चौपट हो जाने पर रिहाई।

अरुणा आसिफ अली बंगाल के कुलीन गांगुली परिवार में जन्म। लाहौर और नैनीताल में शिक्षण। शिक्षण के बाद गोखले मेमोरियल स्कूल कलकत्ता में नारी शिक्षा का काम करते हुए इलाहाबाद के वकील और फारसी के विद्वान राष्ट्रप्रेमी श्री आसिफ अली से भेंट। १९२४ में आसिफ अली से विवाह। नमक सत्याग्रह के जमाने से ही स्वतंत्रता संग्राम में शामिल। गांधी इरविन पैक्ट के बाद सारे राजनीतिक बंदी छोड़ दिए गए किन्तु अरुणा को तब भी नहीं छोड़ा। उनके साथ की अन्य महिलाओं ने भी जेल से रिहाई स्वीकार नहीं की। गांधीजी के कहने पर महिलाएं जेल से बाहर आने पर राजी हुई। बाद में इस बात को लेकर जन-आंदोलन हुआ और अरुणा लाहौर जेल से रिहा हुई। फिर १९३२ में गिरफ्तार और जुर्माना। दिल्ली डिस्ट्रिक्ट जेल में उन्हें कष्ट दिये गये और अम्बाला जेल में भेजकर गुनहखाने में रखा गया। जेल से छूटकर दो वर्ष शांत रहीं। फिर ८ अगस्त १९४२ के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के समय पति के साथ अ० भा० कांग्रेस की बैठक में। १९४२ में अरुणा जी ने जबरदस्त काम किया। २६ सितम्बर, १९४२ को उनकी सारी संपत्ति जब्त कर ली गई। वह इस समय भूमिगत थीं। उनका मकान और मोटरगाड़ी आदि सारा सामान नीलाम कर दिया गया। अरुणा बराबर भूमिगत रहकर आंदोलन चलाती रहीं। बाद में राममनोहर लोहिया के साथ 'इन्कलाब' मासिक के संपादन में हाथ बटाया। उन्हें गिरफ्तार कराने पर पांच हजार का इनाम भी रखा गया था। स्वास्थ्य के बिगड़ने का समाचार सुनकर गांधीजी ने उन्हें समर्पण के लिए राजी करना चाहा किन्तु वह राजी नहीं हुईं और २६ जनवरी १९४६ को वारंट रद्द होने पर ही सामने आई। फरवरी १९४६ में अरुणा ने एक नई आजाद हिंद फौज के संगठन का नारा दिया। स्वतंत्रता मिलने तक वह अपने ढंग से काम करती रहीं। यूसुफ मेहर अली ने उनके बारे में लिखा था "१८५७ की रणदेवी झांसी की रानी थी १९४२ की अरुणा आसिफ अली।"

१९५८ में अरुणा दिल्ली नगर निगम की अध्यक्षा हुई और एक अरसे तक इस पद पर बनी रहीं।

अरुणाबहन शंकरप्रसाद देसाई ३० बहनों की टोली लेकर कल्याण में विकास विद्यालय का कार्य प्रारम्भ किया २४ वर्षों से उसी संस्था की मंत्री हैं संस्था के कार्यहेतु सिंगापुर, पीनांग, मलाया, हांगकांग, सगोन, रंगून आदि का प्रवास किया। ६२ से ६७ तक गुजरात विधानसभा की सदस्या रहीं आजकल बाल अदालत की मानद न्यायाधीश, कामगार कल्याण बोर्ड की सदस्या भी हैं।

अवन्तिकाराय चौधरी १८२५। बंगाल में कस्तूरबा ट्रस्ट के संगठन में प्रमुख भाग। आठ वर्ष तक ट्रस्ट का संचालन। सम्प्रति

अभय आश्रम के माध्यम से स्त्री शिक्षा और बालकों की शिक्षा में संलग्न।

अमल प्रभा दास १९११। उच्च शिक्षा के बाद सेवाग्राम और मगनवाडी में प्रशिक्षण। व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेलयात्रा। सन् १९४५ से कस्तूरबा ट्रस्ट असम की प्रतिनिधि। बुनियादी तालीम की सलाहकार समिति की सदस्या समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड की अध्यक्षा और संचालिका रहीं। असम सघ सेवा सघ के माध्यम से भूदान पदयात्राओं में भाग। तत्र मुक्ति-अभियान के अंतर्गत सभी पदों से त्यागपत्र देकर पूर्णरूपेण सर्वोदय के लिए समर्पित।

अमृतकौर राजकुमारी १८८९। राजा सर हरनामसिंह कपूरथला की पुत्री। विदेश में उच्च शिक्षा। अखिल भारतीय महिला परिषद की निर्मात्री। सोलह वर्षों तक गांधी जी की निजी सचिव। अखिल भारतीय चरखा सघ और हिंदुस्तानी तालीमी सघ की सदस्या। केन्द्रीय सरकार में स्वास्थ्य मंत्राणी।

आ

आभा कनु गांधी १९२८। बचपन से बापू के सपर्क में। नोआखाली शांतियात्रा में निरंतर बापू के साथ। बापू के निर्वाण के क्षण में भी उनकी 'लाठी'। देशभर में चरखा प्रचार के बाद अब सौराष्ट्र में खादी तथा अन्य सेवा कार्य।

आशादेवी आर्यनायकम १९०२-७०। ई डब्ल्यू आर्यनायकम की पत्नी। हिंदुस्तानी तालीमी सघ सेवाग्राम की प्रारम्भ से अंत तक संचालिका रहीं। अनेक प्रांतीय सरकारों और केन्द्रीय सरकार को शिक्षा संबंधी कार्यों में सहयोग देती रहीं। भारत सरकार ने आपको पद्म विभूषण की उपाधि से अलकृत करना चाहा था। किन्तु स्त्रीजी गांधी के बताए कुछ एक सिद्धांत के आधार पर उपाधि लेना अस्वीकार कर दिया।

इ

इरावती कार्वे १९०५ में ब्रह्मदेश में जन्म। १९२८ में एम ए। १९३० में बर्लिन से पी एच डी। नृतत्व शास्त्र प्राणि शास्त्र, संस्कृत और समाज शास्त्र इनके विशिष्ट विषय हैं। पति डा दिनकर धोंडो कर्वे। १९३१ से नाथीबाई दामोदर ठाकरसी भारतीय महिला पीठ की रजिस्ट्रार। १९३९ से डेक्कन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट में समाजशास्त्र की रीडर।

इन्दिरा गांधी १९१७। ६ सितम्बर १९२१ में पिता जवाहरलालजी पर जब मुकदमा चला तब पितामह की गोद में अदालत में हाजिर रहकर मानो देशसेवा का श्रीगणेश कर लिया। छः वर्ष की उम्र में इलाहाबाद के सेसीलिया हाई स्कूल में भर्ती। छोटी ही उम्र में अंग्रेजी के शेक्सपियर, डिकेन्स आदि की किताबें पढ़ लीं। कुछ चरित्रों और पात्रों का जीवन पर विशेष प्रभाव—जोन आफ आर्क उनमें और भी विशिष्ट चरित्र था। १९२६ में माता पिता के साथ यूरोप और फिर रूस की यात्रा। १९३० में रावी के तट पर पिता के मुख से स्वाधीनता की घोषणा तल्लीन भाव से सुनी। जेलयात्रा न कर सकने की विवशता का दुःख। बच्चों का सेवादल बनाया और रामायण की कथा के आधार पर उसका नाम 'वानर सेना' रखा। सारे देश में इसी प्रकार की वानर सेनाएं बनीं और उन्होंने झंडा बनाना, पोस्टर चिपकाना—जैसे

तमाम छोटे छोटे तथापि महत्त्वपूर्ण काम करने के साथ-साथ जुबानी सूचनाएं पहुंचाने का काम किया। दसवीं वर्षगांठ के बाद जवाहरलालजी ने 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' लिखकर बेटी को जो पाठशालाओं में नहीं मिल सकता था, वह मानव सभ्यता के इतिहास से अवगत कराया। इसके बाद १९३० में इसी विचार से क्रमशः विश्व इतिहास की झलक लिखी गई। इसमें अन्य बातों के साथ जवाहरलालजी ने इंदिरा को स्मरण दिलाया कि तुम्हारे जन्म का वर्ष १९१७ संसार की एक बड़ी क्रांति का वर्ष है। गांधीजी के सुझाव पर पूना के पीपुल्स ओन स्कूल में शिक्षण। तीन साल के बाद १९३४ में शांतिनिकेतन में भर्ती। मगर साल भर के भीतर ही मां के इलाज के सिलसिले में जर्मनी के बेडनवीलर सनीटोरियम में पिता के जेल में रहने के कारण जाना आवश्यक हो गया। बेडनवीलर में फीरोज गांधी से परिचय। २८ फरवरी १९३६ में माता कमला नेहरू का स्विटजरलैण्ड में देहांत। इंदिरा वहीं बेक्स के जिस स्कूल में भर्ती हो गई थी पढ़ती रही। वहां से इंग्लैंड में ब्रिस्टन के बैडमिंटन स्कूल में। फिर समरविले कालेज आक्सफोर्ड में वहां इंडिया लीग के तत्कालीन संचालक कृष्ण मेनन से संपर्क। स्पेन और चीन सहायता-समितियां में काम। १९४२ में फीरोज गांधी से विवाह। अल्प अवधि के बाद भारत छोड़ो आन्दोलन में गिरफ्तार होकर नैनी जेल में। १३ मई १९४३ को स्वास्थ्य के कारण रिहा। २० अगस्त, १९४४ को पहले बच्चे राजीव का जन्म। १९४६ तक इलाहाबाद रहीं फिर फीरोज गांधी नेशनल हेराल्ड के प्रबंध संपादक होकर लखनऊ गये। इन्दिरा भी लखनऊ चली गई। जवाहरलालजी के अस्थायी सरकार में प्रधानमंत्री होने पर इन्दिरा लखनऊ से दिल्ली आती जाती रहीं। दिसम्बर, १९४७ में दूसरे बच्चे संजय का जन्म। सितम्बर १९४७ में अस्वस्थ रहते हुए भी शरणार्थी शिविरों में तनतोड़ काम। १९४९ में पिता के साथ अमरीका-यात्रा। १९५० में वापस आकर पिता के काम में लगभग निजी सचिव की तरह रात दिन व्यस्त। कांग्रेस की कई उपसमितियों की सदस्यता के साथ समाज कल्याण का काम। १९५३-५४ में इंग्लैण्ड, चीन इंडोनेशिया की राजनीतिक यात्रा में फिर पिता के साथ। १९५३ में खुद अकेले रूस की यात्रा की थी। १९५४ की चीन यात्रा के कारण दो साम्यवादी देशों की तुलना का अवसर मिला। देश में चलनेवाली हर नई परियोजना को पिता के साथ रहकर हृदयंगम किया। १९५२ के आम चुनाव अभियान में सक्रिय होकर काम किया। इंदिराजी के पिता के साथ रहने और राजनीतिक क्षेत्र में एकदम व्यस्त हो जाने से फीरोज गांधी अन्यमनस्क। उन्होंने भी रायबरेली से लोकसभा का चुनाव लड़ा और लखनऊ से दिल्ली आ गये। १९५७ के आम चुनाव में फिर संसद सदस्य। ८ सितम्बर १९६० को फीरोज गांधी की दिल के दौरे से मृत्यु। इंदिरा बचपन से कांग्रेस में रत। १९५५ में कांग्रेस की कार्यसमिति में। इस घटना के बाद क्षण-क्षण देश का हो गया। १९५९ में कांग्रेस की अध्यक्षा। १९६१ में फिर पंडितजी के साथ अमरीका-यात्रा। १९६२ में जैकलीन कैनेडी भारत आई—और श्रीमती कैनेडी की भारत-यात्रा समाप्त होते ही इन्दिरा अमरीका की भाषण-यात्रा पर गईं। १९६२ के अक्टूबर में चीन ने

समूह, अमरीका, इंग्लण्ड, पश्चिम जर्मनी की सद्भावना यात्राएं। १९६९ मे २८ देशों के राष्ट्रपतियों और प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन मे लंदन। फरवरी के मध्यावधि चुनाव मे बंगाल मे कांग्रेस अल्पमत मे आई। पंजाब बंगाल, बिहार मे सरकार नहीं बना सकी। मई मे राष्ट्रपति जाकिर हुसैन का स्वर्गवास। नये राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर इंदिरा और कांग्रेस के कुछ वरिष्ठ नेताओं मे मत भेद। इंदिरा ने उपप्रधान मंत्री मुरारजी देसाई से उनका विभाग ले लिया। मुरारजी ने इस्तीफा दे दिया। उसे मंजूर करके इंदिरा ने १४ प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। कांग्रेस के अध्यक्ष आदि ने तत्कालीन उपराष्ट्रपति व्य वा गिरि के स्थान पर राष्ट्रपति के लिए नीलम संजीव रेड्डी का नाम उम्मीदवार की तरह घोषित किया। इस पर कांग्रेस मे फूट पड गई। इंदिरा ने व्य वा का समर्थन किया और उनकी जीत हुई।

कांग्रेस नई और पुरानी एस दो हिस्सों मे विभक्त हो गई। दोनों के अलग अलग अधिवेशन हुए। नई कांग्रेस के अध्यक्ष जगजीवन राम बने। १९७० मे राजाओं के प्रिवीपर्स और विशेषाधिकार समाप्त हुए। १९७०-७१ का इंदिराजी का बजट प्रगतिशील और जनसामान्य की आकांक्षाओं को ध्यान मे रखकर प्रस्तुत हुआ। सन १९७१ तक परती जमीन बांटने का प्रस्ताव पारित हुआ। हरियाणा और पंजाब के मसले हल किये गये। तूफान बाढ और अकाल-पीडित इलाकों के तूफानी दौरे करके विभीषिका को समझकर राहत पहुंचाई गई। मेघालय बना। केरल के मध्यावधि चुनाव मे कांग्रेस को बहुमत मिला।

फिर १९७१ मे मध्यावधि चुनाव हुए। नई कांग्रेस की अभूतपूर्व विजय हुई। राजनीतिक वातावरण स्थिर हुआ। मगर पाकिस्तान परेशान करने मे लगा रहा। उधर पूर्वी बंगाल के चुनावों मे अवामी लीग की विजय ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति याह्या खां का संतुलन बिगाड दिया। अवामी लीग के मुजीबुरहमान को गिरफ्तार करके फांसी की सजा सुना दी गई। पूर्व बंगाल मे दमनचक्र शुरू हो गया। शरणार्थी लाखों की तादाद मे भारत मे आने लगे।

इंदिरा ने अद्भुत धैर्य और सूझबूझ से काम लिया और पूर्व बंगाल की जनता जब आततायियों के खिलाफ खडी हो गई तो पाकिस्तान भारत से लड बैठा। पाकिस्तान की भयानक हार हुई। पूर्वी बंगाल पाकिस्तान से अलग होकर बांगला देश का जन्म हुआ। इस विजय ने भारत को विश्व मे एक नया गौरव दिया।

२६ जनवरी १९७२ को इन्दिरा देश के सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न से विभूषित। उसके बाद मद्रास और उत्तर प्रदेश को छोडकर प्रांतों के मध्यावधि चुनाव हुए। सारे देश के कुल २५२६ स्थानों मे १९२६ सत्ता कांग्रेस को मिले।

समस्याएं बडे देश की बडी है। इंदिरा उन्हें औवट से हल करने मे जुटी रहती है।

इंदुमती चीमनलाल शेठ गुजरात विद्यापीठ की स्नातिका अडालज मे स्त्री अध्यापन मंदिर की संचालिका, प्रसिद्ध मी० एन० विद्या विहार की संस्थापिका व संचालिका, ज्योतिसंघ विकासगृह कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट व महिला समुन्नति संघ आदि संस्थाओं मे सक्रिय योग द्विभाषी बंबई राज्य मे उप

शिक्षा मंत्री व गुजरात राज्य में शिक्षामंत्री भी रही। भारत सरकार द्वारा, 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित की जा चुकी है।

उ

उत्यप्रभाबहन मेहता १९४१। नशाबंदी तथा स्वदेशी आंदोलन से सावजनिक जीवन में प्रवेश सन ३० ३२ व ४२ के आंदोलनों में भाग लिया सन् ३४ से ज्योति संघ की प्रवत्तियों में आजकल अध कन्या प्रकाश गृह व स्त्री केलवणी मंडल की कार्यकारिणी समिति की सदस्या है तथा ज्योति संघ व अखिल भारतीय महिला परिषद की अध्यक्षा हैं।

उमा नेहरू १८८४ में आगरा में जन्म। पिता पंडित निरंजननाथ हुक्कू। हुबली में शिक्षा। १९०१ में शामलाल नेहरू से विवाह। अनेक बार जेलयात्राएं। लोकसभा की सदस्या और अनेक शिक्षा संस्थाओं से संबद्ध रही।

उषा मेहता १९२० में सतारा में जन्म। विलसन कॉलेज बंबई वि० वि० से १९३९ में स्नातिका। १९४१ में पन्जात हुए कानून की परीक्षा पास की। तभी भारत छोड़ो आंदोलन आ गया। उषा कांग्रेस सोशलिस्ट दल से प्रभावित थी। उसने गुप्त रेडियो संचालन करके देश में आंदोलन की खबरें और जोश आदि देना शुरू किया। पिता जज थे। उषा ने उनकी नौकरी की भी चिंता नहीं की। यह प्रसारण स्वतंत्रता की आवाज (वायस आफ फ्रीडम) के नाम से होता था। बाबूभाई खाखर नामक तरुण इसका सहयोगी था। डा० लोहिया ने इन्हें सहायता पहुंचाई। १४ अगस्त १९४२ से इसका प्रसारण शुरू हो गया। यह कांग्रेस रेडियो ४२ ८४ मीटर पर भारत के किसी स्थान से बोल रहा है। प्राय स्थान बदलना जरूरी होता था। इसमें अनेक कठिनाइयां व साथ तकनीकी कठिनाइयां होती थीं। चिटगांव में बमबारी हमला, चिमूर आष्टी के अत्याचार, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से कांग्रेस के दृष्टिकोण का प्रसार, विश्व की जनता से सम्भावना की अपील आदि प्रसारण के विषय होते थे। १२ नवबर १९४२ को रेडियो उषा मेहता बाबूभाई और अन्य कुछ सहयोगी पकड़ लिए गए। छ महीने तक पुलिस अत्याचार करती रही किंतु उषा और उनके साथियों ने उसे किस प्रकार की सूचनाएं नहीं दी। मुकदमा चला और चार साल की सजा हुई। १९४६ में रिहाई के बाद उषा ने शिक्षण लेकर महात्मा गांधी के सामाजिक और राजनीतिक विचार नामक श्रेष्ठ पुस्तक लिखी और उस पुस्तक पर उसे डाक्टरेट मिली। संप्रति बंबई वि वि में राजनीति विभाग में प्राचार्या।

ऊर्मिला देवी देशबंधु चित्तरंजन दास की बहन। १९३१ में नारी सत्याग्रह समिति का मोहिनी देवी ज्योतमयी गांगुली हेमप्रभा दास गुप्त अशोकलता दास सुमतिदास और विमला प्रतिभादेवी के साथ संचालन। सरकार के आदेशों की अवज्ञा करके जुलूस निकाले और जेलयात्रा की अछूतोद्धार और खादी प्रचार में काम किया। नारी सत्याग्रह समिति, निखिल जातीय नारी संघ और राष्ट्रीय महिला संघों के अवैध घोषित होने पर इन आदेशों का विरोध किया और जेल यात्रा की।

एनी बीसेंट जन्म १८४७। पिता विलियम वेज वुड अंग्रेज और मां एमिली आइरिश थी। इंग्लैंड जर्मनी और फ्रांस में शिक्षा प्राप्त की। १८६६ में रेवरण्ड फ्रैंक बेसेंट से

विवाह। धीरे धीरे तक की कसौटी पर ईसाई धर्म इनकी दृष्टि में आकर्षण विहीन हो गया। एक लड़का और एक लड़की पति ने अदालत से अपने पास रखकर तलाक ले लिया। १८७३ से १८८३ तक इंग्लैंड के प्रसिद्ध नास्तिक चार्ल्स ब्रेडला के साथ काम किया। १८८५ में समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हुईं। तभी मैडम ब्लावत्स्की की सीक्रेट डॉक्ट्रिन' नामक किताब पढ़ ली और थियासोफिस्ट बन गयीं। १८९३ में भारत आयीं। १९०७ में ७ वर्ष के लिए थियासोफिस्ट समाज की अध्यक्षा बनीं। इन सात वर्षों में समाज ने आश्चर्यजनक उन्नति की। बनारस में सेंट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना की। गीता उपनिषद, रामायण महाभारत आदि को शिक्षाक्रम में स्थान दिया। १९१४ में हिंदू कॉलेज पं मदन मोहन मालवीय को हिंदू वि वि के प्रथम घटक के रूप में सौंपा। हिंदू वि वि ने डी लिट की उपाधि से विभूषित किया। १९१६ में होमरूल लीग की स्थापना की। इसी वर्ष लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में हिंदू मुसलमान नेताओं ने संयुक्त रूप से स्वायत्त शासन की मांग की। १९१७ में कांग्रेस की अध्यक्षा निर्वाचित। २० सितम्बर १९३३ में अड्यार चली गयीं। वहीं आपका निधन हुआ और हिंदू प्रथा के अनुसार शव का संस्कार किया गया।

क

कमलादेवी चट्टोपाध्याय जन्म १९०३ मंगलौर। बाल विधवा हो जाने के बाद क्वीन मेरी कॉलेज में शिक्षा। श्रीमती सरोजिनी नायडू के भाई हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय से पुनर्विवाह। १९२२ में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश। १९२६ में लेजिस लेटिव असेम्बली का चुनाव लड़ा। इस प्रकार चुनाव लड़नेवाली यह पहली महिला थीं। १९२९ में कांग्रेस वीमेन्स लीग फार पीस में भाग लिया। उसी वर्ष अहमदाबाद में युवा परिषद की अध्यक्षा। १९३० में सविनय अवज्ञा में भाग और जलयात्रा। १९ १ में रिहा होने के बाद हिंदुस्तानी सेवादल का विस्तार करने के लिए सारे देश की यात्रा। १९३१ में विद्यार्थी परिषद लाहौर की अध्यक्षा। १९३२ में फिर जेल यात्रा। १९३४ में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में शामिल। १९३५ में आल इंडिया कांफ्रेंस मेरठ की अध्यक्षता की। जयश्री रायजी हंसा मेहता परीन कैप्टन, सोफिया सोमजी और दादाभाई नौरोजी की पौत्री खुरशीद बहन के साथ बंबई में होनेवाली रचनात्मक प्रवृत्तियों में भाग लिया। १९३९ ४४ के बीच अनेक बार जेलयात्रा। भारत की समस्या से अमरीका की जनता को अवगत कराने के लिए वहां की यात्रा भी की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजनीति के बजाय सहकारी आंदोलन को अपना क्षेत्र बनाया। थियेटर सेंटर आफ इंडिया की स्थापना की। १९५५ में पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत। सम्प्रति अ भा गृह उद्योग आयोग की अध्यक्षा।

कमला नेहरू प्रारंभ से ही आंदोलन में भाग लिया। नमक सत्याग्रह के समय श्यामकुमारी नेहरू और कृष्णा नेहरू के साथ किसानों छात्रों और स्त्रियों को संगठित किया। 'कर न दो' आंदोलन में प्रमुख भाग लिया। उ प्र की राजनीतिक महिला सभा की अध्यक्षा की तरह नवंबर १९३१ में खादी प्रचार की हिमायत की। १९३१ में कांग्रेस

कार्य समिति की कार्यकारी अध्यक्षा नियुक्त हुई, किंतु गिरफ्तार कर ली गई। उनके स्वास्थ्य ने कभी उनका साथ नहीं दिया। चिकित्सा के लिए उन्हें विदेश जाना पड़ा। २८ फरवरी, १९३६ को स्विटजरलैंड में उनका निधन हो गया।

कमलाताई हास्पेट १८९६। नागपुर के प्रसिद्ध मोहिनी परिवार में जन्म। १२वें वर्ष में विवाह। १५वें वर्ष में वैधव्य। बड़े धैर्य और अध्यवसाय के साथ आत्मनिर्भर होने के विचार से शिशु संगोपन का कार्य सीखा और एक सरकारी अस्पताल में काम भी मिला। वह युग अंग्रेजों और अर्द्ध गोरों का था। एक हिंदू प्रसूता को क्लोरोफार्म देने के अपराध में मट्रन ने बहुत डांटा और कहा कि ये लोग तो हर हालत में चलकर जा सकते हैं। कमलाताई ने तत्काल नौकरी छोड़कर अपनी कुछ सखियों के साथ घर में ही चार खाटें डालकर प्रसूति गृह प्रारंभ कर दिया। १९२१ में प्रारंभ किए गए इस सूतिकागृह की धीरे धीरे ख्याति फैली और महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश में जहां तहां उसकी शाखाएं खुलीं। १९५६ में इसे मातृसेवा संघ का रूप मिला। सरकार ने कमलाताई की सेवा के लिए उन्हें 'पद्मश्री' से अलंकृत किया।

कमला श्रीनिवासन् १९२४। विद्यार्थी काल में सामाजिक कार्यक्रमों में भाग, ४ वर्ष तक केरल कस्तूरबा ट्रस्ट की संचालिका और संगठक रहीं। फिर एक वर्ष कस्तूरबाग्राम (इंदौर) की संचालिका का काम संभाला। सेवाग्राम से बुनियादी तालीम और मगन वाड़ी वर्धा से खादी ग्रामोद्योग में प्रशिक्षित, करीब २३ वर्षों तक केरल और तमिलनाडु की समग्र ग्राम सेवा योजनाओं में कार्य करते हुए हरिजन उत्थान, महिला एवं बाल कल्याण के कार्यक्रमों में विशेष रुचि लेती रहीं, आजकल सर्वोदय आश्रम द्वारा संचालित स्कूल में प्रधान अध्यापिका हैं।

कल्पना दत्त १९३२ में क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण बंद होकर रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी और चार्ल्स एंड्रयूज़ के प्रयत्नों से १९३७ में रिहा। गांधीजी मिदनापुर जेल में जाकर मिले भी। चिटगांव शस्त्रागार-लुंठन केस की अपनी गतिविधियों पर एक पुस्तक भी लिखी है। दूसरे महायुद्ध के समय इसपर फिर अनेक प्रतिबंध लगा दिए गए थे।

कस्तूरबा गांधी १८६९। पोरबंदर के गोकुलदास माकनजी की पुत्री। सात वर्ष की उम्र में मोहनदास करमचंद गांधी से विवाह निश्चित। १८८२ में विवाह। दोनों समवयस्क। पहली संतान पंद्रह वर्ष की अवस्था में। १८९३ में पति दक्षिण अफ्रीका गए और जब वहां से लौटे तो देश की सेवा की भावना से भरे हुए। तबसे जीवन के अंत तक कस्तूरबा ने पति के व्रत को अपना बना लिया और उनके हर कार्य में हिस्सा लेकर उन्हें अपनी चिंता से मुक्त रखा। संतान हरिलाल, मणिलाल, रामदास, देवदास। २२ फरवरी, १९४४ में आगाखां महल में कैद की अवस्था में देहांत। गांधीजी ने कहा, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि जीवन बा के बिना कैसे चलेगा। उनकी स्मृति में कस्तूरबा ट्रस्ट' तब से निरंतर स्त्री सेवा में रत है।

कांताबहन चतुर्भुज १९३०। अफ्रीका में मिल रही नौकरी का आकर्षण छोड़कर सन् ५७ भूदान आंदोलन में प्रवेश, सन ६० में हुए डाकुओं के आत्म समर्पण के दौरान विनोबा के साथ रहीं, आजकल गुजरात सर्वोदय

मंडल की अध्यक्ष हैं, भूमिपुत्र तथा सर्वोदय साहित्य के प्रसार प्रचार में विशेष योग देती हैं।

कांता धीरजलाल खांडवाला १९०३। सन २६ में बी ए करने के बाद मेडिकल रिलीफ लीग कमेटी व बांबे स्टूडेंटस ब्रदरहुड कमेटी की सदस्या बनीं, सन ३० में सविनय अवज्ञा आंदोलन में योगदान, सन ३१ में वनिता विश्राम नामक शैक्षणिक व सामाजिक संस्था की मानद मंत्री हैं विधवाओं के अधिकारों की वकालत करती रहीं पिछले ५० वर्षों से कांग्रेस की सक्रिय सदस्या हैं।

काशीबहन गांधी गांधीजी के भतीजे छगन लाल गांधी की पत्नी।

कुमुदनी मित्तर क्रिस्टो मित्तर की पुत्री। शिक्षित ब्राह्मण महिलाओं का संगठित करके क्रांति-नेताओं को शरण देने में सहायक। महिलाओं का यह संगठन क्रांतिकारी साहित्य वितरण में भी मदद करता था। प्रसिद्ध क्रांतिकारी बंगला पत्रिका सुप्रभात के प्रसार और प्रचार में इनका बड़ा हाथ रहा। इनका कार्यकलाप १९०७ से १९१२ तक चलता रहा।

कुलसुम जे सायानी १९००। सन २७ में स्त्री उत्थान के कार्यक्रमों में योग, सन ४४ में बुनियादी तालीम का प्रशिक्षण व प्रयोग राष्ट्रीय आंदोलन में जेलयात्रा उन्हीं दिनों 'रहबर' नामक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन सन् ५६ में चीन-यात्रा सन ५७ में यूनेस्को के तत्वावधान में हुए प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, सन ५९ में समाज सेवा के लिए पद्मश्री से अलंकृत सन् ६६ में नेहरू साक्षरता पुरस्कार मिला सन ५८ में रोशनी कमेटी आफ विमेंस एजूकेशन की सदस्या आजकल गांधी स्मारक निधि बंबई की सदस्या हैं अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सम्बद्ध हैं।

केसरबाई सुप्रसिद्ध गायिका। अल्लादिया खां घराने की गायन-पद्धति में प्रमुख उल्लेख किया जाता है। अल्लादिया खां से सीखने के बाद इन्होंने रामकृष्ण बुवावजे भास्कर बुवा बखले और अब्दुल करीम आदि संगीतविदों से तालीम ली। ख्याल गायकी में इन्होंने बड़ी प्रवीणता सम्प्राप्त की है। विलंबित तान मुरकी खटका सभी बातों में इन्हें नाघव प्राप्त है।

कौशल्या गर्ग १९२२। महिलाश्रम वर्धा से शिक्षा प्राप्त नोआखली में गांधीजी के साथ काम महिला शिक्षा सदन हटुंडी में शिक्षिका आजकल समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित महिला जन जागृति केन्द्र की संचालिका हैं तथा इस केन्द्र के माध्यम से आदिवासियों के बीच काम कर रही हैं।

कौशल्याबहन जे नाणावटी १९२३। भारत सेवक समाज मातृ-बाल कल्याण अ भा महिला परिषद आकाशवाणी जागत श्रोता मंडल राजकोट व तदुपरांत वाघरी संघ अहमदाबाद आदि में भारत सेवा पत्र की सह संपादिका समाज कल्याण व परिवार नियोजन पर रेडियो वार्ता आदि के द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में विभिन्न पक्षों पर रह कर योगदान भारत सेवक समाज की आजीवन सदस्या आजकल भा स ■ की संगठन मंत्री हैं सर्वोदय विचार के प्रति आस्था है।

कृष्णाकुमारी निकुंज १९२१। सन् ४६ में वर्धा में ग्रामसेविका का तथा बुनियादी शिक्षा का प्रशिक्षण लिया सन् ५८ में सर्वोदय बाल निकुंज नामक संस्था की स्थापना की, आज उसीके माध्यम से शिक्षण-कार्य में रत हैं

'गांधी युग की महिलाए' प्रकाशित पुस्तकों में एक है।

कृष्णा हठीसिंग पंडित मोतीलाल नेहरू की पुत्री जवाहरलालजी की बहिन। राजा हठीसिंग से विवाहित। नेहरू परिवार के अन्य सदस्यों की भांति देशप्रेम और परिश्रम निष्ठ। इनके विषय में एक पुस्तक की भूमिका में इनके पति श्री हठीसिंग ने किसी मित्र को उद्धृत करते हुए लिखा है समूचे नेहरू परिवार में यह अकेली थी जो पद और सत्ता से दूर रही। उनकी विद नो रिगरटस और दी नेहरूज पुस्तकें प्रसिद्ध है। अंतिम पुस्तक इंदु से प्रधानमंत्री तक उनके निधन के बाद सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित हुई। निधन १९६८।

ख

खुरशीदबहन दादाभाई नौरोजी की पौती। स्वयं सेविकादल १९३० की प्रसिद्ध संगठन कर्त्री। १९४० में अहिंसा की शक्ति का प्रचार करने पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत गई। उसने वहां पठानों पीरों मलिकों और खानों के बीच अपहरण के विरोध में विचार जगाये और हिंदू समाज को निर्भय बनाने में मदद की। १९४० के अंत में वह बालोचगी कबीला-क्षेत्र में जाना चाहती थी। सरकार ने जब अनुमति नहीं दी तो उसने सत्याग्रह करके सीमा पार की। ४ दिसम्बर १९४० को गिरफ्तार एक हजार का जुर्माना या तीन महीने की सजा। उसने सजा चुनी। अवधि समाप्त होने पर सीमांत से लाकर उसे बंबई में सुरक्षा कैदी बना लिया गया। १९४१ में उसे बंबई प्रांत में आने जाने की इजाजत मिल गई। खुरशेदन ने इस आज्ञा का उल्लंघन करके वर्धा जाना चाहा। गिरफ्तार करके यरवदा जेल में रखी गई। फिर उसने भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लिया और पुलिस के अत्याचारों का सूक्ष्म और विस्तृत अध्ययन किया।

ग

गंगाबेन वालाभाई पवरी १८९६। स्वामी विवेकानंद व गांधीजी की प्रेरणा से समाज सेवा क्षेत्र में पदार्पण सन ३० में नमक स या ग्रह के समय पू कस्तूरबा के साथ पदयात्रा में शामिल जेलयात्राएं आजकल ज्योति संघ में है गुजरात राज्य द्वारा पचास वर्ष से अधिक समय की सतत सामाजिक सेवा के उपलक्ष में ताम्र पत्र से सम्मानित की गई है।

गौहर जान १८७० १९३०। नजीरखां और प्यारा साहब की शिष्या। ख्याल होरी आदि गान का आपका अभ्यास था जो अंत तक बना रहा। ठुमरी गायक की तरह विशेष रूप से प्रसिद्ध। स्वर भाव और शब्द के रसानुकूल उच्चारण। आवाज की मधुरिमा और खानगी इनकी विशिष्टता थी। तरुणाई में दरभंगा दरबार की गायिका बाद में कलकत्ते रही और फिर मैसूर दरबार में आश्रय मिला।

च

चंद्रावती लखनपाल १९०४। पंडित जय नारायण शुक्ल की पुत्री। इलाहाबाद और बनारस में शिक्षा। १९३० के आंदोलन में सक्रिय भाग। १९३२ में एक वर्ष की सजा। १९६६ में राज्य सभा की सदस्या।

द

दुर्गाबाई देशमुख इनका जन्म राजमुंद्री में १९१० में हुआ था। ८ वर्ष की अवस्था में

विवाह। बाल विधवा। १९२१ से राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण। हिंदी का अच्छा ज्ञान था। काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन में इसका बड़ा उपयोग हुआ। इस भाषा को जाननेवाले छः सौ स्वयंसेवकों का कुशलता से संचालन किया। १९३०-३४ में नमक सत्याग्रह में भाग। श्रीप्रकाश के बाद दूसरी मद्रास डिक्टेटर नियुक्त हुईं। हिंदुस्तान सेवा दल के संगठन के अपराध में भी जेल-यात्रा। जेल में अंग्रेजी भाषा का अभ्यास किया। राजनीति शास्त्र में आंध्र विश्वविद्यालय से एम ए किया और फिर वकालत भी पास की। १९४२ से १९४६ तक वकालत करके सत्याग्रहियों की मदद की। हत्या के मुकदमे की पहली महिला वकील। कांस्टिट्यूएंट असेंबली की सदस्या नियुक्त। बाद में योजना आयोग की सदस्या। चीन की यात्रा की। १९५३ में तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री चिंतामणि देशमुख से विवाह किया।

ध

धनलक्ष्मी टी० के० १९१५। कस्तूरबा ग्राम इंदौर में आरोग्य सेविका का प्रशिक्षण लेकर सन ५५ तक उसी संस्था में सेवा फिर इंदौर के पास पानिया गाँव में ११ वर्ष तक आरोग्य सेविका। पिछले पाँच वर्षों से जम्मू कश्मीर के सीमावर्ती भागों में आरोग्य सेवा का काम कर रही हैं।

न

निर्मला देशपाण्डे १९२९। राजनीति में एम० ए० करके मारिस कालेज नागपुर में प्राध्यापक रहीं, सन ५२ से ५८ तक विनोबा के साथ देशव्यापी पदयात्रा। सन ५९ से ६० में सर्व सेवा संघ की सहमंत्री, सन ६१ से ६८ तक अखिल भारतीय शांति सेना विद्यालय का संचालन इंदौर में नगर सर्वोदय कार्य, सन ६९ से ७१ तक बिहार में ग्रामदान ग्राम-स्वराज्य के सघन कार्य के बाद सन ७१ अक्तूबर में सहरसा मार्च पर पुष्टि कार्य में संलग्न हैं। ब्रह्म विद्यामंदिर की परिव्राजक सदस्या तथा सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की सदस्या हैं। चिंगलिंग (उपन्यास) सीमान्त (उपन्यास) विनोबा के साथ शांति की राह पर भग्नमूर्ति (एकांकी) आदि मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त भूदान गंगा (८ खण्ड) स्त्री शक्ति माह ब्रत का पैगाम त्रिवेणी आदि पुस्तकों तथा मैत्री मासिक पत्रिका का संपादन।

निर्मला मजूमदार १९३२। सन ४७ में कस्तूरबा ट्रस्ट में प्रशिक्षण कार्य किया ग्राम सेविका रहीं शान्ति सेना का काम किया कुछ वर्ष तक गांधी स्मारक निधि के माध्यम से ग्रामसेवा जमालपुर महिला ग्राम सेवा केन्द्र की प्रभारी, सन ६१ में गांधी स्मारक निधि से मुक्त होकर सर्वोदय आश्रम कुरसेला में अवैतनिक सेवा कर रही हैं।

निर्मला रामदास गांधी १९१०। प्रारम्भिक शिक्षा साबरमती आश्रम में सन ३० में नमक सत्याग्रह में जेल-यात्रा खादी प्रचार स्त्री-जागरण अब सेवाग्राम आश्रम की व्यवस्थापिका व कस्तूरबा ट्रस्ट की ट्रस्टी हैं।

निवेदिता भगिनी २८ नवंबर १८६७। डंगनन को टायरान आयरलैंड में। पिता रेव स्म आर नोबल। शिक्षा लेकर विंबलडन में कन्याओं के लिए पाठशाला खोली। १८९५ में स्वामी विवेकानन्द से संपर्क। १८९८ में भारत आ गईं। लन्दन के बजाय निवास कलकत्ता व भारत मातृभूमि हो गई।

स्वामीजी के साथ उत्तर पश्चिम के सारे अंचलों की यात्रा। यह भविष्य के लिए प्रशिक्षण हुआ। कलकत्ता में एक कन्याशाला चलाने का प्रयत्न किया। सफलता नहीं मिली। फिर १९०२ में कलकत्ता के बाग बाजार में शाला खोली तथा सरला देवी से भेंट। श्रीअरविंद के मार्गदर्शन में क्रांतिकारी हलचलों में भी भाग लिया। स्वामीजी का १९०२ में देहावसान हो गया। रामकृष्ण मिशन से संबंध विच्छेद। १९०४ में लार्ड कर्जन के दीक्षांत भाषण का विरोध किया। रवींद्रनाथ ठाकुर, हरींद्रनाथ दत्त आदि के साथ स्वदेशी और बंग भंग विरोध में सक्रिय। १९०६ में बंगाल के अकाल में जबरदस्त राहत कार्य। उस जमाने में भगिनी निवेदिता ने चरखा अपनाने की सलाह दी थी। प्रचलित शिक्षा की कड़े शब्दों में निंदा की। राष्ट्रीय कला, शिल्प, साहित्य, संस्कृति और इतिहास के पुनरुत्थान के लिए सतत लेखन किया। १९०७ में युगांतर के संपादक स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्रनाथ की अदालत में जाकर जमानत ली। कठिन परिश्रम से उनका स्वास्थ्य गिर गया और १९११ में उनका देहावसान हो गया। रासबिहारी घोष ने उनकी मृत्यु के समय कहा, "आज हमारे कलाकारों में जो चेतना दिखाई दे रही है, सो भगिनी निवेदिता के कारण।"

र

(पण्डिता) रमाबाई डोंगरे जन्म १८५८। मंगलूर के एक ब्राह्मण वंश में जन्म। १२ वर्ष की उम्र में २० हजार संस्कृत के श्लोक कंठस्थ याद थे। इसके सिवा कन्नड़, मराठी, बंगला और हिन्दी भाषा का उत्तम ज्ञान था। पिता की मृत्यु के बाद १८७८ में यह कलकत्ता गयीं। बाल विवाह और विधवाओं के हालात पर दिये गये व्याख्यानों से धूम मची थी। धर्मग्रंथों, संस्कृत और आधारों में पूर्ण दक्षता की भावना का सुन्दर प्रमाण। ब्रह्मसमाज ने इन्हें सरस्वती की पदवी दी।

इसके बाद इन्होंने शूद्र समाज के बिपिनबिहारी वकील से विवाह किया। मनोरमा नामक कन्या के होने पर जल्दी ही बिपिन बिहारी स्वर्गवासी हो गये। रमाबाई पूना आयीं और वहां रानडे तथा भाण्डारकर से मिलकर स्त्री शिक्षण का काम आरम्भ किया। आर्य महिला समाज की स्थापना की। हंटर एजुकेशन कमीशन के सामने स्त्री शिक्षण के पक्ष में उत्कृष्ट तर्क प्रस्तुत किये और सारे देश का ध्यान इनकी ओर गया।

१८८३ में इंग्लैण्ड गयीं। वहां सेंट मेरी होम में रहते हुए ईसाई धर्म स्वीकार किया। चेल्टनहैम लेडीज कॉलेज में दो वर्ष संस्कृत पढ़ाई। वहां किंडरगार्टन पद्धति का अभ्यास किया और मराठी में उस पर एक पुस्तक माला भी लिखी। वहां रहते हुए १८८७ में हाई कास्ट हिंदू वुमन नामक पुस्तक लिखी।

भारत में विधवाओं के शिक्षण के लिए अपनी अमरीका यात्रा के दौरान इन्हें बहुत समर्थन मिला और उसका आर्थिक उत्तरदायित्व उठाने का वचन भी मिला। इस प्रकार रमाबाई ऐसोसियेशन की नींव भी पड़ी। भारत लौटकर ११ मार्च १८८९ को शारदा सदन नामक संस्था की स्थापना की। विदेशों से आर्थिक मदद मिलने के कारण लोगों ने इसे बहुत समर्थन नहीं दिया। १८९७ में गुजरात के अकाल के समय गांव गांव घूमकर सैकड़ों स्त्रियों और लड़कियों के प्राण बचाये। उनके लिए अनेक उद्योग शुरू किए।

फिर अमरीका जाकर आर्थिक मदद प्राप्त की और कृपा सदन नामक अनाथालय प्रारम्भ किया। इसी बीच कन्या मनोरमा अमरीका से पढ़कर लौट आई थी। शारदा सदन का सचालन उसके हाथो म सौंप दिया। किन्तु मनोरमा की जल्दी ही मृत्यु हो गयी। रमाबाई को पुत्री की मृत्यु से बडा सदमा पहुचा और वह भी कुछ ही समय बाद अप्रल १९२२ म परलोकगामी हुइ। वह अपने अतिम दिनो म बाइबिल का सस्कृत भाषा तर कर रही थी वह अधूरा ही रह गया।

पार्वती देवी जन्म १८८८। पजाब के धनपति लाला करमचन्द की पुत्री। कन्या महा विद्यालय जलधर म शिक्षा प्राप्त की। पिता ने जाति का बन्धन तोडकर इनका विवाह डा० मिल्खीराम भाटिया से किया। इनके घर म दो हरिजन लडके घरलू नौकर की तरह काम करते थे। यह उस जमाने म एक अनहोनी घटना थी। विवाह के दो वष बाद विधवा हो गयी। तब इन्होंने सस्कृत का अध्ययन किया और शिक्षिका हो गयी। जलियावाला बाग के अवसर पर वह अमृतसर म थी। मेरठ म दिये गए भाषण के कारण उन्ह गिरफ्तार करके सजा दी गयी। उनकी गिरफ्तारी पर १६ दिसम्बर १९२२ का महिलाओं ने जबरदस्त जुलूस निकाला। उन्हें २ साल की सजा दी गयी। इसके पहले किसी महिला को इतनी लम्बी सजा नही दी गयी थी।

पुतलीबाई राजकोट के दीवान करमचन्द गाधी की पत्नी। करमचद गाधी की तीन पत्नियाँ का पहले निधन हो चुका था। रलियात बन और मोहनदास की माता। मोहनदास बाद म महात्मा गाधी के नाम से विख्यात हुए। पुत्र का धार्मिक सस्कार देने म माता का सर्वाधिक योग। पति की मृत्यु के बाद माता के प्रयत्नो से ही मोहनदास को उच्च शिक्षा के लिए जाने की अनुमति और सुविधा मिली। १८९१ म मोहनदास के विदेश म लौटने के थोडे ही दिन पहले माता का निधन।

पुष्पाबहन वानजीभाई देसाई १९२६। सन ४५ म डाक्टरी पास कर सेवाग्राम म सन ४८ म कस्तूरबा ट्रस्ट के ग्रामसेवा विद्या लय (अहमदाबाद) का सचालन बालवाडी केन्द्रो म आजकल ग्रामसेवा मडल टाकली की मत्री हैं।

पुष्पा गुजराल जन्म १९०० म सगलाई (झेलम) जो अब पाकिस्तान म है। गाव म शिक्षा। झेलम के वकील श्री ए एम गुज राल म विवाह। १९४२ के आदोलन म जबरदस्त हिस्सा। १९१९ से १९३० तक की राजनीति म भाग लेती रही। राजनीतिक बदियो के परिवारो की मदद के लिए धन सग्रह। १९४० म पहली बार सारा परिवार पति पुत्र पुत्रियो समेत जेल म। मकान की जब्ती। १९४२ म फिर पूरा परिवार गिरफ्तार। सप्रति पजाब प्रातीय काग्रेस समिति के महिला विभाग की सयोजिका। अनेक सामाजिक समितियो स सबद्ध। १९६० म पजाब प्रातीय समाजिक कल्याण सलाहकार समिति की सदस्या।

प्रतिलता वाडेदार प्रसिद्ध क्रातिकारिणी कल्पना दत्त की सहपाठिनी। पाठशाला म पढते हुए इन्होंने ने शाला म ली जाने वाली राजभक्ति की शपथ की जगह देश भक्ति की शपथ ली थी। प्रतिलता ने ढाका वि वि म पढते हुए लाठी और तलवार चलाना सीखा। कल्पना दत्त ने कलकत्ता

वि वि म पढते हुए शस्त्र सचालन सीखा। १९३१ ३२ म ये दोना मिलकर काम करने लगी। २४ सितम्बर, १९३२ को प्रतिलता वाडेकर ने पटाडतली रलवे आफीसस क्लब पर किय गये आक्रमण का नेतृत्व किया। एक यूर पियन महिला हमले म मारी गयी। उसने क्लब के अ य सदस्या को भी मारना चाहा। उसन पोटेशियम साइनाड खाकर घटना-स्थल पर प्राण त्याग दिय। कल्पना दत्त प्राय पुरुषवेश म रहती थी इसलिए बच जाती थी। १३ अप्रल १९३० को हुए चट-गाव शस्त्रागार की लूट के सिलसिले म उसे गिरफ्तार किया गया और आजीवन काले पानी की सजा हुई (देखिए कल्पना दत्त)

प्रेमा कटक १९०६। सन २५ म युवक आदोलन के माध्यम से सेवा काय सन २९ म साबर मती सत्याग्रह आश्रम मे सन् ३४ म महाराष्ट म आकर श्री शकररावदेव के साथ सासवड मे आश्रम की स्थापना सन ४२ के आदोलन म जेलयात्राए काग्रेस की सक्रिय सदस्या रही सन् ४४ स ५५ तक 'महाराष्ट्र काग्रेस स्त्री सघटना की प्रमुख सन ४६ से ५४ तक कस्तूरबा स्मारक टस्ट की महाराष्ट्र शाखा की प्रतिनिधि, सन ५५ म हिमाचल गयी १२ वष तक साधना के बाद कुछ समय सेवाग्राम म रही, सन ६९ से पुन सासवड (पूना) आश्रम म हैं।

ब

बाई अम्मान (अब्दी बानो बेगम) मोहम्मद अली शौकत अली की मा। परपरागत परदा प्रथा का बहिष्कार। सारे देश म हिदू मुस्लिम एकता व खादी का प्रचार किया। दश म पचायत राज्य चाहती थी। खिलाफत और स्वराज्य के लिए वह रावलपिण्डी गुजरानवाला, मसूर, शिमला, बम्बई अहमदाबाद, पटना, भागलपुर दरभगा आदि अनेक स्थाना म गयी और लोगा को देश भक्ति की प्रेरणा दी। सरकार न इह गिरफ्तार करन की हिम्मत नही की। माच १९२२ म अपनी गिरफ्तारी पर महात्मा गाधी न विशेष सदेशवाहक भेजकर यह कहलवाया कि वह हमारे काम की सफलता के लिए खुदा स दुआ करें

बिदवासिनी अवस्थी १९१०। राष्ट्रीय आदोलन म भाग, आजादी के बाद सर्वोदय म आयी, अशोभनीय पोस्टरा के विरुद्ध अभियानो म भाग लिया, शान्ति सेना व नगर की अय रचनात्मक प्रवृत्तिया म सह योग देती है।

बीबी अमतुस्सलाम १९०६। सन २० म बुर्का पहने हुए खादी की फेरी लगाना शुरू किया। बडे भाई जो वकालत छोडकर आजादी की लडाई म शामिल हो चुके थे पुस्तक सग्रह म स गाधीजी की आत्मकथा पढकर साबरमती जाना तय कर लिया। पर्याप्त प्रयासो के बाद आश्रम मे सदस्य के नाते नही एक महमान के नाते आने की इजाजत मिली। सन ३१ से गाधीजी की मृत्यु तक उनके साथ रही, वही कताई बुनाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया फिर काय क्षत्र हिंदू मुसलिम एकता को चुना, सन ४० मे गाधीजी ने सिंध की साम्प्रदायिक आग को बुझाने के लिए सिंध भेजा, सन् ४७ म गाधीजी के साथ नाआखली मिशन म रही वही पर २१ दिन का उपवास किया, शरणार्थी शिविरो म राहत-काय, राजपुरा म शरणार्थी पुनर्वास के लिए बनायी गई सस्था का नाम 'कस्तूरबा सेवा मदिर रखा, सन ६० मे अलीगढ मे तनावपूण स्थिति म

भी शांति-स्थापना में सहयोग, सन ६२ में चीनी आक्रमण के बाद राजपुरा का सारा काम साथियों को सौंपकर नेफा तेजपुर में सेवा कार्य किया, गांधीजी द्वारा लिखे गये पत्रों का एक संग्रह 'बापू के पत्र-बीबी अमतुस्सलाम के नाम' प्रकाशित हो चुका है।

भ

भीकाजी रुस्तम कामा १९०६ में स्वातन्त्र्य वीर सावरकर से लन्दन में भेंट। उनके विचारों से आकृष्ट होकर विदेशों में भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रबल प्रचार किया। भाई परमानन्द लाला लाजपतराय सरदार अजीतसिंह के साथ काम किया। इंग्लैंड में दादाभाई नौरोजी के पार्लामेंट के चुनाव में सफल सहयोग दिया। प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजीकृष्ण वर्मा के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस जर्मनी में पहली बार वन्देमातरम लिखकर भारतीय झण्डा फहराया। १९३६ में इस महान क्रांतिकारी महिला का निधन हुआ।

म

मनुबहन गांधी गांधीजी की पौत्री। हरिलाल गांधी की पुत्री। अंत तक बापू की सेवा में रही। नोआखली यात्रा में अत्यंत निर्भीकता का परिचय दिया।

मणिबेन कारा १९०५। लन्दन से समाज सेवा के लिए विशेष प्रशिक्षण लेकर स्वदेश लौटी, बम्बई की गंदी बस्तियों में सेवा मंदिर की स्थापना कर मुख्यतः हरिजन सेवा शुरू की सन ३० में मजदूर आंदोलन में अनेक जेलयात्राएं मजदूर संगठनों का निर्माण पिछड़े वर्ग की सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत, आजकल हिंद मजदूर सभा की सदस्या हैं गांधी विचार में निष्ठा रखती हैं।

मणिबहन पटेल सरदार वल्लभभाई पटेल की पुत्री १९०४ में जन्म। प्रारंभिक शिक्षण बम्बई में बाद में गुजरात विद्यापीठ की स्नातिका। बारडोली के सत्याग्रह से लेकर सभी आंदोलनों में भाग लिया। अविवाहित रहकर पिता के सचिव की तरह उनके सभी कार्यकलापों को सुचारु चलाते रहने में दक्षता से रत रहीं।

(श्रीमती) महबूब नसरुल्ला बंबई की वर्तमान शेरिफ। उस्मानिया विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम ए। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय से जियो पालिटिक्स में एम ए। महाराष्ट्र प्रांतीय महिला परिषद की भूतपूर्व अध्यक्षा। बंबई शेरिफ संघ की अध्यक्षा। जन मा महिला संघ की केन्द्रीय समिति और प्रशासन समिति की सदस्या। केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म सेंसर बोर्ड की सदस्या। एस एन डी टी विश्वविद्यालय की सीनेट की सदस्या। महाराष्ट्र राहत और सहायता पुनर्वास समिति की उपाध्यक्षा। महिला कॉलिज उस्मानिया विश्वविद्यालय की भूतपूर्व प्राचार्या। महाराष्ट्र [illegible] कौंसिल की अध्यक्षा।

महादेवी वर्मा हिन्दी के छायावादी काव्य की अन्यतम कवियित्री। जन्म १९०६ में फरुखाबाद, उत्तर प्रदेश में प्रयाग महिला विद्यापीठ इलाहाबाद की प्रधानाचार्या। प्रमुख रचनाएं नीहारिका रश्मि नीरजा सांध्यगीत यामा, दीपशिखा आदि। काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त अतीत के चलचित्र स्मृति की रेखाएं क्षणदा तथा पथ के साथी आदि संस्मरण और रेखा चित्रों के संकलन।

साहित्यकार संसद, प्रयाग की संस्थापिका।

महारानी तपस्विनी वेलूर के जमींदार नारायण राव की पुत्री। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वंशज। कहा जाता है कि इन्होंने १८५७ के विद्रोह में भाग लिया था और त्रिचनापल्ली में कैद की गई थी। संस्कृत का अध्ययन और योगाभ्यास किया। बाद में नेपाल गई। लौटकर बंगाल में महाकाली संस्कृत पाठशाला आरंभ की। इन्होंने स्त्री शिक्षा में भी रुचि ली। १६०१ में बाल गंगाधर तिलक ने कलकत्ता में इनसे भेंट ली थी। तिलक ने इनकी मदद से नेपाल में खपरे बनाने के कारखाने के बहाने शस्त्र बनाने का कारखाना चलाने का प्रयत्न किया था किन्तु ब्रिटिश सरकार को इसका पता चल गया। कलकत्ता में १६०७ में निधन हुआ।

मार्गरेट कजिंस १६१५ में भारत आई और श्रीमती एनी बीसेंट के साथ काम करने लगी। इनका जन्म ७ नवबर १८७८ को आयरलैंड में हुआ था। मुख्य क्षेत्र शिक्षा किन्तु होमरूल आंदोलन में भी भाग लेती रही। १६१७ में स्त्रियों के मताधिकार के लिए सरोजिनी नायडू के साथ काम किया। अनेक वर्षों तक स्त्रीधर्म मासिक का संपादन। १६२७ में अखिल भारतीय महिला परिषद की स्थापना। १६३० के आंदोलन में गांधी जी ने स्त्रियों को आंदोलन में भाग लेने से रोका तब इन्होंने इसका विरोध किया। १६३२ में अमरीका जाकर महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू की गिरफ्तारी के विरुद्ध सभाएं करके जनमत बनाया। १६३२ के अक्टूबर में भारत लौट आई। उस समय नारी अध्यादेश के विरोध में सभाएं कीं। दिसंबर १६३२ में सजा। जेल में वह गॉड सेव दि किंग गाये जाने के अवसर पर श्रीमती बीसेंट कृत 'गॉड सेव अवर मदरलैंड' गाती थीं। गांधीजी से प्रभावित होकर उन्होंने कोटागिरि की भंगी बस्तियों में काम किया। १६४३ तक वह इस काम में लगी रहीं। फिर शरीर टूट गया और वह काम धाम के लायक नहीं रहीं।

मार्जोरी साइक्स १६०५। सन २६ में कैम्ब्रिज में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन, सन २७ से कैम्ब्रिज टीचर्स डिप्लोमा प्राप्त। सन ३८ से ४७ तक शांतिनिकेतन में अध्यापन व साहित्य सृजन। सन ४८ में सेवाग्राम आई तथा बुनियादी शिक्षा के काम को आगे बढ़ाने में योगदान दिया, सन ५६ तक शांति सेना तथा बुनियादी शिक्षा के प्रशिक्षण-कार्यक्रम को चलाया, आजकल कोटागिरि के अमदी अहम में है। युवकों के प्रशिक्षण का काम संभाल रही हैं। बुनियादी शिक्षा पर अनेक पुस्तकों के अतिरिक्त दीनबंधु एंड्रूज की जीवनी भी लिखी है।

मालतीदेवी चौधरी शांतिनिकेतन में अध्ययन, सन ३०, ३२ व ४२ के आंदोलनों में जेलयात्राएं। उत्कल नवजीवन मंडल के माध्यम से आदिवासी सेवा। शासन विधान सभा की सदस्या रहीं, बुनियादी तालीम के लिए बनी संस्था व उसके छात्रावास का मार्गदर्शन कर रही हैं।

मालूताई दत्तोबा दास्ताने १६२६। महिला श्रम वर्धा में शिक्षा। सन ४६ से ५४ तक गोपुरी में बालवाड़ी संचालन, इस वर्ष तक समाज कल्याण बोर्ड की वर्धा शाखा की सदस्या रहीं। अब मगन संग्रहालय में काम करती हैं।

मीठूबेन पिटिट सन १६ से सार्वजनिक जीवन में वैभव छोड़कर बारडोली आश्रम

में, दांडी यात्रा में जेलयात्रा, शराब की व विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना कस्तूरबा के साथ, पिकेटिंग के लिए लगभग एक हजार स्वयंसेविकाओं को प्रशिक्षित किया, बारडोली सत्याग्रह में हिजरती किसानों की स्वास्थ्य सेवा, ३२ के संग्राम के बाद मरोली नवसारी में कस्तूरबा सेवाश्रम की स्थापना की, ७५ वर्ष की आयु में भी सेवारत हैं भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित हैं।

मीनाक्षी सुन्दरम एम १९०९। स्वदेशी आन्दोलन में जेलयात्राएं कांग्रेस में जिला स्तर के पदों पर हरिजनों के मंदिर प्रवेश में सक्रिय खादी व नशाबंदी, व ग्रामदान ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रमों में हैं पत्रकार व किसान हैं।

मीराबहन (मेडेलिन स्लेड) १९२५ में इंग्लैण्ड से भारत गांधीजी के पास आईं। गांधीजी ने इन्हें भारतीय नाम मीरा दिया। इंग्लैण्ड में रहते हुए उन्होंने संगीत, साहित्य और खेलों का उत्तम अभ्यास किया था। उन्होंने लिखा है कि अगर मैं चाहती तो अपने देश की लड़कियों की तरह पार्टियों में जाती नाचती और गाती। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने गांधी के बारे में सुना था और वह उनके पास रहकर जीवन का वास्तविक अर्थ जानने को व्याकुल हो उठीं। गांधी के विषय में उन्होंने रोमां रोलां की एक किताब में पढ़ा था और गांधीजी को लिखा था कि मैं आश्रम आना चाहती हूं। गांधीजी ने उत्तर में लिखा कि साबरमती आश्रम का जीवन बहुत कठिन है तुम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकोगी। तुम यहां मत आना। किंतु उन्होंने गांधीजी के पत्र की परवाह नहीं की और नवम्बर १९२५ को भारत के लिए रवाना हो गईं। जब वह भारत पहुंची तो उनकी उम्र ३५ वर्ष की थी। गांधीजी ने पांव छूती हुई उस लड़की को छाती से लगाकर कहा—तुम मेरी बेटी बनकर रहोगी। शायद वह सबसे ऐसा कहते थे किंतु मिस स्लेड ने इसे अक्षरशः मन में उतार लिया। गांधीजी ने उसे कस्तूरबा को सौंप दिया और वह भारतीय महिलाओं की तरह झाड़ना बुहारना भोजन बनाना आदि में लग गईं। मिस स्लेड अर्थात मीरा गांधीजी के साथ छाया की तरह रहीं। गांधीजी से एक क्षण का वियोग भी इन्हें कठिनाई से सहन होता था। वह अपना सारा भूतकाल पीछे छोड़ आई थीं और गांधी में पूरी तरह लीन हो गई थीं। बरसों तक दरिद्रनारायण के माध्यम से उन्होंने गांधी और गांधी के देश की सेवा की। गांधीजी के बाद भी वह भारत में बहुत दिनों तक रहीं, किन्तु उन्होंने देखा कि भारत का सत्तारूढ़ दल गांधी-पथ से निरंतर दूर होता जा रहा है तो वह दुखी होकर लौट गईं। किंतु भारत से निरंतर सम्पर्क बनाये हुए हैं।

मुकुंदा मालवीय पंडित मदनमोहन मालवीय की पुत्रवधू इलाहाबाद के घंटाघर पर झंडा चढ़ाने के अपराध में १९३२ में एक साल का कठोर कारावास। इसके पहले और बाद में सार्वजनिक जीवन में सदा और सक्रिय प्रभावपूर्ण काम करती रहीं। कीर्तिपराङा मुख।

मुत्थुलक्ष्मी जन्म १८८६। मद्रास वि वि की पहली मेडिकल ग्रेजुएट। १९१७ से भारतीय महिला परिषद की सदस्या। मद्रास नगरनिगम की पहली महिला सदस्य। शिशु कल्याण व शिक्षा समस्याओं में दिलचस्पी ली। १९२८ में भारतीय शिक्षा समस्याओं के

लिए गठित हर्टॉग समिति पर ली गईं। यह उस समय इंग्लैण्ड में थीं। वहां से लौटते हुए अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के पेरिस अधिवेशन में भारत का नेतृत्व। १९३० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग। गांधीजी की गिरफ्तारी पर विरोध स्वरूप लेजिस्लेटिव कौंसिल से इस्तीफा। १९३३ में अन्तर्राष्ट्रीय महिला परिषद् के निमंत्रण पर गईं। स्त्रियों के मताधिकार संबंधी अधिकार के विषय में इंग्लैण्ड गईं। मद्रास के कैंसर अस्पताल की स्थापना में पहल की। १९५६ में पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत।

मैत्रेयी देवी — १९१४। सन् ६३ में पूर्व पाकिस्तान व कलकत्ता में हुए साम्प्रदायिक दंगों के दौरान शांति स्थापित करने का प्रयास किया। कलकत्ता में बढ़ती जा रही हिंसक मनोवृत्ति के विरुद्ध एक परिषद का गठन किया। शताब्दी वर्ष में बनी राष्ट्रीय एकता उप समिति की सदस्या। पहले के पूर्व पाकिस्तानी बंगलाभाषियों से संपर्क कर एवं अच्छे संबंध की आधार भूमि तैयार करने के उद्देश्य से सन् ६४ से 'नव जातक' नामक एक त्रैमासिक बंगलापत्र का संपादन कर रही हैं। बंगला देश के संकट में शरणार्थी शिविरों में राहत कार्य। सन् ७२ में कलकत्ता के पास एक गांव को अपनाकर उसका समग्र विकास करने में रत हैं। साहित्य दर्शन व रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर विभिन्न पुस्तकें लिखी है। एक लेखिका के नाते अनेक बार विदेश भ्रमण कर चुकी हैं।

मंजुलाबहन जयंतिलाल दवे — १९२५। महिला मंडल में मंत्री की हैसियत से समाज सेवा में प्रवेश, अनाथ महिला व बच्चों की मदद हेतु स्त्री विकास गृह की स्थापना व संचालन, ४८ से ५२ तक जामनगर नगरपालिका की सभापति रहीं। इसके बाद की सदस्या, सागर वनराज बाद, जामनगर की सभासद, बंबई व गुजरात राज्यों की विधानसभा की सदस्या। गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी की उपाध्यक्ष। गुजरात युनि. व सौराष्ट्र युनि. सेनेट की सदस्या। जुआर्डन कोर्ट जामनगर की मातृ मंदिर ट्रस्ट, पश्चिमी रेलवे व प्राविंशियल काउंसिल की सदस्या। सर्वोदय प्रवृत्तियों में भी योग दे रही हैं।

मृदुलाबेन अम्बालाल साराभाई — १९११। सन् १९ में बापू से संपर्क। सत्याग्रह आंदोलन में अनेक बार कारावास। शांति सेना के दल के साथ कौमी दंगाग्रस्त क्षेत्रों में बापू के साथ कार्य। ...नी में विभाजन के बाद विस्थापित परिवार व अपहृत महिलाओं की सहायता का कार्य, सन् २० ३० तक कांग्रेस व युवक संघ की प्रवृत्तियों में सक्रिय। सन् ३० से ३८ तक ज्योति संघ में विश्रामगृह का काम। जम्मू कश्मीर की समस्या में सक्रिय। कस्तूरबा ट्रस्ट व सेवा संघ से सम्बद्ध। आजकल हनुमानी बिरादरी संगठन का काम देख रही हैं।

र

रमाबाई रानडे — जन्म १८६२। ११ वर्ष की उम्र में विवाह। पति स्वनामधन्य न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे। १८८२ में इनकी पण्डिता रमाबाई से भेंट हुई और ये आर्य महिला समाज में सक्रिय रूप से काम करने लगीं। १८८४ में इन्होंने बंबई के गवर्नर सर जेम्स फर्ग्युसन की उपस्थिति में अपना पहला भाषण दिया और उसमें पूना में कन्या विद्यालय खोलने की मांग पेश की। सभा में भाषण देने के कारण परिवार की बड़ी बूढ़ियों से बहुत दिनों तक त्रस्त रहना

पडा। तब उन्होने अपने घर म ही निरक्षर स्त्रिया और विधवाओ को पढाना शुरू कर दिया। इन्ही छात्राओ की सहायता से दुर्भिक्ष प्लेगादि के अवसर पर समाज म राहत काय किया। बाद मे पूना सेवा सदन की स्थापना हुई और सारे बबई प्रात म उसकी शाखाए फल गइ। ससून अस्पताल पूना की मदद मे उन्होने सेवासदन की महिलाओ को बीमारो की परिचर्या का पाठयक्रम भी पूरा कर वाया। लडकियो क अनिवाय प्राथमिक शिक्षण के लिए आदोलन किया। स्त्रियो के मताधिकार के लिए सर एच लारेंस का समथन प्राप्त किया। मराठी म आत्मकथा लिखी जिसकी गणना उच्च कोटि के साहित्य म होती है।

रमादेवी चौधरी १८९९। सन २१ से साव जनिक जीवन मे सन् २८ मे अखिल भार तीय चर्खा सघ की सदस्या, बाद मे उसकी ट्रस्टी भी, हिंदुस्तानी तालीम सघ की सदस्या, कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट की प्रतिनिधि। सन ३० ३२ व ४२ के आदोलनो म जेल यात्राए सन ५१ से सर्वोदय मे, उत्कल सहायता समिति की अध्यक्षा व प्रदेश हरि जन सेवक सघ की मत्री बुनियादी तालीम का भी काम किया उत्कल के सर्वोदय काय की बडी प्रेरक शक्ति हैं।

राजलक्ष्मी वी १९२०। सन ४५ म ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा म प्रशिक्षण लेकर सन ५२ तक कस्तूरबा ट्रस्ट की प्रतिनिधि रहा सन ५६ म कस्तूरबा ट्रस्ट (केन्द्रीय), कस्तूरबा ग्राम की मत्री बनी, सन् ६८ म प्रदेश म काम बढाने के लिए केन्द्रीय कार्यालय छोडकर प्रदेश शाखा मे वापस आई, आजकल भी वही सेवारत हैं।

राधादेवी गोयनका जन्म १९०४। उमराव सिंह डालमिया की पुत्री। किशनलालजी गोयनका की पत्नी। १९४० म कलकत्ता के अ भा परदा निवारण सम्मेलन की अध्यक्षा। १९४२ मे जेलयात्रा। १९४६ म म प्र विधान सभा की सदस्या। १९४६ म ही अ भा महिला परिषद की स्वागताध्यक्षा। भारतीय सेवा सदन नामक सस्था की सचा लिका। मानवता' नामक पत्रिका की सपा दिका और 'नारी समस्या नामक पुस्तक की लेखिका।

रानी लेडी हरनाम सिंह कपूरथला के राज वश के सर हरनामसिह की पत्नी। राज कुमारी अमृतकौर की माता। समाज-सुधार, शिक्षण और पर्दाप्रथा को हटाने का प्रयत्न करती रही। जलधर म शिशु सगोपन केन्द्र खोला। शिमला म एक महिला सभा की स्थापना की।

रुक्मिणी अरडेल पिता नीलकठ शास्त्री सस्कृत और भारतीयदशन के उदभट विद्वान और इजीनियर थे। रुक्मिणी का जन्म १९०४ म हुआ था। भाई थियासाफिकल सोसायटी के एन श्रीराम और बडी बहन डा शिवकाम है। होम रूल आदोलन के समय बबई सरकार ने डॉ शिवकाम को मेडिकल कालेज से निष्कासित कर दिया था। शास्त्री-परिवार अत्यत सुसस्कृत और उदाराशय परिवार है। डा जाज सिडने अरडेल से परिवार की घनिष्ठता थी। सन १९२० म रुक्मिणी शास्त्री, रुक्मिणी अरडेल हुइ। थियासफी के डा लेडबिटर से भी परिचय था—यह परिचय घनिष्ठ होने लगा। ज्ञान के मूल तत्त्व और सेवा की भावना इनके सपर्क से पनपी और दृढ हुई। १९२० मे श्रीमती एनीबीसेंट से भी प्रत्यक्ष परिचय प्रारभ हुआ। १९२५ म डा अरडेल

के साथ यूरोप यात्रा। वहां की समाज रचना और कला आदि का सूक्ष्म अध्ययन किया। मन म भारतीय सादगी व उच्च विचार सरणी का आदर तो था ही। यह सकल्प भी थी कि भारत की ललित कलाओ का विकास हो। वापस आकर फिर १६३१ ३२ म यूरोप और अमरीका आदि देशा की यात्रा की। वहा आर्यो की जीवन-पद्धति और 'ललित कलाओ का व्यक्तिगत राष्ट्रीय और जागतिक विकास म स्थान' विषया पर इनके अत्यत प्रौढ और मनोमुग्धकारी व्याख्यान हुए। १६२६ २८ म डॉ अरडेल आस्ट्रेलिया की थियासाफिकल सोसायटी के महासचिव थे—तब उनका प्रसिद्ध बन नर्तकी पवलोवा स परिचय हुआ था। रुक्मिणी न उनसे उस प्रकार क नृत्य का शास्त्रीय शिक्षण प्राप्त किया। १६३५ स भरतनाट्य का अभ्यास करके उसम अभूतपूर्व विशेषज्ञता प्राप्त की। मीनाक्षी सुदरम पिल्ले तथा ब्रह्म श्री पापनाशम् शिवन् न बड मनोयोग स इन्ह शिक्षा दी। १६३५ म ही अडयार म थियासाफिकल सोसायटी के हीरक जयती अवसर पर रुक्मिणी न अपनी कला का पहला प्रदशन किया। नृत्य कला दवीगुणा के विकास का साधन है और इस इसी दृष्टि से अपनाया जाना चाहिए इस विचार को रुक्मिणी ने अपनी जीवन साधना से रूढ किया है। वह चिदबरम् के नटराज देवालय म अपनी कला का अभ्यास करती रही और उस नटराज के चरणा मे ही अर्पित किया। उन्होन कला शिक्षण के लिए अडयार म एक सस्था भी प्रारभ की। इसका नाम 'कला क्षेत्र' रखा। यहा नृत्यकला के अतिरिक्त चित्रकला वयनकला आदि भी सिखाये जाते हैं। मडम माटसरी के मागदशन म यहां बाल शिक्षा का भी उत्तम प्रबध और प्रयोग आरम्भ हुआ जो अभी तक विकास करता जा रहा है।

रुक्मिणी लक्ष्मीपति १८६२। मद्रास विश्व विद्यालय की स्नातिका। उनकी सहपाठिनिया म पहली स्नातिका का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तरुण तमिलनाडु प्रातीय कांग्रेस समिति की अध्यक्षा थीं। १६४६ ४७ म मद्रास की स्वास्थ्य मंत्राणी नियुक्त हुइ।

रेणुका राय १६०० २१ म मातृजाति छात्र म। बाद म लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स म शिक्षा प्राप्त की। स्वदेश लौटने पर बगाल म महिलाओ क सुधार क हेतु काम किया। शिशु सगोपन केन्द्र सुनवाया सन् १६२५ म बगाल सरकार क तत्कालीन चीफ सक्रेटरी एस एन राय स विवाह। १६३१ म अ भा महिला परिषद् म सबद्ध। उसकी मत्री भी रही। १६४१ स ५० तक केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति की सदस्या। शातिनिकेतन क सीनेट की सब प्रथम महिला सदस्या। १६४३ म बगाल प्रातीय विधान सभा की सदस्या। १६४४ म बगाल अकाल के समय राहत काय। नोआखाली क दगो के बाद गाधीजी क आदेशानुसार राहत केन्द्रो का सचालन, सन् १६४७ म सविधान निर्मात्री परिषद की सदस्या। बाद म पश्चिमी बगाल क पुनवास विभाग की मत्री। १६५२ ५३ म अ भा महिला परिषद की अध्यक्षा। कुशल लेखिका प्रभावशाली वक्ता।

ल

लक्ष्मीदेवी तिक्खा १६०४। सन् २५ से आजादी की लडाई म भाग विदेशी बहिष्कार मे पिकेटिंग की, गिरफ्तार हुइ,

सन् ४२ के आन्दोलन में जलयात्राएँ सन् २६ में शाहदरा आश्रम (लाहौर) में रचनात्मक कार्यों में भाग खादी ग्रामोद्योग, नशाबन्दी महिला जागृति, पर्दा प्रथा निवारण का काम किया। पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश के अनेक भागों में सर्वोदय प्रचार बटवारे के बाद ६ माह तक पाकिस्तान में जाकर स्त्री परिवारों को वापस लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

लाडो रानी जुत्शी लाहौर के प्रसिद्ध वकील पंडित लाडली प्रसाद जुत्शी की कन्या। १९१९ में राजनीति क्षेत्र में। सघर्ष समिति की डिक्टेटर। आन्दोलन का सफलतापूर्वक सचालन किया। विदेशी कपड़ा की दुकानों शराबखानों अदालतों और विधान सभा के सदस्यों के घरों पर सत्याग्रही महिलाओं के साथ धरना दिया। मोरीगेट लाहौर पर भाषण देते हुए १८ जुलाई, १९२० को लोगों को देश पर सब कुछ निछावर कर देने के लिए प्रेरित किया। १९३० के अपने अत्यंत उग्र भाषण के कारण उन्हें सजा दी गई। बालगंगाधर तिलक की पुण्यतिथि के भाषण पर उनपर २० हजार रुपये का मुचलका देने को कहा गया। न देने पर एक वर्ष की सजा दी गई। १९३१ में छूटीं और १९३२ में फिर १८ महीने की सजा दी गई। लाडो रानी जुत्शी ने अपनी कन्याओं में भी देशप्रेम की लौ लगा दी थी। जनककुमारी जुत्शी और स्वदेशकुमारी जुत्शी ने लाहौर महिला कालेज में हड़ताल करवाई थी। उनकी तीसरी कन्या मनमोहिनी जुत्शी विवाह के बाद मनमोहिनी सहगल ने विद्यार्थियों के बीच प्रबल आंदोलन किया था। मनमोहिनी ने अनेक बार जेलयात्रा की। वह १९४१ में अ. भा. महिला परिषद की सभी बनीं।

लीलावती मुशी उपाध्यक्ष भारतीय विद्या भवन बबई, दिल्ली और कानपुर। १९२६ में कन्हैयालाल माणिकलाल मुशी से विवाह हरिजन सेवक सघ बबई की अध्यक्षा १९४३ से ४७ तक। १९५० ५१ में बबई प्रांत महिला परिषद की अध्यक्षा। अखिल भारतीय राष्ट्रीय महिला अन्न परिषद की १९५४ ५६ में अध्यक्षा। गुजराती साहित्य ससद पी ई एन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति राष्ट्रीय शिक्षण समिति, भारत सेवाश्रम सघ कलकत्ता आदि अनेक संस्थाओं की सदस्य और अध्यक्षा। बबई विधान सभा की सदस्या भी रहीं।

लक्ष्मीबहन गांधी च. राजगोपालाचार्य की पुत्री गांधीजी के पुत्र देवदास गांधी की पत्नी। सप्रति 'हिंदुस्तान टाइम्स' की मैनेजिंग डायरेक्टर।

लक्ष्मी एस स्वामीनाथन कप्तान बरिस्टर एस स्वामीनाथन और मद्रास काग्रेस की प्रसिद्ध महिला कार्यकर्त्री अम्मुस्वामीनाथन की पुत्री। द्वितीय महायुद्ध के समय सिंगापुर में अस्पताल खोलकर सेवा करते समय नेता जी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्थापित भारतीय स्वातत्र्य सघ की सक्रिय सदस्या बनी। बाद में नेताजी के सपर्क में और २२ अक्तूबर १९४३ को स्त्रियों की फौज तैयार की। इस टुकड़ी का नाम झांसी की रानी रखा गया। प्रारंभ में केवल १७५ वीरांगनाएँ थीं फिर इनकी संख्या दो हजार तक बढ़ी। सेवा सुश्रूषा के अतिरिक्त भारत और ब्रह्मदेश की सीमा पर इम्फाल की प्रसिद्ध लड़ाई में इस टुकड़ी ने बड़ी बहादुरी दिखाई और ब्रिटिश फौज पर विजय प्राप्त की। मौलमीन में आजाद हिंद फौज की पराजय के समय

कप्टन लक्ष्मी की फौज ने जोरदार सामना करके सुभाषबाबू के सुरक्षित निकल जाने के बाद ही आत्मसमर्पण किया। सन् १९४६ में मुक्त कर दी गयी।

लीलावती धीरजलाल बंकर १८८५। स्वदेशी आंदोलन में भाग, गांधी तथा कस्तूरबा स्मारक निधि के लिए धन संग्रह, मानद न्यायाधीश रहीं, बाल कल्याण समिति की सदस्या, महाराष्ट्र विधान सभा की सदस्या, भारत सेवक समाज, बंबई की अध्यक्षा के अतिरिक्त अनेक संस्थाओं से जुड़ी रहीं।

लीलावती वंकटेश मागडी १९२०। प्रारंभिक शिक्षा शांतिनिकेतन में, राष्ट्रीय आंदोलन में भाग, जुविनाइल कोर्ट की आनरेरी मजिस्ट्रेट रहीं, १९५८ में मैसूर राज्य के कुटीर उद्योग की उपमंत्री निर्वाचित हुईं, तत्पश्चात धारवाड़ जिला खादी ग्रामोद्योग संघ की अध्यक्षा रहीं, सन ६६ से हुबली की महिला विद्यापीठ की अध्यक्षा हैं।

लटिका ठक्कर १९३३। शरणिया आश्रम में ग्रामसेविका का प्रशिक्षण, सन ५५ तक नगालैंड में ग्रामसेविका रहीं, अब कस्तूरबा ग्राम सेवा केन्द्र चुचुइमलाग में बालवाड़ी केन्द्र चलाती हैं, गांधी आश्रम की प्रवृत्तियों में भी सहयोग देती हैं।

व

वायलट अल्वा जन्म २४ अप्रैल १९०८। सेंट जेवियर और शासकीय लॉ कालेज बंबई से एम ए तथा वकालत पास की। भारत छोड़ो आंदोलन में १९४३ में जेलयात्रा। १९४७-५२ बंबई विधान सभा की सदस्या। ए आई एन इ सी १९६२ में पहली महिला सदस्या। १९६३ से १९६८ तक संसद में कांग्रेस दल की कार्यकारिणी की सदस्य। १९६४ में भारतीय महिला सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल की नेत्री की हैसियत से मास्को गईं। यू एन सेमिनार आदिस में भारत की विधि प्रतिनिधि। १९६२ में न्यूजीलैंड की मानवाधिकार यू एन सेमिनार में भाग लिया। बाद में उपगृह मंत्री भारत सरकार।

वासन्ती देवी देशबंधु चित्तरंजनदास की पत्नी। १९२२ में जुलूस निकालने और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार करने तथा शराब की दुकानों पर धरना देने के लिए गिरफ्तार हुईं। १९२२ में बंगाल प्रांतीय कांग्रेस अधिवेशन चटगांव की अध्यक्षा।

विजयालक्ष्मी पण्डित जन्म १८ अगस्त १९००। पं० मोतीलाल नेहरू की पुत्री, पं० जवाहरलाल नेहरू की बहन, देश विदेश में शिक्षा। १९२१ में रणजीत सीताराम पण्डित से विवाह। सन १९३० में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश। इसी वर्ष सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग। सन १९३५ में इलाहाबाद म्युनिसपल बोर्ड की शिक्षा समिति की अध्यक्षा। १९३७ में उत्तर प्रदेश धारा सभा की सदस्या तथा स्वायत्त शासन एवं स्वास्थ्य मन्त्राणी। १९४० में अखिल भा० महिला परिषद की अध्यक्षा। १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार, १९४४ में रिहा। उसी वर्ष वीमेन्स इंटरनेशनल लीग फार पीस एण्ड फ्रीडम की उपाध्यक्षा चुनी गईं। संयुक्त राज्य अमरिका का भ्रमण किया। १९४५ में स० रा० स० की कान्फ्रेंस के समक्ष सानफ्रांसिसको में प्रतिनिधियों के समक्ष प्रभावशाली भाषण। १९४६ में स० रा० स० की जनरल असेम्बली

म द अफ्रिका के प्रवासी भारतीयों का मसला पेश करने भारतीय प्रतिनिधि दल की नेत्री नियुक्त की गइ। उसी वर्ष निर्विरोध उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या निर्वाचित। पुन मंत्री पद पर अधिष्ठित। १९४७ से १९४९ तक अमरिका और मेक्सिको के लिए भारतीय राजदूत। १९५०-५१ में आप ही के प्रयत्नों के फलस्वरूप अमरिका में इंडियन फूड एड बिल पास हुआ। १९५१ म राजदूत पद से इस्तीफा। भारतीय गण राज्य के प्रथम आम चुनाव में निर्वाचित संसद सदस्या।

विद्यादेवी गुप्त १९२८। हिन्दुस्तानी तालीम संघ सेवाग्राम म शिक्षा प्राप्त की, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट आंध्र म ५ वर्ष तक सेवाएं, ५ वर्ष तक भूदान आंदोलन म, श्रीजयप्रकाशजी के आश्रम मे संबद्ध रहीं, महिला चर्खा संघ पटना दिल्ली सर्वोदय मंडल और आंध्र एजूकेशन सोसायटी मे भी सहयोग देती रहीं। सम्प्रति कस्तूरबा स्मारक निधि की आंध्रप्रदेश की प्रांतीय प्रतिनिधि हैं।

विद्या माता प्रसिद्ध देशभक्त सरदार किशन सिंह की पत्नी और सरदार भगतसिंह की माता। धार्मिक और सत्यनिष्ठ। अभी पंजाब सरकार ने विद्या माता को पंजाब *माता घोषित किया है।*

वीरम्माबहन सन २४ म एक हरिजन परिवार म जन्म हरिजन यात्रा के दौरान गांधीजी से भेंट १९३७ से ४२ तक बा और बापू के साथ सेवाग्राम म रही सन् ५४ से भूदान ग्रामदान आंदोलन म हैं। अब ग्राम स्वराज्य अभियान म सेवारत हैं।

वन्हेही पंडा १९३१। सन ४६ म कस्तूरबा ट्रस्ट की प्रथम टोली म प्रशिक्षण बालवाडी शांति सेना और ग्राम आरोग्य सविका का काम किया, भूदान पदयात्राओं म भाग गत २४ वर्षों से कस्तूरबा ट्रस्ट उत्कल शाखा म रही, ग्रामाधारित एक केन्द्र का चलाना का प्रयोग बंगलादेश शरणार्थी शिविरों मे राहत-कार्य, आजकल चंबल घाटी म शांति कार्य तथा बागी व बागी पीडित परिवारों के पुनर्वास म संलग्न हैं।

श

शरयू रघुनाथ धोत्रे १९१०। स्व० श्री अण्णासाहब दास्ताने की द्वितीय पुत्री पढाई छोडकर सन २० म नशाबंदी के लिए पिकेटिंग और विदेशी वस्त्र की होली सन २१ म खादी फेरी तिलक स्वराज्य फंड संग्रह सन २६ म वर्धा के सत्याग्रह आश्रम म सन २९ तक कांग्रेस का काम सन ३२ ४० व ४२ म जलयात्रा व्यक्तिगत सत्याग्रह म प्रथम महिला सत्याग्रही सन ५३ म बिहार म भूदान यात्रा सन ५१ से ५३ वर्धा लोकल बोर्ड के आरोग्य विभाग म सन ५४ से ५८ तक दिल्ली म बालसहयोग नामक संस्था का निर्माण किया और उसकी मंत्री रहीं सन् ५८ म जयपुर कांग्रेस म बच्चों का घर प्रदर्शिनी का आयोजन किया सन् ५८ से ६१ तक वर्धा म सर्वोदय पात्र का गठन *वाराणसी के शांतिसेना विद्यालय, की प्रथम* संचालिका रहीं, आजकल गांधी सेवा संघ (वर्धा) से संबद्ध है।

शारदा मां जन्म २२ दिसम्बर १८५३। पिता रामचन्द्र मुखोपाध्याय। १८५८ म रामकृष्ण परमहंस से विवाह। १८७२ म जब परमहंसदेव आध्यात्मिक साधना म निरत थे तब वह वहा पहुंची और पति न उन्हें जग न्माता के स्थान पर बिठाकर विधिपूर्वक

षोडशाउपचार पूजन किया। तब म शारदा मा ३ बजे रात्रि का गगास्नान करके आध्यात्मिक साधना के बाद बडी रात तक गहकाय तथा परमहसदेव के शिष्य वग की सवा म लगी रहती थी। श्री रामकृष्ण परम हम की महासमाधि के बाद २० जुलाई १६२० तक आप असम्य भक्ता को आध्या त्मिक दीक्षा और उपदेश देती रही।

शातावाई एम १६०३। राष्ट्रीय आदोलन के समय ग्रामसविका सन ४५ म महिला छात्रावास की शुरुआत की, सन ५० तक उसका सचालन करती रही हरिजन कल्याण विभाग एव कस्तूरबा छात्रावास से महिलाआ का निदेशन कई वर्षों तक किया साथ ही अनाथ लोगा की सहायता म भी सलग्न रही क्षेत्र म एक हरिजन छात्रा वास व एक अनाथालय की स्थापना की।

शातावाई रानीवाला ३ फरवरी १६०३। बालविवाह के बाद अल्प अवधि के बाद ही पति का निधन। जमनालालजी बजाज की प्ररणा से महिला शिक्षा मडल की गति विधिया म भाग लेने लगी। वर्धा म प्रसिद्ध सस्था महिलाश्रम की स्थापना की और वर्षों तक उसका सचालन किया। खादी प्रचार अछूतोद्धार, गोसेवा आदि सभी रचनात्मक कायक्रमा और बापू क चलाये आदोलना म भाग लिया।

श्री मा आनदमयी जन्म ३ अप्रल, १८६६ को मिला जिन (अब बगला देश) के खेवडा नामक ग्राम म। आध्यात्मिक जगत की महान विभूति। आपभगवत भावके साथ प्राणिमात्र म भगवत स्वरूप की अनुभूति करके सपूण जगत क साथ आत्मीयता रखती हैं। कई आश्रमा की स्थापना की है।

स

सत्यवती स्वामी श्रद्धानद की पोती। क्रांति कारिणी। २३ वष की अवस्था म १६३० म आदोलन म प्राणपण स कूदा। जुलूस, विदेशी वस्त्रा और शराब की दुकाना पर धरना सभाए करती। दिल्ली म पचास प्रतिशत सम्पन्न महिलाआ म इनकी प्रेरणा से खादी पहनना शुरू किया। १२ मई १६ ३० के जुलूस म अमीलाल की गोली से मृत्यु होने पर उनके भाषण स सत्ता काप उठी और जेल भेजी गइ। १६३२ म फिर पकडी गइ और जेल गइ। जेल म उन्ह प्लूरिसी और फिर क्षय हो गया। किंतु उन्होंने अपना आदोलन जारी रखा। १६३७ म पुलिस ने उनपर लाठियां की बौछार की। जेल से बाहर आने पर १६३८ म उन्ह पजाब छोडने का आदेश दिया गया। उन्होंने अवज्ञा की और फिर सजा भोगी। १६४१ ४२ म फिर सुरक्षा बदी। १६४५ म मृत्यु के दो दिन पहले सरकार ने उन्ह रिहा किया।

सरलादेवी (कुमारी हलीमन) १६०० म इग्लड मे ज म सन ३२ म युद्ध की विभी पिका स खिन्न होकर भारत आ गयी, गाधी जी के सम्पक मे आने के बाद सवाग्राम म नयी तालीम का काम किया, उत्तराखड को कायक्षेत्र बनाकर सन ४२ के आदोलन म वही जन-जागति का काम, भारत छोडो आदोलन म अल्मोडा की सबसे खतरनाक आदोलनकारी करार दी गयी जेलयात्राए सन ४६ म कस्तूरबा महिला उत्थान मडल द्वारा स्थापित लक्ष्मी आश्रम, कौसानी म सविका व शिक्षिका, सन ६५ से ग्रामदान स्वराज्य के काम म लगी हैं उत्तराखड के नशाबदी आन्दोलना म सक्रिय भाग लिया है बिहार क गावा म भी ग्रामदान के निमित्त

महिला जागरण के काम में विशेष योग उत्तराखंड खादी ग्रामोद्योग सलाहकार मंडल की अध्यक्षा, हिमालय सेवा संघ की उपाध्यक्षा हैं, आजकल चंबलघाटी के आत्मसमर्पणकारी बागियों के बीच जेल में सस्कार कार्यक्रम चला रही हैं हिन्दी में अबला नहीं, मैंने क्या कहा ? आदि अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

सरलादेवी चौधरी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भतीजी। १८७२ में जन्म। विख्यात मासिक पत्रिका भारती की सम्पादिका। १९०५ में लाहौर के विख्यात वकील और नेता राम भजदत्त से विवाह। उत्कृष्ट कवयित्री। वन्देमातरम गीत को सप्तकोटि की जगह त्रिंशत कोटि शब्द रखकर प्रान्तीय स्वरूप से हटाकर राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। परिवर्तित स्वरूप को काग्रेस के बनारस अधिवेशन में गाया। सन १९१९ में गाधी जी के सम्पर्क में आयी। असहयोग आदोलन में भाग लिया। अखिल भा का कमेटी की मत्राणी नियुक्त हुई। १९२५ में कलकत्ते की आल इण्डिया सोशल काग्रेस की अध्यक्षा और १९२६ में कलकत्ते की भारतीय पत्रकार संघ की अध्यक्षा चुनी गयी। बंगाल प्रात में दशहरे के दिनों में वीरअष्टमी मनाने का स्फूर्तिदायक समारोह इन्होंने शुरू किया हुआ है।

सरोजिनी नायडू जन्म १३ फरवरी १८७९। पिता अघोरनाथ चटर्जी। १२ वर्ष की आयु में मद्रास यूनिवर्सिटी से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। १६ वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा प्राप्त करने १८९५ में इगलण्ड गयी। स्वदेश लौटकर डा गोविन्द राजुलू नायडू से अन्तर्जातीय और अन्तप्रान्तीय विवाह। कवि डब्ल्यू बी यीटस ने इनकी अंग्रेजी कविताओं की प्रशंसा की है। विश्वविख्यात वक्ताओं में गिनती। स्वातन्त्र्य संघर्ष में अनेक बार जेलयात्रा लगातार कई वर्षों तक काग्रेस कार्यसमिति की सदस्या। १९२५ में काग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षा। १९३२ में प मदनमोहन मालवीय के जेल में होने के कारण दिल्ली अधिवेशन की अध्यक्षा। गोलमेज सम्मेलन में भी आमन्त्रित। भारत सरकार के अफ्रीका भेजे गये शिष्टमंडल की सदस्या। देश के स्वतन्त्र होने के बाद उत्तर प्रदेश की गवर्नर। १ मार्च, १९४९ में लखनऊ में दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु।

सुचेता कृपलानी जन्म १९०८। पिता डा एस एन मजूमदार जो पजाब में बस गये थे। लाहौर में शिक्षण। दिल्ली से एम ए होकर बनारस में प्रोफेसर। वहीं १९३४ में राजनीति में सक्रिय हुई। आचार्य कृपलानी अ भा का के मंत्री थे। उनसे विवाह के बाद राजनीतिक गतिविधियाँ ही जीवन में प्रधान बन गई। प्रोफेसरी छोड़कर १९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह। १९४२ में जब छूटी तो भारत छोड़ो आन्दोलन में सभी प्रमुख नेता जेल में बंद थे। इन्होंने भूमिगत होकर काम किया। १९४३ में काग्रेस ने अपना महिला विभाग प्रारंभ किया। सुचेता उसकी कार्यकारी मंत्राणी नियुक्त। स्वयं सेविका दल का सगठन। १९४४ में गिरफ्तार। १९४५ में रिहा होने के बाद समाज-कल्याण और राहत-कार्य। १९४६ में पूर्व बगाल के दगों से त्रस्त क्षेत्रों में स्त्रियों और बच्चों की सेवा संरक्षण। गाधीजी के साथ पूर्व बंगाल में रही। १९४७ में पजाब के दगों में काम किया। उसी वर्ष काग्रेस कार्यसमिति की सदस्या चुनी गई। फिर उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या ससद की सदस्या और उ प्र की मुख्यमंत्री रहीं। सम्प्रति लोक कल्याण

समिति की उपाध्यक्षा केन्द्रीय गाधी स्मारक निधि के न्यास मडल की सदस्या।

सुनीति उमाचरण चौधरी की पुत्री। १४ दिसम्बर १९३१ का कुमिल्ला के मजिस्ट्रेट की गोली मारकर हत्या की। उस तथा उसकी सहयोगिनी समिति का आजन्म कारावास दिया गया।

सुभद्राकुमारी चौहान जन्म १९०४। विवाह जबलपुर क विद्वान पत्रकार एडवाकेट लक्ष्मणसिंह चौहान क साथ १९१९ को हुआ। युवावस्था स ही राष्ट्रीय आन्दोलन म भाग लिया। राष्ट्रीय भावना से उच्छ वासित कविताए लिखी। जेलयात्राए की। कविता सग्रह मुकुल और कहानी-सग्रह बिखर मोती हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कृत हुए। झासी की रानी नाम की आपकी कविता बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। १९४७ म वसन्तपचमी के दिन म प्र के सिवनी नामक स्थान से आते हुए मुर्गी के बच्चा को बचाने के प्रयत्न म मोटर झाडो स टकरायी और सुभद्राजी का प्राणा त हो गया।

सुमति मुरारजी जन्म १३ मार्च, १९०९। अनेक समाजसेवी सस्थाओ स सबद्ध। अखिल भारतीय हस्तकला बोड बम्बई की सदस्या। नाथद्वारा टेम्पल बोड की उपाध्यक्षा। सिंधिया स्टीम नवीगेशन क लि बम्बइ की एक्जीक्यूटिव डाइरक्टर।

सुशीला गाधी गाधीजी के दूसर पुत्र मणि लाल गाधी की पत्नी। गाधीजी के अफ्रीका स लौट आने के बाद भी दम्पति वही बने रह और गाधीजी के अखबार इडियन ओपिनियन' को निकालत रह।

सुशीला नयर (डाक्टर) १९०४। सेवाग्राम म बा और बापू की स्वास्थ्य निरीक्षिका व शिष्या होने के कारण राष्ट्रीय आदोलन म सक्रिय भाग व जेलयात्राए फिर कुछ समय केन्द्रीय स्वास्थ्य मत्री क रूप म भारत सर कार की सेवा, सन् ४२ स ८२ तक मेडिकल बोड की सलाहकार समिति तथा कस्तूरबा टस्ट की सदस्या रही सन ५७ म कस्तूरबा टस्ट तथा कुष्ठ निवारण बोड की अध्यक्षा हुइ सम्प्रति अनेक रचनात्मक सस्थाओ स सम्बद्ध है और नशाबदी आदोलन म कुछ वर्षों से विशेष सक्रिय है।

सोनामणि होता १९०१। सन ३० म साबर मती आश्रम म नमक सत्याग्रह व पिकेटिंग जेलयात्रा सन ८४ से ४२ तक डेलाग म रचनात्मक काय सन ४२ स ४४ तक जल मे, सन् ४५ म महिला तालीम शिविरो का सचालन आदिवासी महिलाओ के बीच शिक्षण सन ५२ से भूदान म आजकल साहित्य प्रचार कर रही हैं।

स्वणकुमारी देवी जन्म १८५७। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बहन। ११ वष की आयु म विवाह। पति के प्रोत्साहित करने पर परदा छोड दिया। एक बगला मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। और इस प्रकार पहली भारतीय महिला सपादक बना। १८८६ मे महिला परिषद की स्थापना की। उसी वष बगाल की थियासोफिकल सोसायटी की अध्यक्षा हुइ। सन १९०० मे कलकत्ता काग्रेस मे बगाल के प्रतिनिधि की हैसियत से शामिल हुइ। किसी महिला के लिए यह पहला ही अवसर था। सरलादेवी (चौध रानी) इनकी योग्य सुपुत्री सिद्ध हुइ।

ह

हसा महता विख्यात समाज सविका। जन्म ३ जुलाई १८९७ सूरत गुजरात

म। महाराष्ट्र सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा की भूतपूर्व उपकुलपति। भारत सरकार की ओर से अनेक प्रतिनिधि मडलो का नेतृत्व। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी लिट तथा सयाजीराव विश्वविद्यालय स एल एल डी की मानद उपाधिया प्राप्त। १६५६ म भारत सरकार द्वारा 'पदमविभूषण उपाधि से विभूषित।

हरदेवी लाहौर के बरिस्टर रोशनलाल की पत्नी। समाज सेविका। हिन्दी पत्रिका भारत भगिनी की सम्पादिका। क्रातिकारियो के मुकद्दमे म धन इकट्ठा करके सहायता देती रही।

हेमलताग्रहन हेगिष्टे १६१७। राष्ट्रीय आदोलन म भाग क्षेत्र म राष्ट्रीय भावना का विकास करने म उल्लेखनीय योगदान 'ज्योति सघ की प्रवत्ति स सेवा प्रारभ की, त्यक्ता व निराधार महिलाओ को आत्म निभर बनाने म सहयोग कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट गुजरात की प्रतिनिधि आजकल कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की मत्री है।

हीरालक्ष्मी केशवलाल शेठ १६१३। बम्बई विश्वविद्यालय स स्नातिका, राजकोट सत्याग्रह म भाग, जेलयात्रा, १६४५ से श्रीकान्त स्त्री विकासगृह की मानद मत्री विदेशी वस्त्रो की होली शराब की दूकानो पर धरना खादी काय के माध्यम से समाजसेवा राजकोट केलवणी मडल पुतलीबा उद्योग मदिर, शिशु मडल जूनागढ स्टेट सोशल वल्फेयर एडवायजरी बोड की सदस्या के रूप म तथा बाल अदालत की आनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप म भी काय कर रही हैं।

•

प्राचीन खड के सदभ ग्रथ और सकेत

ग्रथ	सकेत
अग्नि पुराण	अग्नि
अध्यात्म रामायण	अध्या रा
अदभुत रामायण	अ रा
अथववद	अ वे
आदि पुराण	आदि
आनद रामायण	आ रा
आर्षेय ब्राह्मण	आ ब्रा
ईशापनिषद	ई उ
ऋग्वद	ऋ
कालिका पुराण	कालि
कम पुराण	कूम
गणश पुराण	गणश
गरुड पुराण	गरुड
गोपथ ब्राह्मण	गो ब्रा
गौतम गह्यसूत्र	गो ग
गौतम धम सूत्र	गौ ध
जमिनीय उपनिषद ब्राह्मण	ज उ ब्रा
जमिनीय ब्राह्मण	ज ब्रा
तत्तरीय उपनिषद	त उ
तत्तरीय ब्राह्मण	त ब्रा
तत्तरीय सहिता	त स
देवी भागवत	दे भा
नारद पुराण	नारद
पद्म पुराण	पद्म
सृष्टि खड	सृ
भूमिखड	भू
स्वगखड	स्व
ब्रह्मखड	ब्र
पातालखड	पा
उत्तरखड	उ
क्रियायोग	क्रि
प्रश्न उपनिषद	प्र उ
बृहदारण्यक उपनिषद	बृ उ
ब्रह्म पुराण	ब्रह्म
ब्रह्मववत पुराण	ब्रह्म व
भविष्य पुराण	भविष्य
[पर्वों को प्रथम शब्द स ससूचित किया है।]	
भागवत	भा
भारत सावित्री	भा सा
महाभारत	म
[आदि पव सभा पव, वन पव, विराट पव उद्योग पव भाष्य पव द्रोण पव, कण पव शल्य पव सौप्तिक पव स्त्री पव, शाति पव अनुशासन पव अश्वमेधिक पव मौसल पव महाप्रस्थान पव स्वर्गारोहणपव प्रथम एव या दो वर्णों स सूचित किए गए हैं।]	
मत्स्य पुराण	मत्स्य
माकण्डय पुराण	माक
याज्ञवल्क्य स्मृति	याज्ञ
वायु पुराण	वायु
वराह पुराण	वराह
वामन पुराण	वामन
वाल्मीकि रामायण	वा रा
[काड प्रारभिक वर्णों स सूचित]	
विष्णु पुराण	विष्णु
शतपथ ब्राह्मण	श ब्रा
शिवपुराण	शिव
रुद्र सहिता	रुद्र
[सृष्टि सत्ता पावती कुमार और युद्ध पर्वों को प्रथम वण स सूचित किया गया है।]	
शतरुद्र सहिता	शत
कोटिरुद्र सहिता	कोटि
उमा सहिता	उमा
कलाश सहिता	क
वायवीय सहिता	वा
स्कद पुराण	स्कद
[इसके खडा का १ २ ३ आदि अका से सूचित किया है।]	
स्मृति चद्रिका	स्मृति च

मध्यकालीन खड के सदभ ग्रथ और सकेत

ग्रथ	सकेत
महाराष्ट कवि चरित्र	म क
मराठी रियासत मध्य विभाग	म रि म
भारत इतिहास सशोधक मडल	
—अहवाल	भ अ
—इतिवत्त	भ इ व
राजपूताना का इतिहास	रा इ
राजतरगिणी	रा त

इनके अतिरिक्त इतिहास सग्रह एतिहासिक टिप्पणिया इडियन हिस्टारिकल क्वाटली साउथ इडियन इस्क्रिप्शस एतिहासिक पत्र व्यवहार एतिहासिक स्फुटलेख स्मिथ की अर्ली हिस्ट्री आफ इडिया पशवाआ की दनन्दिनी आदि ग्रथा मे सहायता ली गई है। विद्यानिधि श्री सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव के प्राचीन और मध्ययुगीन चरित्रकोष इन परिचया का प्रधान सदभ ग्रथ हैं।